जन्म : १-१-१८९२] **महादेवभाओ** [अवसान : १५-८-१९४२

महादेवभाओकी डायरी

तीसरा भाग

[ता० २-१-'३३ से २०-८-'३३ तक : यरवदा जेल समाप्त]

संपादक

नरहरि द्वा० परीख

अनुवादक

रामनारायण चौधरी

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर

अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – ९

पहली आवृत्ति : २,५००

प्रस्तावना

अिस पुस्तकमें गांधीजीका यरवदाका जेल-जीवन समाप्त होता है। सन् १९३२ के आरंभसे लेकर १९३३ की २३ अगस्तको सासून अस्पतालमें से अुन्हें छोड़ दिया गया, तब तकका अुनका जीवन अेक तरहसे विशेष भव्य और अुत्कट है। यों तो गांधीजीका सारा ही जीवन भव्य और अुत्कट है; परंतु अिस समयमें अस्पृश्यता-निवारणके कामके लिअे कअी बार अुन्होंने अपनी जानको पूरी तरह खतरेमें डाला और अंतमें तो प्राणार्पणके अंतिम क्षण तक भी पहुंच गये, जिसके कारण अुनके जीवनका यह समय विशेष रूपसे भव्य बन जाता है। अिसके साथ तुलना करने लायक और किसी हद तक अिससे भी बढ़कर अुनके जीवनका दूसरा काल वह था, जो नोआखलीमें अुनके पैदल प्रवाससे शुरू होकर दिल्लीमें महाबलिदान देने तकका गिना जा सकता है।

गांधीजीने हमें ब्रिटिश हुकूमतके पंजेसे छुड़ाया, यह अुनका अेक महान कार्य माना जायगा। परंतु अुनके जीवनका सबसे बड़ा कार्य अितिहासके पन्नोंमें अगर कोअी लिखा जायगा, तो वह यह कि अुन्होंने अस्पृश्यता-निवारण, हिन्दू-मुस्लिम अेकता और दूसरे रचनात्मक कार्यों द्वारा हमारे सारे समाजको नवजीवनके पथ पर अग्रसर किया और अुसके जरिये होश भूली हुअी दुनियाको शांति और न्यायका मार्ग दिखाया। यह कहा जा सकता है कि आजादी लेनेके काममें सारे देशका अुन्हें साथ था। परन्तु समाजकी नवरचनाके अुन कामोंमें अैसा साथ नहीं था, बल्कि कअी तरफसे विरोध भी होता था। अस्पृश्यता-निवारण और हिन्दू-मुस्लिम अेकताके लिअे प्राण देनेकी अुनकी तैयारी तभीसे थी, जब अुन्होंने अपना जीवन लोकसेवामें बितानेका निश्चय किया था। कितनी ही बार अिसके लिअे अुन्होंने अपनी जानको खतरेमें डाला था। और अंतमें हिन्दू-मुस्लिम अेकताके लिअे तो अुन्होंने अपने प्राण भी दे दिये। हिन्दुस्तानमें आज मुसलमान अगर शांति और सलामतीके साथ रह कर नागरिकोंके पूरे हक भोग रहे हैं, तो अुसका मुख्य श्रेय गांधीजीके बलिदानको ही है। अिस बलिदानके शुभ परिणाम तो अभी बहुतसे आयेंगे। आज हमारा देश राजनैतिक दृष्टिसे विभक्त हो गया है, पर यह बलिदान ही दोनों विभागोंके बीच सुंदर मेल और हृदयकी अेकता स्थापित करेगा। भिन्न-भिन्न धर्मों और जातियोंके मनुष्योंमें मानवताकी अेकता तो

है ही, यह अुन्हें प्रत्यक्ष करा कर सबके बीच सुमेल स्थापित करनेका भारतका जो विशिष्ट कार्य है, वह सिद्ध होगा — अैसी आशा भी यह बलिदान ही हमारे दिलोंमें पैदा करता है।

अस्पृश्यता आज लगभग मिट गअी है। 'लगभग' अिसलिअे कि यद्यपि कानूनमें और हमारे अधिकतर व्यवहारमें वह मिट गअी है, फिर भी देशके कुछ अंधेरे कोनोंमें अज्ञान लोग — सवर्ण और हरिजन दोनों — अिस मुर्देसे चिपटे हुअे पाये जाते हैं। अिस रहे-सहे अंधकार और अज्ञानका सम्पूर्ण नाश अब सिर्फ समयका ही सवाल है। पहले भी कअी सन्त पुरुषों और भक्तजनोंने अस्पृश्यताके विरोधमें आवाज अुठाअी थी। परंतु अुसे मिटानेके लिअे समस्त देश-व्यापी अुत्साह तो गांधीजीने ही प्रगट किया। अिस अुत्साहको कायम रखकर जीवनके अेक-अेक क्षेत्रमें से जितना जल्दी हो सके अुसका नामनिशान मिटा देनेका काम हमारे हिस्सेमें आया है। रंगद्वेष और जातिद्वेषके कारण अेक प्रकारकी अस्पृश्यता दूसरे देशोंमें भी है। पर जैसी अस्पृश्यता हिन्दू समाजमें हैं, वैसी कहीं नहीं है। क्योंकि हमने तो अुसे धर्मका रूप दे दिया है। हमारे देशमें अभी तक लोगोंको धर्मके नाम पर अिस बुराअीसे चिपटे रहनेका कहनेवाले लोग मौजूद हैं। स्थापित हितोंवाले लोग, जो धर्मको अपनी कमाअीका साधन बना बैठे हैं, अपने अन्यायपूर्ण स्वार्थको कायम रखनेके लिअे आखिरी हाथ-पैर मार रहे हैं।

महादेवभाअीकी डायरीका यह भाग और अिससे पहलेके दो भाग अस्पृश्यता-निवारणके लिअे अपनी जान जोखममें डालकर गांधीजी द्वारा चलाअी हुअी लड़ाअीकी वीर-गाथाओंसे भरे हैं। डायरीके ये तीन भाग यद्यपि सुविधाके लिअे अलग-अलग छापे गये हैं, परंतु विषयके निरूपणकी दृष्टिसे तो वे अेक ही पुस्तक हैं। गांधीजीका जीवन अस्पृश्यता-निवारणके सिवाय और भी बहुतसी बातोंके लिअे समर्पित था, और अिस प्रकार अिन डायरियोंमें दूसरे अनेक विषयोंकी चर्चा आती है। फिर भी अिन तीनों भागोंका मुख्य स्वर अस्पृश्यता-निवारणका है। अिस विषय पर गांधीजीका विशद दर्शन अिन तीन पुस्तकोंमें जैसा मिलता है, वैसा और कहीं नहीं मिलता।

अमुक अूंचे और अमुक नीचे, अैसे क्रमवाली जातिप्रथा जब तक हिन्दू समाजमें बनी रहे, तब तक केवल अस्पृश्यताके मिटा देनेसे क्या होगा? जो अस्पृश्य माने जाते हैं, वे हिन्दू समाजमें जब तक ठेठ नीची सीढ़ी पर रहेंगे ही, तब तक अुनकी सामाजिक दशामें क्या बड़ा परिवर्तन हो जायगा? यह दलील गांधीजीके साथ बहुतसे विदेशी पत्रप्रतिनिधि और हिन्दू सुधारक अिन भागोंमें करते हैं। अुनका कहना यह है कि

आप जब तक जातिप्रथाको नष्ट नहीं करेंगे, तब तक सिर्फ छुआछूतको मिटा देनेसे बहुत लाभ नहीं होगा। डॉक्टर आम्बेडकरको गांधीजीके अस्पृश्यता-निवारणके कार्यक्रमसे संतोष नहीं था, अिसका अेक कारण यह भी था। अिस प्रश्नकी कुछ चर्चा दूसरे भागमें आअी है। अिस भागमें अिस सवालकी ज्यादा छानबीन हुअी है और अुससे जाति और वर्णके बारेमें गांधीजीके विचार हमें ज्यादा स्पष्टतासे जाननेको मिलते हैं। अेक समयके लिअे जो कार्यक्रम हाथमें लिया हो, अुसे जहां तक हो सके हलका रखकर अुसीको पूरा करनेकी अुनकी कार्यपद्धति थी। अिसलिअे यद्यपि जातियोंकी चारदीवारीको नष्ट करनेकी अुनकी राय थी, फिर भी यह बात सच है कि अुन्होंने अुस कार्यक्रमका बोझ अस्पृश्यता-निवारणके कार्यक्रम पर नहीं डाला। पर अिस चीजको वे कितना महत्त्व देते थे, यह अुनके अिस वचनसे समझमें आ सकता है: 'यह कौन जानता है कि मुझे कब तक जीना है? पर फुरसत मिल जाय तो यह जरूर हो सकता है कि मैं वर्णाश्रम धर्मकी बात लेकर बैठ जाअूं।' यहां यह ध्यानमें रखना चाहिये कि हमारे देशमें आजकल जो जातिप्रथा मौजूद है, अुसमें और गांधीजीके खयालकी वर्णव्यवस्था या वर्णधर्ममें जमीन-आसमानका फर्क है। आजकलकी जातियां औरोंसे अपने अूंचेपनके अभिमान पर और अुसके सिलसिलेमें लगाये गये रोटी-बेटी व्यवहारके बन्धनों पर कायम हैं। आजकल खाने-पीनेके बन्धन तो अब नामको ही रह गये हैं। और जो हैं, वे जल्दी-जल्दी मिटते जा रहे हैं। विवाहके बन्धन मिट जायं, तो फिर अूंचेपनका अभिमान दिखानेका अेक बड़ा साधन नष्ट हो जाय। फिर जातियां रहें भी, तो वे खास नुकसान नहीं कर सकतीं। जैसे भोजन-व्यवहार हरअेक समाजमें खाद्याखाद्य और सफाअीके कुदरती नियमोंके अधीन रहने ही वाला है, वैसे ही विवाहोंका मामला भी आचार-विचार, अुम्र, तंदुरुस्ती और स्वभाव वगैराके परस्पर मेल और निजी पसन्दके अधीन रहेगा। पर वर्तमान जातियोंके बन्धनमें आजकल अिनमें से कोअी तत्त्व बाकी नहीं रहा। अिसलिअे छुआछूतका कलंक दूर न हुआ होता, तो हिन्दू समाजकी हस्ती ही खतरेमें होती; वैसे ही जब तक जातियोंकी बुराअी नहीं मिट जाती, तब तक हिन्दू समाज स्वस्थ और प्राणवान नहीं हो सकता।

अिसलिअे गांधीजीकी यह राय है कि जातियां नष्ट होकर वर्णव्यवस्था स्थापित हो, तो ही हिन्दू समाजमें नवचेतन आ सकता है। वे वर्णव्यवस्थाका क्या अर्थ करते हैं, यह अुन्होंने अिस पुस्तकमें अलग-अलग लोगोंके साथकी अपनी चर्चामें स्पष्ट कर दिया है। अुनकी पहली बात यह है कि वर्ण

धन्धेके अनुसार होना चाहिये। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, ये चार मूल वर्ण माने जाते हैं। असके वजाय विविध धन्धोंके कारण समाजमें ज्यादा वर्ण कर देने पड़ें, तो अुन्हें कोअी अेतराज नहीं था। धन्धेके वारेमें मुख्य नियम यह हो कि अुसका सम्बन्ध जन्मके साथ हो, यानी लड़केका यह कर्तव्य माना जाय कि वह वापका धन्धा करे। "मैं अिसीको अुचित समझता हूं कि वढ़अीका लड़का वढ़अी वने और लुहार न वने। अिस तरह सैकड़ों जातियां वनती हों, तो भले ही वन जायं। जब तक अिन तमाम जातियों या वर्णोंके वीच रोटी-वेटीका व्यवहार रहे, तव तक भले चाहे जितनी जातियां हों। अिन रोटी-वेटीके वन्धनोंने सारा मामला बड़ा मुश्किल कर दिया है।" "द्रोणाचार्य धर्मभ्रष्ट हो गये थे (क्योंकि जन्मसे ब्राह्मण होने पर भी अुन्होंने क्षत्रियका पेशा किया) यह मैं जरूर कहूंगा। मेरा कहना यह है कि अेक वर्णके मनुष्यको दूसरे वर्णका काम करनेका अधिकार न हो सो बात नहीं, पर अैसा करना अनुचित है। यह धर्म सबके लिअे है। अुसका पालन अनायास नहीं, जान-बूझकर होना चाहिये। जैसे हिन्दू अिसका पालन करें, वैसे ही मुसलमान भी करें। मैंने अिसी अर्थमें कहा था कि 'वर्णधर्म हिन्दू धर्मकी मानव-जातिको सबसे बड़ी देन है।' अिस धर्मके पालनसे सारे समाजकी रक्षा होगी। सारा समाज अजेय बन जायगा।"

यह ध्यानमें रखने लायक है कि वर्णाश्रम धर्मकी अुत्पत्तिकी वात करते हुअे वे यह चीज कहते हैं: "भले ही वेदमें अैसा कोअी वाक्य मिल जाय कि अुस समय अूंच-नीचका भेद था, पर मैं तो शुद्ध वर्णधर्ममें अूंच-नीचका भेद पाता ही नहीं। ब्राह्मण शूद्रोंका अुतना ही आदर करेंगे, जितना दूसरे ब्राह्मणोंका करेंगे। यह बात नहीं है कि शूद्रको ज्ञान नहीं मिल सकता। तुलाधारका ज्ञान कैसा था? यह कहा जाता था कि ज्ञान प्राप्त करना हो तो तुलाधारके पास जाओ।"

दूसरे स्थान पर वे कहते हैं: "मूल विचार अैसा था ही नहीं कि अमुक नीचे हैं और अमुक अूंचे हैं। विचार तो यह था कि मनुष्यका जन्म यह खोज करनेके लिअे है कि मनुष्यकी आध्यात्मिक शक्यता कितनी है। अीश्वरको पहचाननेका छोटेसे छोटा रास्ता वर्णधर्मका आदर करना है। जिस क्षण आप वर्णधर्मका आदर करने लगते हैं, अुसी क्षण आप नीति और अीश्वर-सेवाके बारेमें दूसरे सबसे आगे बढ़ जाते हैं।"

वर्णधर्मके अनुसार यह समाज-व्यवस्था और अर्थव्यवस्था न्याय और समानताके आधार पर कायम हो, अिसके लिअे गांधीजीकी कही हुअी अेक

बात खास तौर पर ध्यानमें रखनी चाहिये: "हाथों और पैरोंका श्रम ही सच्चा श्रम है और हाथ-पैरसे मजदूरी करके ही रोजी कमानी चाहिये। मानसिक और बौद्धिक शक्तिका अुपयोग समाजसेवाके लिअे ही करना है।" "सब रोटीके लिअे मजदूरी करें, तो अूंच-नीचका भेद मिट जाय; और फिर भी धनिक वर्ग रह जाय तो वह अपनेको मालिक न मानकर धनका केवल रखवाला या ट्रस्टी माने और मुख्यतः अुसका अुपयोग केवल लोकसेवाके लिअे करे।"

दूसरे, "वर्णधर्मकी रचनाके लिअे आश्रमधर्मकी बुनियाद चाहिये। अुसके बिना सारी अिमारत कच्ची रहेगी।" "आश्रमधर्मकी सारी अिमारत संयम पर खड़ी की गअी है। शुरूमें माता-पिता और गुरु संयमकी तालीम दें, लाजमी तौर पर संयमका पालन करावें और अन्तमें वानप्रस्थ होकर मनुष्य संयम रखे और संन्यासी होकर तो सर्वस्व अीश्वरार्पण कर दे। यह हो तो शुद्ध वर्णधर्मका पुनरुद्धार हो जाय।" "वर्णाश्रम धर्ममें सन्तोष रहा है। अपने-अपने धर्मके बारेमें समाधान रहा है। अिस प्रकार वर्णाश्रम धर्म दैवी प्रवृत्ति है। वर्णाश्रम धर्म सात्विक है, जब कि दूसरी सब प्रवृत्ति राजसी है।"

क्या अैसा वर्णाश्रम धर्म किसी समय — वेदकालमें भी — सचमुच पाला जाता होगा? यह सवाल स्वभावतः पैदा होता है। महादेवभाअीके मनमें भी हुआ है। अिसके जवाबमें गांधीजी कहते हैं: "मान लो कि न पाला जाता हो, तो भी अेक प्रजाके जीवनमें पांच हजार वर्षकी क्या गिनती है? आगे किसी दिन पाला जायगा, यह स्वप्न सेवन करने लायक तो है ही।" फिर कहते हैं: "अितना याद रखना चाहिये कि अैसा हिन्दू धर्म भी पांच हजार वर्ष तो जीवित रहा है। पता नहीं महाभारत कब लिखा गया। पर यह माननेको जी चाहता है कि यह धर्म किसी समय पाला जाता था और अुस समय पराधीनता नहीं थी। आज भी हम अुस धर्मके बारेमें बातें करते हैं, यह क्या बताता है? . . . यह बताता है कि वह धर्म अभी तक प्राणवान है और आगे ज्यादा प्राणवान बननेवाला है।"

अपनी अभिलाषाका वर्णन करते हुअे वे कहते हैं: "आदर्श आश्रमके द्वारा किसी दिन अिस वर्णाश्रमको फिरसे स्थापित करनेका ध्येय है जरूर। अभी तो आश्रममें सब जड़की तरह पड़े हैं। परन्तु ध्येय यह बना हुआ है, अिसलिअे कोअी न कोअी तो अैसा निकलेगा। . . . सारी भावना किसी न किसी दिन शुद्ध वर्णाश्रम धर्म — आध्यात्मिक 'कंम्युनिज्म' — स्थापित करनेकी थी। . . . जहां सच्चा वर्णधर्म प्रचलित हो, वहां पराधीनता हो

हो नहीं सकती। . . . सब संयमी बनकर अपना-अपना काम सेवा-भावसे करने लगें, तो वर्णाश्रम धर्मका पुनरुद्धार असंभव नहीं।"

यह कह सकते हैं कि जिस हद तक हम गांधीजीके समग्र रचनात्मक कार्यक्रमको अमलमें लानेकी कोशिश करेंगे, अुसी हद तक हम गांधीजीके निरूपण किये हुअे वर्णाश्रम धर्म — आध्यात्मिक 'कम्युनिज्म' — की दिशामें प्रगति कर सकेंगे। रचनात्मक कार्यमें ही जीवन अर्पण करनेवाले भाअी-बहनोंके लिअे यह बात खास तौर पर ध्यानमें रखने लायक है कि गांधीजीने हमसे कितनी बड़ी अपेक्षा रखी है।

अुपवास सम्बन्धी बापूके विचार छांटकर सूत्ररूपमें पिछले भागकी प्रस्तावनामें दिये गये हैं। अिस भागमें भी अुपवासके दो बहुत बड़े अवसर आते हैं। अेक अिक्कीस दिनका आत्मशुद्धिका अुपवास और दूसरा सजा हो जानेके बाद हरिजन-कार्यकी पूरी सुविधा प्राप्त करनेके लिअे किया गया अुपवास। पहले अुपवासकी तुलना हिन्दू-मुस्लिम अेकताके लिअे १९२४ में दिल्लीमें किये गये अिक्कीस दिनके अुपवासके साथ करनेका विचार आ सकता है। पर दोनोंमें बड़ा फर्क है। खुद गांधीजीने ही कहा है कि यह अुपवास मेरे दूसरे प्रसिद्ध अुपवासोंसे निराला है। १९२४ का अुपवास कोहाटकी घटनाओंके साथ सम्बन्ध रखता था। गांधीजीका खयाल था कि वहां जो कुछ हुआ, अुसमें अुनका भाग था। अुसके प्रायश्चित्तके रूपमें वह अुपवास था। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही अुनकी बात सुननेवाले नहीं हैं, अिसलिअे यह स्वीकार करके कि फिलहाल अुनकी हार हो गअी है, अुपवासके द्वारा प्रायश्चित्त करके वे अनुकूल अवसरकी बाट देखनेके लिअे शांत हो गये। यह अवसर अुन्होंने बंगाल, बिहार और पंजाबके भयंकर कत्लेआममें और कलकत्ते व दिल्लीके दंगोंमें देख लिया और अुनके विरोधमें लड़ते हुअे प्राण दे दिये। यह अुपवास प्रायश्चित्त नहीं, बल्कि अेक शुद्धियज्ञ था, महादेवभाअीके शब्दोंमें 'अेक अनोखा अग्निहोत्र' था। यह अुपवास कोअी अेक शरीरके कायम रहने तकका अुपवास नहीं था, परन्तु अुसके पीछे विचार यह था कि अुनका शरीर अुपवास करते-करते नष्ट हो जाय, तो बादमें दूसरे शुद्धचरित्र व्यक्ति अुस अुपवासकी शृंखला या सिलसिला जारी रखें। अैसे महायज्ञके बिना अस्पृश्यताकी भयंकर बलाका अन्त असंभव दिखाअी देता था। हरिजनसेवक काम करनेको विशेष रूपमें प्रोत्साहित हों, अपने कामकी गति बढ़ायें, यह भी अेक अुद्देश्य अिस अुपवासका माना जा सकता है। साथियोंकी शिथिलता, कमजोरी या अशुद्धियोंके लिअे वे अपने आपको जिम्मेदार मानते थे; अुन्हें अैसा महसूस होता था मानो वे अुनकी अपनी ही हैं। अुनका

हृदय अपने छोटेसे छोटे साथीके साथ अितनी अेकता अनुभव करता था। अिसीलिअे वे कहते थे कि असलमें यह अुपवास मेरे अपने ही विरुद्ध है, आत्मशुद्धिका महायज्ञ है और आत्मशुद्धिमें तमाम साथियोंकी शुद्धि तो आ ही जाती है। पर अिस अुपवासका ज्यादा विवेचन यहां मैं क्यों करूं? अिस अुपवासकी प्रेरणा अुन्हें क्योंकर हुअी; वह प्रेरणा अीश्वरी कही जा सकती है या नहीं; सनातनी अिस अुपवासको अपने पर अेक और बलात्कार कहते थे, परन्तु अिस अुपवासमें तो बलात्कारकी गंध तक नहीं थी; केवल शरीरसे भोजन करना बन्द हो जानेसे अुपवास नहीं होता, बल्कि अुसमें मनका भी साथ होना चाहिये, चित्त और आत्माका शरीरके साथ सहयोग होना चाहिये, भोजनका विचार तक न आना चाहिये और अन्तःकरणसे अीश्वरके साथ अेकरूप हो जाना चाहिये; अुपवास अेक प्रार्थना ही है, और थोड़े-बहुत अनशनके बिना प्रार्थना हो ही नहीं सकती; — यह सब गांधीजीने अिस प्रायोपवेशन पर अपने लेखोंमें, जो पुस्तकके दूसरे परिशिष्टमें दिये गये हैं, अितनी अच्छी तरह समझाया है कि मुझे पाठकोंसे अुस परिशिष्टके पंद्रह पृष्ठोंको पढ़ने और मनन करनेकी सिफारिश करके रुक जाना चाहिये।

दूसरा अुपवास राजबन्दीकी हैसियतसे हरिजनकार्य करनेकी जैसी सुविधाअें अुन्हें थीं, वैसी ही सुविधाअें सजा पाये हुअे कैदीके रूपमें भी पानेके लिअे था। अुसमें भी गांधीजीकी दृष्टि सरकारको धमकी देनेकी नहीं थी। गांधीजीने यह अुपवास अिसलिअे किया था कि अुन्हें "सरकारका यह अन्याय बरदाश्त करके जीना असंभव मालूम होता था कि यरवदा-समझौता स्वीकार करनेके बाद वह गांधीजीके हरिजनकार्य करनेमें रुकावट डाले।" अेंड्रूजने अुनसे कहा कि राजबन्दीकी हैसियतसे और दूसरे कुछ खास कारणोंसे सरकारने आपको हरिजनकार्यकी छूट दी थी, पर सजा पाये हुअे कैदीकी हैसियतसे तो वह नहीं मिल सकती। अुसके जवाबमें गांधीजी कहते हैं: "अिसमें धर्मकी बात न हो तो मैं लड़ूं ही नहीं। सजा पाये हुअे कैदीकी हैसियतसे यहां लाकर ये सुविधाअें छीन लेना मुझे तो सरकारका दुगुना अन्याय लगता है।"

यह और दूसरे तमाम अुपवास अुन्होंने मरनेकी अिच्छासे नहीं, परन्तु जीनेकी अिच्छासे और सेवा करनेकी अधिक योग्यता प्राप्त करनेके लिअे किये हैं। अन्याय और अशुद्धिका अुन पर अितना असर होता था और अिनकी वेदना अुन्हें अितनी असह्य मालूम होती थी कि अुसका प्रतिकार किये बिना वे जीवन कायम ही नहीं रख सकते थे। अहिंसक मनुष्यकी हैसियतसे अुनके सामने अपने प्राणोंकी बाजी लगाकर प्रतिकार करनेका रास्ता ही खुला रहता था।

और अुपवास द्वारा प्रतिकार करके वे अपार शांति अनुभव करते थे। अिस प्रकार अुपवाससे अुन्हें जीनेकी संभावनाका मार्ग मिल जाता था। अुपवासके कारण मृत्यु हो जाय, तो अुसे मित्र समझकर अुसका आनन्दपूर्वक आलिंगन करनेकी अुनकी पूरी तैयारी रहती थी। पर अुपवासकी प्रतिज्ञाकी मर्यादामें रहकर वे जीनेकी पूरी कोशिश करते थे। २१ दिनके अुपवासका निश्चय हफ्तेभर पहले कर डाला था और जाहिर भी कर दिया था। अिसलिअे मित्रोंने अुपवास करनेसे रोकनेकी काफी कोशिश की। देवदासने बड़े आवेशके साथ बापूसे कहा कि "आपका दिमाग कमजोर हो गया है, अिसलिअे आप दूसरा कुछ सोच नहीं सकते और घूम फिरकर अुपवास पर आ पहुंचते हैं। . . . यह साफ कहनेके बजाय कि मुझसे कुछ होता नहीं है, आप कहते हैं कि आत्मशुद्धिके लिअे अुपवास करता हूं।" राजाजी कहते हैं: "मेरे खयालसे जेलमें रहकर अेक की अेक बात मनमें घोटते रहनेसे आप तारतम्य बुद्धि गंवा बैठे हैं। आपमें प्रयोग करनेका बहुत बड़ा कुतूहल है। आप यह मौतके साथ प्रयोग कर रहे हैं। अिसमें आप गलत रास्ते चले गये।" महादेवभाअी शुरूमें थोड़ी बहस करते हैं, मगर बादमें श्रद्धा रखकर शांत हो जाते हैं। तब बापू अुनसे कहते हैं: "तुम श्रद्धासे देखो सो तो ठीक है, पर बुद्धिको काममें लेना चाहिये और कारणोंकी अच्छी तरह छानबीन कर लेनी चाहिये। तभी तुम मेरा बहुतसा काम हलका कर सकोगे।" अैसे मामलोंमें बापूके साथ बहस या चर्चा करना बेकार है, यह सोचकर जब सरदार कुछ बोलते ही नहीं, तब बापू महादेवभाअीसे पूछते हैं: "क्या वल्लभभाअी अभी तक मुझसे नाराज हैं?" महादेवभाअी कहते हैं: "नाराजी क्या हो सकती है? दुःख है। यह न समझिये कि अुनकी सम्मति है।" पर सरदारने खुद तो श्रद्धासे मान लिया है कि "भगवान जो करेंगे अच्छा ही करेंगे।" अुपवास शुरू होनेसे पहले सर पुरुषोत्तमदासको लिखे हुअे पत्रमें अुन्होंने अपनी विचारसरणी बहुत स्पष्ट कर दी है: "किसीकी धार्मिक प्रतिज्ञाको तुड़वानेका निष्फल प्रयत्न करनेके पापमें हम क्यों पड़ें? हिन्दू धर्मका प्रामाणिक और सतत पालन करनेवाला आज कौन है? अगर होता तो आज हमारी यह दशा न होती। तब अैसा धार्मिक पालन करनेवाला जो अेक व्यक्ति हमारी जानकारीमें है, अुस अेककी भी ली हुअी प्रतिज्ञाको सगे-सम्बन्धी या स्नेही आग्रह करके छुड़वा सकते हैं, यह मान लिया जाय तो भी अुससे हिन्दू धर्म या देशको क्या लाभ होगा? मेरी अल्पमतिके अनुसार तो अिससे अुलटा ही नतीजा निकलेगा। अिसलिअे अुन्हें रोकनेके प्रयासको मैं अनुचित और बेकार समझता हूं।"

हरअेकने अपनी-अपनी मनोवृत्तिके अनुसार अिस अुपवासको देखा। देवदासने सचाअीके साथ पिताका विरोध करके बहादुरी दिखाअी, राजाजीने अपनी बुद्धिके प्रभावसे परिस्थितिका विश्लेषण किया, महादेवभाअीने शुरूमें अपनी घबराहट जाहिर कर दी, पर बादमें बापू पर श्रद्धा रखकर चुप हो गये और सरदारने अपनी आन्तरिक अीश्वरश्रद्धा पर पहलेसे ही भरोसा करके अपना योद्धापन प्रगट किया। ६४ वर्षकी अुम्रमें गांधीजीके जैसा शरीर अिक्कीस दिनके अुपवासमें टिक नहीं सकेगा, भौतिक विज्ञानकी दृष्टिसे अैसा महसूस होते हुअे भी गांधीजीका कहना यह था कि "मेरी रामभक्ति हृदयकी होगी, तो यह शरीर नष्ट होगा ही नहीं।" अुपवास निर्विघ्न पूरा हुआ और अुसके परिणामस्वरूप हरिजनसेवकोंमें जबरदस्त शुद्धिकी लहर दौड़ गअी। मित्रोंका डर झूठा निकला और गांधीजीकी बात सच साबित हुअी।

अस्पृश्यताके बारेमें शास्त्रियोंके साथकी चर्चा अिस पुस्तकमें भी जारी ही है। अुसमें हमारे पोथीपंडित शास्त्रियोंकी जड़ता और कभी-कभी अपने स्थापित हितों और स्वार्थोंकी रक्षा करनेकी चिन्ता व्यक्त होती है। मदुराके अेक शास्त्ररत्नके साथका संवाद तो बड़ा मजेदार है। वे ठेठ मदुरासे शास्त्रार्थ करने बड़े अुत्साहसे आये होंगे और ग्रन्थस्थ शास्त्रोंके बड़े पंडित भी होंगे, पर गांधीजीके साथकी चर्चामें तो मानो अुनका शास्त्रज्ञान भोंथरा पड़ जाता है और वे अेकके बाद अेक अैसी बेहूदा बातें कहते जाते हैं कि कोअी महामूर्ख भी अुस हद तक नहीं जायगा।

अिन चर्चाओंके सिलसिलेमें गांधीजीने शास्त्र किसे कहते हैं, अिस बारेमें जो अुद्गार प्रगट किये हैं, वे हृदयमें अंकित कर लेने लायक हैं:

"शास्त्रका अर्थ वे वचन नहीं, जो पूर्वकालमें अनुभवी लोग कह गये हैं, बल्कि अुन देहधारियोंके वचन जिन्हें आज अनुभवज्ञान यानी ब्रह्मज्ञान हुआ है। शास्त्र नित्य मूर्तिमंत होते हैं। जो केवल पुस्तकोंमें है, जिसका अमल नहीं होता, वह या तो तत्त्वज्ञान नहीं है या मूर्खता या पाखंड है। शास्त्र तत्क्षण अनुभवगम्य होना चाहिये, कहनेवालेके अनुभवकी बात होनी चाहिये। अिसी अर्थमें वेद नित्य हैं, दूसरा सब वेद नहीं परन्तु वेदवाद है।"

अिन शास्त्रियोंके साथकी चर्चाकी तुलनामें राजाजीने हिन्दू धर्मको सादा रूप देनेकी जरूरत पर गांधीजीसे जो चर्चा की थी, वह ताजगीभरी, रसप्रद और विचारप्रेरक है।

गांधीजीने जेलमें हरिजनोंके लिअे अुपवास किये और अस्पृश्यता-निवारणका काम करनेकी सुविधाअें प्राप्त कीं, अिससे सविनयभंगकी लड़ाअीको बड़ा

धक्का पहुंचा है, यह युवकवर्गकी, खास तौर पर समाजवादी विचार रखने-वाले मित्रोंकी, शिकायत थी। गांधीजी कहते थे : "मैं जेलमें आ गया यानी सत्याग्रहीकी हैसियतसे मुझे जो कुछ करना था, वह मैं कर चुका। अन्दर आनेके बाद मुझमें और कुछ भी करनेकी शक्ति है, अिसलिअे वह कर रहा हूं। लेकिन किसी शर्त पर मैं बाहर तो निकलूंगा नहीं, और नहीं निकला।" "अिस अस्पृश्यता-निवारणके आन्दोलनकी कल्पना अिस तरह की गअी है कि किसी भी कांग्रेस कार्यकर्ताको अपना काम न छोड़ना पड़े। जिसके पास दूसरा काम न हो, या जो दूसरा काम करता न हो, अैसे आदमीके लिअे ही यह काम है। जिस कांग्रेसीको अैसा लगे कि मैंने तो प्रतिज्ञा ली है और अुसका मुझे पालन करना ही चाहिये, वह अपने काममें लगा रहे।" यह बात अुन्होंने अपने अुदाहरणसे साबित कर दिखाअी है। अिक्कीस दिनके अुपवासमें अुन्हें छोड़ दिया गया, अुसके बाद तबीयत जरा ठीक हुअी कि वे केवल हरिजनकार्य करने नहीं बैठ गये, बल्कि लड़ाअीको व्यवस्थित करनेका प्रयत्न शुरू कर दिया और महासमितिके जो सदस्य बाहर थे, अुनकी पूनामें अवैध (अिन्फॉर्मल) परिषद की। कुछ लोग लड़ाअीको बिना शर्त स्थगित कर देनेकी रायके थे। अुन्हें अिस प्रस्तावकी कायरता और अिससे होनेवाली राष्ट्रकी हानि समझाअी। कुछने लड़ाअीको स्थगित करके रचनात्मक कार्यक्रमको अपनानेकी बात की, तो अुन्हें भी समझाया कि हममें सविनयभंगकी शक्ति न हो तो ये तमाम कार्यक्रम किसी कामके नहीं। थककर तो हम लड़ाअी वापस ले नहीं सकते। बादमें लड़ाअीको और भी तेज और स्वच्छ बनानेके लिअे सामूहिकके बजाय व्यक्तिगत सविनयभंग जारी रखनेका प्रस्ताव पास कराया। और व्यक्तिगत सविनयभंगकी खूबी समझाअी: "व्यक्तिगत सविनयभंगमें हरअेक आदमी अपना नेता बन जाता है और अपनी जिम्मे-दारी पर काम करता है। वही अपना सेनापति और वही अपना सिपाही होता है। वह दृढ़ निश्चयसे अपने काममें लग जाता है और बाकी लोग जीते हैं या मरते हैं, अिसकी परवाह नहीं करता। वह सब कुछ बुद्धिपूर्वक अीश्वरके हाथोंमें सौंप देता है।" "सामूहिक सविनयभंगमें अधिक मनुष्य भेड़ोंकी तरह काम करते हैं। नेता कहता है वैसा ही करते हैं। . . . व्यक्तिगत सविनयभंगमें हरअेक आदमी अपना नेता हो जाता है। अेक मनुष्य कमजोर पड़ जाता है, तो अुसका असर दूसरे आदमी पर नहीं पड़ता। अेक करोड़ आदमी भी व्यक्तिगत सविनयभंग कर सकते हैं। . . . हरअेक आदमी अेक ही अुद्देश्यसे और अेक ही झंडेके नीचे काम करता होना चाहिये। सब

अेक दूसरेसे स्वतंत्र होते हुअे भी अेक ही दिशामें खींचनेको जोर लगायें। व्यक्तिगत सविनयभंगकी खूबी तो अिसमें है कि अुसमें हार जैसी चीज ही नहीं रहती। कोअी दुनियावी सत्ता कितनी ही वलवान क्यों न हो, तो भी व्यक्तिगत सविनयभंग करनेवालोंको हरा नहीं सकती। . . . सत्याग्रहमें व्यक्तिगत सविनयभंगका शस्त्र अमोघ और अजेय है।"

बादमें गांधीजी पूनासे अहमदावाद गये। आश्रममें जाकर आश्रमवासियोंसे सलाह-मशविरा किया कि जब कर-बन्दीकी लड़ाअीमें भाग लेनेवाले किसानोंकी जमीन और घरबार सरकारने छीन लिया है और अुनके कुटुम्ब मारे-मारे फिर रहे हैं, तब जेलमें जानेवाले आश्रमवासियोंके और दूसरे परिवारोंका आश्रममें रहना या घरबारकी सुविधाअें भोगना आश्रमवासियोंको शोभा नहीं देता। आश्रम भी यद्यपि लगान नहीं चुकाता, पर सरकार सिर्फ जंगम सम्पत्ति जब्त करके लगान वसूल कर लेती है और हमारी जमीन या मकान जब्त नहीं करती। अिसलिअे हमें स्वेच्छासे आश्रमसे चले जाना चाहिये और वेघरवार हुअे किसानोंके साथ रहना और अुनके जैसे दुःख भोगना चाहिये। और अैसा करने पर पकड़े जायं, तो जेलमें जाकर रहना चाहिये। जिन्हें अिस सत्याग्रहमें शरीक न होना हो, वे अपने-अपने घर चले जायं या जहां जाना हो वहां चले जायं, पर सब आश्रम तो छोड़ ही दें; और हम सरकारको सूचित कर दें कि वह आश्रमके मकानों और जमीन पर कब्जा कर ले।

आश्रमका बड़ा पुस्तकालय, जिसमें गांधीजीका दक्षिण अफ्रीकासे लाया हुआ पुस्तकालय भी था और जिसमें कुल मिलाकर दस हजारसे ज्यादा पुस्तकें थीं, अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटीको सौंप दिया गया। आश्रमकी गोशालाके सारे पशु दूसरी व्यवस्था होने तक अहमदावादके पींजरापोलको सौंप दिये गये। आश्रमके छोटे वच्चोंको अनसूयावहनकी सीधी देखरेखमें चलनेवाले हरिजन छात्रालयमें भेज दिया गया और पहली अगस्तको सवेरे बापूजी और महादेवभाअीके अलावा १६ भाअियों और १६ वहनोंको मिलाकर ३४ आदमियोंने रासकी तरफ पैदल कूच करनेकी सरकारको खबर दे दी। अिन ३२ भाअी-बहनोंको आधी रातमें आश्रमसे और बापूजी तथा महादेवभाअीको अहमदावादसे ३१ तारीखको ही पकड़ लिया गया। अिस प्रकार गांधीजीने व्यक्तिगत सविनयभंगके अेक कार्यक्रमके रूपमें साबरमती सत्याग्रह आश्रमका विसर्जन कर दिया।

जब तक स्वराज्य न मिल जाय, तब तक साबरमती आश्रममें आकर न रहनेकी प्रतिज्ञा करके गांधीजीने १९३० के मार्चकी १२ तारीखको आश्रमसे जो दांडी-कूच की थी, अुसे महादेवभाअीने महाभिनिष्क्रमण कहा है। १९३३ की

पहली अगस्तके दिन तमाम आश्रमवासियोंने आश्रम छोड़ दिया। अिसमें आश्रमवासियोंका अेक प्रकारका त्याग तो था ही, पर गांधीजीका तो वह महाबलिदान ही था। कारण आश्रम गांधीजीके जीमें आये वैसे विविध प्रकारके प्रयोग करनेकी अेक प्रयोगशाला थी। अपने अूंचेसे अूंचे आदर्शोंकी साधना गांधीजी आश्रमके द्वारा करते थे। आश्रमके द्वारा अपने आध्यात्मिक 'कम्युनिज़्म' का प्रयोग कर दिखाकर देशके या संसारके चरणोंमें भेंट करनेकी अुनकी महत्त्वाकांक्षा थी। पर अैसे आश्रमवासी कहां थे, जो अुनके आदर्शोंको अपना सकें और जीवनमें व्यक्त कर सकें? अेक विनोबा और अैसे दो-चार और होंगे, पर बाकीके सबमें तो यह ताकत थी ही नहीं। कुछ आश्रमवासियोंके पतनके और आश्रममें पैदा हुअी दलबन्दीके समाचारोंसे बापू कुछ समयसे आश्रमके बारेमें बेचैन तो रहते ही थे। सरदारने तो बातों ही बातोंमें कह भी दिया था कि "आश्रम बहुत बड़ा हो गया है। अुसमें कुछ बेकार लोग आ घुसे हैं। अुन्हें निकाल दीजिये। चलनीमें भूसा तो बार-बार डलता रहा है। अेक बार छानकर भूसेको अलग ही कर दीजिये।" गांधीजीने भी यह बात स्वीकार की थी। ये सारे प्रसंग अुनके मन पर अपना काम अनजाने भी कर तो रहे ही होंगे। आश्रमके विसर्जनके लिअे निमित्त तो बना व्यक्तिगत सविनयभंग, पर अुन्हें मालूम न पड़ते हुअे भीतर ही भीतर आश्रमके विसर्जनके निर्णयमें ये सब बातें भी मदद दे रही हों तो कोअी आश्चर्य नहीं।

३१ जुलाअीकी रातको गिरफ्तारीके बाद गांधीजी और महादेवभाअीको साबरमती जेलमें और वहांसे यरवदा जेलमें ले जाया गया। यरवदा जेलमें आते ही मालूम हुआ कि अुनके दो पुराने साथियोंमें से सरदारको ऑपरेशनके लिअे बम्बअी ले गये हैं और छगनलाल जोशीको सेपरेटमें रखा है। बादमें जब पता चला कि सरदारका ऑपरेशन हुआ ही नहीं और अुन्हें सीधे नासिक ले गये हैं, तब गांधीजी पर अिसका बहुत असर हुआ और अुन्होंने ये अुद्‌गार प्रगट किये: "अिस तरह अिन लोगोंने वल्लभभाअीको भी धोखा ही दिया न? वे बेचारे तो यही मानते थे कि ऑपरेशनके लिअे ले जा रहे हैं। कैसी नीचता है?" "यह घाव जल्दी भरनेवाला नहीं है।" वल्लभभाअीका अिस तरह अलग किया जाना अुन्हें बहुत चुभता था। और छुटपनमें भर्तृहरि नाटक देखा था, अुसकी अेक पंक्ति 'अे रे जखम जोगे नहीं मटे' को वे बार-बार याद करते थे।

४ अगस्तको सवेरे छोड़कर नोटिस देने और अुसको भंग करने पर फिर पकड़ लेनेके बाद यरवदा जेलमें लाकर मुकदमा चलानेका नाटक

किया गया। गांधीजी और महादेवभाअीको अेक-अेक सालकी सजा हो गअी, अिसलिअे राजवन्दी न रहकर वे सजा पाये हुअे कैदी वन गये। सजा पाये हुअे कैदीकी हैसियतसे खाने-पीनेके मामलेमें जेलके अधिकारियोंने छोटी-छोटी वातोंमें तंग करनेका अपना रुख वताया। और जव गांधीजीने लिखा कि 'अ' वर्गके भोजनके अलावा और कुछ न देनेका हुक्म हो, तो 'क' वर्गका ही भोजन देना शुरू कर दीजिये, अुसके वाद ही अुन्हें डॉक्टरी कारणोंसे वांछित खुराक देना और अुसका सारा खर्च अस्पतालके खातेमें डालना शुरू किया। पर यह तो तुच्छ वात थी। महत्त्वकी वात तो पहलेकी तरह हरिजनकार्य करनेकी सुविधा पानेकी थी।

गांधीजीने सावरमती जेलसे ही पहलेकी तरह हरिजनकार्य करनेकी सुविधा देनेके लिअे सरकारको पत्र लिख दिया था। यरवदा आनेके वाद अिस सिलसिलेमें ज्यादा लिखा-पढ़ी हुअी। आखिर गांधीजीने छोटासा और साफ पत्र लिख डाला कि "हरिजनकार्यके विना मेरा जीवन असंभव है। यरवदा-समझौतेके अनुसार आप यह काम करने देनेके लिअे वंधे हुअे हैं। मेरी मांग वाजिव मालूम हो तो मंजूर कीजिये, नहीं तो मुझे मर जाने दीजिये।" ता० १६ को अुपवास शुरू हो गया अुसके वाद सरकारका आखिरी हुक्म लेकर सुपरिंटेंडेंट आये। वापूको थोड़ी देरके लिअे अुससे सन्तोष हो गया और वे अुपवास तोड़नेको तैयार भी हो गये। पर अिस वार अुन्हें महादेवभाअीने वचा लिया। अुन्हें अिस हुक्मसे सन्तोष नहीं हुआ था, अिसलिअे वापू चेते। अिस हुक्ममें तो सरकारकी नीचता है, अुसे कैसे सहन किया जा सकता है? यह कहकर अुपवासका अपना निश्चय कायम रखनेकी वात सरकारको लिख दी और महादेवभाअीसे कहा कि, "अव तुम पर थोड़ा दोष तो आयेगा कि अिस आदमीने अुपवास जारी रखवाया। . . . अिसी तरह मुझे अपनी कमजोरीसे वचाते रहना।"

अन्तमें २० तारीखको गांधीजीको सासून अस्पताल ले गये और महादेवभाअी वापूसे विछुड़ गये। यहीं यरवदा जेलकी यह डायरी पूरी हो जाती है। जैसा अूपर कहा गया है, अिसमें हमें आत्म की कलाके तेजसे चमकते हुअे वापूके जीवनके अेक भव्य प्रकरणकी झांकी मिलती है।

अिस डायरीके साथ अुससे सम्वन्ध रखनेवाले पांच परिशिष्ट जोड़ दिये गये हैं। 'हरिजन' पत्र शुरू होनेसे पहलेके गांधीजीके वक्तव्योंमें से जो दूसरे भागमें दे दिये गये थे, अुनके अलावा वाकीके वक्तव्य पहले परिशिष्टमें दिये गये हैं। दूसरा परिशिष्ट अिक्कीस दिनके अुपवास पर खुद गांधीजीके लिखे

हुअे लेखोंका है और अुसका नाम 'दूसरा प्रायोपवेशन' है। तीसरे परिशिष्टमें अिक्कीस दिनके अुपवास पर महादेवभाअीके 'अेक अनोखा अग्निहोत्र' नामसे लिखे हुअे लेख हैं। चौथे परिशिष्टमें हरिजनकार्य करनेकी आजादीके लिअे गांधीजीका सरकारके साथ हुआ पत्रव्यवहार दिया गया है। और पांचवें परिशिष्टमें अिक्कीस दिनके अुपवासके दिनोंमें जब गांधीजीको छोड़ दिया गया, अुस समय लड़ाअी छः सप्ताह तक मुलतवी रखनेके लिअे दिया हुआ वक्तव्य, साबरमती आश्रमकी जमीन और मकानों पर कब्जा करनेके लिअे बम्बअी सरकारको लिखा गया पत्र और यरवदा जेलमें अुन पर जब मुकदमा चला था अुस समयका अदालतमें दिया हुआ अुनका बयान, ये तीनों चीजें दी गअी हैं।

सासून अस्पतालसे छोड़ दिये जाने बाद गांधीजीने 'मेरे प्राण' शीर्षक अेक छोटा-सा लेख लिखा है। अुस पर २३-८-'३३ तारीख लगी है। अिससे साफ मालूम होता है कि गांधीजी २३ तारीखको छूटे। पर गांधीजीके लिखे हुअे अेक और पत्रमें यह लिखा है कि मरनेकी आखिरी तैयारी अुन्होंने २४ तारीखको की। यह तारीख ज्योंकी त्यों रहने दी है।

नरहरि परीख

अनुक्रमणिका

महादेवभाओीकी डायरी

तीसरा भाग

[२-१-'३३ से २०-८-'३३ : यरवदा जेल समाप्त]

आश्रमकी डाक अिस वार थोड़ी लिखी। थोड़ी-थोड़ी करते भी २७ पत्र हो गये। हरअेकमें प्रेम और आशीर्वादकी दो लकीरें होतीं। पिछले सप्ताह गोविन्द रावने अेक छोटासा पत्र भेजा था। अुसमें अेक विशपकी वात थी। वह अेक पहाड़ी पर चढ़ रहा था। अुसी समय अेक छः सात वर्षकी लड़की अपने दो सालके भाअीको कंधे पर लेकर चढ़ रही थी और हांप रही थी। विशपने कहा: अरे, यह लड़का तो तेरे लिअे वहुत भारी है।

२–१–'३३

लड़कीने जवाव दिया: जरा भी भारी नहीं। यह तो मेरा भाअी है।

अिस पर वापूने लिखा:

"आपका प्रेमपूर्ण पत्र मिला। कितना महान विचार है! 'यह भारी नहीं, यह तो मेरा भाअी है।' भारीसे भारी चीज पंख जैसी हलकी वन जाती है, जव प्रेम अुसे अुठानेवाला होता है।"

लड़कीने अपने अेक वचनसे अेक वड़ा काव्य वना डाला। वापूने अुस पर दो पंक्तियोंका महाभाष्य कर दिया!

नारणदासभाअीके पत्रमें अुपवासके वारेमें अेक लकीर लिखी:

"अव तो अुपवासके नगाड़े वजने लगे हैं। कन्हैयाको फिर वजाना होगा।"

'हिन्दू' का संवाददाता:

सवाल: धर्मके काममें हस्तक्षेप करनेकी रानीकी घोपणाकी नीतिका भंग होनेकी जो वात सनातनी कहते हैं, अुसके वारेमें आपका क्या कहना है?

वापू: मेरी रायके अनुसार धर्मके मामलेमें सरकारकी तटस्थताका भंग होनेका यहां विलकुल प्रश्न ही नहीं है। जो सुव्वारायणके विलका विरोध कर रहे हैं, वे तटस्थता शव्दका क्या अर्थ करते हैं यह मैं नहीं जानता। अिस विशाल प्रश्नमें अुतरे विना मैं अितना कह सकता हूं कि डॉ० सुव्वारायणका विल ब्रिटिश अदालतके फैसलेसे होनेवाले हस्तक्षेपको सुधारनेके लिअे है। यह हस्तक्षेप जानवूझकर किया गया था या मेरे अर्थके अनुसार

यह हस्तक्षेप था यह मैं नहीं वताना चाहता। सनातनियोंके विचारके अनुसार यह जरूर हस्तक्षेप था। यह हमेशा याद रखना चाहिये कि डॉ० सुब्बारायणका विल मद्रासके कानूनको, जो धार्मिक स्वरूपका है, सुधारनेके लिअे है। अिस प्रकार सनातनियोंके अर्थके मुताविक तो यह तटस्थताका दूसरा भंग माना जायगा। किन्तु अिस विलकी शांतिसे जांच की जाय, तो मालूम होगा कि यह हिंदुओं पर किसी तरहका दवाव डालनेवाला नहीं है। यह तो सिर्फ मंदिरोंमें जानेवाले लोगोंकी मन्दिरप्रवेशके मामलेमें क्या अिच्छा है, यही जान लेनेवाला है। और, वह सारे हिन्दू समाजकी अिच्छा नहीं जानना चाहता, वलिक खास-खास मंदिरोंके वारेमें राय देनेका जिन्हें हक है, अुन्हींकी अिच्छा जानना चाहता है। अिस प्रकार अिस विलमें किसीके भी धर्ममें हस्तक्षेप होता मुझे दिखाअी नहीं देता। अिस विलसे तो मन्दिरप्रवेशके विरोधियों और हिमायतियों दोनोंकी रक्षा होती है।

स० : १९२३ में पनगलके राजाने 'अेन्डाअुमेंट्स विल' पेश किया था, तव अैसा ही अेतराज अुठाया गया था। अुसके जवावमें अुन्होंने कहा था कि, 'रानीकी घोषणाके समय सरकारकी जो स्थिति थी, अुसमें अव फेरवदल हो रहा है। धार्मिक दान (रिलीज्यस अेण्डाअुमेन्ट्स) अव मंत्रियोंकी हुकूमतके नीचे आ रहे हैं।'

वापू : मैं समझा। तव तो यह समयका ही सवाल है। सनातनियोंने विलके खिलाफ आन्दोलन अुठाया, अुससे पहले लोगोंके मनमें तो कोअी शंका ही नहीं थी।

स० : रामचरणराव कहते हैं कि यह तो विश्वासघात होगा।

वापू : मान लीजिये कि यह विल पास हो जाता है, तो भी अेक और काम तो वाकी ही रहता है। मंदिरमें जानेवालोंकी मतगणना करनी चाहिये। जामोरिनको अुसे मानना ही पड़ेगा। अिसलिअे जामोरिनको मंजूर हो अुस तरहकी मतगणना की जाय। ये सव कदम स्वाभाविक तौर पर अुठाये जायं, तो अुपवास न करना पड़े। किन्तु अुसकी संभावना तो मौजूद ही रहती है।

वाअिसरॉयकी मंजूरी न मिले, तो मुझे भय है कि अुपवास करना पड़ेगा। परन्तु अिस सवालमें मैं अभी नहीं अुतरना चाहता।

स० : हम नये मंदिर क्यों न वनवा लें?

वापू : जव तक मुझे यह विश्वास न हो जाय कि मंदिरोंमें जानेका अधिकार रखनेवाले सभी लोग हरिजनोंके मंदिरप्रवेशके विरुद्ध हैं, तव तक यह सवाल पैदा नहीं होता। यदि मंदिर जानेवाले लोग यह कहते हों कि हरिजनोंके जानेसे

मंदिरकी पवित्रता बढ़ेगी तो सनातनियोंकी यह बात अप्रस्तुत है कि पवित्रता घटेगी। सुधारककी हैसियतसे हम तो यही चाहेंगे कि मंदिरोंकी पवित्रता बढ़े।

अे० पी० आओ० को:

बापू: मैंने तो यह सूचना की थी कि हर रोज अमुक समय तक मंदिर हरिजनोंके लिअे और अुन हिन्दुओंके लिअे खुला रहे, जिन्हें हरिजनोंके आनेमें कोओी अेतराज न हो; और अमुक समय तक अुन लोगोंके लिअे खुला रहे, जिन्हें हरिजनोंके मंदिरप्रवेश पर बाधा है। कार्तिकी अेकादशीके दिन अिस मंदिरमें हरिजनोंको दूसरे हिन्दुओंके साथ-साथ जाने दिया जाता है, अिस बातको ध्यानमें रखते हुअे मेरी सूचनाको स्वीकार करनेमें कोओी आपत्ति नहीं होनी चाहिये। कहते हैं कि कार्तिकी अेकादशीके बाद मंदिर या मूर्तिकी शुद्धि की जाती है। मैं स्वयं अैसी शुद्धिके बिलकुल खिलाफ हूं। परन्तु प्रतिपक्षियोंकी अन्तरात्माको सन्तोष होता हो, तो सिर्फ अिस मामलेमें मैं शुद्धि पर अेतराज नहीं करूंगा। यदि शुद्धि जरूरी ही मानी जाती हो, तो शास्त्र-वचनोंके अनुसार तो कितने ही कारणोंसे हर रोज बार-बार अशुद्धि होनेकी संभावना रहती है। अिस तरह तो हरिजन अन्दर जाते हों या न जाते हों, मंदिरको हर रोज शुद्ध करना चाहिये।

अपने मनके आश्वासनके लिअे किसी मनुष्यको रोज शुद्धि करनी हो, तो मैं अुसे कैसे रोक सकता हूं?

स०: अैसा करनेसे तो हरिजनोंके विरुद्ध भेदभाव खड़ा किया जाता है।

बापू: कैसे? मैं सिर्फ विरोधीकी अन्तरात्माका आदर करता हूं। हरिजनकी हैसियतसे मैं दूसरे मनुष्योंमें घुस जाअूं, यह मुझे शोभा नहीं देता। जब तक मुझे दर्शन करनेको मिलते हैं, तब तक मुझे सामनेवाले आदमीकी भावनाका आदर करना चाहिये। और सुधारक मेरे साथ दर्शन करते होंगे, अिसीसे हरिजनकी हैसियतसे मुझे सन्तोष होना चाहिये।

स०: मैं आशा रखता हूं कि वाअिसरॉय यथासंभव जल्दी ही अिजाजत दे देंगे।

बापू: मैंने बारीकीसे बिलका अध्ययन नहीं किया। अध्ययन करनेके बाद अिस बारेमें निश्चित रूपमें कह सकता हूं।

अिसके बाद अेक ओसाओी, अेक बौद्ध, अेक मुसलमान और दूसरे दो स्वयंसेवकोंने सीलोनमें मंदिर खुलवानेके लिअे जो सत्याग्रह किया था और अुन्हें जो पांच-पांच रुपये जुर्माना हुआ था, अुसके बारेमें जो पत्र आये थे, अुनकी बात करते हुअे अे० पी० आओ० वालेसे कहा कि यह लड़ाओी ही हिन्दुओंकी है। अिसमें परधर्मी अिस तरह सक्रिय भाग ले ही नहीं सकते।

हरिभाअू फाटक निपाणीके राष्ट्रीय शिक्षकको लेकर आये थे। अुन्होंने पूछा था कि राष्ट्रीय शालामें अछूत वालक भले आवें, किंतु वे तो मेट्रिक्युलेशनके लिअे तैयार होना चाहें, तो अुसका क्या किया जाय?

वापूने कहा: हमें अुन्हें यह सुविधा देनी ही चाहिये। जहां शिक्षाका नाम भी नहीं, जहां अुन्हें अंधेरेसे अुजालेमें लाना है, वहां आदर्शकी वात करके क्या करें? अुनके सामने वही चीज रखनी चाहिये जिसकी अुन्हें भूख है। अैसा करनेमें असहयोगी अपने असहयोगके साथ कोअी भी असंगत वात नहीं करता। किन्तु सुसंगत रहनेकी खातिर यही चीज स्पृश्य वच्चोंको भी दे तो यह सुसंगतताका ढोंग करना होगा। फिर अिस भेदका अुदाहरण देकर कहने लगे: हाथीको मन भर देना चाहिये, किंतु विल्लीको हाथीके वरावर थोड़े ही दिया जा सकता है? यद्यपि हाथी और विल्लीके वीच जितना अन्तर है, अुससे सवर्णों और अछूतोंके वीच अधिक अन्तर है। हाथी विल्लीके पीछे दौड़कर अुसे पकड़ नहीं सकता। किन्तु विल्ली यदि हाथीकी पीठ पर पहुंच जाय, तव तो अुस वेचारेकी शामत ही आ जाय।

आज़ मंदिरप्रवेशका सवाल कैसे सामने आ गया है, अिसका कारण समझाते हुअे कहा: सारी घटनाओंका क्रमसे अनुसरण करते रहो। मान लीजिये कि हरिजनोंके पाठशाला-प्रवेशका सवाल होता, तो आज वह सामने आ जाता।

स०: केलप्पनने कहां शर्त की थी जो आप अुपवासकी वात कर रहे हैं?

वापू: साथीसे अुपवास छुड़वानेके वाद अुसकी प्रतिज्ञाका पालन करानेके लिअे वफादार साथी और क्या कर सकता है? आप यह तो नहीं चाहते न कि मैं अेक तत्त्वज्ञानी वनकर सिर्फ सलाह ही दूं और फिर देखता रहूं?

मंदिरप्रवेशका महत्त्व समझाते हुअे वापूने कहा: आप जानते हैं कि सनातनियोंको सिर्फ मंदिरप्रवेश पर ही आपत्ति है? वे कहते हैं कि दूसरा सव कुछ दे दीजिये, किन्तु मंदिरप्रवेश नहीं। वे जानते हैं कि मंदिरप्रवेश हो गया तो और सभी होकर रहेगा। और शरीरकी और कपड़ोंकी सफाअीका ढोंग ये लोग क्या लिये वैठे हैं? आंवेडकर तो स्वच्छ हैं न? आप अुन्हें अपने यहां ठहराते हैं और अपने साथ खिलाते हैं? आप तो वेचारे अिन लोगोंकी परछाअीं भी नहीं पड़ने देते। और वातोंमें शुरुआत कीजिये तो मंदिरप्रवेश भी हो जायगा, यह कहना व्यर्थ है। क्योंकि नियत ही साफ नहीं। गुरुवायुरकी

लड़ाअी वहुत कठिन होनेवाली है, क्योंकि अिस लड़ाअीमें सनातनी अपनी तमाम ताकत आजमायेंगे।

छुआछूत आजकल जैसी पाली जाती है, अुस पर जोर देते हुअे कहा: किसी न किसी रूपमें तो हरअेक आदमी छुआछूत पालता ही है। मैं तो यहां तक कहता हूं कि अस्वच्छ मनुष्य पूरी तरह साफ हुअे विना औरोंको छूनेका आग्रह करे, तो अिसमें जंगलीपन है।

३-१-'३३ पूनाके अछूत विद्यार्थियोंकी मुलाकात हुअी। अुन्होंने अस्पृश्यतानिवारण संवको अर्जी दी थी। अुसमें वताया गया है कि भारतकी औसत आमदनी यदि वहुत कम है, तो अछूतोंकी तो कुछ भी नहीं है।

वापू: यह वात अनुभवसिद्ध नहीं है। स्पृश्य तो कितने ही निष्किंचन हैं, भूखों मरते हैं; जव कि अछूत कम भूखों मरते हैं। वंगालके नामशूद्रोंको लीजिये, मलावारके थियोंको लीजिये या वम्वअीके भंगियोंको लीजिये। वे स्पृश्योंसे वहुत सुखी हैं। भंगियोंमें पुरुष, स्त्री और वच्चे सव कमाते हैं। अैसे तो और भी वहुतसे अुदाहरण मैं दे सकता हूं। जुलाहे कहां भूखों मरते हैं? चमारोंकी हालत तो वहुत अच्छी होती है। अव अुलटे अुदाहरण लीजिये। अुड़ियोंको लीजिये। अुनमें हड्डियां और चमड़ी ही होती हैं। किन्तु ये लोग चमार या भंगीका काम नहीं करेंगे। अुन्हें भूखों मर जाना मंजूर है, किन्तु जो काम अुन्होंने किया नहीं अुसे वे हाथ नहीं लगायेंगे। आप सव अछूतोंकी आमदनी जमा करके औसत निकालें, तो स्पृश्योंकी आयके औसतसे कम नहीं आयेगा।

विद्यार्थी: परन्तु अछूत तो गुलामी करते हैं, मजदूरी करते हैं।

वापू: मैं जानता हूं कि तुम होशियार विद्यार्थी हो। अेक गांवको लेकर अुसके सारे आंकड़े निकालो। मुझे समय होता और मैं मुक्त होता, तो मैं गुजरातके गांवोंकी आर्थिक जांच करता। परन्तु तुम ठक्कर वापासे पूछो।

ठक्कर वापा: मुझ पर जो असर पड़ा है, वह अिन नौजवान मित्रों जैसा ही है। परन्तु मेरे पास हकीकतें और आंकड़े नहीं हैं।

वापू: आप पर यह छाप होगी। पर मैं तो अपनी आंखें खोलकर हरिजनोंके वीच घूमा हूं। मुझे लगता है कि आपकी वातके सवूतके लिअे काफी प्रमाण पासमें हुअे विना अैसा सर्वसामान्य कथन करना ठीक नहीं है।

अिन विद्यार्थियोंका दूसरा सुझाव मुफ्त पाठशालाअें खोलनेका था। अुन्होंने कहा: पूना जिलेके दस तालुकोंमें अछूतोंके लिअे लोकल वोर्डोंकी तीस

ही पाठशालाअें हैं। कर्वे विद्यापीठको आपने लिखा था कि अछूत लड़कियोंके लिअे जगह रखी जाय ?

बापू : मेरा खयाल है कि अिन लोगोंने कहा जरूर था। दूसरी संस्थाओंसे भी यह खबर आअी है कि वे भी लेनेको तैयार हैं।

लड़कोंको बापूने ठक्कर बापा द्वारा लाये हुअे पपीतोंका नाश्ता कराया। अुन्हें कोअी चर्चा तो करनी ही नहीं थी। खूब खुश होकर गये।

ठक्कर बापाने दक्षिणके अनुभव सुनाये। निजाम राज्यमें अन्त्यजोंके हिन्दू शिक्षक भी अुन्हें अिस्लाम स्वीकार करनेकी ही तैयारी कराते हैं। सारी हिन्दू जाति भयभीत है, अैसा चित्र अुन्होंने खींचा।

सीतापुरवाले वैद्य -- जिन्हें देखकर हमें रविशंकरभाअी याद आते हैं -- आये। ये बड़ी कमाअीवाले हैं। सौ रुपया फीस लेनेवाले हैं। ये बापूकी कोहनी अच्छी करनेका बीड़ा अुठाकर सात दिन यहां रहे हैं। बापूने मेजरकी अिजाजतके बिना अुन्हें कोहनी मलने नहीं दी। पर अुनके तेलका प्रयोग तो करेंगे ही।

वल्लभभाअी अपनी आदतके अनुसार अकसर अेक बातको पकड़कर फिर नहीं छोड़ते। आज शामको बातोंमें अुन्होंने यह कहा कि भूतपूर्व जज (Ex-judge) हो तो वह राजनीतिमें भाग न ले।

बापूने कहा : ले सकता है। सरकारी नौकरकी बात अलग है।

वल्लभभाअी बोले : पहले किसी भूतपूर्व जजने राजनीतिमें भाग लिया हो, अैसा अुदाहरण बताअिये।

भूतपूर्व जज यानी रिटायर्ड पेंशनरके अर्थमें यह शब्द अिस्तेमाल किया जा रहा था। मैंने कहा : भूतपूर्व जजसे ज्यादा अच्छा अुदाहरण दत्तका है।

अिस पर कहने लगे : दत्तकी बात मैं नहीं जानता। हम सब खिलखिलाकर हंसे। तो वे बोले : यह अुन दिनों हुआ होगा। आज कोअी भूतपूर्व जज पेंशनर हो जानेके बाद कांग्रेसका अध्यक्ष बने तो सही !

बात गरम होती जा रही थी। अिसमें से फिर मेजरकी बात निकली और यह बात भी निकली कि वह मुलाकातियोंसे अखबार ले लेता है और सुविधाअें देते हुअे डरता है। बापू बोले : यह मानना ही पड़ेगा कि अुसकी मुश्किलें बढ़ी तो हैं।

अिस पर वल्लभभाअी फिर अुबल पड़े : क्या मुश्किल बढ़ी है ? भारत सरकारके हुक्मकी तामील तो करता ही नहीं और मुश्किलें बढ़नेकी बातें बनाता है। सरकारने किस लिअे अैसी छूट दी ? अुसने विचार नहीं किया होगा !

वात वहुत वढ़ती देखकर वापू कहने लगे: वल्लभभाओी, अव ठंड तो जाती ही रही! आज तो पिछले साल हम आये अुस समय जैसा लगता था वैसा ही लग रहा है। दोपहरको तो गरमी लग रही थी!

सवेरे वापूने वातों ही वातोंमें अपने जेल-जीवनकी वात छेड़ी। सादी कैद होने पर भी वे काम करते थे और जव वापूने यह कहा कि अेक वार्डर अैसा कहनेवाला भी मिला था कि 'तुम कम काम करते हो', तो मैंने कहा: तलाशी लेनेवाला रोच भी यहीं मिला था न? अिस आदमीमें तिरस्कारकी ही भावना होगी।

४-१-'३३

वापू: तिरस्कार कुछ नहीं, अुस आदमीकी चालढाल ही अैसी थी।

पहले अेकाध महीने मामूली कैदीकी तरह अुन्हें चटाअी और दो कम्वल ही मिलते थे। पहले दिन खानेको भी नहीं लेने दिया। शंकरलाल रोये थे। वादमें शंकरलालको अलग कर दिया। फिर पींजनेके लिअे आनेकी अिजाजत ली। वादमें लड़कर अुन्हींकी शान्तिके लिये अुन्हें साथ रहनेकी अिजाजत दिलवाअी। यह सव वापूने वर्णन किया। अिन्दुलाल पहले कितने झक्की थे, 'सारे कार्यक्रममें शरीक नहीं हो सकता, अंकुश स्वीकार नहीं कर सकता', अैसी वातें करके अंतिम भागमें चार वजे अुठने लगे, घी छोड़ दिया और कट्टर वन गये। यह भी सुनाया। अिन्दुलाल तो जोशीले आदमी हैं, अैसा कहकर वापूने वात पूरी की। मंजर सोख्ता तो चौवीसों घण्टे मेरे पास ही रहने लगे और तत्त्वज्ञानकी चर्चा करने लगे!

अिससे पहले छगनलाल जोशी और मेरे साथ वातें करते हुअे कहने लगे: सारे आश्रममें आज जो रह गये हैं अुनमें से भी अेक भी न रहे और आश्रम पर सरकार अधिकार कर ले, तो मेरा दिल नाचने लगे। क्योंकि आश्रम पर तो अधिकार कर ही लिया था न! विद्यापीठ पर भी अधिकार कर ही लिया है? और विद्यापीठकी किसी आश्रमसे कम कीमत है? ये लोग सोचें कि विद्यापीठको वेच डालें और किसी अंग्रेजको सौंप दें, या हमारे किसी विरोधीको दे दें, कहें कि ५००० रु० में दे देते हैं, तो भी मेरा मन तो नाचेगा ही।

आज 'सनातनियोंके प्रति' शीर्षकसे अेक विस्तृत अपील सोलहवें वयानके रूपमें तैयार की। सुवह अपने ही हाथसे लिखना शुरू किया। अैसी चीज लिखानेमें अुचित भाषा नहीं निकलती और खुद लिखना ही ठीक पड़ता है। अिस तरह सोचकर लिखना शुरू किया था। लेकिन पूरा न कर सके।

ज्यादातर भाग तो लिखानेको ही रह गया। कल दर्शनोंके समयकी व्यवस्थावाला महत्त्वपूर्ण बयान लिखवाकर प्रकाशित किया।

पंचानन बाबू आये। बोले कि दक्षिणमें मैं कुछ न कर सका। फिर कहने लगे: हिन्दूधर्मकी रक्षा आपसे ही हो सकती है, अिसीलिअे मैं यह कहने आया हूं कि आप कोअी भी कदम जल्दबाजीमें न अुठायें। वे वहां समझौतेका अेक सुझाव दे आये थे कि अस्पृश्य और स्पृश्य दोनोंके लिअे मंदिरमें अेक हद बना दी जाय और अुससे आगे किसीको न जाने दिया जाय।

बापूसे अुन्होंने यह भी कहा: लोग यह आरोप लगाते हैं कि आप अपने पाश्चात्य संसर्गके कारण अैसे विचार रखते हैं। आप पाश्चात्य सुधारोंका हमला तो हरगिज बरदाश्त नहीं करेंगे?

बापू कहने लगे: आपको पता न होगा कि विलायतमें मुझसे यह कहा गया था कि मैं पाश्चात्य सुधारोंका विरोधी हूं। मेरे विरोधका अेक अुदाहरण दूं। विषयभोग करते हुअे भी संतान न होने देनेका प्रचार आजकल हो रहा है। अुसका विरोध करनेवाला मैं अकेला हूं और आपको बता दूं कि सनातनी वर्गके नेताओंमें से बहुतसे संततिनियमनवाले विषयभोगके हिमायती हैं। बूढ़े (पंचानन बाबू) चौंके।

वे कहने लगे: पाश्चात्य सुधार अछूत हैं, और कोअी हो या न हो!

बापू कहने लगे: मैं आपसे सहमत हूं। बापूने सनातनधर्मका अर्थ समझाया और कहा: आजकल कितने ही शास्त्री कहलानेवाले, गालीगलौज और झूठसे सनातन धर्मको बदनाम कर रहे हैं।

बूढ़ेने मंजूर किया कि यह बुरा है।

अन्तमें वे बोले: यह मंदिरप्रवेशकी बात तो अंतमें आती है। पहले अिनके खाने-पीनेकी व्यवस्था कीजिये। 'बुभुक्षितः किं न करोति पापम्?'

बापू बोले: कोअी सनातनी यह व्यवस्था करता है? कराअिये आप यह काम। मन्दिरप्रवेशका काम मैं कर लूंगा।

अन्तमें, वर्णाश्रमधर्म पर बातें चलीं। बूढ़ेने कहा कि यह कहा जाता है कि आप वर्णसंकर करने बैठे हैं।

बापूने कहा: मुझे बहुत समय लग जायगा, नहीं तो मैं आपको अिस बारेमें अपने विचार सुनाअूं।

थोड़ीसी चर्चा की, किन्तु वह तो प्रारंभिक ही थी।

स०: ढाबे और होटल हरिजनोंके लिअे खोल देनेकी सलाह अिस बातका विरोध नहीं करती कि अस्पृश्यता-निवारणके साथ सहभोजनका संबंध नहीं?

बापू: कैसे? यह सहभोजन नहीं है। होटलोंमें तो सभी वर्णोंके लोग आते ही हैं। अुनमें हरिजनोंको जानेकी आजादी होनी चाहिये। होटलोंमें जैसे सब वर्णोंके हिन्दू जाते हैं, वैसे ही हरिजन क्यों नहीं जा सकते?

हलसीका सनातनी मंदिर अछूतोंके लिअे तीन दिन खुला रहता है। मारुति और कपिलेश्वर मंदिर बेलगांवमें खुला है।

अेक महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तरी:

स०: क्या यह ठीक सलाह है कि कुछ कांग्रेस कार्यकर्त्ता सिर्फ अस्पृश्यता-निवारणके काममें पड़ें?

बापू: अिसका जवाब में नहीं दे सकता। मुझे तो आजकल अखबारोंसे ही जानकारी मिलती है। अच्छे अखबारोंकी भी पचास फी सदी बातें न मानने लायक होती हैं। और खराब अखबारोंकी तो सौ फी सदी बातें मुझे नहीं माननी चाहियें। स्वभावसे ही अैसी सलाह देनेमें में असमर्थ हूं। में यहां बैठा हूं, अिसका अर्थ ही यह है कि मैं कांग्रेसका काम सौ फी सदी कर रहा हूं और यह अस्पृश्यता-निवारणका अतिरिक्त काम कर रहा हूं। मेरे अिस काम परसे कोअी यह सार न निकाले कि अुसे सविनयभंगकी लड़ाअी छोड़ देनी चाहिये। जिसे छोड़नी हो वह भले ही छोड़ दे, किन्तु छोड़ना अुसका फर्ज नहीं है।

स०: पर राजाजी अस्पृश्यताका काम कर रहे हैं और आप भी यह काम कर रहे हैं। अिसलिअे बहुतसे लोग सोचते हैं कि आप अस्पृश्यता-निवारणके कामको ज्यादा महत्त्व देते हैं।

बापू: नहीं, मैं यहां पड़ा हूं अिसे मैं सौ फी सदी महत्त्व देता हूं। कानूनी मृत्यु भोगते हुअे भी मैं जितना ज्यादा काम कर रहा हूं। मैं यह नहीं कहता कि और सब काम छोड़कर यही काम करने लायक है। कोअी अैसा अनुमान लगाये, तो वह भूल होगी। मैं यह कहूंगा कि किसीकी तंदुरुस्ती जेलमें जाने योग्य न हो, तो अुसे यह काम करनेका विचार करना चाहिये। देवदासने अखबारवालोंको मुलाकात दी है, किन्तु अुसने अपनी अिच्छासे दी है। अुसके पीछे मेरी प्रेरणा नहीं थी।

स०: नासिक जेलमें हमने अपने कैदियोंमें अस्पृश्यताके काम पर अेक प्रश्नावलि बनाअी है और अेक कमेटी कायम की है, जो रिपोर्ट देनेवाली है।

बापू: अिसका जवाब राजाजी मुझसे ज्यादा अच्छा देंगे।

स०: यह काम करनेके लिअे मंजूरी देनेकी आपने सरकारसे किस लिअे प्रार्थना की?

बापू: राष्ट्रको गढ़नेका यह अेक तरीका है। जंजीरकी मजबूती अुसकी कमजोरसे कमजोर कड़ीके बराबर होती है। परन्तु जंजीरकी अेक बहुत

महत्त्वपूर्ण कड़ीको आप भूले जा रहे हैं। किसी दिन आपको पता लगेगा कि मैं यह काम किस लिअे और किस ढंगसे कर रहा हूं। आपके प्रश्नसे मुझे बहुत आनन्द होता है। अीश्वरकी अिच्छा होने पर जब मैं बाहर आअूंगा, तब सारी चीज दीयेकी तरह साफ हो जायगी। मेरे वक्तव्योंमें मेरी स्थितिको साफ करनेवाले बहुत वचन हैं।

स० : अस्पृश्यताके सवालके लिअे मनुष्य अपने घरको नष्ट करे?

बापू : आप अपनी पत्नी या अपने पिताको हरिजनोंसे छूनेके लिअे मजबूर नहीं कर सकते। अिसी तरह अुन लोगोंको भी अपने विचार आप पर लादनेका अधिकार नहीं।

स० : अिसका अर्थ तो यह हुआ कि आप चाहते हैं हम घर छोड़ दें।

बापू : हां, . . . का मामला अैसा ही है। वह आज मुफलिस बन गया है। वह बड़ी जायदादका वारिस था, पर अुसने सब कुछ छोड़ दिया। अिस तरह आप अपने पितासे कह सकते हैं कि मुझे आपकी संपत्तिका कोअी हिस्सा नहीं चाहिये, क्योंकि आपकी नजरोंमें मैं आपकी आज्ञाको भंग करनेवाला हूं। किन्तु मुझे अपने रास्ते जाने दीजिये। मुझे विश्वास है कि आगे चलकर वे आपको आशीर्वाद देंगे। अपनी पत्नीसे भी आप कह दें कि तुम्हें पसन्द हो तो तुम मुझसे अलग रहो या मुझे छोड़ दो। तुम्हारी आजादीमें मैं दखल नहीं दूंगा। अिसी तरह मेरी स्वाधीनतामें तुम्हें भी बाधक न बनना चाहिये। किन्तु तुम्हारा भरण-पोषण करनेको मैं तैयार हूं। भले ही तुम मेरे लिअे न खाना बनाओ और न मुझे खिलाओ, परन्तु मैं तुम्हें अपनी प्रिय पत्नी ही मानूंगा। परन्तु तुमसे भी ज्यादा प्यारी मुझे अेक चीज है, और वह है मेरा सिद्धान्त।

आज सुबह जोशी कहते थे कि नाअीसे हाथ मलवाते मलवाते बापूने ब्रह्मचर्य पर बड़ा प्रवचन किया: सारा आश्रम और अुसके व्रत बड़ी प्रयोगशाला हैं। जो बात पहले कभी नहीं हुअी, अुसका प्रयोग करते हुअे यदि अनेक विघ्न आयें, तो अिससे वह प्रयोग असफल हुआ कैसे कहा जायगा? सत्यवान और सावित्री अितने सालसे ब्रह्मचर्यका पालन कर रहे थे, अब सत्यवान कमजोर साबित हुआ है और अपनी दुर्बलता प्रगट कर रहा है। अिसलिअे क्या सावित्री अुसे छोड़ दे? हाअिड्रोजन और आक्सीजनको मिलाने पर धड़ाका होना संभव है, यह जानते हुअे भी रसायनशास्त्री अिस प्रयोगको छोड़ थोड़े ही देंगे? हमारे यहां अैसे धड़ाके होते रहेंगे, किन्तु अिससे क्या हुआ? . . . जब तक यह न कहे कि मैं गिर गया हूं और मुझे बचा लीजिये, तब तक मुझे अुसे कोअी सुझाव नहीं देना चाहिये। वह

निर्मल लड़का है और मैं मानता हूं कि वह मुझसे कुछ नहीं छिपायेगा। अिसलिअे जब तक अुसकी तरफसे कोअी बात नहीं आती, तब तक मैं कुछ नहीं कर सकता।

कोअी चर्चा हो रही थी कि सूर्यास्तके समयका भव्य दर्शन करके बापू कहने लगे: यह चर्चा तो ठीक है, पर यह सूर्यास्त तो देखो!

५-१-'३३

आज सवेरे सप्रू-जयकरकी बात निकलने पर बापू बोले: अिस बार अुनका तार नहीं आयेगा। क्योंकि मेरे समझौता करनेकी कोअी बात नहीं। मुझसे जेलमें न मिलनेकी अुन्होंने जो बात कही है, वह ठीक है। सेम्युअल होरने मिलनेकी अिजाजत न दी हो, सो बात नहीं। किन्तु वे अच्छी तरह जानते हैं कि मुझसे मिलकर वे कुछ नहीं पा सकते। होरने अिन लोगोंसे कहा होगा कि यह तो जिद्दी आदमी है। अिससे तुम कुछ नहीं ले सकोगे। और यह सब मुझे बिलकुल स्वाभाविक मालूम होता है। अिस आदमीकी सब कोअी सुनते हैं, क्योंकि यह आदमी अपनी सब चालोंमें सफल हुआ है। 'फोर्थ सील' में भी हम अिस मनुष्यका जबरदस्त आत्मविश्वास देखते हैं। अंग्रेजोंकी तो यह विशेषता है कि जिस आदमीके पासे ठीक पड़ते हों, अुसके काममें वे बाधा नहीं देते। होरकी दृष्टिसे तो वह कामयाब ही है। अिसलिअे अुसके खयालसे अुसने हमें हराया है। जो कुछ हो रहा है अच्छा ही है। लोदियनने तो साफ कहा था: 'आप जो मांगते हैं वह शायद दिया जा सकता है, अैसा मैं कह सकता हूं, परन्तु दूसरे किसीको समझा तो सकता ही नहीं। और अिसके लिअे तो आपको लड़ ही लेना पड़ेगा।' लाअिड ज्यार्जने भी यही कहा था। अलबत्ता, अुसने यह भी कहा था कि मैं आपकी मदद करूंगा। अुसने मदद तो नहीं की। यह आदमी अकेला पड़ गया, मदद क्या कर सकता है? अिस तरह अेकाअेक स्वराज हमारे हाथमें आ पड़े तो हम अुसे पचा नहीं सकते। मुसलमानोंके साथ जब तक हम सुलह नहीं कर सकते और अस्पृश्यताके सवालका निपटारा नहीं होता, तब तक हम प्राप्त किये हुअेको भी संभालकर नहीं रख सकते। मद्रासके विद्वानों और जजों वगैराकी वृत्तिसे मुझे बड़ा आघात पहुंचा है। शिक्षितवर्गमें अस्पृश्यताके बारेमें अैसे विचार रखनेवाले मद्रासके बाहर कहीं नहीं हैं।

वल्लभभाअीने बताया कि महाराष्ट्रमें जैसे सुधारक शास्त्री हैं, वैसे मद्रासमें कोअी नहीं हैं। बापूने कहा: यह नअी फसल है। वैसे यहां जो रूढ़िरक्षक वर्ग है, अुसमें घमण्ड भरा हुआ है।

१९१८ की कुछ बातें याद करके बापू कहने लगे: मुझे अैसी बातें याद ही नहीं आतीं — जैसे कभी हुअी ही न हों।

मैंने कहा: क्योंकि आपकी स्मरणशक्तिको अुपयोगी वस्तुको संग्रह करनेकी और निरुपयोगीको छोड़ देनेकी आदत है। अेक आदमीने कहा है कि यही सच्ची स्मरणशक्ति है। असाधारण स्मरणशक्तिवालोंको कामकी और निकम्मी सभी चीजें याद रहती हैं। परन्तु यह अीश्वरदत्त शक्ति है। आपकी स्मरणशक्ति पैदा की हुअी स्मरणशक्ति है। बापूने यह बात मंजूर की।

श्रद्धा या अनासक्तिकी व्याख्या मीराबहनके नामके पत्रमें दी:

"अिस समय तुम्हें अुपवासका विचार करना ही नहीं चाहिये। जब तक चीज आंखके सामने आकर खड़ी न हो जाय, तब तक अुसके अच्छी या बुरी होनेकी कल्पना ही नहीं करनी चाहिये। संपूर्ण स्वार्पणका अर्थ ही यह है कि किसी भी तरहकी चिन्तासे पूरी तरह मुक्त रहें। बच्चा कभी कोअी चिन्ता करता है? वह सहजवृत्तिसे ही जानता है कि माता-पिता अुसकी संभाल रखेंगे। यह चीज हम बड़ी अुम्रके आदमियोंके लिअे तो ज्यादा सच्ची होनी चाहिये। अिसीमें श्रद्धाकी या तुम्हें पसन्द हो तो गीताकी अनासक्तिकी कसौटी है।"

विलायतसे अेक बीमार लड़कीने अेस्थरके मारफत बापूसे आशीर्वाद मांगा। अुसे लिखा:

"मैं अपनी हजारों लड़कियां होनेका सुख भोग रहा हूं। अुनमें तुम्हारी स्वागतयोग्य वृद्धि हो रही है। अेक पामर मर्त्य मनुष्यके नाते अितने बड़े कुटुम्बकी मैं देखभाल नहीं कर सकता, अिसलिअे मैं अिन सबको सर्वशक्तिमान परमेश्वरकी सुरक्षित गोदमें सौंप देता हूं। अिस तरह मैं बड़े परिवारकी जिम्मेदारीसे मुक्त हो जाता हूं। फिर भी ये सब मेरे हैं, अिस मान्यताका आनंद तो मैं भोगता ही हूं।"

हरिभाअूके साथ 'केसरी' के सहायक सम्पादक शिखरे आये। अुन्होंने यह आक्षेप किया कि पंचानन तर्करत्नको बापूकी दी हुअी समझौतेकी सूचनामें तत्त्व-त्याग है। अुन्हें बापूने समझाया: अिसमें तो अेक भी विरोधीकी भावनाका आदर करनेका ही हेतु है। अलग समय नियत करनेमें कोअी समझौता नहीं है, क्योंकि हरिजन भी दूसरे हिन्दुओंकी ही शर्तों पर दर्शन करेंगे। अिस सवालके बारेमें अे० पी० आअी० को अेक बढ़िया लंबी मुलाकात दी है, अिसलिअे यहां ज्यादा विस्तारसे नहीं कह रहा हूं।

कलह पैदा होता है, अिस आरोपका जवाब देते हुअे बापू बोले:

मेरा सारा जीवन ही अिस तरह व्यतीत हुआ है कि सब प्रकारके संघर्ष टल जाते हैं। अितिहासका फैसला यह होगा कि अिस दुनियामें कोअी अेक भी आदमी अैसा नहीं हुआ, जिसने संघर्षके कारण दूर करनेका मेरे बराबर प्रयत्न किया हो। यह प्रश्न हल किये बिना यदि मैं मर गया, तो निश्चित समझना कि तलवारें खिचेंगी और हिन्दू और हरिजनोंके बीच गृह-युद्ध होगा। आप तो सवर्ण हिन्दू जनतासे अलग रखकर हरिजनोंको सुधारनेका प्रयत्न करनेको कहते हैं। परन्तु हरिजन कहेंगे कि अिस तरह हमें तुम्हारी मदद नहीं चाहिये। तुम्हारे जैसे सुधारकोंको अेक तरफ रखकर हम अपना सुधार कर लेंगे। मुझे विश्वास है कि ये लोग अैसा कर भी सकेंगे। परन्तु यह भारी खूंरेजीके परिणाम-स्वरूप ही हो सकेगा। अपने जीवनके हर क्षणमें मैं हिन्दूधर्मका पालन कर रहा हूं। मैं देख रहा हूं कि हिन्दूधर्मके सामने सर्वनाशका भय पैदा हो गया है। हिन्दूधर्मके लिअे हजारों आदमी अपने प्राणोंकी बाजी लगानेको तैयार न हुअे, तो हिन्दूधर्मका नाश निश्चित है। आजकल तो अलग-अलग धर्मोंके बीच स्पर्धा हो रही है। और सब धर्म सक्रिय और लड़नेवाले हैं। हिन्दूधर्म निषेधात्मक बन गया है। अिसने सब गुणोंको भी नकारात्मक कर दिया है। अैसी निषेधा-त्मक वृत्तिवाले हिन्दूधर्मसे मैं अिनकार करता हूं। यह हिन्दूधर्मकी कड़ी कसौटीका समय है। और अस्पृश्यता अिसकी बड़ीसे बड़ी कसौटी है। जो यह कहते हैं कि हमारे मंदिरोंमें बड़ी गन्दगी घुस गअी है, अुनसे मैं सहमत हूं। परन्तु अिस कारणसे अिन मंदिरोंका नाश करना चाहिये, अिस बातसे मैं सहमत नहीं हो सकता। मैं अुनका विनाश नहीं चाहता, परन्तु सुधार चाहता हूं। जब तक आप जहर न मिटा देंगे, तब तक सुधार हो नहीं सकता।

स०: आपने दर्शनोंके लिअे अलग-अलग समय रखनेका जो समझौता सूचित किया है, वह क्या यही मानकर कि सनातनी बहुत अल्पमतमें होंगे और हरिजनोंके साथ जानेवाले सुधारक खूब होंगे?

बापू: हां, यह समझौता अिसी खयालसे सुझाया है कि सनातनी बहुत अल्पमतमें होंगे।

स०: तो जहां सुधारक अैसे अल्पमतमें होंगे वहां?

बापू: वहां यह सोचना पड़ेगा कि अिस समझौतेका आग्रह रखना वांछनीय है या नहीं। मेरे खयालमें तो मैं अिसका आग्रह नहीं रखूंगा। मैं यह नहीं चाहता कि हरिजन भिखारी बनकर मंदिरमें जायं। हां, परमेश्वरके आगे तो भिखारीके रूपमें ही जाना है, पर मनुष्यके सामने नहीं।

वर्णके बारेमें मैं कहता हूं कि मेरा सुधार अवर्णोंको सवर्ण बनाना है। साथ ही मैं यह भी कहता हूं कि अिस अस्पृश्यता-निवारणके प्रश्नके साथ जाति-पांति मिटानेके प्रश्नका कोअी सम्बन्ध नहीं है। आप मेरी निजी राय पूछें तो अपनी राय जरूर बता दूं। मुझे अपने विचार छिपाने नहीं हैं। मैं मानता हूं कि वेद अनन्त है। मैं गीतामातासे अपनी सारी शंकाओंका समाधान कर लेता हूं। गीता और साथ ही दूसरे सब शास्त्रोंसे मैंने यह सार निकाला है कि वर्णसंकर तो विषयवासनासे होनेवाले संभोगका परिणाम है। गीताके पहले अध्यायके अन्तमें अर्जुन वर्णसंकरकी बात करता है, तब अुसके मनमें अिसके सिवा दूसरा कुछ नहीं था। वह समझता है कि पुरुषोंका नाश हो जाने पर स्त्रियां हर तरहके व्यभिचारसे अपने विषयको सन्तोष देंगी। किन्तु पुरुष और स्त्री किसी भी वर्णके हों, तो भी केवल सन्तानोत्पत्तिके लिअे और मानव-जातिकी सेवा करनेकी अिच्छासे यानी शुद्ध प्रेमसे संभोग करें तो अिसमें संकर नहीं होता। वर्णव्यवस्थामें शक्तिका दुर्व्यय रोकनेका हेतु है। हरअेक आदमीको अपने बापदादाका धन्धा करना चाहिये। यहां मैं स्वीकार करता हूं कि वर्ण जन्मसे बनता है। परन्तु वर्णका अर्थ अधिकार नहीं होता। वर्णका अर्थ है कर्तव्य, धर्म। ब्राह्मणके लिअे यह लाजिमी नहीं कि वह ब्राह्मण स्त्रीके साथ ही विवाह करे। अुसका कर्तव्य तो यह है कि वह अध्ययन और अध्यापन करे। मनुष्य मनुष्यके प्रति रहे मूल कर्तव्योंके साथ धर्मका सम्बन्ध है। मैं वेदके आध्यात्मिक भागका ही विचार कर रहा हूं, अैतिहासिक भागका नहीं। क्योंकि अितिहास तो बहुत अनिश्चित है और समय-समय पर अलग-अलग लिखा जा सकता है। किन्तु धर्म अलग-अलग नहीं हो सकता।

वर्णसंकर अवांछनीय सम्बन्ध है। यह अेक दूसरेके साथ मेल न खाने-वालोंका संयोग है। पर कोअी कहे कि पुरुषके ब्राह्मण और स्त्रीके शुद्र होनेसे ही यह सम्बन्ध मेल न खानेवालोंका हो गया, तो यह मानने लायक बात नहीं होगी। वर्णके कारण मेल बैठेगा या नहीं बैठेगा, यह नहीं कहा जा सकता। किन्तु जहां विषयवासना है, वहां बेमेल है, यह मानना चाहिये। अिस प्रकार विषयवासनासे पैदा होनेवाली सन्तानको मैं वर्णसंकर कहूंगा। अिस तरह देखने पर ब्राह्मण और शूद्रके विवाहमें कोअी बेमेल बात न हो और ब्राह्मण ब्राह्मणके विवाहमें हो सकती है।

स०: आप कहते हैं कि आपकी भीतरी आवाज जो रास्ता दिखाती है, अुस पर आप चलते हैं। आपके अुपवाससे अेक तरहकी जबरदस्ती होती है। तो क्या यह भीतरी आवाज या अीश्वरकी आवाज़ अिस तरहकी जबरदस्ती चाहती होगी?

बापू: मेरे अुपवासमें किसी तरहकी जबरदस्ती हो तो मुझे कहना चाहिये कि अीश्वर अुसे चाहता है। अीश्वरकी अिच्छा न हो, अैसा अेक भी शब्द में बोलना नहीं चाहता। में यह भी नहीं चाहता कि कोअी मेरी सुने। किन्तु जब करोड़ों लोग सुनते हैं तो आपको जानना चाहिये कि यह केवल आधि-भौतिक वस्तु नहीं है। अैसे करोड़ों मनुष्यों पर, जिन्होंने मुझे देखा भी न हो या सुना भी न हो, मेरे कृत्य या वचनका असर पड़े, तो मुझे कहना चाहिये कि अीश्वर मेरे द्वारा काम कर रहा है। चंपारनमें मैं पहले कभी गया नहीं था। वहां लाखों आदमियोंने मुझे घेर लिया। किस लिअे? वे लोग मुझे जानते तो नहीं थे। मैं तो सारी जिन्दगी दक्षिण अफ्रीका रहा था और वहां मैंने तामिल लोगोंमें काम किया था। फिर बिहारी किस लिअे मेरे पीछे हो लिये? जो वस्तु हम समझ नहीं सकते या जिस वस्तुका हम स्पष्टीकरण नहीं कर सकते, अुसका वर्णन करनेके लिअे 'गूढ़' शब्द बनाया गया है। यह अनिवार्य है। आध्यात्मिक हेतुसे जो अुपवास किया जाय और जिसमें सारी प्रवृत्ति केवल आध्यात्मिक ही हो, अुसका जादूका-सा असर होता है। यह कहा जाता है कि वह गूढ़ रीतिसे काम करता है। तुच्छ हेतुसे जो अुपवास किया जाता है, अुससे किसीका भी भला नहीं होता। अुसका अुपवास करनेवालेके शरीरको कष्ट होनेके सिवाय और कोअी असर नहीं होता।

अितनी महत्त्वकी बातें होने पर भी बापूको कल जैसी थकावट आज नहीं थी। पत्र रोजसे ज्यादा लिखवाये। विलायतके पत्र बहुत महत्त्वके थे, खास तौर पर होरेस अेलेग्जेंडरका। अनेक पत्रोंमें से छोटे-छोटे सूत्र चुनकर निकाले जा सकते थे। अुदाहरणके लिअे: "अुपवासके बिना प्रार्थना हो ही नहीं सकती और जिस अुपवासमें प्रार्थना नहीं, वह निरा देह-दमन है।"

नरहरि बेलगांव जेलसे छूटकर सीधे आये। अुनके सामने यह बात अलग ही ढंगसे रखी कि अस्पृश्यताके कामके लिअे किसीको अपना काम छोड़ना नहीं चाहिये। अिस अस्पृश्यताके आन्दोलनकी अिस तरहसे कल्पना की गअी है कि किसी भी कांग्रेस कार्यकर्त्ताको अपना काम छोड़ना न पड़े। जिनके पास दूसरा काम न हो या जो दूसरा काम करते न हों, अुन्हीं लोगोंके लिअे यह काम है। मैं तो जेलमें आकर मुझे जो करना चाहिये वह कर चुका हूं। अिस दिशामें मुझे कुछ भी करना बाकी नहीं रहा। अिस प्रकार अस्पृश्यताका काम अतिरिक्त कामके रूपमें कर रहा हूं।

६-१-'३३

आज सवेरे मैंने वापूसे 'वर्णसंकर' सम्बन्धी विचारोंका अधिक स्पष्टीकरण कराया। 'केसरी' वाला जरा आश्चर्य और जरा कटाक्षमें पूछता था कि तव तो आपके मतसे जिस संभोगके मूलमें विषय है, अुससे वर्णसंकर होता है। यह मुझे खटकता रहता था। आज सवेरे बापूने मुझसे कहा: सातवलेकरने मिश्र-वर्णविवाहके जो अुदाहरण दिये हैं, अुनके साथ अैसा तो कुछ नहीं कहा कि यह विवाह अनुचित है। अिसलिअे मेरी यह वात सच सावित होती है कि रूढ़िके विरुद्ध होने पर भी अिन विवाहोंसे कोअी वर्णभ्रष्ट नहीं होता।

मैंने पूछा: किन्तु आप कहते हैं सो तो आदर्श विवाहकी वात हुअी। अैसे विवाह कौन करता है?

वापू: धर्म भी तो आदर्शकी ही वात है न? वैसे साधारण व्यवहार तो जरूर यही है कि वर्णमें ही विवाह हो और वर्णके वाहरका विवाह अपवाद होगा।

मैंने कहा: तो आपको यह वात भी आदर्श विवाहकी वातके साथ जोड़नी चाहिये।

आज सुवह वापू फिर कहने लगे: अेण्ड्रूजके 'हिन्दू'को दिये हुअे तारमें वताअी हुअी यह वात ठीक है कि हिन्दू-मुस्लिम अेकता और अस्पृश्यताका नाश — अिस वुनियादके विना सारी अिमारत ही कच्ची है। कांग्रेसका वल वहांके लोगोंको अज्ञात नहीं और अुसे तोड़नेका प्रयत्न वे हिन्दू-मुसलमानोंका झगड़ा कायम रखकर और अछूतोंको अुकसा कर ही जारी रख सकते हैं।

काकासाहव आये। कीकीवहन, गिरधारी, छवलदास और मिस पोचा आअीं। कीकीवहनके साथ थोड़ी तन्दुरुस्तीकी वातें करनेके वाद वापूने कहा: अच्छा, अस्पृश्यताके लिअे कुछ वातें करनी हैं, या झूठ यों ही चली आअी हैं?

अुन्होंने कहा: नहीं, पूछनी हैं। अव हम क्या करें?

वापू वोले: अिसका मैं यहांसे थोड़ा जवाव दे सकता हूं? अितना कह सकता हूं कि मैं यहां वैठा हुआ लड़ाअी नहीं चला सकता हूं। वाहर क्या हो रहा है यह मैं कैसे जान सकता हूं? और न जानकर कैसे कह सकता हूं कि क्या करना चाहिये? हां, अेक हिसावसे लड़ाअी जरूर चलाता हूं। मेरा यहां आना और यहां वैठना यही लड़ाअी चलाना है। दूसरी वात यह है कि अिस वारेमें कुछ कहना मेरी प्रतिज्ञाके विरुद्ध है। मैं पकड़ा गया। जेलमें आया। अिसके मानी यह हैं कि मैं मर गया। मरा हुआ आदमी कैसे जिन्दा हो सकता है? हां, भूतप्रेत वनकर कुछ कर सकता है। मैं भूतप्रेत वनकर कुछ नहीं करना चाहता हूं। मैंने तो मोक्ष पा लिया है।

अितने पर भी मैं कह सकता हूं कि मुझे क्यों पूछते हो? तुम जो प्रतिज्ञा कर चुके हो, अुसका पालन करो। स्ववर्मका त्याग करना मरण है।

मेरे पास यह सवाल लेकर आते हैं यह मुझे पसन्द नहीं। सबको अितनी वात कह सकते हो कि मैंने किसीको नहीं कहा कि अस्पृश्यताके काममें लग जाओ। अपना वर्म कोअी आदमी छोड़ नहीं सकता है, अितना जरूर कहो। अभी सबको कह दो कि यह वात पूछनेके लिअे मेरे पास आनेकी कोअी जरूरत नहीं है।

काकाने पूछा: अप्पाका अुपवास आपने अपने सिर ले लिया, केलप्पनका भी ले लिया। तो क्या आपका अिरादा यह है कि आपके सिवाय और कोअी अुपवास न करे? अुपवास तो अनेक मनुष्योंको करने पड़ेंगे।

बापू: मैं तो कह चुका हूं कि हजारोंको अुपवास करने पड़ेंगे। किन्तु आज नहीं। अिसके कारण हैं। पहला कारण तो यह है कि अिसके लिअे खास योग्यता चाहिये। दूसरा यह कि यरवदा-करारमें सवर्ण हिन्दुओंकी तरफसे जो वचन दिया गया है, अुसका साक्षी मैं हूं; और सवर्ण हिन्दुओंका प्रतिनिधि मेरे जैसा दूसरा कौन है, जो अिस वचनका पालन कर सके? तीसरी वात यह है कि औरोंको अनेक काम करने होंगे; मैं जेलमें आकर दूसरा जो कुछ करना था कर चुका हूं। अब यही काम है, यह सबसे नहीं हो सकता। परन्तु मैंने देखा कि मेरी शक्ति यह काम करनेकी है; और अपनी शक्ति मैं अिसी तरह यहां बैठा-बैठा दिखा सकता हूं। अिसलिअे भी अुपवास अकेलेको करना ही मुझे अुचित मालूम होता है।

काकाने कहा: मुझे लगता है कि आज दूसरे निचली पंक्तिके आदमियोंके लिअे अुपवास करनेका समय आ गया है। क्योंकि आपके अुपवाससे लोग घबरा जाते हैं, निचली पंक्तिके मनुष्योंके अुपवाससे नहीं घबराते। और वे अुपवास करते-करते मरते जायंगे तो लोग जाग्रत होंगे।

बापूने कहा: यह भी मैं ही कह सकता हूं कि कब औरोंके अुपवास करनेका समय आ गया है।

आजकी डाकमें ३२ पत्र थे। बहुतसे विलायतके थे। बहुतसे पत्र अत्यन्त महत्त्वके थे। बाहरके लोग कितना आश्वासन ढूंढते हैं, अिसके नमूने: तीन अंग्रेज लड़कियोंने बापूको पिताके रूपमें केवल आश्वासन प्राप्त करनेके लिअे पत्र लिखा था। अेकको बापूने 'मेरी प्यारी बेटी' सम्बोधन करके लिखा और अैसा लिखने पर भी यह बता दिया कि अुन्हें अपनी स्थितिका कितना अविक भान है। अेक स्त्रीने अपने पुत्रजन्म पर आशीर्वाद मांगा। अंधे जॉन मॉरिसने, जिससे विलायतसे रवाना होनेके दिन ही सेंट अेंड्रूज अस्पतालमें मुलाकात

कर आये थे और जिसे वार-वार सन्देशे भेजते थे, अपने हाथसे लिखा हुआ पत्र और वड़े दिनका कार्ड भेजा था। अिसे भी वापूने वहुत मीठा पत्र लिखा। और अुपवासके वारेमें श्रीमती पोलाक, मेडलीन रोलांको और साथ ही अेंड्रूजको लम्वे पत्र लिखे।

हक्की नामका अिजिप्शियन और सिरियन अखवारोंका प्रतिनिधि आया। अिससे कह दिया था कि अस्पृश्यताके वारेमें ही वातें की जा सकती हैं। किन्तु वह अंग्रेजी कम जानता था, अिसलिअे अुसने अिस शर्तका अुलटा अर्थ किया!

आपका राजनैतिक ध्येय क्या है? यह सवाल पूछा तो वापूने अिसका जवाव देनेसे अिनकार कर दिया।

अुसने फिर पूछा: अस्पृश्यताका काम आप किस लिअे करते हैं?

वापूने कहा: हिन्दूधर्मको सजीव वनाकर अुसे दुनियाके धर्मोंके साथ खड़ा रहने और मनुष्य-जातिकी ज्यादा सेवा करने लायक वनाना ही अिसका हेतु है।

परन्तु वह आदमी अितनेमें ही थक गया और वोला: अस्पृश्यताके वारेमें तो मैं और क्या पूछ सकता हूं? जाता हूं।

मिस पामर नामकी अेक अमरीकी स्त्री वाहर आकर खड़ी हो गअी। अुसने लिखा कि अमेरिकामें मुझसे अिस वारेमें अेक लाख सवाल पूछे जायंगे कि मैंने गांधीको देखा था या नहीं। अिसलिअे मुझे अेक मिनटके लिअे ही गांधीको देख लेने दीजिये।

मैंने अुसे नहीं लिख दिया । तव कहने लगी कि मैं तो वहिष्कृत लोगोंमें ही काम करनेवाली हूं और करूंगी।

मैंने लिखा कि पहले जवावसे दूसरा जवाव झूठा सावित होता है। अव तो आपको सुपरिण्टेण्डेण्ट अिजाजत दें तो आिअये! वेचारी चली गअी!

७-१-'३३ कल ... ने खुदकी भूलाभाअीके साथ हुअी जो वातें मुझे कही थीं, वे मैंने वापूको सुनाअीं। पहले वल्लभभाअीको सुनाअी थीं। अुन्होंने कहा कि ये सुनाअी जा सकती हैं। खुद मुझे भी शंका थी कि ये वातें ...से सुन सकता हूं या नहीं, किन्तु ...को रोकनेको मेरा जी नहीं हुआ। वापूने वातें सुनीं जरूर और यह कहा कि भूलाभाअीने अच्छा किया। पर सवेरे कहा: महादेव, हमारी गाड़ी टूटनेवाली है, भला!

मैं चौंका। मैंने पूछा: अर्थात्?

फिर तो प्रवाह चल पड़ा: वह भूलाभाअीवाली वात तुम्हें सुननी नहीं चाहिये थी। यह वात करनेकी ...की हिम्मत ही कैसे हुअी?

अिसमें ...का पतन हुआ, तुम्हारा पतन हुआ और मेरा भी हुआ; क्योंकि मैंने अिसे सुना। तुम याद रखना कि अैसा ढीलापन रखोगे तो मेरे मरनेके वाद तुम्हारा कचूमर निकल जायेगा। वड़ा तीसमारखां आया हो तो अुसे भी मर्यादा वता दी जाय। वह कहे कि यह आदमी निष्ठुर है तो निष्ठुरताका आक्षेप सह कर भी अुसे रोका जा सकता है। मेरा लूला-लंगड़ा सत्य भी चमत्कार दिखा रहा है, तव यदि पूर्ण सत्यका पालन किया जाय तो क्या नहीं हो सकता? परन्तु हम अिस तरह सत्यका भंग करेंगे, तो हमारा सव कुछ विगड़ जायगा। फिर कहने लगे: ...को मैं नहीं कहूंगा, तुम्हीं कहना। मैं कहूं तो अुसे रोना पड़ेगा। अिसके वाद वल्लभभाअी आये। तव कहने लगे: मेरे जीमें आती है कि कांग्रेसका काम करनेवाले तमाम आदमियोंका आना ही वंद कर दूं!

काकाने तकलीके लिअे वेलगांवमें अुन्हें जो सात दिनके अुपवास करने पड़े अुसकी वात की। वापू यह वात विलकुल भूल गये थे। यहां आकर वापूने पूछा: तुम्हें पता है काकाको अुपवास करने पड़े थे?

मैंने कहा कि 'हां'। फिर मैंने सारी स्थिति कह सुनाअी और कहा: आप ही को तो काशीवहनने कहा था। नारणदासभाअीके पत्रमें भी यही चीज आअी थी।

तव वोले: डोअिलको मैंने अितने पत्र लिखे, अुनमें मैंने अिस वारेमें कैसे नहीं लिखा? तुमने मुझे लिखनेको सुझाया क्यों नहीं?

अिस प्रकार अिस वारेमें भी वड़ी सावधानी रखनी पड़ती है कि अमुक समय वापू अमुक वात करें या न करें। डोअिलको जव पत्र लिखा था, तव यह वात वापूके दिमागमें ताजी रही होगी। फिर भी मैंने यह मान लिया था कि वापूने अिस वारेमें जानवूझकर ही नहीं लिखा होगा। फिर अुपवास मार्टिनके समयमें हुअे थे, डोअिलके समयमें नहीं हुअे थे, अिसलिअे भी नहीं लिखा होगा। किन्तु वापू यह वात सुननेके वाद भी विलकुल भूल गये, अिसका क्या किया जाय? अिस तरह अव वहुतसी वातें वापूकी यादसे निकल जाने लगी हैं। सैंकी को पत्र लिखकर भूल जानेके वाद स्मृतिदोषका यह दूसरा अवसर था। छोटे-छोटे मौके तो कअी वार आते हैं।

...को लिखे गये पत्रमें से: "अिस भागदौड़के पीछे अेक और चीज भी रही है। आश्रमवासियोंमें भी गरीवीके शुद्ध दर्शनका अभाव है। यह दोष तुम्हारा अकेलेका ही नहीं है। तुमसे पुराने कुछ आश्रमवासी भी अिससे मुक्त नहीं हैं। अितने पर भी जो समझना चाहते हैं अुन्हें मैं जरूर समझाना चाहता हूं कि गरीवसे भी गरीव वनकर रहना हमारा धर्म है। अेक पैसेसे

काम चले तो दो न खर्चें और अैसा करते हुअे जो खतरे अुठाने पड़ें अुठा लें। अिसलिअे जितना सफर किये विना काम चल सके, अुतना किये विना चला लें। जितनी सुविधाओंके विना काम चल सके, अुतनी सुविधाअें छोड़ दें। और यह गरीबी सिर्फ रुपयेकी ही नहीं, प्रवृत्तिकी भी होनी चाहिये। हम शब्द भी कंजूसीसे काममें लें, विचार भी कंजूसीसे काममें लें। अैसा करें तो ही सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य आदिका पालन हो सकता है। यह कमी तुम अपनेमें से निकाल सको तो निकाल दो, किंतु 'मुझसे ज्यादा खर्चीले तो आश्रममें अ, ब और क हैं', यह न मुझे कहना और न अपने मनमें अैसे विचार रखना। धर्म तो जो पालन करे अुसके लिअे है।

"अब तुम्हारी शंकाके बारेमें। हम अपने विकारोंसे अपने बच्चोंकी तुलना करेंगे तो बाजी जरूर हार जायंगे। जो परिस्थितियां हमने बच्चोंके लिअे अनुभव प्राप्त करके पैदा की हैं, वे हमारे पास नहीं थीं। हमें विश्वास रखना चाहिये कि अिन परिस्थितियोंका असर बच्चों पर पड़ेगा ही। अिसकी चिंता न करें कि तात्कालिक परिणामस्वरूप हमें अैसा कुछ भी दिखाओ नहीं देता। यह प्रयोग करते हुअे जिन्हें हम अपने बालक समझते हैं, अुन्हें कुर्बान करना पड़े तो भी हम आत्मविश्वास न खोयें। और जब तक अपनी भूल न मालूम हो तब तक प्रयोग जारी रखें, तो ही सफलता देवीके दर्शन होंगे। यह रास्ता आगकी ज्वाला है, अिसलिअे हम खुद और हमारे बच्चे हंसते-हंसते बलिदान हो जायें। सब क्षेत्रोंमें अिस तरह किये बिना शुद्ध सत्य, शुद्ध अहिंसा या शुद्ध ब्रह्मचर्यकी झांकी हमें नहीं होगी। या हम अिस नतीजे पर पहुंचेंगे कि अिन तीनमें से अेक या दो चीजें गलत हैं। अहिंसा गलत चीज है, यह माननेवाले पंथ तो दुनियामें बहुत मौजूद हैं और ब्रह्मचर्यको पाप माननेवाला सम्प्रदाय फैलता जा रहा है, यह हम अपनी आंखोंके सामने अनुभव कर रहे हैं। अिस सम्प्रदायकी वृद्धि होती देखकर भी यदि हमें यह साबित करना हो कि यह गलत है और ब्रह्मचर्य सही चीज है, तो . . . जैसी लड़की और . . . जैसे नौजवानोंका बलिदान देनेकी कला हमें हस्तगत करनी पड़ेगी। पराये लड़कोंको यति नहीं बनाया जाता। यह लाभ तो अपनोंको ही दिया जाता है। किन्तु तुम तो कहते हो कि हमारे बच्चे भी तभी परीक्षामें पास हुअे माने जायंगे, जब वे संसार रूपी समुद्रमें टक्कर खायें और फिर भी साबित कदम रहें। यह बात मैं मानता हूं और अिसीलिअे हमने आश्रमको समुद्रका अेक खड्डा बना डाला है। और अिसमें यदि नहीं डूबे, तो महासमुद्रमें भी तैर जानेकी आशा रख सकेंगे।"

आज सरकारको अेक वक्तव्य स्वीकृतिके लिअे भेजा। कांग्रेसवाले सविनयभंगका काम करें या अस्पृश्यताका करें, अिस वारेमें वहुत लोग पूछने आते हैं और अिस वहाने मिलने भी आते हैं। वापूने अनेकोंको अनेक भाषाओंमें अेक ही अुत्तर दिया है। परन्तु आज अुन्होंने अिस विपयमें अेक वक्तव्य प्रकाशित करनेका विचार किया। वल्लभभाअीको वताया। अुन्होंने मना किया। वे कहने लगे कि अिसका अनर्थ होगा या अिसे कोअी समझेगा नहीं।

मैंने कहा: जो चीज वापू रोज कहते हैं, अुसे सार्वजनिक रूपमें कहनेमें क्या वाधा है?

अितनेमें वापू वोले: परन्तु अिसे सरकारको भेज दें तो?

मैंने कहा: तव तो दोहरा लाभ है।

अिसके वाद अमराअीमें गये। वहां वाकीका भाग लिखवाया और फिर वापूने कहा: सरकार समझदार होगी तो अिसे छापने देगी।

मैंने कहा: समझदार कैसे हो?

वापू: अिससे तो वह यह देख सकती है न कि मैं जेलमें वैठकर कोअी भी वक्तव्य नहीं दे सकता?

१९३० के जुलाअीमें सप्रू–जयकरके साथ वातचीतके वाद वापू, मोतीलालजी और जवाहरने वक्तव्य निकाला था। असके वाद क्या सचमुच वापूके विचार या वृत्तिमें फर्क पड़ा कहा जा सकता है? शायद पड़ा है। क्योंकि अव तो अेक-दो वार वे निश्चित कह चुके हैं कि यहां वैठकर मैं कुछ भी नहीं कह सकता।

अिस वक्तव्यसे सप्रू–जयकरकी स्थिति भी मजवूत होगी। मैंने कहा: किन्तु यदि सरकारको आपको छोड़ना ही नहीं हो, तो वह यह वक्तव्य क्यों प्रकाशित करने दे? और यह तो लड़ाअीके लिअे अेक नअी घोषणा होगी, अिस कारणसे भी सरकार अिसे प्रकाशित न करने देगी।

वापू: यह तो ठीक है। किन्तु 'सरकार समझदार हो' शब्दोंसे मैं यह कहना चाहता था कि सरकारको सुलह करनी हो और वुरी न दिखाअी देना हो तो। फिर कहने लगे: सरकार विलकुल खराव है, अैसा कहनेवाले सरकारको जानते ही नहीं। यह सरकार वहुरंगी है। अिसकी असंख्य आंखें, असंख्य कान और असंख्य मुंह हैं। अिसीलिअे यह नहीं कहा जा सकता कि अमुक वातके वारेमें वह कव क्या कहेगी।

अिस वक्तव्यके अन्तमें वापूने जिनको अपने धर्मके वारेमें संशय नहीं है अैसे लोगोंको ध्यानमें रखकर अेक वाक्य लिखा है और अुन्हें याद

दिलाया है कि 'यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवं परिसेवते।' मुझे पूछा: अिसकी अंग्रेजी तुम्हें सूझती है?

मैंने कहा: तुरंत तो नहीं सूझती। अिसलिअे अुसका भाषांतर करनेको कहा। मैंने भाषांतर कर दिया। फिर कहने लगे: A bird in the hand is worth two in the bush (नौ नकद न तेरह अुधार) शायद अिससे काम चल सकता है। पर जैसा तुमने कहा है certainties और uncertainties से काम नहीं चल सकता। substance और shadow से काम चल सकता है और फिर कह सकते हो कि He who leaves the substance and runs after the shadow loses both (जो असलियतको छोड़कर परछांओके पीछे दौड़ता है, वह दोनों गंवा बैठता है)।

फिर कहने लगे: 'श्रेयान् स्वधर्मो विगुण:' में भी यही भाव है। थोड़ीसी चर्चाके बाद बोले: बस अब बढ़िया वाक्य मिल गया है। Much wants more and loses all (जो है अुससे ज्यादा चाहने पर मूल भी खो बैठते हैं)। यह अुस (नौ नकदवाली) कहावतसे भी ज्यादा अच्छा है।

अिसके बाद पत्रको दोबारा देखा और वह होम सेक्रेटरी मैक्सवैलके नाम गया।

रणछोड़दास पटवारी आये। अुन्होंने कह दिया कि हम अेक-दूसरेको मना तो नहीं सकेंगे, किंतु यह कहें कि मना नहीं सकें तो भी निभा लें, तो यह गलत बात है। अिस तरह निभाया नहीं जा सकता।

बापू अुनसे अेकके बाद अेक बात लेकर मनवाते गये। भंगी नहाये-धोये हुअे हों, साफ कपड़े पहने हों, और नारायणका नाम लेते हों, तो भी मंदिरमें नहीं जा सकते, अैसा क्या भागवत धर्ममें कहा है?

वे कहने लगे: नहीं। वे जा सकते हैं। पर बार-बार यह बात आती थी कि ये सुधार तो ठीक हैं, किन्तु आप अिन्हें किस लिअे लेकर बैठे हैं? आपकी सारी शक्ति लोगोंकी आपके प्रति रही भक्तिमें है और आप अुनकी भक्तिको खोते जा रहे हैं। लोगोंमें फूट पड़ती जा रही है। यह आपकी राजनीतिक दृष्टिसे भी अच्छा नहीं है।

बापू: यह तो कौन जाने। किन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि लोगोंमें फूट नहीं पड़ेगी। मैं फूट डालना चाहूं तब न! और सब कुछ लोगोंकी भक्ति पर ही क्यों निर्भर रहना चाहिये? मेरे काम पर निर्भर रहेगा। मैं तो मानता हूं कि मेरे काम पर निर्भर रहा है। किन्तु

वात यह है कि यों तो हम कितने ही दिन वातें करते रहें, तो भी कोओी परिणाम नहीं निकलेगा।

वे कहने लगे: परिणाम क्या आये? समय अपना काम करता रहेगा।

वापू: यानी आप सुधार तो जरूरी मानते हैं, किंतु यह कहते हैं कि वह समय कर देगा।

पटवारी: हां। वीचमें अेक आध वार हमारी तरफ मुड़कर कहने लगे: भाओी देखिये, अिसमेंसे कुछ भी अखवारमें न दीजिये। फिर वोले: कुछ तो व्यवहार समझकर काम कीजिये। अितने सारे लोगोंका जी किस लिअे दुःखाते हैं? हम दुनियामें रहते हैं, या हिमालयकी तलहटीमें?

वापूने कहा: न दुनियामें, न हिमालयकी तलहटीमें; परन्तु आप तो काठियावाड़में रहते हैं। फिर वापू कहने लगे: परन्तु आप तो मुझे सीधे सवाल पूछिये न कि आपको क्या पसन्द नहीं आता, क्या समझमें नहीं आता।

पटवारी: यह आप कैसे कहते हैं कि हम तिरस्कारके कारण भंगीको नहीं छूते?

वापू: समझाअूं आपको? मेरी मां कओी वार हमें नहीं छूती थी, पूजामें वैठनेवाली हो, नहाओी-धोओी हो और हम वाहरसे खेल-कूदकर आये हों, तो हमें नहीं छूती। पर वह तो अूकला भंगीको भी नहीं छूती थी। क्या अुसके हमारे प्रति प्रेममें और अूकला भंगीके प्रतिके वर्तावमें कोओी भी फर्क नहीं?

पटवारीने दूसरा सवाल पूछा: आप तो यह कहते हैं कि सव वर्णोंके वीच रोटी-वेटी व्यवहार होना चाहिये।

वापू: यह कहकर कि मेरे खयालसे यह गलत नहीं, मैंने कहा है कि अस्पृश्यताके आन्दोलनके साथ अिसका सम्वन्ध नहीं है। और जहां अैसे भोज होते थे, वहां मैंने अिस चीजको रोका भी।

पटवारी: मैंने तो 'टाअिम्स' में अितना ही पढ़ा है कि आप सव जातियोंके वीच रोटी-वेटी व्यवहार चाहते हैं। और वातोंका मुझे पता नहीं है।

वापू: यदि आपको वता दूं कि मैं जो कहता हूं वह सव मेरे लेखमें है, तो आप हजार रुपये हार जायंगे?

वूढ़ा हंसा। फिर पूछा: आप रजस्वला धर्मको मानते हैं या नहीं?

वापूने कहा: मानता हूं। परन्तु अिसका स्पष्टीकरण कर दूं। कोओी ब्रह्मचारिणी स्त्री हो और वह रजस्वला होती हो, तो भी अुसे अस्पृश्य मानकर अुसके रजस्वलापनकी याद दिलाना मैं ठीक नहीं समझता। और मैं रजस्वला धर्म न पालनेवालीको पतित नहीं मानता। मान लीजिये 'कोओी

वेश्या रजस्वला धर्म पालती हो और कोअी गृहस्थधर्म पालनेवाली पवित्र स्त्री रजस्वला धर्म न पालती हो, तो क्या वह वेश्या अुससे बढ़कर है?

बूढ़ा चकराया। अुन्होंने यह सब तो भला क्यों सोचा होगा? अिसके बाद वसन्तराम शास्त्रीका पुराण शुरू हुआ। बूढ़ा कहने लगा: अुन्होंने तो आपके लेखोंमें से ही वाक्य दिये हैं।

बापूने कहा: सारा लेख पढ़ लीजिये और फिर आप मुझे कहिये। आपसे मेरी यही शिकायत है कि आप मेरा लिखा हुआ पढ़ते नहीं और दूसरे जो बताते हैं अुसे पढ़कर अनुमान लगाते हैं। अिसका क्या किया जाय? वसन्तराम तो बहुत मैला आदमी मालूम होता है। अिसने बहुत झूठ फैलाया है।

अुनके साथ आये हुअे अेक भाअीने अुनसे कहा: काका, आपको 'नवजीवन' की फाअिल देखनी हो तो मैं बताअूंगा। आप अैसा कीजिये कि थोड़े सवाल लिख डालिये और अुनके लिखित अुत्तर बापूसे ले लीजिये, ताकि बादमें आप जैसे दूसरे अनेकोंकी शंका दूर हो जाय।

यहां अमराअीमें आनेसे पहले कलेक्टर मिलने आ गया था। रास्तेमें मिला, वहांसे वह भी 'आफिस' देखने आया। फाअिलें वगैरा देखकर बोले: यह तो सचमुच आफ़िस है। ढेरों फाअिलें और कागज़ हैं। फिर कहने लगा: छुट्टी मनानेके बाद काम करना अच्छा है। आपने छुट्टी मना ली। अब आपके पास बहुतसा काम आ गया है। यह बड़ी चीज है। काम बहुत मुश्किल है। किन्तु अिसे हाथमें लिये बिना काम नहीं चल सकता था। आपने लोगोंके दिलको काफी हिला दिया है। वे अपने आप विचार करने लग गये हैं। बुराअी अैसी है — मैं अिसे 'प्रश्न' नहीं कहूंगा — कि अिसका प्रतिकार करना ही चाहिये।

बापू: यह तो कलंक — शाप है।

आअिरिश मैन होनेके कारण अुसने आयर्लैंड और स्पेनमें धर्मगुरु वर्गका जोर वर्णन किया और कहा कि जबरदस्त स्थापित स्वार्थ हैं!

बापूके साथ बातें करते हुअे ठक्कर बापा बोले थे: आपको अब यहां कहां लम्बा रहना है?

अिसके जवाबमें बापूने कहा था: पांच साल तो जरूर ही। अिस परसे नरहरि कहने लगे: क्या बापू यह मानते होंगे कि पांच बरस रहना पड़ेगा?

वल्लभभाअी: नाहक घबराते हो! अिसमें घबरानेकी क्या बात है? अिस प्रकार ६९-७० वर्ष तो बापूका जीना निश्चित ही हुआ न? फिर क्या चिन्ता है?

वल्लभभाअीकी काम करनेकी चपलताका वर्णन करते हुअे वापू कहने लगे: अितनी तेजीसे काम करते हैं कि हमें आश्चर्य होता है। अनार छीलते या रस निकालते हों तो हमें लगेगा कि धीरे-धीरे कर रहे हैं किन्तु तुरन्त सव निपटा देते हैं। लिफाफे वनाते हैं तो भी किसी धांधलीके विना। थकते ही नहीं। ढेरों लिफाफे वनाते ही रहते हैं। और अिसके लिअे नापकी जरूरत नहीं पड़ती। अुनका हाथ अितना वैठ गया है कि अटकलसे करते हैं, तो भी सैकड़ों लिफाफे अेकसे ही वनते रहते हैं।

८-१-'३३

परमानन्द कापड़ियाका काकासाहवके मार्फत पत्र आया: "गुरुवायुरके अुपवासका सारा प्रकरण वड़ा ही ग्लानिजनक है। केलप्पनकी मूर्खता सुधारनेके वाद अुसके साथ फिर अुपवास, फिर मतगणना, वाअिसरॉय कानूनको मंजूरी दें तव तक अिन्तजार करना, यह सव वड़ा अजीव लगता है। और असहयोगी वाअिसरॉयसे अपील क्यों करें? मंजूरी क्या लेनी? और आपको अुपवासकी ही सूझती रहती है। केलप्पन और अप्पाके अुपवास आपने अपने सिर पर ही ले लिये। अिसका अर्थ यह है कि आप अूव गये हैं और निराश हो गये हैं।"

अिन्हें जवाव:

"गुरुवायुरकी कुंजी तुम्हारे वाक्यमें ही मौजूद है। तुम जो कहते हो कि मंत्रिमंडलके निर्णयको वापिस लेनेसे ही यह नअी वात पैदा हुअी है, सो अक्षरशः सच है। मैं जवसे हिन्दुस्तानमें आया हूं, तभीसे लोगोंको प्रतिज्ञाका मूल्य समझाता रहा हूं। किन्तु देखता हूं कि तुम्हारे जैसोंके लिअे यह वात स्वाभाविक नहीं वन गअी। यह निर्णय वापस लेनेके समय जनताके नाम पर मालवीय जैसे महापुरुषकी सरदारीमें प्रतिज्ञा ली गअी। क्या यह हो सकता है कि अिस प्रतिज्ञाके पालनको अेक क्षणके लिअे भी मुलतवी करके स्वराज्य लिया जा सकेगा? मेरे खयालसे जितनी जल्दी निर्णयको वापस लेनेके लिअे करनी पड़ी अुससे ज्यादा जल्दी अस्पृश्यता नष्ट करानेमें करनी चाहिये। फिर भले ही अिसमें समय लग जाय। किन्तु अिस प्रवृत्तिकी गति निर्णय वापस लिवानेकी गतिसे ज्यादा होनी चाहिये। स्वराज्यको तुम अिससे अलग कैसे मानते हो? स्वराज्य कोअी सीधी छड़ नहीं है; वह तो वड़के पेड़की तरह है। अिसकी वहुत शाखाअें हैं और अेक अेक शाखा मल तनेसे स्पर्धा करनेवाली है। जिस जिस शाखाको पोषण दें, अुसीसे सारे वृक्षको पोषण जरूर मिलेगा। कोअी

तय नहीं कर सकता कि किसे किस समय पोषण दिया जाय। यह काम समय करता रहता है।

"केलप्पनकी भूल यत्किंचित् थी। केलप्पनसे अुनका कदम वापस खिंचानेके बाद में अुसे छोड़ देता तो तुम सब बादमें मुझे छोड़ देते। जो मनुष्य अेक रंक साथीका भी अैन वक्त पर साथ छोड़ता है, वह दो कौड़ीका है।

"दूसरे प्रश्न जो तुमने अुठाये हैं अुनका जवाब सचोट दिया जा सकता है। पर यह मेरी अभीकी मर्यादाके बाहर है, अिसलिअे में जीता रहा तो और किसी मौके पर समझाअूंगा। मेरे अुपवास न निराशासे पैदा होते हैं, न थकावटसे। अिनकी जड़में मेरी अखण्ड आशा और प्रबल अुत्साह रहे हैं। तुम समझते हो अुतने वे सस्ते भी नहीं हैं। अन्तिम अुपवास मुलतवी न रहा होता तो अधर्म होता। किन्तु यह सब तो अिस समय अधूरा ही समझाया जा सकता है। बात यह है कि सत्यकी खोजका मेरा प्रयोग नये ही ढंगसे हो रहा है। अिसलिअे नित नअी चीजें, जो मुझे भी पहले मालूम नहीं थीं, मुझे सूझती हैं और वे जनताके सामने रखी जाती हैं। यह सब तुरन्त कैसे समझी जा सकती हैं? और फिर मुझसे आजादीके साथ समझाअी नहीं जा सकतीं। किन्तु सत्यको वाणीकी बहुत ज्यादा जरूरत नहीं रहती — यदि जरा भी रहती हो तो! फूलकी सुगंधकी तरह सत्यमें अपने आप फैलनेकी शक्ति है। भेद अितना ही है कि सुगन्ध थोड़ी देरमें फैलना बन्द हो जाती है, जब कि सत्यकी फैलनेकी गति अनन्त है और नित्य बढ़ती रहती है। अुसे हम नाप नहीं सकते, अिसलिअे यह मान लेनेकी भूल न करें कि वह है नहीं। अिस प्रकार तुम धीरज रखो, विश्वास रखो और निराशाको कभी मनमें स्थान न दो।"

अेक आदमीने लिखा था कि जिसके यहां आप ठहरते हो, अुसे आपको दुष्कृत्यसे रोकना चाहिये, वगैरा। अुसे लिखे हुअे जवाबसे:

"अुसके दुष्कृत्यका कोअी प्रमाण दीजिये, तो अुसे लिखनेको में तैयार हूं। वैसे मेरे ठहरनेका तो क्या पूछते हैं? मैं अपनेको अितना बड़ा सज्जन नहीं मानता कि जिसे लोग दुर्जन मानते हों अुसके यहां मैं ठहरूं ही नहीं। पहला दुर्जन तो मैं ही हूं कि अुसके यहां ठहरता हूं। फिर औरोंका काजी बनने लगूं, तो यह मुझे कैसे शोभा देगा? और जिसे रोज भटकना और रोज पराये घर खाना और सोना पड़े, अुससे घर-घरकी परीक्षा कैसे हो सकती है? अिसलिअे अेक ही निश्चय रखा है। सब परायोंको अपना बना लेना और अपने तो अपने हैं ही। वैसे यदि आपने यह सिद्धान्त बना लिया हो कि जो सगे कहलाते हैं वे कैसा ही काम करें तो भी अुन पर फौजदारी न हो और पराये माने जानेवालों पर फौजदारी हो सकती है, तो यह सिद्धान्त मुझे मंजूर नहीं है।"

विदेशी डाकमें अेक यहूदीका पत्र है। वह कहता है कि आपकी पुस्तकें पढ़ीं। मूसाके कानूनकी विफलता समझमें आती है, पर अहिंसा और सत्यके रास्ते चलनेकी शक्ति नहीं है। ज्ञान होने पर भी शम-दमका आचरण करनेकी ताकत नहीं है। अिसका क्या कारण होगा?

अनेक वेटियां तो होती ही जा रही हैं। अिन वेटियोंके मन वापूने कितने हर लिये हैं, अिसके कितने ही अुदाहरण दिये जा सकते हैं। अेक वहन अपने पतिका व्यभिचार और शराव छुड़वानेमें वापूसे मदद मांगती है। दूसरी कहती है कि मेरा पति सीनेमा वहुत जाता है, यह शिकायतके रूपमें नहीं, वल्कि आप कुछ सुझा सकें अिसलिअे है।

रंगूनके सारे प्रकरणमें वापूने जो सम्य दिया है, जिस विचक्षणता और धीरजसे काम लिया है और जिस अनासक्ति और तटस्थताका दृष्टान्त सामने रखा है, वह जनक राजाकी यांद दिलाता है।

९-१-'३२

आज वारह वजे मौन छूटनेसे पहले वापूने वहुतसे पत्र लिख डाले। सनातनियोंको वहुतसे पत्र लिखे। अुनमें से तीन ये (हिन्दीमें) हैं:

"सत्य, अहिंसा पर अनन्य श्रद्धा और गोसेवा हिन्दू-धर्मके मुख्य अंग हैं। जो अुन्हें छोड़ता है वह हिन्दू नहीं रहता। यज्ञोपवीतकी आवश्यकता मुझे प्रतीत नहीं हुअी है। न पहननेका आग्रह न किया जाय। जो ब्राह्मणत्व छोड़ता है, वह ब्राह्मणके अधिकारसे अुतर गया है। अैसे नामके ब्राह्मणोंको भोजन क्यों? विवाहमें जो सामान्य मंत्र हैं, वही आवश्यक हैं। 'नवजीवन'में सव दिये गये हैं। आजकल जो श्राद्धकी प्रथा देखी जाती है, अुस पर मेरा विश्वास नहीं है।"

पंडित गिरधर शास्त्रीको:

"आपका पत्र मिला है। मैं शास्त्रको प्रमाण मानता हूं। ग्रंथोंकी गिनती तो मुझे कोअी देता नहीं है। न दे सकते हैं, अैसा अव तक तो प्रतीत हुआ है। अिस कारण मैंने गीतामाताका शरण लिया है। मैं जो करता हूं अुसमें विनय रखनेकी मेरी चेष्टा है। परन्तु मेरे विनयको सत्यका विरोधी न होने देनेका भी मैं वड़ा प्रयत्न करता हूं। और तो क्या कहूं?"

खासगीवालेको लिखा:

"शास्त्राज्ञा, लोकाचार, शिष्टाचार सव पर मेरी श्रद्धा है। परन्तु अुसका असर होकर अन्तमें जो प्रेरणा निकलती है, वही अन्तःस्फूर्ति मानी जाय। सारा जगत अिसी तरह चलता है। यह कोअी मेरा विशेष गुण या दोष नहीं है।

जैसे दूसरोंकी वैसी मेरी अन्तःस्फूर्ति अल्पज्ञत्व अवश्य हो सकती है। अिसी कारण तो मनुष्य भूलका पुतला माना जाता है।

"यदि मनुष्य-जातिमें सचमुच अस्पृश्य योनि है, तो मैं अुसीमें जन्म पानेकी साधना कर रहा हूं।

"मेरी प्रवृत्ति मात्र वर्णाश्रम धर्मके पुनरुद्धारके लिअे है। अुसमें मुझे तनिक भी शंका नहीं है।

"अप्रस्तुत वस्तुमें बुद्धि या कुछ भी खर्चना मेरे स्वभावके प्रतिकूल है।

"कृष्ण-भक्ति मेरे जीवनका मंत्र है। सनातन धर्म मेरा प्राण है। जो आज अपनेको सनातनी मानते हैं, वे अेक रोज मेरी अुक्त प्रतिज्ञाके सत्यका स्वीकार करेंगे।"

दो सिन्धी आये । अुनके साथ बातोंमें:

"मैं पैगम्बर नहीं हूं या हिन्दूधर्ममें जो अवतार माने जाते हैं वैसा अवतार भी नहीं हूं। या आप जितने अवतार हैं, अुससे ज्यादा अवतार मैं नहीं हूं। मेरे जैसे आदमीके लिअे कहनेको बहुत कुछ है, क्योंकि मेरा दिमाग खाली नहीं है। पर मैं अपने सब विचार प्रगट नहीं कर सकता।"

सुब्रह्मण्यम् शास्त्ररत्न आये। अिनके साथ दुभाषियेके जरिये बातें हुअीं:

शास्त्री: आप त्यागमूर्ति हैं, आपके दर्शनसे पवित्र हुआ हूं। कितने ही समयसे मेरी अिच्छा आपसे मिलनेकी थी। मुझसे कोअी भी प्रश्न पूछिये।

बापू: अस्पृश्य किसे माना जाता है?

शास्त्री: 'ब्राह्मण्यां शूद्रः यः जातः स अस्पृश्यः'। यही चांडाल हैं।

बापू: आज अैसा कौन है, अिसका प्रमाण है?

शास्त्री: मैं तो शास्त्रप्रामाण्य कहता हूं, प्रत्यक्ष वचन नहीं कहता।

बापू: आज अैसा कोअी चांडाल है?

शास्त्री: यह तो नहीं कहा जा सकता कि ब्राह्मणीसे शूद्रके अुत्पन्न किये हुअे लोग हैं। किन्तु पहले अैसे अुत्पन्न किये हुअे मनुष्योंके कुलमें से पैदा होनेवाले तो होने ही चाहियें। ये अस्पृश्य ही हैं।

बापू: क्या अुनकी सब संतानें — वंशके बाद वंश — सभी चांडाल हैं?

शास्त्री: हां, सभी।

बापू: अिसका अर्थ तो यही हुआ कि जो आज अस्पृश्य कहलाते हैं वे सब पहलेके चांडालोंकी ही संतान हैं।

शास्त्री: हां।

वापू: तव तो आप अैसे वेहूदा निर्णय पर पहुंचेंगे कि पंद्रह वरस पहले
ो अस्पृश्य नहीं माने जाते थे, अुनका वर्गीकरण अंग्रेजी पुस्तकोंमें आपके
हे अनुसार कर दिया जाय, तो वे सव अस्पृश्य माने जायंगे।

शास्त्री: अैसे कोअी हैं जो १५ वर्ष पहले स्पृश्य थे और आज
स्पृश्य हैं?

वापू: आज तो जनगणना (सेन्सस) में जिन्हें अस्पृश्य माना गया है
ही अस्पृश्य माने जाते हैं।

शास्त्री: नहीं, ये सव नहीं।

वापू: तव अस्पृश्य कौन?

शास्त्री: मैं तो जो पहलेसे चाण्डालके वंशज हों अुन्हींको अस्पृश्य कहता
। औरोंको प्रायश्चित्तसे स्पृश्य वनाया जा सकता है।

वापू: किन्तु चाण्डालोंके वंशजोंका लेखा कहां है? सव मानते हैं कि
सा लेखा नहीं मिलता।

शास्त्री: चांडालके वंशजोंके लक्षण कैसे होते हैं, यह वतानेवाले वचन
हैं ही। और अुन्हें अैसा अमुक समय तक ही माना जाता है। अमुक
मयके वाद कोअी अस्पृश्य नहीं रहता।

वापू: परन्तु आज आप अैसोंको कैसे ढूंढ सकेंगे?

शास्त्री: अिनके रीत-रिवाज परसे।

वापू: तव तो रोज आपको खोज करते ही रहना पड़ेगा कि कौन चांडाल
और कौन नहीं है!

शास्त्री: मैं चांडाल और अचांडालको पहचान सकता हूं।

वापू: पर किस तरह? अैसी परीक्षा आपने की है? आप जो वात
ते हैं सो किसीके गले नहीं अुतरेगी। किसी शास्त्रीने अैसी दलील नहीं
। चांडालको पहचानना असंभव है। अैसे लक्षण तो अचांडालमें भी पाये जा
ते हैं और आज जो अस्पृश्य माने जाते हैं अुनमें न भी पाये जा सकें।

शास्त्री: जातिचांडाल तो प्रायश्चित्तसे शुद्ध हो जाता है। कर्मचांडालके
अे प्रायश्चित्त नहीं है।

वापू: जातिचांडालको क्या प्रायश्चित्त करना पड़ता है?

शास्त्री: ९६ क्षेत्र हैं। अुन सव क्षेत्रोंमें पैदल जाकर हर स्थान पर तीन
रहे और तीर्थाहार करे तो जातिचांडाल शुद्ध हो जाता है। यह शूद्र-
णमें है। अिसके वाद वह ब्राह्मणोंमें अुत्तम वन जायगा।

वापू: मन्दिरमें प्रवेश करनेके लिअे लायक वननेको अितना करना
गा?

शास्त्री: नहीं, ब्राह्मण बननेके लिअे।

बापू: परन्तु मुझे अुन्हें ब्राह्मण नहीं बनाना है। मुझे अुन्हें सिर्फ मन्दिरमें जाने लायक बनाना है।

शास्त्री: वे मांस, गोमांस, मदिरा और सूतक छोड़ें। वे तीन साल तक अैसा करें, तो स्पृश्य बन जायं।

बापू: तो अुन्हें शाकाहारी बनना चाहिये?

शास्त्री: हां; आज तो मन्दिरोंमें जो पुरोहित होते हैं, वे भी अपने कामके लिअे योग्य नहीं।

बापू: तब काली मन्दिर जैसे मन्दिर आपकी व्याख्याके अनुसार मन्दिर नहीं हैं, क्योंकि वहां तो बकरे मारे जाते हैं?

शास्त्री: अैसे मन्दिरोंमें जातिचांडाल जरूर जा सकते हैं।

बापू: तो अिन मंदिरोंमें — चामुंडी मंदिर जैसोंमें — अिन लोगोंको न जाने देना अनुचित है?

शास्त्री: हां, यह अनुचित है।

बापू: तो कर्मचांडाल स्थायी अस्पृश्य हैं।

शास्त्री: हां।

बापू: कर्मचांडाल कौन?

शास्त्री: अंग्रेजी पढ़े वह। 'स्वाध्यायं परित्यज्य अन्य भाषाभाषी भवति!'

बापू: अंग्रेजी पढ़कर मनुष्य अपना आचार छोड़ देता है?

शास्त्री: शास्त्रमें अंग्रेजी भाषाका निषेध है। किन्तु अकेले अंग्रेजी पढ़नेसे ही मनुष्य कर्मचांडाल नहीं बन जाता।

बापू: तब तो कर्मचांडाल किसे कहा जाय, यह फिर समझना पड़ेगा।

शास्त्री: जो स्वधर्म — संध्यावंदन, देव-द्विज-गुरु-प्राज्ञ-पूजनम्, यज्ञ तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रके लिअे जो कर्म नियत हैं वे छोड़ देते हैं, वे सब भ्रष्ट हैं और कर्मचांडाल हैं।

बापू: मुझे यह सब संस्कृतमें लिख दीजिये। अिसके लिअे आपका आभारी रहूंगा। मुझे यह भी लिख दीजिये कि आजकल व्यवहारमें सभी कर्मचांडाल हैं। कोअी ब्राह्मण नहीं, कोअी क्षत्रिय नहीं, शायद ही कोअी वैश्य होगा, सभी शूद्र हैं। आज जिन्होंने अपना आचार छोड़ न दिया हो और अिसलिअे जिन्हें मंदिरमें प्रवेश करनेका अधिकार हो, यानी जो चांडाल न बन गये हों अैसे तो सिर्फ शूद्र ही होंगे।

शास्त्री: यह बात ठीक है। आज मंदिर स्त्रियों और शूद्रोंके लिअे ही रह गये हैं। शास्त्रोंके अनुसार अकेले शूद्रोंका ही मंदिरमें प्रवेश करनेका अधिकार रहा है; क्योंकि दूसरे वर्णोंके लिअे तो ज्यादा कर्मोंकी विधि है और वे अुन्होंने छोड़ दिये हैं। मंदिरमें जानेका अधिकार रखनेवाली स्त्री पवित्र यानी पतिव्रता होनी चाहिये।

बापू: तो आपके कहनेके अनुसार तो ब्राह्मण कर्मचांडाल हो, किन्तु अुसकी पतिव्रता स्त्री ब्राह्मण हो सकती है और अुसे मंदिरमें जानेका अधिकार होगा।

शास्त्री: स्त्री तो अपने पातिव्रतके कारण अपने पतिको भी विशुद्ध बनाती है।

बापू: तब तो जिस क्षण हम मान लेते हैं कि स्त्री पवित्र है, अुसी क्षण अुनका पति विशुद्ध हो जाता है, फिर भले ही वह कैसा ही मनुष्य हो।

शास्त्री: हां, पत्नी अुसका अुद्धार करती है।

बापू: तब तो पुरुष अपनी अिच्छा हो अुतना खराब हो जाय परन्तु अुसकी स्त्री पवित्र हो, तो वह पुरुष शुद्ध हो जायगा। पुरुष असंख्य स्त्रियोंके साथ व्यभिचार करे और गोमांस खाये, किन्तु अुसकी स्त्री पवित्र हो, तो अुस पुरुषको कोअी पाप नहीं लगेगा।

शास्त्री: हां, अैसे पुरुषके कर्म खराब तो माने जायंगे, परन्तु स्त्री अुसे बचा लेगी। अैसे पुरुषके सारे पाप स्त्रीके कारण जलकर भस्म हो जाते हैं।

बापू: तब तो किसी पुरुषको अपने पाप जला डालने हों, तो अुसे अितना ही करना बाकी रहता है कि वह पवित्र स्त्रीके साथ शादी कर ले।

शास्त्री: सही बात है। भागवतमें रुक्मिणी कृष्णसे कहती है: 'नित्यान्नदाता' आदि।

बापू: किन्तु हम तो अिस भारतवर्षमें किसी स्त्री पर अपवित्रताका आरोप लगाना नहीं चाहते। जब तक कोअी स्त्री खुद स्वीकार न करे कि मैं अपवित्र हूं या अपवित्र कर्म करती हुअी प्रत्यक्ष पकड़ी न जाय, तब तक सभी स्त्रियोंको पवित्र मानना चाहिये। अिसलिअे फिर तो अस्पृश्यता रहती ही नहीं।

शास्त्री: सच्ची पतिव्रता हो तो अुसे आग भी नहीं जला सकती। रामायणके पातिव्रत्यकी व्याख्या देख लीजिये।

बापू: किन्तु अिस व्याख्याकी कसौटी पर कोअी स्त्री खरी अुतरती है, अिसका हमें कैसे पता लगे?

शास्त्री: अग्निपरीक्षा।

बापू: यानी सब स्त्रियोंको आगमें डाला जाय और वे जल जायं तो यह माना जाय कि वे सब अपवित्र हैं?

शास्त्री: हां, मैं यही कहता हूं।

बापू: मुझे कुछ नहीं कहना। मुझे सवाल भी नहीं पूछना। मद्रासे यहां तक आनेका आपने कष्ट किया अिसके लिअे मैं बहुत आभारी हूं।

बापूसे मैंने कहा: यह संवाद अक्षरशः छाप दें तो?

बापू: नहीं छापा जा सकता, यह हंसीका पात्र बनेगा।

मैं: किन्तु ये लोग अपनी करतूतोंसे हंसीके पात्र बन रहे हैं। आप किस तरह बचा सकेंगे? आपको शास्त्रियोंके नमूने वर्णन करने होंगे।

बापू: सही है, परन्तु यह तो सारे शास्त्रियोंसे निपटनेके बाद। आज तो मैं जहरके घूंट पी रहा हूं।

किन्तु शास्त्री गये नहीं थे, अिसलिअे संवाद आगे जारी रहा।

बापू: सीताके साथ सीता गअी। आप कहते हैं अुस तरहकी सती आज कोअी नहीं। अिसलिअे तो यह कहना चाहिये कि सभी अपवित्र हैं?

शास्त्री: सारे जातिचांडालों और कर्मचांडालोंकी शुद्धि न हो, तब तक वे मंदिरमें जाने लायक नहीं हैं।

बापू: किन्तु आप तो कहते हैं कि सभी कर्मचांडाल हैं यानी हम या तो सब मंदिर बन्द कर दें, या अिन कथित चांडालोंको अपनेमें मिला लें और अिस तरह शुद्ध होकर सारी शुद्धि कर लें। यदि आप किसीको चांडाल कहेंगे, तो वह कहेगा तू भी चांडाल है। अिसलिअे हममें अितनी नम्रता होनी चाहिये कि हम किसीको भी चांडाल न कहें। तुलसीदासने तो कहा है कि मैं नीचसे नीच हूं। अिसी तरह हम भी कहें कि हम सब पतितसे भी पतित हैं। आत्मशुद्धिकी पहली सीढ़ी यह है कि हम अपनी अशुद्धिको कबूल करें। हम यदि अपनेको विशुद्ध मानते हों, तब तो हमें मंदिरोंमें जाने या प्रार्थना करनेकी कोअी जरूरत ही नहीं। परमेश्वर क्या कोअी शास्त्र पढ़ता होगा?

मैं कैसे कह सकता हूं कि मेरे पूर्वज कोअी चांडाल थे ही नहीं? मैं कह ही नहीं सकता। आप भी अैसा नहीं कह सकते।

शास्त्री: जातिचांडालका तो असाधारण लक्षण होता है।

बापू: मैं वही जानना चाहता हूं।

शास्त्री: जातिचांडालके माता-पिता जातिचांडाल होते हैं।

बापू: किन्तु आजकल किसीको चांडाल कहा नहीं जाता। क्या धोबीको चांडाल कह सकते हैं?

शास्त्री: वह तो संकर जातिकी संतान है।

बापू : हमारे शास्त्री अपने आसपास होनेवाली घटनाओंके प्रति आंखें बन्द करके चलते हैं, यह बड़ा दुर्भाग्य है। अिसीलिअे अुनकी दलीलें गलत होती हैं और अुनकी हकीकतें भी गलत होती हैं। धोबीको चांडाल अिसलिअे कहा जाता है कि धोबीके लिअे सदियों पहले रजक शब्द अिस्तेमाल किया जाता था और यह रजक अस्पृश्य माना गया है।

शास्त्रीका दुभाषिया : किन्तु शास्त्रीके विचार अैसे नहीं हैं।

बापू : तो वे साबित कर दें कि अमुक मनुष्य जातिचांडाल है। पुराणोंकी कथाओंके चांडाल तो आज रहे नहीं। कोअी होगा तो अुसे हम जानते नहीं। अिसलिअे शास्त्रीजीको तो हिम्मतके साथ कहना चाहिये कि आजकलके अस्पृश्य चांडाल नहीं हैं। क्या शास्त्रीजीको यह पता है कि आज तो विवाह सम्बन्धी कानून बन गये हैं और अिन कानूनोंके अनुसार ब्याहे हुअे दम्पतीकी सन्तान अुनके सारे शास्त्रोंके होते हुअे भी हिन्दू मानी जाती है? अकेले मूलभूत सिद्धान्त ही शाश्वत हैं। सद्धर्म जाननेवाले सच्चे शास्त्रीको तो आगे बढ़कर कहना चाहिये कि आजकल चांडाल हैं ही नहीं और अस्पृश्यता शरीरकी अस्वच्छता तक सीमित है। क्या आप यह कहना चाहते हैं कि मंदिरमें जानेवाले सभी पवित्र होते हैं? कुछ तो स्त्रियोंके चेहरे देखनेके लिअे ही मंदिरमें जाते हैं। किन्तु मैं अिन लोगोंको अपवित्र कहनेको तैयार नहीं, क्योंकि मैं भी अपवित्र हूं। यदि मैं पवित्र और पूर्ण होता, तो परमेश्वर हो जाता और आसमानसे शास्त्र अुतारता होता।

शास्त्री : चांडालोंको मंदिर-प्रवेशका अधिकार नहीं, यह शास्त्रवचन है। किन्तु राजनैतिक या व्यावहारिक दृष्टिसे अुन्हें छूट दी जा सकती है।

बापू : मैं तो चाहता हूं कि ये धार्मिक दृष्टिसे मंदिर-प्रवेश करें, राजनैतिक या व्यावहारिक दृष्टिसे नहीं। हिन्दूधर्मको विशुद्ध करनेके लिअे अिसकी जरूरत है। हिन्दूधर्म आज मरने बैठा है। अुसे बचा लेनेके लिअे यह जरूरी है। हिन्दूधर्मको विशुद्ध करनेके लिअे मंदिर खुल ही जाने चाहियें। आप तो अैसी बातें कर रहे हैं, जैसी कोअी प्राचीन शास्त्री भी नहीं करेगा। कोअी अनिष्ट अैसा नहीं, जिसका निवारण न हो सके। आप शास्त्रोंमें से यह खोज निकालिये कि अिन लोगोंको किस तरह अपनाया जाय। प्रायश्चित्त कराकर नहीं, क्योंकि आपके कहनेके अनुसार तो हम सब चांडाल हैं। भागवत धर्मके अुदयके बाद प्रायश्चित्तकी बातें करना निरर्थक है। भागवत तो कहती है कि सच्चे दिलसे द्वादशाक्षरी मंत्र (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) का अुच्चारण करो कि तुम शुद्ध हो गये। कितने ही पाप किये हों, तो भी अुसके लिअे अितना काफी है। गोमांस-त्याग भी मंदिर-प्रवेशके

याद कराया जा सकेगा। शुद्धि होनेके लिअे तीन सालकी जरूरत नहीं। यह वात वाहियात है। किसी शास्त्रमें भले ही तीन वर्ष लिखे हों, किन्तु अैसे भी शास्त्रवचन हैं कि मनुष्यके संकल्प करनेके साथ ही वह शुद्ध हो जाता है।

शास्त्र हिन्दूधर्मकी रक्षा करनेके लिअे हैं। आज तो वे हिन्दूधर्मका नाश कर रहे हैं। चिन्तामणराव वैद्यकी तरह मुझे शास्त्रोंसे कुछ सिद्ध नहीं करना, वल्कि शास्त्रोंमें गहरा गोता लगाकर अुनमें से सच्चे रत्न खोज निकालने हैं, शास्त्र-वचनोंका हार्द पकड़ लेना है। यदि पापी मनुष्य द्वादशाक्षरी मंत्रसे अपने पाप धो सकता है, तो कथित चांडाल भी वैसा कर सकता है। भागवतका यह वचन मृत वचन नहीं, जीवनसे भरा हुआ है। और कुछ नहीं तो सच्चे दिलसे अिस मंत्रका अुच्चारण करनेसे अुस समय तकके लिअे तो मनुष्य शुद्ध हो ही जाता है। यह दूसरी वात है कि वह चौवीसों घंटे विशुद्धिकी हालत कायम न रख सके।

अन्तमें वापूने शास्त्रीको आनन्दशंकरभाअीकी व्यवस्था वताअी। शास्त्रीने अिस व्यवस्थाका जवाव देनेका वीड़ा अुठाया और वादमें कहा: आनन्दशंकरभाअी हार मान लें, तो फिर आप भी मान लेंगे?

वापूने कहा: नहीं, क्योंकि मेरे मतका आधार अुन पर नहीं है। हां, वे हार मान लें तो मुझे गहराअीसे सोचना जरूर होगा।

१०-१-'३३ आज ... ने तीन घंटे लिये। सारी मुलाकातें लगभग चार वजे तक मुलतवी रहीं। शामको वापू कहने लगे: में आज विलकुल थक गया हूं। अेक छोटीसी वात मनवानेमें अिस आदमीने अितना कष्ट दिया। रातको तेल मलवाते समय कहने लगे: आज सिर वहुत दर्द कर रहा है। कपाल पर तेल जरा ज्यादा मलो। ठेठ नाक तक क्रोध आ जाय और अुसे रोक रखना पड़े, तो कितना जोर पड़ता है!

यहां अिस यार्डमें दो स्विस सटोरिये लंवी सजा पाकर आये हैं। अुनमें से अेक क्षयरोगी है। आम तौर पर क्षयरोगियोंके लिअे अलग यार्ड होता है। यह यार्ड छोटा होनेके कारण या अिस कारण कि अिसमें हिन्दुस्तानी होनेकी वजहसे अुनके साथ युरोपियनोंको किस तरह रखा जाय, या किसी भी कारणसे मेजर भंडारीने अुसे हमारे सामनेकी कोठरीमें रखा। वल्लभभाअीको यह वात ठीक नहीं लगी। वे कहने लगे कि हिन्दुस्तानी होता तो अुसे यहां रखते? और अैसा हो तो युरोपियन होनेके कारण यहां क्यों रखा जाता है?

दूसरे दिन अुन्होंने मेजर महेताको डांट वताअी: आपको शर्म नहीं कि आप किसकी जिन्दगी जोखममें डाल रहे हैं? अिस आदमीके यहांके वर्तनसे दूध पीकर विल्ली हमारे यहां दूध पिये, तो अुसके जरिये भी छूत लग सकती है। अिस आदमीको सारी रात खांसी आती है। मैं तो विरोध करूंगा, वगैरा वगैरा।

सुवह मेजर अुस आदमीको देख गये और दूसरे यार्डमें ले जानेका हुक्म दे गये। जव अुसे ले जा रहे थे, तव वल्लभभाअीने वापूको खवर दी। वापूने कहा: यह कैसे हुआ? वल्लभभाअीने मेजरके साथ हुअी वातचीत अपने ढंगसे सुना दी।

वापूको दुःख हुआ। वह युरोपियन है, अिसीलिअे यह सव हुआ? हमारी युरोपियनसे क्या दुश्मनी? हमारा कोअी संवन्धी ही अिस तरह वीमार होता तो? हममें से महादेवका ही यह हाल हो, तो हम अुसे जाने देंगे या यह मांग करेंगे कि वह हमारे साथ ही रहे और हम अुसकी सेवा करें? अिसका विचार शुद्ध मानवताकी दृष्टिसे ही हो सकता है। आश्रममें तो अितने सारे क्षयरोगी हैं। और अिस आदमीको पता चले कि अिन लोगोंने मुझे अुस वार्डमें भिजवाया तो? अिसके वाद अमराअीमें जाते हुअे मेरे साथ लम्वी चर्चा हुअी: तुम्हें अैसे मामलेको विनोदमें नहीं लेना चाहिये था। और सव मामलोंमें हंस सकते हैं, किन्तु अिस मामलेमें क्यों हंसे?

मैंने कहा: अुसे जिस यार्डमें ले गये हैं, वह वड़ा, खुला और वढ़िया है। हम अुसकी सेवा करना चाहें तो भी हमारे लिअे तो मौका है ही नहीं।

वापू कहने लगे: भले ही न हो, किन्तु अुसे हटा देनेका कारण तो यही है न कि वह युरोपियन है और हमें कहीं अुसकी छूत न लग जाय! हम दयाशून्य कैसे हो सकते हैं?

अेक सिंधी सज्जन आये।

वापू: मेरे अन्तरकी आवाज अीश्वरकी ही आवाज है, यह मैं सिद्ध नहीं कर सकता। यह तो अेक आध्यात्मिक अनुभव है। हरअेक मनुष्यके अन्दरसे अीश्वर वोलता तो है ही, परन्तु हरअेक मनुष्य अुसे सुन नहीं सकता। अन्तरकी आवाज दो तरहकी होती है, अीश्वरकी और शैतानकी। किसकी है अिसका निर्णय तो परिणाम परसे ही किया जा सकता है।

स०: किन्तु अुस समय मनुष्य यह नहीं कह सकता कि निश्चित रूपमें यह अीश्वरकी ही आवाज है?

वापू: मैं यह कहूं कि मैंने अीश्वरकी आवाज सुनी है, किन्तु मेरी भूल हो सकती है। अुसे पहचाननेका हमारे पास अिसके सिवाय कोअी

साधन नहीं है कि शैतानकी आवाज दोजखमें ले जाती है, जब कि ओीश्वरकी आवाज हमारी अुन्नति करती है।

स०: अिस बारेमें आपके दिलमें कोअी शंका है?

बापू: नहीं। किन्तु अिसका आधार भी अिस बात पर रहता है कि मनुष्यने कितना आत्मसमर्पण साधा है। अैसे मनुष्यका हरअेक शब्द और हरअेक विचार ओीश्वरप्रेरित होता है।

स०: तो द्वैत नहीं है?

बापू: है और नहीं भी है। अिसका आधार भी अिस बात पर है कि कितना आत्मसमर्पण साधा है। जब-जब मैंने कोअी बड़ा कदम अुठाया है, तब-तब पूरा विचार किये बिना तो अुठाया ही नहीं। किन्तु अिसकी अेक कसौटी है। जब यह तुम्हारी अपनी बुद्धिका काम हो, तब तुम भविष्यके लिअे प्रतिदिनका निश्चित कार्यक्रम दे सकते हो। परन्तु ओीश्वरप्रेरित कामके बारेमें तुम भविष्यके लिअे कुछ नहीं कह सकते। गोलमेज परिषदमें ओीश्वर ही मेरे द्वारा बोल रहा था। मैं वह वाक्य (पृथक निर्वाचक-मंडलका मैं प्राणोंकी बाजी लगाकर विरोध करूंगा) कुछ भी विचार किये बिना ही बोला था। मुझे पता नहीं था कि मैं क्या बोलनेवाला हूं। सहज ही ये वचन मेरे मुंहसे निकल पड़े।

स०: परन्तु यह केलप्पनवाला अुपवास तो सहानुभूतिमें किया जानेवाला अुपवास माना जायगा न?

बापू: हां।

स०: वह कमजोर पड़ गया होता और अुसने अुपवासका विचार छोड़ दिया होता तो?

बापू: तब तो अुपवास करने और अुसे जारी रखनेका मेरा और भी ज्यादा फर्ज हो गया होता। कोअी भी मनुष्य योजनापूर्वक महान नहीं बन सकता। मैं महान हूं, अैसा मुझे भान भी नहीं। लोग मुझे महान मानते हैं, यह आश्चर्यकी बात है। मेरे लिअे तो यह आश्चर्य ही है। यह मैं झूठे विनयसे नहीं कह रहा हूं। अैसे मामलोंमें लोग मुझे समझ नहीं सकते। मैं लोगोंसे कहता हूं कि मैं ठीक आपके जैसा ही हूं। मैं स्वीकार करता हूं कि मनुष्य मनुष्यके बीच भेद होता है। मैं आपसे ज्यादा अच्छी बहस कर सकता हूं। मैं आपसे ज्यादा अच्छी अंग्रेजी लिख सकता हूं। परन्तु मैं नहीं जानता कि मेरी महत्ता किस बातमें है? टैगोर महान हैं। किन्तु अुन्हें अपनी महत्ताका भान नहीं होगा।

स० : परन्तु टैगोर ही जब आपको महान बताते हैं, तो हम तो आपको जरूर महान मानेंगे।

बापू : आप भले ही मानिये, पर मैं अैसा नहीं मान सकता। अिससे अुलटे में तो यह कहूंगा कि जो आदमी अपनेको महान मानता है, वह महान नहीं हो सकता। पैगम्बर कहते हैं कि मेरे पास आओ। किन्तु अैसा अीश्वर अुनसे कहलाता है। वे नम्रतापूर्वक अैसा कहते हैं। अपनेको महान समझकर अैसा नहीं कहते। अपने लिअे 'मैं' जैसी कोअी चीज अुनमें होती ही नहीं। वे मानते हैं कि 'अिस क्षण तो अीश्वर मुझमें बसा हुआ है।' अुनके बड़प्पनका सवाल ही नहीं। अेक अीश्वर ही महान है। या वे अिसलिअे महान हैं कि अीश्वर अुनके द्वारा बोलता है या अुनके जरिये काम करता है। किन्तु वे यह नहीं कह सकते कि हम अीश्वरको अपने द्वारा काम करने देते हैं।

स० : किन्तु तत्त्वज्ञानकी दृष्टिसे तो मनुष्य कहता है कि मैं आत्मा हूं या परमात्मा हूं।

बापू : हां, तात्त्विक दृष्टिसे यह सही है। किन्तु जैसे यूक्लिडकी सीधी लकीर या यूक्लिडका बिन्दु आप खींच नहीं सकते, अुसी तरह अद्वैत परम सत्य है और वह अीश्वरमें ही बसता है। हमको द्वैत मालूम होता है, अिसलिअे कहीं न कहीं अद्वैत होना ही चाहिये। मनुष्यको अैसा लगे कि मैं अीश्वर हूं, तो वह 'मैं' तो मनुष्य ही है। मनुष्यके रूपमें तो वह द्वैती ही है। किन्तु द्वैतीके रूपमें भी ईश्वरके साथ वह अेक है।

स० : रामकृष्ण परमहंसको आपने Man God (अीश्वरी पुरुष) कहा है। वे रामकृष्ण क्या अीश्वरसे अलग थे?

बापू : अुनके द्वारा अीश्वर काम कर रहा था। यही बात कृष्णके लिअे कही जा सकती है। मैं तो कृष्णमें या अीसा मसीहमें अैसे असाधारण या अलौकिक गुणोंका, जो दूसरे मनुष्योंमें हो ही नहीं सकते, आरोपण नहीं करता। यह दूसरी बात है कि साधारण लोगोंसे अुनमें विशेष शक्ति थी।

मनुष्यके मर जानेसे पहले अुसका मूल्य नहीं लगाना चाहिये। मैं दंभी या मूर्ख भी हो सकता हूं। बदमाश आदमी दुनियाको लम्बे समय तक धोखा दे सकता है। दंभी मनुष्य तो अिससे भी ज्यादा धोखा दे सकता है। किन्तु लोग मुझसे पूछें कि तब आप अधिकारपूर्ण वाणीमें हमारे साथ कैसे बातें करते हैं, तो मैं कहूंगा कि कोअी न कोअी मुझसे अैसी बातें कराता है। जैसे जगत पर अीश्वरका प्रभाव पड़ता है, वैसे ही जगत पर मनुष्यका प्रभाव भी पड़ता है। अैसे प्रभावशाली मनुष्य गुरु कहलाते हैं। मैं अैसे गुरुकी तलाशमें हूं। मैं भी

बहुतसे आदमियों पर प्रभाव डालता हूं, अिस अर्थमें कि मेरे शब्दको वे कानून मानते हैं। मैं अपनी अिस वशीकरण शक्तिको काम करनेसे कैसे रोक सकता हूं? यद्यपि मैं अिसे अपनी वशीकरण शक्ति कहता ही नहीं। यह शक्ति तो अीश्वरने मुझे दे रखी है। साधारण मनुष्योंमें भी अैसी शक्ति होती है। किन्तु अुन्हें अिसका भान नहीं होता। अैसा भान होना ही महत्त्वकी बात है।

स० : मेरी बहन अिस मामलेमें आपकी बात सुननेसे अिनकार करती है। और सब बातोंमें वह आपको अवतार मानती है, किन्तु अिस मामलेमें नहीं मानती। क्या मैं लोगोंसे यह कह सकता हूं कि तुम शास्त्रोंको भले ही न मानो, परन्तु गांधीजीको अवतारके रूपमें मानो?

बापू : आप अैसा नहीं कह सकते। किन्तु यह विचार आपको अितना अधिक पकड़ ले कि आपसे कहे बिना रहा ही न जाय, तो दूसरी बात है। यह भ्रम हो सकता है, परन्तु आपके लिअे वह सत्य वस्तु है। सामनेवाले मनुष्यके साथ बहसमें आप यह कहेंगे कि मैं तुम्हें समझा तो नहीं सकता, किन्तु बात मेरी ही सच है। मैं अिस आदमीकी बात माने बिना रह ही नहीं सकता।

किन्तु आप अैसा कहने या न कहनेके बारेमें मेरी सलाह लें, तो मैं कहूंगा कि न कहिये। अीश्वर मेरे द्वारा काम ले रहा होगा, तो करोड़ों लोग जैसा मैं कहूंगा वैसा करेंगे। किन्तु आप मुझसे पूछने आयें कि मैं क्या करूं, तो मैं नहीं कह सकता कि आप अिसी तरह कीजिये।

मैं पैगम्बर होनेका दावा नहीं करता। मुझे अैसा लगे तो मैं कहनेसे हिच-किचानेवाला नहीं हूं। मुझे बहुत धुंधला-सा प्रकाश मिला है, और अुससे मुझे आनन्द है। मेरे लिअे तो यह प्रकाश काफी है। औरोंको यह प्रकाश बहुत ज्यादा तेज भी लग सकता है।

शामजी मारवाड़ी अपनी पत्नीके साथ और दूसरे अेक सज्जन दो हरिजन लड़कियोंके साथ आये।

मुलाकातके लिअे आनेवाले हरिजनने पूछा : अीश्वर है? और है तो कहां है?

बापूने हरिजन बालकके साथ दिल्लगी करते हुअे पूछा : हमारी हस्ती है क्या? हवा है अिसका पता कैसे चलता है? हवाको आंखोंसे देख सकते हैं? हाथसे पकड़ सकते हैं? फिर अीश्वर तो हवासे सूक्ष्म और हवासे हलका भी है।

तब अेक बड़ेने कहा : अितना समझमें आता है। परन्तु आप लिख दीजिये कि अीश्वर सर्वव्यापक है और मंदिरमें भी है। वह सबको बताअूंगा तो वे मान लेंगे।

बापू: अीश्वरको प्रमाणपत्र लिख दूं? सर्वव्यापक तो वह है ही। यदि मनुष्य देख सके तो वह सब जगह है। किन्तु कोअी यह माने कि अीश्वर मंदिरमें ही है, तो वह अीश्वरके साथका लाभ वहां ले। अीश्वर हवाकी तरह सब जगह फैला हुआ है। पर हवाका भी बनानेवाला अीश्वर है।

आज सुबह रणछोड़दास पटवारीको लम्बा पत्र लिखवाया। अुनके ८८ सवालोंके ८८ जवाब दिलवाये! और कोअी होता तो शायद ही अितने धीरजसे अुनका पत्र पढ़ता या जवाब देता। किन्तु बापू तो अैसे हैं कि अुपकारको जीवन भर नहीं भूलते। वे आड़े वक्त काम आये थे।

वल्लभभाअी: यह आड़ा वक्त कब तक गिनायेंगे? आज तो ये सीधे वक्त भी काम आनेवाले नहीं हैं।

बापू: मरूंगा तब तक गिनाअूंगा।

पत्रमें मुरब्बी रणछोड़दासभाअी लिखा और हस्ताक्षरमें मोहनदासके प्रणाम लिखे।

मैंने पूछा: ये आपसे बड़े हैं?

बापू बोले: सात-आठ वर्ष तो बड़े होंगे ही। और मैंने अुन्हें बड़ा भाअी ही माना है। अुन्होंने अुस दिन पांच हजार रुपये अुधार न दिये होते, तो मैं दूसरे दिन बम्बअी नहीं जा सकता था और विलायत भी नहीं जा सकता था। और यह कहावत तो है ही कि संकटसे बचा हुआ सौ बरस जीता है! अिसी तरह अेक बार मेरा जाना रुक जाता तो फिर रुक ही जाता। मैं जा ही नहीं सकता था। मैट्रीक्युलेशनकी परीक्षाके समय मैं जहां ठहरा था वहांसे अिनके भाअी ही मुझे अपने यहां ले गये थे। मेरे पिता और वृन्दावनदास पटवारीका गहरा सम्बन्ध था। विलायत भेजनेमें मदद देनेवालोंमें हरिदास वोरा, ये रणछोड़दास और अेक पासवीर नामके थे। अुन्होंने सब कपड़े वगैरा बनवाये थे। और चौथे दामजी महेता थे। पटवारीके भाअीने मुझे अपने यहां ठहराया ही नहीं, बल्कि अुस समयके रिवाजके अनुसार मुझे अितना और पूछा: देखो, तुम्हें परीक्षकके यहां सिफारिश-विफारिश करवानी हो, तो अपनी सब जगह जान-पहचान है! मैं तो अचंभेमें ही पड़ गया! यद्यपि मुझे कहना चाहिये कि मैं पास होनेके लायक नहीं था। यह तो मैंने परीक्षाके पहले दिन सारी रात कमलाशंकरका अिंग्लैंडका अितिहास रट डाला था, क्रामवेलके बारेमें जैसा वैसा पढ़ गया था और वही सवाल आ गया और दस-बारह पन्ने भर दिये, अिसलिअे पास हो गया!

आज रोच और जैक्सन यहां आये। यह आदमी कितना सीधा चलता था! नियमों पर कितना जोर देता था! सच्चाअीका प्रमाणपत्र मुझसे लिया था। अुसने यह सब किया और अुसके ये हाल!

. . . को अुसके किये हुअे व्यर्थके खर्चों, हिसाव देनेकी असमर्थता, और नारणदासके प्रति दिखाये अविनयके वारेमें लम्वा पत्र

१२-१-'३३ लिखा। अुसमें से सिद्धान्त सम्वन्धी अेक-दो हिस्से:

"आश्रमके स्तंभरूपी नियमोंका जो पालन न कर सके वह यदि आश्रममें रहे, तो हर तरह अनुचित माना जायगा। अिस तरहसे रहनेवालेको लाभ नहीं और आश्रमको भी लाभ नहीं। लोग अिस तरह रहने लगें तो आश्रम टूट जाय।

"आश्रममें रहनेवालेको आश्रमके प्रति शुद्ध प्रेम होना चाहिये। अुसका अैसा प्रयत्न होना चाहिये कि अुसकी प्रतिष्ठाको हानि न पहुंचे। अिनमें से कोअी वात भी मैं अभी तक तुममें नहीं देख सका हूं।"

ब्रह्मचर्य पालनेवाले विवाहित पुरुषका धर्म वताते हुअे लिखा: "अितना याद रखो कि जव तक तुम अुसके प्रति निर्विकार न रह सको, तव तक तुम्हें अुसके नजदीक जानेका अधिकार नहीं है, सेवाका भी अधिकार नहीं। यह पिछली वात समझमें आ जाय, तो अुसके प्रति विकार जलकर खाक हो जायंगे। तुम दृढ़ रहोगे तो तुम्हारा वल रोज वढ़ता ही जायगा।"

वर्णाश्रम स्वराज्य संघवाले . . . के साथ दु:खद पत्रव्यवहार होता ही रहता था। यह आशा रखी जाती थी कि आज वे लोग आयंगे, किन्तु अुनके शास्त्री तो दरवाजेके वाहर वैठे-वैठे शास्त्रार्थ करते रहे! चिट्ठी भेजते जाते और जवाव लेते जाते। फिर अेक घण्टे सलाह-मशविरा करके जवाव दें और फिर अुसका जवाव मिले, तव वापस जवाव भेजें। अिस तरह चार वजा दिये! वापू वड़े तंग आ गये और वार-वार निश्वास डालने लगे कि 'यही सनातन धर्म है!' अिनकी कलअी खोलनी हो तो आसानीसे खोली जा सकती है, किन्तु वापूने तो यह समझकर कि यह सनातन धर्मका भण्डाफोड़ करना होगा, चुप रहनेका निश्चय किया। हां, ये लोग कोअी चीज प्रकाशित करेंगे, तव तो वापूको मजबूरन प्रकाशित करना पड़ेगा। शामको सारा प्रसंग वयान करके कहने लगे: सनातनियोंको आज सुवह ही छुट्टी दे सकता था, किन्तु अैसा न करके आखिर तक वड़ी दीनता दिखाअी। यह किस लिअे? सनातन धर्मकी सेवाके लिअे।

अैसी नादानीका प्रदर्शन अभी तक नहीं देखा गया। अेक वार कहते हैं: हमारे साथ चर्चा करनेके प्रमाण स्वीकार कीजिये।

वापूने कहा: आजकलकी अस्पृश्यता शास्त्रोंमें है या नहीं और आज अस्पृश्य माने जानेवालोंको मन्दिर-प्रवेश करना चाहिये या नहीं, अितनी वातकी चर्चा आपकी अिच्छा हो अुस तरह कीजिये।

तब वे बोले : ये दोनों बातें तो अेकसी ही हैं, पूर्वमीमांसाकी पद्धतिके अनुसार चर्चा करना स्वीकार कर लीजिये, अितना काफी है। अिस पर हस्ताक्षर कीजिये।

बापूने हस्ताक्षर कर दिये, सिर्फ विषय अूपर कहे अनुसार बदल दिये। अिस पर वे निस्तेज-से हो गये और चिढ़कर, घबराकर दरवाजे परसे चले गये, और गांधीके वचनभंगकी अखबारोंमें चिल्लाहट मचाअी!

*　　　　　*　　　　　*

. . . के भाषण आजकल अखबारोंमें आ रहे हैं। अिस परसे हरिभाअूने अस्पृश्यता, मन्दिरों और प्रार्थनाके बारेमें कोअी बातचीत की होगी। बापू कहने लगे: यह आदमी लोगोंको भंग पिलाकर पागल बना रहा है। बहुतसी बातें तत्त्वके रूपमें सच हो सकती हैं, पर अुन्हें लोगोंके सामने जैसीकी तैसी रखनेसे तो अनर्थ ही होता है। सादगीका खाने और कपड़ोंके साथ सम्बन्ध नहीं और हृदयका मनके साथ सुमेल है, अिसका तो भयंकर अर्थ किया जा सकता है। प्रार्थनाकी वह हंसी अुड़ाता है, मगर प्रार्थना तो हमारे श्वासोच्छ्वासमें और हर काममें मौजूद है। मैं तुम्हें अमुक बात करनेको कहता हूं, यह प्रार्थना नहीं तो क्या है? हम अेक-दूसरेकी प्रार्थना करके अेक-दूसरे पर आधार रखते हैं। आधार न रखते हों तो जमीन पर खड़े तक नहीं रह सकते।

. . . बहन आअी थी। अुससे अुसकी करुण कथा आज ही सुनी। तेरह वर्षसे पतिके साथ तीव्र धार्मिक मतभेद जारी है, किन्तु अेक रोज भी पतिको पत्र लिखे बिना नहीं रही! अिसकी पतिभक्ति विलक्षण है। और पतिको पत्नीके विचार बिलकुल पसन्द न होने पर भी पत्नीके साथ निभ रहा है। अुसकी अिस निष्ठाको भी धन्य है। बड़ी होशियार और कुशल स्त्री मालूम हुअी। बापूके प्रति अपार भक्ति है। और अुसकी बातोंसे लगा कि वह नर्सकी हैसियतसे दयाकी मूर्तिकी तरह काम करती होगी। हाथके कैंसरके लिअे अेक आदमीका हाथ काट डालना था। अुसकी अुस दिनकी व्यथा और अिस स्त्रीका करुण वर्णन आंखोंसे आंसू लानेवाला था। वह बोली: अितने पर भी मेरे पति मानते हैं कि यह प्रभुका काम नहीं है। अैसे काममें तुझे कैसे आनन्द मिलता है? किन्तु अिसका निर्णय मैं करूं या वे?

यह किस्सा अत्यन्त करुणापूर्ण है। वह पति न जान सके अिस ढंगसे अपनी दो लड़कियोंसे मिलनेके लिअे . . . जानेको निकली थी। बापूने अिस तरह जानेसे रोका। अुसे यह सलाह दी कि पतिसे अिजाजत मांगना तेरा धर्म है। अुन्हें टेलीफोन कर या तार दे और वे अिजाजत न दें तो अहमदाबाद लौट जा। अिसीमें अुनकी अुत्तमोत्तम सेवा है और अुनका हृदय पिघलानेका

यही सवसे अच्छा रास्ता है। दूसरी सलाह यह दी कि अपने दुःखकी वात जहां-तहां न करे। यह विचार अितना पवित्र है कि अिसमें सवको शरीक नहीं किया जा सकता। मित्र तो वहुत मिलेंगे, किन्तु सवको अैसे मामलेमें मित्र नहीं वनाया जा सकता। अिसकी भक्ति दूसरी ही तरहकी है, क्योंकि वह विवाहिता और दो वच्चोंकी मां है। किन्तु अुसकी अुत्कटता मीरावहनसे जरा भी कम नहीं कही जा सकती।

अेक और नअी जर्मन वेटी कहती है: मैं दूसरी मीरावहन वननेका प्रयत्न करूंगी।

कल रातको वल्लभभाअीने वापूके सामने अपना गुवार निकाला: आप अपने साथियोंसे पूछे विना कअी वार अैसी सूचनाअें दे डालते हैं कि आदमी परेशानीमें पड़ जाता है और अुसकी स्थिति वड़ी विपम हो जाती है। मन्दिर-प्रवेश सम्वन्धी समझौतेकी सूचना आपने राजगोपालाचार्यसे पूछे विना प्रकाशित कर दी। अुससे कअी नअी वातें पैदा हुअी हैं। हरिजन अुसके विरुद्ध हो गये, जस्टिस पार्टीवाले भी विरुद्ध हो गये और सनातनियोंको अिस वारेमें पड़ी ही क्या है? आप अिस तरह काम क्यों विगाड़ते हैं? और काम करनेवालेकी स्थिति किस लिअे मुश्किल वनाते हैं? यह आदत आपको सुधारनी चाहिये!

वापू कहने लगे: मैं जान-वूझकर अैसा करता हूं? यदि मुझे अैसा न लगे कि यह वात राजाजीसे पूछनी चाहिये, तो मैं क्या करूं? आप मुझसे पूछें कि आपको अैसा लगता क्यों नहीं, तो अिसका मैं क्या जवाव दूं? मेरा जो स्वभाव पड़ गया है, अुसका क्या अिलाज? मेरे साथी मेरे साथ न रह सकें तो क्या किया जाय? मुझे छोड़ जायंगे? औरोंका अिसमें सहयोग न मिले तो कोअी वात नहीं, किन्तु जो चीज प्रगट करनी चाहिये अुसे मैं रोक कैसे सकता हूं?

मैंने कहा: मेरे खयालसे यह वात आपके स्वभावके लिअे असंभव है। जव किसीके साथ आप वात करते हों और अुसके साथ कअी वातोंकी चर्चा हो रही हो, तव आपको जो सूझे अुसीको समझौतेके तौर पर सुझायें, तो अैसे समय वल्लभभाअीको या राजाजीको पूछना भी असंभव है।

वापू: ठीक है। यह मेरे स्वभावमें नहीं है; हो सकता है यह मेरा दोप हो, किन्तु यह दोप आज कैसे सुधर सकता है?

मैंने कहा: अर्विनके साथकी वातचीतके समय दो वार आप अैसा समझौता कर आये थे, जो वल्लभभाअी और जवाहरलालको पसन्द नहीं था। किन्तु अिसका अुपाय क्या?

वापू कहने लगे: ठीक है। मैं तो लोगोंका आदमी (डेमोक्रैट) ठहरा। लोगोंके सामने अनेक वस्तुअें अलग-अलग ढंगसे रखते ही रहना पड़ता है और अिसी तरह लोकमतको वसमें करना पड़ता है। अिसलिअे मैं और कुछ नहीं कर सकता।

यह तो थोड़ासा ही सार है, किन्तु चर्चा तो लगभग डेढ़ घंटे हुअी थी। छगनभाअीने अिस अवसर पर मगनलालभाअीको याद किया। तव वापूने कहा: मगनलालकी शिकायत दूसरी ही थी। वह कहता था कि आप नअी-नअी जिम्मेदारियां सिर पर ले लिया करते हैं और अुनका भार मुझे अुठाना पड़ता है। नारणदास यह सवाल नहीं अुठाता। अुसमें अलौकिक शक्ति भरी है, अिसलिअे जो मैं कहता हूं अुस पर अमल करता ही रहता है। किन्तु मगनलाल प्रतिभाशाली था। अुसमें अुत्पन्न करनेकी, नअी खोज करनेकी शक्ति थी। नारणदासमें यह नहीं है। किन्तु आज नारणदास काम चला रहा है क्योंकि हमने मगनलालकी कुर्बानी देकर नया पाठ सीखा है। अुस आदमीने मेरी योजनाओं पर अमल करते हुअे, आश्रमको स्वरूप देते हुअे अनेक वर्षका काम आठ-दस वर्षमें करके शरीरको घिस डाला।

१३-१-'३३

आज सवेरे वापूने कल वल्लभभाअीके साथ हुअी चर्चाका सार देते हुअे राजाजीको लम्बा पत्र लिखवाया। मीराकी भक्ति अपार है, किन्तु वापूकी भक्तवत्सलताकी भी कोअी सीमा नहीं। शायद ही कोअी दिन अुसका विचार किये विना जाता होगा, और अुसे लिखनेका पत्र भूलसे डाकमें डालना रह गया या अुसे देरसे मिला, तो वापूके दिलको वड़ी ठेस पहुंचती है।

मीराकी भक्ति वतानेवाला अेक वाक्य: "आपके पत्र लम्बे हों या छोटे, अुनमें गहरे महासागरके अमूल्य मोती भरे रहते हैं, जो मुझे दूसरे कितने ही लम्बे पत्रोंमें नहीं मिलते।"

दूसरा वाक्य यह वतानेवाला देखिये कि वह वापूके ही चिन्तनमें और हमेशा अिस महान निरीक्षककी नजरके नीचे ही चौवीसों घंटे विताती है:

"मैं अपने नित्य जीवनमें और अपने सारे विचारोंमें अपने हृदयसे आपको शरीक रखती हूं, किन्तु जव लिखने वैठती हूं तव यह चुनाव करनेका काम कि कागज पर आपको किसमें शरीक करूं और किसमें नहीं, वहुत कठिन हो जाता है। और कभी-कभी तो यह भी याद नहीं कर सकती कि अमुक वातें मैंने आपको लिखी या नहीं, क्योंकि मेरे हृदयसे तो ये सव वातें मैंने आपके साथ कर ही ली होती हैं।"

अिस तादात्म्य-साधनाके विना गुरु-शिष्यका सम्बन्ध असंभव है; और यही सच्ची गुरुभक्तिकी कसौटी है।

वापूने अुस पर प्रेमकी धारा वहा दी। पिछले सप्ताह सुन्दर कैलेण्डर भेजा था। अिस हफ्ते सुन्दर पत्रके साथ जॉन मॉरिस, अेण्ड्रूज और मेडलीनके पत्र भेजे और दूसरे सुन्दर कार्ड भेजे। वापूके पत्रका अेक वाक्य वापूकी शक्तिकी असाधारणता अेक ही लकीरमें वता देता है। नमक छोड़नेके वारेमें लिखते हुअे कहते हैं:

"अुसे लेनेकी लालसा तो मनमें नहीं रहती, जव लेता हूं तो अच्छा लगता है। किन्तु जिस क्षण मुझे पता लग जाय कि अमुक वस्तु मेरे लिअे हानिकारक है, अुसी क्षणसे वह मुझे अच्छी लगनी भी वन्द हो जाती है।"

वापूके सारे चरित्रकी कुंजी अिसमें है। श्रेय और प्रेयका अभेद अुन्होंने मुद्दतोंसे साध रखा है; और श्रेय ही प्रेय है, अिस सूत्रको अुन्होंने अपने जीवनमें अुतार लिया है।

सदाशिवराव और शिंदेके साथ वातें।

वापू: यह विल पास होनेके वाद भी वहुमतको अपने अधिकारका अुपयोग अल्पमतको भड़का देनेके लिअे नहीं करना चाहिये। हर रोज कुछ घंटे अल्पमतके लिअे मंदिर खुला रखना चाहिये। ये लोग भी मूर्तिके प्रति अेक खास भाव रखते हैं और मूर्तिका महत्त्व और अुसकी शक्तिको मानते हैं। अैसे लोगोंके लिअे मैं जगह कर दूंगा और अुन्हें पहले मौका दूंगा। मैं अुनसे कहूंगा कि मंदिर 'अशुद्ध' हो, अुससे पहले आप पेट भरकर दर्शन कर लीजिये और मैं वादमें जाअूंगा।

सदा०: किन्तु अिस तरह अुनकी लाघवग्रंथिको आघात नहीं पहुंचेगा?

वापू: लाघवग्रंथिका सवाल तो हरिजनोंके वारेमें हो सकता है। सुधारक यदि वहुमतमें हों, तो हरिजनोंको भी वड़े भाअीकी तरह वर्ताव करना चाहिये। और जिस चीजको करनेके लिअे वे कानूनसे वंधे नहीं हैं, वह अुन्हें स्वेच्छासे करनी चाहिये।

मैं यह नहीं चाहता कि अलग मंदिर वनवाये जायं। मैं अुनसे कहूंगा कि आपके लिअे सुविधा कर दूंगा। आप चले न जाअिये। जैसे आप हो गये, वैसा मुझे नहीं वनना है। आपने तो हमें हलका माना था। गोपुरम्के आगेसे दर्शन करके संतोष माननेको हमसे कहते थे। किन्तु हम आपको हलके नहीं समझेंगे। हम तो आपको आगे करेंगे और मूर्तिकी शुद्धिके वारेमें आपकी भावनाको संतुष्ट करेंगे। मनुष्य समझौता करता है, तो या तो कमजोरीसे करता है या वलवान होकर

करता है। सत्यार्थीकी हैसियतसे मैं बलवान बनकर समझौता करूंगा। कल ही सनातनियोंके साथ मैंने अैसा किया। अुन्होंने मुझे अेक लिखे हुअे कागज पर हस्ताक्षर करनेको कहा। आम तौर पर मैं अैसी लिखावट पर हस्ताक्षर नहीं करता। किन्तु अिन लोगोंके संतोषकी खातिर बहुत जरूरी सिर्फ दो फेरबदल करके मैंने हस्ताक्षर कर दिये। अुनके और मेरे बीच जो कुछ हुआ, वह सब मैं जाहिर करूं तो अिसमें हिन्दूधर्मकी शोभा नहीं है।

मैं अिस मामलेमें पड़ा, अिससे मुझे बहुत जाननेको मिला है। शास्त्रोंमें क्या क्या है, अिसका मुझे पता चला। यह सब जाने बिना मैं अैसे वक्तव्य नहीं लिख सकता था। या अितने अधिकारपूर्ण ढंगसे तो लिख ही नहीं सकता था। अुनके साथ मेरी अितनी मुलाकातें न हुअी होतीं, तो अिस समझौतेका मुझे विचार भी न आता।

शिन्दे: ये लोग समझते हैं कि यह तो फच्चरकी नोक है।

बापू: मैं अिसे फच्चरकी नोक नहीं मानता। मैं यह नहीं समझता कि सभी अेतराज करनेवाले झूठे हैं। मुझे अुन्हें मन्दिरोंसे निकाल नहीं देना है। जो सच्चे भावसे मंदिरोंमें जानेवाले हैं, अुनके जीवन तो मंदिरोंके साथ गुंथे हुअे होते हैं। यह मैं अपनी मांके अुदाहरण परसे कह रहा हूं। वह कितनी ही बीमार हो, तो भी मंदिरमें जाकर दर्शन किये बिना मुंहमें अेक दाना तक नहीं डालती थी। अुसकी अिस आदतके कारण ही अुसमें शक्ति आ जाती थी। मिले हुअे अधिकारका अुपयोग मुझे अेक राक्षसकी तरह या गुंडेकी तरह नहीं करना चाहिये। सच्ची माताको मुझे स्थान देना है। मंदिरमें जानेवाली सब स्त्रियां मेरी माताअें ही हैं। अुन्हें शुद्धि रखनी हो तो भले ही रखें। हरिजनोंको अुदार भावसे अुन्हें अैसा करने देना चाहिये और अुन्हें स्वेच्छासे अैसा करना चाहिये। आजकल जो चश्मे और अिंजेक्शन निकले हैं, अुनका अुदाहरण लीजिये। हमारे पूर्वज शायद अिन्हें वहम मानते। कल कोअी अैसा भी निकल सकता है, जो प्रार्थनाको वहम माने। फिर भी लोगोंकी भावनाका आदर करना ही चाहिये। अिस प्रकार मेरा सुझाया हुआ समझौता बिलकुल ठीक है। सनातनी यह बात मंजूर न करेंगे, किन्तु मैं देखता हूं कि वे मेरे नजदीक आते जा रहे हैं। मैं स्वयं हरिजन हूं और हरिजनों पर मेरा काबू है।

शिन्दे: हरिजन तो आपकी बात सुनेंगे। ये लोग आपकी सुननेको बंधे हुअे हैं। जब मैं यह कहता हूं कि कोअी समझौता न कीजिये, तो मैं यह नहीं कहता कि किसी दिन भी समझौता नहीं होगा।

बापू: मातेको दर्शन करनेकी अलग जगह चाहिये थी। यह गलत समझौता था।

शिन्दे: आध्यात्मिक दृष्टिसे देखें तो आपका समझौता समझौता ही नहीं। यह चीज धीरे-धीरे घिस जाती है।

बापू: हां, अिसमें परस्पर आदर और प्रामाणिकता गृहीत है। तभी मन्दिर सच्चा मन्दिर बनता है। अिसी तरह होटलोंमें भी सनातनियोंको अपने लिअे अलग मेज रखनी हो तो भले ही रखें। यह सब सुझानेमें मैं अेक बात मानकर चलता हूं कि बहुमत हमारे पक्षमें है। बहुमत अुनका हो तो हम मन्दिरोंमें पैर नहीं रखेंगे।

समझौतेके बारेमें मैंने नअी ही दृष्टि खोजी है। समझौतेका सुझाव हमेशा बलवानकी तरफसे आना चाहिये। सत्य जिसके पक्षमें हो, वही अैसा समझौता कर सकता है।

शिन्दे: हां, यह तो क्षमा जैसी बात हुअी, जो बलवान ही कर सकता है।

बापू: अिस समझौतेसे आपके, मेरे या किसीके भी सिद्धान्तको कोअी आंच नहीं आती। जो दूसरोंके सिद्धान्तोंकी जड़ काटे वह पशुता ही कहलायेगी।

और अेक भाअीके साथ:

स०: अन्तरात्माकी आवाजका क्या अर्थ?

बापू: अन्तरात्माकी आवाज अीश्वरकी आवाज है। वह हमारी आवाज नहीं है। यह आवाज अीश्वरकी भी हो सकती है और शैतानकी भी। अीश्वर हमारे द्वारा बोले, अिसके लिअे हमें यम-नियमका अच्छी तरह पालन करना चाहिये। करोड़ों मनुष्य अन्तरात्माकी आवाजका दावा करें, तो भी सच्ची अन्तरात्माकी आवाज अेककी ही होगी। अिसका सबूत नहीं दिया जा सकता, पर अुसका असर पड़ सकता है। अन्तरात्माकी आवाज हमसे बाहरका बल है, किन्तु वह बाह्य बल नहीं है। हमारे बाहरका यानी हमारे अहंकारसे बाहरका बल है। अहंकार जब सोया होता है, तब अुस पर दो बल काम करते हैं — सत् और असत्। जब हम सत् बलके साथ तदाकार हो जाते हैं, तब गूढ़ भाषामें यह कहा जाता है कि अीश्वर हमारे जरिये बोल रहा है। हम सत्के साथ अितने तद्रूप हो जाते हैं कि हमारा अहं शून्य हो जाता है।

स०: अन्तरात्माकी आवाज सुननेका दावा मनुष्य कब कर सकता है?

बापू: यह तो अुस आदमी पर निर्भर है। अुसे जब अनुभव हो जाय कि वह स्वयं काम नहीं करता, तब वह अैसा कर सकता है। मान लीजिये कि मैं अन्तरात्माकी आवाज सुननेका हमेशा प्रयत्न करूं, सदा ईश्वरसे प्रार्थना करूं कि तू मेरे जरिये काम कर और मुझे

शून्य बना दे, तो अैसा क्षण आ सकता है, जब मुझे यह लगे कि ओीश्वर मुझे अुसकी आवाज सुना रहा है। अुस समय में यह कहूंगा भी कि में ओीश्वरकी आवाज सुन रहा हूं। किन्तु अिसे मैं सिद्ध कैसे करूं? यह तो मेरे आचरणसे ही सिद्ध होगा। किन्तु वह भी अन्तिम कसौटी नहीं है। मान लीजिये हिमालयकी किसी गुफामें अेक आदमी गड़ गया है और ओीश्वर अुससे मिलनेके लिये मुझे वहां भेजता है। मान लीजिये में अुस जगह पहुंच गया, मैंने जरासा खोदा और मुझे वह आदमी मिल गया। फिर भी संभव है कि वह अन्तरात्माकी आवाज न हो। केवल संयोग हो या मेरा भ्रम ही हो या मुझे किसीने अैसा कहा हो। दुनिया तो परिणामसे ही मेरा न्याय करेगी। यदि परिणाम अच्छा आये, तो दुनिया कहेगी कि यह चमत्कार हुआ। किन्तु असलमें अिसमें अन्तिम प्रमाण कुछ नहीं है। मनुष्य कब आत्मवंचना करता है और कब दंभी बनता है, यह वह स्वयं नहीं जानता। आत्मवंचनामें दंभसे भी ज्यादा बड़ा खतरा है।

अेक ही चीजको बतानेवाले बहुतसे अुदाहरण हों, तब हमें ज्यादा सबूत मिलता है। अिसमें बुद्ध, कृष्ण और मोहम्मद सब महान पुरुष आ जाते हैं। अुन्होंने जो सत्य कहा है, वह अुन्होंने अपनी शक्तिसे नहीं कहा है, बल्कि किसी अलौकिक शक्तिने अुनके जरिये कहलवाया है। कुछ मनुष्य अितने अविकारी होते हैं कि अुनके द्वारा अलौकिक शक्ति काम करती है। किन्तु वह कब काम करती है, अिसका सबूत नहीं दिया जा सकता।

. . . को लिखे गये पत्रमें :

"अेक खास हदसे आगे कुदरतका विरोध करनेके विरुद्ध में तुम्हें चेतावनी देना चाहता हूं। बाअिबलके शब्दोंमें में तुमसे कहता हूं कि 'अपने प्रभुको ललचाओ मत'। जरा भी शंकाके बिना में तुम्हें कहता हूं कि तुम यदि दुबारा बड़ी बीमारीमें फंसे, तो अिसे तुम अिंग्लैंड लौट जानेका स्पष्ट आदेश समझना। वहां रहकर जो सेवा हो सके वह करना। तुम यहां रहो, अैसा ओीश्वर चाहता होगा, तो यहां रह सकने लायक स्वस्थ शरीर वह तुम्हें देगा ही। तुम्हें नम्रतापूर्वक हार माननेको तैयार रहना चाहिये। तुम्हारी हार सत्यरूपी परमात्माकी जीत होगी। ओीश्वर अपनी प्रयोगशालामें जरा भी बिगाड़ नहीं होने देता। तुमने यहां जो काम शुरू किया है, वह मरनेवाला नहीं है। अच्छे स्वास्थ्य और निर्मल चरित्रवाला कोओी आदमी मिल जाय, तो अुसे सब काम सौंप देना। अभी कोओी अैसा आदमी न मिल सके

१४-१-'३३

तो काम समेट लेना। यह निराशामय चित्र नहीं है। पवित्र जीवनकी यही बुनियाद है। हे प्रभु, मेरा नहीं, परन्तु तेरा सोचा हुआ हो। यह अुपदेश मैं ज्यादा नहीं लम्बाअूंगा। मेरा कहना तुम समझ गये होगे। जहां सम्पूर्ण आत्म-समर्पण है, वहां स्वेच्छाके लिअे गुंजाअिश ही नहीं।"

आज 'हिन्दू'का संवाददाता शालीवती यह खबर लेकर आया कि सरकार शायद बिलको मंजूरी न दे, किन्तु लोकमत जाननेको कमेटी नियुक्त कर दे। 'स्टेट्समैन'ने अिस प्रकारकी सूचना की है। अुसका अग्रलेख भी वह लाया था।

बापूने कहा: सारे वकील मंडल किस लिअे सो रहे हैं? अेडवोकेट जनरल हो चुके वकील-बैरिस्टर अपनी राय दें।

शालीवती कहने लगा: किन्तु यह बिल मंजूर न हो तो आप क्या करेंगे, यह आप नहीं बतायेंगे? सरकारको अिसका पता लगे, तो वह विचार करके कदम अुठाये।

बापूने कहा: वे लोग मेरे विचार जानते हैं। पक्का विचार किये बिना वे कुछ नहीं करेंगे। भविष्यके लिअे मैं अपनी शक्तिका अच्छी तरह संग्रह करना चाहता हूं। अिसे मैं जरा भी बेकार नहीं खोअूंगा। सैकड़ों बातें अैसी सामने आ सकती हैं, जिनमें मुझे दिलचस्पी हो। किन्तु अिन सबके बारेमें मैं अिस समय क्यों सोचूं? जब सामने आयेंगी, तब अुनसे निपटनेकी शक्ति अीश्वर मुझे दे देगा।

केलप्पनको सारे समझौतेके प्रस्तावका महत्त्व बहुत विस्तारसे समझाया। अिस बीच मैं बझेके साथ काममें लगा हुआ था, अिसलिअे नोट नहीं कर सका। पर शिन्दे और सदाशिवरावको कही हुअी बात ही विस्तारसे समझाअी। हमारे पास बल हो, तो अुसका दुरुपयोग नहीं होगा। किन्तु यह बल होनेके कारण ही हम सामनेवालेके समझमें आने लायक पूर्वग्रहका भी आदर करेंगे। आदर न करें तो हम हिंसक दबावके दोषी बनेंगे।

वर्णाश्रम स्वराज्य संघवाले पंडितोंके बारेमें अखबारोंमें लिखनेवाले थे, पर विचार छोड़ दिया। केलप्पनसे अिसका वर्णन करते हुअे कहने लगे: अिन पंडितोंके साथ चर्चा करनेमें मुझे बड़ा मजा आता है। अेक मद्रासी पंडित ठेठ मदुरासे मुझे यह समझानेको यहां आया था कि हम सब कर्मचाण्डाल हैं। मैंने कहा: तब बेचारे जातिचाण्डालोंको किस लिअे अलग रखते हो? और अमुक व्यक्ति चाण्डाल है और अमुक नहीं है, यह तुम कैसे कह सकोगे? बिलकुल पापरहित हो, वह पहला पत्थर मारे।

... को अुसके पतिने वॉल्टेर न जाने दिया। अुससे कहा कि बम्बअी आ जा। अभी बच्चोंके पास न जाकर अीस्टरमें चली जाना। अितनीसी बातसे

अिस स्त्रीको सन्तोष हो गया। अेक धर्मभीरु हिन्दू पत्नीके जैसा अुसका बरताव देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। बापूसे कहने लगी: मैं कल आपके पास टाअिप करनेके लिअे आअूं? अपने टाअिपिस्टको अलग कर दीजिये।

बापू बोले: नहीं, अभी नहीं। भविष्यमें तुम्हारी जरूरत होगी तो तुम्हें जरूर बुला लूंगा। बापूके प्रति असाधारण भक्ति अुसमें पग-पग पर दिखाअी देती थी।

बापूको हरअेक आये हुअे पत्रमें से बचा हुआ कोरा कागज़ और पिन संभालकर रख लेनेकी आदत है। कल कहने लगे: मेरे हफ्तेभरके कागज तो अिन पत्रोंमें से ही निकलते हैं, और पिन कभी खरीदी हो अैसा याद ही नहीं आता। तुम लोग खरीदते हो तो दूसरी बात है।

तब छगनलालने पूछा: दक्षिण अफ्रीकामें भी अैसा ही करते थे?

अिसके जवाबमें बापूने अफ्रीकाके थोड़े संस्मरण सुनाये: ओहो, वहां भी ठीक अिसी तरह काम करता था। रसीद बुकें — नेटाल अिण्डियन कांग्रेसकी — छपवानेके बजाय सारी साअिक्लोस्टाअिल पर मैंने ही छापी थीं। शायद वह आज भी कहीं न कहीं पड़ी होंगी। कमाता था तब या कमाना छोड़ दिया तब, खर्च करनेके बारेमें सारी जिन्दगी मेरी यही वृत्ति रही है। कमाता था तब बचाया हुआ रुपया अपने काममें न लेकर भाअीको भेज देता था। वहांके लोगोंके लिअे काम करते हुअे कितने ही हजार रुपयोंकी बचत अपनी किफायतशारीके कारण कर दी थी। फिर भी जहां खर्च करना चाहिये था, वहां खर्च करनेमें भी मैंने आगापीछा नहीं देखा। गोखलेको १०१ पौंडका तार मैंने ही भेजा था। और गोखले आये तब अुनके लिअे २००-३०० हिन्दुस्तानियोंसे भरी हुअी स्पेशल गाड़ी क्लार्क्सडोपसे जोहानिसबर्ग तक की थी और स्टेशनको सजाया था। ७५ पौंडका तो अेक दरवाजा ही बनाया था।

छगनलाल बोले: स्पेशल तो आवश्यक कही जा सकती है, पर दरवाजा भी जरूरी था?

बापूने अुत्तर दिया: हां, वहां अुस समय जरूरी था। ये सब हिन्दुस्तानियोंको जगानेवाली चीजें थीं। जातिको यह बताना था कि बड़ा राजा या प्रिन्स आफ वेल्स आये तो अुसे जो सम्मान मिलता है, अुससे ज्यादा सम्मान हम अपने नेताको दे सकते हैं। यह दिखाना था कि यह कुली राजा नहीं, बल्कि कोअी असाधारण आदमी है। और यह भी कांग्रेसके रुपयेसे नहीं। लोगोंसे मैंने कह दिया कि यह सारा खर्च आपको ही देना होगा। गोखलेके स्वागतके लिअे मैंने १५०० पौंड मंजूर कराये थे। जोहानिसबर्गमें तो हद ही हो गअी। सोनेकी प्लेट पर मानपत्र दिया गया था। गोरों पर भी बड़ा असर

पड़ा था। मेयरने अपनी मोटर गोखलेके लिअे सारे समय काममें लेनेको दी थी। मुझे नहीं लगता कि गोखलेका अैसा आदर और कहीं भी हुआ होगा। लोगोंने भी मुझे कभी रुपया देनेसे अिनकार नहीं किया। वे जानते थे कि अैसी निःस्वार्थ और सख्त मेहनत करनेवाला और कोओी नहीं मिलेगा। अुस ९७-९८ के अकालमें मैं अेक बार १५०० पौण्ड और अेक बार ४००० पौण्ड देशमें भेज सका था। अुसमें गोरोंने भी चंदा दिया था। 'नेटाल मर्क्यूरी' में रोज अकाल सम्बन्धी जानकारी अच्छी तरह लिखकर देता रहता था और सबका फर्ज बताता रहता था। गोरे भी सुनते थे। मेयरके पास चंदेकी यादी ले गया। अुसने २५ पौण्ड लिखे, तो मैंने फाड़ डाला। मैंने कहा, अितना देनेसे हरगिज काम नहीं चल सकता। बस अुसे बढ़ाना ही पड़ा। यह सब अिसलिअे हो सका कि जहाजसे अुतरते ही जो घातक हमला (लिंचिंग) मुझ पर हुआ था, अुस समय और अुसके बाद किसी पर मुकदमा न चलानेका मेरा आग्रह था। मार खानेसे मुझे और भी प्रसिद्धि मिली। पहली प्रसिद्धि कोर्टमें टोपी न अुतारनेके प्रसंगसे मिली थी। अन्तमें मीर आलमका किस्सा हुआ। आज देखने पर तो यह साफ मालूम होता है कि अुन दिनों समय-समय पर जो-जो घटनायें घटीं, अुन सबमें अीश्वरका हाथ था।

सविनयभंग और अस्पृश्यता-निवारणके कामके बारेमें वक्तव्य प्रकाशित करने पर कोओी अेतराज नहीं, अैसा सरकारका जवाब आ गया, अिसलिअे अे० पी० आओी० को दे दिया।

१५-१-'३३

आज सवेरे मैंने पूछा: ... के पत्रमें बाअिबलका सख्त वाक्य आपने कैसे रखा? बहुतसे मिशनरी जंगलोंमें जाकर बसते हैं और काम करते करते प्राण दे देते हैं। ... भी नहीं कह सकते कि मैंने यह काम हाथमें लिया है; अिसे करते करते मेरे प्राण भी चले जायं तो क्या हुआ?

बापू कहने लगे: नहीं कह सकते, क्योंकि वे पादरियोंकी राजसी वृत्तिसे वहां नहीं गये हैं। वे अिस भावनासे वहां नहीं गये कि हम अीश्वरका वचन फैलाने जा रहे हैं। और मुझे अैसा नहीं लगा कि अुन्होंने अिस प्रकारका आदेश सुना होगा। अनेक जगह भटकनेके बाद वे वहां गये। अिस कामके लायक अुनका शरीर नहीं है। अिसीलिअे अुन्हें चेतना चाहिये था। किन्तु मेरी सूचनाके पीछे तो दूसरी चीज अध्याहार है। वह यहां जेलसे नहीं कही जा सकती, अिसलिअे नहीं कही। वह यह है कि अुन्हें शर्त करके यहां आनेका कोओी काम ही नहीं

था। जिस सत्याग्रहको वे धर्म मानते हैं, अुस सत्याग्रहसे वे बिलकुल अलग रहेंगे, अैसी शर्त वे कर ही नहीं सकते। मुझे अैसा अनुभव होता रहता है कि अेण्ड्रूज और हॉरेसने अुन्हें गलत सलाह दी; अैसी शर्त करके वे अपनी काम करनेकी शक्ति बहुत घटा रहे हैं, यह अुन्हें समझना चाहिये था।

मैंने कहा: पर मान लीजिये कि अुन्होंने यह शर्त न की होती और वहां गये होते, तो क्या यह आलोचना आप करते? यह शर्त करके गये, अिस कारण आपने पहली आलोचना की। यह सच है न?

बापूने कहा: हां, शर्तके बिना गये होते तो मैं बाअिबलका सख्त वाक्य लिखता या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता।

गोखलेके सम्मानमें बनाये हुअे दरवाजे पर ७५ पौंड खर्च करनेकी बात कही, अुस समय अीसाको कीमती तेलसे अभिषेक करनेवाली मेरीका किस्सा याद आया। हिन्दुस्तानियोंकी प्रतिष्ठा रखनी थी, अुनको अुत्तेजना देनी थी; अिसके सिवाय अपनी असाधारण भक्ति भी गोखलेके चरणोंमें अुंड़ेलनी थी न?

आज बहुतसे पत्र मौन लेनेसे पहले लिखवा डाले। नैतिक रोगोंवाले तो हमेशा पूछते ही हैं।

अेकने पूछा: स्वप्नदोष किस तरहसे रोका जा सकता है? अुसे बापूने लिखा: "चार साधन हैं: अेक रामनाम; दूसरा शुद्ध हवा, खुलेमें प्राणायाम, आसनादि क्रियाअें; तीसरा शुद्ध आहार—गेहूं, भाजी और दूध, मसालों और मिठाअियोंका त्याग; और चौथा सारे समय शरीरको काममें लगाये रखना, ताकि नींद अच्छी आये।"

बहुतसे लोग जेलसे छूटकर आ गये, परन्तु दरबार न आये। अुन्हें लिखा: "तुम न आये, यह जानकर चारों साथियोंने अेक स्वरसे तुम्हें बधाअी दी। अैसा संयम थोड़ोंने ही रखा है। अिसलिअे तुम्हें फिर बधाअी!"

अेक पत्र में:

"मेरा देह प्राणीमात्रके लिअे है, यह जितना सच है अुससे ज्यादा सच यह है कि वह अीश्वराधीन है। वह प्रायोपवेशन (अनशन) कराये, तब मैं क्या कर सकता हूं?

"मंदिरप्रवेशके लिअे धारासभाका अुपयोग असहयोगके सिद्धान्तके प्रतिकूल नहीं है, यह बताया जा सकता है। किन्तु यह बताते समय जेलके नियमोंका भंग होता है। अतः अुसे बतानेका मौका मिले और अुस समय

तुम मौजूद रहो तो पूछना। अस्पृश्यता-निवारणका जो काम अभी मैं कर रहा हूं, अुससे अभी नुकसान होनेका आभास हो सकता है। किन्तु अच्छा काम करनेसे अन्तमें नुकसान हो ही नहीं सकता, यह दुनियाका अनुभव है; और यह काम अच्छा है, अिस वारेमें मुझे विलकुल शंका नहीं है।"

वसन्तराम शास्त्रीकी साठ सूत्रोंवाली पत्रिका दो जनोंने भेजी और अुन्हें जो दुःख हुआ अुसका वर्णन किया। अुन्हें वापूने लिखा (हिन्दीमें): "जो लेख आपने भेजा है, वह आदिसे अन्त तक जहरसे भरा है। आशा है मेरा जीवन अुसके झूठका प्रत्यक्ष प्रमाण है।"

दारेसलामके अेक युवकको अिसी विषयमें लिखा: "अैसी तो वहुतसी वातें मेरे वारेमें लिखी जा रही हैं। यह अितनी साफ झूठ है कि मैं आशा रखता हूं अिस पर कोअी विश्वास नहीं करेगा; और कोअी विश्वास करनेवाला होगा, तो अुस पर मेरा अुत्तर कुछ भी असर पैदा नहीं कर सकेगा।"

अुड़ीसावाले जीवरामभाअीकी अनन्य भक्ति — सरल वालोचित भक्ति — वनियनके भक्तराजकी याद दिलाती है। दूसरोंको परेशान करनेवाले वड़े प्रश्न अुन्हें परेशान नहीं करते। अुनके सरल हृदय-सरोवरमें शंका-कुशंकाओंके पत्थर चक्कर पैदा ही नहीं कर सकते। वे वापूके हरअेक अुपदेशका अक्षरशः पालन करनेमें विश्वास रखते हैं। अिसलिअे वेचारे पूछते हैं: "आप चौवीसों घण्टे आकाश-दर्शन करनेको कहते हैं, मगर सभी ऋतुओंमें आकाश-दर्शन कैसे किया जाय? कड़ाकेकी ठण्डमें, काले घने वादलोंवाले दिनोंमें, जव वरसातकी झड़ी लगी हो तव और जलती हुअी दोपहरमें क्या किया जाय? आप कहते हैं कि प्रार्थनाके समय आश्रमके साथ मेल वैठाना चाहिये, किन्तु हमारे यहां तो पांच वजे दीया-वत्ती होती है। हमें तो मंदिरोंमें घंटा वगैरा वजता हो, अुस समय प्रार्थना कर लेनी चाहिये।" अित्यादि।

अुनकी वच्चोंको शोभा देनेवाली टूटीफूटी भाषा अितनीसी वात कहनेमें पांच पन्ने ले लेती है। किन्तु वापू ये पत्र खुशीसे पढ़ते हैं और अुनका जवाव देते हैं:

"चौवीस घंटोंका तो तुमने विलकुल शव्दार्थ कर दिया। अिसका भावार्थ लेना चाहिये था। चौवीस घंटेका अर्थ है, जितना समय संभव हो। वरसात होती हो, वहुत सख्त धूप पड़ रही हो, वहुत हवा चलती हो, असह्य ठंड पड़ती हो या और कारणोंसे सिर्फ वाहर रहना, सोना या काम करना असंभव हो जाय या हानिकारक हो जाय, तो छाया या छप्पर या वन्द मकानका आश्रय लेना धर्म हो जाता है। मेरे वचनोंसे अितना ही सार निकाला जा सकता

है कि जहां तक हो सके अन्तराय रखे बिना आकाशके नीचे रहना अच्छा है। जो अिस बातको समझ सके होंगे, वे घरमें कमसे कम बन्द रहेंगे और घरके अन्दर भी हवा और रोशनीकी काफी सुविधा रखेंगे।

"अब समय जाननेके बारेमें। ग्रामसेवकको घड़ीकी कुछ भी जरूरत नहीं। अुसके लिअे तमाम क्रियायें स्वाभाविक हैं। अुसकी घड़ी भी स्वाभाविक है। समय बतानेकी भाषा भी अुसकी दूसरी ही है। वह यह नहीं कहेगा कि चार बजे आना। वह कहेगा कि प्रार्थनाके समय आना, या दो घड़ी दिन बाकी हो तब आना, दिन निकले आना, पक्षी बोलें तब आना, खानेके समय आना, मैं निवाड़ बुनता होअूं तब आना, संध्या समय आना, ब्यालूके समय आना। अिस तरह समयके लिअे अलग-अलग नाम गढ़े जा सकते हैं। और अुसे अुद्यम करनेकी आदत अितनी ज्यादा पड़ गअी होती है कि समयके लिअे भी आकाशकी तरफ देखनेकी जरूरत नहीं पड़ती। अुसके काममें देरसवेर हो ही नहीं सकती। आदत पड़ जानेके कारण अुसे यह मालूम ही रहता है कि अुसका काम पूरा होने पर कितना समय हुआ होगा। घड़ी अिस्तेमाल करनेकी आदत न हो, तो वह यह नहीं कह सकता कि अमुक काममें कितने घंटे लगे। पर जब वह यह कहता है कि मैं रोज अितने गज निवाड़ बुनता हूं, तब बोलने और सुननेवाला जान लेता है कि कितना समय लगा होगा। और अिसीलिअे पहले समयकी गिनती घंटोंसे नहीं, परन्तु कामके मापसे ही होती थी। सफर करते समय भी अुसे कोअी मुश्किल नहीं होती, क्योंकि अुसे पता होता है कि सूर्योदय और सूर्यास्तके बीच वह कितने मील चल सकता है। वह घंटोंके हिसाबसे आराम नहीं करता, परन्तु जब शरीर थक जाता है तब आराम लेता है। सार यह कि ग्रामजीवनमें घड़ीकी जरूरत बहुत थोड़ी दिखाअी देती है; यह कहें कि जरूरत ही नहीं रहती तो भी हर्ज नहीं। और कामके हिसाबकी जितनी जरूरत होती है, अुतनी सूर्यादि आकाशके ग्रहोंकी गतिसे जान लेता है। बादलों वगैराका अुसे डर नहीं रहता, क्योंकि पूरे सालमें अैसा थोड़ा ही समय होता है। अैसा समय होता है तब अुसके काममें कोअी बाधा नहीं पड़ती। प्रार्थना जैसा समय भी अपने आप पलता रहता है। जिसका सारा समय नियमित रूपसे भरा होता है, अुसका प्रार्थनाका समय नियमित रूपसे सामने आ ही जाता है। अिसलिअे किसी दिन देरसे अुठना हुआ, तो अब क्या होगा अैसा सोचनेका शायद ही कभी मौका आता है। शामकी प्रार्थनाके बारेमें आश्रमके समयका मेल बैठानेका लोभ रखनेकी जरूरत नहीं। पृथ्वीके अलग-अलग प्रदेशोंमें रहनेवाले अेक ही समय नहीं रख सकते। अिस-लिअे तुम अपने सूर्यास्तके बाद प्रार्थना करने बैठ जाओ, यही ठीक है। मेरे खयालसे अिसमें तुम्हारी छोटी-बड़ी सभी शंकाओंका अुत्तर आ जाता है।"

वल्लभभाओीका अेक विनोद है: थोड़े दिन हुअे कि बापूको सरकारके पास कोओी न कोओी शिकायत भेजनी ही होती है। अुन लोगोंको यह खयाल न हो जाय कि यह आदमी अब चुप हो गया है! शायद अिसीलिअे आज सरकारके नाम तीन खरीते गये — अेक, अप्पावाले मामलेमें सरकारका निश्चय जाननेके लिअे तार; दूसरा, जेलमें कातना-पींजना चाहनेवालोंको अिजाजत देनेके बारेमें पत्र (डोअिलको); तीसरा, कैदियोंके पत्रोंमें कर्मचारी जो काटछांट करते हैं, अुसके विरोधमें अिस शिकायतके साथ कि मेरे पत्र अखण्ड होते हैं, बिना विचारे लिखे हुअे नहीं होते, और अुनमें से जरासा भाग भी निकाल देनेसे अनर्थ या अकल्पित अर्थ हो सकता है (डोअिलको)।

१६-१-'३२

दूसरे पत्रोंमें आश्रमकी डाक। वर्धा आश्रमकी और साबरमती आश्रमकी।

दास्तानेकी स्त्री और लड़कियोंको पत्र (हिन्दीमें): "बिन्दुको मैंने जो पत्र लिखा है, अुसे ध्यानसे पढ़ो। यदि मैंने लिखा है वह यथार्थ लगे, तो चूड़ी अित्यादिके त्यागमें लड़कियोंको प्रोत्साहन दो। यदि ब्रह्मचर्यमें विश्वास न हो, तो चूड़ी अित्यादिका आग्रह रखा जाय। मेरी दृष्टिमें माताका धर्म बच्चोंकी त्यागवृत्तिको प्रोत्साहन देनेका है। भोगके प्रति तो मन दौड़ेगा ही। अन्तमें लड़कियां विवाह करना चाहेंगी तो सब कुछ पहनेंगी। हम अुन पर बलात्कार न करें।"

बिन्दुको (हिन्दीमें): चूड़ी और कुमकुम विवाहित अथवा विवाहकी अिच्छावाली कुमारिकाकी निशानी मानी जाती है। अिसलिअे जिसकी अिच्छा विवाह करनेकी है, वह अवश्य दोनों श्रृंगार करे। तुम्हें चूड़ी पहननेका या कुमकुम लगानेका प्रेम है, तो अवश्य पहनो और लगाओ। माताका आग्रह हो तो भी करो। अुनका दिल दुखाना नहीं।"

कृष्णाको: "शरीरको टूटने तक खींचना मोह है, अिसलिअे दोष है। तुम्हें जो सेवा करनी है, अुसीके लिअे तुम्हें आराम लेना चाहिये।"

वत्सलाको (हिन्दीमें): "जिसको दुःख है अुसके दुःख मिटानेकी यथाशक्ति चेष्टा करके और सत्यादि यमोंका भलीभांति पालन करके जीवमात्रकी सेवा होती है। जो असत्य, हिंसा, परिग्रह, स्तेय, अब्रह्मचर्य करते हैं, वे प्राणीमात्रको दुःख देते हैं। सत्यादिका पालन करके दुःख मिटाते हैं अर्थात् सेवा करते हैं।"

बालकृष्णको: "शरीरके न बननेके मेरे खयालसे ये कारण हैं: जो भोजन लिया जाता है, अुसके लेने पर भी अुसके बारेमें अश्रद्धा या तिरस्कार,

मनका अत्यन्त व्यय और शरीरकी मोहमयी अुपेक्षा। अुपाय तो अिन कारणोंमें ही आ गया। जो खुराक ली जाय अुसे अनुग्रह मानकर लेना चाहिये, अश्रद्धा निकालनी चाहियें और यह भाव रखना चाहिये कि अिस खुराकसे शरीर बनेगा। यह जानकर कि आत्माके लिअे अिस शरीरकी जरूरत है, यह अेक धरोहर है, अिसकी यथाशक्ति और अुचित रक्षा करनी चाहिये। जो धरोहरकी अुपेक्षा करता है, वह दोषका भागी बनता है।

"अीश्वरका भान कब हुआ, यह मैं नहीं कह सकता। ये क्रियाअें मेरे लिअे अितनी स्वाभाविक हो गयी हैं कि अैसा आभास होता है मानों वे हमेशा थीं। अिस पेड़के पत्ते फलां दिन अितने बड़े हुअे, यह कौन कह सकता है। आजकी स्थितिको ६४ वर्षमें पहुंचा, यही कहा जा सकता है। जिसका कोअी अर्थ ही नहीं रहा।

"ब्राह्मी स्थितिमें किसीके दुःखमें दुःखी होनेकी बात ही नहीं होती, क्योंकि किसीके सुखमें सुखी होनेकी बात भी नहीं होती। जैसे बढ़अी टूटी हुअी नावकी मरम्मत करते समय सुख-दुःखका अनुभव नहीं करता, वही बात 'ब्राह्मण' की है। ब्राह्मी स्थितिवाला ब्राह्मण कहला सकता है?"

आश्रमके पत्रोंमें . . . के कुटुम्बको आश्रम छोड़नेकी सूचना दी और यह लिखा कि "रहना ही हो तो नियमका पालन करके, सच्चे बनकर और काम करके रहो।"

. . . को: "तेरा गुस्सा बताता है कि तू खूब नादान है। मेरा कुछ कहना तू नहीं सह सकती, तो दूसरेका तो सुनने ही क्यों लगी? मुझ पर तू जो असर डाले, अुसके लिअे अुपकार मानना तो दूर रहा, अुलटी क्रोध करती है! तेरा धर्म तो यह है कि मेरा आरोप न समझ सकी हो तो अुसे मुझसे समझ ले। मेरे साथ झगड़े। यहां तो तेरी पढ़ाअी और समझदारी बेकार गअी दीखती है। तेरे गुस्सेके पीछे तेरा महा अभिमान है, यह भी तू नहीं देख सकती। यह जरूर समझ ले कि यह स्वातंत्र्य नहीं, स्वेच्छाचार है। मैं चाहता हूं कि तू अपनी आंखें खोल, मेरा प्रेम समझ, और तेरे बारेमें मेरी परीक्षाको झूठी साबित न कर। यह समय तेरे क्रोध करनेका नहीं, परन्तु मुझे दुःख देनेके लिये पछताने और रोनेका है। तुझे अितना भी ज्ञान क्यों नहीं है कि तुझे कड़वी बात कहता हूं तो वह तेरे भलेके लिअे होगी? अैसा करनेमें मेरी भूल हो रही हो, तो नम्रतासे भूल बताना तेरा धर्म है। अपने निर्दोषपनका तुझे विश्वास हो, तो अुसे मेरे सामने सिद्ध करनेकी तुझमें श्रद्धा होनी चाहिये। अिसके बजाय गुस्सा करके तू अपना दोष मजबूत करती मालूम होती है। मुझे तुझसे अैसी आशा कभी नहीं थी। जाग और गुस्सा करनेकी माफी मांग।"

आज लल्लूकाका (सर लल्लूभाओी शामलदास) आ पहुंचे। मलावारकी यात्राके अपने अनुभव सुनानेको ही आये थे। जामोरिनने अपने लड़केको सन्देश लेकर किस तरह भेजा, लल्लूभाओीने माफी मांगनेसे अिनकार किया, तब अितना कहलवाना ही मुनासिब समझा कि खबर गलत है, फिर भी बादमें बूढ़ेसे किस तरह मिला, किस प्रकार अुसका आओी० सीं० अेस० लड़का और भाओी दोनों सारे समय खड़े रहे, यह सब बयान किया। जामोरिनने बताया कि मुझे कुछ भी नहीं करना है, क्योंकि कानून और रूढ़ि वगैरा सब अिसके विरुद्ध हैं। फिर अिन्होंने सांताक्रूजके मंदिरमें समझौतेकी व्यवस्थाकी सूचना की, तब जामोरिनने कहा: मुझे यह किस लिअे करना चाहिये? मतगणनाकी अवहेलना की और अुसके लड़केने कहा: ठक्कर ही तो मुझे कह गये हैं कि महात्मा तो किसीकी सुननेवाले हैं ही नहीं!

देवधरका मजेदार चित्र खींच रहे थे: सहयोगी परिषदमें अपना सी० आओी० अी० का तमगा लटकाकर आये थे! मैं तो अध्यक्ष था, अिसलिअे शायद तमगा लगाकर गया होता तो शोभा देता, किन्तु अिन्हें क्या था? बहुतोंको अैसा लगा कि देवधरको यह तमगा लगानेकी क्या जीमें आती होगी! और फिर फोटो खिचवाना भी अच्छा लगता है।

बापू कहने लगे: अिसमें देवधरका अुद्देश्य तो यही होगा कि कामको कुछ मदद मिले, तमगोंको माननेवाले लोगों पर असर पड़े और अुनसे काम लिया जा सके।

लल्लूकाकाने जाते जाते मुझसे कहा: मैं यह नहीं मानता। लोगोंमें तो तिरस्कार पैदा होता है। फिर कहने लगे: मैं तो अिसे कभी नहीं पहनता। सरकारी अवसरों पर कभी वाअिसरॉय या गवर्नरके पास जाना पड़े तो पहनता हूं। पर मेरे लड़के अिसे पहनकर फोटो तो कभी खिचवाने ही नहीं देते।

बापू बोले: अिस तरह सरकारकी भी मानते हैं और लड़कोंकी भी मानते हैं, यही न!

बूढ़ेने बिलके बारेमें बातें करते हुअे कहा: वाअिसरॉयको मंजूरी देनी ही पड़ेगी। सारी हलचल बनावटी है। कहते हैं कि वहांकी वर्णाश्रम परिषदमें तीन सौ चार सौ आदमी आये थे। किन्तु अुनमें ज्यादातर हमारे गुजराती थे और वे भी वहांके गुजराती गोवर्धननाथजीको माननेवाले! अिस बिलसे तटस्थता कैसे भंग होती है? मूल कानून ही तटस्थता भंग करनेवाला है।

बर्नार्ड शॉसे मिल आये थे। कहते थे कि शॉ कहने लगे: तुम्हें यह स्वराज्य ला देगा, फिर अिस महात्माका क्या करोगे? यह आदमी किसी काममें नहीं आयेगा।

लल्लूकाकाने कहा: वे निवृत्त हो जायंगे। अिस पर शॉ कहने लगे: या स्वराज्य सरकार अिन्हें जेलमें डाल देगी।

अिसके बाद थोड़ी ही देरमें जिनका अूपर वर्णन हुआ है वे देवधर आ गये। काला कोट-पतलून और गुलाबी पगड़ी। अिनकी अिकसठ वर्षकी अुम्र जरा भी दिखाअी नहीं देती, ५० वर्षके लगते हैं। पर बापूकी कलम हिलती थी, अुसे देखकर कहने लगे: मेरे भी हाथ कांपते हैं।

जामोरिन कैसे मुंह देखकर तिलक निकालते हैं, यह अिनसे मालूम हुआ। जामोरिनने अिनसे कहा: मुझे आश्चर्य होता है कि आप जैसे आदमी अिस आन्दोलनमें कैसे शरीक होते हैं? यह तो राजनैतिक धोखेबाजी है। क्रान्तिकारी प्रवृत्तियोंको मदद देनेके लिअे की गअी चालाक तदवीरके सिवाय अिसमें और कुछ नहीं!

बिलके बारेमें राजगोपालाचार्यने किस तरह वाअिसरॉयको भेजनेका तार तैयार किया और अिन्होंने अुसमें कैसे सुधार किये, अिसका वर्णन किया। और अिसकी भी कल्पना दी कि युवक किस तरह अिस लड़ाअीमें हमारे साथ हैं।

लक्ष्मण शास्त्री जोशीने पूनाके सनातनियोंकी सभाके पाखंडका वर्णन किया। प्रचलित अस्पृश्यता शास्त्रोंमें नहीं, बापूकी यह बात नअी ही है और पाखंड है, यह बतानेकी अिन लोगोंने घंटों तक कैसे कोशिश की, लक्ष्मण शास्त्रीको कितनी मुश्किलसे पांच मिनट दिये गये, 'चांडाल' की व्याख्या कैसी की गअी और आजकलके सब अछूत कैसे अिसके अन्दर आ जाते हैं, यह वर्णन किया। 'सतां हि संदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमंतःकरणप्रवृत्तयः'। यह स्वीकार किया जा सकता है; किन्तु अितना भी कौन कबूल करे कि गांधी सन्त है!

पूना कालेजके अेक विद्यार्थीको लिखते हुअे:

१७-१-'३३

"यह कहना यथार्थ नहीं कि मैं मिश्र-विवाहका हिमायती हूं। हां, यह कहा जा सकता है कि मैं मिश्र-विवाहका विरोधी नहीं हूं। अिन दोनों चीजोंमें भेद है। मिश्र-विवाहका मैं हिमायती हूं या मैं विरोध नहीं करता, यह कहनेमें भी थोड़ी गलतफहमी हो सकती है, क्योंकि मिश्र-विवाहका तुम्हारा और मेरा खयाल अलग है। आजकल सच्चे ब्राह्मण और सच्चे शूद्र थोड़े ही पाये जाते हैं। अिसलिअे जिसे तुम अमिश्र विवाह मानो वह मिश्र हो सकता है, और जिसके लिअे मैं मिश्र-विवाहकी लौकिक भाषा स्वीकार करूं अुसका यथार्थमें अमिश्र-विवाह होना संभव हो। जैसे, अेक शूद्र मानी जानेवाली लड़की ब्राह्मण बालाके गुण रखती हो और वह

सचमुच ब्राह्मण युवकसे शादी कर ले तो अिसे मैं अमिश्र-विवाह मानूंगा, यद्यपि तुम अुसे मिश्र-विवाह मानोगे। अिससे अुलटे, ब्राह्मण लक्षणवाली शूद्र मानी जानेवाली लड़कीसे शूद्र लक्षणवाला ब्राह्मण कहलानेवाला युवक विवाह कर ले, तो मेरे खयालसे यह मिश्र-विवाह हुआ। तुम भी अुसे मिश्र-विवाह मानोगे। किन्तु हम दोनोंके कारण अलग होंगे।

"अितनेसे तुम्हें समझ लेना चाहिये कि सिद्ध हुअे विज्ञानका मैं किसी भी तरह अनादर नहीं करता। किन्तु साथ ही साथ अितना भी तुम्हें ध्यान रखना चाहिये कि विज्ञानमें आजके माने हुअे सत्यका कल असत्य ठहरना असंभव नहीं होता। अनुमान पर रचे हुअे शास्त्रोंमें यह मौलिक अपूर्णता हमेशा ही रहनेवाली है। अिसलिअे अुसे हम वेदवाक्य नहीं मान सकते। मेरी राय है कि वर्णाश्रमधर्मको मैं समझता हूं और मानता हूं। किन्तु वर्णाश्रमधर्मका अर्थ भी हम अलग ही तरह समझते दीखते हैं।

"अितना कहने पर भी मुझे तुम्हें चेता देना चाहिये कि यदि तुम शास्त्रीय ढंगसे अस्पृश्यताके प्रश्न पर विचार करना चाहते हो, तो तुम्हें यह समझकर अपना व्यवहार बनाना चाहिये कि रोटी-बेटी व्यवहारका अिस प्रश्नके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं है। मैं तो आज हूं और कल नहीं। किन्तु यह प्रश्न तो मेरे बाद भी रहेगा ही। रोटी-बेटी व्यवहारका प्रचार अभी मैं बिलकुल नहीं कर रहा हूं। यह प्रचार करूं तबकी बात तब। मेरे अन्दर कुछ दोष देखनेके कारण मैं कोअी शुद्ध काम करता होअूं, अुसकी भी निन्दा करना शास्त्र नहीं, नीति भी नहीं।"

धर्मदेवके साथ संवाद:

बापू: शुद्ध ब्राह्मण और शुद्ध ब्राह्मणीकी संतान ब्राह्मण होगी, अितनी आनुवंशिकता मैं स्वीकार करता हूं। यह ब्राह्मण अपने लड़केको शूद्रकी तरह पाले तो वह वर्णपतित हुआ। यह पतित ब्राह्मण हुआ।

धर्मदेव: किन्तु अिसे ब्राह्मण क्यों कहा जाय?

बापू: वर्णोंमें अूंच-नीचपन है ही नहीं। अुसे पतित तो अिसलिअे कहेंगे कि वह अपना पतितत्व छोड़कर वापस ब्राह्मण हो सकता है। अूंच-नीचपनकी बात छोड़ो। मान लो कि बढ़अी बढ़अीगिरी छोड़ दे और पाखाने साफ करनेका ही काम करने लगे, तो गीताजी अिसे कहती है कि वह धर्मच्युत हो गया। 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः'। बढ़अी सुनारका काम करनेकी कोशिश न करे। अिसी तरह वह वेदकी शिक्षा लेने जाय, तो भी मैं अुसे पतित बढ़अी कहूंगा। धर्म और कर्म (व्यवहार) का समन्वय करना है। लोगोंको साहसी बनानेकी बात करें और कहें कि सब व्यापार करें, तो क्या चल सकता

है ? अिसलिअे आनुवंशिक धंधे ठहराये गये। हम तो यह कहें कि अपनी बुद्धिका समाजके नित्य कल्याणके लिअे अुपयोग करो। आज कंचनजंघा पर चढ़ाअी करनेवालोंकी तारीफ होती है। मेरा दिल अुनकी बड़ाअी नहीं करता, बल्कि निन्दा करता है। हमारे यहां खोज नहीं होती थी सो बात नहीं। पतंजलिने अहिंसाकी शास्त्रीय खोज की थी।

धर्मदेव : तो क्या अपनेमें वर्णोचित गुण हों, तो अुन्हें न बढ़ाया जाय ? मैं क्षत्रिय हूं, किन्तु मेरेमें क्षत्रियता नहीं है। आप वैश्य हैं, परन्तु आपकी वैश्य प्रवृत्ति कहां है ?

बापू : मैंने शुद्ध सामाजिक व्यवस्थाकी बात की है। आज अैसी व्यवस्था नहीं है। आज वर्णसंकर हो गया है, क्योंकि वर्णाश्रमका लोप हो गया है। आज तो अेक ही आश्रम रह गया है — गृहस्थाश्रम। और वह भी धर्मका नहीं, परन्तु स्वेच्छाचारका। और वर्ण रह गया है शूद्रका। आज हम दूसरे राज्यके गुलाम हैं। कारण क्षत्रिय रहे नहीं, ब्राह्मण रहे नहीं, और वैश्य रहे नहीं। वैश्य तो रुपया पैदा करनेमें लगे हुअे हैं। शूद्र भी कैसे कहला सकते हैं ? परिचर्या भी हम मजबूर होकर करते हैं, धर्म मान कर नहीं। अेक शास्त्रीने मेरे सामने स्वीकार किया कि हम सब कर्मचांडाल हैं। यह चांडाल जाति क्या करे ? वर्णधर्म पैदा करनेका प्रयत्न करे ? मैं यह नहीं कहता कि अिसी नामवाला यह वर्णधर्म होना चाहिये। शास्त्रोंने तो अनादि धर्म बताया है और वर्ण-व्यवस्थाकी बात कही है। मेरी तो आजकल साधना चल रही है। अिस मामलेमें मैं आत्मविश्वाससे नहीं बोल सकता, क्योंकि मेरी साधना थोड़ी है।

धर्मदेव : तो आप यह क्यों नहीं कहते कि मैं कोअी भी वर्ण नहीं मानता, जब आज कोअी वर्ण ही नहीं रहा ? आपने कहा है, ब्राह्मण जन्मसे होता है। परन्तु ब्राह्मणत्व जन्मसे नहीं होता। 'जन्मना जायते शूद्रः'।

बापू : अिसमें मेरा आपके साथ झगड़ा है। आर्यसमाजियोंने अपनी बुद्धिको रोक दिया है। मेरी भाषा सूत्ररूप है, अिसमें अनबड़पन है। अिसलिअे अिसके कअी अर्थ होते हैं।

धर्मदेव : आप कहते हैं, ब्राह्मणको अपने पहलेके अूंचे स्थान पर पहुंचना चाहिये।

बापू : सच बात है। मैं वैश्य जन्मा हूं, किन्तु मेरेमें लोग कुछ बातें ब्राह्मणोचित देखते हैं और कहते हैं कि यह ब्राह्मण है। मुझे तो अभी शूद्रत्वसे आजीविका प्राप्त करनी पड़ती है। आश्रममें सब आठ घण्टे काम करके खाते हैं। मेरा यह साम्यवाद (कम्युनिज्म) हिन्दू धर्मसे आया है। रस्किनने भी यही सिखाया है। किन्तु आज तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और

शूद्र सबको करोड़पति बनना है। अिसलिअे मैंने कहा कि सबको, बैरिस्टर और शूद्रको, बराबर दो। हरअेक अपनी-अपनी बुद्धि समाजकी सेवामें अर्पण करे। सारा समाज त्याग करे, तो समाज भूखों न मरे। जुआरी भी अपनी संपत्तिमें दूसरोंको साझीदार रखते हैं। हम तो जुआरियोंसे भी गये बीते हैं। स्टीमरों पर मैंने अैसे अुदार जुआरी देखे हैं, जो अपना खानगी बताकर अपनी जेबमें कुछ भी नहीं ले जाते, पर साथ बैठकर अुड़ा देते हैं। आजकलकी हालत देखकर मेरा दिल रात-दिन रोता है। आंखोंमें से आंसू नहीं निकलते, पर दिल रोता है। आश्रममें, जो पराये रुपयेसे चलता है, कोअी असत्य चलाता है, विकारवश होता है, तो मैं रोता हूं। आश्रममें जो प्रयोग करता हूं, मैं चाहता हूं कि वह दुनियामें भी हो। अिसमें असफल रहूं और अिसे सफल करनेके लिअे चाहे हजार जन्म लेने पड़ें तो भी कम हैं। अपने निजी लाभके लिअे जो बुद्धिका अुपयोग करता है, वह कामका ही नहीं। बुद्धिका अुपयोग समाजके लिअे ही करना चाहिये। मुझे तो अपने विचार नअी भाषामें बताने पड़ेंगे।

धर्मदेव: किन्तु आप तो यह भी कहते हैं कि आप वर्ण-कर्म दोनोंको मानते हैं।

बापू: देखो, अेक न्यायकी बात है। हम कितना ही प्रचार करें, परन्तु लोग अुस पर ध्यान न दें तो क्या किया जाय? अिसलिअे मनुष्यके लिअे मौनसेवन करनेको कहा गया है। सत्यके सिवाय दूसरा प्रचार क्या हो सकता है? मैंने कह दिया कि वर्णधर्म क्या है। किन्तु आज मैं अुसका प्रचार नहीं करता, क्योंकि वह अप्रस्तुत है। वर्णधर्ममें अूंच-नीचपनका भाव नहीं है, किन्तु अस्पृश्यतामें अूंच-नीचपनका भाव है। अिसलिअे अस्पृश्यता वर्णधर्मकी ज्यादती है।

धर्मदेव: यह जातिमें से पैदा हुअी।

बापू: हां, जातिमें से; किन्तु अस्पृश्यता चली जाय तो जातिमें अूंच-नीचका भाव नहीं रहेगा। सबसे बड़ा जंतु सांप है। यह सांप अस्पृश्यताका है। फिर बिच्छू और दूसरे जंतु रहेंगे तो अुनकी परवाह नहीं। अस्पृश्यता गअी कि...

धर्मदेव: किन्तु वह जात-पांत तोड़े बिना नहीं जायगी।

बापू: ये अुपवास किस लिअे किये? अूंच-नीचका भाव नष्ट करनेके लिअे ही।

धर्मदेव: यह साफ क्यों नहीं कहते? आप जन्म-कर्म दोनोंको मिला देते हैं।

बापू: मैं तो कहता हूं कि जातिका मैं दुश्मन हूं और वर्णका हिमायती।

धर्मदेव: किन्तु आप तो जन्म-कर्म दोनोंको मिला देते हैं। हरिजनोंको शूद्र किस लिअे माना जाय? पर आपने यही कहा है।

बापू: आज में यह वाक्य नहीं कहूंगा। आज तो अितना ही कहूंगा कि अिन्हें चण्डाल न माना जाय।

धर्मदेव: आप सनातन धर्मको स्पष्ट क्यों नहीं करते? सनातन धर्म नित्य धर्म है।

बापू: सनातन धर्म शब्दमें भले ही नित्य धर्म हो, परन्तु जनता अिसे न माने तो अिसका नित्यत्व कैसे रहेगा? मैं जैन मतका — अनेकान्तवादी हूं। अेक ही वस्तुको मैं अेकांतिक सत्यके रूपमें नहीं मानता। अिसलिअे मैं अिस धर्मको सत्य धर्म कहूंगा, किन्तु सनातन नहीं कहूंगा— जब तक अिसे दुनिया भी न माने।

धर्मदेव: यह अर्थ कहांसे निकाला?

बापू: यह अैतिहासिक अर्थ है। गोघ्नका अैतिहासिक अर्थ अलग है, सच्चा अर्थ अलग है।

धर्मदेव: नहीं। आप अपनी स्थिति सनातनधर्मियोंके सामने स्पष्ट नहीं करते। आपको अिन लोगोंसे कहना चाहिये कि सनातन धर्मका अर्थ नित्य धर्म, वैदिक धर्म है; जो अिसके विरुद्ध है वह अधर्म है। 'नास्ति वेदात् परो धर्मः'। आपने अेक जगह कहा है कि शास्त्र बुद्धि और हृदय दोनोंको मान्य होना चाहिये। वेदमें बुद्धिके विरुद्ध बात नहीं है।

बापू: दो शास्त्री हैं और 'दुहितृ' शब्दके बारेमें लड़ते हैं। अेक कहता है अिसका अर्थ है लड़की और दूसरा कहता है गायको दुहनेवाली। दोनों विवादमें पड़ गये और न्यायाधीश कहता है दोनोंको फांसी दो, क्योंकि अेक अेक बात कहता है और दूसरा अुसी बातको दूसरे अर्थमें कहता है। अिसी तरह सनातन धर्मके अेक-दूसरेसे भिन्न अर्थ करके हम बात नहीं कर सकते। अिसलिअे कहता हूं कि सनातन धर्मका आप अनर्थ कर रहे हैं। दस सालकी लड़कीकी शादी करनेकी बात कहनेवाला सनातन धर्म कहलाता है। अब यदि अिस बातका लोग साथ न दें, तो अिसे सनातन धर्म कौन कहेगा? ये लोग कहते हैं कि हमारे पीछे करोड़ों लोग हैं। मैं कहता हूं कि मेरे पीछे करोड़ों लोग हैं। मैं कहता हूं कि मैं तो प्राचीन धर्मकी ही बात कहता हूं, जिसका मेरा यह अर्थ है। अेक आदमीने कहा कि आप अपनेको आर्यसमाजी जाहिर कर दीजिये। मैंने कहा, किस लिअे? लोग मुझे मानना बंद कर दें अिसीलिअे? मैं स्मृति, अितिहास, पुराण सबको छोड़ दूं? मैंने मूर्ति-

पूजाका अेक अलग अर्थ निकाला है। अुस मूर्ति-पूजाको मैं मानता हूं। मैं तो कहता हूं कि औसाअी और मुसलमान भी मूर्ति-पूजक हैं। मेरा धर्म यह है कि संग्रह करने लायक वस्तुका संग्रह करूं और बाकीको छोड़ दूं। अिसलिअे कहता हूं कि मुझे नया नाम नहीं लेना है। 'हिन्दू धर्म' नाम मेरे लिअे काफी है। हिन्दू धर्म मेरे लिअे अगाध समुद्र जैसा है। अिसमें कअी चीजें आ जाती हैं। अिसलिअे मैं अपनेको आर्यसमाजी नहीं, ब्रह्मसमाजी नहीं, बल्कि हिन्दू ही कहता हूं।

धर्मदेव: आप मूर्ति-पूजा किस अर्थमें मानते हैं? आचार्य रामदेव कहते हैं कि मंदिर अेक सार्वजनिक स्थान है, अिसलिअे वह सबके लिअे खुला होना चाहिये। वैसे, हमारी कोशिश तो यह होनी चाहिये कि पुजारी मूर्ति-पूजा छोड़ें।

बापू: यहां मेरा मतभेद है। मैं मानता हूं कि काशी विश्वनाथमें अीश्वर-दर्शन करनेवालेको अीश्वर-दर्शन होता है। मेरी माता मंदिरमें दर्शन किये बिना खाती न थी। वह मुझे कहती कि मैं वहां पवित्र होनेके लिअे, मेरा धर्म पालन हो अिसलिअे, जाती हूं। मैंने अुसे प्रणाम किया। मुझे लगा कि अिस माताको मैं क्या धर्म सिखाअूंगा? ये सब बातें काल्पनिक हैं और भावना पर आधार रखनेवाली हैं।

धर्मदेव: किन्तु पत्थरको रोटी मान लिया जायगा?

बापू: हां, कोअी मनुष्य पत्थरको रोटी समझकर खायेगा, तो अुसे अुस क्षण तो शान्ति ही मिलेगी। विश्वामित्रने वह मांस चोरीसे पाया। संध्या-स्नान किया और बादमें अुसे फेंक दिया। किन्तु पहले अुसने अुसे लिया, तब शान्ति मिली थी न? मैं तो सत्यार्थी हूं, अीश्वर-शोधक हूं। रोज-रोज मुझे जो नये रत्न मिलते हैं वे देता रहता हूं। यही चीज आज सविनयभंग और अस्पृश्यतावाला वक्तव्य जारी किया अुसमें है। यह समझमें नहीं आयेगा, क्योंकि सत्याग्रहका शास्त्र नया है, लोग अिसके आदी नहीं हुअे हैं।

धर्मदेव: कुछ लोग कहते हैं कि अन्तरकी आवाजसे आप तो नया वेद निकाल रहे हैं।

बापू: भले ही कहें! मैं मानता हूं कि वेद नया हो ही नहीं सकता। वेद तो अनंत है। किसीके भी हृदयमें अीश्वर प्रेरणा करे और वह बोले तो वह वेद है। मोहम्मदका कहा हुआ भी वेदवाक्य हो सकता है। अिसीलिअे तो सत्य वेद है।

धर्मदेव: वेद सत्य है।

बापू: भले ही, किन्तु वेदका अर्थ है शुद्ध ज्ञान और शुद्ध ज्ञानका सत्यसे विरोध नहीं हो सकता। नीति-विरुद्ध या सत्य-विरुद्ध वचन आये, तो आप कहें कि यह वचन प्रक्षिप्त है। या वह वेदवचन हो तो मुझे मान्य नहीं।

धर्मदेव: सत्यार्थप्रकाश अभी तक आपको निराशाजनक पुस्तक लगती है?

बापू: नहीं लगी अैसा अभी तक मैंने नहीं कहा। क्या करूं?

धर्मदेव: जिस समय आपने कहा था, अुस समय तो आपको किसी भी तरह हिन्दू-मुस्लिम अेकता करनी थी, अिसलिअे यह कहा था।

बापू: यानी मैं झूठ बोला था?

धर्मदेव: नहीं। किन्तु अुस वातावरणका असर आप पर हुआ था। मैं प्रार्थना करता हूं कि आप कृपा करके यह पुस्तक फिर पढ़ जाअिये। मैंने कअी बार पढ़ी है और हर बार पढ़ने पर मुझे अिसमें से नअी-नअी बातें मिलती रहती हैं।

बापू: यह मैं मानता हूं। पर मैं आज पढ़नेका समय कहांसे लाअूं? फिर भी देखूंगा।

अिससे पहले लेडी ठाकरसी आ गअीं। आज बहुत बैठीं। बेचारी केवल बैठनेको ही आअी थीं। ज्यों-ज्यों अुनके सम्पर्कमें आता जाता हूं, त्यों-त्यों वे अधिकाधिक पुख्त विचारकी लगती जाती हैं। बहुत कम बोलनेवाली हैं। 'प्यारेलाल तो गये' कह कर बोलीं: लल्लूभाअी कह रहे थे कि यह लड़ाअी अब कमजोर पड़ती जा रही है, अब अिसे बन्द कर दिया जाय तो अच्छा। किन्तु मुझे अैसा नहीं लगता। यह ज्वार-भाटा तो आता ही रहता है। लड़ाअी बन्द कर दी जाय तो जो सैकड़ों बेचारे गये हैं अुनका क्या होगा? कितने ही लोगोंने कितना दुःख अुठाया है, बरबाद हो गये हैं। वे सब हताश हो जायंगे।

बापू कहने लगे: सच है।

फिर बोलीं: आपको छोड़नेकी बात चली, तबसे हमारे नाम बार-बार तार आते हैं। बम्बअीसे टेलीफोन आते हैं। मेरा खयाल नहीं है कि आपको छोड़ेंगे। कारण छोड़नेके बाद पकड़ना तो पड़ेगा ही।

बापू: तुमने बिलकुल सही बात कही। जब मैं विलायतसे आया, तब जलमें डालनके बजाय मुझे बुलाया होता तो यह लड़ाअी होती ही नहीं। सरकारने लड़ाअीका पैगाम भेजा। फिर तो कोअी लड़वैया भला कैसे अिनकार कर सकता है? अिससे तो देशकी आत्माका हनन हो जाय।

लेडी: सच बात है। देशकी हिम्मत ही टूट जाय। लड़नेकी शक्ति ही न रहे।

अिनको अैसी बातें करनेसे कैसे रोका जा सकता है? अिनके जैसी भोले दिलकी स्त्रीके सामने बातचीतकी मर्यादा भी किस तरह बतलाअी जा सकती है? फिर सनातनियोंकी बातें निकलीं। बापूने यहांका सब हाल कह सुनाया। लेडीने गौड़के तलाक बिलके बारेमें पूछा।

बापू कहने लगे: हम किसीसे न कहें कि तुम तलाक दे दो। पर दो आदमियोंमें बिलकुल बनती ही न हो, अेक-दूसरेको देखकर जहर बरसता हो, तो क्या यह कहा जाय कि अुन्हें अलग होनेका अधिकार नहीं? अेक बार आप अधिकार दे दीजिये, फिर अिस अधिकारका अुपयोग न करने देनेका काम समाजका है। . . . का किस्सा ले लो। अच्छी पढ़ी-लिखी स्त्री है। अुसके पतिने अुसे कभी बुलाया नहीं। अुसका मुंह भी नहीं देखना चाहता। अुसका क्या हो? लंदनमें मेरे नाम काकाका पत्र आया कि अिस स्त्रीका दूसरेसे ब्याह करनेका विचार है। मैंने अिन लोगोंसे कहा कि कानून यह कहता है। वल्लभभाअी कहते थे कि कोअी सात वर्षकी सजा है। किन्तु तुम्हारी जेलमें जानेकी तैयारी हो, तो मेरा तुम्हें आशीर्वाद है। अुसकी अब अेक युवकके साथ शादी हो गअी है और किसीने कुछ पूछा तक नहीं। अैसे मामलेमें क्या हो?

लेडीने मिश्र-विवाहकी बात निकाली और कहा: ये सनातनी अिस मिश्र-विवाहकी बातसे बहुत डर गये हैं।

बापू: अब यह भी मैं समझादूं। आज अस्पृश्यताके सिलसिलेमें मैं अिसका प्रचार नहीं करता। पर अिस बारेमें शंका नहीं है कि यह चीज मुझे पसन्द है। लक्ष्मीकी मिसाल ले लो। अुसे मैंने ब्राह्मणकी लड़कीकी तरह शिक्षा दी। वह आज आश्रमकी लड़की है। अुसे मैं ढेड़के यहां ब्याह दूं, तो भयंकर संकर हो, अैसा मुझे लगता है। अुसका बाप कहता है कि मैं अुसके लिअे ढेड़ वर तलाश करूं। वह लड़की ढेड़से शादी करना चाहे तो भले ही करे, किन्तु मुझे तो अुसके लिअे संस्कारी वर ही ढूंढ़ना था। और वही मैंने ढूंढ़ा। . . . ने ही चुनाव किया और हमने तय किया। अुस युवकको जल्दी नहीं। लड़ाअी छिड़ गअी और लड़की जेलमें गअी। वह कहता है और लड़की भी कहती है कि आप शादी करायेंगे तब करेंगे। हमें कोअी जल्दी नहीं है। अिस तरहका संयम जाननेवाले दोनोंके विवाहको मैं योग्य विवाह मानता हूं, किन्तु संकर नहीं मानता।

शामको अिसी बारेमें बात करते हुअे कहने लगे: अिसी चीजके बारेमें निरंतर विचार चलते रहते हैं और मेरे अपने विचार अधिकाधिक स्पष्ट होते जा रहे हैं। मेरे सामने सवाल किया जाय, तब जवाब देते देते भी

मेरे विचारोंमें स्पष्टता बढ़ती रहती है। यह कहकर वर्णाश्रमधर्म सम्बन्धी जो विचार धर्मदेवके सामने आज ही विस्तारसे कहे थे, अुनका संक्षेप फिर कह सुनाया।

१८-१-'३३

जेलमें कताअीका काम देनेके बारेमें डोअिलको जो लम्बा पत्र लिखा था, अुसके जवाबमें वह स्वयं ही कल आकर मीठी-मीठी बातें कर गया। बातोंके बाद आकर मुझे बापू कहने लगे: मक्कार शब्द सुना है?

मैंने कहा: हां, लुच्चा, कूटनीतिज्ञ अर्थ है।

बापू: हां, यह अैसा ही है!

किन्तु कताअीसे जेलकी आमदनीमें किस तरहकी वृद्धि हो सकती है, यह बतानेवाली अेक योजना शामको ही बनाअी और यह बतानेका प्रयत्न किया कि जेलमें अेक कैदी रोज सवा पैसा कमाये, तो अिस हिसाबसे भी बीस रुपया रोजका नुकसान होता है। आज सवेरे यह योजना मेजर भंडारीको भेज दी।

'हिन्दू'में अुसके प्रतिनिधिने अेक वाहियात रिपोर्ट भेजी। अुसे देखकर बापू बहुत चिढ़े। 'हिन्दू'को तार दिया कि 'जिसे मेरी मुलाकातकी रिपोर्ट कहा जाता है, अुसमें तो मेरी बातचीतको पूरी तरह बिगाड़ कर पेश किया गया है। और अुसे न छापनेकी भी मैंने चेतावनी दी थी।'

अुस प्रतिनिधिको भी तार दिया: 'मुलाकातका तुम्हारा विवरण बेहूदी विकृतिसे भरा हुआ है। अुसे छापकर तुमने विश्वासघात किया है। बड़ा दुःख हुआ। पर अुससे जो बुरा होना था, वह थोड़ा बहुत तो हो ही गया।'

अितने अुलाहने पर भी सुधार करनेकी अिन्सानियत स्वार्थी संवाद-दाताओंमें हो तब न?

फूलचंदको वीसापुर पत्र लिखते हुअे:

"तुम्हारे वहां कताअीका काम होता है। यहां तो शास्त्रियोंके वाद-विवाद होते हैं और कोअी रूठ भी जाता है। शास्त्रियोंकी तरफसे मुझ पर गालियोंकी अच्छी बौछार पड़ रही है। आज तक जिनका मुझे पता नहीं था, वे मेरे अैब जाहिर हो रहे हैं। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की होगी, अैसे अर्थ मेरे वचनोंसे निकाले जा रहे हैं। और अिन साधनोंसे 'सनातन धर्म'की विजयका डंका बजाया जा रहा है। अिस विश्वाससे कि अिसके पीछे सच्ची ताकत नहीं है, हम हंसते हैं। यदि अिसमें सच्चा बल हो, लोकमत अैसा हो, तो प्रसंग हंसनेका नहीं, बल्कि रोनेका ही होगा; रोना ही आयेगा। कथित सनातनियोंकी यह

हलचल बताती है कि अस्पृश्यताकी जड़ें हिल गअी हैं और मकान थोड़े समयमें गिर पड़ेगा।"

१९-१-'३२

आज सवेरे वल्लभभाअीने कलकत्तेके अस्पृश्य धारासभाअीके आये हुअे पत्रकी बात निकाली और पूछा कि अुसे क्या जवाब दिया है।

बापूने कहा: अुसे लिखा है कि आप निश्चिन्त रहिये। मैं जवाब देता किन्तु देशमें व्यर्थ अुत्तेजना, फैलेगी, अिसलिअे चुप बैठा हूं। फिर जरा ठहरकर वल्लभभाअीसे कहने लगे: आपको लगता है न कि यह सब जो हो रहा है सो अच्छा ही है? मुझे तो लगता ही है। १९२२ में बहुत बार खयाल आता था कि अरे, देशमें यह क्या हो रहा है? किन्तु अिस बार तो पूरा-पूरा आनंद ही होता है। यह खयाल आता है कि सारी लड़ाअी खतम हो जाय, चूरा चूरा हो जाय, जो जेलमें बैठे हैं अुनमें से भी बहुतसे निकल जायं और हम मुट्ठी भर रह जायं, तो निहायत अच्छी बात होगी। तभी लड़ाअी तेजस्वी होगी और सारा कचरा अिकट्ठा होनेके बाद अुसे जला डालनेके लिअे ही मानो लड़ाअी फिर भड़क अुठेगी। दक्षिण अफ्रीकाका मेरा अनुभव यही कहता है। बीचमें लड़ाअी बिलकुल बन्द हो गअी, किन्तु छ:-सात साल बाद जब फिर चेती, तब अुसका अैसा अन्त हुआ, जिसके लिअे मेरा आज भी यही खयाल है कि वह अुत्तम अन्त था। और जो समझौता हुआ वह किसी भी तरह नहीं हो सकता था।

डोअिलके कुछ तौर-तरीकोंसे अुसे ठाकरिया* बिच्छूकी अुपमा देनेकी बापूके जीमें कअी बार आती है। अभी मेजरको अैसी आज्ञा दे गया बताते हैं कि किसीको अेक पत्रमें आये हुअे ज्यादा पत्र न दिये जायं और अेक पत्रमें ज्यादा पत्र न लिखने दिये जायं।

मीराबहनको पिछले हफ्ते लंदनके मित्रोंके बहुतसे पत्र भेजे थे, अिसलिअे अैसा मालूम होता है कि वह पत्र नहीं दिया गया होगा। अिससे अुसे काफी चिन्ता हुअी। अिसका जिक्र करके बापूने लिखा:

"अिस प्रसंगसे अितना पाठ तो तुम सीख ही लो कि फिर अैसा घोटाला हो तब तुम मान ही लेना कि मैंने हमेशाकी तरह तुम्हें पत्र लिखा, ही होगा, भले ही तुम्हारा साप्ताहिक पत्र मुझे न मिला हो। कोअी गड़बड़ हुअी होगी, तो वह मेरे काबूसे बाहरके कारणोंसे ही हुअी होगी। मैं बीमार पड़ गया या किसी और कारणसे तुम्हें न लिख सका, तो तुम्हें खबर तो

* अेक जातका बिच्छू।

दी ही जायगी कि अिस हफ्ते मैंने पत्र नहीं लिखा। अिसका अर्थ यह है कि तुम कैसे भी कारणोंकी कल्पना न कर लेना, वल्कि खवर मिलने तक धीरज रखना। कोअी खवर न मिले तो अनिष्टकी कल्पनाअें न करना। अीश्वर दयासागर है, अिसलिअे हम कोअी कल्पना करें तो अच्छेकी ही करें। वैसे गीताका भक्त तो कोअी भी कल्पना नहीं करेगा। अच्छा और बुरा आखिर तो सापेक्ष है। अीश्वरका भक्त जो घटनायें होती हैं अुन्हें देखता रहता है और स्वाभाविक रूपमें अपने हिस्सेमें आया हुआ काम करता रहता है। जैसे अच्छा यंत्र यांत्रिकके हाथसे अच्छी तरह चलता है, वैसे ही हमें भी अुस महान यांत्रिकके चलाये चलना है। वुद्धिवाले मनुष्यके लिअे अैसा यंत्र वनना वहुत मुश्किल है। किन्तु हमें शून्य वन जाना हो और पूर्णताको प्राप्त करना हो, तो ठीक अिसी तरह करना चाहिये। यंत्र और मनुष्यके वीच मूल भेद तो यह है कि यंत्र जड़ है और मनुष्य पूरी तरह चेतनमय है। मनुष्य अुस महान यांत्रिकके हाथमें यंत्र वनता है, तो ज्ञानपूर्वक वनता है। श्रीकृष्णने यह वात अिन्हीं शब्दोंमें रखी है:

अीश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यंत्रारूढानि मायया॥"

पत्र लिखनेकी कलाके वारेमें श्री नरसिंहमूको:

"प० और ल० मुझे लिखें, तो भी यह जरूरी है कि तुम मुझे लिखते रहो। तुम मुझे जो कहोगे, वह वे नहीं कह सकते। पत्र भी किसी खास संकल्पसे लिखे गये हों, तो अुनका निराला व्यक्तित्व होता है। तुम जानते हो या तुम्हें जानना चाहिये कि पत्रलेखन भी अेक कला है। जो स्वाभाविक ढंगसे और विषयानुकूल लिखते हैं, अुनमें यह कला आ जाती है। तुम्हें यह कला संपादन करनी चाहिये।"

पूना-करारके खिलाफ वंगालमें हो रही हलचलके वारेमें वल्लभभाअीसे वात करते हुअे कहने लगे: यदि अस्पृश्योंके आंकड़ोंके वारेमें गड़वड़ हो, तो हमें सुधार करना चाहिये। वाकी तो कुछ भी करनेकी वात नहीं मालूम होती। दलित वर्ग स्पृश्य होते हुअे भी अस्पृश्यों जैसे हैं। वे भले ही अपनेको अुनमें गिन लें।

ठक्कर वापाको लिखा:

"अिस वारेमें मुझे जो कुछ लिखना जरूरी हो लिखना। कहीं भी हमारी भूल हुअी हो, तो हम स्वीकार करेंगे। अुपवासका दवाव पड़ने पर भी यदि न्याय ही हुआ है, तो कोअी विचार करनेकी वात नहीं है। यदि अन्याय हुआ

हो तो जरूर सोचनेकी बात है। मुझ पर 'अमृतबाजार पत्रिका' की कतरनका कोओी असर नहीं होता। यह बावली है या अिसके पीछे कुछ है? बावली है तो किस लिअे?"

सायके दूसरे पत्रमें :

"गोखलेकी संवत्सरीके बारेमें मुझे करसनदासने लिखा था। गोखलेका नाम सस्ता बनानेकी जरा भी अिच्छा नहीं होती। १९ फरवरी गोखलेको शोभा दे अिस तरह मनानेके लिअे देश अभी तैयार नहीं है। अुनकी पवित्रता और सेवाकी कीमत अितिहासमें होगी। शायद हमारे जीते जी न हो। अस्पृश्यताके दिन स्वतंत्र रूपमें भले ही मनाये जायं। यह मेरी पक्की राय है। आपको अिसमें बहुत तथ्य नहीं मालूम होता?

"'संघ' अभी द्वारका तो नहीं पहुंचा, किन्तु सिर पर तलवार लटक ही रही है। राजाजीकी छतरी तो ही है, किन्तु अिस बार अुन्हें तपना है अिसलिअे छतरी कैसे काम दे? फिर भी आप हरिजीसे और अैसे मुख्य योद्धाओंसे पूछ देखिये। वे 'हां' करें तो आगे बढ़िये, नहीं तो राजाजीके पत्रको दबाकर रख दीजिये। मेरे पास अुनका पत्र आया था। अुसे मैंने घनश्यामदासके पास भेज दिया था।

"अुन्हें नामका मोह नहीं। मैं चाहूं तो वे बदलनेको तैयार हो जायंगे। मेरी अिच्छा तो जरूर है। किन्तु काल बलवान है। वह हमारी अिच्छाओंको सांपकी तरह जीती ही निगल जाता है। वहां मेरे जैसे महात्मा भी अल्पात्मा जैसे लगते हैं। अिसलिअे मैं तो चुप ही रहा हूं। आपकी पीठ जबरदस्त है। आपको भार अुठाना हो तो अुठाअिये। वैसे तो 'नाम वरावे हेते हरि, वाळपणामां जाये मरी'। संघके नामसे न वह तरेगा, न मरेगा। सच्ची कीमत कामसे होगी। काम यमराजको शोभा देनेवाला करेंगे, तो अस्पृश्यता डायनको पूरीकी पूरी निगल जायंगे। अिस बारेमें मुझे जरा भी शक नहीं है।"

२०-१-'३३

हरिभाअू फाटक, शंकरराव ठकार, अुनकी पत्नी और श्रीमती भट्ट (बनारसवाली) आये। श्रीमती भट्ट महाराष्ट्री होकर भी हिन्दी बढ़िया बोलती थीं। बनारसमें डोमवर्गमें अस्पृश्यताका काम करती हैं। यह पूछने पर कि अपराधी जातिकी हैसियतसे जिन डोमोंको हाजिरी देनी पड़ती है, अुनके लिअे कोअी काम हो सकता है या नहीं, बापू बोले: अुन्हें हाजिरी देनी पड़ती है, जिसके लिअे हमसे कुछ नहीं हो सकता। अुन लोगोंको सफाअी वगैरा सिखाने और अुनकी अस्पृश्यता दूर करनेका सब काम हो सकता है।

नरगिस बहनसे मिलकर अुनका बम्बअीका काम देखनेकी सलाह दी। बनारसके पंडे कहते हैं कि अछूत साफ कपड़े पहनकर आयेंगे तो हम नहीं रोकेंगे, मगर तुम ढोल बजाकर मत आओ। तो अिसका लाभ अछूत लें या नहीं, यह सवाल भी पूछा।

बापू कहने लगे: अिन लोगोंको सलाह देना कठिन है। किन्तु सलाह पूछने आयें तो कहा जा सकता है कि तुम साफ होकर, स्वच्छ वस्त्र पहनकर जाओ और तुमसे पूछा जाय कि तुम अस्पृश्य हो, तो जाति न छिपाकर जाहिर कर दो।

ठकारको भविष्यके कानके लिअे हमेशाके मुताबिक सलाह सुनाअी। मरा हुआ आदमी पीछे रहनेवालोंको यह सलाह कैसे दे सकता है कि संसार किस तरह चलाया जाय? किनारे पर खड़ा हुआ मनुष्य समुद्रके बीचमें पड़े हुओंको क्या सलाह दे? मैंने किसीसे अपनी ली हुअी प्रतिज्ञा छोड़नेको कहा ही नहीं। जिसे वह काम पसन्द न हो या जो अूब गया हो, वह यह काम कर सकता है। किन्तु अिसका निश्चय वह स्वयं ही करे। यहांसे मैं अुसके लिअे विचार नहीं कर सकता।

तळेगांवकर, जेधे और अुनके साथ चार दूसरे व्यक्ति पूनाकी कठिनाअियोंकी बातें करने आये थे। आंबेडकरके आदमियोंमें जाते हैं, तो वे कहते हैं कि हमें तुम्हारे मंदिर नहीं चाहिये, हमें रोटी दो, नौकरी दो। हमें और कोअी बात नहीं सुननी है। आप बाबासाहब आंबेडकरसे न कह दें कि अुनके आदमी अैसा रवैया न रखें?

बापू बोले: पूनाके ही हरिजनोंमें देश भरके हरिजन तो नहीं आ जाते? महाराष्ट्रमें भी दूसरे हरिजन तो हैं ही। सभी हरिजन कोअी अैसे नहीं हैं। तुम हरिजनोंका अेक स्वतंत्र आबादीका नकशा तैयार करो। अुनके कुटुम्बोंके बच्चों, स्त्रियों वगैराका पूरा ब्यौरा दो, और अुनके कामधंधेका भी ब्यौरा लिखो। यह बड़ा अुपयोगी काम हो जायगा। ये लोग न सुनें तो औरोंमें प्रचार करो। वैसे अिन लोगोंसे कहो कि जो मंदिरोंके प्रति श्रद्धाका नाश कर रहे हैं, वे अपना नाश कर रहे हैं। अिन्हें भी समझाओ कि जो रोटी दिला दे वही धर्म है, दूसरा कोअी धर्म नहीं है, यह कहनेके बजाय यह कहें कि रोटी भी सत्य, अहिंसा और धर्मसे मिलती होगी तो खायेंगे नहीं तो भूखों मर जायेंगे, किन्तु सत्य, अहिंसा या धर्मका त्याग नहीं करेंगे। मैं तो कहता हूं कि जो धर्म सत्य और अहिंसाका विरोधी है वह धर्म ही नहीं। सत्य और अहिंसाको ही मैंने अपना धर्म बनाया है और शास्त्रमात्रकी परीक्षा मैं अिसीसे

करता हूं। जिस प्रकार मेरा अपना शास्त्र सादा और आसान हो गया है। मुझे किसी झगड़ेमें नहीं पड़ना, पड़ता।

मंदिरों सम्बन्धी समझौता समझाते हुअे बापूने कहा: अिसमें हम कोअी त्याग नहीं करते, दूसरोंकी भावनाका आदर करते हैं। ये लोग हमें दूर रखते हैं, अिसमें अनुदारता और कृपणता है। हम यह अनुदारता और कृपणता अिनके प्रति दिखाना नहीं चाहते, अिसीलिअे यह सूचना है। अिस सूचनाको ये स्वीकार करें या अस्वीकार करें, अिसमें अिन लोगोंकी बहुत बड़ी कसौटी है। हम बच्चोंको प्याजका बड़ा शौक था। वैष्णव धर्ममें प्याज खाये नहीं जाते, पर हम मांके साथ झगड़ा करते। मां बेचारी खुद न खाती, किन्तु हमारे लिअे अलग प्याज बनाकर हमें खिलाती थी; और हमें खिलाते-खिलाते आलोचना करके मांने हमारी आदत छुड़वा दी। यह अुसकी शुद्ध अहिंसा और सत्याग्रह था। हमारा सिद्धान्त भोगका था, अुसका त्यागका था। अपना त्याग न छोड़ते हुअे और हमारे भोगको रिझाकर भी वह प्रेमके जोरसे अुसे छुड़वा सकी।

यह पूछने पर कि सनातनी जो गालियां देते हैं, अुसके बारेमें क्या वृत्ति रखी जाय, बापूने कहा: हमारी वृत्ति दादूके अुस भजनकी होनी चाहिये: 'निन्दक बाबा वीर हमारा'।

जेधे कहने लगे: तुकाराम भी यही कहते हैं: 'निन्दकाचें घर असावे शेजारी'— निन्दकका घर पास हो।

मालवीयजीके वक्तव्यसे बापूको बड़ा अचंभा हुआ। मालवीयजीने बापूसे पूछेताछे बिना, कोअी संदेशा भेजे बिना, सनातनियोंके साथ समझौतेके, प्रायश्चित्त, शुद्धि तथा व्रत आदिके अपने रास्ते सुझाये। अिस पर मुलाकात दूं या न दूं, यह विचार करते रहे। अन्तमें मालवीयजीको लम्बा पत्र लिखवाया।

२१-१-'३३

पुरुषोत्तम त्रिकमदास आ पहुंचे। अुन्होंने यह कहा था कि अस्पृश्यताके बारेमें बातें करने आयेंगे। अुन्होंने अिस तरह शुरुआत की:

आपके आखिरी वक्तव्यका अर्थ बहुत लोग यह करते हैं कि महात्माजीने अब सबको हरिजन कार्यमें लगनेकी अिजाजत दे दी है। हंसा महेता अिस तरह सोचती हैं। मैं अैसा नहीं समझता। किन्तु बहुतेरे यही समझते हैं। कुछ यह भी समझते हैं कि आन्दोलन अब सजीव नहीं बन सकता और अुसे चलानेमें रुपया लगाना बहुतोंको व्यर्थका बिगाड़ मालूम होता है।

मुझे भी अैसा ही लगता है। किन्तु मैं तो मानता हूं कि कांग्रेसकी आज्ञाके विना अिसे वंद नहीं किया जा सकता, भले ही यह सारा आन्दोलन वेकार हो। और मैं मानता हूं कि यह वेकार है।

वापू: तुम आये यह अच्छा किया। किन्तु मैं अिसमें तुम्हारी मदद नहीं कर सकता। वात यह है कि हम जो देखना चाहते हैं, वही हम किसी खास लेखमें पढ़ते हैं। किसी आदमीकी आंखमें हम जो देखना चाहते हैं वही देखते हैं। मनुष्य जिस भावनासे देखता है, वही अर्थ निकालता है। अिस वक्तव्यमें मैंने वही लिखा है, जो मैं अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार लिख सकता था। मैंने जो कुछ किया, अुसके अनुसार मनुष्य करे तो काफी है। मैं जेलमें चला आया, अिसलिअे सत्याग्रहीकी हैसियतसे मुझे जो कुछ करना था वह मैंने कर दिया। अंदर आ जानेके वाद दूसरा कुछ करनेकी मुझमें शक्ति है, अिसलिअे वही कर रहा हूं। किन्तु किसी शर्त पर मैं वाहर तो हरगिज नहीं निकलूंगा, और न कभी निकला।

पु०: मेरा कहना यह है कि हम अिस आन्दोलनको चलानेकी खातिर ही चलाते रहेंगे, तो कांग्रेसकी प्रतिष्ठाको धक्का पहुंचेगा। साथ ही साथ यह भी कहूंगा कि मुझे तो कांग्रेसकी आज्ञा माननी चाहिये।

वापू: अपनी नीति और स्वभावके कारण मैं अिस मामलेमें भी मदद करनेमें असमर्थ हूं। तुम्हें कुछ भी कहनेके लिअे स्वतंत्र नहीं हूं। अितना ही नहीं, स्वतंत्र होअूं तो भी मेरा यह स्वभाव ही नहीं।

पु०: किन्तु आपने यह तो कहा वताते हैं कि जिसे हरिजनोंका काम करना हो वह कांग्रेसका न करे, और कांग्रेसका करना हो वह हरिजनोंका न करे?

वापू: यह तो अेक साधारण सलाह हुअी कि दो घोड़ों पर सवारी न करो। जो आदमी खानगी तौर पर सविनयभंगका काम करे और सार्वजनिक रूपमें अस्पृश्यताका करे, वह अिस कामको भी धक्का ही पहुंचायेगा।

पु०: किन्तु राजाजी और देवदास कांग्रेसका काम करनेवाले हैं और अव वे मद्रासमें हरिजनोंका काम करनेमें लगे हुअे हैं। अैसा करें तो?

वापू: यह तुम्हारी अिच्छा पर है। अैसा करनेसे तुम्हें कोअी रोक नहीं सकता, पर मैं रास्ता नहीं वता सकता। मैंने देवदाससे भी कह दिया, 'भाअी, मैं तुम्हें रास्ता वता ही नहीं सकता। मैं किसी अिशारेसे भी नहीं समझा सकता, क्योंकि अिस वारेमें मैं विचार ही नहीं कर सकता।' तुम्हें जरूर यह कहनेका अधिकार है कि अिस कामसे मेरी आत्मा अलग हो गअी है, और अव अिस कामको मैं शोभायमान नहीं कर सकता। यह जाहिर करके तुम दूसरा काम

कर सकते हो। मैंने तो देवदाससे भी कहा, 'भाओी, यह काम मैंने करोड़ों पर डाल दिया है। मुट्ठीभर कांग्रेसजन अैसा न समझें कि हम यह काम नहीं करेंगे तो यह रसातलको चला जायगा।' यदि अैसा ही हो तो भले ही वह रसातलको चला जाय। किन्तु मैंने अैसा कभी नहीं माना। हां, अिसमें कुछ स्वार्थी लोग घुस सकते हैं, वदमाश आदमी आ सकते हैं और गंदगी भी पैदा हो सकती है। किन्तु अंतमें सारा मैल निकल जायगा और आन्दोलन स्वच्छ ही होकर रहेगा।

पु०: किन्तु वहुतसे साथी दूसरी तरफ चले जा रहे हैं।

वापू: भले ही। अिस परसे मैं अितना समझूंगा कि अुन लोगोंमें आत्म-विश्वास नहीं रहा। जिस आदमीकी आत्मा कहे कि मुझे तो यही काम करना है और मैंने जो प्रतिज्ञा ली है अुसे पालना चाहिये, वह अुस काममें लगा रहे। कुछ वहनोंने मुझसे सलाह मांगी। मैंने अुन्हें अपनी प्रतिज्ञा याद दिलाओी और कहा कि अपनी प्रतिज्ञाका अर्थ भी तुम्हीं करो। यद्यपि यह प्रतिज्ञा तुमने मेरे सामने की है, किन्तु अुसका अर्थ तुम्हारे लिअे मैं नहीं करूंगा। वह तुम्हींको करना चाहिये।

पु०: ये वहनें हरिजनोंका काम करती हैं?

वापू: नहीं, वे तो थाना जेलमें बैठी हैं। वे स्वतंत्र विचार करके गओीं। मैंने अुन्हें कोओी सलाह नहीं दी; मैं दे ही नहीं सकता। मेरा पोता मुझे लिखता है: 'मैं तबीयत खराब होनेके कारण आज तक बैठा रहा अिसलिअे शर्माता हूं। अव फिर अपने काममें लग जाअूंगा।' अुसे मैंने कोओी भी सलाह नहीं दी।

वैसे अेक वात कह दूं कि जिसे डर हो गया हो कि मुझसे जेल वरदाश्त नहीं हो सकेगी, अुसे जेल जानेका आग्रह रखनेकी जरूरत नहीं। अुसे अीमानदारीसे कह देना चाहिये कि यह मेरे बूतेसे वाहरकी वात है। मैं अव लड़ाअीके लिअे वातावरण नहीं पाता। अुसे यह जाहिर करनेका हक है।

पु०: किन्तु यह अनुशासनके विरुद्ध नहीं कहा जायगा?

वापू: नहीं, मैं अिसे अनुशासनके विरुद्ध नहीं मानता।

पु०: हरअेक सिपाहीको अिस तरह जीमें आये सो कहनेकी छूट नहीं हो सकती।

वापू: हमारी लड़ाअीमें है। क्योंकि मैं यह कहकर अंदर आया हूं कि हरअेकको यह लड़ाअी अपने आप चला लेनी पड़ेगी। वोअर युद्धमें जव छापामार लड़ाअी हो रही थी, तव पहलेके सेनापति चाहे जो भी कर गये थे, किन्तु डीवेटने अपनी वुद्धिके अनुसार काम चलाया।

ये सब वातें में तुम्हारे जैसे दृढ़ विचारके आदमीके सामने कर रहा हूं, क्योंकि में जानता हूं कि तुम जो सोचते होगे वही करोगे। नहीं तो मुझे जो कुछ कहना था, मैं कह चुका हूं। अब कुछ कहना वाकी नहीं रहा। अितना कह दूं कि तुम्हें यह कहनेकी आजादी है कि अब तुम्हें विश्वास नहीं रहा।

पु०: किन्तु में यह नहीं मानता कि मुझे यह आजादी है।

वापू: यह दुःखकी वात है कि सत्याग्रहमें मनुष्य हमेशा सत्य पर विश्वास नहीं रखता। यिस लड़ाअीमें भी दो तरहके आदमी हैं। अेक नीतिसे सत्यको माननेवाले और दूसरे सत्यको त्रिकालावाव सिद्धान्तके रूपमें माननेवाले। में जो वात कह रहा हूं, अुसे वे नीतिवाले नहीं अपना सकते। दूसरे अुसे अपनायेंगे और सत्यके अनुसार चलेंगे।

पाटीलने अेक काम किया, सो मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने अुन्हें चेतावनी दी थी कि में सलाह नहीं दे सकूंगा। मैंने जो वात कही है, वह तुम भले ही औरोंसे कह देना, किन्तु अुसका अुपयोग छिपे गश्तीपत्रके लिअे न हो। मेरे साथ हुअी वातें सार्वजनिक रूपमें कहनी हों तो कह सकते हो, किन्तु खानगी तौर पर नहीं फैलानी चाहियें।

यही चीज दूसरे शब्दोंमें: सच्चा मनुष्यत्व किस तरह प्राप्त हो सकता है? अिसके लिअे कैदीकी हैसियतसे भी सन्देश दिया जा सकता है। सत्यके लिअे, जिससे वड़ा और कोअी काम सिद्ध करनेका है ही नहीं और जिससे ज्यादा कड़ा मालिक दूसरा कोअी नहीं है, जेलसे भी कहा जा सकता है।

हम सत्यसे कितने दूर हट गये हैं, यह अच्छी तरह समझ नहीं सके। मैं घड़ी भर भी नहीं समझ सकता कि सत्याग्रहमें गुप्तताके लिअे कैसे स्थान हो सकता है? सत्याग्रहमें हमें अपनी पूरी शक्तिसे अपना सत्य व्यक्त करना होता है, जब कि गुप्ततामें कायरता और झूठ है। फिर भी मैं देखता हूं कि सत्याग्रहके नाम पर ही वेहद गुप्तता चल रही है। मेरे नामसे सबको कह देना कि सब प्रकारकी गुप्तता पाप है। गुप्तताके बिना लड़ाअी न चल सकती हो, तो भले ही वह वन्द हो जाय। अितना तो समझ ही लो कि गुप्तताके कारण लड़ाअी चलती दीखती हो, तो यह भ्रम और मायाजाल है। भय और अविश्वास गुप्तताकी अेक साथ पैदा होनेवाली सन्तानें हैं। और जिस देशमें अिनका वातावरण जम गया हो, वहां स्वच्छ जीवन असंभव हो जाता है। अिस शापको हमारे वीचसे निकाल देना चाहिये। जो भी करो खुल्लमखुल्ला दिन दहाड़े करना चाहिये। तुम क्या

हो, कहां हो और क्या कर रहे हो, अिसे अच्छी तरह जानो। रुपयेकी या दूसरी गुप्त सहायताकी गुप्त रसीदें न दी जायं। रुपयेके विना और किसी भी तरहकी छिपी मददके विना लड़ाअी चल सकती है, किन्तु सत्यके विना और हिम्मतके विना नहीं चल सकती। अिस गुप्तताके कारण ही आर्डिनेंस राज संभव हुआ है। तुम जिस घड़ी गुप्तता छोड़ दोगे, अुसी घड़ी अिनके आर्डिनेंसोंकी दो कौड़ीकी कीमत भी नहीं रहेगी। किन्तु अिनके आर्डिनेंस हों या न हों, सत्यकी खातिर अिस पापको अपनेमें से निकाल दो। जहां तक मैं जानता हूं, यही सत्याग्रहका नियम है।

अिस सम्बन्धमें अेक बात जो मैं छः महीनेसे कहता रहा हूं, फिर कहता हूं। हम अेक भी चीज गुप्त रख ही नहीं सकते। '३० में मैंने कहा था कि 'नवजीवन' गुप्त रूपमें निकलता है, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। परन्तु मैंने दरगुजर कर लिया, यद्यपि मुझे दरगुजर करना नहीं चाहिये था। अिसमें कोअी पाप है सो बात नहीं, किन्तु हमारी लड़ाअीमें अैसा नहीं हो सकता। यहां भी मैं अिस वर्ष व्याकुलचित्त होने लगा हूं और जिसे कहनेका मौका मिलता है, अुसीको कहता हूं कि यह लड़ाअी बहुत गुप्त रूपसे चल रही है, जो बिलकुल ठीक नहीं है। अिस गुप्ततामें से जल्दीसे जल्दी निकल जाना हमारे लिअे अच्छा है। यह लड़ाअी अैसी है कि रुपयेसे नहीं चल सकती। आज तुम्हें जो यह लगता है कि लोग निकम्मे बन गये हैं, डर गये हैं, यह भावना भी गुप्तताके बोझके कारण है। अिसलिअे यह बोझ हटा देना। दक्षिण अफ्रीकामें गुप्तता थी ही नहीं। यह बात भी तुम सबके सामने सार्वजनिक रूपसे प्रगट करना। यह भले ही सरकारके कानों पर जाय। क्योंकि अिसमें मैं तो सरकारकी मदद ही कर रहा हूं, अुसका नुकसान नहीं करता।

प्र०: पाटीलने आपके नामका अुपयोग नहीं किया। बुलेटिन तो खुले तौर पर नहीं निकाला जा सकता। वैसे जिस ढंगसे निकल रहा है, अुसे गुप्त नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अुस पर मुद्रक और प्रकाशकके नाम होते हैं।

बापू: मैंने यह नहीं कहा कि अिसमें पाप है। हम अपनी तमाम खानगी बातें जाहिर करनेको बंधे हुअे नहीं हैं। किन्तु यह लड़ाअी — सत्याग्रहकी लड़ाअी — अिस तरह नहीं चल सकती। यह लड़ाअी किसीके जेल चले जानेसे बचनेवाली नहीं है। अेक भी काम हम अैसा न करें, जिसके बारेमें हम यह चाहें कि अिसका पता सरकारको अधिकसे अधिक देरमें लगे। तुम्हारे बुलेटिन मैंने '३१ में देखे थे। अुन्हें निकालनेके ढंगमें मैं चतुराअी देखता हूं, बड़ी होशियारी पाता हूं। अिस सारी कुशलताका विचार करने पर मेरा

तो सिर चक्कर खाने लगता है। किन्तु अिसमें मुझे लोगोंका हित नहीं दीखता, अिससे लोग अूपर नहीं अुठ सकते। यह तो अैसी बात है कि चूंकि हममें अंठ आ गअी है, अिसलिअे अुस अंठको कायम रखा जाय। यह बतानेकी बात है कि रावणके दसों सिर आज भी कायम हैं। किन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि अिसीसे डरकी डायन पैदा होती है।

पु० : किन्तु अिसमें गुप्त क्या है? प्रेसके कानूनका आदर करना थोड़ा ही हमारा धर्म है?

बापू : सत्याग्रहीकी हैसियतसे धर्म है। किन्तु यह बात समझानेमें मुझे घण्टों लग जायंगे और वह मैं देना नहीं चाहता। यह लड़ाअी अैसी है कि अखबारोंके बिना, मकानके बिना, आदमियोंके बिना, खानेके बिना चल सकती है, अैसा विश्वास होना चाहिये।

पु० : मेरे खयालसे बम्बअीमें तो संगठनके बिना नहीं चल सकती।

बापू : किन्तु मैं जिस ढंगकी बात कह रहा हूं, अुसमें अेक-तरहका संगठन ही है। दांडी-कूचका किसने संगठन किया था? लोगोंमें स्वाभाविक जोश आ गया था। अिस लड़ाअीमें स्वाभाविक जोशकी बात है।

पु० : स्वाभाविक जोश तो बन्द हो जायगा।

बापू : मैं यही चाहता हूं, अिसीके लिअे चिन्तित हूं। तुम जो कह रहे हो, वह सारी बात मैंने मनमें विचार ली है। किन्तु आज अेकाअेक तुम्हें नहीं समझा सकता। किसीको यह चीज सूझ जाय और वह अिसे जाहिर करे, तो मैं यह समझूंगा कि अुसने बहुत वर्षोंका काम कर लिया है। मुझे शुरूसे ही जाहिर कर देना चाहिये था कि अिस मामलेमें मेरी भूल हुअी। मान लो कि आज ही मैं बाहर निकल आअूं, तो पहला काम मेरा यही होगा कि सेनापतिकी हैसियतसे मैंने जो भूल की है अुसे प्रगट करूं और सबसे कहूं कि गुप्तताका कोअी आश्रय न ले। अितना करो तो आर्डिनेंसोंके विरुद्ध लड़नेके जिस झगड़ेमें पड़े अुसमें पड़नेकी जरूरत न रहे।

२२-१-'३३

अे० पी० आअी० को आज बढ़िया मुलाकात दी। बिलको मंजूरी देनेके बारेमें सरकारकी मुश्किलोंकी बातकी कलअी खोल दी। कल बझे, देवधर और पटवर्धन 'हरिजन-सेवक'के अंग्रेजी संस्करणके लिअे चर्चा करने आये थे। बापूने कुछ सवाल पूछे थे। अुनका जवाब न देकर तीनों भाअी स्पष्टीकरणके लिअे खुद ही आ गये और सब ब्यौरेवार सफाअी कर गये।

अिनके जानेके बाद बापू कहने लगे: अिन सब आदमियों पर गोखलेकी आध्यात्मिकताका असर देखते हो न? हम महाराष्ट्रमें प्रपंच, छल-कपट और सरलताके अभावकी बातें सुनते हैं। किन्तु अिन सबमें सरलताके सिवाय कुछ भी नहीं है। अिसका यश गोखलेको है। मुझे तो यह साफ दीखता है कि आज भी गोखलेकी आत्मा काम कर रही है।

गोखलेके प्रति भक्ति बापूमें पग-पग पर जाग्रत हो रही है। यह 'हरिजन-सेवक' का काम सर्वेंट्स आफ अिंडियाके आदमियोंके द्वारा हो, वझे जैसे आदमी जिम्मेदारी लें, यह आग्रह बापूका अिसीलिअे है कि पुराना सम्बन्ध ज्यादा मजबूत हो जाय।

कल सवेरे लखनअूसे मिली हुअी स्वदेशी पेनका अुपयोग करके कहने लगे: अिससे काम लेनेमें काफी मुश्किल होती है।

मैंने कहा: अिसे छोड़ना पड़ेगा। किन्तु मेरे पास अिसीमें की नअी पेन घर पर रखी है, वह मंगा लूं तो?

बापू: किस लिअे? यह आग्रह थोड़े ही है कि यही पेन काममें ली जाय और विदेशी न ली जाय? यह पेन भी हमें बनाना आना ही चाहिये, अैसा भी किस लिअे? अिसमें मुझे गहराअीमें द्वेष दीखता है। बहुतसी चीजें अैसी हैं, जिन्हें हम नहीं बना सकते। अुन्हें भले ही विदेश बनायें और अुनसे कमायें। हमारा आग्रह तो यही है कि जो चीज हमारे यहां होती है, अुसे बाहरसे न मंगाया जाय। गेहूं हमारी पैदावार है। अब हमारे ही गेहूं ले जाकर शायद आस्ट्रेलिया ज्यादा बढ़िया गेहूं पैदा कर ले, तो हम आस्ट्रेलियाके गेहूं क्यों खायें? हम अपना बीज सुधारें, नहीं तो हमारे यहां जैसा पैदा होता है अुससे काम चलायें। यही बात रूअीके बारेमें है। वह हमारी ही पैदावार है, हमारी भूमि अिसे हजारों वर्षोंसे पैदा करती है। अब मिस्रसे बढ़िया रूअी आती है, अिसलिअे हम अपनी रूअीको भूल नहीं सकते। अपनी रूअीकी किस्म भले ही सुधारें, किन्तु न सुधरे तो हम अपनी रूअीसे काम चला लें।

किन्तु अिस तरह मैं अिस पेनसे अूब नहीं जाअूंगा। किसीने अुत्साहसे बनाअी है, तो थोड़ी मेहनत करके भी अिसकी आजमाअिश तो करूंगा ही।

२३-१-'३३

राजाजीका पत्र आया — लम्बा पत्र। अुन्हें बापूके वक्तव्यमें प्रतीत होनेवाली अहिंसाके दर्शनसे आनन्दमिश्रित आश्चर्य होता जा रहा है। देवदासके भाषणोंको शैली, भाषा, वक्तृत्वकी छटा, प्रामाणिकता आदिकी दृष्टिसे सम्पूर्ण भाषण बताकर कहने लगे: वह अन्तःप्रेरणासे बोलता है। सनातनियोंकी खलबलीके बारेमें कहा:

अितनी ज्यादा जाग्रति हो रही है कि यह अुस बूढ़े और खेत खोदनेकी बात याद दिला रही है। खेत खूब खोदा, अिसलिअे अुसमें से भारी फसल पैदा हुअी। अिसी तरह हमारा हाल होगा।

वालजीभाअीकी पुस्तक बापूको पसन्द न आअी। फिर सरदारकी राय मांगी, मेरी मांगी, छगनलालकी मांगी और अन्तमें यह बताया कि अुन्होंने अुसे प्रकाशित कर दिया है।

वालजीभाअीका पत्र: "'अीसा चरित्र' प्रकाशित कर दिया है। मुझे तो यह गीतासे ज्यादा समझमें आता है और ज्यादा पसन्द है। मैं मानता हूं कि साधारण आदमियोंका भी यही अनुभव होगा। मैं यह भी मानता हूं कि 'अीसा चरित्र' के ६०–७० पन्नोंमें जो सामग्री है, वैसी सामग्रीवाले ६०–७० पन्ने दुनियाके साहित्यमें से बहुत ज्यादा नहीं मिलेंगे। आप भी शायद अिससे सहमत हों; और अैसा हो तो आपको अितना जरूर लिखना चाहिये था कि अैसे ६०–७० पन्नोंके समूह दुनियामें अुंगलियों पर गिनने लायक भी मुश्किलसे ही निकलेंगे।"

प्रेमाबहनका रूठना अिस हफ्ते पूरा हुआ और अुनका ३८ पन्नोंका पत्र आया। अिसलिअे बापूने भी कअी पन्ने लिखे: "तू मुझे पागल लिखे, अिससे मैं नहीं घबराता। पर मुझे तेरी भूल मालूम हो और अुसे न कहूं तो मैं तेरा हितैषी, साथी, मित्र या पिता नहीं माना जा सकता। मुझे विचित्र तो यह लगता है कि शुद्ध भावसे मैं जो कहता हूं, अुससे तू नाराज कैसे हो जाती है? मेरा अुपकार क्यों नहीं मानती? हमारे बारेमें किसीके मनमें जो कुछ महसूस होता हो अुसे वह कह दे, तो हम अुसका अुपकार न मानें? मैंने तो यह पाठ बचपनसे सीखा है। अितना तो तू मुझसे सीख ही ले। मेरी परीक्षा गलत होगी तो मैं दयाका पात्र बनूंगा, और सच्ची होगी तो तेरा अुपकार होगा। तुझे तो दोनों तरह लाभ ही होगा। क्योंकि जिसके साथ पाला पड़ा है, अुसे तू ज्यादा अच्छी तरह जान सकेगी। मैं चाहता हूं कि मेरे दोष और मेरी कमी तो सभी पूरी तरह जान लें, और अुन्हें बतानेकी मेरी सदा ही कोशिश रहती है। मैं अपने विचार भी छिपाना नहीं चाहता। मैं अैसा जरूर हूं कि लिखने कि मुझमें शक्ति हो तो अुन्हें लिख डालूं। पर मैं जानता हूं यह संभव नहीं। मुझे तो दुनियामें अैसी अेक भी शक्तिका होना संभव नहीं दीखता, जो विचारकी गतिको पहुंच सके। कोअी अुसे पानेका यंत्र खोजे तो पता चले — अितना लिखते-लिखते तो मेरे विचार ब्रह्माण्डकी पांच-सात प्रदक्षिणा कर आये।

"तू अितना कबूल करेगी कि हममें जहर है या नहीं, अिसकी परीक्षा खुद कर सकनेका कोअी नियम नहीं है। जहर जमा करनेकी अिच्छा न हो तो जहर होगा ही नहीं, सो बात भी नहीं। वह हम पर अनिच्छासे सवारी गांठता है। शायद यह बात तू मंजूर नहीं करेगी कि जिसमें क्रोध है अुसमें जहर है ही। यह बात तू मंजूर न करे, तो कहना होगा कि जहरका हम दोनों अेक ही अर्थ नहीं करते। मुझे याद है कि वा ने मुझे बहुत बार जहरीला माना है। मैं अुसके आरोपसे कैसे अिनकार करूं? मैंने अपने वचनमें जहर न मांना हो तो क्या हुआ? अुसे वह चुभा, यह मेरे लिअे काफी होना चाहिये। जो वचन पूरी तरह सत्य और अहिंसामय है, वह कभी किसीको चुभता ही नहीं। शुरूमें वह डंककी तरह लगे यह दूसरी बात है, किन्तु अैसा महसूस करनेवाला भी बादमें अुसके अमृतको स्वीकार करता है।

"मैं चाहता हूं कि तू सभी मामलोंमें अपनी परीक्षिका न बने। हो सकता है कि दूसरे ज्यादा अच्छी परीक्षा कर सकें। जहरका प्रकरण यहां खतम करता हूं।

"तेरे आश्रम छोड़नेका सवाल अभी अप्रस्तुत है। तेरे पत्रसे मैं यह समझता हूं कि मैं छूटूं और आश्रममें रहने लगूं, तभी यह प्रश्न अुठ सकता है। नीतिकी दृष्टिसे तो शायद यह प्रश्न तभी अुठ सकता है। मैं आश्रममें न रह सकूं, तब तक आश्रमकी दृष्टिसे तो यही माना जायगा कि मैं जेलमें हूं; और जब मैंने आश्रमसे विदा ली, तब तुम, जो आश्रममें रह गये हो, मेरे वापस आ सकने तक बंधनमें हो। यदि मेरा यह मत ठीक हो, तो मेरे वहां आनेके बाद क्या करना अुचित होगा, यह विचार अभी करना शक्ति और समयका दुर्व्यय है।"

हरिजनसेवाके बारेमें रजवाड़ोंमें पत्र लिखे:

"भाअी गोरडिया,

"हरिजनसेवामें ठाकुर साहिब और आप कुछ मदद दे रहे हैं? मन्दिर खोलनेमें प्रजाके नाराज होनेका शायद डर लगता हो, किन्तु भाम (भाम = मरे हुअे ढोरका चमड़ा अुतारने देनेका कर) का क्या हुआ? मुर्दार ढोरकी व्यवस्था किस प्रकार होती है? आप ढेड़ोंसे अुसका रुपया लेते हैं? यदि अुनसे मुर्दार मांस छुड़वाना चाहते हों, तो अुन्हें मजदूरी देनी चाहिये और ढोर पर होनेवाली क्रियाकी देखरेख होनी चाहिये। जरा मेहनतका काम है, नुकसानका नहीं है। कचहरीमें, अस्पतालमें अुनके क्या हाल होते हैं? हिसाब देंगे?"

पटणीको :

"सुज्ञ भाओश्री,

"आप मौकेसे पहुंच गये। शरीर अच्छा बनाकर आये होंगे। हरिजनसेवामें आपकी मदद सबसे बढ़कर हो, यह मांग सकता हूं न? काम भले ही अपने ढंगसे कीजिये। किन्तु आपका काम करनेका ढंग अैसा होना चाहिये, जो दूसरोंसे बढ़ाचढ़ा हो। चाहेंगे तो आप बहुत कुछ कर सकेंगे। कीजिये। भाम पर जल्दी नजर डालिये। ढेड़-चमारोंसे मुर्दार मांस छुड़वानेके लिअे भामके मामलेमें बहुत फेरबदल करनेकी जरूरत है।"

पटवारीको :

"आदरणीय रणछोड़भाओी,

"आपको अब जल्दी नहीं छोड़ सकता। आप तो कह गये हैं कि मंदिरके सिवाय और सब आपको मंजूर है। मन्दिरोंके लिअे भले ही मैं मरूं। किन्तु और सब तो धर्म जानकर आपको करना ही पड़ेगा। आप मदद करें तो मुर्दार मांस तुरंत छुड़वा सकते हैं। और स्कूल, अस्पताल, कुअें वगैराका बन्दोबस्त अच्छी तरह होना चाहिये। आपने ही तो कहा है कि अस्पृश्य नारायणका नाम जपें और स्नानादि करें तो हमारे जैसे ही हैं। अुन्हें अैसे बनानेमें मदद दीजिये, फिर मुझे जितनी गालियां देनी हो अुतनी देना। आपको अधिकार है। मेरा काम कीजिये। मेरे जवाब मिले होंगे।"

अेक पत्रमें मौनका अर्थ और अन्तर्भाव समझाया (हिन्दीमें) :

"मौनका अर्थ न बोलना, न अिशारा करना, न देखना, न सुनना, न खाना, न पीना अर्थात् अेकांतमें रह अंतर्ध्यान होना। मौनके दिन अीश्वर-ध्यान होना चाहिये। मौनका हेतु अंतर्ध्यान होना है।"

"विकारको वशमें करनेके लिअे अंतर्मुख बननेकी जरूरत है। अुन्नतिका मूल मंत्र आत्मसमर्पण है। अुन्नतिका अर्थ है आत्मज्ञान।"

. . . जेलसे छूटे तो जागे। प्रश्न तो होंगे ही। अिन्हें जवाबमें लिखा :

"बाहरसे खाना मंगानेकी अिजाजत मिलने पर जो शरीरको अच्छा रखनेके लिअे बाहरसे मंगाता है, वह दोष नहीं करता। किन्तु जो अन्दर मिले अुसीमें आग्रहपूर्वक संतुष्ट रहता है, वह वन्दनीय है। जो अन्दर मिलनेवाली खुराकसे शरीरकी रक्षा कर ही नहीं सकता और जिसे बाहरसे मंगानेकी छूट है और बाहरसे आसानीसे मंगा सकता है, फिर भी जो बाहरसे न मंगाकर शरीरको बिगड़ने देता है वह हठी है। शायद पठित मूर्खोंमें भी गिना जाय।

"यह तो मुझे हरगिज नहीं लगता कि चोटी रखनेमें हानि है। यह दीर्घ कालसे चला आनेवाला रिवाज है। अिसे तोड़कर सुधारक अुपाधि मोल न

लें। प्रत्येक रिवाजके लिअे प्रवल कारण न मिले, किन्तु वह लोकप्रिय हो और अुसमें नैतिकताका भंग न होता हो, तो अुसका पालन करना चाहिये।"

"अुपवाससे तन्दुरुस्तीको कोअी नुकसान नहीं हुआ। वुढ़ापेमें भी अुपवास सहन किया जा सकता है। और जो आध्यात्मिक दृष्टिसे किया जाता है, अुसे सहनेमें मुश्किल नहीं होती। शरीर तो क्षीण होता ही है, क्योंकि शरीरमें चरवी कम होती है।"

लक्ष्मण शास्त्री वनारस जाते हुअे यहां आये। अुन्हें वापूने मालवीयजीके समझौतेकी भूल वताअी। वम्वअीके समझौतेमें अैसा नहीं लिखा था कि प्रायश्चित्त करनेवाले हरिजनको मंदिरप्रवेश कराया जायगा। हम तो कहते हैं कि आजकल कोअी चांडाल नहीं है, अिसलिअे किसीको प्रायश्चित्त करनेकी जरूरत ही नहीं। औरोंको तो खुद स्वच्छ वनना है। वे तो खुद ही स्वच्छ होकर मंदिरप्रवेश करेंगे। किन्तु मैंने मालवीयजीसे कहा कि आप अेक वात कर सकते हैं। दूसरे हिन्दुओंको जो शर्तें पालनी पड़ती हैं, वे शर्तें अस्पृश्योंके लिअे भी जरूर रखी जा सकती हैं। पर यह तो सार्वजनिक प्रतिवंध हुआ। यह कोअी प्रायश्चित्त नहीं। वैष्णव मंदिरमें जानेवाले हरअेक वैष्णवके लिअे जो पावन्दी हो, वैसी विशेष पावन्दी रखी जाय। वम्वअीके समझौतेमें तो मालवीयजी भी थे। अिसलिअे वे प्रायश्चित्तकी वात करें, तो वह प्रतिज्ञाभंग कहलायेगा।

सेवासदनकी १४ लड़कियां आअीं।

वापू: तुम मेरी सारी अंग्रेजी समझ लोगी, तव तो मैं तुम्हारी अुमरमें जितना होशियार था, अुससे तुम ज्यादा होशियार मानी जाओगी। विलायतमें तो मैं सवसे '' वेग योर पार्डन ', ' वेग योर पार्डन '' किया करता था।

स०: स्त्रियोंके लिअे खास काम क्यों होना चाहिये?

वापू: स्त्रियां पुरानी वातोंसे चिपटी रहनेवाली होती हैं, अिसलिअे अुनके साथ चतुराअीसे काम लेना चाहिये। स्त्रियां ही अिस कामको सवसे अच्छा कर सकती हैं। तुम्हें अुनके साथ सावधानीसे वात करनी चाहिये। अुनके वच्चोंको प्रेमपूर्वक खेलाना चाहिये। गालियां न वकनेके लिअे अुन्हें वहुत धीरजसे समझाना चाहिये। अुन्हें घरसे वाहर लाना चाहिये और अपने साथ खूब हिलाना-मिलाना चाहिये।

तुम्हारे कार्यकर्ताओंमें सव हिन्दूधर्मको माननेवाले होने चाहियें। हिन्दूधर्मका मर्म समझनेवाले ही अिस काममें पड़ें। अिस कामके लिअे शुद्ध धार्मिक वृत्तिके स्त्री-पुरुष मिलें तो काम अच्छा हो।

केवल शिक्षासे अस्पृश्यता नहीं मिटाअी जा सकती। मंदिरप्रवेश अेक बड़ा आध्यात्मिक काम है। मंदिर सबके लिअे खोल देनेसे तुम करोड़ोंकी अेकता जाहिर करते हो। संभव है कि हजारोंकी संख्यामें लोग मंदिरोंमें न जायें, किन्तु हिन्दू समाज सबके लिअे दिलसे मंदिर खोल दे और आज मंदिरोंमें जानेवाले सब अिसका स्वागत करें तो यह आदर्श स्थिति है।

अछूतोंके साथ अिकट्ठे बैठकर सामूहिक प्रार्थना करनेको मैं जबरदस्त सुधार मानता हूं।

स० : अिस आन्दोलनसे समाजमें फूट नहीं पड़ जायगी?

बापू : सत्यकी खातिर फूट पड़े तो, भले ही पड़ जाय।

हम अपनी नअी शिक्षा घरके लोगों पर लाद नहीं सकते। अिसलिअे केवल हमारे घरके लोगोंकी भावनाका आदर करनेके लिअे हरिजन मुहल्लेमें हो आनेके बाद नहाना पड़े तो नहा लें।

'टाअिम्स ऑफ अिंडिया' वाला मैक्रे आया।

स० : आपने तो गोपालनको कुछ चौंकानेवाले समाचार दे दिये!

बापू : चौंकानेवाले समाचार तो वह देता है। मेरे पाससे खबरें निकलवानेकी खूब कोशिश करता है। किन्तु सारी हकीकत मेरे सामने न होनेके कारण और सारा चित्र मेरे पास न होनेसे मैं कुछ कह नहीं सकता। अेक जिम्मेदार आदमीकी हैसियतसे मैं अैसी कोअी बात कैसे कह सकता हूं?

स० : अुपवासकी कोअी संभावना है?

बापू : मैं कुछ नहीं जानता।

स० : आप तो चाहते थे कि बिल जल्दी पास हो, किन्तु यह तो ढीलमें पड़ गया दीखता है।

बापू : मैं यह भी नहीं कहूंगा। क्योंकि मंजूरी देने न देनेके कारण मैं नहीं जानता। अिस पर कुछ भी बोलनेकी मुझे जल्दी न करनी चाहिये।

स० : साप्ताहिक 'हरिजन' कब निकालनी है?

बापू : यह साप्ताहिक मैं नहीं निकाल रहा हूं। मेरी सलाहसे अस्पृश्यतानिवारण संघ साप्ताहिक निकालनेका विचार कर रहा है। मैंने सुझाया है कि अंग्रेजी संस्करण पूनासे निकाला जाय, ताकि मैं अुस पर अच्छी तरह देखरेख रख सकूं। किन्तु अिन सुविधाओंका सवाल अेक तरफ रख दें। सरकारकी खास मंजूरी लिये बिना पत्रका संचालन करनेका मैं विचार भी नहीं कर सकता; और कैदीकी हैसियतसे मैं अपनी मर्यादायें समझता हूं, अिसलिअे मंजूरी मांगनेका भी विचार नहीं कर

सकता। अुसके खर्चकी जिम्मेदारी अस्पृश्यतानिवारण संघकी होगी। अुसकी नीति पर मेरा नियंत्रण रहेगा। यह पत्र कहांसे छपे, यह बहुत महत्त्वकी बात नहीं। अिसकी नीति कमसे कम विरोध मोल लेकर अस्पृश्यता मिटानेकी होगी। अिसके मुख्य लेख में लिखनेकी आशा रखता हूं। मेरे सिद्धान्तके अनुसार अिसे स्वावलंबी, तो होना ही चाहिये। जिस पत्रके लिअे लोगोंकी मांग न हो, अुस पत्रको चलानेके लिअे मैं संघसे नहीं कहूंगा। बहुत करके श्री शास्त्री अिसके सम्पादक होंगे।

गोपालन या मैंके दोनोंको पूरा विचार किये बिना सुब्बारायनके बिलके लिए वाअिसरॉयकी मंजूरीके बारेमें वक्तव्य देनेसे अिनकार कर दिया। गोपालनको जल्दी वक्तव्य चाहिये था, अिसलिअे अुसने अेक मुलाकातमें भी दखल दिया। अिस पर बापू बोले: अखबार मेरे लिअे हैं या मैं अखबारोंके लिअे हूं?

गोपालन: अखबार आपके लिअे हैं।

बापू: तब मुलाकात देनेके लिअे मुझे समय मिले, तब तक तुम्हें ठहरना चाहिये न?

शामको वल्लभभाअीके साथ चर्चा करते करते बापूने अपने मनमें वाअिसरॉयके प्रस्तावकी जांच-पड़ताल कर ली। यह कहा कि यह बिल पास हो जाय तो सब कुछ मिल गया। मैंने कहा कि यह बिल निषेधात्मक है, अिसलिअे अिस बिलके परिणामस्वरूप कोअी मंदिर नहीं खोलेगा।

बापू कहने लगे: तो भले ही बन्द रखें। अिस तरह सभी मंदिर बन्द हो जाते हों, तो मैं प्रसन्न होअूंगा।

मैंने कहा: तब दरवाजे पर मारपीट होगी।

बापू: हो सकती है, आंबेडकरके आदमी हों तो। किन्तु हमारा बल होगा वहां सनातनी समझ जायंगे, नहीं तो हम समझ जायंगे।

अैसे समय भी मैं किसीसे, अुदाहरणार्थ राजाजीसे, पूछे बिना निर्णय नहीं दे सकता न? अिस तरह वल्लभभाअीसे पूछा।

वल्लभभाअीने कहा: नहीं, यह दिये बिना भी कहीं काम चल सकता है? हमने चर्चा कर ली, अितना काफी है।

बापू: नहीं, यह तो मैं तात्त्विक सवाल पूछता हूं कि अैसे समय क्या किया जाय?

वल्लभभाअी कहने लगे: राय देनी चाहिये। राजाजी यहां हों तो जरूर पूछा जा सकता है। किन्तु राजाजी नहीं हैं, अिसलिअे राय दे देनी चाहिये।

आज रातको ३ बजे अुठ गये थे और वाअिसरॉयकी मंजूरीके वारेमें अपना वक्तव्य मन ही मन तैयार कर रहे थे।

२४-१-'३३ प्रार्थनाके बाद अपने आप ही लिखने लगे और सवेरे आठ बजे पूरा कर दिया, और अिस वारेमें सन्तोष हुआ। ११ वजे वापस यार्डमें जाते हुअे वल्लभभाअीसे कहने लगे: क्यों, वक्तव्य आपको पसन्द आया? हमारे लिअे यह नया नियम है, अिसलिअे सहज ही अिस तरह पूछनेका खयाल हो जाता है कि ठीक हुआ या नहीं। सुपरिण्टेण्डेण्ट अमराअीमें आये तव वापू सो रहे थे। अिस वीच सुपरिण्टेण्डेण्टने वक्तव्य पढ़ा। वापू जागे तो वे पूछने लगे: अव क्या अिरादा है? मुझे कहें तो सरकारको खवर दूं। वह मुझसे यह खवर आज जरूर मांगेगी। पर अव अुपवास न करें तो अच्छा। आपके विना कोअी काम नहीं चल सकता। और आप अुपवास करते रहेंगे, तो शत्रुके हाथ भी मजबूत होंगे।

वापू वोले: मुझे तुरन्त अुपवास करना पड़ेगा, अैसी कोअी अन्दरसे आवाज नहीं आ रही है। अिस तरह मैं अुपवास करूं, तो यह मेरी मनमानी होगी। वाअिसरॉयके निर्णयसे मैं घवराया जरूर हूं, किन्तु संभव है यह घवराहट तात्कालिक ही हो। अुपवास फिर आ सकता है, किन्तु अभी तो नहीं। अपने स्वाभाविक क्रममें अुसे आना हो तो आ जाय। अिसलिअे कव आयेगा, यह मैं नहीं कह सकता। ब्रिटिश मंत्रिमंडलके निर्णयके समय जैसे मैं लाचार हो गया था और मैंने अुपवासकी शरण ली थी, अुसी तरह लाचार हो जाअूं तो ही अुपवास करना पड़ेगा। आप सरकारसे कह सकते हैं कि नजदीकमें अुपवास करनेका मेरा अिरादा नहीं है। मेरा वक्तव्य तो आपने देखा ही है। अिस वक्तव्यके सिवाय मेरे दिलमें और कुछ नहीं है। आज सवेरे मैं तीन वजे अुठा। और मुझे क्या लिखना है, अिस वारेमें मेरा दिमाग विल्कुल साफ था। सुन्दर चित्रा (नक्षत्र) ठीक सिर पर चमक रही थी।

पुरुषोत्तम, अुनकी पत्नी, श्रीमती गाडगिल और लीलावती मुंशीकी लड़की सव साथ-साथ आये। आनेका कुछ भी कारण नहीं था। लम्वे समय तक व्यर्थ वैठे रहे। अुनकी स्त्रीने पूछा: मैं क्या करूं?

वापूने कहा: क्या हरिजन-कार्य करोगी?

अिस पर यह वहन वोली: मुझे तो जेलमें जाना है।

वापूने कहा: तो मैं तुम्हें रोकूंगा नहीं। वैसे तुम्हें जानना चाहिये कि मैं कोअी राय दे ही नहीं सकता। मैं वाहरकी हालतका फैसला कैसे कर सकता हूं? तुम्हें याद होगा कि सन् २२ में वारडोलीका प्रस्ताव पास हुआ और लालाजीका जेलसे पत्र आया कि ठीक नहीं हुआ, तव मैंने कहा था: यह

ठीक नहीं। लालाजी जैसे आदमीके बारेमें भी मैंने अैसा कहा था। अुन्हें भी जेलसे सलाह देनेका हक नहीं था।

श्रीमती पु०: किन्तु मुझे फिट आती है।

बापू: अच्छा! अिसमें क्या है? जानेका शौर्य होना चाहिये। हरबत-सिंहको जानती हो?—अुनकी अुम्र सत्तर वर्षकी थी। अुन्हें जेल जानेकी जरूरत नहीं थी। मैंने अुन्हें चेतावनी दी। किन्तु वे कहने लगे कि मरनेके लिअे ही आया हूं। और ६ हफ्तेमें वे मर गये। और कोअी यह भी न माने कि किसीके जेलमें जानेसे हरिजनोंका काम बिगड़ेगा। राजाजी भी चले जायें, तो क्या हरिजनोंका काम रुक जायगा? जरा भी नहीं। और रुकना हो तो भले रुक जाय। पर बात यह है कि सारा निश्चय तुम्हें करना है। अैसा है कि कोअी आदमी मौतके किनारे बैठा हो, तो भी यह मानता हो कि मेरे लिअे तो जेल ही शांतिप्रद होगी और वह अन्दर मरनेके लिअे ही चला जाय। और दूसरी तरफ कोअी मजबूत और तन्दुरुस्त आदमी हो तो भी जानेके लिअे जरा भी तैयार न हो और जेलका विचार ही अुसे खानेको दौड़ता हो, तो वह क्या करे? अिससे तुम यह न मान लेना कि तुम्हें जेलमें जाना ही चाहिये। जाओ, या न जाओ, मैं तो दोनोंका समर्थन करूंगा। मेरे कहनेका अर्थ अितना ही है कि मनुष्यको आखिरी चोटी पर जाकर बैठना हो तो वह जरूर बैठ सकता है; और जो थक गया हो और जिसे अपने अिस कामके बारेमें श्रद्धा या दिलचस्पी न रही हो और अिसलिअे अिसे छोड़कर हरिजनोंका काम ले ले, अुसके विरुद्ध मेरा मन जरा भी विचार नहीं करेगा।

मैक्रे आया। अुसने वक्तव्य देख लिया। फिर पूछा: तब अुपवास तो नहीं करेंगे न?

बापू: अभी तो नहीं।

मैक्रे: किन्तु आगे चलकर क्या आपको करना पड़ सकता है?

बापू: हां, मैं सरकारको परेशान नहीं करना चाहता, किन्तु सुधारकोंको जरूर करना चाहता हूं। अुन्हें काम करनेके लिअे जाग्रत करना चाहता हूं, ताकि समझौतेको अमलमें लानेमें जरा भी ढिलाअी न हो।

२५-१-'३३ . . . से अेक बार सत्यको छिपानेकी भूल हुअी थी। अुसे गुलाम जीलानीका अुदाहरण दिया। अुसने अपनी भूलकी माफी मांगी और बापूको लिखा कि मुझे टोकते और सुधारते रहिये।

वापूने जवाबमें सुन्दर पत्र लिखा :

“मैं जानता हूं कि. . . .नरम हैं। यह मेरी दृष्टिसे झूठी दया या दयाकी अतिशयता है और अिसलिअे हिंसा है। मैं मानता हूं कि मैं अैसी दया नहीं कर सकता। अिसीलिअे जहां सत्यकी खामी देखूंगा, वहां तुरन्त ही कहूंगा। तुम्हारा मन शुद्ध है, अिसलिअे आगे बढ़ोगे ही। सत्य और अहिंसा दोनों निर्भयताकी मांग करते हैं। वह न हो तो बड़ी-बड़ी असत्यका आ जाना संभव है। और असत्य हुआ कि हिंसा तो है ही। अिसलिअे भले ही जगत हंसे या मूर्ख कहे या जिंदा गाड़ दे या भूख-प्यासका कष्ट दे — हमें तो सत्यका ही पालन करना है। यह काम निर्भयताके विना नहीं हो सकता।”

सत्यकी ही अुपासनामें से जयसुखलालको होटलोंके बारेमें नीचे लिखे अनुसार सलाह दी। जयसुखलालने लिखा था कि ताम्बे हरिजनोंको आने देगा, पर यह बात जाहिर नहीं करेगा। अिसके जवाबमें कहा : ताम्बे होटलकी बात समझा। वह अपना अिरादा प्रगट न करे और हमें भी प्रगट न करने दे, तो हरिजन कैसे जानेंगे? अिस तरह गुप्तदान करनेसे हमारा काम नहीं बनता, लोगोंको शिक्षा नहीं मिलती और लोकमत तैयार नहीं होता। हम सेवकोंको पता नहीं चलता कि हम कहां हैं और लोग कहां हैं? अिसलिअे हमारी सच्ची भावना अेक गृह अपनी तरफसे चलानेकी सुविधा कर लेनेकी होनी चाहिये।

जेलमें आरम्भमें शुभ निश्चय होता है, काम करनेका जोश रहता है और बादमें वह ढीला हो जाता है। अिसके बारेमें . . . को लिखा :

“बादमें जो शिथिलता आ जाती है, अुसका कारण वातावरणके सिवाय दूसरा कुछ भी नहीं है। किन्तु जो आदमी अूपर अुठना चाहता है, अुसे हमेशा प्रतिकूल वातावरणके खिलाफ जूझना ही पड़ता है। और अिसलिअे तुलसीदासने सत्संगकी आवश्यकता पर बहुत जोर दिया है। पर यह सत्संग हर जगह नहीं मिल सकता। अिसलिअे सूक्ष्म या आंतरिक सत्संग ढूंढना चाहिये। यानी सद्‌विचार और सत्कर्मका संग खोजा जाय। यह जिसे मिल जाता है वह प्रतिकूल वातावरणके खिलाफ खूब लड़ सकता है और किये हुअे निश्चय पूरे कर सकता है।”

‘मनुष्योंको जालमें फंसानेवाला’ यह वचन बापू पर लागू करनेकी आजकल बार-बार जीमें आती है। अिस जालमें नया फंसनेवाला आदमी है डंकन ग्रीनलीस। लंबा, सुर्ख चमड़ीवाला और सादी पोशाकवाला यह जवान बापूके सामने दोनों हाथ जोड़कर खड़ा रहा। घड़ी भरमें बापूने अुससे जान-पहचान कर ली। वह मदनापल्ली राष्ट्रीय स्कूलमें था। बादमें अुसकी

व्यवस्था दूसरोंके हाथोंमें चली गअी, अिसलिअे वह स्कूल छोड़ दिया। फिर गोरखपुर और अलाहाबाद गया। अब हरिजनोंके काममें दिलचस्पी मालूम होती है, अिसलिअे यह काम करता है।

बापू: आजकल तुम्हारे निर्वाहका साधन क्या है?

जितने सीधे बापू सवाल पूछते जाते थे, अुतने ही सीधे जवाब वह देता जाता था।

ग्रीन०: ट्यूशन वगैरासे गुजर करूंगा और फालतू समय हरिजन-सेवामें दूंगा। पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टका लड़का मेरे पास पढ़ने आयेगा, तो मुझे अच्छे दाम मिल जायेंगे।

बापू: तुम्हारी शिक्षा कहां तक हुअी है? और कहां पढ़े थे?

ग्रीन०: ऑक्सफोर्डका ग्रेजुअेट हूं।

बापू: तुम्हारी जरूरत कितनी है?

ग्रीन०: आपके बराबर सादगी मुझमें नहीं है, किन्तु मैं काफी सादगीसे रह सकता हूं।

बापू: मगर तुम्हारा काम कितनेमें चल जायेगा?

ग्रीन०: ४० में चलाया है, किन्तु अिससे भी कम कर सकता हूं।

बापू: तो तुम ट्यूशन किस लिअे करते हो? सारा समय काममें दो तो तुम्हारे लिअे काम तलाश कर दूं। यह कहकर अुसे खबर दी कि समझ लो मैंने तुम्हें रख लिया है। तुम्हें पसन्द हो तो तुम रहना और हमें न जंचे तो तुम्हें छुट्टी दे देंगे। अपनी जिन्दगीकी बातें थोड़ी तफसीलमें लिखकर दे जाओ।

अुसने तीन-चार कागजके टुकड़ों पर अपने दक्षिण अफ्रीकाके ग्रेहामस्टाअुनमें जन्मसे लेकर आज तकका सारा हाल लिखकर दे दिया और मुझसे कहने लगा: यह लीजिये मेरा प्रेमपत्र।

मैंने कहा: मुझे आशा है कि अैसा ही होगा।

अिस डंकन ग्रीनलीसके साथ दूसरा संवाद:

बापू: अहिन्दू जो कुछ करें, वह शायद अिस अन्यायके मर्मस्थानको स्पर्श नहीं कर सकेगा। क्योंकि हरिजन हिन्दूधर्मको मानते हैं। मैं जानता हूं वे हिन्दूधर्मके साथ कितने ज्यादा बंधे हुअे हैं। अिसीलिअे तो गोलमेज परिषदके अपने भाषणमें मैंने अपना हृदय अुंडेल दिया था। भारतके देहातमें ज्यादातर हिन्दू लोगोंकी आबादी है। तमाम अछूत कहते हैं कि हम हिन्दू हैं। कुछको तो खुद पर होनेवाला यह अन्याय चुभता तक नहीं। वे अितनी ज्यादा लाचार हालतमें हैं कि अुन्हें धर्मका त्याग करनेका विचार

भी नहीं आता। किन्तु किसी दिन वे सब सवर्ण हिन्दुओंकी हत्या कर डालनेको तैयार हो जायं तो मुझे आश्चर्य न होगा।

ग्रीन० : अुनमें लघुत्वभावना होगी?

बापू : नहीं, अिससे भी बुरी अुनकी हालत है। लघुत्वभावनामें तो अपने साथ अन्याय होनेका भान होता है। पर अिन लोगोंमें यह भान भी नहीं। अिसीलिअे मैं कहता हूं कि किसी अहिन्दूको अिस आन्दोलनमें दिलचस्पी हो जाय, तो अुसे मानवताकी दृष्टिसे ही अिसमें दिलचस्पी लेनी चाहिये। किसी अहिन्दूको मदद करनी हो तो हिन्दू संस्थाके साथ मिलकर ही करनी चाहिये।

ग्रीन० : मैं दक्षिण भारतके मंदिरोंमें गया हूं।

बापू : मुझे तो हिन्दूधर्मकी होती आअी हंसीको मिटाना है। मुझे शुद्ध कांचन चाहिये। अिस प्रवृत्तिके राजनैतिक परिणाम भी आयेंगे। पर मैं राजनैतिक परिणामोंका विचार ही नहीं करता। राजनैतिक परिणाम न आयें, तो भी मैं अिस कामको करूंगा। राजनैतिक परिणामोंकी मुझे परवाह नहीं। मैं तो आध्यात्मिक परिणाम लाना चाहता हूं। और अुनके लिअे मेरे सहित हजारों आदमियोंकी कुर्बानी देना चाहता हूं। यह जन-समाजके अेक बड़े भागके साथ हो रहा बड़ा भारी अन्याय है। अिसे मिटानेके लिअे प्रायश्चित्तकी बुद्धिसे काम करना चाहिये। अिस खयालसे काम करना चाहिये कि मैंने अन्याय किया है और मुझीको अिसे मिटाना चाहिये। कोअी चंगेजखां आकर झक्की सवर्ण हिन्दुओंके गले काटनेकी धमकी दे और यह सुधार हो जाय, अैसा मुझे नहीं चाहिये।

मीराबहनको लिखे पत्रमें से :

२६-१-'३३

"अच्छीसे अच्छी दुनियामें भी अकस्मात हो सकता है। अीश्वरके शब्दकोषमें अकस्मात जैसी कोअी चीज ही नहीं। पर यह दुनिया तो अकस्मातोंसे ही भरी है। अकस्मातका अर्थ है अैसी घटनाअें, जिन पर हमारा काबू नहीं और जिनके हो जानेके बाद भी हम अुनके कारण ढूंढ़ नहीं सकते।"

मीराबहनने अुसे भेजी हुअी मेडलीन रोलांको लिखे पत्रकी नकलमें से अेक वाक्य अुद्धृत करके पूछा था कि शायद दो शब्द अुलट पुलट हो गये हैं। अुसने सुझाया कि 'अुपवासके बिना प्रार्थना नहीं हो सकती' अिस तरह वाक्य होनेके बजाय 'प्रार्थनाके बिना अुपवास नहीं हो सकता' यों शब्द होने चाहियें। अिसके जवाबमें लिखा :

बापू : मैं जानता हूं कि व्यावहारिक मनुष्यके नाते मुझे धीरज रखना चाहिये। अधीर होनेका कोअी कारण नहीं। आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं अैसी भावना नहीं रखता। २ जनवरीसे पहले मुझे अिस नतीजे पर पहुंचनेमें देर नहीं लगी थी कि मुझे अुपवास नहीं करना चाहिये। और मैं आपको बता दूं कि २ जनवरीको मैंने अुपवास शुरू नहीं किया, अिससे कुछ साथियोंको असन्तोष भी हुआ है। थोड़े ही दिन पहले अेक भाअी मुझसे बहस कर रहे थे कि अुपवासका निर्णय करनेके बाद अुसे मुलतवी करनेके कारण पैदा नहीं हुअे थे।

राजाजी : अिन सब साथियोंको आपने बिगाड़ डाला है! (सब खिल-खिलाकर हंस पड़े।)

बापू : यह तो ठीक है, किन्तु अिनमें अैसे भी लोग हैं, जिन्हें मैं जरा भी नहीं जानता। अुन्होंने भी अुपवासको मुलतवी रखनेकी निन्दा की है। अेक आदमीने तो मेरे विरोधमें ग्यारह अुपवास किये। मैंने अुसे जब कड़ा तार दिया कि तुम्हारा अुपवास पापरूप है, तब कहीं अुसने अुसे तोड़ा। अिसलिअे अिस मामलेमें आप मान लीजिये कि मैं अिस समय सचमुच अपनी आत्माके विरुद्ध चल रहा हूं। फिर भी मैं आपसे नहीं कह सकता कि अुपवास नहीं आयेगा। मेरे यह कहनेसे अिंग्लैंडके मित्र तो नहीं चिढ़ते। अुनके दिलमें जब शंका होती है, तब वे यह माननेका प्रयत्न करते हैं कि अिसमें अीश्वरका हाथ होगा। अेण्ड्रूजने अपनी शंकाअें पेश करनेवाले बहुतसे पत्र मुझे लिखे थे। बादमें अुन्होंने तार देकर ये सब पत्र वापस ले लिये और मुझे विश्वास दिलाया कि वे अब सारी बात अच्छी तरह समझ गये हैं।

राजाजीने लोगोंके वहमोंकी बात कही : कुछ लोग सचमुच मानते हैं कि आज तक गांधी बरसात लाया, किन्तु अब वह अैसा काम कर रहा है जिससे बरसात नहीं आयेगी।

बापू : आप तो अज्ञानी लोगोंकी बात कह रहे हैं, पर अपने नामके आगे बी० अे० और बी० अेल० की अुपाधि लगानेवाले लोगोंकी तरफसे ढेरों पत्र आते हैं, जिनमें वहमके सिवाय क्रोध, कड़वापन, जहर और गालियां भी होती हैं।

राजाजी : यह तो कानूनके ज्ञानका अेक प्रकारका प्रतिलोम हुआ! (सब खिलखिलाकर हंस पड़े।)

बापू : अभी तो मेरी भावना यह है कि अुपवासकी संभावना बहुत दूर नहीं।

अुपवास कब होगा, यह कैसे कहा जा सकता है? बम्बअीमें सन् '२० में अुपवास किया था, तब मथुरादास पासमें सो रहा था। अुसे अेकाअेक जगाकर

कह दिया : मुझसे बहस न करना, मेरा निश्चय है। अैसे ही अिक्कीस दिनके अुपवासके समय — हकीमजी, मुहम्मदअली सब हक्के-बक्के रह गये थे। किन्तु क्या अिससे कोअी यह कहेगा कि वे अुपवास गलत थे? मुझे तो लगता है कि अुन अुपवासोंने अुस समय तो काम किया ही था, किन्तु ५००० वर्ष बाद भी वे अपना काम करते रहेंगे।

मथुरादासने अुस वक्तव्यकी पुरानी बात छेड़ी : मेरा दिल कहता हो कि सविनयभंग ही करना चाहिये, तो भी यदि मैं थक गया होअूं तो मुझे क्या करना चाहिये? क्या मेरे लिअे यह बेहतर नहीं कि हरिजनोंका काम करनेका ढोंग करनेके बजाय मैं घर ही बैठा रहूं?

बापू : कहना कठिन है। किन्तु अैसा आदमी हरिजनोंका काम क्यों न करे? अेक शर्त जरूर है कि अुसे यह घोषणा करनी चाहिये कि वह थक गया है, अिसलिअे अब जेल जानेका काम करनेके बजाय हरिजनोंका काम करना चाहता है। यह बात छिपाकर हरिजनोंका काम नहीं हो सकता। अिस तरह छिपाकर हरिजनोंका काम करनेके बजाय तो भले ही वह घरमें बैठ जाय। दीनतासे स्वीकार करनेमें ही बहादुरी है। आराम लेनेकी अिच्छावाले भी जाहिर कर दें कि हमें शरीर सुधारना है और तब तक हम हरिजनोंका काम करेंगे। मुख्य बात यह है कि ठगना नहीं चाहिये। ठगनेसे न तो कांग्रेसके कामको या सविनयभंगके कामको फायदा होगा और न अस्पृश्यताके कामको ही फायदा होगा।

अिसके बाद जयकर आये। अुन्हें लगता था कि रंगा आयरने अपना बिल बदल कर सुब्बारायनका बिल पेश कर दिया। अिसलिअे अुसके विषयमें कहने लगे कि यह अुसने भूल की है। बादमें जब राजाजीने कहा कि दोनों बिल पेश होंगे, तब खुश हो गये। बिल पेश होनेके बाद अुस पर होनेवाले सभी संस्कारोंके बारेमें बापूने अुनसे बातें कीं और हकीकत जान ली। आम तौर पर अेकाध वर्ष तो बीत ही सकता है। मगर अुन्होंने यह भी कहा कि सरकार मदद करना चाहे, तो बड़ी तेजीसे काम हो सकता है और मौजूदा बैठकमें भी पास हो सकता है। बादमें बापूने अुनसे पूछा : आप तो अपना हिस्सा देंगे ही न? अिस पर अुन्होंने हां कहा। वैसे अुन्होंने अपना अनुभव बताया कि जिस चीजसे देशमें जाग्रति होना संभव हो, अैसी चीजको ये लोग अुत्तेजन देते ही नहीं। यह सुनाया कि मुडीमॅनने कहा है कि आपके चाहनेसे ही हम तुरन्त अिस देशसे नहीं चले जायंगे। यह भी कहा कि नअी दिल्लीका वातावरण अत्यन्त कलुषित है।

सवेरे मैंने कहा: राजाजीने निश्चय किया दीखता है कि हरिजन-कार्य अुनके सिवाय और कोअी नहीं चला सकता और अुन्हें अिसे हाथमें लेना ही चाहिये।

१-२-'३३

बापू: यह ठीक है। अिसमें शुद्ध सत्यका पालन है। सत्याग्रहका धर्म बहुत कठिन है। अभी हमने यह धर्म सीखा नहीं। सीखा होता तो जीतकर बैठ गये होते। अभी तो हममें दुःख सहन करनेकी भी शक्ति नहीं आअी, त्यागमें सुख माननेकी भी शक्ति नहीं आअी।

बिड़ला आज बारह बजेसे पहले आ गये। पुरुषोत्तमदासको कैसे विलायत जाना पड़ा, अिसकी बात करते हुअे वाअिसरॉयने अुन्हें जो धमकियां दी थीं, अुनका वर्णन किया। बिड़ला जो मदद देता है, अुसे हम (सरकार) जानते हैं, अिसकी बात भी कही। बिड़लाने अुन्हें जवाब दिया: ये लोग तो कल कहेंगे कि प्रार्थना करना बन्द कर दो तो यह कैसे होगा? अिन्हें जो करना हो करने दो।

वाअिसरॉय द्वारा किया हुआ बापूका वर्णन: बन्दरकी तरह नटखट यह बदमाश मुझे झूठा सिद्ध करनेमें हमेशा सफल हो जाता है। अिसके बाद होरके साथकी बातें: तुम्हें गांधीसे अिजाजत लेकर आना चाहिये था, वगैरा। दूसरी बातें करने पर बापूने कहा: वे सुधार कहां आ रहे हैं? ये लोग दें तो भी जानते हैं कि अैसे ढंगसे देने चाहिये कि अपना काम तो सदाकी तरह लिया ही जाता रहे।

अेक बात बापूने बीचमें वैसे ही कह दी। बापूकी पुरानी राय यह है: ये लोग बिलकुल नीरो नहीं बन सकते।

बिड़ला: अफगानोंका राज्य होता तो?

बापू: वे दूसरी तरह काम लेते, गले काटते। किन्तु अुसका भी जवाब देना हमें सूझ ही जाता।

बिड़ला: यह मौजूदा ढंग तो काम नहीं देता। और गले कटानेवाले आपको कितने मिल सकते थे?

बापू: मुझे विश्वास है कि गले कटानेवाले भी मिल जाते। अिस बार भी मुझे लगता था कि जलियांवाला बाग जैसे कअी हत्याकांड होंगे। किन्तु नहीं हुअे। होर समझ गया दीखता है कि आतंक फैलानेसे हरगिज काम नहीं बन सकता।

बिड़ला: अिस तरह कितना समय लगेगा?

बापू: मैंने जो पांच वर्ष कहे हैं, सो मजाकमें नहीं कहे हैं।

आज सुवह अुठकर वापूने वाअिसरॉयको पत्र लिखा था। पत्र लिखनेके बाद सुवह घूमते-घूमते कहा: यह पत्र लिखनेमें वहुत मेहनत करनी पड़ी। किन्तु मुझे लगता है कि अव वह ठीक भूमितिके सिद्धांतकी तरह वन गया है और मुझे पूरा संतोष है।

वादमें यह पत्र राजाजीको भेजनेके लिअे कहा। राजाजीने सिर्फ अेक ही शब्द वदलनेका सुझाव दिया। आती वैठकके वजाय मौजूदा वैठक लिखना चाहिये।

दोपहरके वाद वे आये और विड़लाके साथ फिर वातें चलीं। राजाजीने अपने गांवके पासके अेक गांवमें औसाअियों द्वारा किये जानेवाले प्रचार और सीनाजोरीका अेक किस्सा कहा।

विटनी नामके अेक मिशनरीने पत्र लिखा था सो वताया। यह गांव सारा औसाअी वन गया है। वहां आप आकर मंदिर किस लिअे वनाते हैं? वेप्टिज्म अेक गंभीर संस्कार है, और औसाके साथके धर्म-संवन्धमें आप कैसे दखल दे सकते हैं? अिन लोगोंको हिन्दू किस लिअे गिनते हैं? हिन्दू धर्मकी आजकलकी पार्थिव पूजा और पिशाच पूजाके साथ वैदिक हिन्दूधर्मका क्या संवन्ध है? फिर भी आपको वहां रात्रि पाठशाला खोलनी हो तो चलाअिये, अुसमें आपत्ति नहीं। और अस्पृश्यताका काम कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय संस्था करती है, अिस पर भी पत्रमें आक्षेप किया था। वापूने सुझाया कि अिसे आपको (राजाजी) कड़ा जवाब देना चाहिये।

आपको अव अिसे साफ-साफ सुना देना चाहिये। वरसोंसे आप जो काम कर रहे हैं, अुसकी अिसे कल्पना देनी चाहिये। और कहिये कि दखल देनेवाला तो तू है, मैं नहीं।

राजाजीको आम्वेडकरसे मिलनेके लिअे और अुन लोगोंको यह समझानेके लिअे कहा कि अिस काममें मदद देना जितना सवर्ण हिन्दुओंका धर्म है अुतना ही धर्म आपका है। यदि हिन्दूधर्म संकटमें हो, तो आप भी हमारे ही जितने हिन्दू हैं। और अिसे वचाना आपका भी अुतना ही धर्म है। और अिस तरह अिस लड़ाअीमें भाग लेते हुअे आपको सवर्ण हिन्दुओंके साथ धीरजसे काम लेना चाहिये और अुन्हें गालियां नहीं देते रहना चाहिये।

मतगणनाका विचार छोड़ दिया गया। कहीं मतगणनाकी हमारी मांग दूसरे सव काम रोक देनेके वहानेके तौर पर सामने न रख दी जाय।

. . . .अपनी लड़कीके साथ आअीं। वापूने अुन्हें दो ही वाक्योंमें जो कहना था सव कह दिया: दो घोड़ों पर न चढ़ो। या तो तुम यह कहो कि मैं थक गयी हूं और अब वापस नहीं जा सकती। अव यही काम कर सकती

हूं। अितना करोगी तो मैं तुम्हें दोष नहीं दूंगा, कोअी भी दोष न देगा। यदि तुम दुनियाको धोखा दोगी तो दोष जरूर दूंगा। कहूंगा कि तुम सत्याग्रही नहीं।

२-२-'३३ आज सवेरे बंगालके सवाल पर वल्लभभाअीके साथ बातें हुअीं। वल्लभभाअी बंगालकी स्थिति समझानेका प्रयत्न कर रहे थे। अिन लोगोंको मुसलमानोंसे लड़ना है और अंग्रेजोंसे लड़ना है। और अिस पर भी अिन लोगोंकी तीस बैठकें हों तो क्या हो सकता है?

बापू: ये अलग हैं ही कहां? पंजाबमें भी यही स्थिति है। राजा-मुंजे समझौतेके अनुसार हुआ होता तो क्या होता?

मैंने कहा: अिन हरिजनोंको समझानेवाला कोअी कांग्रेसी बाहर नहीं। सब जेलमें हैं। और यह तो पद और सत्ता चाहनेवाले आदमियोंका झगड़ा है।

बापू कहने लगे: सही बात है। यह तो कथित अुच्च वर्णके हिन्दुओं द्वारा अुन पर अपना काबू रखनेकी बात है।

छगनलालने पूछा: ये लोग हममें से अपने प्रतिनिधि भेज सकते हैं क्या?

मैंने कहा: हरगिज नहीं भेज सकते।

बापूने सारी बातके बारेमें अपनी अन्तिम टीका सुना दी: हम और ये लोग, यह भेद भुलाया ही नहीं जाता। यही चीज मुझे खटकती है।

बेलणकर और अुसका दूसरा मित्र आया। फिर वही बात शुरू की: सात पीढ़ीसे अेक ही काम करनेवाले अुसी जातिके कहलाते हैं। चांडालकी संतान चांडाल है।

बापू: आज जिस पंडितका कुटुम्ब ब्राह्मण है, वह सात पीढ़ी तक चमारका धंधा करे तो क्या वह चांडाल हो जायगा?

बेलण०: हां, जरूर हो जायगा।

बापू: ब्राह्मणकी संतान ब्राह्मण है, यह सर्वमान्य वस्तु है। आजके चांडाल पहलेके चांडाल हैं, अिसका सरकारी दफ्तरमें कहीं प्रमाण नहीं है। सरकारके दफ्तरमें तो कोअी ढंग ही नहीं। बम्बअीकी जनगणनामें अेक तरहके अस्पृश्य अस्पृश्य हैं। बंगालमें दूसरी ही तरहके अस्पृश्य अस्पृश्य हैं।

बेलण०: किन्तु अमुक आदमी चांडाल है, यह साबित करनेके लिअे आप हमसे क्या प्रमाण चाहते हैं?

बापू: हां, ब्राह्मण जैसे अपना गोत्र बताते हैं, वैसे ही यह बता दो कि चांडाल पीढ़ी दर पीढ़ीसे चांडाल चले आ रहे हैं।

वेलण० : व्यवहार अिन्हें चांडाल कहता है, क्या अितना काफी नहीं है? आप तो जिन लोगोंने दो हजार वर्ष पहले संकर किया था, अुसका प्रमाण मांगते हैं?

बापू : हां, बात यह है कि अुस समय अैसे कठिन विधान थे कि चांडाल जी ही न सकें।

वेलण० : अैसा विधान कहां है? चांडालोंके लिअे तो शास्त्रमें अेक खास तरहका रहन-सहन लिखा है। चांडाल तो अस्पृश्योंमें अूंचे दर्जेके हैं। अिनसे नीची तो पन्द्रह और जातियां हैं।

बापू : तुम जानते हो कि अितिहास कहता है कि कुछ जातियां नष्ट हो गयी हैं?

वेलण० : नहीं।

बापू : तुम्हें अितिहासका अध्ययन करना चाहिये।

वेलण० : अिस जातिकी हस्ती अप्रतिहत रूपमें चली आ रही है। अुसके नष्ट होनेका कोअी प्रमाण नहीं है।

बापू : यह सिद्ध कर दो कि अप्रतिहत चली आ रही है।

वेलण० : चोखामेला जैसोंने अपनेको चांडाल बताया है।

अिन लोगोंका मथितार्थ यह था कि आप बड़े आदमी ठहरे। बड़े आदमियोंका दूसरे लोग अनुसरण करते हैं और आप बुद्धिभेद पैदा करते हैं, यह दुःखकी बात है।

बापू : मैं तो बन सके तो मौन भी ले सकता हूं। परन्तु मैं अपने विचार और हृदयकी आज्ञाके अनुसार चलनेवाला ठहरा, अिसलिअे क्या किया जाय?

अिसके बाद गोहिल और दूसरे तीन विद्यार्थी आये।

गोहिल : जन्मसे जो मिलता है, वह वंशपरम्परामें आ जाता है, किन्तु स्वयं प्राप्त किया हुआ नहीं आता। स्वप्राप्त गुण वंशमें नहीं आते। तो हमें मानना चाहिये कि शुद्ध ढंगसे विवाह करें, तो तीन हजार वर्ष पहले जो शुद्ध गुण जातिमें थे, वे फिर अुत्पन्न हो सकते हैं। अिससे सुप्रजनन-शास्त्र पैदा हुआ। मैं मानता हूं कि आप वर्णाश्रमधर्मका पुनरुत्थान करना चाहते हैं। आप कहते हैं कि संकर तो चालू ही है, किन्तु अिस पर मेरी कितनी ही आपत्तियां हैं: (१) मिश्रण बहुत कम है। मैं अपने अठारह गावोंमें घूमा हूं और अपने अनुभव परसे कहता हूं कि गांवोंमें अैसा बहुत कम होता है। सदाशिवपेठमें ब्राह्मण ही रहते हैं, अिसलिअे यहांके ज्यादातर लोग दूसरोंके संपर्कमें ही

नहीं आते। (२) नौकर बहुत कम प्रमाणमें हैं। (३) अूंच-नीचका भाव स्त्रियोंको व्यभिचार करनेसे रोकता है। (४) व्यभिचार होनेसे संतान खराब हो ही जाती है, सो बात नहीं है। क्योंकि देखना यह है कि गर्भ किससे रहता है। (५) लड़कियोंकी जल्दी शादी करनेसे व्यभिचार रुका है। (६) दूसरोंकी तुलनामें बुद्धिमत्ता ब्राह्मणोंमें ही दिखाअी देती है। बुद्धिशाली वर्ग ब्राह्मणोंमें से ही निकला है। (७) कुदरती गुणोंसे भिन्न कर्म करें तो प्रजा घटती जाती है। कोकणस्थ ब्राह्मणोंकी आबादी घटती जा रही है। (बापू: यह जानते हैं कि चितामणराव कोकणस्थोंको मिस्रके मानते हैं? गोहिल: संभव है।) (८) ब्राह्मण पुरुष व्यभिचार करें तो अनुलोम विवाहके सुपरिणाम होते हैं! किन्तु स्त्रियां स्वभावसे पतिव्रता होती हैं।

अिन सब बातोंसे यह माननेका कारण है कि अभी तक खूनकी मिलावट बहुत नहीं हुअी है।

बापू: ब्राह्मणोंकी तारीफमें तो मैंने जितना लिखा है और कहा है, अुतना और किसीने नहीं कहा होगा। मैंने तो आपसे यह कहा कि जो शास्त्रीय पद्धतिसे काम करना चाहता हो, अुसे सब बातोंका हिसाब लगाना चाहिये। स्वीकार और अस्वीकार पद्धतिसे काम लेते जाना चाहिये। मैं तो शास्त्रीय पद्धतिका पुजारी हूं और देखता हूं कि कानून बनाने बैठूं, तो मुझे विक्षेपकारी तत्त्वोंको ध्यानमें रखना ही चाहिये। विज्ञानशास्त्री तो यही माननेवाले हैं कि अमुक रुख है।

गोहिल: हमारे पिण्ड शुद्ध हैं, किन्तु सांस्कृतिक दोष आ गये हैं। हमारी नसोंमें शुद्ध रक्त बह रहा है। अिसलिअे हमारा भविष्य तो बहुत अुज्ज्वल है। थोड़ेसे लोगोंका ही खून बिगड़ा है। किन्तु अिन लोगोंकी खातिर हम व्यवस्था बदल डालें, तो समाजकी हानि ही होगी। कुछ अपवादोंमें वर्णान्तर विवाह सफल हो सकते हैं। किन्तु हरअेकको यह सलाह नहीं दी जा सकती। अिसलिअे वर्णान्तर विवाह ठीक नहीं। मैं तो मिश्र-भोजनके भी विरुद्ध हूं। भोजनके निषेधमें कोअी तिरस्कार नहीं है। अिसमें तो यह बात है कि अेक-दूसरेका स्पर्श न हो और शुद्धि रहे। ३००० वर्ष पहले जो बीज-पिंड था, वही बीज-पिंड आज है।

बापू: मैंने यह कहा ही नहीं कि मिश्र-विवाह जैसे तैसे बढ़ाते ही चले जायं।

गोहिल: समाजको भूल भरे हुअे विवाह रोकनेकी सत्ता भी होनी चाहिये। आपके अन्तरकी अिच्छा तो अच्छी है। किन्तु आप जो कहते हैं, अुसका दुरुपयोग होता है।

बापू: आप लिख लीजिये कि आजकी व्यवस्था जारी रही, तो वर्णोंका नाश हो जायगा। और वर्णकी शुद्धिके लिअे अकेले वर्ण नहीं चल सकते, बल्कि अुन्हें आश्रमके साथ जोड़ना पड़ेगा। वर्ण-धर्म स्वतंत्र वस्तु नहीं है। किन्तु वर्णाश्रमधर्म सच्ची वस्तु है। मेरा विश्वास है कि जो सत्यनिष्ठ मनुष्य है, अुसके मुंहसे कभी भूलमें भी कोअी वचन निकल गया हो, तो अुसके बुरे असरसे भगवान अुसे बचा लेगा।

हिन्दूधर्ममें प्रतिबन्धोंका कड़ा अर्थ किसी भी समय नहीं हुआ। अुसमें विकास और अपवादोंकी गुंजाअिश हमेशा रखी गअी है।

अिन लड़कोंके साथ लम्बे समय तक बातें हुअीं और खुश करके अिन लोगोंको विदा किया। लड़कोंने वचन मांगा कि हम लिखकर जो भेजेंगे अुसे आप देख लें, ताकि हम छपवा सकें।

कल नारणदासभाअीके नाम पत्र लिखा था: "... के कुटुम्बोंके बारेमें तुम्हारा निर्णय ठीक लगता है। अुस पर अमल करना ही अुचित मालूम होता है। अुस पर दृढ़तासे अमल करना। अैसा न करनेसे आश्रम टूट जायगा। अमल करनेमें ही अुनका श्रेय है।

"... के साथ भी दृढ़तापूर्वक बात करना। अुसके मामलेमें भी सबके साथ सलाह-मशविरा करना। अुसे भी बुलवा लेना। हमें तो वह न्याय करना है, जो अैसा समय आने पर तुम मेरे प्रति और मैं तुम्हारे प्रति कर सकूं। अहिंसा असिधारा है। सबको समझना चाहिये कि आश्रम हमारे सुभीतेके खातिर नहीं, बल्कि सेवाके खातिर तैयार होनेके लिअे है, शुद्धि-यज्ञमें जल मरनेके लिअे है। वहां स्वार्थको स्थान नहीं।"

लाला मोहनलालके गुजर जानेका तार आया। सारे दिन वे सज्जन और अुनकी परोपकारी मूर्ति आंखोंके सामने घूमती रही। यहां आनेवाले थे। आज आयंगे, कल आयंगे — अिसकी राह देख रहे थे कि अितनेमें अुनकी अकाल मृत्यु हो गअी। सारे दिन सबने अुनकी सज्जनताकी ही बातें कीं। लोग हमारी भलमनसाहतकी ही बातें करें, अिस ढंगसे मरना कोअी मामूली मौत है? नहीं तो दूसरी क्या पूंजी हम बांधकर ले जायंगे?

आज रामचन्द्र शास्त्रीसे जान-पहचान की। अिनकी अूंची शिक्षा, अेक साल भारत सेवक समितिमें रहनेके बाद संस्कारी स्त्रीके साथ विवाह, फिर ११ वर्षका (अपनी स्त्रीसे अेक दिन भी अलग हुअे बिना) सुखी जीवन — नौकर-चाकर, मोटर, बंगला और चार बच्चों सहित सुखी जीवन — अेक साल लड़ाअीके दरमियान सैलोनिका और अेक साल मैसोपोटामिया — (भारत सेवक समितिमें शरीक होनेसे पहले) फिर जमशेदपुर और कलकत्ता। अेक सेवा निवृत्त आअी०

सी० अेस०के साथ व्यापार, बादमें अुपवाससे जाग्रत होकर अिस सारे जीवनको तिलांजलि देनेका निश्चय। मेरी स्त्री कहती है कि तुम कहो तब तक तुमसे अलग रह सकती हूं। मुझे नौकर-चाकर, गाड़ी-घोड़ा कुछ नहीं चाहिये। बहुत भोग भोग लिये, अब औरोंके लिअे अुपयोगी हो जायं तो बहुत है। 'संपूर्ण भोगके बिना त्याग संभव नहीं' अिस अेक वाक्यमें अुन्होंने सारा वृत्तांत पूरा किया। अिस नित्यतृप्त, निराश्रय, मस्त आदमीकी मुझ पर छाप पड़ी और लगा कि बापूने जालमें नअी मछली पकड़ ली। यद्यपि यह कहना जल्दी होगा। शास्त्रीका व्यक्तित्व दूसरेमें विलीन हो जानेवाला प्रतीत नहीं होता।

३-२-'३३

आज महत्त्वके कअी पत्र बापूने सवेरे लिख डाले। आश्रमके सभी पत्र अुल्लेखनीय थे। मगनभाअी देसाअी और मोहनलाल भट्टको लिखा। मोहनलाल भट्टके नामका पत्र अैसा लगा, मानो कल जो पठित मूर्ख लड़के सुप्रजनन-शास्त्रकी बातें कर गये, अुनके जवाबमें लिखा गया हो। ये लड़के बेचारे थोड़ासा पढ़कर हल्दीकी गांठसे पंसारी बने हुअे सुप्रजनन-शास्त्री थे; और संसारको भूमितिकी आकृतियोंमें मर्यादित करना चाहते थे। सारी वस्तु ही अितनी अगम्य है कि संयम रखनेके राजमार्गके सिवाय छोटे मोटे रास्तेमें पड़ना विडंबना मालूम होती है। "संसार भूमितिकी नपी-तुली आकृति नहीं है, परन्तु किसी विचित्र कलाकारकी कूंचीसे अुत्पन्न हुअी महाकला है, जिसका माप भी कलाकार ही जानता है। हम अुसका माप नहीं निकाल सकते। अिसलिअे हमारे भाग्यमें सिर्फ निष्काम प्रयत्न ही रह जाता है।" अगर यह सच हो, तो "बीस सालकी लड़कीकी ही शादी हो सकती है" और "अैसी माताओंको तैयार करनेका प्रयत्न कर रहे हैं", अैसा कहना भी क्या संसारको भूमितिकी आकृतियोंमें जमाने जैसा प्रयत्न नहीं है?

मगनभाअी देसाअीके नामका पत्र अमूल्य है। अुसके ये वाक्य आदर्श वाक्यके रूपमें अुद्धृत किये जायंगे: "हम बड़ोंके बलका अनुकरण करें, अुनकी कमजोरीका कभी नहीं। बड़ोंकी लाल आंखोंमें अमृत देखें, अुनके लाड़से दूर भागें। मोहमयी दयाके वश होकर वे बहुत कुछ करनेकी अिजाजत दें, बहुत कुछ करनेको कहें, तब लोहे जैसे सख्त बनकर अुससे अिनकार करें। मैं अेक बार यदि कहूं कि हरगिज झूठ न बोलना, मगर मुश्किलमें पड़कर झूठके सामने आंखें बन्द कर लूं, तब मेरी आंखोंकी पलकोंको पकड़ कर जोरसे खोल देनेमें तुम्हारी भक्ति होगी, मेरे अिस दोषको दरगुजर करनेमें द्रोह होगा।"

नारणदासभाअीके नामके पत्रमें प्रतिज्ञा और प्रतिज्ञाभंगके शास्त्र पर बड़े विचारमें डालनेवाले अुद्‌गार हैं: "जहां व्रतभंगका कारण व्रत लेनेवालेकी शक्तिके बाहर हो, वहां अूपरका नियम लागू नहीं होता।" लेकिन व्रत लेने-वालेकी शक्तिके मापका अन्दाज कौन लगाये?

सूक्ष्म नियम और स्थूल नियमके पालनमें बापूने जो भेद किया है, वह वास्तविक है। लेकिन सत्यकी दृष्टिसे अिनमें भेद नहीं है। सूक्ष्म नियमका पालन करता है या नहीं करता, यह तो व्रती ही कह सकता है। और न पालने पर भी पालता है, अैसा माने या मनाये तो वह असत्य है। जैसे कि सूक्ष्म नियमका दृश्य भंग असत्य है।

आज हीरालाल शाह और लीलावती मुंशी आये। हीरालालका अपार परिश्रम आश्चर्य पैदा करता है। कभी अखबारोंमें लिखना, अनेक कतरनें रखना, फाअिलें बनाना, कभी आदमियोंको पत्र लिखना, नकलें रखना, अपना धन्धा संभालना और अनेक पुस्तकें पढ़ना — अैसे निर्मल व्यासंगी व्यापारी बहुत थोड़े होंगे। किन्तु अुनमें तारतम्य बुद्धिकी कमी मालूम होती है। वे जो पुस्तकों वगैराके ढेर रख जाते हैं, अुनको पढ़नेकी बापूसे आशा रखते हैं। और अपनी हरअेक सूचनाके बारेमें अुन्हें अैसी ममता होती है कि अुससे सारे प्रश्नका निराकरण हो ही जायगा।

अुन्होंने भंगियोंके लिअे कामके समय पहननेकी साफ पोशाककी योजनाके बारेमें अपने किये हुअे पत्रव्यवहारकी बापूके सामने बात कही। बापूके मनमें अिस सूचनाके बारेमें कोअी अुत्साह पैदा नहीं होता, क्योंकि अिससे आन्दोलनके अुलटे रास्ते चले जानेकी आशंका है। बापू जब तक अिस चीजको सामने न लायें, तब तक हीरालालको सफलता नहीं मिल सकती।

लीलावती तो बापूके साथ बातें करके आश्वासन प्राप्त करने ही आअी थी। अछूतोंके लिअे मंदिर खुलवाना तो ठीक है, लेकिन मंदिरोंको न मानने-वालोंका क्या हो? मैं तो आत्माकी शांतिके लिअे भी किसी मंदिरमें गअी हूं, अैसा मुझे याद नहीं आता।

बापू: मैं खुद अपने लिअे यह नहीं मानता कि मंदिर न जाअूं, तो मेरी आत्माका अुद्धार नहीं होगा। पर करोड़ों हिन्दू अैसा ही मानते हैं। अिस मान्यता और श्रद्धाको भंग करना अपराध मालूम होता है। अिसलिअे हमें यही चाहना होगा कि अिन लोगोंको मंदिर-प्रवेशका हक मिले और ये लोग मंदिरोंमें जायं। मैं तो अेक कदम आगे जाता हूं। ये लोग आलस्यसे मंदिरोंमें न जाते हों, तो मैं अिनसे जानेको भी कहूंगा। मैंने अिस तरह अेक मंदिरकी नींव

भी डाली थी। मेरा मनोरथ तो यह है कि मेरे हाथमें बागडोर हो, तो मैं हरअेक गांवका जीर्णोद्धार करूं। वहां मंदिरके आसपास जो जीवन बुना हुआ था, अुस जीवनका जीर्णोद्धार करूं।

लीलावती: यह मंदिरकी भावना लोगोंमें क्लेश पैदा करनेवाली हो, तो अिस भावनाको किस लिअे प्रोत्साहन दिया जाय? कअी बार यह खयाल होता है कि मंदिर-मस्जिद न हों, तो सारे क्लेश मिट जायं।

बापू: क्लेश मंदिरकी भावनासे नहीं पैदा हुआ, वह तो मनुष्यके मनमें है। हमें सब धर्मोंके प्रति आदर पैदा करना है। यदि मनमें यह भावना हो कि सब धर्म अपूर्ण हैं, अिसलिअे अेकसे सच्चे या अेकसे झूठे हैं, तो हरअेकके लिअे समान आदर रहे। क्लेश अुत्पन्न करनेवाली अूंच-नीचकी भावना है, मंदिरकी भावना नहीं। मैंने तो जैन धर्ममें से अनेकान्तवाद ले लिया। अेक आदमी कहता है मेरी बात सच्ची, तुम्हारी झूठी है। मैं कहता हूं, तुम्हारी भी सच्ची और मेरी भी सच्ची। जो स्वतंत्र वस्तु है, वह अनिर्वचनीय है। जैसे कहानीके हाथीकी जांच करनेवाले अंधोंने सात हाथी बताये, परन्तु अेक स्वतंत्र हाथी तो था ही। हरअेक विज्ञानमें सिद्धान्त होता है, जिसे व्यवहारमें नहीं पहुंच सकते। यह दूसरी बात है कि यूक्लिडकी लकीर खींची नहीं जा सकती। लेकिन यह कहकर कि अैसी लकीर है ही नहीं हम अुसकी व्याख्या पर आधार रखनेवाली अनेक बातोंको छोड़ दें, तब तो मर ही जायंगे।

लीलावती: सचमुच परमेश्वर मेरे दिमागमें ही नहीं आता।

बापू: यह मैं समझ सकता हूं। तुम तो मूलतः जैन रही हो न! मैंने हरिभद्रसूरिके ग्रंथ पढ़े हैं, मुझे बहुत पसन्द आये। लेकिन अुनमें अुनका अीश्वरका खंडन मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगा। क्योंकि अुन्होंने तो अपनी कल्पनाके अीश्वरका खंडन किया है। पर जिस प्रकारके अीश्वरको लोग मानते हों, अुसकी अुस प्रकारकी भावनाका खंडन किस लिअे किया जाय?

लीलावती: बहुतोंने अीश्वरको अेक सहारा बना रखा है। मौका पड़ने पर अुसका आश्रय ले लेते हैं।

बापू: मनुष्य अल्प है, निराधार है, अैसा तो अुसे मानना ही पड़ेगा। क्योंकि शरीर निराधार है, परावलम्बी है। अुपनिषद्की वह प्रसिद्ध कथा बड़ी अच्छी है। वायुसे पूछा: 'अिस तिनकेको तू अुड़ा सकता है?' अग्निसे पूछा: 'तू अिसे जला सकती है?' तब कोअी यह न कर सका। जिस शक्तिके द्वारा यह वायु और अग्निकी शक्ति चलती थी, अुसी शक्तिसे हम सबको सिंचन मिलता है। अिसीमें हमारा अैक्य है। अिस गुणमें हम सब अेकसे हैं।

अिस वस्तुमें से मैंने यह सार निकाला कि सत्य ही ओश्वर है। होना—सत्—ओश्वरका धर्म है, दूसरेका नहीं। अिसी हस्तीके सहारे हम टिके हुअे हैं। फिर अुसे कुछ भी कहो। चाहो तो 'नेति नेति' कहो।

लीलावती: हम निराधार हैं यह वृत्ति हममें होनी चाहिये, या हम बलवान हैं यह वृत्ति?

बापू: दोनों वृत्तियां होनी चाहियें। सत्यको समझने और अुसके पालनकी शक्ति तो हममें है ही, क्योंकि हम सब ओश्वरके अंश हैं। किन्तु अुतने ही अंशोंमें परावलम्बी भी हैं। अिसलिअे मैं कहता हूं कि हमें शून्य बन जाना चाहिये।

अस्पृश्यताकी जड़में कौनसी रूढ़ि होगी, अिस सवालकी चर्चा हीरालालने शुरू की।

बापू: जैसे यहूदियोंका बहिष्कार करके अुनके अलग मुहल्ले बसा दिये गये, अुसी तरहसे आर्योंने काली और जंगली जातियोंका बहिष्कार किया होगा।

हीरालाल: हमने निर्दयतासे बहिष्कार किया होगा? हममें सांड़ लड़ानेकी निर्दयता तो नहीं है?

बापू: हमारे यहां दयाकी विकृति हो गअी। हम मृत्युदण्ड देते हुअे तो कांप गये, पर अिससे भयंकर बातें हमने कर डालीं। जानते हो चांडालोंके लिअे कैसी भयंकर सजाअें हैं? परन्तु हिन्दूधर्मने अलग-अलग जातियोंको अपनेमें समा लिया। जो अस्पृश्य जातियां मानी गअी हैं, वे तो मूलतः चार वर्णोंमें ही स्वीकार की गअी थीं और बादमें बहिष्कृत हुअीं। अिसलिअे ये लोग तो वर्णच्युत हैं, वैसे असलमें हिन्दू ही हैं। शुद्ध हिन्दूधर्ममें अनेक प्रयोग हुअे, अनेक सीमायें बांधी गअीं, अनेक कानून तैयार हुअे और आगे भी होते रहेंगे। हिन्दूधर्मने जितने आध्यात्मिक प्रयोग किये हैं, अुतने और किसी भी धर्मने नहीं किये। और ये प्रयोग करनेमें हिन्दूधर्ममें जितनी कुर्बानियां की गअी हैं, अुतनी और धर्मोंमें नहीं की गअीं।

हीरालाल: ये लोग कहते हैं कि अस्पृश्यताका नाश करनेमें आप वर्णाश्रमका नाश कर देंगे, अिस बारेमें आपको क्या लगता है?

बापू: अिस बारेमें मुझे शंका नहीं है कि अस्पृश्यताको नहीं मिटाया गया, तो वर्णाश्रमका सफाया हो जायगा।

सुभाष बोसको अपने पितासे मिलने नहीं जाने दिया और फ्रांस व स्विट्जरलैंडके सिवाय और कहीं जानेकी अिजाजत न मिली, अिस बारेमें अखबारोंमें पढ़कर बापू कहने लगे: यह होरका काम है। होरके स्वभावमें यह

चीज़ है। हमें दबाकर रखनेका अुसका संकल्प है। अिस मामलेमें वह किचनरसे मिलता-जुलता है। अुसने महादीकी कबर खोद डालनेका निश्चय कर लिया सो कर ही लिया। फिर भले ही अुसके खोदनेमें दस हज़ार आदमी खोने पड़े। अिसी तरह सुधरी हुअी जनताका विरोध करके अुसने फौजमें भरती न होनेवालोंको अलग छावनियों (Concentration Camps)में वन्द कर दिया।

अिस आदमीमें अेक प्रकारका संकल्पबल है। हममें क्या राज करनेकी शक्ति और लियाकत नहीं? यह पूछते ही अुसने कहा: 'सच पूछो तो मुझे कहना चाहिये कि मैं अैसा ही मानता हूं।' सुभाष संबन्धी हुक्ममें अपमान नहीं है। अपमान करनेकी अुसकी आदत नहीं। देखो न, यहां कितनी जगह अुन्हें हटाया, कितना रुपया खर्च किया? मगर बस, अब अिससे आगे नहीं जायंगे, यह कहनेकी दृढ़ता अुसमें है। मैं अुसका दोष नहीं मानता।

आज आंबेडकर अपने सात-आठ अनुयायियोंको लेकर आये। बापूके शब्दोंमें आज वे दरबारी ठाठमें थे। अुन्हें जो कहना था अुसे नोट करके लाये थे और बैरिस्टरकी तरह मामला पेश कर रहे थे।

४-२-'३३

अुनकी मंडलीमें शिवतरकर और डोलसे वगैरा थे। शुरूमें अुन्होंने सफाअी दी कि अुन्होंने पहले पत्र क्यों नहीं लिखा और क्यों जानेकी मांग नहीं की। अुन्हें आशा थी कि राजनैतिक चर्चाके लिअे मिलना हो सकेगा, पर वह तो अब संभव नहीं रहा। अिसलिअे विचार किया कि अस्पृश्यताके लिअे ही मिल आना अच्छा है।

रंगा आयरके दो बिलोंके गुण-दोषकी चर्चा करते हुअे आंबेडकरने कहा: अेक पैरेवाला बिल तो बहुत सादा है। अुसका गुण यह है कि अुसमें यह बात स्वीकार की गअी है कि अस्पृश्यताका रिवाज अनैतिक है। दूसरे बिलमें यह स्वीकार नहीं किया गया है।

बापू: नहीं, अुसके प्रास्ताविक भागमें किया गया है।

आंबेडकर: मगर स्पष्ट नहीं। और मेरा यह अेतराज भावनाके कारण है। दूसरी बात यह है कि आपके जैसा प्रभावशाली व्यक्ति अिसमें तन-मनसे न पड़े, तो अिन दोनों कानूनोंके होते हुअे भी अस्पृश्योंको कोअी लाभ नहीं होगा। मेरा यह भी खयाल है कि ये बिल अेक दूसरेके साथ असंगत हैं। अेक बिल स्वीकार करता है कि यह रिवाज खराब है और कहता है कि कानून अैसे रिवाजको मंजूर नहीं करेगा। जबकि दूसरा बिल कहता है कि कानूनको

अैसे रिवाजको मान्य करना ही पड़ेगा, सिवाय अुस सूरतके कि बहुमत अिस रिवाजको मिटा देनेका निश्चय कर ले।

बापू: अेक पैरेवाला बिल निश्चित रूपमें दूसरेसे बढ़कर है। पर दूसरा लम्बा बिल अिसलिअे लाया गया कि प्रान्तीय धारासभामें पहलेको मंजूरी नहीं मिली। दोनोंमें कोअी भी असंगतता नहीं है। अेक बिलमें अस्पृश्यताका बेहूदा रिवाज खतम होता है और कानून अस्पृश्यताकी दलीलको मंजूर नहीं करता। दूसरे बिलसे खास हालतोंमें मंदिरके अधिकारियोंको कार्रवाअी करना लाजिमी हो जाता है। हम ये दोनों बिल पास करा सकें, तो ट्रस्टी मंदिर-प्रवेशके बारेमें किसी किस्मकी रुकावट पैदा नहीं कर सकते। अगर दोनों बिल पास हो जायं, तो अेक महीनेके भीतर तमाम मंदिर खुलवा देनेकी जिम्मेदारी मैं लेता हूं। सनातनी दूसरे बिलको ज्यादा पसन्द करेंगे। लेकिन यदि मैं प्रामाणिक सनातनीकी हैसियतसे बात कहूं, तो मैं तो पहला बिल पसन्द करूंगा।

आंबेडकर: अभी जो सत्याग्रह किया गया था, अुसमें सरकारने सनातनियोंके विरुद्ध नहीं, सत्याग्रहियोंके विरुद्ध १४४ वीं धारा लगाअी थी। पहला बिल पास होनेके बाद यह भिड़न्त हुअी है, अिसलिअे अब सरकारको सनातनियोंके विरुद्ध १४४ वीं धारा लगानी पड़ेगी, क्योंकि यह अस्पृश्योंके हकोंमें अुनका दखल माना जायगा।

बापू: पर अब मैं चाहता हूं कि आप अपने विचारोंकी बिलकुल साफ शब्दोंमें भारपूर्वक घोषणा कर दें।

अिस सवालसे आंबेडकर चौंके।

आम्बेडकर: आपने बड़ा विशाल प्रश्न अुठाया है। जहां तक हमारा सम्बन्ध है, राजनैतिक सत्ताके सिवाय और किसी बातसे हमारा तात्कालिक सम्बन्ध नहीं है। मेरे लिअे तो यह स्वयंसिद्ध जैसी बात है। और हमारे प्रश्नका अेक मात्र निराकरण यही है।

व्यावहारिक दृष्टिसे मंदिर-प्रवेश हमारे लिअे महत्त्वका सवाल नहीं है। अिससे हमारे दुनियावी दर्जेमें कोअी सुधार नहीं होता। हमें तो यह चाहिये कि सवर्ण हिन्दुओंकी नजरमें हमारा दुनियावी दर्जा सुधरे। आज व्यक्तिगत रूपमें हम किसी मन्दिरमें जाना चाहें, तो जानेमें हमें मुश्किल नहीं आयेगी। दलित जातियोंके लिअे अत्यन्त दुःखजनक बात तो यह है कि सवर्ण हिन्दुओंकी नजरमें हम जरा भी अूंचे नहीं अुठे। दलित वर्गका नाम लिया जाय तो आपके मनमें अेक बावरची या झाड़ूवालेका चित्र खड़ा हो जाता है। बेअिज्जतीका कलंक हम परसे दूर हो, तभी हमारे सामनेकी यह रुकावट दूर हो सकती

है। मेरे सामने सवाल है कि यह कलंक कैसे मिटे, हमारा दर्जा कैसे ऊंचा हो। अितने बड़े पैमाने पर शिक्षाका प्रयोग करना हो, तो वह दान-धर्मादेसे नहीं हो सकता। वह तो तभी हो सकता है, जब हमारे पास थोड़ी-बहुत राजनैतिक सत्ता हो। मेरी नजरमें तो यही हल बार-बार आता रहता है। ग्लेडस्टनके जमानेके आयरलैण्डकी मिसाल लीजिये। टोरियोंको झुकानेके लिअे पार्नेलका दल वहां न होता, तो आयरलैण्ड कुछ भी नहीं कर सका होता। यहां भी दलित लोगोंकी स्थिति नये विधानमें ही सुधर सकती है। और मैं यह चाहता हूं कि दलितवर्गके हितचिन्तककी हैसियतसे आप नया विधान अमलमें लानेके लिअे अपनी सारी शक्ति लगा दें। अैसा कुछ कीजिये कि नया विधान, जहां तक हो सके, कम त्रुटियों और कम दुर्भावके साथ मंजूर हो।

अेक और दृष्टिकोण भी है। अिन सब प्रयत्नोंका अुद्देश्य अितना ही हो कि दलित जातियोंको हिन्दूधर्ममें ही रोक रखा जाय, तो मेरा रुख यह माननेकी तरफ है कि दलित वर्गोंकी आजकी जाग्रत दशामें यह काफी नहीं। मैं अपने आपसे यह सवाल अकसर पूछता हूं कि क्या मैं अपनेको बुद्धिपूर्वक हिन्दूधर्मका अनुयायी कहलवा सकता हूं? मुझे लगता है कि मैं अैसा नहीं कर सकता। अिसके लिअे मेरे कारण हैं। बुरे रिवाजोंसे मैं अितना नहीं घबराता। बुरे रिवाज तो अीसाअी धर्ममें और अिस्लाममें भी हैं, जैसे गुलामी। किन्तु जो रिवाज प्रगतिके चक्रको रोकते हैं, वे धर्मकी मान्यता पाये हुअे रिवाजोंसे अलग होते हैं। पहले रिवाजोंको सहन कर लेनेके लिअे मैं तैयार हूं, मगर दूसरी प्रकारके रिवाज मैं सहन नहीं कर सकता। चातुर्वर्ण्यका अुदाहरण लीजिये। अिसका अर्थ ही यह होता है कि जन्मके अनुसार समाजमें अूंच-नीचका वर्गीकरण किया जाय। चूंकि मैं जन्मसे अछूत हूं, अिसलिअे मैं कुछ भी करूं या कितना ही आगे बढ़ जाअूं, तो भी मेरे दर्जेमें कोअी फर्क नहीं पड़ता। मुझे हिन्दू कहलानेमें यही मुश्किल आती है। हिन्दू कहलानेके साथ ही मुझे यह स्वीकार करना पड़ता है कि जन्मसे मैं अेक नीच जातिका हूं। अिसलिअे मेरे खयालसे मुझे हिन्दुओंसे कह देना चाहिये कि आप मुझे अैसा धर्म सिद्धान्त बताअिये, जिसमें अैसा नीचपनका भाव न आये। अैसा न हो तो मुझे हिन्दूधर्मको तिलांजलि दे देनी चाहिये। यह मान्यता और यह रुख हममें से बहुतोंका है। मन्दिरमें प्रवेश करके मैं क्या करूं, जब अिस प्रवेशका अर्थ यह हो कि मैं नीचपनकी छाप स्वीकार करता हूं? अिसलिअे दलित वर्गके लोग हिन्दुओंसे यह कहें तो वाजिब ही है कि अगर तुम्हें हमको हिन्दूधर्ममें रखना हो, तो कोअी अैसा तरीका निकालो जिसमें दलित वर्गोंको प्रतिष्ठाका स्थान मिले और अुन्हें नीचा स्थान देनेवाले तमाम तत्त्व नष्ट कर दिये गये हों।

भाषण जारी ही था। बापू अब तक अेक शब्द भी नहीं बोले थे।

अेक और बात। सिर्फ राहत पहुंचानेवाले अुपायोंसे मुझे संतोष नहीं हो सकता। आयरिश होमरूलके आन्दोलनके समय कहा जाता था कि आयरिश लोगोंको संतुष्ट करनेका अुत्तम अुपाय यह है कि वहां लोकल बोर्ड स्थापित किये जायं। रेडमण्डने कहा था कि बिल्लीके मुंहमें ठूंस-ठूंस कर लड्डू भर कर अुसकी सांस रोक दो, यह मुझे नहीं चाहिये। मुझे तुम्हारे दयादानसे मरना नहीं है।

बापू: अगर आप पक्का निर्णय करके आये हैं कि अिस कानूनको पास करवानेके लिअे आप अंगुली भी नहीं हिलायेंगे, तो मुझे कुछ नहीं कहना।

आंबेडकर: हमने कोअी निर्णय नहीं किया। पर मैंने बताया कि मेरा मन किस तरह काम कर रहा है।

बापू: मैंने यह कहा कि आप निर्णय कर चुके हों, तो मेरे लिअे कुछ कहनेको रहता ही नहीं।

यहां अेक तीसरी बात, जो आंबेडकर कहना भूल गये थे, कही:

अेक बात कहना मैं भूल गया था। हम सवर्ण हिन्दुओंसे यह नहीं कह सकते कि आप यह तय कीजिये कि हम आपके अंग हैं या नहीं। ये बिल पास कराकर आपको अपना निर्णय बताना चाहिये। अंग्रेज हिन्दुस्तानियोंको अपने क्लबमें भरती नहीं करते। वहां भरती होनेके लिअे हिन्दुस्तानियोंका प्रार्थना करना अुनके लिअे अिज्जतकी बात नहीं।

बापू: अैसा करनेको मैं आपसे नहीं कहता। यह मैंने कभी नहीं चाहा कि दलित लोग सवर्ण हिन्दुओंके पास पैरों पड़ते हुअे जायं और ये बिल पास करानेको अुनसे कहें। दुर्भाग्यसे अिस सवालका फैसला तो तीसरी ही सत्ताके हाथमें है। और वह स्थितिको सुधार या बिगाड़ सकती है।

आंबेडकर: यह चीज मैं समान रूपसे कर सकता हूं।

बापू: ठीक है। अलबत्ता, अिसमें मैं सहमत हूं कि आपका हिन्दुओंके पास जाना आपके गौरवको शोभा नहीं दे सकता। मेरी स्थिति तो यह है — आपको याद होगा कि गोलमेज परिषदमें मैंने भाषण दिया तभीसे — कि हमें प्रायश्चित्त करना है। आप हमें छोड़ दें, तो मैं तो यही समझूंगा कि हम अिसी लायक थे।

अिसके बाद आंबेडकरने कानूनबाजी शुरू की:

अिस बिलमें मंदिर-प्रवेशकी बात है। लेकिन पूजाकी जगह प्रवेश करनेकी बात अिसमें नहीं आती। दलित जातिके आदमियोंको मूर्ति पर फूल

चढ़ाने देंगे या भोगका थाल रखने देंगे? मालवीयजीने तो कहा है कि पूजा करनेका सवाल ही पैदा नहीं होता।

बापू: मंदिर-प्रवेश पूजाके लिअे ही है। परन्तु कानूनमें भाषा ठीक न हो, तो सुधारी जा सकती है और हम कहें कि 'पूजाके लिअे प्रवेश'। मालवीयजीके बारेमें कहीं न कहीं कोअी गलतफहमी हुअी दीखती है। आप जो कहते हैं सो वे नहीं कहेंगे। हरिजनोंके रखे हुअे फूल, मिठाअी और दूसरे नैवेद्य जरूर स्वीकार किये जायंगे। अितनी बातमें हम दोनों सहमत हो गये कि आपका सवर्ण हिन्दुओंके सामने प्रार्थना करते जानेका सवाल ही नहीं है। कुछ सवर्ण हिन्दू जब मुझसे कहते हैं कि हरिजनोंको तो मंदिरोंमें आना ही नहीं है, तब मैं कहता हूं कि हरिजनोंको आना हो या न हो, तुम मंदिरोंके द्वार अुनके लिअे खोल दो। तुम्हें जो कुछ करना है वह तुम कर चुके, अितना आत्म-संतोष तुम्हें प्राप्त कर लेना चाहिये। तुम पर जो कर्ज है वह तुम्हें चुका देना चाहिये, फिर लेनदार अुसे स्वीकार करे या नालीमें फेंक दे। लेकिन मैं कहता हूं कि आपको यह नहीं कहना चाहिये कि मैं हिन्दू नहीं हूं। पूना-करार स्वीकार करनेमें ही आपने यह स्थिति मंजूर कर ली है कि आप हिन्दू हैं।

आंबेडकर: मैंने तो अुसका राजनैतिक भाग स्वीकार किया है।

बापू: आप कहें तो भी अिस स्थितिमें से बचकर नहीं निकल सकते कि आप हिन्दू हैं।

आंबेडकर: हम अितना चाहते हैं कि हमारे मौनका अनर्थ न होना चाहिये। फिर मैं आपकी बात स्वीकार करता हूं।

बापू: मैं अेक कदम आगे जाता हूं। आप अपनी स्थिति बिलकुल ठीक न रखें, तो आप अेक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकेंगे। मंदिर-प्रवेशको मैं आध्यात्मिक वस्तु मानता हूं, जिसमें से और सब बातें फलित होंगी।

आंबेडकर: हिन्दू मन ही सीधी तरह बात नहीं करता। रेलमें और दूसरे सार्वजनिक स्थानोंमें अछूत अुन्हें छू लें, तो अुन्हें कोअी अेतराज नहीं। तब मंदिरोंमें ही अुन्हें कैसे अेतराज होता है?

बापू: यहां तो आप अच्छी तरह पकड़े गये। ये लोग मंदिरोंमें अस्पृश्यतासे चिपटे रहना चाहते हैं, अिसीलिअे तो मंदिर-प्रवेशका सवाल मैं पहले लेता हूं। बहुतसे सनातनी हिन्दू कहते हैं कि हरिजनोंको स्कूलोंमें आने देंगे, सार्वजनिक स्थानोंमें आने देंगे, मगर मंदिरोंमें नहीं आने देंगे। मैं कहता हूं, भगवानके सामने अिनका दर्जा बराबर रखो। अिसकी बदौलत अिनकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

आंबेडकर: मान लीजिये हम मंदिर-प्रवेशमें सफल हो गये, तो क्या हमें कुओं पर पानी भरने देंगे?

बापू: जरूर। अिसके बाद यह तो आयेगा ही। और यह तो बहुत आसान है।

यह बात यहीं अधूरी रही। अितनेमें मानो अीश्वरकी प्रेरणासे ही अमेरिकन पत्रकार स्टेनली जोन्स आ गया। वह यही सवाल पूछने लगा। लेकिन अिन सवालोंके जवाब आंबेडकरके सामने अिस भाषामें नहीं रखे जा सकते थे। अुसने आरंभ किया:

स्टे० जो०: अछूतोंका अुद्धार होता है, यह बड़ी बात है। लेकिन मैं चाहता हूं कि आप और आगे जायं। मैं अमेरिका जाअूंगा, तो वहां मुझसे यह पहला सवाल पूछा जायगा कि अस्पृश्यताके खिलाफ लड़नेमें गांधीने पूरी सफाअी क्यों न कर डाली? अुन्हें सारी जाति-व्यवस्था ही खतम कर देनी चाहिये थी।

बापू: अस्पृश्यता अैसा पाप है कि वह समाजकी सारी रचनामें जहर भरता है। अिसलिअे अुसे मिटा डालना चाहिये। जाति कोअी पाप नहीं। अस्पृश्यता बड़े जन समुदायको अुसके जन्मके कारण बहिष्कृत रखती है। जाति अिस तरह किसीको बहिष्कृत नहीं करती। मैं चाहता हूं कि आप अिस भेदको अच्छी तरह समझें। आप कहते हैं कि मैं अस्पृश्यता पर हमला करता हूं, किन्तु जातियोंको कायम रखनेकी कोशिश करता हूं। पर आप नहीं जानते होंगे कि मुझ पर तो सनातनी हिन्दू बड़ा हमला कर रहे हैं। वे मुझे तरह-तरहकी गालियां देते हैं और कहते हैं कि जातियोंका नाश करनेके लिअे अिस राक्षसने जन्म लिया है।

स्टे० जो०: अमरीकन तो कहेंगे कि अिसमें सिर्फ मात्राका फर्क है। नीचेसे अूपर तक अूंच-नीचके भेदोंकी पूरी निसेनी कायम रहती है। आप तो थोड़ीसी नीचेकी सीढ़ियां मिटाते हैं।

बापू: नहीं, अिसमें तो नरक और स्वर्ग जितना बड़ा भेद है। जब तक ये लोग अस्पृश्य हैं, तब तक नरककी भारी आगमें हैं। ज्यों ही अुनके सामनेकी यह दुष्टताभरी रुकावट नष्ट हुअी और वे हिन्दू समाजमें मिल गये कि वे स्वर्गमें पहुंच जायंगे।

स्टे० जो०: पर वे ठेठ निचली जातिके यानी चौथे वर्णके रहें, अिसमें तो आपको संतोष है।

बापू: जरा भी नहीं। लेकिन अभी मैं अुसके लिअे नहीं लड़ता। क्योंकि मेरे विचारसे तो वर्णोंमें अूंच-नीचके भेदभावकी गुंजाअिश ही नहीं। वर्ण आप

कहते हैं वैसी खड़ी निसेनी नहीं हैं, वे तो आड़े खाने हैं। अुनमें सबका बराबर स्थान है। अूंच-नीचके भेदभावके लिअे हिन्दूधर्मके मूल सिद्धान्तमें कोअी जगह नहीं है। अस्पृश्यको हिन्दू समाजमें ले लिया जाय, तो अुसके साथ ही वह बहिष्कृत नहीं रह जाता। अिसके अलावा, वर्ण जाति नहीं है। जैसा सर हैनरीने कहा है, वर्ण धंधेकी श्रेणियां (ट्रेड गिल्ड्स) हैं। 'हिन्दुस्तानी जातियां' नामकी भट्टाचार्यकी पुस्तक देखना। अुसमें वर्णका मूल अर्थ बहुत ही स्पष्टतासे समझाया गया है।

स्टे० जो०: आपने कुछ वर्ष पहले कहा था कि जातियां धंधेके अनुसार हैं और अिसलिअे जरूरी हैं। हालमें अेक बंगाली मित्रके नाम लिखे पत्रमें आपने कहा है कि जातियां मिटनी चाहियें।

बापू: कुछ वर्ष पहले मैंने जो कहा था और जिसकी आप बात कर रहे हैं, वह वर्णके बारेमें है। और बंगाली मित्रको जो लिखा था, वह जातिके बारेमें है। यद्यपि आज मैं जातियों पर हमला नहीं करता हूं। अस्पृश्यता-निवारणके साथ अुसका सम्बन्ध नहीं है। अिसीलिअे जातियोंको मिटानेकी लड़ाअी लड़नेवालोंसे मैं कहता हूं कि आपके लिअे मेरे मनमें आदर है। लेकिन आज आप मुझसे अपने साथ शामिल होनेके लिअे मत कहिये। जातियां अुन्नतिके रास्तेमें रुकावट डालती हैं। अिसका अिलाज भी होना चाहिये। पर अभी तो मैं अेक जहर, अेक पापके विरुद्ध लड़ रहा हूं। मैं अपनी लड़कीकी शादी अमुक मनुष्यके साथ न करूं, अिसमें मैं कोअी पाप नहीं करता। मगर मैं अेक मनुष्यसे कहूं कि तू अछूत है, तू बहिष्कृत है, तू पापयोनि है, तो अिसमें मैं मानवताके विरुद्ध महापाप करता हूं।

स्टे० जो०: यह सही है। लेकिन अैसा करके तो आप अुन लोगोंको अेक ही सीढ़ी अूंचा अुठाते हैं।

बापू: नहीं, अिससे अुनका सारा रूपान्तर हो जाता है।

स्टे० जो०: पर वे कोअी अेक बन्धुसमाजमें शामिल नहीं हो जाते, जैसे औसाको पूजनेवाले सब लोगोंका अेक बन्धुसमाज होता है।

बापू: मैं कहता हूं कि अुनका रूपांतर हो जाता है। अस्पृश्यता मिटनेके साथ ही वे गहरी खाअीसे निकलकर ठेठ चोटी पर पहुंच जाते हैं।

स्टे० जो०: मेरा कहना यह है कि ज्यों ही आप मनुष्यमें रहनेवाली आत्माका मूल्य स्वीकार कर लेते हैं, त्यों ही तमाम भेदभावोंकी जड़ नष्ट हो जाती है।

बापू: आप वर्णको नहीं मानते, हम मानते हैं। मैं तो अिसे हिन्दू-धर्मकी दुनियाको दी हुअी अेक भेंट मानता हूं। आज हिन्दूधर्म अधोगतिको

पहुंच गया है, अिसलिअे अिस चीजको वह अिसके शुद्ध स्वरूपमें नहीं दिखा सकता। किन्तु शुद्ध होते ही वह वर्ण-व्यवस्थाको दुनियाके सामने अनुकरण करनेके लिये रख सकेगा। वेदोंमें रंग परसे वर्ण नहीं माने गये हैं। जैसे भाषाका विकास होता है, वैसे 'वर्ण' शब्दके अर्थका भी विकास होता रहेगा।

स्टे० जो०: तो आप मानते हैं कि वर्ण जातिसे कोअी अलग ही चीज है।

बापू: मूल विचार अैसा था ही नहीं कि अमुक अूंचे और अमुक नीचे हैं। खयाल तो यह था कि मनुष्यत्वकी आध्यात्मिक शक्यता कितनी है, अिसकी खोज करनेके लिअे मनुष्यका जन्म हुआ। अीश्वरको पहचाननेका छोटेसे छोटा तरीका वर्णधर्मका आदर करना है। जिस क्षण आप वर्णधर्मका पालन करना शुरू कर देते हैं, अुसी क्षण आप नीतिके बारेमें और अीश्वर-सेवाके बारेमें और सबको मात कर देते हैं।

स्टे० जो०: मगर जनगणना करनेवाले कर्मचारीके सामने मनुष्य अपनेको ब्राह्मण या क्षत्रियके रूपमें नहीं, बल्कि अेक मनुष्यके रूपमें बताये, यह आपको पसन्द नहीं होगा।

बापू: मेरे लिअे जनगणनाकी आध्यात्मिक कीमत नहीं है। अुसका राजनैतिक महत्त्व हो सकता है। वैसे यह भी न होना चाहिये। मनुष्य सिर्फ अपनेको मनुष्यके रूपमें बताये, अिसमें मुझे कोअी आपत्ति नहीं है। मैं सिर्फ यह कहता हूं कि वर्णका कानून मनुष्यको मानना ही पड़ेगा। जैसे बिजलीका, पानीका या हवाका कानून अुसे मानना पड़ता है।

स्टे० जो०: वर्णसे मनुष्य सामाजिक आनुवंशिकताके आधीन हो जाता है। समाजशास्त्री कहते हैं कि अिसमें तीन चीजें काम करती हैं: (१) जन्मकी आनुवंशिकता, (२) सामाजिक आनुवंशिकता, और (३) मनुष्यकी अपनी पसन्द। अिस प्रकार वर्णके सिवाय दूसरे संयोग भी मनुष्य-मनुष्यके बीचके भेदके कारणोंको जन्म देते हैं।

बापू: मैं स्वीकार करता हूं कि आनुवंशिकताके सिवाय और कअी बल अिसके पीछे काम करते हैं। मगर आप प्रेमकी आनुवंशिकता स्वीकार कर लें, तो तुरन्त मेरा आपके साथ कोअी झगड़ा नहीं रहता।

स्टे० जो०: अछूतोंको मन्दिर-प्रवेश करनेको कहनेके साथ आप अुनके कंधे पर अैसा जुआ रख देते हैं, जो अुन्हें दबानेवाले ब्राह्मणोंके हाथमें है। आप किस लिअे अूंच-नीचके बंधन अिस तरह दृढ़ कर रहे हैं?

बापू: मैं तो सिर्फ जिस नरकाग्निमें अुन्हें धकेल दिया गया है, अुससे निकालकर स्वतंत्रताकी स्थितिमें रख देनेकी कोशिश कर रहा हूं।

स्टे० जो० : मैं चीजको दूसरी तरह रखता हूं। जो व्यवस्था या पद्धति नीचे गिरानेवाली है, अुसमें अिन लोगोंको बांधनेकी आप क्यों कोशिश कर रहे हैं?

बापू : अिसमें बांधनेकी बात ही नहीं है। यह तो सिर पर चढ़े हुअे ऋणको चुकानेकी, प्रायश्चित्तकी और आत्मशुद्धिकी प्रवृत्ति है। हम सिर्फ मंदिरोंके द्वार खोल देते हैं। हरिजनोंको अुनमें जाना ही चाहिये, यह अनिवार्य नहीं बनाते। वे अपना लेना न लेना चाहें तो न लें, लेकर नालीमें फेंक देना हो तो नालीमें फेंक दें, मगर हम अपना देना क्यों न चुका दें?

मैं जानता हूं कि ब्राह्मणोंके बारेमें दो मत हैं। अेक मतवाले अुन्हें दुर्बुद्धि मानते हैं, दूसरे मतवाले, जिनमें मैं हूं, अुन्हें हिन्दूधर्मके रक्षक मानते हैं। वे धर्माचार्य भी हैं और पैगम्बर भी हैं। मनुष्यका स्वभाव है कि अमुक पद मिलनेके बाद वह अुसका दुरुपयोग करने लगता है। अैसा दुरुपयोग करनेवाले ब्राह्मण मौजूद हैं। अिसके साथ ही आज भी अधिकसे अधिक त्याग ब्राह्मण ही कर रहे हैं। मेरे साथियोंमें बहुतसे ब्राह्मण हैं।

स्टे० जो० : आपको नहीं लगता कि वे आधिपत्य जमा कर बैठे हैं?

बापू : आधिपत्य जरूर है। मगर वह तो दुष्ट ब्राह्मणोंका है, जो मेरे विरोधी हैं।

स्टे० जो० : अछूतोंको आप अैसे लोगोंके मातहत करनेकी कोशिश कर रहे हैं।

बापू : मैं चाहता हूं कि आप अिस चीजको अमेरिकाके सामने अिस तरह रखें : आपने अपनेमें से अेक खास वर्गका बहिष्कार किया हो, तो अीसाअियोंके नाते आप अुनका क्या करेंगे? मुझे आशा है कि आप यह कहेंगे कि 'आओ, हम तुम्हें वापस गिरजेमें लेते हैं। अीश्वरकी नजरमें हम सब समान हैं। तुम हमारे समाजमें वापस आ जाओगे, तो और सब कुछ तुम्हें मिल जायगा।' हिन्दूधर्ममें मन्दिरका वही स्थान है, जो अिस्लाममें मस्जिदका और अीसाअी धर्ममें गिरजेका है।

स्टे० जो० : मैं अिस वर्णनको नहीं मानता। हमारा गिरजा तो नैतिक और आध्यात्मिक स्थान है।

बापू : तब तो फिर आपको अपने अस्तित्वसे भी अिनकार करना पड़ेगा। गिरजा नैतिक और आध्यात्मिक स्थान जरूर है, पर अैसा होनेका आधार मनुष्यके हृदय पर है। किस भावसे मनुष्य पूजा करता है, अिस पर है। मेरी मां अुम्रभर मूर्तिकी रोज पूजा करती थी। और मन्दिरमें जाकर

मूर्तिके दर्शन किये विना मुंहमें अन्नका दाना भी नहीं डालती थी। क्या आप यह कहना चाहते हैं कि वह स्थूल मूर्तिकी पूजा करती थी? वह तो आध्यात्मिक भावना ही थी, जो अुसे विशुद्ध रख सकती थी।

स्टे० जो०: मैं जानता हूं कि अैसे मनुष्य भी होते हैं, जो स्थूल वस्तुसे परे जा सकते हैं।

बापू: मैं यही चीज चाहता हूं। आध्यात्मिक सत्यको ज्यादा महत्त्व देते हुअे जब मैं कहता हूं कि हिन्दू धर्ममें मन्दिरोंके लिअे स्थान है — भले ही अुनमें बहुत गंदगी घुस गअी हो — तब मैं अविचल सत्यका अुच्चारण करता हूं।

स्टे० जो०: अब अेक आखिरी प्रश्न। अमेरिकामें मित्र मुझे पूछेंगे कि क्या आपका यह अुपवास अेक प्रकारका सूक्ष्म और नाजूक दबाव नहीं था? आप अिसका क्या जवाब देते हैं?

बापू: दुनियाका सारा अितिहास देखेंगे, तो हरअेक सुधारकने — अीसा तकने — अिस तरहके दबावका अुपयोग किया है। यह प्रेमका दबाव है। आज भी अीसा अपने अनुयायियों पर यह असर डाल रहे हैं और अुन्हें गलत रास्ते पर जानेसे रोक रहे हैं। लोगोंको नीचे गिरानेवाला दबाव भी होता है। लेकिन प्रेमका दबाव विशुद्ध बनाता है और प्रेमी तथा प्रेमपात्रको अूंचा अुठाता है। मैं यह कह सकता हूं कि अीसा आप पर स्थायी दबाव डाल रहे हैं और आपको पाप करनेसे बचा लेते हैं। मेरी पत्नीका ही अुदाहरण लीजिये। मैंने अुस पर अिस तरहका दबाव डाला। प्रेमने सारी रुकावटें दूर कर दीं और अुसकी अैसी कायापलट कर दी, जिससे आज वह अस्पृश्यताको जरा भी नहीं मानती। अितना ही नहीं, अुसकी कट्टर दुश्मन है और अुसका जड़मूलसे नाश करनेके लिअे काम करनेकी प्रतिज्ञा कर चुकी है।

ब्रदर लैशके नाम अेक बहुत ही महत्त्वका पत्र जबरदस्तीके आक्षेपके जवाबमें लिखवाया। सारा पत्र आत्म-कथाका अेक

५-२-'३३ पृष्ठ है।

अेक नया अेल-अेल० बी० पास हरिजन आया। अस्पृश्यता शास्त्रोंमें नहीं है, यह बतानेवाले श्लोक अेकके बाद अेक अुद्धृत करता जा रहा था। अुसे बापूने अुसकी भूलें बताअीं और वकीलके हमेशा याद रखनेका अेक सूत्र अुसे सुनाया: हमारी वस्तु जैसी हो, अुससे भी जरा हलके ढंगसे अुसे रखना अुस वस्तुको ठीक ढंगसे पेश करना है। अतिशयोक्ति करनेसे हमारी चीजकी कीमत घट जाती है। अच्छे वकीलको

हमेशा यह बात याद रखनी चाहिये। अैसा करनेसे हमारा केस न्यायाधीशके मन पर ठसाया जा सकता है।

सवेरे घूमते समय सन् '५७ के बलवेके बादकी और आजकलकी हालतके बीच तुलना की। सन् '५७ के बलवेके बाद मनुष्य हताश हो गये थे। नेताओंकी हिम्मतें टूट गअी या वे भाग गये। अिस समय जनतामें से बहुतसे चाहे हताश हो गये हों, फिर भी जहां तक मैं और आप (यानी बापू और वल्लभभाअी), जवाहर, राजेन्द्रबाबू और राजगोपालाचार्य वगैरा नहीं हारते, तब तक क्या चिन्ता है? हम हार जायेंगे, तो लोग हार जायेंगे। वैसे होर अपनी चालमें सफल हुआ है और अरविनको भी अुसने वशमें कर लिया है। अिस वक्त अनुदार दलमें अैसा सफल और कार्यकुशल आदमी कोअी नहीं है। अुसे फासिज्म चलाना है। अुदार दलवालोंका कोअी प्रभाव नहीं रह गया है। मजदूर-दल बहुत समय तक अुठ नहीं सकेगा। क्योंकि मजदूर-दलका मौलिक कार्यक्रम तो अमलमें लाया ही नहीं जा सकता और साम्यवादको सब देशोंने छकानेकी कमर कस ली है। अिसलिअे अेक प्रकारका फासिज्म ही चल रहा है।

६-२-'३३ — आज आश्रमकी डाक गअी। डाक थोड़ीसी ही थी, परन्तु अेक-दो पत्र महत्त्वके थे।

दोपहरमें जमनालालजीसे मिले। डोअिलको दांतके बिलके बारेमें पत्र लिखा और अुसमें यह मांग की कि दांतका खर्च सरकारको देना चाहिये। अैसा न हो तो यह मांग की कि वल्लभभाअीके और अुनके खाते शामिल कर दिये जायं।

दोपहरको बरवे 'हरिजन' के आंकड़े लेकर आये। सायमें पदमजीको लाये। पदमजीने तो हद ही कर दी: मुझे बुलवाया, अिसमें मैं अपनी बड़ी अिज्जत समझता हूं। महात्माजी जैसा कहेंगे वैसा करूंगा। हमारा कोअी आजका नहीं, बहुत पुराना संबन्ध है। यह कहकर बापू बिलमें से जितना काटना चाहें, अुतना काटनेको तैयार हो गये। ०-३-६ में से कम करके ०-३-१ का भाव तय किया। और अिस तरह १५०० रु० सालानाकी कमी कर डाली। बापूसे बोले, कहिये साहब, अब तो संतोष हुआ?

बापूने कहा: देखो यह तो गरीबोंका काम है। अिसमें संतोषकी बात न पूछो। मैं तो कहूंगा कि सारा कागज मुफ्त दे दो। लेकिन अैसा क्या हो सकता है? हां, अेक मांग करूंगा। यह जरूर चाहूंगा कि गरीबोंके अिस काममें तुम नफा बिलकुल न लो।

भले पारसीने कहा: अेक पाअी नफा रखा है। वह अिसीलिअे कि आगे भाव बढ़नेवाले हैं। लेकिन आपका हुक्म है, तो ३ आने रखिये।

शास्त्रीको लाने ले जानेके लिअे लेडी ठाकरसीसे मोटर रखवाकर रोजके तीन रुपये बचा लिये! हरिजनोंके लिअे चाहे जितनी भिक्षा मांगी जा सकती है।

रातको हरिजनोंके कामकी बातें करते हुअे वल्लभभाअी कहने लगे: देवदास और राजाजी असेम्बलीमें गये, यह मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगता। विरोधी लोग जो जीमें आयेगा सुनायेंगे। जिनकी असेम्बलीमें लोगोंको न जाने देनेके लिअे स्त्रियोंसे धरना दिलवाया, अुनकी मदद लेने जाना तो बड़ा शर्मनाक मालूम होता है। यह तो हरगिज न होना चाहिये था।

बापू: अिसमें कुछ भी बुरा नहीं हो रहा है, भले ही वे लोग मजाक अुड़ायें। धर्म अेकांगी होता ही नहीं। जिस कारणसे हमने १९२१ में असहयोग किया था और धारासभाओंका बहिष्कार किया था, अुसी कारणसे आज अुनके साथ सहयोग करते हैं। जो सत्याग्रह अुस दिन असहयोग करनेमें था, वही आज अुनके पास जानेमें है। गीतामें कर्म-अकर्मकी जो बात कही गअी है, वैसी ही गहन यह बात है। भले ही वहां कुछ न हो और वे बिलको पास न होने दें। हमारे लिअे यह भी अेक देखने जैसी बात हो जायगी। अीश्वर जो-जो कदम सुझाता जा रहा है, अुसीके अनुसार करता जा रहा हूं। देखो न, आज अेक पत्रमें प्रवृत्तिकी जो व्याख्या कर दी है, वह अुसके सवालोंके जवाबमें ही निकल आअी। विचारोंका जो क्रम चलता रहता है, वही प्रवृत्ति है। मैं अैसा हूं ही नहीं कि किताब खोली और अुसमें से जवाब मिल गया। मेरे सामने तो व्यावहारिक प्रश्न आकर खड़ा हुआ कि अुसका जवाब मुझे तुरन्त मिल जाता है।

अिस प्रश्नके अुत्तरमें अेक बात खास तौर पर जिक्र करने लायक है। यह कानून पास करानेमें और अुसके लिअे अुत्कट अभिलाषापूर्वक प्रयत्न करनेमें बापूके स्वयं कुछ करनेके बजाय जनतासे प्रतिज्ञाका पालन करवानेकी अुत्कट अभिलाषा और प्रयत्न रहा है। बम्बअीके प्रस्तावकी भाषाके "अिन हकोंके बारेमें स्वराज्य पार्लमेंट सबसे पहले कानून बनायेगी, अगर स्वराज्य होनेसे पहले ये हक मान न लिये गये हों तो" अिन शब्दोंमें सारी चीजकी कुंजी है।

मैकेको बढ़िया मुलाकात दी। अुसने सिरकी पट्टीके बारेमें पूछा। सिर पर मिट्टीकी पट्टी बांधना 'रिटर्न टु नेचर' (प्रकृतिकी तरफ लौटो) नामक

पुस्तक पढ़कर कैसे सन् १९०५ में शुरू किया था, और अुसके बाद सैकड़ों और हजारों मौकों पर किस तरह अुस पर अमल किया, यह बापूने अुसे बताया। कोअी अच्छी चीज पढ़ी कि तुरन्त अुस पर अमल करनेकी बात मनमें आअी। जैसे 'अन टु दिज लास्ट' (सर्वोदय) पढ़कर जीवनका परिवर्तन किया, वैसे ही यह पुस्तक पढ़कर मिट्टीके प्रयोग शुरू कर दिये। ये सब बातें सरल भावसे मैंकेको सुनाअीं। अुसे मजेदार तो लगीं, लेकिन ये बातें 'टाअिम्स' को भेजे तो वह क्यों अुसे छापने लगा? अिसलिअे धीरेसे पूछा: पर आंबेडकरके लिअे आपके पास कोअी मिट्टीकी पट्टियां हैं?

बापू बोले: मुझे मालूम नहीं। पर हमारे मतभेदोंसे दोनोंके सिर चढ़ जायं, तो जरूर मिट्टीकी पट्टियां ढूंढ़नी पड़ें।

अितना कहकर फिर आगे कहा: मेरे और अुनके बीच ज्यादा मतभेदकी गुंजाअिश नहीं है, क्योंकि अधिकतर मामलोंमें अैक्य है। यह भी कहा कि मतभेदकी मुझे परवाह नहीं। क्योंकि सवर्णोंसे कर्ज अदा करवानेके सिवाय मेरे पास दूसरा काम नहीं है।

७-२-'३३ आज सुबह तीन बजे ही अुठकर अस्पृश्यता पर दो लेख लिखे। सरकारने धर्मके मामलेमें तटस्थ रहनेका वचन दिया है, अिसलिअे पहले बिलको मदद देनेके लिअे वह बंधी हुअी है; क्योंकि सरकारकी तटस्थताकी नीतिके विरुद्ध जाकर मौजूदा कानूनने जो रुकावट पैदा की है, अुसे दूर करना ही अिस बिलका अुद्देश्य है। यह वाक्य शास्त्रीको खटकता था। 'बंधी हुअी' कैसे है?

बापू बोले: जिस कानूनको बनाकर सरकारने अेक बार तटस्थताको भंग किया है, अुस कानूनमें सुधार करके तटस्थताकी नीति क़ायम रखनेकी अपनी अुत्कंठा वह साबित कर दे।

शास्त्री: मैं समझा। परंतु यह बहुत ही संक्षेपमें है। साधारण पाठकके लिअे जरा अिसे और विस्तारसे समझानेकी जरूरत होगी।

बापूकी विचारोंसे भरी हुअी और अनेक सीढ़ियां कुदाकर मूलमें से फलित होनेवाला अतिरिक्त कथन सिद्ध करनेकी भूमितिकी पद्धतिका पहला पाठ शास्त्रीको मिला।

अे० पी० आअी० का रिपोर्टर गोपालन आया था। अुसने अंकलेसरियाका पूछा हुआ सवाल पढ़ सुनाया: 'देश क्या अब अिस गांधीसे तंग नहीं आ गया?' और अुसे दिया हुआ हेगका जवाब: 'माननीय सदस्यके सवालमें देशके अेक खास वर्गकी भावनाकी प्रतिध्वनि मिलती जरूर है।' और फिर

'मैं नहीं जानता कि यह वर्ग कौनसा है।' अिससे बापू बहुत खुश हुअे और बोले: अिस आदमीमें चिढ़ पैदा करनेवाले सवालोंका शान्त मनसे जवाब देनेकी कलाका अच्छा विकास हुआ है।

अिसके बाद शंकराचार्य द्वारा रंगा आयरको दिये हुअे तारके बारेमें लंबी मुलाकात दी। देवधर सिरकी पट्टीकी बात कह रहे थे, अिसलिअे अुनसे बापूने कहा : यह तो सावधानीके तौर पर है। और अैसी-अैसी बातें पढ़नी पड़ें, तब तो दिमागको ठंडा रखना चाहिये न?

गोपालन बोला: बापूजी, क्या अिस अखबारकी बात कहते हैं?

बापू : नहीं, सारा वातावरण ही चौंकानेवाला है। लोगोंमें जरासा विनोद समझनेकी भी शक्ति नहीं है।

१४ जनवरीके वक्तव्यका अर्थ डोअिलने बंबअीकी कांग्रेस-पत्रिकामें दिये गये अर्थके आधार पर किया। अिस बारेमें गोपालनने बापूका मत जानना चाहा।

बापू : मैं कुछ कहूं तो गहरे पानीमें अुतर जाअूं। मैं अितना ही कह सकता हूं कि मेरा लेख तुम्हारे सामने मौजूद है। अुसका अर्थ तुम खुद कर लो। मैंने कोअी द्व्यर्थक बात नहीं कही।

सत्याग्रही असहयोगी धारासभाका आश्रय कैसे ले रहे हैं, अिसका जवाब देते हुअे बापूने कहा: जहां तक मुझे विश्वास है कि मैं अीमानदार हूं, वहां तक मुझे अिसकी परवाह नहीं कि लोगोंमें मेरी प्रतिष्ठा कम हो जायगी। मैं अपने सत्यकी रक्षा करूंगा, तो प्रतिष्ठा अपनी रक्षा आप कर लेगी।

बा के पकड़े जानेकी खबर कल आअी थी। आज शांता, ललिता और डाहीबहनकी गिरफ्तारीके समाचार आये।

बापू : और सबका तो ठीक है, पर बा के पकड़े जानेसे मेरे आनंदका पार नहीं है।

मेजरसे अेक आश्चर्यजनक बात सुनी। यहां शाकाहारी कैदियोंको जो तेल मिलता है, अुसे वर्षोंसे मांसाहारी कैदी खाया करते थे। कुछ कैदियोंने अिस बार शिकायत की। अिसके बारेमें जांच हुअी और अब अुन लोगोंको तेल मिलने लगा।

बापूने पूछा : तो कितने ही महीनों तक अिन लोगोंका तेल मांसाहारियोंको ही मिला न?

मैं : कितने ही महीने? कितने ही वर्ष! अैसे कितने ही अंधेर चल रहे होंगे।

स्टेनली जोन्सके साथकी बातचीतका जो सार मैंने 'हरिजन' के लिअे तैयार किया था वह बापूको ठीक नहीं लगा, अिसलिअे खूब नाराज हुअे : अिस तरह तुम बातचीतकी रिपोर्ट लो, तो अुसमें मुझे गंभीर खतरा नजर आता है! तुम अैसी रिपोर्ट लो और फिर वह मेरे मरनेके बाद छपे और लोग कहें कि यह रिपोर्ट लेनेवाला गांधीजीके नजदीक था, अीमानदार आदमी था, अिसमें भूल हो ही नहीं सकती। और मैंने अुसे देखा ही न हो, तो भयंकर अनर्थ ही हो जाय न? अिस तरह यदि तुम्हारा ढेरों लिखा सब अैसा ही हो, तब तो मारे ही गये न? अिसलिअे तुम्हें चेत जाना चाहिये। या तो तुम्हें रिपोर्ट लेनी ही नहीं चाहिये और अपनी ही भाषामें छोटीसी रिपोर्ट बादमें लिख डालनी चाहिये। अिसमें तो तुमने विचार किये बिना ही सब कुछ लिख डाला है। यह रिपोर्ट कोअी पढ़े तो अुसे लगेगा कि यह ग्रामोफोन रिकार्ड बोल रही है। अैसी बाजेकी रिकार्ड हमें नहीं चाहिये। यह शायद गुजराती भाषामें चल सकती है, पर अंग्रेजीमें नहीं चलेगी।

८-२-'३३

मैंने कहा : अेक दो जगह जहां मुझे शंका थी, वहां मैंने अुन भागों पर निशान लगा दिया है। बाकीके भागमें अेक ही बात जो बार-बार आती है, अुसे मैं समझता हूं संक्षेप किया जा सकता है। लेकिन मैं नहीं मानता कि कहीं भी अर्थका अनर्थ होता है। और अिन चीजोंको ज्योंका त्यों छपवानेका कभी अिरादा नहीं। पहले आपको बताये बिना कभी कुछ छापा नहीं और मुझे आशा है कि आपको बताये बिना अिसमें से कुछ छपेगा भी नहीं।

बापू : पर तुम और मैं दोनों अचानक मर जायं तो?

मैं : तो पहलेसे यह हिदायत कर जायं कि यह कभी न छपे।

दिनमें अिस बारेमें थोड़ी-थोड़ी करके बहुत बातें हुअीं। बापूने खुद अिस बातचीतका जो सार लिखवाया, वह सारी अेक स्वतंत्र चीज थी। अुसमें अुन्होंने अपने जवाबके मुख्य मुद्दोंको विस्तारसे समझाया था। मैं अब भी मानता हूं कि मेरे दिये हुअे सारमें कोअी अनर्थ नहीं होता।* अिस बारेमें बापूके साथ चर्चा करना बाकी है। अनेक मनुष्य मिलनेके लिअे आते हों, तो अुनके साथकी बातें नोट किये बिना याद रखना असंभव है। और शामको यार्डमें जानेके बाद भी दूसरा काम होता है, अिसलिअे स्मृतिसे अुनका थोड़ासा हाल अपनी भाषामें लिखनेका समय ही नहीं रहता।

---

* अिस पुस्तकमें महादेवभाअीकी रिपोर्ट जैसीकी तैसी दी गअी है। गांधीजीके लेखके लिअे देखिये 'हरिजन', भाग १, अंक १, पृष्ठ २।

अिसलिअे कच्ची नोंधके बिना काम ही नहीं चल सकता, यह सब बापूको समझाया।

मीराबहनके पत्रमें कैदियोंका धर्म और अधिकार समझाये : "किसी कैदीको जेल बदलनेकी मांग करनेका अधिकार नहीं। गैरमामूली हालतोंके सिवाय जिस स्थितिमें वह रखा जाय, अुस स्थितिको अुसे बरदाश्त कर लेना चाहिये।

९-२-'३३

हावर्डके जमानेके जेल-जीवनके साथ आजकलके जेल-जीवनका मुकाबला किया जाय, तो जो सुधार हो गया है अुससे मुझे आश्चर्य होता है। जो अपने अंतःकरणकी खातिर जेलमें आये हैं, अुन्हें तो अुस पुराने जेल-जीवन और आजके जेल-जीवनके बीच कोअी भेद नहीं करना चाहिये। अुन्हें तो हावर्डके समयके जेल-जीवनको भी खुशीसे बरदाश्त करना चाहिये। अुन्हें शारीरिक सुविधाओं और अपनोंके सहवासके आनंदसे अंतःकरण ज्यादा प्यारा है। अिसलिअे भले ही हम जेलमें शरीरको तंदुरुस्त रखने और दूसरी सुविधाअें प्राप्त करनेके लिअे यथासंभव तमाम प्रामाणिक और कानूनी प्रयत्न करें, पर अुनमें निराशा मिले तो अुसे पूरी अनासक्तिसे सहन कर लेनेको तैयार रहें। अपने शरीरके बारेमें जेलके डॉक्टरको पूरी जानकारी देती रहना।

"हमें स्वीकार करना चाहिये कि स्वेच्छापूर्वक अल्पाहार करना बहुत मुश्किल बात है। समय-समय पर पूरा अुपवास करनेसे अिस तरहका स्थायी अुपवास ज्यादा कठिन है। अपनी अिच्छासे थोड़ा खाने-पीनेसे पूरी समताको यानी शरीर और मनके पूरे आरोग्यको प्राप्त किया जा सकता है। हमें तो कोशिश करनी ही चाहिये।"

आज 'मांगना और देना' (Seeking or Giving) नामकी अेक महत्त्वकी टिप्पणी 'हरिजन'में दी*—आप सहयोग कैसे कर रहे हैं, अिसके जवाबमें। सुबह अिसके बारेमें जरा चर्चा हुअी। शास्त्री टाअिपिस्ट कहने लगा : अिससे लोगोंको संतोष नहीं होगा।

बापू बोले : क्यों नहीं? असहयोगका अर्थ क्या? मैं तुमसे टाअिप कराता हूं, अिसका यह अर्थ नहीं कि मैं तुम्हारे साथ सहयोग करता हूं, बल्कि तुम्हारा सहयोग लेता हूं। पर तुम मुझसे कहो कि कल मेरे साथ सिनेमामें चलो और मैं चलूं, तो मैंने तुम्हारे साथ सहयोग किया या तुम्हें सहयोग

---

* देखिये 'हरिजन', भाग १, अंक १, पृष्ठ ७।

दिया। मुझे तो सैकड़ों चीजें अैसी प्रिय हैं कि अगर सरकार अुनमें मुझे सहयोग दे तो मैं अुसे स्वीकार कर लूं।

अिसके बाद मैंने पूछा : यह बम्बअीकी जो प्रतिज्ञा है अुसमें अैसी बात है कि लोग अिन धारासभाअोंसे भी प्रस्ताव पास करा सकते हों तो करायें। अिस प्रतिज्ञाके पालनके लिअे भी अुन लोगोंको सहयोग नहीं करना चाहिये ?

बापू : हां, वे तो करें, पर मैं कैसे कर सकता हूं? अिसलिअे तुम जो कहते हो, वह अिसका जवाब नहीं। मेरा जवाब तो जो मैंने अूपर कहा वही है। मैं तो हमेशासे सहयोग मांग रहा हूं। विलायत गया तब कुछ लोग क्या यह नहीं कहते थे कि वहां किस लिअे जा रहे हो? मैंने कहा था कि मेरा काम तो हमारा सारा मामला पेश करना है। अिसे वे लोग स्वीकार करें, तो हमारा अुनके साथ कोअी असहयोग नहीं।

दोपहरको मन्दिरों और गिरजोंके विषयमें बापूके अिस्तेमाल किये हुअे वाक्यके बारेमें शास्त्री कहने लगा : मैं तो कहता हूं कि संस्कारके केन्द्रोंके नाते मन्दिरोंका स्थान गिरजोंसे बहुत बड़ा है। मन्दिरोंके आसपास कलाका जो वातावरण होता है, वह गिरजोंके आसपास नहीं होता।

बापू : यह बात ठीक नहीं। मैं तुमसे सहमत नहीं हो सकता। मैंने कुछ सुन्दर अंग्रेजी गिरजे देखे हैं। लोगोंने अपनी सारी कला अुनमें अुंड़ेल दी है। मन्दिरोंको तो मैं अिस दृष्टिसे ज्यादा महत्त्वके मानता हूं कि देशके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तकके लोगोंको वे अेकताके सूत्रमें बांधते हैं। यह अेक समानता पैदा करनेवाला बल है। गरीब और अमीर, बूढ़े और जवान सैकड़ों मील पैदल चलकर वहां यात्रा करने जाते हैं और अेक ही मन्दिरमें अिकट्ठे होकर पूजा करते हैं। अिस तरह मस्जिदोंका स्थान भी मन्दिरों जैसा ही है। लोगोंको अेक करनेवाला यह बड़ा भारी बल है।

अिसके बाद आंबेडकर पर लिखे बापूके लेख* के बारेमें चर्चा हुअी। अवर्ण या वर्णबाह्य लोग वर्णकी ही अुपसंतान हैं, अिसके जवाबमें बापूने लिखा था : 'अंधकार जितनी प्रकाशकी या असत्य सत्यकी सन्तान है, अुससे ज्यादा नहीं।'

मैंने अिस पर आपत्ति की और अुनकी अुपमाको ठीक न बताकर कहा कि जातिको यदि आप अतिरिक्त अंग कहते हों, तब तो वह फसलमें अुग आनेवाले घासफूसकी अुपमाके लायक हो जाती है। वैसे जातिको सत्य और प्रकाशकी अुपमा

---

* देखिये 'हरिजन', भाग १, अंक १, पृष्ठ ३

देना तो बेहूदी बात लगती है। बापूने हमारे सुझावके अनुसार अुपमा बदल दी, पर अपनी अुपमा पर कायम रहे। अुन्होंने कहा कि प्रकाशके आसपास ही अंधेरा होता है। यह माननेकी जरूरत नहीं कि प्रकाशका निषेध ही अंधेरा है। वर्णमें जो बापदादोंका धंधा ही चुननेकी बात है, वह आजकलके लोगोंको खटकती है। मगर यह चीज तो हमारे रोम-रोममें रमी हुअी है। देखो तो छोटालालजी नामका जो लड़का आता है, वह क्या ढेरों पुस्तकें पढ़कर बोलता है? अुसमें यह पूर्व संस्कार है। खाने-पीने और ब्याह-शादीके प्रतिबंध न रहें, तो वर्ण-व्यवस्था कहिये तो वर्ण-व्यवस्था और जाति-व्यवस्था कहिये तो जाति-व्यवस्था बड़ी अुपयोगी वस्तु है।

१०-२-'३३

अप्पा पटवर्धनके बारेमें परसों मैं के खबर दे गया था कि अुन्होंने अुपवास शुरू कर रखा है। सुबह पता लगा था (मेजरसे) कि भंगी-कामके बारेमें सरकारका हुक्म हो गया है। अप्पा पटवर्धनको खबर दे दी जाय कि अुनका गांधीको लिखा हुआ पत्र नहीं दिया जायगा, पर अुन्हें भंगी-कामके लिअे सुपरिंटेंडेन्टको अर्जी देनी चाहिये। अिसलिअे कल सवेरे बापूने डोअिलको पत्र लिखा कि अप्पाके क्या समाचार हैं? और अिस मामलेमें सरकारका क्या हुक्म है? अिसका शाम तक कोअी जवाब नहीं आया। बापूने अिसकी याद दिलानेवाला पत्र आज फिर लिखा। अिसके जवाबमें मेजर ११ बजे बापूको भारत सरकारका अुत्तर पढ़वा गये। अिसमें यह अिजाजत मिल गअी कि कुछ शर्तों पर अूंचे वर्णके कैदियोंको अपनी अिच्छासे मेहतरका काम करने दिया जाय। साथमें डोअिलका पत्र था कि 'गांधीको अिस हुक्मकी नकल दी जाय। अिस हुक्मकी खबर मिलनेके बाद अुनके कलके पत्रका जवाब देनेकी जरूरत नहीं रहती!'

बापूने कहा : अच्छा तो अिस पत्रकी मुझे नकल दीजिये, मैं अुन्हें लिखूंगा।

मेजर कहने लगे : नकल तो नहीं दी जा सकती। अिसमें तो वे लिखते हैं कि कुछ भी नहीं करना है, अिसलिअे मुझे कुछ भी नहीं करना चाहिये।

बापू बोले : तो मेरा पत्र भले ही भेज दिया जाय।

पत्र गया।

आज 'हरिजन' छप गया। दो बजे शास्त्री प्रतियां लेकर आये।

सुबह जिला मजिस्ट्रेटका पर्सनल असिस्टेंट आया और आमके पेड़के नीचे घड़ी भर बैठा। अुसको बापूने कहा कि 'हरिजन' दुनियाको यह प्रश्न समझानेके लिअे निकलता है। अुसने पूछा: अिसमें हिन्दुओंके सिवाय दूसरोंको क्या दिलचस्पी हो सकती है?

बापू बोले: अितने बड़े सवालका निपटारा हिंसा किये बिना और कानूनकी मदद लिये बिना कर दिया जाय, तो अिसका असर दुनिया पर पड़े बिना रह ही नहीं सकता। अिस कानूनमें लोकमतको अमलमें लानेकी भी बात नहीं। यह कानून तो अस्पृश्यताके रिवाजको दी गअी कानूनी मंजूरीको रद्द करानेके लिअे और सामाजिक या धार्मिक अड़चन हो, तो वह बनी रहे मगर कानून प्रगतिमें बाधक न हो या सुधार करनेकी सच्ची अिच्छाको न रोके, अिसके लिअे है।

देवधरने अछूतोंके लिअे बस्ती बसानेकी योजनाकी चर्चा की। अिस बेचारेको यह भी पता नहीं था कि देहातियोंके साथ ओतप्रोत होनेके लिअे खादी-सेवक तैयार किये जाते हैं। अुसे कपास अुगानेसे लेकर अुसका कपड़ा बनाने तककी खादीकी अलग-अलग क्रियाओंके बारेमें सम्पूर्ण अज्ञान था। किसी विदेशी गोरे या कर्मचारीका अज्ञान अिससे अधिक नहीं हो सकता!

शाम तक अूपरके जरूरी मांगवाले पत्रका कोअी जवाब नहीं आया। अिसलिअे अब अिस बारेमें क्या किया जाय, अिसकी चर्चा हुअी।

बापू कहने लगे: मुझे तो शायद चौबीस घंटेका नोटिस देना पड़ेगा और कहना पड़ेगा कि पहलेकी तरह मैं 'सी' क्लासका खाना लेना शुरू करूंगा।

मैंने कहा: अिस बार तो विश्वासघात और सत्यका भंग हुआ है। अुन्होंने आज तक आपको अिस प्रकरणमें फंसा रखा, आपकी राय ली। अब आपको खबर तक नहीं देते, यह असह्य है। अप्पाके लिअे जब पहली बार आप लड़े तब अगर अुपवासकी जरूरत थी, तो अिस बार तो अुपवासकी और भी ज्यादा जरूरत मानी जायगी। और अिस बार तो अप्पा पूरा अुपवास कर रहे हैं या आधा, अिसका भी हमें पता नहीं।

बापू बोले: सच बात है। तो अुपवासका नोटिस दिया जाय।

वल्लभभाअी खूब चिढ़े: आप अिस तरह समय-असमय अुपवासके नोटिस दें, अिसका कोअी अर्थ नहीं। हजारों आदमी जेलमें पड़े हैं। और आप अेक अप्पाका प्रकरण पैदा होने पर अुपवास करके अुपवासको अिस तरह सस्ता बना देंगे, तो लोगों पर या सरकार पर अुसका कुछ भी असर

नहीं होगा। जरूरत हो तो सरकारको आप पत्र लिखिये, खवर मांगिये और फिर जवाव न आये तो नोटिस दीजिये। मगर जिस तरह चौवीस घंटेका नोटिस देना ठीक नहीं है।

वापूने सुन लिया। वोले : लोग क्या सोचेंगे, अिसका विचार नहीं किया जा सकता। मगर देखता हूं, सुवह तक मुझे कुछ न कुछ सूझ ही जायगा।

११-२-'३३

सुवह ३ वजे अुठकर अप्पाका सारा पत्र-व्यवहार निकाला और पत्र लिखा। अप्पाके मामलेमें डोअिल गवर्नरके पास हो आया, अुसके वाद अुपवास छुड़वानेके लिअे अप्पाके नाम वापूके दिये हुअे तारमें ही हमारा सारा मामला आ जाता है। अिस तारमें वापूने सरकारकी तरफसे अप्पासे अुपवास छोड़नेका अनुरोध किया था और भविष्यमें संतोष न हो तो दुवारा अुपवास करनेकी छूट भी रखी थी। यह सारा तार डोअिलकी सम्मति और आग्रहसे दिया गया था। यह तार अुद्धृत करके वापूने लिखा कि 'अप्पाको दुवारा अुपवास करनेका हक है, मुझे सुनानेका हक है और सरकारका मुझे खवर देनेका फर्ज है।'

यह पत्र सुवह आठ वजे दरवाजे पर भेजा गया। अुस दिनके पत्रका जो जवाव डोअिलने शामको दिया था, अुसे लेकर मेजरने कटेलीको भेजा। यह जवाव संतोषकारक नहीं था। वापूने अिस जवावका वर्णन किया: साफ झूठा आदमी डरकर जैसा अुड़ाअू जवाव देता है, वैसा ही अुड़ाअू जवाव यह है। वापूने भंडारीको खटखटाया: मुझे सही जानकारी देना अुसका फर्ज है। अुसके पास जानकारी न हो, तो वह मुझे नम्रतापूर्वक कह सकता था कि मैं जांच कर रहा हूं। मगर यहां तो वह विलकुल अुड़ाअू जवाव देता है। यह मैं सहन नहीं कर सकता। जव वह मेरे जैसे आदमीके साथ अिस तरहका वरताव करता है, तो वेचारे दूसरे मामूली कैदियोंकी क्या हालत होती होगी, अिसकी मैं कल्पना कर सकता हूं।

वापूने हठ पकड़ ली कि यह पत्र भले ही आ गया, मगर अिससे मुझे संतोष नहीं है। मेरा पत्र आपको सरकारके होम डिपार्टमेंटके सेक्रेटरीके पास तारसे भेजना ही चाहिये। और आप न भेज सकते हों, तो डोअिल तारसे भेजे।

आज रंगूनके संवंधमें . . . आ पहुंचे। कम्वख्तीकी कोअी हद नहीं। वापू अेक मामला सुधारते हैं, तो तेरह विगड़ते हैं। जिस लड़कीके वारेमें वे

विलकुल निश्चित हो गये थे, जिसे पितृतर्पणका फर्ज समझाकर, शारदा कानूनका रहस्य समझाकर अेक साल शादी मुलतवी कराअी थी और दो दिन पहले वड़ी शांति और संतोप प्रकट किया था, अुसने फिर तीसरा सवाल खड़ा कर दिया और वापूको सारे मामलेसे हाथ खींच लेने पड़े।

अहिंसाकी विजयके छोटे-छोटे दृष्टांत तो रोज देखनेको मिलते ही रहते हैं। सनातन धर्म अेजेंसीवालेने अपने पत्रमें से अपना चित्र निकाल डाला। अिसके वाद आसपासकी वेल निकाल डाली और अंतमें विलकुल सादे कागजों पर लिखना शुरू कर दिया। वापूकी मीठी आलोचना पर अुसने अितना तो अमल किया। अिससे अुलटे ज्यों-ज्यों वापू मिठास वढ़ाते जाते हैं, त्यों-त्यों . . . कड़वाहट वढ़ाता जाता है। मगर असलमें यह कहना चाहिये कि जैसे-जैसे वह कड़वाहट वढ़ाता जाता है, वैसे-वैसे वापू मिठास वढ़ाते जाते हैं। देखें आखिर कौन जीतता है?

दोपहरको कोदंडराव आये। अुन्होंने नीला नागिनीकी कअी वातें सुनाअीं। अेक आदमी अुसका संदेश लेकर आया। अुसकी भावुकता और पागलपन और नीलाके पत्रमें वापूके लिअे प्रयुक्त 'आदरणीय पुत्र' (My revered son) संवोधन आदि सब वातोंसे नीलाके वारेमें वापूको काफी भ्रम हो गया।

लक्ष्मण शास्त्री जोशी मालवीयजीका पत्र लेकर आये। लम्वे पत्रका सार यह था कि सनातन धर्मके लिअे आप जैसा चाहते थे, वैसा हो गया है। वंवअीके प्रस्तावका पालन करना है। मगर आप सत्याग्रहकी वातें करते हैं, यह करारका भंग है। और ये कानून तो वेकार हैं। हम धर्मके मामलेमें कानूनोंकी मांग कैसे कर सकते हैं? मालवीयजीकी कार्यपद्धतिकी वात करते हुअे लक्ष्मण शास्त्री कहने लगे : अुनके साथ काम करनेमें तो अड़चन नहीं होती। पर जिस वातको निवटानेमें आपके साथ आधा घंटा लगे, अुसमें मालवीयजीके साथ दो दिन लगते हैं! कानूनके वारेमें मालवीयजीने लक्ष्मण शास्त्रीमें कुछ वुद्धिभेद पैदा कर दिया मालूम हुआ। अुन्हें तो स्वभावके अनुसार लक्ष्मण शास्त्रीको अपने विश्वविद्यालयके लिअे रख लेना था। मगर अुन्होंने कह दिया : मेरा अपना विद्यालय है। मैं अिस तरह रास्तेमें थोड़े ही पड़ा हूं!

लक्ष्मण शास्त्रीके साथ वातें करनेके लिअे दूसरा समय देना पड़ा। क्योंकि जानकीवाअी, शांतावाअी और गोमतीवहन आ गअी थीं। अिनके साथ वहुत वातें कीं। कितने ही लोग वापूसे अनेक प्रकारका आश्वासन प्राप्त कर रहे हैं। 'संतप्तानां त्वमसि शरणम्।'

शास्त्री (नये) मुझे कहते थे कि 'मुझे बापू मकानके बारेमें पूछते थे। मैंने कहा तीन मकान हैं। अुनमें से अेक पसंद कर लूंगा। बापू बोले, मुझे यह तो बताओ तीन मकान कैसे हैं, ताकि मैं चुनावमें तुम्हारी मदद करूं।'

फिर सबकी तफसील मालूम की और अुसे तीस रुपयेवाला मकान पसंद करनेको कहा। दूसरे दिन सवेरे शास्त्रीने देखा, तो अुन्हें भी वही मकान सबसे अच्छा लगा! शास्त्रीने अपनी पत्नीको लिखा: 'मकान मिल गया है। लेकिन अुसे मैंने पसंद नहीं किया, महात्माने पसंद किया है।'

खुद बेघर होकर भी अनेकोंको अिस तरह घर ढूंढ देते हैं और कितनों ही के अुजाड़ भी देते हैं!

१२-२-'३३

आज सुबह बापू नीलाके बारेमें ज्यादा पूछताछ करने लगे। कोदण्डरावने किससे बातें सुनीं, अिसमें कौन-कौन मिले हुअे हैं, वगैरा। फिर हकीकत मंगवाने और अुसे लिखनेका विचार किया। सब कुछ सुनकर कहने लगे: कैसा हिन्दू धर्म है! अेक तरफ यह स्त्री हिन्दू बन गअी है। अिसके बारेमें सब बातें सच हों तो यह पाखंडकी पुतली है और हिन्दू नौजवान अिसके पीछे पागल बने फिरते हैं; दूसरी तरफ हिन्दू धर्मके शिखर पर विराजमान मालवीयजी; तीसरी तरफ आम्बेडकर; और चौथी तरफ मेरे अुपवासका ढिंढोरा पीटते हुअे राजाजी!

मैंने कहा: ढिंढोरा पीटनेवाले हरगिज नहीं कह सकते; यह कह सकते हैं कि अुन्हें अुपवासका डर बैठ गया है।

बापू बोले: अिसलिअे वे शोर मचाते ही रहते हैं न! मालवीयजीका यह कहना भी अुतना ही सच है कि अुपवासकी बातसे पूना-करार भंग होता है। क्या अिस तरह अुपवासकी बात होती होगी? और अुपवासके बारेमें क्या कहा जा सकता है? वह तो पक रहा है, मगर बिलके लिअे अुपवास हरगिज नहीं करना पड़ेगा। हो सकता है बिल अिस बैठकमें न आये और रद्द कर दिया जाय, तो भी अुपवास न करना पड़े। यह कुछ कहा जा सकता है? आज तो मुझे कुछ भी पता नहीं। वह भीतर ही भीतर पक रहा है। अुपवास तो अप्पा साहबके लिअे भी करनेका मन हो सकता है।

अितनेमें वल्लभभाअी आ गये। अुन्हें हिन्दूधर्मके अूपर कहे हुअे चार स्तंभ गिनाये। अिस पर गंभीरता मिटानेके लिअे वल्लभभाअी बोले: हिन्दूधर्म तो महासागर है। अिसके चार ही स्तंभ कैसे? और भी हैं। मेहरबाबा भी तो हिन्दू ही कहे जायंगे न? और अुपासनी महाराज और भादरणके पुरुषोत्तम भगवान!

अिसके वाद नीलाके नाम पत्र लिखवाया। (भूल गया। पत्र प्रार्थनाके वाद ही लिखवाया था।) अुसे नोटिस दिया कि तू सच्ची हो तो आ जा, ताकि तेरे वारेमें जो कुछ सुना है वह गलत है या सही, अिसका पता लगे। अपने पत्रोंसे तो तू अव विश्वास खो वैठी है!

राजाजीको भी लिखा कि मेरे अुपवासकी अिस तरह वातें करके आपने अुसका आध्यात्मिक मूल्य विलकुल घटा दिया है।

दोपहरको मैंने 'जनता' पढ़ा और शामको घूमते वक्त अुसका सार वापूको कह सुनाया। वह अखवार अैसा है कि अुसकी कुटिल दलीलोंके वावजूद अुसे चलानेकी अत्यन्त कुशल पद्धति और शैलीसे आदमी मुग्ध हो जाता है। वापूका वर्णन अेक वाक्यमें करके अुसने फिर अपना पहलेका सारा जहर अुगल दिया है: अुन्हें मंदिर-प्रवेशके वारेमें हमारी मदद चाहिये, तो हमें यह वचन दें कि वर्ण और जातियोंको तोड़नेमें हमारे साथ रहेंगे। मगर यह वचन न देकर भविष्यमें जाति-भंगमें हमारी मदद न करनेवाले हों, तो कल वननेवाले अिस शत्रुकी आज मित्रता किस कामकी? . . . . सनातनियोंका मंदिर-प्रवेशसे विरोध है। और गांधीजी हम दोनोंमें से अेकको भी संतुष्ट नहीं कर सकते।

मैंने कहा: वापू यों तो आपको सनातनियों और आम्वेडकर-वादियोंकी चक्कीके दो पाटोंके वीच पिस जाना पड़ेगा।

वल्लभभाअी: मगर पाटोंके वीच पड़ें तव न? मैं तो कहता हूं कि पाटोंमें पड़ना ही नहीं। कील पर वैठे रहें और दोनों पाटोंकी अेक दूसरेके साथ रगड़ होने दें। लेकिन अैसा करनेके वजाय आप तो सनातनियोंसे कहते हैं कि मैं सनातनी हूं और अिन लोगोंसे कहते हैं कि मैं स्वेच्छासे वना हुआ अस्पृश्य हूं। तव तो दोनों पाटोंके वीच पिसना ही पड़ेगा न?

प्रार्थना कर रहे थे कि कटेली आकर आअी० जी० पी० का मेमोरेन्डम दे गया: गांधीसे कह दो कि मैंने यकीन कर लिया है। पटवर्धन भंगीका काम कर रहे हैं और रोजमर्राका खाना ले रहे हैं। अुनकी तवीयत भी अच्छी है।

अितनी ही वात यह ढीठ आदमी परसों भी कह सकता था। मगर नहीं कही। कल भी नहीं कही। वापूकी लात खाकर आखिर ठंडा हुआ!

१३-२-'३३

वापूकी सनातनत्वकी व्याख्या: सनातनत्वका अर्थ है समयका कुछ भी खयाल न रखना! देवधरसे कहा: आप सच्चे सनातनी हैं — अनियमिततामें सिद्ध हो चुके हैं।

मालवीयजीकी आपत्तिके वारेमें वातें:

"जैसे अंगद और कृष्ण सुलहका पैगाम लेकर गये थे, वैसे ही हम अिन धारासभाअियों और सरकारके पास जाते हैं। न्यायकी मांग सव जगह

हो सकती है और वह भी शक्तिके साथ हो सकती है। न्यायकी मांग न करें, तो धर्मच्युत होते हैं। बम्बअीकी प्रतिज्ञामें क्या है? जहां तक हो सके वहां तक स्वराज्यसे पहले अस्पृश्यताको कानूनसे मिटायेंगे। जबरदस्तीसे कुछ भी नहीं करना है। अुपवाससे यह चीज़ नहीं करनी है। अुपवास तो मुझसे भगवान करायेगा। संभव है मैं मोहमें आकर अुसे अीश्वरप्रेरित कहूं। केलप्पनने मुझे कहा था कि दो दिनमें मंदिर खुल जायगा। तो भी मैंने अुससे कहा कि अन्यायसे शुरू हुआ अुपवास कैसे जारी रखा जाय? भले ही अुससे मंदिर तुरन्त ही खुल जाता हो।

"अब रही कानूनकी बात। मुझे तो अेक भी कानून नहीं चाहिये। मैं तो अराजकतावादी (अनार्किस्ट) हूं। मगर कानूनमें रहकर वैसा बनना चाहता हूं। यहां तो कानूनको मिटानेके लिअे कानून बनाना चाहते हैं। आज अदालतका फैसला ही श्रुति (वेद) बन गया है। अिस श्रुतिका भगवान सरकार है। अिसलिअे सरकारसे कहते हैं कि अिस श्रुतिको रद्द करो। अब पहले बिलको लो। धर्मकी आज्ञाके भंगकी सजा अदृष्ट शक्ति देगी, राजाके पास वह सत्ता नहीं है। भले ही, सम्पूर्ण हिन्दू राज्य अैसी सत्ता पा ले। पर यहां तो धर्मकी आज्ञाके भंगकी सजा सरकार देती है। यह बड़ा अन्याय है। अिसे दूर कराकर धर्मका पालन करना है। अुसे कहां तक मुलतवी रखें? खिचड़ीकी तरह धारासभा हो, अरे मुसलमानी हुकूमत हो, तो अुससे भी यह चीज करा सकते हैं। आज तो हम धर्मका पालन नहीं कर सकते। ट्रस्टी जहां तैयार हैं, वहां भी कानून अुन्हें मंदिर नहीं खोलने देता। अब मैं कहां जाअूं? अिसलिअे यह बिल है। अिस बिलके पास होनेसे अस्पृश्यता माननेवाले किसीको अस्पृश्यता छोड़नी नहीं पड़ती। मैं तो आज ही लिखकर देनेको तैयार हूं कि जब तक सनातनी मंदिर खोलना नहीं चाहें, तब तक अुनसे जबरदस्ती नहीं खुलवाने हैं।

"देशविरोधी सरकारसे भी लड़कर न्याय प्राप्त किया जा सकता है। प्राप्त करना धर्म हो जाता है। मालवीयजी तो युधिष्ठिर हैं। वे सदा संदिग्ध रहते हैं। अुन्हें हमेशा धर्मपालनकी अितनी लगन होती है कि अकसर अुनसे धर्मपालन होता ही नहीं। व्यासकी अैसी अद्‌भुत शक्ति है। युधिष्ठिरको दुर्बल जैसा बना दिया, पर वे धर्मराज हैं। अिसी तरह मालवीयजी भी धर्मराज हैं। अुनका त्याग हो ही नहीं सकता। अुनका मुझ पर अपार प्रेम है, और जब वे हारते हैं तब कहते हैं कि मैं जो करता हूं अुसमें कुछ न कुछ तथ्य होना चाहिये।"

अणेके जवावमें: "मैं सेनापति नहीं रहा। मैं तो मृतदेह हूं। मेरी सिविल मौत हो चुकी, अिसलिअे मैं सेनापति नहीं रहा। अितना ही नहीं, सिपाही भी नहीं रहा। आपके सेनापति और सिपाही सब बाहर हैं। संशयवालोंको मैंने कहा है—'यो ध्रुवाणि परित्यज्य' वगैरा। अिससे ज्यादा स्पष्ट कौन करे? सरकारने मेरे वचनोंका ठीक अर्थ किया है।"

कअी वार बापू अेक-दो वाक्योंमें सूत्ररूपसे अद्‌भुत सत्य कह देते हैं, मानो ये सत्य अुनकी वाणीमें से अनायास निकल पड़ते हैं। अुर्मिलादेवीको पचासवें जन्मदिनके निमित्त लिखे हुअे पत्रके ये दो-तीन वाक्य ही ले लीजिये:

"शरीरके आरामका अधिकारी कोअी नहीं। आत्माका आराम हमेशा संभव है। अपनेमें अैसा संकल्प होना चाहिये। यही अनासक्तियोग है। जो अनासक्तिसे काम करता है, वह शरीरसे थकता नहीं और थके तो तुरंत सो जाता है और अपार आराम ले लेता है। अनासक्तिके कारण आत्माको तो आराम ही रहेगा।"

. . . अपनी स्त्रीसे तंग आकर . . . बहन और दूसरी दो घरमें रखी हुअी लड़कियोंको स्त्रीके रखे हुअे हत्यारे न सतायें, अिसके लिअे पठान रखना चाहता है। अुसे बापूने लिखा:

"पठान रखनेकी वात भूल ही जाना। अपनी स्त्रीके हाथों मार खाकर रोष न आये, तो खुशीसे नाचना चाहिये। स्त्रियोंको मारनेवाले पति फी सैकड़ा जितने निकलेंगे, अुतनी १०००० में अेक स्त्री भी नहीं निकलेगी, जो पतिको मारती या मरवाती हो। . . . भले ही अिस अल्प संख्यामें से हो। तुमने जो ज्ञान सीखा है, अुसका अुपयोग करना।"

यह दलील अहिंसाके व्यवहारमें कितनी व्यापक बनाअी जा सकती है?

१४-२-'३३ आम्बेडकर और 'टाअिम्स' के अिस बयान पर केलकरने आपत्ति अुठाअी है कि गुरुवायुरकी मतगणना गांधीके अुपवासकी धमकीसे सफल हुअी। वे कहते हैं कि जो अुपवास भविष्यमें होनेवाला है, अुसकी क्या वात की जाय? यों तो गांधीके जीते जी कोअी मतगणना सही हो ही नहीं सकती!

केलकरको पता ही नहीं था कि छोटे विलमें मंदिरका निर्देश ही नहीं। अुस विलकी वुनियादी चीज यही है कि अस्पृश्यताके साथ राज्यका कोअी संबंध नहीं।

बापू: मद्रासकी हाअीकोर्टने अस्पृश्यताको कानूनी मान्यता दे दी है। मैं तो कहता हूं कि समझदार हों तो वे पहला विल पास करें।

केलकर: अस्पृश्यताके आधार पर खड़ी की गअी सब बाधाओं दूर करनेकी यह बिल कोशिश करता है। ब्राह्मण और अस्पृश्यके बीचकी शादीके बारेमें आप क्या कहते हैं?

बापू: केवल अस्पृश्यताके कारण वह गैरकानूनी नहीं ठहरनी चाहिये।

केलकर: आटेमें पानी पड़ जाय तो अुसे स्वीकार करनेके सिवा दूसरा कोअी चारा नहीं। अिस सिद्धांतसे वह कानूनी समझी जा सकती है।

बापू: मैं तो चाहता हूं कि अस्पृश्यताके होते हुअे भी वह कानूनी मानी जाय।

केलकर: मैं बारह सालसे अेक तरीका सुझा रहा हूं, जिससे सनातनी और सुधारक दोनोंको मैं ठंडा कर सकता हूं। मेरी सूचना है कि अस्पृश्यों और दूसरे सभीको मंदिरमें अेक खास हद तक जाने दिया जाय। किसीको नैवेद्य रखना हो तो वह पुजारीको दे और अुसे मूर्तिके सामने रखनेका और मूर्तिकी पूजा करनेका हक सिर्फ पुजारीको ही हो। मेरे तरीकेमें सिर्फ स्पृश्योंका ही मन्दिरमें ज्यादा आगे जानेका हक मर्यादित हो जाता है।

बापू: मैं समझता था कि यह काशीनाथकी अपनी सूचना है। पर बेटेने बापकी सूचना अपना ली दीखती है।

केलकर: हमें आम्बेडकरको छोड़ देना चाहिये। मेरे खयालसे तो अुसने अपना सेर भर मांस आपसे ले ही लिया है। मंदिर-प्रवेशके बारेमें अुसकी धृष्टतापूर्ण लापरवाही बेहूदी है। मेरी सूचना पर ही अेकाग्र होकर अुसे क्यों आगे न रखा जाय? स्पष्ट समझौतेके रूपमें अिसे पेश कीजिये, आप जैसा अकसर करते हैं वैसे अेक अनायास की हुअी सूचनाके रूपमें नहीं।

बापू: आपकी बात ठीक है।

केलकर: अच्छा अब दूसरा सवाल। आप अिस बिलको अितना महत्त्व किस लिअे देते हैं?

बापू: बम्बअीका प्रस्ताव जो है।

केलकर: व्यक्तिगतरूपमें मैं बिलके पक्षमें हूं। वह ट्रस्टियोंकी अेक मुश्किल दूर करता है। लेकिन बिलकी क्या जरूरत है? अिसके लिअे हम लोकमत क्यों न तैयार करें?

बापू: जो कानून मौजूद है, अुसका तुरन्त अिलाज करनेकी जरूरत है; और दूसरी तरहसे अुसका अिलाज हो नहीं सकता। हम कितना ही लोकमत तैयार करें और अिस सुधारके पक्षमें बहुमत भी हो जाय, तो भी अेक आदमी कानूनका आश्रय लेकर बहुमतकी रायको कार्यरूप देनेमें रुकावट डाल सकता है। मदूराके ट्रस्टियोंकी मिसाल लीजिये। अिस मुद्दे

पर बड़े बहुमतसे अुनका चुनाव हुआ है। फिर भी वे लोग मंदिर नहीं खोल सकते। मौजूदा कानूनने लोकमतकी प्रगति और लोकमतके विकासको रोक दिया है। अछूतोंको जहां कानूनसे अलग रख दिया गया है, वहां कोअी भी प्रगति कैसे हो सकती है? मैं यह नहीं चाहता कि कानून यह कहे कि 'तुम्हें मंदिर खोलना ही पड़ेगा।' किन्तु औरोंको अंतःकरणकी स्वतंत्रता तो देनी ही चाहिये न?

केलकर: मान लीजिये कि आप दो साल ठहर जायं और अितने अर्सेमें मंदिर-प्रवेशको जीता जागता सवाल बना दें। धारासभाके मौजूदा सदस्य अिस सवाल पर चुनकर नहीं आये हैं। शारदा-बिलके समय अणेने यह सवाल अुठाया था कि राज्यको व्यक्तियों पर लागू होनेवाले कानूनके बीचमें नहीं आना चाहिये। मैं यह तो नहीं कहता। मैंने अुनसे यह कहा था कि हिन्दू लॉ व्यक्तियों पर लागू होनेवाला कानून है; दत्तक और विवाह संस्कार हैं, लेकिन अिनके साथ ही सिविल हक जुड़े होते हैं। अिस बारेमें कोअी झगड़ा पड़ जाय, तो अुसे कानूनकी अदालतमें ले जाया जाता है। दत्तक पुत्रको पिंड देनेकी जितनी गरज होती है, अुससे ज्यादा विरासतकी जायदाद लेनेकी गरज होती है। अदालत मुसलमान जजोंकी बनी हो, तो भी अुनके फैसले माने जाते हैं। मैंने अणेसे कहा था कि यदि आप हिन्दुओंको कानूनकी अदालतमें जानेसे ही रोकते हों, तो सुझानेको मेरे पास कोअी विकल्प नहीं है। अणे सहमत न हुअे। आज वे भी अिन बिलोंके विरुद्ध हैं। दूसरे चुनावके समय अिस चिजको खास मुद्दा बनाना चाहिये। सनातनियोंकी आपके खिलाफ शिकायत है। वे कहते हैं कि ये लोग अिस सवाल पर नहीं चुने गये हैं। और अिनके सामने आप यह बिल लाते हैं, अिसमें हमें नुकसान है। अिसलिअे आपने गलत समय चुना है।

बापू: यह चीज अैसी है कि अिसे हम मुलतवी रख ही नहीं सकते। जैसा आप कहते हैं, सनातनियोंने खुद ही अदालतका फैसला लिया है। हमें अिस फैसलेका अिलाज करना ही चाहिये। शुद्ध धार्मिक रिवाजके सवालको लेकर अुन्होंने अदालतके पास जाना पसंद किया। अुन्हींकी यह करतूत है, अिसलिअे वे हमसे नहीं कह सकते कि जब तक मेरे अपने लिअे तीसरी (स्वराज्यकी) ही लड़ाअी जारी है, तब तक मुझे अिन्तजार करना चाहिये। स्वराज्यमें भी मैं धार्मिक मामलोंमें पार्लियामेंटके कानूनोंकी रक्षा नहीं लेना चाहूंगा।

केलकर: मैं अिससे सहमत हूं। बहुमतकी जो राय हो, अुससे मैं बंधा हुआ हूं। सनातनियोंको अपने विचारोंके लिअे बहुमत बनानेका अधिकार है।

वापू: मैं तो सनातनियोंसे प्रार्थना कर रहा हूं कि वे मेरे साथ समझौता कर लें। पर वे तो मेरे पास तक नहीं फटकते। मद्रासकी सेंट्रल हिन्दू कमेटीने जो बयान दिया है, सो देखिये।

वापूने भावेके वारेमें पूछा। केलकरने खिलखिलाकर हंसते और हंसाते हुअे कहा: यह वात सच है कि भावेने प्रायश्चित्त किया, मगर जहां संचालककी ही शामत आ गअी हो, वहां वेचारा सम्पादक क्या करे? मैं सहभोजन कर आया था, अिसलिअे मुझसे प्रायश्चित्त कराना चाहते थे। हमारे गोत्रका पंडित दुःखी हुआ, मगर क्या करे? श्राद्धका दिन आया, तव तेरी भी चुप और मेरी भी चुप। मैंने अुससे कहा कि तुम्हें याद आयेगा कि यह तो कल सहभोजन करके आया है और अिसने प्रायश्चित्त नहीं किया। और मुझे खयाल होगा कि क्या यह वही पंडित है, जो कल मुझसे प्रायश्चित्त कराना चाहता था? फिर भी श्राद्ध तो होना ही चाहिये। अिसलिअे मेरे वड़े भाअीने, जो धुलियामें हैं, श्राद्ध किया। मैं विलायत गया, तव पुरोहित तीर्थका जल लेकर आया और मुझसे कहने लगा, लो तीर्थका जल पी लो।

मैंने कहा: मुझे आपत्ति नहीं। मैं वापस आया, तव भी वह तीर्थका जल लेकर मौजूद था। मैंने कहा, मुझे आपत्ति नहीं। लेकिन यह तीर्थजल तो मैं जैसे हमेशा लेता हूं, वैसे ही ले रहा हूं। अिसे प्रायश्चित्तके रूपमें नहीं लेता। अव मेरी स्त्री सनातनी विचारकी है। अुसने और अिस पुरोहितने अिस चीजको प्रायश्चित्तके रूपमें समझा हो, तो भले ही समझें। मेरे दिलमें वह प्रायश्चित्त नहीं था!

आज रातको वर्णाश्रमधर्म पर वात निकली। अिसके वारेमें वापूने वल्लभभाअीको लंबी चर्चा करनेका वचन दिया था। तिस पर आज आम्वेडकरका वयान अखवारोंमें आया था। अुस पर वापूने लम्बी मुलाकात दी। अुसका सार सुनाते हुअे वापूने अपनी कल्पना सामने रखी:

"जातियां हैं ही नहीं, न होनी चाहियें। सिर्फ चार वर्ण रहने चाहियें। आजकल तो चार वर्ण भी नहीं रहे। वर्णोंका संकर हो गया है। ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य अपना धर्म नहीं पालते। और शूद्र भी अपना सेवा-धर्म निःस्वार्थ भावसे नहीं पालते। अिसलिअे वर्णोंका संकर हो गया है। हम सव शूद्र हो गये हैं, अिस अर्थमें मैं आम्वेडकरके साथ सहमत हूं। लेकिन अगर हम जाग्रत हो जायं, तो अिस वर्ण-संकरमें से सच्चे वर्णाश्रमधर्मका अुदय हो सकता है। भले ही वेदमें से अैसा कोअी वाक्य मिल जाय कि अूंच-नीचका भेद था, किंतु मैं तो शुद्ध वर्णधर्ममें अूंच-नीचका भेद देखता ही नहीं। अिसी आशासे आज जी रहा हूं कि यह शुद्ध वर्णधर्म हम किसी दिन फिर स्थापित कर सकेंगे।"

मैंने पूछा: दयानन्दकी आर्यत्वकी भावना क्या बुरी थी?

बापू बोले: अुसमें तो यह बात जरा भी नहीं। हम आर्य बन गये यानी दूसरे अनार्य और म्लेच्छ रह गये; और सब आर्य बने तो जब मर्जी हुअी तब ब्राह्मण बन गये और जब मर्जी हुअी तब शूद्र और वैश्य बन गये।

मैंने कहा: अुन्होंने तो सारे धर्मको लड़ाका धर्म बना दिया। अिसलिअे वैदिक धर्मके सिवाय दूसरे सब धर्मोंके प्रति तिरस्कार और अनार्योंके प्रति तिरस्कारकी भावना भी अुसमें आ गयी। अिसे हम निकाल नहीं सकते?

बापू: यह किस तरहसे निकाली जा सकती है? आर्यत्वकी भावनामें ही दूसरेको अनार्य माननेकी भावना समाअी हुअी है।

वर्णधर्म और आश्रमधर्म अेक दूसरेसे गुंथे हुअे हैं। कितने ही समय तक मैं वर्णाश्रम-वर्णाश्रम चिल्लाता था, पर यह नहीं जानता था कि दोनों अेक दूसरेके साथ गुंथे हुअे हैं। आश्रमधर्मके बिना वर्णधर्म संभव ही नहीं हो सकता। आश्रमधर्मकी सारी अिमारत संयम पर खड़ी है — शुरूमें मां-बाप और गुरु संयमकी तालीम दें और अनिवार्य रूपमें संयमका पालन करावें। अन्तमें वानप्रस्थ होकर खुद संयम पालें और सन्यासी होकर तो सर्वस्व ही अीश्वरार्पण कर दें। यह हो तो शुद्ध वर्णधर्मका पुनरुद्धार हो जाय। ब्राह्मण ब्रह्मज्ञान प्राप्त करें और ब्रह्मज्ञानका ही प्रचार करें, तो वणिक अपने आप वणिक धर्म पालेंगे — ये लोग कमायेंगे, धनवान बनेंगे, लेकिन धनका अुपयोग समाजके लिअे करेंगे।

मैं: तो क्या शूद्र सेवा ही किया करेंगे?

बापू: हां, पर ब्राह्मण शूद्रोंका अुतना ही आदर करेंगे, जितना दूसरे ब्राह्मणोंका करेंगे। शूद्रको ज्ञान नहीं मिल सकता, अैसा नहीं है। तुलाधारका ज्ञान कैसा था? यह कहावत हो गअी कि ज्ञान लेना हो तो तुलाधारके पास जाओ। व्यासने यह चीज अिस ढंगसे पेश की है कि आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है। महाभारतको पढ़नेका तो समय नहीं है, नहीं तो पांच-सात बार पढ़ूं। अुसमें से तो रसकी घूंटें निकलती हैं और नित्य नअी-नअी बातें जाननेको मिलती हैं। वह त्रावणकोरवाला महाभारतकी खूबी बताने तो गया ('भारतवर्षका स्थायी अितिहास' में), पर बादमें यह पुस्तक पूरी ही नहीं कर सका। जो महाभारतको अितिहासका ग्रंथ साबित करना चाहेगा, वह असफल रहेगा। वह तो अेक महाकाव्य है, जिसमें कविने आदर्श समाजकी अपनी अुत्तमसे अुत्तम कल्पना दी है।

आदर्श आश्रमके जरिये किसी दिन अिस वर्णाश्रमकी फिरसे स्थापना करनेका हेतु जरूर है। आज तो आश्रममें हम सब जड़वत् पड़े हैं।

पर शुभ हेतुसे पड़े हैं, अिसलिअे कोअी न कोअी तो निकलेगा ही। दक्षिण अफ्रीकाकी मंडली बनाअी, तब भावना यही थी। आज अुनमें कोअी अैसा न दीखता हो, पर सारी भावना शुद्ध वर्णाश्रमधर्म — आध्यात्मिक 'कम्युनिज्म' — किसी न किसी दिन स्थापित करनेकी थी। आश्रमसे विनोबा जैसा कोअी शुद्ध ब्राह्मण निकलेगा और सच्चा ब्रह्मज्ञान देगा, तो बाकीके वर्णोंके धर्म अपने आप प्रगट होंगे। सारे धर्मके पुनरुद्धारकी बुनियाद ही संयम है। यह कल्पना है कि श्वेत हिमालयमें तपश्चर्या कर-करके हजारोंकी हड्डियां गल गअीं, अिसलिअे वह सफेद हो गया। जहां सच्चा वर्णधर्म पाला जाता होगा, वहां पराधीनता हो ही नहीं सकती।

मैंने पूछा: अैसा धर्म तो कभी पाला ही नहीं जाता था — पिछले पांच हजार वर्षमें भी नहीं पाला जाता होगा?

बापू: मान लो न पाला गया हो, तो भी प्रजाके जीवनमें पांच हजार वर्षकी गिनती ही क्या है? अब भी किसी दिन पाला जायगा, यह स्वप्न सेवन करने लायक तो जरूर है। वैसे, पांच हजार वर्षमें वह पाला न गया हो, यह बात हरगिज नहीं है।

मैंने कहा: व्यक्तियोंने पाला होगा, जैसे यह कहा जा सकता है कि आज भी व्यक्ति अुसे पालते हैं। जैसे दो हजार वर्ष पहले अीसा हो गये। अुनका अुपदेश किसी समाज या समूहने नहीं अपनाया, लेकिन व्यक्ति अुसे पालते हैं।

बापू: ठीक है; कुछ अीसाअी कहते हैं न कि अीसाका असली अवतार और सच्चा अीसाअी धर्म तो अभी आना बाकी है? तो भी यह याद रखना चाहिये कि अितना होने पर भी हिन्दू धर्म पांच हजार वर्षसे खड़ा है। महाभारत कब लिखा गया यह मालूम नहीं। किन्तु यह माननेका जी करता है कि यह धर्म अेक समय पाला जाता था और अुस समय पराधीनता नहीं थी। आज भी हम अिस धर्मके बारेमें अैसी बातें कहते हैं, यह क्या बताता है? अिस चीजको दूसरे देशोंमें कोअी नहीं मानेगा, नहीं समझेगा। यह बताता है कि यह धर्म अभी जीवित है, और आगे ज्यादा सजीव बननेवाला है।

१५–२–'३२

सुबह वर्णाश्रमकी बातें आगे चलीं। बापूने फिर संयम-धर्म और सेवा-धर्म पर जोर दिया और कहा: सब संयमी बनकर अपना-अपना काम सेवाभावसे करने लग जायं, तो वर्णाश्रमका पुनरुद्धार अशक्य नहीं है। चूंकि यह कल्पना है कि

आश्रममें सब कुछ सेवाभावसे होगा, अिसलिअे अुसके द्वारा वर्णाश्रमके पुनरुद्धारकी मैं कल्पना करता हूं।

होरका आखिरी जवाब: हमें जब तक यह यकीन न हो जाय कि सविनय कानूनभंग फिर नहीं होगा, तब तक कैदियोंको नहीं छोड़ेंगे।"

बापू बोले: ठीक है।

'ट्रिब्यून'ने बापूको छोड़नेकी बातोंके सम्बन्धमें यह राय दी कि जब तक कांग्रेसके साथ समझौता करनेकी अिच्छासे अिन लोगोंको न छोड़ा जाय, तब तक छोड़नेमें कोअी अर्थ नहीं। और यह आशा रखना फिजूल है कि गांधी सविनयभंग नहीं करेगा, सिर्फ अस्पृश्यताका ही काम करता रहेगा। यह लेख बापूको बहुत अच्छा लगा।

बापू: होर पार्लमेण्टेरियन है, दृढ़ है, बहादुर है और आग्रही है। अिसलिअे सबसे निपट लेता है।

सब साथियोंको छोड़ दिया जाय और अन्तमें अकेले रह जायं तो कैसी सुखद स्थिति हो, अिसका जिक्र करते हुअे बापू कहने लगे: जोन ऑफ आर्क, रिडली और लेटिमरको अैसी ही हालतमें जलाया होगा न?

१६-२-'३३

पहलेके जमानेमें सत्यकी खातिर सत्याग्रहियोंको जो कष्ट सहन करना पड़ा है, अुसके मुकाबलेमें आजकल कुछ भी सहन नहीं करना पड़ता, यह सेण्ट पालके बारेमें रेव० होमके लिखे अेक लेखसे मालूम होता है:

"बहुत बार मैं मौतके किनारे पहुंच गया हूं। यहूदी लोगोंने पांच बार तो मुझे चालीस-चालीस कोड़े लगाये। तीन बार रोमनोंने मुझे मारा। अेक बार मुझ पर पत्थरोंकी वर्षा हुअी। तीन बार मेरी नाव टूट गअी। अेक बार तमाम दिन और रात मैं समुद्रमें भटकता रहा। मैं सफरमें भटकता ही रहता हूं। नदियोंमें मुझे तूफानोंका सामना करना पड़ा है। लुटेरोंका जुल्म मैंने सहा है। यहूदियों और जेण्टाअिलों (गैर-अीसाअियों)के अत्याचार मैंने सहे हैं। शहरोंमें और जंगलोंमें और अिसी तरह नदियोंमें और समुद्रोंमें मैंने मुसीबतें अुठाअी हैं। कितनी ही सख्त मेहनत मैंने की है। नींदके बिना रातें गुजार दी हैं। भूख-प्यास और सरदी-गरमी बरदाश्त की है। पहनने-ओढ़नेको कुछ मिला नहीं। अैसी तो कितनी ही यातनाअें मैंने भोगी हैं।"

अस्पृश्यता-निवारणमें यह सब सहन करना पड़े तो भी क्या? अभी तो अिसका सौवां भाग भी सहन नहीं करना पड़ा।

मालवीयजीका लम्बा तार आया। पहले अुनका पत्र तो आया ही था। वाअिसरॉयका भी जवाब आया कि बिलोंको लोकमतके लिअे घुमाये बिना काम नहीं चल सकता। बापूने तुरंत ही 'Agreeing to Differ' ('हमारा मतभेद') नामका लेख 'हरिजन' के लिअे लिखवाया और सारा पत्रव्यवहार प्रकाशित कर दिया।* शामको अिस विषय पर चर्चा हुअी। वल्लभभाअी खूब नाराज हो रहे थे।

बापूने कहा: हम लड़ते नहीं, तो भी आप चिल्लाकर बोलें तो किसीको लग सकता है कि हम लड़ रहे हैं। तो धीमी आवाजसे क्यों नहीं बोलते? अिससे बीसवें भागकी आवाजसे बोलें तो भी मैं सुन सकता हूं और हम चर्चा कर सकते हैं। मालवीयजीने तारमें कहा है कि मंदिरोंके लिअे कानून बनानेकी बात नहीं, बल्कि कुओं वगैराके लिअे ही है, अैसा प्रस्तावसे मालूम होता ह।

वल्लभभाअी बोले: यह ठीक है।

बापू बोले: यह ठीक नहीं। २६ तारीखके प्रस्तावमें कानूनसे हकोंको मान्यता देनेकी बात है, जब कि हम कानूनसे अस्पृश्यताका नाश करना नहीं चाहते। और ३० तारीखके प्रस्तावमें तो तत्काल मंदिर खोलनेकी बात है और वह समझाकर करना है। अब कानून क्या यह समझाअिश नहीं है? और समझाना भी बेकार हो जाय और वह कानूनके न होनेसे बेकार हो जाय तो?

मगर वल्लभभाअीने अपनी बात जारी रखी: जब ये सब विरुद्ध हैं, तब अिस चीजको कहां तक जारी रखेंगे? अब तो बिल दो साल तक खटाअीमें पड़ गया। स्वराज्य पार्लियामेंटके बिना वह हरगिज नहीं पास होगा। और जो अुस वक्त दो मिनटमें हो जायगा, अुसके लिअे अितनी मेहनत क्यों? अगर स्वराज्य आनेसे पहले यह होता हो, तो मैं विरोध नहीं करूंगा। पर मुझे यह विश्वास है कि अब कुछ भी नहीं होगा।

बापू: पर स्वराज्यकी धारासभा अैसी आयेगी यह आपको विश्वास है? मुझे तो नहीं है। मुझे तो विश्वास है कि आगे भी हांजी-हांजी करनेवाली धारासभाअें आयेंगी! अिसलिअे हमें तो जो कोशिश करनी है, वह करते ही रहना चाहिये।

वल्लभभाअी : मगर अब लोकमतके लिअे बिलके सर्क्युलेशनमें जानेके बाद क्या कोशिश करनी है? और बादमें आप क्या करेंगे?

---

* देखिये 'हरिजन', भाग १, अंक २, तथा 'हरिजनबंधु', भाग १, अंक १।

वापू : यह आजसे क्या कहा जाय? सोचेंगे और जो करना ठीक लगेगा वह करेंगे। कुछ न कुछ सूझ ही जायेगा। हमने अितना प्रयत्न किया और मंदिर नहीं खुले, तो अिससे क्या? अेक भी कदम व्यर्थ नहीं गया। कोअी हार नहीं खाअी। जब तक हमारा मन नहीं हारता, तब तक हार कहां है?

और आप यह तो जानते ही हैं न कि मैं हरिजनोंका काम छोड़ दूं, तो आम्वडेकर ही मुझ पर टूट पड़े? और जो करोड़ों वेजवान हरिजन हैं अुनका क्या हो?

वल्लभभाअी : अुनका प्रतिनिधि कहता है कि हमें मंदिर नहीं चाहिये। अुसे प्रतिनिधिके रूपमें आपने कायम किया। अब आप यह नहीं कह सकते कि वह हरिजनोंका प्रतिनिधि नहीं है।

वापू : मैं प्रतिनिधि हूं न? और अिन लोगोंकी गरज मैं जानता हूं न?

मद्रासमें हरिजनोंकी भी अेक चौरासी (चौरासी जातियोंका समूह) है! जैसे ब्राह्मणोंकी, वैसे अिनकी भी चौरासी है। अिनमें से कुछ जातियोंका तो नाश हो रहा है, कुछकी आवादी हजार दो हजार भी नहीं रही, और कुछकी तो सौ भी नहीं है। शास्त्रीसे कुछके बारेमें अितनी जानकारी मिली। 'परैयन' नामकी अंत्यजोंकी हलकीसे हलकी कहलानेवाली जाति है। अिसकी आवादी ११ लाख है। मगर अिनके धोवियोंकी तरह काम करनेवालोंकी पुतीरेवन्नान नामकी जाति है। अुसकी आवादी मात्र ७४ रह गअी है। अिसका कारण यह है कि अिन धोवी लोगोंका अितना सख्त बहिष्कार है कि ये वेचारे रातको दो वजे परैयनोंके यहां जाते हैं, परैयनोंने कपड़े वाहर रखे हों तो धोनेको ले जाते हैं और दूसरे दिन रातको धोकर वाहर रख जाते हैं! वारह वजेके वाद जाते हैं, क्योंकि वारह वजे जायं तो अुस वक्त कोअी न कोअी तो जागता मिल सकता है!

अिससे अुलटे 'वल्लुवान' नामकी अछूतोंका जाति हैं जो अछूतोंके गुरु हैं। अुनकी आवादी अभी तक ५९ हजार है और वे अच्छी तरह टिके हुअे हैं। शिकारियों और पारधियोंको वाल्मीकि कहते हैं। जिस वाल्मीकि रामायणमें से ब्राह्मणियां शनिवारको अेक प्रारम्भिक प्रकरणका पारायण करती हैं, वह रामायण अिसी जातिकी है। अिन लोगोंकी आवादी ४२०० रह गयी है!

प्रूफ सुधारने और छापनेकी वात निकलने पर वापू वोले : लेड डालने और निकालनेकी प्रथा हमारे यहीं है सो वात नहीं। मैंने यह हरवर्ट स्पेन्सर जैसोंकी पुस्तकमें भी देखा है। मेरा खयाल है कि अुस

आदमीको पेज बंध जानेके बाद भी प्रूफमें बहुत कुछ सुधार करनेकी आदत होनी चाहिये।

आज सवेरे वल्लभभाअी पूछने लगे : आपके वर्णाश्रमधर्ममें अिन क्षत्रियोंका क्या होगा? हथियार तो कोअी अुठायेगा ही नहीं?

१७–२–'३३

बापू : हां, नहीं अुठायेगा। यह व्याख्या कहां है कि जो हथियार अुठाये वही क्षत्रिय है? क्षत्रियकी व्याख्या तो यह है : जो औरोंकी रक्षा करे और रक्षा करते हुअे प्राण देनेको तैयार हो वह क्षत्रिय। वैसे यह कल्पना नहीं है कि दुनिया अहिंसासे चलेगी। यह शरीर ही हिंसाकी मूर्ति है, अिसलिअे अिसे कायम रखनेके लिअे भी बहुतसी हिंसाकी जरूरत रहेगी। पर ये क्षत्रिय भी कमसे कम हिंसा करेंगे।

मैंने कहा : तब ब्राह्मण तो संस्कार कराते ही रहेंगे न? और संस्कार करायेंगे तो दान-दक्षिणा भी लेते रहेंगे?

बापू : नहीं, ये तो हम सब बदल देंगे। दान-दक्षिणा कैसी? ब्राह्मण विद्वान हों, पंडित हों और अिस विद्या तथा पंडिताअीका प्रचार करें, तो खाने लायक मिल जायगा। पुराने जमानेमें भी कोअी ब्राह्मण धनवान था, अैसा मालूम हुआ है?

मैं : लेकिन पुराण तो ब्राह्मणोंके दान-दक्षिणा लेनेके अधिकारोंकी बात कहते हैं। अिन सब पुराणोंको हमें छोड़ देना पड़ेगा न?

बापू : नहीं, किस लिअे छोड़ेंगे? केवल अुनका अुतना भाग छोड़ देंगे। भागवत भी तो पुराण ही है न! अुसके अेकादश स्कन्धकी बराबरी करनेवाली दूसरी कौनसी चीज है?

मैं : तो हमें सुधार करना है। तब यह स्पष्ट करना पड़ेगा न कि पुनरुद्धार नहीं करना है?

बापू : सुधार ही करना है। सुधार होता ही आया है। पुराण और स्मृतियां हिन्दूधर्मके आचारोंमें बार-बार होनेवाले सुधार ही सूचित करती हैं। अैसे सुधार होते ही रहेंगे। जो मूल वस्तु है यानी चार वर्णोंका मूल धर्म है, अुसे हम कायम रखेंगे। देखिये न, अेक वर्णको ही रक्षाका काम सौंपा, यह कितनी अूंची कल्पना है? अगर चारों वर्ण रक्षाके काममें लग जायं, तो अव्यवस्था हो जाय। जिन-जिन देशोंमें अनिवार्य फौजी भरती होती है, अुनकी कैसी दुर्दशा हुअी है? जर्मनीको देखो, रशियाको देखो। अभी हमें यह पता नहीं है कि रशियाका क्या हाल होगा। अिंग्लैंडमें

तो लड़नेवालोंका अलग ही वर्ग है। पिछली लड़ाओमें अुसे सब वर्गोंमें र
लड़नेवाले लेने पड़े, यह दूसरी बात है।

मैंने कहा: अगर पुराणादिमें सुधार करने हैं, तो यह काम तो किसीने
किया नहीं।

बापू: अिसे भी करनेकी मेरी अुम्मीद है। मगर मुझे तो बहुत कुछ
करना है। तुम सभी तो मेरे साथ मर नहीं जाओगे? तुम्हें यह काम
अपने सिर लेना होगा।

'हरिजन' का दूसरा अंक आज प्रकाशित हुआ। शास्त्रीकी पत्नी
आओी। बड़ी निःसंकोच और मुक्त स्त्री मालूम होती है। तामिल, तेलगू
मलियाली, हिन्दी, बंगला और अुड़िया भाषाअें जानती है और
कॉलेजकी पढ़ाओी बी० अे० तक की है। बच्चे तो ये सभी भाषाअें जानते हैं।

शामको महबूबबुर, हैदराबाद तालुका से अेक तैलंग ब्राह्मण आया।
बापूके दर्शन करनेके सिवाय और कोओी अुद्देश्य नहीं था। किसीसे अपना
नाम अंग्रेजीमें लिखवाकर चिट्ठी भेजी। मुझे और बापूको भी क्या पता
चले? बुलवाया। बेचारा दर्शनसे बड़ा खुश हो गया। बीस दिनसे
दर्शनके लिअे तड़प रहा था। अुसकी टूटी-फूटी अुर्दूमें दर्शन, जन्मसाफल्यम्,
कटाक्षम्, अितने शब्द समझमें आते थे।

१८-२-'३३

सवेरे टैगोरके कुटुम्बकी बात चलाओी। मैंने कहा: अिन लोगोंका नियम है कि ब्राह्मण कुटुम्बके सिवाय और कहीं कन्या न दी जाय।

बापू बोले: हां, मगर अिनका यह नियम बहुत
दिन नहीं चलेगा। बदलना ही पड़ेगा।

मैंने कहा: सुधारक धर्मपंथोंमें सिर्फ ब्राह्मसमाजने ही बेरोकटोक
रोटी-बेटी व्यवहारकी आपकी योजना पर अच्छी तरह अमल किया है।
दास जैसे ब्राह्मोंका और अुनकी बहन व पत्नी वगैराका बंगाली समाजने
बहिष्कार नहीं किया, बल्कि आदर किया। पुराने विचारके देहातियोंने भी
अुनका सत्कार किया है। अिसका अर्थ यह है कि भविष्यमें सब जगह
रोटी-बेटी व्यवहारकी छूट हो जाय, तो अिससे हिन्दू समाजमें बहुत क्षोभ
नहीं पैदा होगा।

बापू: सच्ची बात है। बस ये शादियां करनेके सिवाय ब्राह्मोंके
पास और कोओी अुपाय ही नहीं था। अिन लोगोंको आपसमें बांधनेवाला

अेक खास तरहका संस्कार है और अिस संस्कारवाले कुटुम्ब अिस संबन्धमें जुड़ गये हैं।

मैं: मेरे खयालसे वहां आसानीसे जो ये विवाह हो सके हैं, अुसका अेक कारण यह होगा कि वहांके चारों वर्णोंका खान-पान अेक है।

बापू: हां, यह तो सच है। परन्तु दूसरा कारण यह है कि वहां बौद्ध धर्मका असर भी बहुत है। और अीसाअी धर्मका भी वहां काफी फैलाव हुआ। फिर वहांके लोग भावनाप्रधान ठहरे। अुनमें प्रतिभाशाली आदमी पैदा हुअे हैं। यह समाज हिन्दू समाजमें मिल गया, क्योंकि यह अहिंसक समाज है। अिन्होंने आर्य समाजकी तरह दूसरे धर्मोंका विरोध नहीं किया, अुन पर हमले नहीं किये। अिसलिअे अिनके खिलाफ भी हमले नहीं हुअे।

हिन्दू ही ब्राह्म हो सकते हैं या मुसलमान-अीसाअी भी हो सकते हैं? बापूका खयाल है कि सब हो सकते हैं।

बापूके विचारोंमें कैसा विकास होता जा रहा है, अिसका अेक नमूना मैंने बापूको बताया: १९२१ में 'हिन्दूधर्म' पर लिखे हुअे लेखमें बापूने लिखा था, 'मैं हिन्दूधर्मको मानता हूं, क्योंकि अैसा नहीं है कि मैं मूर्तिपूजाको नहीं मानता।' आज बापू कहते हैं: मैं मूर्तिपूजाको मानता हूं।

बापू बोले: ठीक है। अुस वक्त जो कहा था वह चालू हिन्दू मूर्तिपूजाको ध्यानमें रखकर कहा था। अिस बारका वाक्य अुस मूर्तिपूजाके सिलसिलेमें था, जो हरअेक धर्मके लिअे सामान्य है।

वर्णाश्रमधर्मके बारेमें मथुरादासके साथ थोड़ी-थोड़ी करके बहुत बातें हुअीं: वेदमें शूद्रोंको अधिकार नहीं है। तीन वर्णोंकी ही मुख्य बात कही गयी है, यह बात सच है। लेकिन हमारे देखनेमें जो आते हैं, अुतने ही वेद नहीं हैं। हजारों पुस्तकोंमें से हमारे पास थोड़ी ही रही हैं। वेदोंके भीतर धर्म भी है और अितिहास भी है। और अितिहास धर्म नहीं है। धर्मका भाग सनातन और शाश्वत है; अितिहासका भाग अुस समयकी परिस्थितिको बताता है। मुझे कब तक जीना है, यह कौन जानता है? पर काम पूरा करके बैठे हों, तो यह जरूर जीमें आये कि वर्णाश्रम-धर्मकी बात लेकर बैठ जायं। किन्तु वर्णधर्मकी रचनाके लिअे आश्रमधर्मका आधार चाहिये। अुसके बिना सारी अिमारत कच्ची ही रहेगी। वर्णाश्रम-धर्ममें संतोष है। अपने-अपने धर्म-कर्मके बारेमें समाधान है। अिसलिअे वर्णाश्रमधर्म दैवी प्रवृत्ति है जब कि और सब आसुरी प्रवृत्ति हैं; वर्णाश्रमधर्म सात्विक है, जब कि और सब प्रवृत्ति राजसी है।

अिस कानूनको जान लें, तो अिसमें से कअी वातें फलित होती हैं। पानी पीना जानते हों, पर पानीका शास्त्र न जानते हों, तो कोअी लाभ नहीं। पानीके अनेक रूप वर्फ, भाप, पानीसे पैदा होनेवाली विजली — यह सव जानते हों, तो कहा जायगा कि हम पानीका शास्त्र जानते हैं। यही वात वर्णाश्रमके वारेमें है। यह तो सार्वजनिक तत्त्व है।

मैंने पूछा: अर्थात् मुसलमान जिस तरह यह दावा करते हैं कि अिस्लामका अर्थ है शांति, यह संसारका नियम है, सारे संसारके लिअे है; अुसी तरह आप भी कहते हैं न कि वर्णाश्रमधर्म संसारका नियम है?

वापू: हां, अिसी अर्थमें। हरअेक धर्ममें कुछ खास सनातन तत्त्व हैं। अुनका पालन करनेवाले सव अुतने अंशमें अुस धर्मका पालन करते हैं। वाकीके हिस्से अुस समयकी और अुस जगहकी परिस्थितिके अनुसार हैं।

वर्णाश्रमधर्मका जन्मके साथ संवन्ध न हो, तो मैं वर्णाश्रमधर्म आज ही छोड़ दूं। तव तो फिर अिसमें रह ही क्या जाता है? मैं यह मानता हूं कि सुतारका लड़का सुतार हो और लुहार न हो यही ठीक है। भले ही अैसे सैकड़ों जातियां होती हों तो हों। जहां तक अुन लोगोंके वीच खाने-पीने और रोटी-वेटीका व्यवहार रहे, तव तक चाहे जितनी जातियां वनें! अिन रोटी-वेटीके वंधनोंने सारी वात महाकष्टमय कर डाली है।

द्रोणाचार्य धर्मभ्रष्ट हुअे थे, यह मैं जरूर कहूंगा। मेरा कहना यह है कि अेक वर्णके मनुष्यको दूसरे वर्णके कर्म करनेका अधिकार नहीं है अैसी वात नहीं, लेकिन यह अनुचित है। मैं कहता हूं कि यह धर्म सवके लिअे है। अनायास नहीं वल्कि सोच-समझकर अिसका पालन होना चाहिये। जैसे हिन्दू पालें, वैसे ही मुसलमान पालें। अिसी अर्थमें मैंने कहा था कि यह 'हिन्दूधर्मकी मानव-जातिके लिअे सवसे वड़ी भेंट है।' अिस धर्मके पालनसे सारे समाजकी रक्षा होगी, सारा समाज अजेय होगा।

. . . आकर वेचारी फूट-फूट कर रोअी। कल . . . के विवाहकी खवर आअी थी। अिसमें तो सिर्फ अितनी ही खवर थी कि . . . को वह चार सालसे जानता था। अव अुसके साथ शादी करनेका विचार कर लिया। अिससे हमें कोअी आघात नहीं पहुंचा। पर . . . ने वापूसे वात की, अुस परसे अगर . . . ने अुसे वचन दिया हो, तो . . . के वारेमें राय खराव होगी अैसा लगा। लेकिन सारी वात विना जाने-समझे कैसे कही जा सकती है? वापूने तो वेचारीको आश्वासन दिया: देखो वहन, ब्रह्मचर्य सवसे अच्छी चीज है, व्यभिचार वुरी चीज है। अिन दोनोंके वीचका विवाह है। मनुष्य कामको न छोड़ सके, तो मर्यादामें रहनेके लिअे शादी

कर ले। अिस आदमीको वह तुमसे ज्यादा अच्छी लगी, तो भले ही वह अुससे शादी कर ले। तुम दूसरा ढूंढ लो। और तुम्हें अैसा लगे कि तुम अुसे हृदय दे चुकी हो अिसलिअे तुम और कहीं शादी नहीं कर सकतीं, तो तुम अखंड कुमारी रहो। मगर तुम्हें अुसे आशीर्वाद देना चाहिये, अुस पर रोष नहीं करना चाहिये।

१९–२–'३३

वाअिसरॉयका जो जवाव आया था, अुसका अुसे आज जवाव दिया। वल्लभभाअीने कल रातको खूब चर्चा की थी। वे वाअिसरॉयके अिस जवावका समर्थन कर रहे थे कि यह कानून वर्तमान धार्मिक प्रवन्ध या रिवाजमें दखल देता है। वापू वोले : दखल नहीं देता। यही वात अुन्होंने जवावमें प्रतिपादित की। साथ ही साथ सप्रू और जयकर दोनोंसे अिस मामलेमें पुष्टि करनेवाले लेख लिखनेकी प्रार्थना की।

सवेरे अुठ कर काकाको दूधके वारेमें और दूधके वजाय कोअी वनस्पति आहार खोजनेके वारेमें लम्बा पत्र लिखा। अिस पत्रमें शास्त्रके वारेमें वापूने अपने जो अुद्‌गार प्रगट किये, वे अस्पृश्यता सम्वन्धी पत्रिकाओंमें प्रगट किये गये अुद्‌गारोंको भी ज्यादा स्पष्ट करते हैं या अुनसे भी ज्यादा आगे जाते हैं :

"शास्त्रका अर्थ पूर्वकालमें अनुभवियों द्वारा कहे हुअे वचन नहीं, वल्कि जिसे आज अनुभवज्ञान यानी ब्रह्मज्ञान हुआ है, अैसे देहधारीके वचन। शास्त्र नित्य मूर्तिमंत होता है। जो केवल पुस्तकोंमें है, जिसका अमल नहीं होता, वह या तो तत्त्वज्ञान नहीं होगा या मूर्खता या पाखंड होगा। शास्त्र अुसी क्षण अनुभवगम्य होना चाहिये, कहनेवालेके अनुभवकी वात होनी चाहिये। अिसी अर्थमें वेद नित्य हैं। दूसरा सव वेद नहीं, परंतु वेदवाद है।"

आम्वेडकर आज घमंडमें हैं, अिसलिअे वापूके साथ वैठकर समझनेकी कोशिश नहीं करते। नहीं तो शायद वे वापूका कहना अक्षरशः स्वीकार कर लें। क्योंकि जिस प्रकारके वेदोंको वापू मानते हैं, अुस प्रकारके वेदोंको तो आम्बेडकर भी मान लेंगे।

आज वापूके वर्णाश्रमधर्मके विचारों पर 'जनता' में लम्वा लेख है। वर्णाश्रमधर्म मनुष्यकी आध्यात्मिक अुन्नतिमें रुकावट नहीं डालता, तो अस्पृश्यता भी कहां डालती है? क्या अस्पृश्य होते हुअे भी रोहीदास और चोखामेलाकी आध्यात्मिक अुन्नति नहीं हुअी? किन्तु अस्पृश्यता हमारी सांसारिक अुन्नतिमें वाधक होती है, यही हमें खटकता है। दूसरे लेखमें पत्र कहता है कि ब्रह्मविद्वेष यानी ब्राह्मणके सर्वोपरिपनकी भावनाका विद्वेष

करना प्रत्येक हिन्दूका धर्म है। ब्रह्मकी जिसने जो व्याख्या की है, अुसका विद्वेष तो बापू करते ही हैं। बापू तो कहते हैं कि जिस वर्णाश्रमका या जिस हिन्दूधर्मका अर्थ अूंच-नीचके भेदको कायम रखनेवाला हो, वह मेरे लिअे त्याज्य है। आम्बेडकर मुंहसे तो कहते हैं कि मैं अिस प्रथाका द्वेषी हूं, मगर असलमें वे ब्राह्मणोंके शत्रु हैं। और यहीं बापू अुनके साथ खड़े नहीं रह सकते। वैसे आजकलके पठित मूर्ख सनातनियोंके बारेमें तो कबीरकी तरह बापू भी जरूर कहेंगे:

"बम्मन गुरु है जगतका, भगतनका गुरु नाहीं।
अरझि अुरझि पचि मुआ चारअु वेदअु माहीं।"

कबीरके बहुतसे वचन बालजीभाअीने अपने 'अीसा चरित्रमें' अिकट्ठे किये हैं। आज सहज ही साम (अीसाअी भजन) पढ़ते हुअे पहले ही भजनमें यह वाक्य आया: "भक्त नदीके पानीके पासमें लगाये हुए पेड़की तरह है। अपनी ऋतुमें अुसे फल आते हैं। अुसके पत्ते भी नहीं मुरझाते और वह जो जो बात करता है, वह सफल ही होती है।"

अिसके साथ कबीरके अिस वचनकी तुलना कीजिये। यह वचन आज ही ग्रंथसाहबमें पढ़ा:

"कबीर अैसा बीज बोअी बारह मास फलंत,
सीतल छाया, गहिर फल, पंखी केल करंत।"

कैसा आश्चर्यजनक साम्य है! मगर यह साम्य अनुभवका साम्य है, और कुछ नहीं। यह तो कोअी पादरी नहीं कहता कि कबीरने बाअिबल पढ़ी थी।

अेक और अैसा ही साम्य यह देखिये: तुलसीदासके "मम हृदय भवन प्रभु तोरा, तहं आय बसे बहु चोरा" वाले भजनका भाव अिस अीसाअी भजनमें अुतने ही अच्छे ढंगसे रखा गया है:

"अीश्वर मेरे मनको, मेरे शरीरको, मेरे जीवनको और मेरे तमाम कामोंको भर देता है, अिसलिअे मैं मानता ही नहीं कि बुराअी किसी भी तरह मुझे छू सकती है।" यह चीज 'रोमन्स' (बाअिबलका अेक भाग) में से फलित होती बताअी गअी है: "बुराअीका तिरस्कार करो। जो अच्छा है अुस पर डटे रहो।"

राजाजीके पत्रमें: "अपना दोष सौ गुना बढ़ा कर देखो।"

अेक आदमीकी लड़की चल नहीं सकती। वह चलने लगे अैसी प्रार्थना और आशीर्वादके लिअे अुसने बापूसे विनंती की। अुसे लिखा: "अगर

तुम्हारी लड़कीमें जन्मसे ही खोट हो, तो अच्छी प्रार्थना यह है कि तुम्हें और अुस लड़कीको भगवान यह सहन करनेका बल दे।"

अीसाअी कहेंगे कि गांधी कोअी अीसा नहीं है, अिसलिअे वह लड़कीको अच्छी नहीं कर सका!

शिक्षाके बारेमें अेक पत्रमें लिखा: " 'अच्छा और पूरी तरह प्राप्त किया हुआ ज्ञान' यम-नियमके पालनसे मिल सकता है।

२०-२-'३३ "शिक्षामात्र आत्मोन्नतिके लिअे होती है। अिसलिअे अिस प्रकारकी शिक्षा लेनी चाहिये, जिससे यह अुन्नति हो। अुसका अेक ही प्रकार हो अैसा जरूरी नहीं है। अिसलिअे प्रकारके बारेमें मुझे कुछ भी नहीं कहना है। जिन्दगी संयममय होनी चाहिये।"

अिन शर्तोंका पालन हो, तो क्या सरकारी पाठशालाओंकी शिक्षासे काम चल सकता है? यह सवाल पैदा होता है। पर मैंने अभी बापूसे पूछा नहीं।

आज जमनालालजीसे बापू मिले थे। बहुत बातें हुअी होंगी। पर खास बात कैदियोंके बारेमें थी। 'सी' क्लासके कैदियोंको लिखने-पढ़नेके साधन न मिलें, मांगने पर भी न मिलें, यह कितना असह्य है? यह शिकायत की कि मुझे अिस तरह रहना पड़े, तो मैं पागल हो जाअूं।

बापू कहने लगे: अिसके बारेमें हम लिखें, मांग करें, यह दूसरी बात है। पर यह चीज असह्य न होनी चाहिये। हम तो यहां संकट सहनेके लिअे आते हैं, जेलके दुःखोंको खुद न्योता देते हैं। पर साअिबेरियामें तो कोअी खुद होकर जेलमें नहीं जाता था। राजनैतिक कैदियोंको साअिबेरियामें देशनिकाला देते थे। वहां अुनकी क्या हालत होती थी, अिसका तुम्हें पता नहीं है। और यह दशा स्वेच्छासे जेल जानेवालोंकी नहीं, परंतु मजबूरन जेल जानेवाले कैदियोंकी थी। जब अुन्होंने यह सब सहन किया, तो हम अिसकी शिकायत कैसे कर सकते हैं?

सवेरे आत्मकथाके कअी संस्मरण सुनाये। जंगलमें जाकर कैसे जीवनके प्रश्नों पर विचार करते थे, अीसाअियोंसे कैसे मिले, औरोंसे कैसे मिले, राजचन्द्रको और नाथूराम शर्माको लिखे हुअे पत्रोंके बारेमें बात की और नाथूरामके शिष्योंमें अपने जो कुटुम्बीजन थे, अुनकी बात की। परमानन्द गांधी, जिनके सम्पर्कमें बापू ८ से १३ वर्षकी अुम्रमें आये थे, जिन्हें बुलन्द आवाजसे रामायण पढ़ते सुना था, जिनकी बीमारीमें धर्म-ग्रंथ बिस्तरके सामने ही

रखे रहते थे और जो बच्चोंसे भी अिसी विषयमें बातें करते थे, के बारेमें अनेक बातें करके अपनी याद ताजी की। अुनका लड़का गोकुलदास (या कालीदास) नाथूराम शर्माके शिष्योंमें था। अुसकी और दूसरे लोगोंकी बात कहकर बापू बोले: 'आत्मकथा' में अैसी बहुतसी बातें नहीं कही गअी हैं। अैसी बातें कहने लगूं, तो दो पुस्तकोंमें भी पूरी न हों। फिर बोले: अिस प्रकार गांधी कुटुम्बमें बहुतसे भक्त थे, यह मुझे कहना चाहिये। अैसा कहकर बापू यह बताते मालूम हुअे कि अुनमें भक्तिके संस्कार वंशपरंपरागत होंगे।

२१–२–'३३

तामिल अखबार 'सुधर्म' गुजराती सनातनधर्म पत्रिकाका तामिल संस्करण कहा जा सकता है। शायद अिसमें गुजराती पत्रिकाके बराबर बीभत्सता या निर्लज्जता नहीं होगी। हां, राजगोपालाचार्यके बारेमें तो अैसा बहुत कुछ रहता होगा, जिसमें विवेक या मर्यादाका नाम भी न हो। और अिसके हरअेक अंकमें अेक कार्टून भी आता है। अेक कार्टूनमें वर्णाश्रमधर्मको गधा माना गया है और वह थक गया है तो भी अुससे ज्यादा काम लेनेके लिअे गांधीजीको अुसे मारते हुअे चित्रित किया गया है। गधा बेचारा कीचड़में फंस गया है और रेंक रहा है! गांधीजीको यह सलाह दी गअी है कि गधा तो घोड़ा नहीं हो सकता।

अेक पठित मूर्ख शास्त्री श्री सुब्रह्मण्यम् ९–१–'३३ के दिन बापूसे मुलाकात कर गये थे। अुन्होंने मुलाकातका सार अिसमें दिया है। वे जितनी बातोंमें बेवकूफ बने थे, वे बातें ही अुन्होंने अुड़ा दी हैं; और बाकीकी आधी देकर यह बतानेकी कोशिश की है कि गांधी जिद्दी हैं! अिसमें भागवतके "श्वादोऽपि नूनं सवनाय कल्पते" वाले श्लोकमें यह बतानेके लिअे नमूनेदार दलीलें दी हैं कि यहां 'अपि' सिर्फ अत्युक्तिके अर्थमें ही है! अेक पति अपनी पत्नीसे कहता है: 'तुझसे तो मैं गधीके साथ ज्यादा सुखी होता।' अिसका अर्थ यह थोड़े ही होता है कि गधीके साथ रहे, तो वह ज्यादा सुखी हो? अिसी तरह यह है, और अिसमें भक्तिके माहात्म्यके सिवाय और कुछ बतानेका हेतु नहीं है!

रातको सरदारने लक्ष्मीदासकी मोरारभाअीके बारेमें दी हुअी खबरकी बापूके सामने बात कही। मोरार पटेलने खड़ी फसलको नष्ट कर दिया और फिर गिरफ्तार हो गये। सरकारके हाथमें क्यों कुछ भी जाने दिया जाय!

बापू बोले: यानी अुन्होंने राजपूतोंकी तरह किया। फिर कहने लगे: मणिलालकी अुस गजलके शब्द याद हैं न! 'फना करवुं फना थावुं,'—

मैंने लकीर पूरी की:

'फनामांये कमाअी छे; मरीने जीववानो मंत्र दिलवरनी दुहाअी छे.'

बापू बोले: जबसे यह गजल पढ़ी, तबसे याद रह गअी है।

नीला नागिनीको कड़ा पत्र लिखा था। यह स्त्री पत्रके अक्षरका पालन करके हिम्मतके साथ चली आअी। बापूने अेकके बाद अेक सवाल पूछने शुरू किये। जैसे पत्रसे अुसे बुरा नहीं लगा था, वैसे ही अिन सवालोंसे भी बिलकुल बुरा नहीं लगा और हरअेकका जवाब हिम्मत और निखालिसपनके साथ देती रही। अुसकी पोशाकमें, अुसके हाव-भावमें जरा भी छिछोरापन न लगा। अुसका सौंदर्य भी मोहक, आकर्षक या अुत्तेजक नहीं था, बल्कि सरल, शांत और आंखोंको ठंडा करनेवाला था। तुमने मुझे बेटा कैसे लिखा? अिस सवालका जवाब वह अच्छी तरह न दे सकी। अुसने कहा: मेरी अिच्छा माता बननेकी है। मैं कितने ही समयसे सबको अपने बच्चे माननेकी कोशिश कर रही हूं। बंगलोरमें तमाम युवक मुझे 'मां' कहकर पुकारते हैं और आपको पत्र लिखा अुस वक्त मेरे जीमें आअी कि मुझे आपको भी साहस करके अिसी तरह संबोधन करना चाहिये।

बापू बोले: परंतु मां ही क्यों, लड़की क्यों नहीं? लड़कीमें आगे बढ़नेकी गुंजाअिश रहती है। मां तो ज्ञान और प्रेमकी सम्पूर्णता है। और फिर विश्वकी मां बननेवालीमें तो अपार ज्ञान और प्रेम चाहिये।

नीला: मैंने अुस ज्ञान और प्रेमका दावा नहीं किया और मैं तो बालक बननेकी भी अिच्छा रखती हूं।

बापू: मां और बालक अेक साथ!

अुसके पास जवाब नहीं था। खाने-पीनेकी बातें करनेमें छोटी-छोटी सत्यकी भूलें बापूने देख लीं। फिर बापूने अुससे कहा: तुमने सारे सवालोंके जो जबाव दिये, अुनसे संतोष ही हो गया है अैसा मैं नहीं कह सकता। तुम सत्यकी पुजारिन हो, पर तुम्हारी यह स्थिति नहीं है कि असत्य तुम्हारे मुंहसे निकल ही नहीं सकता। तुम्हारे वचनोंमें कितनी ही भूलें हैं। छोटी-छोटी बातोंमें भी मनुष्यको बोलनेकी सावधानी रखनी चाहिये। यह सावधानी मैं तुम्हारे बोलनेमे नहीं पाता। पर अब मैं तुम्हारे बारेमें मिर्जा अिस्माअिलको लिखूंगा। अुनसे पूछूंगा कि अुनका क्या कहना है, और कोदण्डरावको भी तुमसे मिलाअूंगा।

अिस स्त्रीने सब कुछ प्रसन्न चित्तसे सुना और बापूसे कहा: मैं किसीसे किसी खास समय पहुंचनेका कहकर नहीं आअी थी। आप कहेंगे तब तक यहीं रहूंगी।

वापूने अुसे लक्ष्मीदासको सौंपा और अपने साथ लेडी विट्ठलदासके यहां ले जानेको कहा।

अुसकी मुलाकातके असरका वर्णन करते हुअे वापूने शास्त्रीसे कहा: मेरे कड़े पत्रके पीछे जो प्रेम था, अुसे अिसने अच्छी तरह समझ लिया। मेरा पत्र मिलते ही वह पूनाके लिअे रवाना हो गअी। यहां मैंने अुसे अच्छी तरह तपाया। अिस सवको अुसने वहुत अच्छे अर्थमें लिया। सारी दुनियाकी मां वननेके लिअे पूर्ण प्रेमके साथ पूर्ण ज्ञानका योग होना चाहिये। मैंने अुसे पूछा दोनों तुममें हैं? तुम सवकी मां होनेकी आकांक्षा रखती हो और अव तुम कहती हो कि मुझे तो सवकी वेटी वनना है। मैंने तो अुसे कहा कि तुम्हारा यह तत्त्वज्ञान मैं समझ नहीं सकता। फिर भी मुझे वह सीधी लड़की मालूम हुअी। अुसमें कोअी आडम्वर नहीं। आकर्षक दिखनेका कोअी प्रयत्न नहीं। मैं तो और ही वातोंके लिअे तैयार था, परंतु अुसके साथकी वातचीतने मेरी सारी शंकायें दूर कर दीं। विलकुल वच्चेकी तरह है। फिर भी नाटकवालोंकी लड़की है, अिसलिअे क्या पता चले! परंतु यह कहनेमें भी अनुदारता है। मैंने अुससे कह दिया कि जो आदमी मेरे पास खवर लाया था, अुसके ध्यानमें सव वातें लाअूंगा।

२२-२-'३३

आज सवेरे आमके नीचे वैठे थे, तव जमनालालजीका संदेश आया कि मुझे मिलना है, और जल्दी मिलना हो जाय तो अच्छा है। कुछ मिनटमें चिट्ठी आअी, जिसमें लिखा था: रातको नींद नहीं आअी। चिट्ठियां डालीं। अव 'तैयारी करके' आपका आशीर्वाद लेना वाकी रहा है। मुझे जल्दी वुलाअिये।

हम सवको खयाल हुआ कि यह कोअी 'साजनके घर जाना होगा' जैसी तैयारी तो नहीं है? जेलमें आदमी सारी रात जागकर वहुत गम्भीर तैयारी करे, तो वह अुपवासकी ही हो सकती है, और किसकी हो सकती है! वापूने वारह वजेका समय दिया। वापू सवा घंटे मिलकर आमके नीचे आये। कर्नाटकके २६ कैदियोंने मूर्खतासे वीसापुर जानेके लिअे जो अुपवास किये थे, अुनकी चर्चा करनेके लिअे जेलर आ गये। अिसलिअे मैं यह न पूछ सका कि जमनालालजीके साथ क्या वातें हुअीं। वादमें पूछा तो वापू कहने लगे: अुपवास-त्रुपवास जैसी कोअी वात ही नहीं थी। यह तो सारी हंसीकी-सी वात है। शामके लिअे रखो। वल्लभभाअीको भी सुनानी ही पड़ेगी।

शामको वातें हुआीं। जमनालालजीको रातमें विचार आया कि जुर्माना भरकर जल्दी छूट जायं और छूटकर हरिजनोंका काम करें, सविनयभंगकी लड़ाअीको भी जाग्रत करें और जानकीवहन वगैराको भेजें। वादमें अिस पर चिट्ठी डाली। चिट्ठी यह निकली कि जुर्माना देकर वाहर चले जायं। अिसलिअे अव तो वापूके आशीर्वाद लेना ही वाकी रहा। वापूके सामने जेलरकी मौजूदगीमें सारी वातें सुनाअीं।

वापूने कहा : तुम चिट्ठी डाल सकते हो, पर अिसमें दो दोष हैं। अगर तुम अीश्वरको साक्षी मानकर चिट्ठी डालो, तो मुझे पूछनेकी वात नहीं रह जाती। अिस पर में राय दूं तव तो में अीश्वरसे भी वड़ा वन गया। मुझसे यों ही राय मांगो, तो मैं राय दे नहीं सकता। मुझे वल्लभभाअीसे भी पूछना चाहिये। और तुम्हारी चिट्ठीमें दूसरा दोष यह था कि तुमने वाहर जाकर सविनयभंग चलानेका अिरादा रखा। सविनयभंग तो तुम यहां रहकर चला रहे हो। वाहर निकलनेका तो अस्पृश्यताका काम करनेके लिअे निश्चय कर रहे हो। तुम्हें लगता हो कि मालवीयजीको समझा सकोगे, अस्पृश्यताका दूसरा खूव काम कर सकोगे, विलोंको पास करवानेमें मदद दोगे, तो तुम यही काम कर सकते हो, दूसरा हरगिज नहीं कर सकते। हां, तुम्हारी सजाकी मियाद पूरी होनेके वाद तुम जो चाहो सो काम कर सकते हो। पर तुम जुर्माना अदा करके वाकीकी मियाद वाहर पूरी करना चाहो, तो अुतने समय तक तो अस्पृश्यताका ही काम करना तुम्हारा धर्म है। यह समझनेके वाद तुम्हें चिट्ठी डालनी हो तो डालो।

अेक कोरी चिट्ठी तो थी ही। दूसरी सिर्फ वाहर जानेकी वनाअी। कटेली साहवसे दोमें से अेक अुठवाअी। कटेलीने कोरी चिट्ठी अुठाअी। अिसलिअे सव कुछ 'मनमें शादी की, मनमें विधुर हुअे' जैसा हो गया।

थिस पर रातको वातें हुअी। वल्लभभाअीको और मुझे यह शंका थी कि अैसे मामलेमें चिट्ठी डाली जा सकती है या नहीं। मैंने कहा: जहां सिद्धांतकी वात न हो, वहां चिट्ठी डाली जा सकती है। दो मार्गोंके पक्षमें अेकसी दलीलें हों, तो अुसका निर्णय करनेके लिअे चिट्ठी डाली जा सकती है। परंतु कर्म और अकर्मके वीच भी कहीं चिट्ठी डाली जाती है? कोअी आदमी माफी मांगने और जेलमें रहनेका निर्णय करनेके लिअे चिट्ठी डालता होगा?

वापू: जरूर डाल सकता है। मैं अैसे संयोगोंकी कल्पना कर सकता हूं, जव माफी मांगना आदमीका फर्ज हो जाय। अिसी तरह यहां रहना और जुर्माना देकर वाहर निकलना, ये दोनों समान धर्म हो सकते हैं। दो

सिद्धांतोंके लिअे भी अेकसे ही मजबूत कारण हो सकते हैं। यहां जमनालालजीके लिअे कर्म और अकर्म दो चीजें नहीं थीं, परंतु दोनों कर्म ही थे।

मैंने कहा: पर अैसे मामलेमें तो वे आपसे पूछ सकते थे। जब चिट्ठी डालकर भी आपको पूछना ही ठीक समझा, तब आपसे सीधा ही क्यों न पूछ लिया?

बापू: मैं तो कह चुका हूं कि मैं किसीको रास्ता नहीं बता सकता। अिसलिअे वे मुझसे पूछकर क्या करते?

अितने पर भी वल्लभभाअी काफी अुद्विग्न रहे। 'जमनालालजी जैसे आदमीको अैसा विचार ही कैसे आ सकता है?' अिस तरह अुनके मनमें बार-बार अुठनेवाला सवाल वे हमें प्रगट रूपमें सुना रहे थे।

डॉ० सप्रूका सुन्दर पत्र आया। अुनकी सचाअी अुसमें से टपक रही थी। बापूको बहुत अच्छा लगा। वह अे० पी० आअी० को तो दिया ही, 'हरिजन'में भी दिया।*

२३-२-'३३

. . . के नाम प्रार्थनाके बाद तुरन्त ही मानो हृदयके खूनमें कलम डुबोकर पत्र लिखा। सबेरे चक्कर काटते हुअे कहने लगे: अिस पत्रको मनमें तैयार होते अेक हफ्ता लग गया और आज सुबह लिखते-लिखते मेरा सारा कस निकल गया। यह पत्र कोअी अैसा थोड़े ही था जो लिखवाया जा सके? मैंने सारी चीज सत्यनिष्ठा पर छोड़ दी और अुसे बता दिया कि सत्यकी कसौटी पर रखकर जो कुछ करना ठीक हो वही करो। 'मेरे प्यारे बेटे' कहकर बापूने किसीको यह पहला ही पत्र लिखा होगा।

अिसके बाद सारे किस्से पर बातें करते हुअे कहने लगे: कामवासना अैसी चीज है कि मनुष्यको बदल डालती है। हलेबीडके अुस गिरजेमें कामदेवकी मूर्ति खोदनेवालेने कमाल किया है। अुस आदमीके पास साधन तो क्या होंगे? पत्थर और छोटीसी छेनी। पर यह खुदाअीका काम अैसा है, जो दुनियाके शिल्पमें स्थान पा सकता है। रस्किन जैसे आदमीने अिसे देखा होता, तो अुस पर पागल हो जाता। अिस खुदाअीके काममें स्त्री सचेत होकर साड़ी झाड़ देती है और काम बिच्छूके रूपमें अुसके पैरोंके आगे पड़ा रह जाता है। यह सब अपने-अपने योग्य स्थान पर है। हम पारसनाथकी अेक ही पत्थरमें से खोदी हुअी मूर्ति देख नहीं सके थे, लेकिन अुसमें भी कुछ

---

* देखिये, 'हरिजन', भाग १, अंक ३, पृष्ठ २-३।

अैसा ही होगा। अैसी चीज भी दुनियामें शायद ही कोअी होगी। मैं नहीं जानता लंदनमें क्लियोपेट्राकी सुअी तुमने देखी थी या नहीं। वह अेक ही पत्थरमें से वनी हुअी है।

शामको नीलाकी वातें करते-करते कहने लगे: कोदंडरावको अुसके साथ विठाया, पर अुनके पास कुछ कहनेको नहीं था। अिस स्त्रीने तो अुनके साथ भी अुतने ही निखालिसपनसे वातें कीं। यह स्त्री कमालकी वुद्धि रखती है। अुसने गणितका गहरा अध्ययन किया है। मैंने पूछा, किस लिअे? तो कहने लगी कि मुझे सप्रमाणताका अध्ययन कलाके सिलसिलेमें करना पड़ा और गणितके विना सप्रमाणताकी कल्पना नहीं हो सकती। वोली कि संगीतका शास्त्र भी जानती हूं। सभी ग्रीक नाच जानती है, मगर वहांके धार्मिक थियेटरके सिवा और कहीं नहीं नाची। भाषाओंका अध्ययन भी अैसा ही है। कहती है कि जैसी अंग्रेजी वोलती हूं, वैसी ही ग्रीक आती है। वाअिवलके दोनों करार अुसने ग्रीकमें पढ़े हैं। अुपनिषदोंके मैक्समूलरके अनुवाद पढ़े हैं। जव पूछा कि हिन्दू धर्मकी ओर कैसे प्रेरणा हुअी? तो वोली: ग्रीस जानेके वाद ग्रीक और हिन्दू संस्कृतिका अध्ययन किया। अमेरिका वापस गअी और फिर यहां आयी तो हिन्दू धर्मके वारेमें जो खयाल था वह मजवूत होता चला गया। जव पूछा: तुमने महाभारत पढ़ा है? तो वोली कि दत्तकी तीन जिल्दें पढ़ी हैं। यह सव २३ सालकी अुम्रमें!

२४-२-'३३

आज मेजर जमनादासकी वात कह गये। किस तरह अुनका पन्द्रह पन्नेका पत्र यहां आया, कैसे अुन्होंने अुसे अनुवाद-विभागमें भेजा, किस प्रकार वादमें अुसकी जांच हुअी और किस तरह मेक्सवेलने लिखा कि यह पत्र राजनैतिक कारणोंसे नहीं दिया जा सकता! और फिर भी — अिस सवके वावजूद — जमनादासको यहां हाजिर होनेके लिअे हुक्म मिल गया है!

वापू आज रामदाससे और जमियतसिंहसे मिले। जमियतसिंहने कहा कि सिक्ख जत्थोंका अस्पृश्यताके मामलेमें अुपयोग नहीं किया जा सकता, खास तौरसे मंदिर-प्रवेशके मामलेमें। मगर सिक्ख हरिजन कार्यालयमें जरूर रहेंगे और फुटकर हरिजन कार्य करेंगे।

अुन्होंने अिस वारेमें भी पूछा कि मैं जुर्माना देकर वाहर निकलूं या नहीं। जवान स्त्री अगले महीनेमें छूटेगी। अुसकी रखवाली करनेवाला कोअी नहीं। घरवार नहीं अिसलिअे भी मुझे छूटना चाहिये। जमनालालजी कहते है जुर्माना भर दो। आपकी क्या राय है?

वापू कहने लगे: मेरी कोओी राय नहीं। आपको जो सूझे सो करिये।

फिर यह भी पूछा कि अपंग कैदियोंके वारेमें मासिक निकाला जा सकता है या नहीं।

वापूने कहा: जरूर निकाला जा सकता है। पर यह आप जानें कि अुसे निकालनेकी आपमें शक्ति है या नहीं। यह भी आप जानें कि आपको योग्य चलानेवाला मिलेगा या नहीं। वैसे, चलानेमें अड़चन नहीं है।

'आज रामदासको देखकर रोना आ जाय' अैसा वापूको लगा। ये वापूके ही शब्द हैं! वापूने कभी किसीका वर्णन अिस प्रकार नहीं किया। रामदासने दूध न मांगनेका अटल आग्रह रखा और अुसीका यह नतीजा वे भोग रहे हैं कि आंखें गहरी धंस गअीं, चेहरा अुतर गया, जरा भी नूर नहीं दिखता, टोपी भी सिरमें गहरी वैठ जाती है। मेजर खुद यह दृश्य वरदाश्त न कर सका, अिसलिअे अुसीने रामदासको अस्पतालमें भेज दिया।

दूसरे कैदियोंकी शिकायतें रामदास स्लेट पर लिखकर लाये थे। अुनकी चर्चा करते हुअे कहते थे कि अिस सूचनाके वारेमें खास तौर पर सुपरिटेंडेन्टके साथ वड़ा मतभेद हो गया कि केम्पमें हमारी जैसी कमेटी थी वैसी कमेटी हमें वनाने दी जाय। रामदासके साथ कहासुनी हो गअी। रामदासने कहा: आपको पता नहीं जेलमें क्या हो रहा है। कैदी जो करें सो सव जुर्म और कर्मचारियोंका कोओी कसूर ही नहीं। मेजर चिढ़ तो जरूर गया, पर वादमें अुसने वापूसे कहा: सारी वातका निवटारा हो जायगा। मेरी रामदासके साथ कड़ी वात हो गअी, मुझे माफ कीजिये। यह कहकर सव वातों पर पानी फेर दिया। फिर वोला: रामदास विलकुल भोला लड़का है। सवका कहना मान लेता है।

वापू कहने लगे: यही अिस लड़केका वड़ा गुण है। वह अिसी तरह गुजर करता रहा है और अीश्वर अिसी तरह अुसे निभाता रहेगा।

मेजर वात कर रहा था कि सव कर्नाटकियोंने अुपवास छोड़ दिया।

नरगिस वहन, पेरीन वहन, कमला वहन और मथुरादास आ पहुंचे। कहींसे गप्प लाये थे कि वाअिसरॉयका प्राअिवेट सेक्रेटरी वापूसे मिलने आया था।

वल्लभभाओी कहने लगे: तुमने अुनसे यह नहीं कहा कि तुम्हारे मुंह तो अैसे नहीं दीखते कि वाअिसरॉयके प्राअिवेट सेक्रेटरीको यहां आना ही पड़े।

पेरिन वहनका जोश देखकर आनंद होता था। वह हरिजनोंके वारेमें अेक-दो सवाल पूछने आओी थीं; सो भी जेलमें हरिजनोंकी स्थितिके वारेमें। वैसे अुन्हें क्या करना चाहिये, अिस वारेमें अुन्हें कोओी चर्चा नहीं करनी थी।

अुनके लिअे कहा जा सकता है कि 'विप्लव अुनके जीवनका प्रधान अनुराग था। अुसमें और किसीके लिअे स्थान नहीं था। प्रेमके लिअे भी नहीं।' अुन्हें जेलमें वापस जानेसे न अुनका पति रोके, न मां रोके।

रामदासका चेहरा बापूके हृदयमें अंकित हो गया था और आज सुबह रामदासके नाम जो लम्बा पत्र लिखा, अुसमें नीमूके छोटे बच्चेकी मृत्यु पर लिखते हुअे मोक्ष सम्बन्धी विवेचन किया और अपनी हरिश्चन्द्र जैसी स्थिति बताकर अिस सबका करुण चित्र खींचा। पत्र लिखनेके बाद भी घूमते वक्त अेक दूसरी अुपमा याद आअी। बोले: मेजरको तो अुसके लिअे तिरस्कार है। वह अुसे भोला यानी मूढ़ समझता है और मैं कहता रहा कि वह भोला है, अिसी-लिअे मुझे अच्छा लगता है। अुस बेचारेको यह खयाल है कि मेरा बाप बहुत कुछ कर देगा। औरोंके दुःखसे दुःखी होनेवालोंको मैं क्या आश्वासन देता? मेरी स्थिति तो युधिष्ठिरकी-सी हो गयी थी। कौरव द्रौपदीके कपड़े खींच रहे थे, भीम चीखें मार रहा था, मगर युधिष्ठिर बेचारा चुपचाप देख रहा था। क्या करता?

२५–२–'३३

नीलाके साथ रोज बातें होती ही रहती हैं। लड़केके पीछे भेख ले लो, आयाको बन्द कर दो, खर्च कम कर डालो, भीख मांगनी पड़े तो भीख मांगो और फिर तुम्हारा बच्चा भी भीख मांगेगा — अिन सब बातोंके लिअे 'हां' करती जाती थी और कहती जाती थी कि मुझे भेख लेने और अेक बार कोअी बात गले अुतर जाय तो अुसके अनुसार चलनेमें संकोच नहीं होगा।

'सुधर्म' अखबार कहता है कि १९३४ में हिन्दुस्तानके ग्रह अैसे हैं कि अछूतोंको मंदिरोंमें ले जानेके सिलसिलेमें मारकाट होगी और सात करोड़ आदमी मारे जायंगे। पुलिस गोलीबार करेगी।

बापू बोले: ब्राह्मण नहीं मानेंगे तो मारपीट तो खूब होगी ही। आम्बेडकर ब्राह्मणेतर परिषदका अध्यक्ष हो गया है।

वल्लभभाअी कहने लगे: ब्राह्मणेतर भी मान जायं तो ब्राह्मण कुछ नहीं कर सकते। पर ब्राह्मणेतरोंको भी अस्पृश्यता छोड़ना मुश्किल मालूम होता है।

सवेरे बहुतसे पत्र लिख डाले। मालवीयजीको पत्र लिखा। आनंदी लेडी ठाकरसीके यहां ठहरी है। वहां अुसे सूर्यस्नान, कटि-स्नान और भोजनकी रोज विस्तृत सूचनाअें पत्र द्वारा जाती हैं। अिन सूचनाओं पर अमल होता है या नहीं,

२६–२–'३३

अिसकी जांच होती है और रोज सुबह रिपोर्ट आती है। आज रविवार है और हमारा दफ्तर बन्द है, अिसलिअे नीलाको बाहर चिट्ठी लेकर आनेको कहा था। वह बेचारी पैदल आअी, चिट्ठी लाअी और दरवाजे पर देकर दरवाजेके सामने जवाबके लिअे अिन्तजार करती हुअी तकली चलाती रही!

२७–२–'३३ आज नीलाने आमके नीचे बैठकर शास्त्रीय ढंगसे भंगीकाम करनेके बारेमें लेख लिख दिया। कमलादेवी चट्टोपाध्याय आअीं। अस्पृश्यताके लिअे ही आया जा सकता है, यह कहलवाया था। मगर कोदण्डराव यह शर्त सुनाये बिना ही अुन्हें ले आये। अुन्हें तो बापूसे अपने लड़केके बारेमें सलाह लेनी थी, पर आयी हुअीको कैसे निकाला जा सकता था?

आज 'क्रॉनिकल' में आया है कि सरकारने कैदियोंको १९३५ तक न छोड़नेका निश्चय किया है और गांधीजीको कमसे-कम तीन साल रखना है।

बापू: देखो, मैं तो पांच साल कहता था न? ये तो दो कम हो गये।

वल्लभभाअी बोले: आप तो कहावतके अुस नंगेकी तरह कर रहे हैं। अुसे किसीने कहा, अरे तेरे पीछे बबूल है। तो वह बोला, अच्छा है मुझे छाया हो गअी!

आज 'हरिने भजतां हजी कोअीनी लाज" बहुत दिनों बाद गाया। प्रेमलदास कहां हो गये, कौन थे, यह बापूने पूछा। मगर मुझे पता नहीं था। हमें अपने भक्तों और कवियोंके अितिहासके बारेमें कितना अज्ञान होता है! यह भजन अत्यन्त मीठा है, अैसा बापूने कोअी दसवीं बार कहा होगा।

२८–२–'३३ आज सवेरे . . . ने . . . के साथ हुअी बातें सुनाते हुअे बापूसे कहा कि अुनके बड़े भाअीने अिस शर्त पर . . . को अपने यहां आनेको कहा कि वे अछूत बन कर रहें। अुन्होंने अिस ढंगसे अुनके यहां रहनेसे साफ अिनकार कर दिया।

बापू कहने लगे: यही ठीक है। धर्मका पालन करते हुअे बहुतेरी मुसीबतें आयेंगी। कुटुम्बमें भाअी-भाअीके बीच और बाप-बेटेके बीच मैं झगड़ा कराने आया हूं, यह जो कहा जाता है सो सच बात है। मगर अिससे आगे आज मनुष्य खुद अपने अन्तरमें जो पीड़ा भोग रहा है अुसका क्या? धर्मका पालन और किसी तरह कराना असंभव है। यह 'हरिजन' लिखनेका काम भी मेरे लिअे अेक प्रकारकी तालीम है। आज मंदिरके बारेमें जो लेख लिखा, अुसे लिखते वक्त काफी विचार करना पड़ा।

. . . के ब्रह्मचर्यव्रतके बारेमें नारणदासको लिखा: ". . . निश्चल रहेगा तो . . . बहन शांत हो जायगी। मेरा अचूक अनुभव है कि दोनोंमें से अेक अटल रहे और अिसका विश्वास दूसरे पक्षको हो जाय, तो दूसरा पक्ष शांत हो ही जाता है। जैसे हमारा प्यारेसे प्यारा आदमी मर जाय, तो भी अेक खास समय बाद अुसे भूला जा सकता है, वैसे ही अिस मोहकी बात है। असल बात यह है कि दोनोंमें थोड़ी बहुत कमजोरी होती है, अिसलिअे अेक दूसरेके सहारेकी जरूरत पड़ती है। असलमें यह सहारा नहीं है। अिस तरह कोअी पार लग जाय, तो वह संयोग ही होगा। अंधा अंधेको कैसे रास्ता बता सकता है? डूबता डूबतेको कैसे बचा सकता है? विषयी विषयीको कैसे निर्विषय बना सकता है? अिस तरह सीधा हिसाब लगाया जा सकता है।"

शामको तेल मलते हुअे छगनलाल बोले: कुंभकोणममें मंदिर-प्रवेशकी सभाओं पर जो मनाही हुक्म लगाया गया है, अुसे भी नहीं तोड़ा जा सकता?

बापूने कहा: अुसे 'भी' का क्या मतलब? हमने अस्पृश्यताकी लड़ाअीमें सविनयभंगकी कहां छूट रखी है? और यह हुक्म तो वहां लागू किया गया है, जहां हजारों आदमी जमा होते हैं। वहां शांतिभंग होनेका सच्चा डर हो सकता है। और सनातनी तो अब गुण्डे रखते हैं, अुन्हें फसाद करना है। हम अुन्हें फसाद करनेका मौका क्यों दें? यह लड़ाअी अहिंसाकी है, अैसा अिस अवसर पर तो हम खास तौर पर बता सकते हैं।

१–३–'३३ आज रहनेके यार्डमें जाते समय जेलर पूछने लगा: आपको काम तो बहुत रहता होगा?

बापू: हां, अखबार निकालना, पत्रोंका जवाब देना, लोगोंसे मिलना, अिसमें समय तो बहुत लगता ही है।

जेलर: विचार करनेका भी समय नहीं मिलता होगा।

बापू: सच है। मगर मेरी तमाम जिन्दगी अिसी तरह बीती है। मैंने काम करते-करते ही विचार किया है। विचार करनेके लिअे मैंने समय लिया हो, अैसा कभी हुआ ही नहीं। और मेरा खयाल है कि कोअी आदमी अिस तरह समय लेकर विचार करने बैठे, तो कोअी नये विचार नहीं सूझेंगे। मैं अपने लिअे तो कहूंगा कि मैं अेक ही विचारके चक्करमें पड़ जाअूं।

यही विचार डंकन ग्रीनलीसको लिखे गये पत्रमें ध्वनित होता था:

"नये आनेवालेको हमारा कार्यक्रम मुश्किल मालूम होता है। अिस पृथ्वी पर करोड़ों लोग जैसा जीवन बिताते हैं, वैसा ही बितानेकी हम

कोशिश कर रहे हैं। वे लोग दिन भर कड़ा परिश्रम करते हैं। जिस समय अुनके शरीर मेहनत-मजदूरी करते हैं, अुसी वक्त अुन्हें विचार भी करना होता है। रोजका कार्यक्रम स्वाभाविक हो जाय, तो वह आनन्ददायक बन जाता है और गंभीर विचार करनेमें भी रुकावट नहीं डालता। परन्तु सभी तरहके विचार अुपयोगी नहीं होते। जरूरत साफ विचार करनेकी है। वे तो सतत यज्ञसे यानी औरोंकी सेवाके लिअे श्रम करनेसे ही पैदा हो सकते हैं।"

तेल मलवाते हुअे बापू बोले: आज चन्द्रमा सुन्दर दीखता है। अिसे तो हिलाल ही कहते होंगे न?

मैं: हिलाल तो दूजके चांदका नाम है न? हिलाले अीद (अीदका चांद) कहा जाता है।

बापू: अीदके हिलालकी तरह तीजका हिलाल नहीं कह सकते?

अिस पर वल्लभभाअी बोले: हलालका मतलब तो यही है न कि अेक ही वारमें दो कर डालें? और सिक्खोंको झटकेका गोश्त चाहिये न?

बापू और हम सब खिलखिलाकर हंसे।

नीला नागिनीकी जांच अभी तक हो रही है। काकासे मैंने कहा: बापूको अिस जीवनमें बहुतसी नापसन्द बातें करनी पड़ी हैं। छुटपनमें डॉक्टरीकी पढ़ाअी करनी थी, मगर जीते प्राणियोंको चीरना पड़े, अिसलिअे भागे। यही काम — जीतेको चीरनेका — अुन्हें आज अनिच्छासे करना पड़ रहा है। यह देखिये, नीलाकी जीते जी चीरफाड़ ही हो रही है न!

और सचमुच यही बात थी। अुसकी जिन्दगीके अेकके बाद अेक तल खुलते जा रहे हैं। आज कहती है कि मुझ पर १५००० रु० का कर्ज हो गया है। यह कौन दे? लेकिन शायद महाराजा . . . दें तो दें!

२–३–'३२

. . . के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्यके खयालसे ही बापूने अुसके विवाहकी बात निकाली और नारणदासभाअीको सख्त अुपाय करनेको कहा। . . . के विचार जाने। . . . को छूट जानेकी अिच्छा हो तो अैसा करनेकी स्वतंत्रता दी। और . . . के बापको लिखा कि आपको पसंद न हो तो फिर आप ही जिम्मेदारी अुठाना। नारणदासने दृढ़तासे काम लिया और . . . को ठीक तरहसे रहनेको मजबूर किया। . . . के बरतावसे अुनके लिअे हमारा आदर बहुत ज्यादा बढ़ जाता है। वे दो-तीन सालसे रुके

हुये हैं। अब भी ठहरनेको तैयार हैं। अछूत लड़कीसे शादी करनेमें आना-कानी नहीं है। अछूतोंपर गुजरनेवाले जुल्ममें शरीक होनेके लिअे यह संबन्ध करनेकी अुनकी तैयारी है। फिर भी कहीं बापूके हरिजन-कार्यको अिस विवाहसे धक्का न पहुंचे, सनातनी चिल्लाहट मचा कर लोगोंके मनमें भ्रम पैदा न कर दें, अिस खयालसे शादीमें जल्दी न हो तो शायद अच्छा होगा। अितनी तटस्थतासे विचार करनेवाले वर बहुत कम पाये जाते हैं। बापू अुनके पत्रसे खुश हुअे। चौदह तारीखकी शादी तय हुअी है, अिसकी खबर सबको दी। और अिन सबको, . . . को और नारणदास तथा . . . को अिस विषयमें पत्र लिखे। तमाम पत्र पढ़कर मरी आंखें खुशीके आंसूओंसे भर आयीं। . . . के प्रति बापूका जो प्रेम अिन पत्रोंमें छलक रहा था अुसे देखा और थोड़ी देरके लिअे यह खयाल हुआ कि और हालत चाहे कुछ भी हो, फिर भी . . . के प्रति अितना प्रेम शायद बापूको चौदह तारीखको . . . का विवाह करनेके लिअे छुड़वा दे तो आश्चर्य नहीं होगा। अिसे मैं प्रेमका अेक चमत्कार मानूंगा।

. . . को लिखा सो यथार्थ था: "तुमने आशातीत पारमार्थिक वृत्ति पैदा कर ली मालूम होती है, अिसलिअे मुझे बिलकुल संकोच नहीं रहा। तुम्हारी वृत्ति सदा अैसी ही बनी रहे। तुम कोअी मामूली जिम्मेदारी सिर पर नहीं ले रहे हो। तुम्हारे हाथमें दादाकी लाज है। हिन्दूधर्मकी कहो तो वह भी बहुत अंशोंमें है। तुम्हारा यह जीवन शोभास्पद बना, तो निन्दा करनेवाले भी स्तुति करने लगेंगे।"

यह लिखकर अनेक दोषोंवाली पर थोड़े गुणों वाली . . . के गुरु और मित्र बननेकी सीख दी। आखिरके दो वाक्य ध्यान देने लायक थे:

"मैं मौजूद न रहूं तो अिसका दुःख न मानना। मेरा शरीर यहां होगा, पर आत्मा तो तुम्हारे पास ही होगी। तुम दोनोंको देखा ही करेगी और तुम्हारी रखवाली करती रहेगी!"

हम सबको बापू यह आशीर्वाद दें तो कैसा रहे कि 'मेरी आत्मा तुम्हारी रखवाली करती रहेगी!' पर हम तो बहुत दफा यह रखवाली चाहते हैं, तब भी अुसे देख नहीं सकते। और यहां तो बापूने खुद रखवाली करनेकी अपनी अिच्छा प्रगट की है। भला बापूकी कौनसी अभिलाषा पूरी नहीं हुअी?

नारणदासभाअी और . . . को विवाहकी छोटी-छोटी बातें विस्तारसे लिखीं। धोती कौन दे, साड़ी कौन दे, वगैरा। और फिर . . . बहनको

लिखा: "सगे लड़केके ब्याहमें जितना प्रेम अुंड़ेलो, अुतना अिसमें अुंड़ेलना। . . . को मां-बापकी कमी न मालूम हो, अिस तरहका बरताव सब बहनें करें।"

नारणदासभाअीके पत्रमें शादीकी सारी तफसील बारीकीसे बयान करके . . . की तारीफ की। ". . . के पत्र मुझे मुग्ध करते हैं। जैसा लिखता है वैसा निकले, तो वह पूर्वजन्मके पुण्य लेकर . . . के पास गया होना चाहिये। और . . . का प्रेम भी अवर्णनीय होना चाहिये। अुसकी तालीम कैसी है!"

नीलाके अधिकाधिक तल खुलते चले जा रहे हैं। वह मंजूर करती है कि अुसने १५००० तकका कर्ज कर लिया है और यह आशा भी रखती है कि शायद महाराजा चुका दें।

'टाअिम्स आफ अिंडिया' का मैक्रे आया। सदाकी भांति हरिजन कार्यका हाल पूछकर चला जा रहा था, मगर जाते-जाते यों ही अेक सवाल अुसने पूछा: जमनादासके बयानके बारेमें आपको कुछ कहना है?

बापू बोले: यह तो राजनैतिक बात हुअी न?

अिस पर कहने लगा कि सच है। मगर जरा ठहर कर पूछा: परन्तु हम अिजाजत ले लें, तब तो आप हमारे साथ बातें जरूर करेंगे न?

बापूने कहा: तो बात जरूर करूंगा। मगर मुझे तुम्हें मिली हुअी अिजाजतकी जांच कर लेनी होगी। अुसे देखनेके बाद मुझे संतोष हो जाय और मुझे भी तुम्हारे साथ बात करनेकी छूट हो, तो फिर सिद्धांत और नीतिके बारेमें मैं खुलकर बातें कर सकता हूं। आज तो मेरा मन कोरा है। लेकिन बन्धन अुठ जानेके बाद मनमें सोये हुअे विचार फटाफट जाग अुठेंगे और हमला करेंगे।

मैक्रे: आजकल आप चालू घटनाओं पर विचार नहीं करते?

बापू: टिम्बकटूमें बैठा हुआ अिन्सान जितना विचार करे, अुससे ज्यादा नहीं। मेरा मन ही अैसा यन्त्रकी तरह है कि जब मैं यह निश्चय कर लूं कि अमुक चीजका विचार मुझे नहीं करना है, तो मैं विचार करनेमें असमर्थ हो जाता हूं। तुम महादेवसे वर्तमान घटनाओंके बारेमें मेरे विचार पूछो, तो वह भी नहीं कह सकते। क्योंकि मुझे खुद पता नहीं होता और अुनकी मैं कोअी चर्चा नहीं करता।

मैक्रे: मैं तो अैसा नहीं कर सकता।

बापू बोले: मैं अैसा कर सकता हूं और अिसे अीश्वरकी अेक अद्भुत देन मानता हूं।

मैक्रे: मगर अिजाजत मिल जाय तो हरअेक मामले पर चर्चा करेंगे न?

वापूने कहा: वाहरकी वातोंकी जानकारी न होनेके कारण मैं व्यौरेवार चर्चा नहीं कर सकता, मगर सिद्धांत और नीतिके वारेमें चर्चा करनेमें अड़चन न होगी।

अितनी वात करके यह आदमी गया, दसेक मिनटमें सारा तार टािअप करके ले आया और वापूसे जंचवाया। वापूने शुरूके वाक्य रख दिये और कुछ महत्त्वपूर्ण सुधार कर दिये। अिस आदमीकी ओीमानदारीके लिअे मेरे दिलमें वड़ा आदर पैदा हुआ। मैंने अिस आदमीमें हमेशा यही भावना देखी है कि 'कहीं मुझसे गांधीके साथ अन्याय न हो जाय।'

दूसरा मूर्ख रिपोर्टर खड़ा-खड़ा सुन रहा था। मैंने अुसे कहा: देखो, यह कैसी अच्छी कापी ले गया। अिस पर अुसने भी थोड़ासा पूछा: आप हरिजन कार्यमें लग गये हैं, अिसलिअे क्या यह सच है कि सविनयभंगकी लड़ाओी अव नहीं रही?

वापू वोले: यह तो अैसी वात हुओी कि कोओी पूछे कि हिमालय कितना वड़ा है और फिर अेक कहे २५००० फुट और दूसरा कहे २३००० फुट।

वह: आप कितने फुट वतायेंगे?

वापू: २९०००।

अितनेसे भागको भी पेश करनेमें वह कहीं गफलत न कर दे, अिसलिअे मैंने अुससे सुधरवाया। मगर अुसने वह मैंके वाला भाग चुराकर भेज दिया हो तो!

३–३–'३३

मेरा भय सच निकला। अुसने वह भाग चुराया और मनमाने ढंगसे लिखकर भेज दिया। वापूने अुसे समझाया कि अिसमें गंभीर भूलें हैं, पर अुसमें यह समझनेकी शक्ति नहीं थी। मेरे दुःख और चिड़की हद नहीं थी। वापू भी चिढ़ गये, मगर अुन्होंने अपनी अपार क्षमासे अुदार दृष्टि दिखाओी। अेक-दो वाक्य अुसे अुलहना देते हुअे वापूने कहे, सो सुनने लायक हैं:

ओीश्वरकी कृपा है कि मुझे अपने नम्र तरीकेसे दुनियाको कुछ नओी ही चीज देनी है। अुसे मैं जिस ढंगसे रख सकता हूं, अुस ढंगसे और कोओी नहीं रख सकता। मगर अव कुछ करनेको नहीं रह जाता। जो विगड़ना था विगड़ चुका है। मगर भविष्यके लिअे अपने दफ्तरको खवर दे देना कि यहांसे जो कुछ भेजा जाय, अुसमें नमक-मिर्च न मिलायें। मेरे संदेश मैं जिन शब्दोंमें दूं, अुन्हीं शब्दोंमें वे छापें या विलकुल न छापें। अे० पी० आओी० भी अिस शर्त पर मेरे सन्देश लेना वन्द कर दे तो अुसकी मुझे परवाह नहीं। दुनियाको मैं जो

संदेश देना चाहता हूं, अुसके लिअे मैं किसी समाचारपत्रोंकी अेजेन्सी पर आधार नहीं रखता।

नीलाकी चीरफाड़ (Vivisection) आज ज्यादा हुअी। बापू बिलकुल निर्दय बनकर सवाल पूछते जा रहे थे और वह बेहया बनकर जवाब देती चली जा रही थी। बीचमें बापूने कहा: मुझे तुम्हारा विश्वास होता और मैं यह मानता होता कि तुम नादान और निर्दोष हो और मेरा तुम पर काबू है, तो अभी मैंने तुम्हें दो-चार चांटे रसीद कर दिये होते। मगर मैं जानता हूं कि तुम पर कोअी असर नहीं होता।

और भी स्तर खुले। बापू स्तब्ध हो गये। अिस स्त्रीकी कितनी बात सच मानी जाय, यह अेक प्रश्न बन गया; और कहां तक अुससे बहस की जाय, यह भी प्रश्न बन गया। अुसे तो बापूने कह दिया: तुममें ज़रा भी हिम्मत हो, तो लड़कोंसे कह दो कि मेरा जीवन मैला है, मैंने तुम्हें धोखा दिया है, मुझे कोअी मां न कहो। यह काम भी छोड़ दो। पापके प्रायश्चित्तके तौर पर अपनी पसन्दका काम भी छोड़ देना चाहिये। दुनियाको बता दो कि मैं तो हरिश्चन्द्रकी तरह बिकनेको तैयार हूं। मुझे और मेरे लड़केको खरीदना हो तो खरीद लो। तब तुम्हारा हिन्दू धर्ममें आना भी कुछ सच्चा माना जा सकता है, नहीं तो यह सब मिथ्या है। शामको ठंडी आह भर कर बोले: अभी कल कितने ही जहरके प्याले पीने बाकी होंगे। कौन जानता है?

वल्लभभाअीने ठीक कहा कि बापू जैसी आशा रखते हैं, वैसी काया-पलट तो असाधारण मनुष्यकी होती है। अुसके लिअे संस्कार चाहियें। यह बात सच है कि शिलाकी अहिल्या बन गअी, पर अिसके लिअे पहले अहिल्याकी शिला बननेकी जरूरत थी न? मनुष्य अपने पापसे जलकर पत्थर या कोयला हो जाय, तो बादमें अुसे किसी साधुके चरणस्पर्शसे हीरा बननेकी आशा रह सकती है, नहीं तो किसीका भी स्पर्श अुसका कुछ नहीं कर सकता।

आनन्दशंकर और सुन्दरम् आ पहुंचे। सुन्दरम्‌को तो अपने तरीकेके अनुसार आअिनस्टाअिन और दूसरे बड़े आदमियोंके बारेमें बातें करनी थीं, अपने भाषणोंके बारेमें और विद्यार्थियोंके हाथों चलनेवाली किसी हरिजन पाठशालाके बारेमें, जिसे कभी-कभी वे खुद भी देख लेते थे, बात करनी थी। आनन्दशंकरने दोनोंमें से अेक भी बिलका अध्ययन नहीं किया था। सुन्दरम् कहते थे कि अुन्हें अपने दिलका पता नहीं है। थोड़ी देरमें पंडितजीके साथ हो जाते हैं और थोड़ी देरमें बापूके साथ। फिर भी बापूने अुन्हें धीरजसे सब कुछ

समझाया और आश्वासन दिया कि पंडितजीसे कहना कि अगर पहला बिल पास हो सकता हो, तो दूसरे बिलके लिअे खुद मुझे कोअी आग्रह नहीं। और अिस पर भी वे कष्ट करके आ जायं तो बहुत अच्छा हो, ताकि बहुतसी अुलझनें पैदा ही न हों।

जमनादासकी माफीके बाद आज सेतलवाड़को बहादुरी चढ़ी है और वे बापूको अुपदेश देते हैं कि राजनीतिमें आपकी गति नहीं है। आप तो बैठे-बैठे यह भंगियोंके अुद्धारका काम करते रहिये।

४-३-'३२

वल्लभभाअी बोले : आज राजाजी और देवदास आ रहे हैं। अुन्हें कहना कि आप दिल्ली गये, अुसका अितना परिणाम जरूर हुआ कि जमनादासने माफी मांगी, सेतलवाड़ने ये अुपदेश-वचन प्रकाशित किये और दूसरे वक्तव्य भी अभी निकलेंगे।

मीराबहनको कैदीका फर्ज समझाया, कैदीके अधिकारकी बात कही :

"पत्र लिखनेके हकका कैदी दावा नहीं कर सकते। अिसलिअे जब न लिखने दिया जाय, तो यह न समझा जाय कि कोअी चीज छीन ली गयी। धर्म जिसे साधारण जीवनमें अपना कर्तव्य कहता है, वह जेल-जीवनमें दूसरेका लगाया हुआ फर्ज हो जाता है या वैसा दीखता है। मगर हमारे लिअे तो यह कहना भी ठीक नहीं। अेक तरहसे हम तो स्वेच्छासे कैदी बने हैं। अिसलिअे कोअी भी रिआयत वापस ले ली जाय या अधिकारियोंकी मरजीके मुताबिक अुसका नियमन किया जाय, तब हमें यह लगेगा ही नहीं कि हम पर कोअी दबाव पड़ा है। मैं अैसा हूं कि जरूरत पड़े तो तुम्हारे पत्रोंके बिना काम चला सकता हूं। अिसी तरह तुम्हें अपने दिलको तैयार करना चाहिये और अिसमें सुख मानना चाहिये। अेक प्रकारसे तो हरअेक मनुष्य, जब अुसे ये चीजें नहीं मिलतीं, जिनके बिना काम चला लेनेकी अपने आपको तालीम देता ही है। गीताधर्मका अनुयायी सुखपूर्वक, गीताकी भाषामें समतापूर्वक, अिस तरह चीजोंके बिना काम चलानेकी अपनेको तालीम देता है।' गीताका सुख दुःखका विरोधी नहीं है। अिससे वह ज्यादा अूंची स्थिति है। गीताके भक्तके लिअे सुख-दुःख जैसी कोअी चीज नहीं है। और अिस अवस्थामें पहुंचने पर हर्ष-शोक, जय-अजय, लाभ-अलाभ कुछ नहीं रहता। हम अगर गीताकी शिक्षा पर अमल करना सीख लें, तो जेल-जीवन बड़ा लाभदायक है। क्योंकि बाहरसे जेलमें यह सब करना ज्यादा आसान है। बाहर तो हमें अनेक बातोंमें चुनाव करना पड़ता है। अिसलिअे हम हमेशा अपनी परीक्षा नहीं कर सकते। जेलमें

अरुचिकर प्रसंग बहुत आते हैं। हम समतापूर्वक अुन्हें सह लेते हैं या नहीं? अगर सह लें तो समझो कि जीत गये।"

शिवप्रसाद गुप्ताकी भयंकर बीमारीके समाचार आते रहते हैं। कल तो बापू कहते थे: शायद हमें अुन्हें खोना पड़ेगा। आज अुनके मंत्रीको (हिन्दीमें) लिखा: "शिवप्रसादसे कहो कि अखबार पढ़ना छोड़ दे, गीता पढ़े या योगवासिष्ठ या रामायण — बालकांड या अुत्तरकांड पढ़े, अथवा सुक्रातका मृत्यु पर संवाद। जगतका चक्र भगवानके हाथमें छोड़ दे!"

बापूके मीराबहनके नाम लिखे पत्रके अुद्धरण परसे अेक विचार आता है। बापूके बारेमें कभी-कभी मुझे यह खयाल होता है कि 'दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः' का पालन करना बापूके लिअे भी बहुत कठिन होगा।

...का पत्र आया। अुसमें यह लिखा था कि अब हमें अैसा लगता है कि हम अेक बड़े अूंचे शिखर परसे अुतर गये हैं। और बच्चे हो जायं तो गरीबीका व्रत पालना भी मुश्किल हो जायगा। हम अेक-दूसरेके प्रेममें गुंथ जायंगे और विश्वप्रेमकी शक्ति खो बैठेंगे। अिसलिअे हमने शादीका विचार छोड़ दिया है। अिस पत्रका पता लगने पर बापू कहने लगे: सच्चा, ... सच्चा है। अुसे बधाअीका तार देना है।

मुझे यह जरूरतसे ज्यादा लगा। मैंने बापूसे कहा: मुझे पत्रमें सच्चाअीकी छाप नहीं लगती।

बापू चौंके। मुझसे पूछा, यह कैसे कहते हो?

मैंने कहा: मैं काफी विचारपूर्वक कह रहा हूं। मेरे खयालसे बच्चोंकी और दूसरी जो दलीलें दी गअी हैं, वे तो अुन्हें शादीका निश्चय करनेसे पहले सूझनी चाहिये थीं। विवाहका विचार छोड़ देनेके और कअी सबल कारण होने चाहियें। वे जी चुरा कर बात कर रहे हैं।

बापूने कहा: मनुष्यके लिअे कअी कारण हो सकते हैं। मगर अन्तमें अेक कारण तो अिस बारेमें अैसा हो सकता है, जिससे वे अिस निर्णय पर पहुंचे।

मैंने कहा: वह कारण यह नहीं हो सकता। अुनके आश्रममें खलबली मची होगी, ... की धमकियां भी गअी होंगी, अिसलिअे अब अुनसे तिरस्कार सहन नहीं होता। मगर संभव है मैं अुनके साथ अन्याय करता होअूं। अैसा हो तो अुनसे माफी मांगनेको तैयार हूं।

बापू: तुम अुन्हें पत्र लिखो।

अितनी चर्चाके परिणामस्वरूप बापूने अुन्हें तार देनेका विचार तो छोड़ दिया। शामको काका अुनका दो दिन बादका लिखा हुआ परिपत्र

लेकर आये। अुसमें नअी ही वात थी। अुसमें आश्रममें अुथल-पुथल होनेकी साफ ध्वनि है, और वातें भी हैं। और जव वापूके पत्रमें दोनोंके भाअी-वहनके तौर पर रहनेका निश्चय है, तव अिस पत्रमें है: "हम प्रयत्नवान रहेंगे। प्रयत्न शब्द हम जान-वूझकर अिस्तेमाल करते हैं। ब्रह्मचर्य हमें अच्छा लगता है, मगर विवाहका तिरस्कार नहीं कर सकते।"

यह सव पढ़कर शामको वापू कहने लगे: महादेव जो अर्थ लगाता था, अुसके लिअे कारण जरूर है। मैं अव अुसे डाटकर पत्र लिखूंगा।

नीलाका मामला आज ज्यादा भयंकर और करुण वन गया। अुसके वारेमें वातें करते हुअे वापू कहने लगे: वल्लभभाअी, आज आप मुझे हंसता देखेंगे, तो अूपर-अूपरसे ही देखेंगे। मेरा हृदय तो रो रहा है। अिस लड़कीने तो सड़नेमें कोअी कसर नहीं रखी। मेरे खयालसे अव अितना सव जाहिर करके वह मुझसे तो कुछ छिपाती नहीं होगी। फिर भी मैंने अुससे कहा: मैं तुम्हें संरक्षण नहीं दे सकता। तुम्हारा हाथ नहीं पकड़ सकता। मैं लाचार हूं। अभी मुझे यह भरोसा नहीं होता कि तुम जीवनकी गति वदल सकती हो। अिसलिअे क्या करूं? फिर भी अपने पापोंकी खुली घोपणा करनेको तैयार हुअी है। मुझे लिखकर दिखा गअी। अव तो जो हो जाय सो ठीक।

मैंने कहा: आपके पास वह रोअी, मगर मेरे सामने वह लिखते-लिखते कअी वार पागलकी तरह हंसती थी। और मुझे अुससे कहना पड़ा कि तुम्हारे वंगलोर पहुंचनेसे पहले तुम्हारे पागल हो जानेका तार आये तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा।

वापू वोले: ठीक कहा। मुझे भी आश्चर्य नहीं होगा।

वल्लभभाअी कलकी तरह कहने लगे: वापू, यह तो काजलकी कोठरीमें हाथ डालनेकी वात है। वह नहीं सुधर सकती। अिसके लिअे संस्कार चाहिये।

वापू: अिसीलिअे तो मैंने अुसकी रक्षाकी जिम्मेदारी नहीं ली। मैंने अुससे कहा, आज तुम्हारा हाथ पकड़नेवाला भगवान है। आज तो तुम विक जानेकी स्थितिमें भी नहीं हो। सिर्फ तुम सारे लड़कोंको ठग रही हो। अुनके सामने अपनेको खोल दो और अुनसे माफी मांगो।

मैं स्तव्ध हुआ भी और नहीं भी हुआ, कारण यह अनुभव नया नहीं। और अितने पर भी अिस स्त्रीके प्रति तिरस्कार नहीं होता। अुसने जो कुछ किया वह अैसा मानकर नहीं किया कि वह पाप है। यह मानकर किया कि यह सव हो सकता है। अगर वह यह समझ जाय कि अुसका जीवन

पापमय है, तो यह नहीं कहा जा सकता कि अुसके सुधरनेकी आशा नहीं। कुछ स्वभावोंके लिअे-ज्ञान शक्ति है (Knowledge is power) और पवित्रता ज्ञान है (Virtue is knowledge)—ये दोनों सच हैं। कुछके लिअे—'जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः' जैसे स्वभाववालोंके लिअे—प्रवृत्तिके सिवाय और कोअी अुपाय नहीं।

राजाजी और देवदास आये। राजाजीके साथ बापूने बहुत विनोद किया। ट्रस्टियोंसे मंदिर खुलवाये जायें। मगर जहां बहुमत खुलवाना चाहे, वहां सनातनी अुत्पात न करनेका वचन दें तो दूसरा बिल वापस लिया जाय और पहला पास कराया जाय, यह राय राजाजीको बताअी। यह भी कहा कि अिसी बातको लेकर मथुरादास मालवीयजीके पास गये हैं। राजाजी और शंकरलाल यह मानते मालूम हुअे कि २४ तारीखको बिलके पेश होनेकी ५० फी सदी संभावना है।

काकाकी वर्णाश्रम सम्बन्धी कल्पना और बापूकी कल्पनाके बीच काफी फर्क मालूम हुआ।

गोपालनसे बापू कहने लगे: 'टाअिम्स'ने तुम्हारा लेख छापा और अपने संवाददाताका नहीं छापा, अिसका कारण यह है कि तुम्हारा लेख मुझे बुरे रूपमें रखता है, जब कि मेरा लेख मुझे अच्छे रूपमें दिखाता है। और 'टाअिम्स' मेरा मजाक अुड़ानेका मौका कैसे छोड़ दे? बात यह है कि मुझमें चीजोंको असरकारक ढंगसे रखनेकी शक्ति है। अिसलिअे जो मेरी अपनी भाषामें न हो, अुसे मेरा कहकर नहीं छापना चाहिये। यह स्वच्छ और सत्यमय विचार और आचारकी जिन्दगीभरकी आदतका परिणाम है।

. . . . के पत्रोंके परस्पर विरोधी भाव और मजेदार भाषा पढ़कर बोले: मनुष्यको अच्छा लिखनेकी शक्ति मिल जाय, तो वह भी बड़ी खतरनाक चीज है। वह अिसका किस ढंगसे दुरुपयोग कर सकता है, यह हम देख रहे हैं।

५–३–'३३

नीलाकी भयंकरताके विचार आते रहते हैं, लेकिन अुसमें झूठ और धोखेबाजीके सिवाय और क्या भयंकर है? रूसका चित्र खींचते हुअे हिन्डस लिखता है: "कहानीकी नायिका कालेजकी विद्यार्थिनी है। अपनी सखीको लिखते हुअे वह गमगीन होकर कहती है: 'अब हमारे बीच जरा भी प्रेम नहीं रहा, सिर्फ काम-सम्बन्ध ही है। लड़कियां लड़कोंके साथ सप्ताहके लिअे, महीनेभरके लिअे या कभी-कभी तो अेक रातके लिअे ही आसानीसे संबंध जोड़ सकती हैं।

जो अैसे शरीरसंबंधके सिवाय प्रेमके नाम पर किसी और बातकी अपेक्षा रखती हैं, अुनकी पठित मूर्खके तौर पर हंसी होती है।"

"'मून ऑन दि राबिट' नामके अेक और अुच्छृंखल अुपन्यासमें टानिया नामकी नायिका बहुत थोड़े अरसेमें २२ शादियां करती है और अन्तमें निराश होकर आत्महत्या करनेकी कोशिश करती है। लेकिन अंतमें वह अेक गंवार और निर्दोष युवक किसानके निष्ठापूर्ण प्रेमसे मुक्ति प्राप्त करती है। . . . अेक दूसरी नायिकाकी अैसी अिज्जत अपनी सखियोंमें हो गअी है कि अुसने सब तरहकी नीति अनीतिको ताकमें रख दिया है और कोअी भी लड़का हाथ लग जाय तो अुसे वेश्याकी तरह स्वीकार कर लेती है" वगैरा वगैरा।

अिन वर्णनोंमें आअी हुअी लड़कियोंसे यह क्या भिन्न है? फर्क सिर्फ झूठका है। असलमें ये कहानियां यह बताना भूल जाती हैं कि अैसे जीवनमें अन्तमें झूठके सिवाय और कुछ आ ही नहीं सकता। जिन्दगीके अलग-अलग खाने नहीं हो सकते। वह अेक अखंड वस्तु है। अेक खानेका प्रकाश या अंधेरा दूसरे खानोंमें भी प्रकाश या अंधकार किये बिना नहीं रहता।

जमनादासके बयानमें और अुनके अमुक काम न करनेकी दी हुअी गारंटीमें जो 'बहादुरी' है, अुसकी 'सोशियल रिफार्मर' और 'क्रॉनिकल' बड़ाअी कर रहे हैं। वल्लभभाअी बोले: अब तो बहादुर कहलाना हो तो माफी मांगकर बाहर निकलो। यहां अन्दर पड़े रहोगे तो कायर मान लिये जाओगे।

जो चीज बिचारा मेजर देख सकता है वह भी ये अखबार नहीं देख सकते कि अिस बयानमें कितने ही अप्रस्तुत भाग हैं। सुलहके बाद बहुतोंने लड़ाअीकी तैयारी की थी, तो वह जेलमें किस लिये आया?

६-३-'३३

नीलाको हरिजनवाले शास्त्रीने किस तरह बचाया, यह बात अुल्लेखनीय है। अुसके नाम अेक मनीआर्डर आया था। शास्त्री और वह लेडी ठाकरसीके यहां वापस जा रहे थे। रास्तेमें डाकखाना आया। अुसे डाकियेने कहा: आपका मनीआर्डर है। तार तो पहले आ ही गया था। अुसने पहले मनीआर्डर नहीं लिया, मगर रास्तेमें खयाल आया कि लाओ, मनीआर्डर ले आअूं। वह पागलकी तरह खिलखिलाकर हंसी। शास्त्री चिढ़े। अिसलिअे अुन्होंने अुससे बात की।

शास्त्री बोले: तुमने अपना भूतकाल मिटा देनेका विचार कर लिया हो, तब तो भूतकालमें तुमसे संबंध रखनेवाले आदमियोंसे भेंट स्वीकार नहीं की जा सकती।

वह वोली: यह अीश्वरकी तरफसे मदद नहीं हो सकती? जव मेरे पास अेक भी पैसा नहीं, तव संकटमें अीश्वरने ही अिस तरह अचानक मदद न भेजी होगी?

शास्त्री: अिस तरह पहले ही कदम पर तुम्हारे रास्तेमें लालच डालकर अीश्वर क्या तुम्हारी परीक्षा नहीं करता होगा? अिससे वह चेती और यह कहकर आगे वढ़ी कि यह रुपया हरगिज नहीं लिया जा सकता।

अेक नये हरिजन कार्यकर्ता और अेक दफ्तरके कारकूनके वीच संवाद:

स०: आप खादी हमेशा पहनते हैं?

ज०: नहीं, नियमित रूपसे नहीं कह सकता, क्योंकि कलकत्तेमें था तव स्वदेशी कपड़े पहनता था।

स०: मगर आप अिस काममें आकर लगे, अुससे पहले आपको क्या वेतन मिलता था?

ज०: टाटाके यहां ९०० रुपये मिलते थे। फिर वेतन और कमिशन मिलाकर भी अितना ही मिलता था। मकान, मोटर वगैरा थे।

स०: तो वह सव छोड़कर आप यहां आये?

ज०: हां, आज सुवह पत्र आया और दोपहरको अिस्तीफा दे दिया।

स०: यह कैसा पागलपन है? यह तो अैसी ही वात हुअी, जैसी आजकल वहुतसे लोग जेल चले जाते हैं।

ज०: नहीं, विलकुल अितना ज्यादा तो नहीं मानता, मगर कुछ तो जरूर है।

स०: यहां कितना वेतन मिलेगा?

ज०: यहांके वेतनमें और वहांके वेतनमें कोअी मुकावला नहीं।

स०: तो भी कितना?

ज०: पचहत्तर।

स०: क्या वात कर रहे हैं? आप कुटुम्वका भरणपोषण किस तरह करेंगे?

ज०: मेरे पास पिछली कमाअीसे पचास रुपया व्याज आता है। दस-पांच रुपये और चाहियें, तो मैं महात्माजीसे मांग सकता हूं।

स०: ओहो, अपनी गांठसे अितना खर्च करके यह सेवा कर रहे हैं। .... मुझसे यह नहीं हो सकता। मुझे दस आदमियोंका पेट भरना है। मुझे तो दस रुपया ज्यादा मिल जाय तो अिसे छोड़ दूं।

हरिभाअू और राजभोज आ पहुंचे। अछूतोंको हिन्दुओंमें माना जाय तो फिर अुन्हें किस वर्णमें गिना जाय, अिस विषयमें

७–३–'३३

चर्चा हुअी। बापू बोले: सभीका वर्ण शूद्र है, क्योंकि सब अपने धर्मसे गिर गये हैं। अिसलिअे हरिजन भी शूद्र माने जायेंगे। बादमें हरिजन जैसे काम करेंगे और अपनेको जो मनवाने लगेंगे, अुसी तरह माने जायेंगे। अगर तीन वर्ण अपना अभिमान नहीं छोड़ेंगे और अूंच-नीचका भेद मानते ही रहेंगे, तो नतीजा यह होगा कि अिनमें से बहुतसे अूंचे माने जाने बन्द हो जायेंगे और अुनमें से बहुतसे अपने-अपने गुण-कर्मानुसार अूंचे वर्णके माने जायंगे।

काकासाहब अपने शिक्षकके गुण हरअेक मामलेमें कैसे दिखाते हैं, अिसका अुदाहरण। बापूने अस्पृश्यताका आन्दोलन अुठाया है, अिसलिअे सविनय आज्ञाभंग छोड़ दिया है, अैसी आलोचना करनेवालोंको काका धीरजसे समझाते हैं और कहते हैं: मान लीजिये आपने अहमदाबादका टिकट लिया और गाड़ीमें बैठ गये। तो आप जानेवाले तो अहमदाबाद ही हैं, मगर गाड़ीमें बैठनेके बाद आप रास्तेमें दूसरे कअी काम कर लें तो अिसमें क्या बुराअी है? अुलटे, यह तो अेक पंथ दो काज हो गये कहा जायगा।

बापू आज दिल्लगीमें कहने लगे: सावरकरने अन्दमानमें कितने साल बिताये?

हममें से किसीने कहा: चौदह।

बापू: ओहो, तब हमारा तो चौदहमें से अेक ही बीता है न? अभी तेरह बरस बाकी हैं।

मैंने कहा: तो यह भी तय है न कि अीश्वर हम सबको तेरह वर्ष जिलायेगा?

बापू: अुसे हमें यहां रखना होगा तो जरूर जिलायेगा।

फिर बोले: वे लोग कुछ भी देनेवाले नहीं। अिन लोगोंमें कुछ भी ज्यादा मांगनेकी ताकत नहीं। वे लोग हमें क्यों छोड़ें? छोड़नेका कोअी भी कारण नहीं।

बापूने यह सूचना दी थी कि आश्रममें बड़ी अुम्रकी स्त्रियोंको अध्ययनकी आदत पड़े, अिस दृष्टिसे भी अुनके लिअे अंग्रेजी कक्षा

८–३–'३३

खोलना अच्छा है। अिस विषयमें नारणदासभाअीको शंका हुअी कि यह तो विचारमें परिवर्तन माना जायगा। अिसके जवाबमें बताया: "मेरे खयालसे आश्रममें रहनेवाली प्रौढ़ बहनें जो

कुछ सीखना चाहें, सो सीखने देना चाहिये। अुन्हें पग-पग पर अपनी कमी खटकती है। अुसमें भी हमारी परिस्थितिमें अंग्रेजीकी कमी ज्यादा खटकती है। गणितके विना काम चल सकता है, गुजराती जैसी तैसी चल सकती है, मगर अंग्रेजी न आनेके कारण वे परेशान रहती हैं। अंग्रेजोंके साथ हमारा परिचय रहेगा ही – रहना चाहिये। अंग्रेजी भाषाके साथ भी रहेगा। अिसलिअे अुन्हें यह खयाल होता है कि थोड़ीसी भी अंग्रेजी जान लें, तो अुसका तुरंत अुपयोग किया जा सकता है। यह दलील विलकुल ठीक हो सो वात नहीं। मगर अिसमें अूपर कहे अनुसार तथ्य है, अिसलिअे यह लुभानेवाली बन जाती है। अंग्रेजी सीखनेमें अधर्म तो है ही नहीं। और कुछ सीखनेमें मन न लगे तो अंग्रेजी सिखाकर भी हम बहनोंको अध्ययनशील बना दें यह अच्छा ही है। मुझे लगता है कि प्रौढ़ बहनें किसी भी तरह विद्यार्थी जीवन बिताने लगें तो अच्छा है, ज्ञान प्राप्त करें तो यह भी अच्छा है। अिसलिअे मैं मानता हूं कि जो पुरानी बहन चाहे, अुसके लिअे हमारी शक्तिके अनुसार अंग्रेजी सीखनेकी सहूलियत हमें कर ही देनी चाहिये।"

अिसके सिवाय लक्ष्मीके बारेमें लम्बा पत्र लिखा। अुसमें लक्ष्मीके विवाहके औचित्यके बारेमें लिखा और यह बताया कि अुस विवाहका अिस आन्दोलनके साथ संबंध नहीं।

सवेरे मूर्ति नामका लड़का आया। अिसी जेलमें था। यहांसे छूटकर बम्बअी गया। बंबअीसे यहां बापूसे सलाह लेने आया था। बातें करनेका शअूर नहीं था। चाहे जैसे बोलता था। अुसे बापूने कहा: मैं तुम्हें कैसे सलाह दे सकता हूं? तुम मुझे यह न कहो कि बंबअीमें या और कहीं आन्दोलन खतम हो गया है। अुसके साथ मेरा संबंध नहीं। यह हकीकत सच हो तो भी मैं कैसे मानूं? मेरे लिअे मेरी स्त्री पतिव्रता है। कोअी मुझसे आकर यह कहे कि वह व्यभिचारिणी है तो मैं कैसे मानूं? मैं तो जब तक अपनी आंखसे न देख लूं, तब तक अुसे सीता, सावित्री और दमयंतीके बराबर ही पवित्र समझूंगा। मगर तुम्हें विश्वास न रहा हो, तुममें लड़नेकी ताकत न रही हो और यह लड़ाअी चलाना तुम्हें ठीक न लगता हो, तो तुम अिसे छोड़ दो।

अस्पृश्यताके बारेमें अुसने पूछा: यह अस्पृश्यता आजकी तो है नहीं। यह तो सही है न कि वह प्राचीन है?

बापू: नहीं, वह अर्वाचीन है। मैं अुसे प्राचीन नहीं मानता। अगर यह साबित हो जाय कि वह हिन्दूधर्मका अंग है, तो अुस हिन्दूधर्मको छोड़ देनेमें मुझे अेक क्षण भी देर नहीं लगेगी। अगर अस्पृश्यता हिन्दूधर्मका

अंग हो, तो असे सड़े हुअे धर्मके लिअे मैं प्राण देनेको तैयार न होअूं। मैं तो शुद्ध सनातन धर्मके लिअे प्राण त्याग करनेको तैयार हुआ हूं।

'हरिजन' के गुजराती संस्करणके लिअे पटवर्धन कल ही कलेक्टरके पास गये और डिक्लेरेशन दे आये।

बापू कहने लगे: यहां 'सर्वेन्टों' (भारत सेवक समाजके सदस्यों) की अितनी प्रतिष्ठा है कि सरकार मानती है कि ये लोग कानूनके विरुद्ध कुछ नहीं करेंगे, और अैसा हो जाय और बन्द करनेको कहेंगे तो बन्द कर देंगे। अिस साखके कारण हमें अितनी आसानी रहती है।

काकाने. . . और . . . के बारेमें विलेपार्लेमें अुड़नेवाली गप्पोंके बारेमें पूछा। यहां होनेवाले पत्रव्यवहारसे मैं जितना जानता था, अुतना बताया। कार्यकर्ताके बारेमें किसीको अंगुली अुठानेको मिले, यह अितनी खतरनाक बात है कि मनुष्यको सौ बार चेतकर सार्वजनिक काममें पड़ना चाहिये। 'सेवाधर्मः परम गहनो योगिनामप्यगम्यः' यह सोनेकी मुहर जैसा वचन है। अिसे कअी बार सुना होगा। मगर अिसका रहस्य जब अैसे और . . . जैसोंके अुदाहरण सुनते हैं, तभी अच्छी तरह मालूम होता है। आज ही 'हरिजन'के लिअे कार्यकर्ताओंकी योग्यताओं पर अेक महत्त्वपूर्ण लेख* लिखा।

९–३–'३३

आज नारणदासभाअीके नाम अेक महत्त्वका पत्र लिखवाया। . . . की और दूसरोंकी बीमारीकी चर्चा करते हुअे रोगियोंके लिअे आश्रम छोड़ना आदर्श बताया। अिसके सिवाय परशुराम या जिस किसीके साथ निभाव न हो सके, अुसे तलाक दे सकते हैं, यह सूचना देते हुअे तलाककी आजादी और धर्मके बारेमें अेक छोटासा तत्त्वज्ञानसे भरा हुआ प्रवचन लिखा। आश्रमवासी और आश्रमके बीच पति-पत्नीका संबंध बताया और खास हालतोंमें तलाककी स्वतंत्रताकी अिस संबंधके बारेमें कल्पना की!

सुबह ही सुबह 'हरिजनबन्धु' — त्रिवेदीजीका दिया हुआ नाम — के लिअे तीन कालमके दो लेख लिख डाले। यह कहते थे कि अितना देना पड़ेगा तो दे सकूंगा, अिससे ज्यादा नहीं दे सकूंगा। थकावट काफी आ गयी थी।

महत्त्वके पत्र लिखवाये। अीस्ट अिंडियन अेसोसियेशन (बंगाल) को बंगालके समझौतेके बारेमें, मिरजाको नीलाके विषयमें तथा मेरी और डंकनको श्रमजीवन और तालीमके बारेमें लम्बे पत्र लिखवाये।

---

* देखिये 'हरिजन', भाग १, अंक ५।

दासुकाका जोशी आये। वे कह गये कि आप जल्दबाजीसे काम न लें, तो हम आपके साथ ही हैं। केलकर आपको गालियां दे और आपकी आलोचना करे, यह हमें पसन्द नहीं। अुसकी अेक भी बात हमारे गले नहीं अुतरती।

वैकुण्ठ महेता आये। अुन्होंने अस्पृश्यता-निवारणका काम करनवाले कार्यकर्ताओंके लेनेकी प्रतिज्ञाकी बात की। बापू बोले: वैतनिक और सारा समय काम करनेवालोंके लिअे प्रतिज्ञा जरूरी है। यह आन्दोलन खूब चले और हमारे मातहत पचास हजार काम करनेवाले हों, तो भी अैसी प्रतिज्ञा न रखें तो आन्दोलन चूर-चूर हो जाय। दूसरे, मनुष्य जब तक अेक ही कामसे बंधा हुआ न हो, तब तक वह अुसके साथ पूरा न्याय नहीं कर सकता।

वैकुण्ठ बोले: कितने ही सालों तक अैसा ही किया है, मगर बादमें लगा कि देशमें होनेवाले कामकाजसे अिस तरह अलग रहकर बैठनेसे कैसे काम चल सकता है? अिसलिअे सब बातोंमें भरसक भाग लेता हूं।

बापू: यह ठीक है। अिसके लिअे तो मनुष्यको अपने आदर्शके अनुकूल काम ढूंढ रखना चाहिये और अैसा करना चाहिये कि वह अुस आदर्शके अनुकूल ही बदला जा सके। वैसे अिस प्रतिज्ञामें जो 'राजनैतिक मामलोंमें' शब्द हैं, अुनका संकुचित अर्थ न करना। अुनका अर्थ तो सिर्फ सविनयभंग ही है। देवधर और कुंजरू क्या राजनैतिक मामलोंमें भाग नहीं लेते? फिर भी वे लोग अिस प्रवृत्तिमें भाग लेते हैं न? हमने अिस प्रतिज्ञामें ये शब्द अिस अर्थमें अिस्तेमाल किये हैं कि हमारे कार्यकर्ता छिपा काम करनेवाले न हों या जेल जानेके काममें न लगे हों।

फिर सांप्रदायिक कामके बारेमें पूछने पर कहा: आर्यसमाजी और ब्राह्मसमाजी प्रचार कार्य भले ही करें। मगर मंदिर-प्रवेशमें भाग न लें। और हमारे कार्यकर्ता अीसाअियों और मुसलमानोंके खिलाफ शुद्धिके आन्दोलनमें भी नहीं पड़ सकते। यह बात अिस प्रतिज्ञामें जरूर है।

अनसूयाबहन और शंकरलाल आये। मिलोंमें डेढ़ लाख गांठें पड़ी हैं, पचास हजार गांठें व्यापारियोंके यहां पड़ी हैं, जापानका माल आकर जमा होता ही जाता है और मिलोंके बन्द होनेका समय आ रहा है। अैसा कहा जाता है कि पहली अप्रैलको संकटकी स्थिति (crisis) पैदा होनेवाली है।

बापू बोले: कुछ भी करो, मगर मजदूरोंको निराधार स्थितिमें न रखना। मजदूरोंकी यह हालत न होनी चाहिये कि मिलें न हों तो वे भूखों मर जायं। मैं जानता हूं कि अुन्हें कातनेको नहीं दिया जा सकता, न बुननेको दिया जा सकता है। अुनके लिअे काम तलाश करना

चाहिये। यहां बैठा हुआ मैं तुम्हें ज्यादा रास्ता नहीं बता सकता। मैंने तो अपनी राय बताओ है।

आज सुबह छगनलाल जोशीके लिअे बापूको विषय मिल गया था। अुन्होंने कहा: अक्षर अभी सुधर नहीं रहे हैं। थोड़ी-थोड़ी मेहनत कर रहा हूं। अुन्हें जवाब देते हुअे बापू बोले: थोड़ी मेहनतसे कैसे काम चलेगा? तुम्हारी सजा कितनी है? जितना ज्ञान प्राप्त किया जा सके, अुतना कर लो। मुझे तो पांच बरस रहना है, मगर तुम यहां वापस नहीं आ सकते। मुझे पांच बरस रहना है, क्योंकि मैं होरको जानता हूं, होर मुझे जानता है। होर जानता है कि मैं बाहर निकलूंगा, तो लोग मेरी बात सुनने ही वाले हैं। अगर लोग मेरी न सुनें, तो हरिजन कार्यमें भी कहां सुननेवाले थे? मगर मैं तो विश्वासी और आशावादी ठहरा। काम शुरू किया तब खयाल था कि अिसमें बहुत मुश्किल नहीं होगी और सपाटेसे हो जायगा। मगर अब देखता हूं कि अिस काममें भी सरकार काफी रुकावट डाल सकती है। अगर हिन्दू-मुसलमानों जैसी ही स्थिति सनातनी और सुधारकोंके बीच सरकार पैदा कर दे, तो फिर देशको अिससे भी पार होना पड़ेगा। मगर अिसमें हम क्या करें? जिसने यह काम शुरू करवाया है, वह अीश्वर जानता है। अीश्वरको खून-खराबी करानी होगी तो वह भी करायेगा।

१०-३-'३३

नरहरिने अेक लम्बा पत्र लिखकर बताया था कि "आबादीके बढ़ने पर रोक लगानेके दो अुपायोंमें से ब्रह्मचर्यका अुपाय सामान्य बहुजन समाजके बूतेके बाहर लगता है और कृत्रिम ढंगसे संतति-निरोधका अुपाय भयंकर और हानिकारक मालूम होता है। तब क्या किया जाय?

अुन्हें जवाब दिया:

"जिसकी अैसी श्रद्धा जम जाय कि अिसका अुपाय केवल ब्रह्मचर्य ही है और दूसरा है ही नहीं, वह अिसीके अुपाय ढूंढेगा कि ब्रह्मचर्य कैसे सिद्ध हो सकता है। अैसा समझकर कि यह सही चीज है, वह यह विश्वास रखे कि लोग किसी दिन अुसका बड़े पैमाने पर अुपयोग करेंगे ही और अपनी खोज जारी रखे। साथ ही साथ यह विश्वास भी मजबूत होना ही चाहिये कि कृत्रिम अुपायोंमें पग-पग पर खतरा है और अुनसे अनीति ही बढ़ती है। मगर हम यह मान लें कि ब्रह्मचर्यके बड़े पैमाने पर व्यापक होनेसे पहले लोगोंको दुःख अुठाना पड़ेगा। अिसमें मुझे कोअी अनिष्ट नहीं दिखाअी देता। जैसे अेक वैसे ही अनेक जैसा करेंगे वैसा पायेंगे। मगर अीश्वर

अुपवासका अर्थ यथासंभव व्यापक करना है। शरीरके अुपवासके साथ सभी अिन्द्रियोंका अुपवास भी होना चाहिये। गीतामें जो अल्पाहार कहा गया है, वह भी अेक प्रकारका शारीरिक अुपवास ही है। गीता मिताहारका नहीं, बल्कि अल्पाहारका अुपदेश करती है। अल्पाहार स्थायी अुपवास है। अल्पाहारका अर्थ यह है कि जिस सेवाके लिअे शरीर बनाया गया है, अुस सेवाके लिअे शरीरको कायम रखने लायक आहार ही लिया जाय। अिसकी कसौटी यह बताअी जा सकती है कि जैसे दवा निश्चित समय पर निश्चित मात्रामें ही, स्वादके लिअे नहीं बल्कि शरीरके लाभके लिअे ही ली जाती है, ठीक अुसी तरह आहार भी लिया जाय। पेट भरकर खाना तो अीश्वरका और मनुष्यका अपराध है। मनुष्यका अिसलिअे कि पेट भरकर खानेवाले अपने पड़ोसियोंको अुनके भागसे वंचित करते हैं। अीश्वरकी अर्थरचनामें तो मनुष्यके लिअे अुसका रोजका भोजन दवाकी मात्रामें ही पैदा होता है। हम सब पेट भरकर खानेवाले या पेटू ही कहलायेंगे। आहारकी मात्रा आसानीसे जान लेना बड़ा कठिन है। वंशपरंपरासे हमें पेटू बननेकी तालीम मिली है। हममें से कुछको बहुत देरमें पता चलता है कि खाना भोग भोगनेके लिअे नहीं, बल्कि अिस शरीरको — जो हमारा गुलाम है — बनाये रखनेके लिअे है। यह ज्ञान होते ही भोगके लिअे खानेकी वंशपरंपरासे मिली और साथ ही अपनी डाली हुअी आदतके खिलाफ हमें भयंकर संग्राम छेड़ना पड़ता है। अिसलिअे समय-समय पर पूरा अुपवास करनेकी और आंशिक अुपवास तो हमेशा करनेकी जरूरत है। आंशिक अुपवासका अर्थ है गीताका अल्पाहार या दवाकी मात्रामें भोजन करना। अिस प्रकार 'अुपवासके बिना प्रार्थना नहीं हो सकती' ये वचन अैसे हैं, जो प्रयोगसे और अनुभवसे भी सिद्ध किये जा सकते हैं।"

अेक बजे वझे और शास्त्री आ पहुंचे। शास्त्रीकी सादगी और सीधेपनकी मुझ पर अच्छी छाप पड़ी। गोखलेका सीधापन सबमें आया है, यह बापूका थोड़े दिन पहलेका वचन याद आया।

मैंने वझेसे पूछा: आपको बापूका अस्पृश्यताके मसौदे पर दिया हुआ वक्तव्य कैसा लगता है?

वझे बोले: हममें से किसीको भी मात कर दें, अैसे वकील ये हैं। हम अिन मसौदोंके बारेमें क्या जानें? बापू जिस ढंगसे देखते हैं, वह ठीक है।

यह कहकर अपनेसे जितना बन पड़े अुतना करने और खबर देते रहनेका अुन्होंने वचन दिया।

बापूकी आशंका अिस बारेमें अितनी बढ़ गअी है कि अुन्होंने सप्रू-जयकरकी, विशेषज्ञोंकी हैसियतसे, अिस मामलेमें मदद मांगनेवाले पत्र लिखे हैं।

डेक्कन कालेजका महार विद्यार्थी जादव आया। अुसका पत्र आया था। अुसने टेलीफोनसे मिलनेका समय मांगा था। बापू कहने लगे: यह बेचारा बड़ी मुश्किलमें होगा। अिसे टेलीफोनसे ही समय दो और आज ही आने दो। वह आया। अुसे बारीकीसे जरा जरासी बातें पूछीं। बाप क्या करता है, कुटुम्बमें कितने आदमी हैं, अंधे बापको क्या पेन्शन मिलती है, खुद क्या खाता-पीता है; वगैरा प्रश्न किये। अुसने बताया कि वह भगत है — ढेड़ोंका गुरु है और गोमांस, शराब वगैराको नहीं छूता। अुसने कहा, मुझे बीस रुपयेकी छात्रवृत्ति मिलती है। कालेजके दूसरे खर्चकी तफसील मांगी, पढ़ाअीकी तफसील मांगी और आधे घंटेसे ज्यादा समय दिया। अुसकी सच्चाअीकी अच्छी छाप पड़ी। अुसने दस रुपयेकी मदद मांगी। बापूने खुशीसे अिसका प्रबन्ध करनेका वचन दिया।

सवेरे कहने लगे: अिन लोगोंके मामलेमें मैं अपने खास विचार अमलमें लाअूं, तो ये बेचारे मर ही जायं न? वह लड़का सरकारी कालेजमें पढ़ता है, तो भी मैंने अुसके लिअे छात्रवृत्ति जुटा देनेका वचन दे दिया न?

२७-१-'३३

यही बात बिल पर लागू होती है। पूनाके दो-तीन ब्राह्मण खादी पहने हुअे और सीधे-सादे दिखाअी देनेवाले आये। अपने दिलका दुःख आपके आगे रोने आये हैं, यह कहकर अेकने यह डर बताया कि बापूके आन्दोलनसे वर्णाश्रमधर्मका नाश हो जायगा। अुनके साथकी कुछ मजेदार बातें:

बापू: आप ब्राह्मण हैं, यह अदालतमें किस तरह सिद्ध कर सकेंगे? यह आप कैसे कह सकते हैं कि आपके पूर्वज ब्राह्मण थे? जनगणनामें अिन लोगोंको अस्पृश्य बताया गया है, अिसी परसे आप अुन पर अस्पृश्यताकी छाप लगाते हैं, यह बड़ी बेचैन करनेवाली बात है।

वे: ब्राह्मणीसे शूद्र द्वारा पैदा किया हुआ आज कोअी है? यह आप पूछते हैं, तो आज जो ब्राह्मण हैं, अुन्हें आप ब्राह्मण कैसे मानते हैं? ब्रह्माके अपने मुंहसे पैदा किये हुअे ब्राह्मण आज न हों, फिर भी हम ब्राह्मण कहलाते हैं। जैसे हम परंपरासे ब्राह्मण हैं, वैसे ही चांडालीसे पैदा हुअे चांडाल हैं।

बापू: आप खुली आंखें और खुला दिमाग रखकर बात करें, तो मैं आपको बता दूंगा कि मैं सनातनियोंको कुछ भी करनेके लिअे मजबूर नहीं करता।

... और ... व्यापार करने आये हैं। मुझसे पूछने लगे: आपके लिअे हम कुछ कर सकते हैं? मैं भंडारीको जानता हूं। कुछ कहना हो तो अुन्हें कह सकता हूं। अिस अस्पृश्यताके कामकी फिल्म ली जाय तो कैसा रहे?

मैंने अुन्हें खूब सुनाअी। फिर भी बापूके पास राय लेने गये। बापूने भी खूब सुनाअी।

बापू: आप रेतमें से तेल भले ही निकाल सकें, किन्तु मुझसे कहानी नहीं निकलवा सकेंगे। कहानी चाहिये तो सरोजिनी देवीके पास जाअिये। वे आपको गांधीकी कहानी दे सकती हैं। वे मेरी मां और प्रेयसी दोनों हैं।

वे: किन्तु कठिनाअी यह है कि सरकार सिनेमाके पर्दे पर गांधीको नहीं आने देगी।

बापू: अिसमें तो मुझे आनन्द ही है। पर्दे पर मेरा प्रदर्शन होना बच जाता है। सिनेमाके पर्दे पर भी सरकार मेरे साथ सहयोग कैसे कर सकती है?

नाटकोंसे मैंने लाभ अुठाया है। मैंने शेक्सपीयरके नाटक खेले जाते देखे हैं और वे मुझे याद रह गये हैं। सत्य पर मेरा अनुराग हरिश्चन्द्र नाटक देखनेके बाद खूब बढ़ा। मैं जानता हूं कि नाटकोंसे बहुतसे लोग बरबाद हो गये हैं। अलबत्ता, मुझे तो अिनसे लाभ ही पहुंचा है। अिसी तरह मूवी या टाकी किसीको लाभदायक हो सकती है। किन्तु मेरा तो अुनके बारेमें पूर्वग्रह बन चुका है। मैं सिनेमाके चित्रको आशीर्वाद नहीं दे सकता। अब जाअिये।

गुजराती विद्यार्थियोंके साथ सवाल-जवाब:

२८-१-'३३

स०: आपके वर्णाश्रम संबंधी विचार क्या लेमार्कसे मिलते-जुलते हैं?

बापू: मुझसे पूछो तो मैं बताअूंगा कि मेरे विचार लेमार्कसे नहीं मिल सकते। मैं कहता हूं कि शूद्रमें ब्राह्मणके गुण हो सकते हैं और फिर भी अुसे ब्राह्मण नहीं कहते। और ब्राह्मणके लड़केमें ब्राह्मणके गुण न हों, तो अुस लड़केकी मां ही कह सकती है कि ये गुण अुसमें क्यों नहीं हैं। अुसने कभी व्यभिचार किया हो तो! भाअी, यह सब अनुमान और

शक्यताअें हैं। सिद्धान्तमात्र निरपवाद होने चाहियें। हमारे शास्त्री वितंडावादी हैं और रटी हुअी बातें करते हैं।

स०: रटी हुअी कैसे?

बापू: रटी हुअी ही कहते हैं। तुम मेरे साथ मौजूद रहो, तो अिसका पता चले कि शास्त्री क्या कहते हैं।

स०: मैं तो हमारे शास्त्रियोंकी बात नहीं करता, बल्कि विज्ञानाचार्योंकी बात कहता हूं।

बापू: तुम्हारे विज्ञानाचार्य भी मानेंगे कि सिद्धान्त निरपवाद होने चाहियें।

स०: समाजकी रचनामें अुदाहरण अपवादरूप होते हैं। किन्तु सिद्धान्त तो यह है कि आदर्शकी तरफ जानेका हम अपना ध्येय रखें।

बापू: आदर्श तो यही है। यदि मैं अिसे न मानता होता, तो वर्णाश्रमधर्मको न पालता होता। मैं तो अिस धर्मका पालन करके अिसे घोलकर पी गया हूं। अिस धर्मके बारेमें बातें करनेवाले आते हैं और कअी आरोप लगाते हैं, तब मैं रोता हूं और हंसता हूं।

स०: किन्तु साधारण लोग तो आप जैसे हैं, अुससे आपको अलग ही समझते हैं।

बापू: अिसका अर्थ यह हुआ कि मेरे साथ काम करनेवाले गड़बड़ करते हैं। तब तो हमें अिसकी जांच करते रहना चाहिये। मैंने तो कहा है कि ब्राह्मणकी लड़की ब्राह्मणसे शादी करे, तो भी संकर हो सकता है। मैं तुमसे कहता हूं कि सारे ब्राह्मण कोअी ब्राह्मण नहीं हैं। तुम जानते हो कि आज ब्राह्मण कहलानेवाले बहुतसे ब्राह्मण नहीं हैं? अभी-अभी अेक आदमीको पत्र लिखवाया है। अुसका सुझाव यह है कि नाम बदल दें, तो अस्पृश्यता चली जायगी। दूधाभाअीने भी मुझे यही कहा था। मैंने अुन्हें कहा था कि यह तो भद्दी बात हुअी। अंत्यज हूं, अैसा कहनेवाले पर मार पड़े और तुम ढोंग करो और जाति छिपाओ, अिससे अस्पृश्यताका नाश कैसे होगा?

आजकल क्या हो रहा है, सो कहता हूं। भाटियोंमें कन्याओंकी कमी होती है। वे हरिद्वारसे कन्याअें ले आते हैं। वे क्या सब भाटिया होती होंगी? राजपूतोंको ले लो। कौन स्त्री वहां पवित्र होगी, अिसका पता ही नहीं चलता। गोला और खवास अिन दो जातियोंमें से पैदा हुअे हैं। मैंने 'यंग अिंडिया' में जो लिखा है, वह तुमने पढ़ा नहीं। ये जो घटनाअें होती

हैं, अुन पर शास्त्रीय खोज करनेवालोंको विचार करना चाहिये। तुम विज्ञानकी पुस्तकें ध्यानसे पढ़ते होगे, तो देखोगे कि हरअेक वैज्ञानिक अपने सिद्धान्त सुधारता ही जा रहा है।' तुमनें खगोलकी पुस्तकें पढ़ी हैं? वैज्ञानिक वृद्धि प्राप्त करनेके लिअे हरअेक विज्ञानमें चंचुपात करना चाहिये।

स० : जीवशास्त्रमें आनुवंशिकताके सिद्धान्तको बाधा ही नहीं आती।

बापू : किन्तु अिसमें हमें कोअी अेतराज ही नहीं। अिसीलिअे मैं हिन्दू-धर्मको माननेवाला हूं।

स० : कुछ गुण छिपे हुअे हो सकते हैं और कुछ स्पष्ट दिखाअी दे सकते हैं। अिसलिअे कुछ गुण दिखाअी न देते हों, तो अिससे ब्राह्मण ब्राह्मण क्यों नहीं रहता?

बापू : मैं यह कहता हूं कि मेरा लड़का पतित वैश्य है। अिसी तरह पतित ब्राह्मण भी कहला सकता है।

स० : मेरा प्रश्न यह है कि किसीमें ब्राह्मणके मुख्य गुण — अध्ययन-अध्यापन — हों और शूद्रकी तरह रहता हो तो?

बापू : आनुवंशिकता तो अिसमें है कि पीढ़ी दर पीढ़ी अिन गुणोंके दर्शन होते रहें।

स० : जो ब्राह्मण ब्राह्मणके कर्म न करता हो, अुसे क्या कोअी कन्या नहीं देता?

बापू : अभी तो कोअी अैसा करता नहीं। आजकल तो रुपये और नामसे शादी होती है। हमें शास्त्रोंकी बहुत खोज करनेकी जरूरत है।

स० : अेक पिताका परिवार है। किन्तु अलग-अलग देशोंमें भी अलग-अलग जातियां हैं।

बापू : कानून अपने यहां मालूम हुआ। कानून जानने और अुसे जान-बूझकर मान देनेसे खोज हुअी। हिन्दूधर्मने अिस कानूनको जाना, अिसे लिखा और धाराअें तैयार कीं। अुसका आदर करके चलनेवालेका पुनरुद्धार हो सकता है। किन्तु आज तो वर्णाश्रमधर्मका लोप हो गया है। कानून तो अपना काम करता है। यह संभव है कि वर्णाश्रमधर्म नया तैयार करना पड़े। अलबत्ता, अिसके बारेमें मैं यह नहीं कह सकता कि अुसमें फेरबदल नहीं करना पड़ेगा। मैं तो शास्त्रके तौर पर कहता हूं कि अुसका पुनरुद्धार करना पड़ेगा। सब शास्त्री यह मंजूर करते हैं कि आज अुसका लोप हो गया है।

अेक अरदेसर नामके पारसी बौद्ध धर्म और हिन्दू धर्मके बारेमें भाषण देकर कहने लगे : हिन्दू धर्म पर अभी बुधका ग्रह है, अिसलिअे वह बड़ी आफतमें

है। प्रभुने जन्म-मरणके कायदेके अनुसार ढेड़ोंको अेक खास जन्म दिया है। शास्त्रोंका मुझे ज्ञान नहीं है। किन्तु मैं अैसा मानता हूं कि जिस समय शास्त्र लिखे गये, अुस समय हिन्दुस्तान पागल नहीं था। तब यहां बड़ा भारी Civilization (सुधार) था, Unseen (अदृश्य) तरीकेसे कायदे बनाये गये हैं।

बापू: मैं आपसे पूछता हूं कि अस्पृश्य किसे कहेंगे?

पारसी: दुनियामें हाअी सोल्स (अूंचे जीव) भी हैं और लो सोल्स (नीचे जीव) भी हैं। कुछने ढेड़का धन्धा कर लिया — धन्धेके बारेमें यदि आप कहते हों तो आप सही हैं। किन्तु जो लोग नीचे जन्मे हैं, अुन लोगोंमें और अूंचे वर्ग-वालोंमें बड़ा भेद है।

बापू: धंधेके कारण जो अस्पृश्य है, वह अस्पृश्य नहीं माना जायगा न?

पारसी: नहीं।

बापू: तब और तो कोअी रहे ही नहीं।

पारसी: दोनोंकी मिलावट हो गअी है। अिसलिअे असली अस्पृश्योंको कौन छांट सकता है?

बापू: किन्तु जिनकी गिनती आप अस्पृश्योंमें करते हैं, अुन्हें आपको सिद्ध करना चाहिये न? अितिहास जाननेवाले नहीं कह सकते, अच्छे शास्त्री नहीं कह सकते। आप जानते हैं कि हिन्दुस्तानमें अस्पृश्य किसे कहा है? अिसमें ब्राह्मणीकी शूद्रसे हुअी सन्तानको चांडाल कहा गया है। किन्तु ब्राह्मणी पतित हुअी, अुसके पहलेसे नट और चमारके धंधे चले आ रहे हैं। अिसलिअे नट और चमारकी अैसी अुत्पत्ति मान लेना तो अुन्हें मार डालना ही कहलायेगा न? और फिर चांडालके लिअे अैसी सजाअें कही गअी हैं कि वह जी ही नहीं सकता। आस्ट्रेलिया और अमेरिकाके रेड अिंडियन नष्ट हो गये हैं, यह जानते हैं न? अुन पर जो जुल्म हुअे हैं, अुनसे भी ज्यादा जुल्म चांडालों पर गुजरे हैं, यह आपको मालूम है? तब तो चांडाल बच ही नहीं सकते।

पारसी: अिस संबके बारेमें मैंने विचार नहीं किया।

बापू: तब आपको अध्ययनके बिना यहां नहीं आना चाहिये। आप शास्त्रियोंसे मिलिये, सोचिये, अध्ययन कीजिये और फिर मेरे पास आअिये। चांडालोंके जिन्दा रहनेकी बात ही असंभव थी। वे तो बिलकुल मर गये। अेक समय अैसा था, जब अेक ही हिन्दूधर्म था। अुस समय कोअी चांडाल रह नहीं गया था। आज ब्राह्मण कहलानेवालोंमें अैसे चांडाल होंगे, अिसका आपको पता है या नहीं?

पारसी : आपकी सोल (आत्मा) आगे बढ़ी हुआी है। अुस तरह अूंच-नीच हो सकता है या नहीं?

बापू : हमारी स्थूल आंखोंसे हलका-भारी लगता है, किन्तु सब गंगाका पानी है। आत्मा तो अेक ही है।

पारसी : अलग-अलग लोगोंकी प्रगति अलग-अलग है न?

बापू : शंकराचार्य कह गये हैं कि काल अेक बड़ा चक्र है। मिट्टीके भेदके कारण भ्रम पैदा होता है और हम अलग-अलग मानते हैं। अीश्वरकी दृष्टिमें कोअी अलग नहीं है। अीश्वरके पास दूसरा ही गज है। आत्माके लिअे घटने-बढ़नेकी बात ही नहीं है।

पारसी : आत्मा तो खुद नूर है। पर अिस नूरके आसपास जो बादल हैं, वे अलग हैं न?

बापू : किन्तु ये तो मिथ्या हैं। आत्मा ही सत् है। वह अेक है। आप मुझसे हिन्दूकी तरह बात कीजिये।

पारसी : मुझे हिन्दूधर्मका बहुत ज्यादा ज्ञान नहीं है।

बापू : पर बढ़अीके सामने लुहार बात करे तो कैसे काम चले? देखिये, मेरे पास बहुत सरल बात है और सरल धर्म है। शास्त्रियोंको भी मैं हंसाकर भेजता हूं। कोअी रोता हुआ नहीं गया।

पारसी : पर मेरा कहना यह है कि आपने यह सवाल गलत तरीकेसे हाथमें लिया है। सड़े हुअे सेबके साथ अच्छा सेब रख देनेसे अच्छा भी सड़ जाता है।

बापू : पर मेरे पास कोअी सड़ा हुआ हो तब न? आप जिसे अूंचा वर्ग मानते हैं, वह भी नहीं है और नीचा भी नहीं।

पारसी : हस्ती है, अैसे लोगोंकी हस्ती है। जो धर्मको मानते हैं, अुनसे मेहतर, धोबी और नाअीका काम नहीं कराया जा सकता। पर अिन मेहतरों और नाअियोंकी चांडालोंके साथ मिलावट हो गअी है।

बापू : नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता। चांडालको कोअी यह काम सौंप ही नहीं सकता। आप पढ़िये, शास्त्र और स्मृतियां पढ़िये।

पारसी : शास्त्रोंमें पूर्ण सत्य है, किन्तु किसीने समझा नहीं था। कृष्णके १६१०८ स्त्रियां ब्याहनेकी बात सच है?

बापू : सच है। किन्तु स्त्रियां दूसरी थीं।

पारसी : गीताके बारेमें आपने कहा है कि अुसमें युद्धकी बात झूठ है। आपकी यह बात सच है। अिसी तरह शास्त्रोंकी बात अलग है।

वापूको वार-वार वह हाओी सोल कहता था। अन्तमें मुलाकात खतम करनेके लिअे मैंने कहा: किन्तु ये सव वातोंमें हाओी सोल (अुच्च आत्मा) हों, तो सिर्फ अस्पृश्यताके मामलेमें ही लो सोल (नीच आत्मा) हो गये क्या? वह परेशान हुआ और वात वन्द कर दी।

काका और परमानंद वगैरा आये।

परमानंदने केलप्पनके अुपवाससे लेकर आज तकका सारा प्रकरण खोला। वापूने भी चरखा चलाते-चलाते शुरूसे सारी वात कहना शुरू कर दिया। वार-वार परमानंद पूछते थे: किन्तु अुपवास किस लिअे?

वापू कहते: करोड़ों लोगोंसे मैं प्रतिज्ञाका पालन कैसे कराअूं?

परमानंद: किन्तु क्या यह कहा जा सकता है कि करोड़ोंने प्रतिज्ञा ली है?

वापू: ली है या नहीं ली, यह कहनेका हक तो अुनका है। मुझे वे कह दें कि हमने प्रतिज्ञा नहीं ली तो मैं चुप हो जाअूंगा। यदि प्रतिज्ञा ली हो तो अुसका पालन मैं किस तरह कराअूं? यदि अपने ढंगसे न कराअूं, तो दूसरा ढंग चंगेजखांका है। और चंगेजखांके ढंगसे काम हो, तो यह दुनिया कितने दिन टिके?

वल्लभभाओी कहते थे कि जयकर और दूसरे लोग अैसी वातें वना रहे हैं कि सत्ता लेनी ही चाहिये, लेनी ही चाहिये। परन्तु कौन जाने सत्ता अभी कहां है?

वापू वोले: यह ठीक है। ये लोग यही कहते हैं कि सत्ता आये, तव अुसे हरगिज जाने न दिया जाय। और हमें भी यही कहना पड़ेगा। सरकारके साथ लड़नेके लिअे भी सत्ता लेनी पड़ सकती है। वाहरका वातावरण देखना चाहिये। यह देखना चाहिये कि ये लोग जो दे रहे हैं अुसमें क्या लिखा है। वादमें निर्णय किया जा सकता है। किन्तु परिस्थिति अैसी वदल जायगी कि सत्ता ली जाय या न ली जाय, अिस वारेमें स्वभावतः विचार करना पड़ेगा। मताधिकार ही अितना ज्यादा वढ़ जायगा कि हमें यह लगेगा कि कुछ न कुछ कर सकें तो सत्ता लेनेका विचार जरूर करें।

अखवारोंमें अैसी गप्प आओी है कि कांग्रेसवालोंको जल्दी छोड़ दिया गया, तो विलिंग्डन अिस्तीफा दे देगा।

वापू कहने लगे: यह सच हो तो आश्चर्य नहीं। और यह अुसके लिअे ठीक ही होगा। अुसे मुझे छोड़नेसे विलकुल अिनकार करना चाहिये, क्योंकि अुसकी दृष्टिसे वह सफल हुआ है।

आजकी डाकमें बहुतसे पत्र अुल्लेखनीय थे। भक्तिबहनको लिखते हुअे शरीरके मिलापका मोह छोड़नेकी बात कही: "शरीरसे ही मिलना होता, तो मुर्दे जमा करके न रखे जाते?"

२९-१-३३

मणिलालको लिखा: "पिताके लिअे भी कर्ज न किया जाय। कर्ज महा अधर्म है।"

कल 'हिन्दू'का सम्वाददाता आ पहुंचा। अुसे खूब समझानेकी कोशिश की कि तुमने न लिखने जैसी बात लिखी। यह विश्वासघात था। किन्तु वह जड़ समझता ही नहीं था। अितना समझानेके लिअे अुसे आधा घंटा दिया। वह कहता जाता था: आपने यह नहीं कहा था? फलां बात नहीं कही थी? अिसलिअे यह तो सब मेरे लगाये हुअे अनुमानोंमें मौजूद है -- भले ही अनुमान गलत हों।

बापू: किन्तु पाठक यह नहीं समझेंगे कि ये अनुमान तुम्हारे लगाये हुअे हैं। वे लोग तो कहेंगे कि मेरे बोले हुअे शब्दों पर ही ये अनुमान लगाये गये हैं। यह बात हकीकतसे अुलटी है। बातचीतकी पवित्रताका आदर करनेके बजाय तुम तो अेकदम दौड़े और अिस तरहका वातावरणमें खलबली मचा देने-वाला सन्देश भेज दिया। जो शब्द मैंने कभी कहे ही नहीं थे, अुनका मुझ पर आरोपण कर दिया। अिस तरह तुमने मेरे साथ दोहरा अन्याय किया। अिसलिअे तुम संवाददाता बननेके लिअे अयोग्य साबित होते हो। अितना कहकर बादमें अुसे ठंडा किया और कहा: रंगस्वामीको मैं लिखूंगा कि तुम्हारे विरुद्ध सख्त कारवाअी न करें।

अिस किस्सेमें बापूकी दया अुमड़ती हुअी देखी। अिस बेहया आदमीको खड़ा भी न रहने देना चाहिये था, फिर भी यह मानकर कि अुसने शुभ हेतुसे काम किया है बापूने सारा न्याय तोला और रंगस्वामीको लिखा कि जहां जान-बूझकर और मनमाने ढंगसे अनर्थ करनेकी बेशुमार हरकतें हो रही हैं, वहां गंभीर होते हुअे भी अनजानमें हुअे अनर्थकी क्या सजा दी जाय?

अुस संवाददाताको मेरा दिया हुआ यह आश्वासन सच्चा ही था कि बापूकी गोदमें सिर रख देनेवाला कभी दु:खी होता ही नहीं।

सनातन धर्मवाले रोज-रोज नये आरोप बापू पर लगाते ही जा रहे हैं और अुनकी दलीलोंकी विचित्रताकी कोअी हद ही नहीं।

अेक आदमी दलील देता है कि गांधी हर विवाहिता स्त्रीको अपने पतिकी बहन बन जानेका अुपदेश देता है। तब तो कोषमें स्त्री शब्द ही किस लिअे रखा जाता? बहन शब्द ही होता!

महाभारतको बापूने रत्नोंकी खान कहा था और गीताको रत्नोंकी पेटी बताया था। अिस वचनको विकृत करके अेक शंकराचार्य कहते हैं कि गांधी अेक दिन महाभारतको कूड़ा-करकट बताता है और दूसरे दिन अुसे रत्न कहता है।

बम्बअीवाले सनातनी कहते हैं: आनंदशंकर और मालवीयजी गांधीके गुरु बन गये हैं। अिस आलोचनाको लेकर बापूने आनंदशंकरको दिल्लगीमें लिखा: "आपकी तो मुझे जरूरत है ही; अब ज्यादा रहेगी, क्योंकि आपको और मालवीयजीको मेरे गुरुका पद दे दिया है। अिसलिअे आपको अुसे शोभायमान करना ही पड़ेगा।"

३०-१-'३३

आज राजाजी, देवदास और घनश्यामदास आये। रंगा आयरके बिलको वाअिसरॉयकी दी हुअी मंजूरीसे पैदा होनेवाली स्थितिकी चर्चा हुअी। बापूने समझाया कि सारा सवाल धार्मिक है और अुसमें राजनैतिक बातकी गंध भी नहीं है। मेरी स्थिति पूरी तरह धार्मिक है। मैं अिस चीजका राजनैतिक दृष्टिसे विचार कर ही नहीं सकता। लोग सचमुच अिस बिलके विरुद्ध हों, तो मुझे अिसे वापस लिवा लेना चाहिये। बादमें मुझे क्या करना चाहिये, यह तीरकी तेजीसे कोअी न कोअी मुझे कहेगा। मंदिरोंमें हमें चोरी-चुपके तो घुसना ही नहीं है। मंदिरप्रवेश निश्चित रूपसे अेक आध्यात्मिक कार्य है और अिससे समाजमें क्रान्ति होनी ही चाहिये। अुपवासका मेरा सारा विचार अिस विश्वास पर बना हुआ है कि जन-समाजमें से अधिक लोग मंदिरप्रवेश चाहते हैं, पर अुनके ज़बान नहीं है। यदि लोग हमारे पक्षमें हों, और कानून हमारे पक्षमें न हो, तो हम ट्रस्टियोंको यह कानून तोड़ने और अिस कानूनका आश्रय लेकर कोअी अेकाध आदमी अुन पर मुकदमा चलावे तो अुसे बरदाश्त करनेको कह सकते हैं।

अिसके बाद बापूने कहा कि अिस मामले पर हमें स्पष्ट मतगणना करा लेनी चाहिये। यह मतगणना कितने समयमें होनी चाहिये और किस ढंगसे होनी चाहिये, अिसकी चर्चा करते समय थोड़ी देरके लिअे अैसा भी मालूम हुआ कि सारी योजना अव्यावहारिक है। किन्तु बापूने यह मत प्रगट किया कि तीन महीने लगें तो भी चुने हुअे क्षेत्रमें यह चीज हो जानी चाहिये।

बिड़ला कहने लगे: तब तो अिस मुद्दे पर धारासभाका नया चुनाव हो जाय, यह अुत्तम मतगणना है।

बापू बोले: अिसमें तो हम आसानीसे जीत जायंगे। पर अिससे मंदिरोंमें जानेवाले हिन्दू लोगोंके मतका प्रमाण नहीं मिलेगा।

... आचार्य हमें वर्णाश्रम स्वराज्य संघमें जानेका न्योता दे रहा है। अिसमें वह फंस गया है। और यदि हम चाहें तो संघ पर अधिकार करके अिसे छका सकते हैं, जैसे सन् '२१ में हिन्दू महासभा पर अधिकार किया था— अिस तरह बापूने समझाया। कुछ भी हो, सदस्योंमें घुमानेके कारण बिल दो साल तक पड़ा रहे, यह असह्य बात है।

राजाजी कहने लगे: सदस्योंमें घुमानेके कारण ढील होती हो, तो हम क्यों अेतराज करें?

बापू: क्योंकि हम जानते हैं कि यह तो बहाना है। यह अप्रामाणिकता है। मतगणनाके परिणामस्वरूप बिलके पक्षमें लोकमत अेकदम अुमड़ पड़े, तो मैं तो अिस बिलको जल्दी पास करानेके लिअे दबाव डालूं।

बापूको छोड़नेमें अमुक आदमीका विरोध था यह सुनकर बापूने कहा: मुझे वह कैसे छोड़े? जो आदमी अेक भी बात न सुने, अुसे छोड़कर क्या करे? वह यही कहता होगा और मैं अुसका बचाव कर सकता हूं। मुझसे वह समझौतेकी आशा रखता है और यह जानता है कि समझौता नहीं होगा। तब कैसे छोड़े?

फिर 'हरिजनसेवक' के बारेमें बातें हुआीं। राजाजीकी आपत्तियां: (१) हमारा अखबार सिर्फ हमारे लोगोंमें ही पढ़ा जायगा, जब कि आज तो आपके वक्तव्य तमाम अखबार छापते हैं। (२) अखबार बेकार हो जायगा।

बापू कहने लगे: कार्यकर्ताओंको शिक्षा देनेके लिअे वह बहुत जरूरी है। सब तार जोड़नेके लिअे भी आवश्यक है। कितनी ही बातें अैसी हैं, जो अे० पी० आअी० के द्वारा नहीं कही जा सकतीं। मुझे तो आश्चर्य होता है कि अभी तक आपको अखबारकी जरूरत क्यों न पड़ी?

अखबारके नामके बारेमें काफी चर्चा चली। Emancipation (अिमेन्सिपेशन), Deliverer (डिलिवरर), Liberator (लिबरेटर), Harijan (हरिजन), और Voice of the Harijan (वाअिस ऑफ दि हरिजन) वगैरा नाम सुझाये गये। अन्तमें यह तय हुआ कि Harijan (हरिजन) नाम ही ठीक रहेगा और यह भी निश्चय हुआ कि डिक्लेरेशनके लिअे अर्जी देनेकी पटवर्धनको सूचना देनेके लिअे अुन्हें दूसरे दिन बुलाया जाय।

बिड़लाने यह विचार बताया कि मतगणनाके लिअे साधारण मनुष्योंके बजाय पंडितोंको रखा जाय, पर साथ ही साथ कहा कि वे शायद ही चरित्रवान होंगे।

बापूने कहा: तो अुनकी हमें जरूरत नहीं। चरित्रका अर्थ है अपनी मान्यता पर पूरी तरह डटे रहना। जो आदमी अधिक रुपया देनेवालेके लिअे अपना विचार बदल देता है, अुसकी मान्यताकी भी कीमत नहीं। असलिअे यद्यपि मैं सच्चे प्राणवान पंडितको जरूर पसन्द करूंगा, किन्तु चरित्रहीन पंडितसे मैं सादे मनुष्यको ज्यादा पसन्द करूंगा।

३१-१-'३३

रातको और सुबह मतगणनाके बारेमें और असके लिअे राजाजीका अुत्तर भारतमें अुपयोग करनेके बारेमें वल्लभभाअीने गरमागरम चर्चा की। राजाजीको अिस काममें नहीं पड़ना चाहिये। अुत्तर भारतमें अुनकी कोअी नहीं सुनेगा। लोग अुनके कार्यका अनर्थ करेंगे और अुनकी बदनामी होगी, वगैरा। वे भले ही मद्रासमें रहें और यही काम करें, मंदिर खुलवायें या मंदिरोंके सत्याग्रह करायें। मतगणना भले ही हो, किन्तु अुससे आगेका ध्येय भी स्पष्ट होना चाहिये। नहीं तो मतगणनासे भी कुछ नहीं होगा।

बापूने कहा: लोग दृढ़तासे हमारे साथ हैं, अिस बारेमें मेरी शंका बढ़ती जा रही है।

वल्लभभाअी: हमें यह दिखानेका मौका ही नहीं मिला; और जब तक लोगोंसे यह नहीं कहा जाय कि मतगणनासे अमुक परिणाम लाना है, तब तक अुस मतगणनाका कोअी अर्थ नहीं। सनातनी भी चाहे जितने हस्ताक्षर कराकर कहेंगे कि हमारा बहुमत है।

राजाजीके साथ अुनके करनेके कामके बारेमें बातें हुअीं। कल बापूने अुनसे कहा था कि मैं अिस मामलेमें अेक खास हद तक ही सलाह दे सकूंगा।

राजाजीने शुरुआत की : आपने यह आन्दोलन अुठाया है, अिसलिअे हमें अिसमें काम करना ही चाहिये और मुझे अुसमें अपना हिस्सा देना ही चाहिये। मैं अितना मिथ्याभिमानी नहीं हूं कि यह मान लूं कि मेरे बिना यह आन्दोलन नहीं चल सकता। किन्तु मुझे अैसा जरूर लगता है कि अिसमें काम करनेकी मेरे लिअे पूरी गुंजाअिश है। परन्तु मेरे बिना ही यह आन्दोलन चल सकता हो, तो मैं मुक्त होना पसन्द करूंगा।

बापू: आपको स्वतंत्र रूपसे और तटस्थ भावसे अैसा लगता हो कि अिस आन्दोलनमें आप ही अकेले मेरे प्रतिनिधि हो सकते हैं, तब तो यह

मानकर कि आपने अिस आन्दोलनके लिअे स्पष्ट आदेश सुना, आपको यह काम जारी रखना चाहिये और दुनिया क्या कहती है अिसकी परवाह नहीं करनी चाहिये। किन्तु जिनके मनमें जरा भी शंका हो, अुन्हें तो मैं 'यो ध्रुवाणि परित्यज्य' वाला श्लोक सुनाता हूं और कहता हूं कि शंकाका लाभ आपको सविनयभंगकी मूल प्रतिज्ञाको देना चाहिये। किन्तु आपको स्पष्ट आदेश लगता हो, और मालूम होता है कि आपको अैसा लगता है, तो फिर आपको हरिजन-कार्य ही करना चाहिये।

अिसके बाद मेरे साथ राजाजीकी बहुत बातें हुअीं। अुन्हें खुद अिस बारेमें शंका नहीं कि वे काम छोड़ दें, तो और करनेवाले नहीं हैं। अुन्हें यह भी शंका नहीं कि वे तमाम आलोचनाओंका जवाब दे सकेंगे। अुनकी वृत्तिका जनता पर जरा भी बुरा असर नहीं होगा। जो लड़ाअीमें शरीक होनेवाले थे वे हो गये हैं, अुन्होंने कुर्बानियां भी की हैं और करते जा रहे हैं। जो थक गये हैं अुन्हें थकने दो। किन्तु वे वल्लभभाअीकी आपत्ति पर विचार करनेको आतुर थे। अुन्होंने कहा कि वे विरुद्ध हों तो मुझे अिस मामलेमें बार-बार सोचना चाहिये। और मुझसे बार-बार पूछा: किन्तु क्या बापू अब भी सचमुच अुपवास करेंगे, या अब यह मामला खतम हो गया?

मैंने कहा: अुपवास तो कभी भी कर सकते हैं।

अिसके बाद बापू कोहनी पर बिजलीकी सेंकके लिअे गये थे वहांसे आये और राजाजीको बुलाया। अुन्होंने पलटकर सवाल किया: अब भी अुपवास आनेवाला है?

बापू: हां, यह तो अनिवार्य है। जो घटनाअें हो रही हैं अुन्हें देखते हुअे मुझे लगता है कि जल्दी आ जाय तो अच्छा। कानपुरके अेक मामलेका हाल मैंने सुना है। म्युनिसिपल कार्पोरेशनके लिअे तीन हरिजनोंने अुम्मीदवारी की थी। दूसरे पक्षने अुनका विरोध करनेके लिअे दूसरे तीन हरिजनोंको ही खड़ा कर दिया। परिणाम यह हुआ कि कोअी हरिजन नहीं चुना गया। अिसकी मुझे गहरी चोट लगी है। सुरक्षित स्थान रखनेके विरुद्ध मैं कमर कसकर लड़ा था। किन्तु अब मुझे लगता है कि मैं आंबेडकरकी जगह होता, तो मैंने बहुत ज्यादा हिंसक विरोध किया होता। अिस कानपुरवाले मामलेमें तो अपना स्वार्थ साधनेके लिअे ही अुन्होंने हरिजनोंको नहीं आने दिया। अपने पक्षके हों या विरोधी पक्षके, लोगोंको अितना तो देखना चाहिये था कि तीन हरिजन अुम्मीदवार चुन लिये जायं। अिस मामलेमें पूना-करारका साफ तौर पर भंग हुआ है। मैंने हरिजी (पंडित हृदयनाथ कुंजरू) को लिखा। अुन्होंने ठंडे कलेजेसे अिसकी सफाअी देनेकी कोशिश की और बताया कि ज्यादा जांच

करूंगा। किन्तु मुझे अैसी जांच नहीं चाहिये। मैंने तो कह दिया है कि आप अिस अन्यायको सुधार लीजिये।

बिड़ला और दूसरे लोग कहने लगे: नहीं बापू, कानपुरकी बात तो अपवाद रूप है। हिन्दू समाजमें तेजीसे अच्छा परिवर्तन हो रहा है।

बापू: यह तो मैं जानता हूं। अैसी घटनासे अुपवासकी जल्दी नहीं होगी। किन्तु अैसी घटनायें मुझे झकझोर डालती हैं। फिर भी अुपवासकी वेदनाको आगे बढ़ानेका मैं जाग्रत प्रयत्न कर रहा हूं।

किन्तु ये कानून पास हो जायं, तब तो फिर अुपवासका सवाल ही खड़ा नहीं रहेगा न?

बापू: नहीं भाओी, नहीं। अुपवासका आधार अकेले कानून पर नहीं है। मेरे सामने सिर्फ मंदिर-प्रवेशका ही प्रश्न नहीं, बल्कि संपूर्ण प्रश्न है। दिन-दिन मेरा खयाल यह होता जा रहा है कि अुपवासकी संभावना घटती नहीं, बल्कि बढ़ रही है। अैसा क्यों होता है, यह मैं नहीं कह सकता। यह भी नहीं जानता कि कौनसी चीज अुपवासको लायेगी। किन्तु यह भावना तो धीरे-धीरे निश्चित रूपमें बढ़ती ही जा रही है। मैं अितना जानता हूं कि मैं जरा भी स्वस्थ नहीं हूं। सारी घटनाओंका कुल मिलाकर मुझ पर अच्छा असर नहीं पड़ रहा है। अच्छी बातें भी जरूर हो रही हैं। अुनसे मैं आंखें बन्द नहीं कर सकता। अुलटे मैं तो प्रतिकूल वस्तुओंसे आंखें बन्द करनेकी कोशिश करता हूं। अुदाहरणके लिअे, अिन धर्मशास्त्रियों और कानूनके पंडितोंके साथ मैं जो भद्दा पत्र-व्यवहार कर रहा हूं, अुसे देख लो।

बिड़ला: किन्तु जिस गतिसे सुधार हो रहा है, अुससे आपको सन्तोष मानना चाहिये।

बापू: हां, ठंडे दिलवालेको तो संतोष हो सकता है। परन्तु मेरे दिलको तो जरा भी चैन नहीं। मैं जानता हूं कि कार्यकर्ता काममें जुट गये हैं। अुनमें शिथिलता नहीं है। परन्तु सारी चीजको देखते हुअे हृदयको सन्तोष नहीं हो सकता।

बिड़लाने बयान किया कि पिलानीमें दो साल पहले जो वातावरण था, अुससे अब बहुत अधिक सुधर गया है। वहांके स्कूल और कालेजमें हरिजन लड़के भरती किये जाते हैं और सनातनी माता-पिताओंमें भी कोअी खलबली नहीं होती।

राजाजी: आपको अैसा नहीं लगता कि अिसका कारण आपको अपनी ही आजकी मनोवृत्तिमें ढूंढ़नेकी कोशिश करनी चाहिये? लम्बी-चौड़ी बातें छोड़कर कहें तो कहा जा सकता है कि आप अधीर हो गये हैं।

दयालु है। जिसे हम अुसकी सजा मानते हैं, अुसमें भी अुसकी दया भरी रहती है। जहां सन्तानकी अुत्पत्ति ज्यादा होगी, वहां मृत्युका प्रमाण भी अुसके अनुसार ही होगा। अिस प्रकार कुल मिलाकर मनुष्यका जगत दीर्घकाल तक चलता रहेगा। यह सच है कि अैसे जीवनमें वहुत रस नहीं हो सकता। और अुसमें रस न हो यही अच्छा है। यह ज्ञान भी लोगोंको ब्रह्मचर्यकी तरफ ले जायेगा। क्योंकि थोड़े ही अनुभवसे यह देखा जा सकता है कि ब्रह्मचर्यके स्वाभाविक हो जानेमें जितना आनंद भरा है, अुतना भोगमें तो है ही नहीं। दुनियाका तंत्र सुव्यवस्थित चलनेके लिअे अीश्वरके दूसरे कानूनोंको भी मानना ही पड़ता है न? वह कानून यह है कि किसी भी मनुष्यको अुदरपोपणके सिवा कुछ भी लेनेका अधिकार नहीं है। यह नियम सव पालें तो ब्रह्मचर्यका पूरा पालन न होने पर भी भूखों मरना संभव नहीं। शारीरिक श्रमका अंत केवल किसानके रूपमें मजदूरी करनेमें ही नहीं हो जाता। हरअेक किसानको अपने हाथ-पैरों और खास कर हाथोंका अुपयोग करना ही चाहिये। जिस देशमें खेतीके साथ ही दूसरे गृहअुद्योग नहीं चलते, वहां किसान लगभग पशु जैसे वन जाते हैं। पशुकी सोहवत जितनी जरूरी है, अुतनी ही औजारोंकी भी है। और अगर मनुष्य दस्तकारी सीख ले, तो अुसकी औलाद वढ़ती रहे तो भी सवको पेट भर रोटी, तन ढंकनेको कपड़ा और गरमी-सरदीसे वचने लायक मकानके रूपमें रक्षण मिल जायगा। आजकल मैं वर्णधर्मके जिस अर्थका विकास कर रहा हूं, अुसे ध्यानमें रखना।"

मथुरादास मालवीयजीसे मिल आये। मालवीयजीको पहले विलका महत्त्व समझमें नहीं आता। वे तो हरिजनोंको दीक्षा देकर शैव-वैष्णव वनाने और अुसके वाद मंदिर खोलनेके सपने देखते मालूम होते हैं। यह वात पंडितजीके ध्यानमें वैठती नहीं लगती कि मौजूदा कानून अैसा है कि शैव और वैष्णव वना दिये जायं तो भी सवर्ण अुन लोगोंको मंदिरोंमें नहीं घुसने देंगे।

लक्ष्मण शास्त्री अेक श्रुतिमें से अैसा वचन लाये, जिसमें से अैसी विधि निकलती है कि चांडालको छुआ जाय, अुसके साथ वैठा जाय और अुसके साथ खाया जाय। अुनके अपने लेखका खास मुद्दा यही है। मगर आजकल शास्त्रियोंको अिन शास्त्रोंके अर्थकी भी क्या पड़ी है? जैसे अमरीकामें लोग गुलामीकी प्रथाके लिअे वाअिवलसे भी आधार ढूंढते थे, वैसे ये लोग अस्पृश्यताके लिअे आधार ढूंढते जा रहे हैं। सनातन धर्मकी अेक पत्रिका कहती है कि, 'यमराज पूछेंगे कि तूने कितने नंगोंको कपड़ा पहनाया? तव सनातनी कहेगा कि मैंने वहुतोंको पहनाया।' मगर सुधारक कहेगा कि मैंने तो स्वराज्यके नाम पर विदेशी वस्त्र जलाये!'

लक्ष्मण शास्त्रीके साथ अुनके लेखोंकी चर्चा करते-करते अुनमें बापूने अुपयोगी सुधार सुझाये।

११–३–'३३ । आज भी महत्त्वपूर्ण पत्र लिखे। . . . के आ जानेके बाद और अुसके वचनभंगके आरोप पर से अेक . . . को, दूसरा आठ-नौ पन्नेका बड़ा पत्र मीराबहनको और तीसरा बाको लिखा।

. . . को लिखा गया पत्र बापू ही लिख सकते हैं। अुन्हें या . . . को दोनोंमें से अेकको भी झूठा कहनेसे बापू अिनकार करते हैं और कहते हैं कि दोनों सच्चे होंगे। मगर दोनों सच्चे हों, तो दोनों अुतने ही झूठे भी तो हुअे न! अिस तरह प्रेमियोंके कलहमें बापूको काजी बनना पड़ता है। मीराके नामके पत्रमें मिताहारके बारेमें कितनी ही सचाअियां अद्‌भुत ढंगसे कही हैं। चश्मेके बिना आंखें सुधारनेके बारेमें अेक अमरीकन पुस्तकमें अेक वाक्य है: 'झूठ बोलनेका आंखों पर असर होता है।' अिस पर सुन्दर भाष्य किया है। हरअेक प्रकारकी सत्यविमुखताका शरीर, वाणी और मन पर असर हुअे बिना थोड़े ही रहता है?

आनेवाली डाकमें दो अद्‌भुत पत्र थे। अेक नीलाका और दूसरा जवाहरलालका। नीलासे सत्य कहलवा लिया। अब यह स्त्री जिन्दगीमें जो परिवर्तन कर रही है, वह आश्चर्यमें डालनेवाला है। अुसने अपना अिकरार बंगलोरके अखबारोंको दिया। पर छापनेवाले अिनकार करते हैं। अिसलिअे अे० पी० आअी० को भेजा! अपनी घरकी मालकिनके सामने सच्चा हाल जाहिर कर दिया। अुसने माफी दे दी। बादमें यह स्त्री तुरंत ढेड़ोंके मुहल्लेमें रहने चली गअी। ढेड़ोंने अुसे मंदिरमें आसरा दिया और वहां जाकर वह अपने लड़केके साथ सुखसे सोअी! अिस बच्चेको अुसकी गैरमौजूदगीमें अुसकी कंगाल आयाने जो मार मारी, अुसका वर्णन रुलानेवाला है। आज तो अुसके मुंहमें सत्य और शुद्धि विडंबनारूप मालूम होती है, मगर सच साबित हो तो यही कहा जायगा न कि शिलाकी अहिल्या बन गअी! जिस स्त्रीने आज तक अितनी बेहयाअीसे जीवन बिताया है, अुसमें आज अपने आपको खोल देनेकी हिम्मत हो सकती है। मगर अिस बच्चेका क्या होगा? चार-पांच वर्षकी अुम्रवाले अिस बेचारे बच्चेको कैसे अनुभव हो रहे हैं!

रातको बापू कहने लगे: अिस स्त्रीको हम लम्बे अरसे तक अिस तरह नहीं रहने देंगे। अिसका अिकरार अे० पी० आअी० भी न छापे, तो

हम छापेंगे और अुस पर लेख लिखेंगे। सेवकोंकी शुद्धिके वारेमें लेख लिखा, तव वह ध्यानमें तो थी ही।

मूलचन्दने पूछा कि क्या हाथ-पैरोंसे काम करनेवाला ही श्रमजीवी मनुष्य कहलाता है और दिमागसे काम करनेवाला नहीं कहला सकता? वापूने अुसे लिखा:

"हाथ और पैरका श्रम ही सच्चा श्रम है, और हाथ-पैरोंसे मजदूरी करके ही आजीविका प्राप्त करनी चाहिये। मानसिक और बौद्धिक शक्तिका अुपयोग समाजसेवाके लिअे ही करना चाहिये। हम हाथ-पैर न हिलायें तो क्या वुद्धिसे खेती करेंगे? आग लगी हो तो क्या काव्यरचना करके आग वुझायेंगे?

"'योगः कर्मसु कौशलम्' यह सच्ची वात है। शरीर और मनके कामका सुन्दर योग साधना चाहिये। मुसोलिनी लुहारका लड़का था। घर पर अुसने घोर परिश्रम किया था। जवानीमें अेक कारखानेमें अींट लेकर १२० वार दो दो मंजिल चढ़नेकी मजदूरी की थी और ११ वार जेलमें गया था। मगर यही अुसके लिअे वड़ी तालीम हो गअी। अुस मजदूरीके दरमियान अुसका मन सो नहीं रहा था। अगर मन सो रहा होता, तो अिस तरह तो करोड़ों मजदूर अींटें ढोते हैं और लाखों किसान खेती करते हैं, मगर अिससे वे दुनियामें किसी भी तरहकी कोअी छाप थोड़े ही छोड़ जाते हैं?"

वाके नाम पत्र लिखा। अुसमें दो-तीन वाक्य जिक्र करने लायक थे: "हरिलालकी क्यों चिन्ता करती है? वह पत्र नहीं लिखता। अुसका शरावीपन अीश्वरको मंजूर है, तो हम क्या करेंगे? अीश्वरको अुसे जव सुधारना होगा, तव सुधारेगा।"

अगर हरिलालका शरावीपन अीश्वरको मंजूर हो, तो सनातनियोंकी जड़ता अीश्वरको मंजूर नहीं होगी? तो फिर अुसके लिअे अनशन क्यों? यह पहेली पैदा होती है। अिसे वापूके सामने रखनेका मन होता है।

जवाहरलालका पत्र अेक नमूनेदार हीरे जैसा है। स्वतंत्र मिजाजका, देशाभिमानसे छलकता हुआ, अंग्रेजी शिक्षाके अुत्तम तत्त्वोंको हजम किये वैठा हुआ युवक अुनके पत्रकी हर पंक्तिमें वोल रहा है। अुनके पत्रमें व्यक्तियों और संस्थाओंके वारेमें मुक्त और मौलिक आलोचना पग-पग पर दिखाअी देती है। अुनके स्वतंत्र विचारोंके दो वढ़िया नमूने देखिये:

(१) हम कोअी सहिष्णु हैं, यह वात ही गलत है। दूसरोंकी अैसी वातके प्रति, जिसे हम विलकुल महत्त्वहीन मानते हैं, हम सहिष्णु रहते हैं, और अुसे

गुण समझते हैं। वैसे जो आदमी आक्रामक असहिष्णुतासे भरा हुआ नहीं होता, वह अुस शिक्षककी तरह है जो मारता भी नहीं और पढ़ाता भी नहीं।

मगर अिसमें अर्ध सत्य है। बुरेके प्रति, अनिष्टके प्रति मनुष्यको हमेशा असहिष्णुता होनी ही चाहिये। नहीं तो अुसकी प्रगति रुक जाती है। पर बापू जैसे ही विरले मनुष्य बुराअीको सहन न करते हुअे भी बुरा करनेवाले मनुष्योंको सहन कर सकते हैं।

(२) बुद्धि स्थापित स्वार्थोंके साथ हाथमें हाथ मिला कर चलती है।

अिसके समर्थनमें जॉन स्टुअर्ट मिलकी 'लिबर्टी' में से वाक्य अुद्धृत किया है। बात यह है कि मनुष्य अपने स्वार्थसे अितना अंधा बन जाता है कि वह यह नहीं देखता कि औरों पर क्या बीतती है। सुधारक दोनोंको जाग्रत करता है। और अेक जाग्रत न हो तो दूसरा बादमें अुसके नीचे सुरंग लगाकर अुसे जाग्रत करता है।

•

१२–३–'३२

आज सवेरे मैंने बापूसे पूछा: वर्णका अर्थ धंधा हो और आनुवंशिक गुणोंकी रक्षाके लिअे बापका पेशा लड़का करे तभी वर्ण कायम रखा जा सकता हो, तो आनुवंशिक गुण कायम रखनेके लिअे क्या अुसे अुसी वर्णमें विवाह करनेकी जरूरत नहीं? ब्राह्मणका लड़का बढ़अीकी लड़कीसे विवाह करेगा, तो ब्राह्मणके गुण संतानमें कायम रखे जा सकेंगे या ब्राह्मणीसे विवाह करेगा तो रखे जा सकेंगे?

बापू: ब्राह्मणका लड़का ब्राह्मणका ही धंधा करे और बढ़अीका लड़का बढ़अीका करे। वह विवाह किससे करे अिससे सरोकार नहीं।

मैं: मान लें कि धंधा तो वह वही करेगा, परन्तु अेक ही वर्णमें विवाह करे तो धंधेकी शक्तियों और खासियतोंकी ज्यादा रक्षा होगी न?

बापू: हां, कोअी करोड़ों थोड़े ही अपने वर्णमें से निकलकर बाहर विवाह करेंगे? मगर जो बाहर निकल कर विवाह करें, वे अधर्म कर रहे हैं, यह न मानना चाहिये। अधर्म वर्णका काम छोड़नेमें है, वर्णसे बाहर निकलकर विवाह करनेमें नहीं।

मैं: तब आप अितना तो मानेंगे कि अपने-अपने वर्णमें विवाह करना वर्णसे बाहर विवाह करनेसे अधिक अिष्ट है?

बापू: हां, यह ठीक है।

कल रातको तेल मलवाते मलवाते बोले: तीसरे अध्यायमें 'यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः' और 'संकरस्य च कर्ता स्याम् अुपहन्यामिमाः प्रजाः' जो कहा है, अुसमें वर्णका और संकरका जो अर्थ मैं करता हूं वह

आ जाता है। 'स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः' में भी यही भाव है। अपने कर्मका त्याग ही संकर है। मनुस्मृतिमें यह बताया है कि संकर तीन कारणोंसे होता है। अिनमें से अपने विहित कर्मका त्याग भी अेक कारण बताया गया है। लक्ष्मण शास्त्री भी कहते थे कि यह बतानेवाले कअी श्लोक भागवतमें हैं।

विदेशी पत्रोंमें मार्गरेटके प्रेमभरे पत्र आते हैं, तो अेफीके ज्ञानभक्तिसे छलकते पत्र आते हैं। भक्तको शुद्ध अिसलिअे होना चाहिये कि भगवान अुसे निमित्त बनाकर अुसके द्वारा काम लेना चाहते हैं। यह भाव अेफी अद्भुत ढंगसे बता रही है। अपने जीवनके बड़ेसे बड़े अनुरागका अुसने बापूके लिअे त्याग किया है। अुसका पत्र देखिये:

"मैं आपको प्रार्थना, तपस्या और आत्मशुद्धिके द्वारा ही मदद देनेकी कोशिश कर सकती हूं। कल ही मेरी जो परीक्षा हुअी, अुससे मुझे आनन्द हुआ। मैंने पढ़ा कि अे० अेम० अगले हफ्ते वेसेलमें नाटकमें भाग लेनेवाला है। पहली ही बार हृदयमें कुछ भी दुःख अनुभव किये बिना मैंने अुसका नाम पढ़ा और तुरन्त ही तय कर डाला कि मैं नहीं जाअूंगी। मगर अुससे फिर मिलनेकी मेरे मनकी गहराअीमें, मुझे मालूम न होते हुअे भी, अभी भी कोअी अिच्छा रही होगी, तो आपकी खातिर मैं अुसे कुर्बान कर दूंगी। बापूजी, अिन चिन्ताके दिनोंमें मुझे लगता है कि मैं दूसरी ही स्त्री बन गअी हूं। अीश्वरका अुपकार मानती हूं कि आपकी अग्निपरीक्षामें मुझे वह अणुके बराबर भी भाग लेने देता है। मैं अिन सारे प्रसंगोंमें शांत और स्वस्थ रही हूं; अिसलिअे कि आध्यात्मिक दृष्टिसे आप मुझे अपनी लकड़ी बनायें तो मैं न डिगूं।"

अिस स्त्रीके जीवनमें बापूने कितना बड़ा परिवर्तन किया है, अिसकी गवाही अुसका अिसी हफ्तेमें आया हुआ दूसरा पत्र देता है। अिसका अेक बारका प्रेमी अिसके पास आता है और अुससे आश्वासन मांगता है। वह जरा भी विह्वल हुअे बिना पवित्रतासे अुसे आश्वासन देती है और वह आदमी आंसूभरी आंखोंसे अलग होता है।

"आपकी पवित्र अहिंसासे और आपकी आध्यात्मिक शक्तिसे मुझे अितना सहारा मिला कि मैं अुसे आश्वासन देने लायक बल संग्रह कर सकी; और जब वह आंसूभरी आंखोंसे गया, तब मुझे लगा कि सब ठीक हुआ। अब हम दोनों अपने-अपने कर्तव्यकी तरफ मुड़ रहे हैं और कुछ भी हो जाय, मैं अुससे दुबारा मिलूं या न मिलूं, अिसकी मुझे चिन्ता नहीं। मेरा खयाल है कि अीश्वरने हमारे बीच फिर प्रकाशकी ज्योति प्रगटाअी है। अुसीमें मुझे सच्चा जीवन मिला है। . . . आपके पवित्र अुपवासके अिन

दिनोंकी तपश्चर्यामें यह चीज सधी है। अिन दिनों जिस मंथनसे में गुजरी, अुसमें मुझे दिखाअी दिया कि स्वार्थी जीवन अधिक समय तक बिताना असंभव है। . . . हम जो थोड़े क्षण साथ रहे, अुस बीच मेरे अन्तरमें अेक भी अैसा विचार नहीं आया, जिसका मैं अीश्वरके सामने अिकरार न कर सकूं। मैंने खूब प्रार्थना की और अीश्वरका आभार माना। आपकी मददसे ही मैं अिस नये जीवनके सारे तार जोड़ सकी हूं। पाप और कर्मसे मुक्ति देनेवाले अीसाके अुस धन्य क्रॉसके अधिकाधिक समीप आप ही मुझे ले जा रहे हैं। आपका ऋण मुझ पर अितना है कि अीश्वरकी और आपकी सेवामें यह जीवन अर्पण करूं तो ही वह चुक सकता है। आपने बहुत सुन्दर ढंगसे कहा है कि अीश्वर हमसे सम्पूर्ण आत्मसमर्पण चाहता है और फिर हमारा अुद्धार करता है।"

कितनों ही के जीवनमें हज़ारों कोस दूर बैठे-बैठे बापूने प्रकाश डाला है, अिसका अेक और ताजा सबूत लीजिये :

अेलन हॉरप, जो विलायतमें मिली थी और अभी जिनीवामें है, लिखती है :

"मेरे लिअे आप क्या हैं, यह मैं आपसे कहना चाहती हूं। अिसका वर्णन करनेके लिअे मुझे अेक प्रतीक काममें लेना पड़ रहा है। यह प्रतीक पत्थरका बना हुआ है, अिसलिअे हंसियेगा नहीं। यह न कहिये कि अिसीमें साम्य है। संभव है आप अैसे पहाड़ोंमें न गये हों, जहां सारा दिन घूमने पर अेक भी प्राणी न मिले, जहां आकाश और पहाड़ क्षितिजमें मिल जाते हों और अुनकी विशालता और शांति अैसी हो कि दिलमें अनन्तका भाव जाग्रत हो। नॉर्वेमें मैं अिस तरह घूमी हूं। वहां 'वर्दे' नामके निशान होते हैं। मुझे तबसे अैसा लगा करता है कि आप 'वर्दे' जैसे हैं। अिन निर्जन पहाड़ोंमें कोअी रास्ता बतानेवाला तो होता ही नहीं। अिन्सानका या और किसी प्राणीका पैर तक देखनेको नहीं मिलता। वहां सही रास्ता बतानेके लिअे पत्थर पर पत्थर जमा करके खंभे जैसे निशान बनाये जाते हैं, जिन्हें वहांकी भाषामें 'वर्दे' कहते हैं। ये 'वर्दे' भटकते हुअे प्रवासी बनाते हैं। और अुन्हें देखकर सही रास्ते चलनेवाला हरअेक आदमी अुन पर अेक अेक पत्थर रखता जाता है। अैसा करते करते यह 'वर्दे' अितना अूंचा हो जाता है कि आसपासके प्रदेशमें दूरसे दिखाअी देता है, ताकि कोअी प्रवासी पहाड़में रास्ता न भूल जाय। दुनियामें जो महापुरुष हो चुके हैं, अुनके अपने जीवन द्वारा बनाये हुअे 'वर्दे' की तरह आप हैं। अपना जीवन बिताते हुअे रास्तेमें जो अुत्तम वस्तुअें वे रख

गये, आप अुनके साररूप हैं। आप अितने अूंचे हैं कि चारों तरफसे देखे जा सकते हैं। मुझे सच्चा मार्ग बतानेवाले मेरे मार्गदर्शक 'वर्दे' आप हैं। मैं आपको हमेशा अपनी नजरके सामने रखती हूं। अिसीलिअे पत्र लिखकर आपके काममें खलल डालनेकी मुझे जरूरत नहीं पड़ती। मगर जैसे आपके कानोंमें अुस वायलिन बजानेवालेका संगीत गूंजा था, वैसे आज मेरे कानोंमें आपकी आवाज गूंजती रही। अिसलिअे मुझे पत्र लिखनेकी अिच्छा हुअी। मेरे 'वर्दे' की बताअी हुअी राह पर चलनेका मैं भरसक प्रयत्न कर रही हूं और अीश्वरका आभार मानती हूं कि अुसने 'वर्दे' को अितना अूंचा बनाया है कि मैं अुसे देख सकूं।"

अुसे जवाब देते हुअे बापूने लिखा :

"कुछ मित्रोंके लिअे मैं मार्गदर्शक 'वर्दे' हूं, यह ज्ञान मुझे नम्र बनाता है और अपने कंधों पर मैं कितना भारी बोझा अुठा रहा हूं, अिसके बारेमें मुझे अधिकाधिक जाग्रत करता है। मैं आत्मनिरीक्षण करता हूं और सत्यरूपी अीश्वरसे सतत प्रार्थना करता हूं कि मैं किसीके लिअे भी झूठा मार्गदर्शक साबित न होअूं।"

१३-३-'३३

आज पटणी और पटवारीको बहुत महत्त्वके पत्र लिखे। अपनी आत्मा हरिजनके काममें कितनी निचोअी जा रही है, अुसकी अिसमें गवाही दी।

दोपहरको आनंदी आयी थी। अुसे पास बैठाकर पूछने लगे। पूछते-पूछते अुसने कहा: दाहिनी बाजू दुखती है। कल तमाम दिन बहुत दुखती रही। तब फिर थककर सो गअी। शामको दर्द कम हुआ तब खाया।

पूछा कि आज दुखती है?

अुसने कहा: आज अुतनी नहीं दुखती।

बस फिर दिल्लगी की: अगर तुझे अेपेण्डिक्स होगा तो काटना पड़ेगा। मर जाय तो चिन्ता नहीं और न मरी तो रोग चला जायगा। तुरंत ही काकासाहबसे कहा, आज अिसे फाटक और गोखले डॉक्टरके पास ले जाअिये और तुरंत जांच कराअिये। और आपरेशनकी सलाह दें, तो मेरी तरफसे यह कहिये कि आप ही कीजिये।

काका चल दिये। फाटकने कहा: कुछ दर्द है, मगर कोअी खास बात नहीं। फिर भी काका तो अुसे लेकर गोखलेके पास गये। गोखलेने तुरंत ही आपरेशनकी सलाह दी। यही गोखले सासून अस्पतालमें बापूके आपरेशनके

वक्त मौजूद थे। बापूका संदेश और बापूकी ही लड़कीका काम करना था। कौड़ी मिलेगी नहीं। वे तो तुरंत ही तैयार हो गये। बापूसे टेलीफोन पर बात करनेकी मांग की। यह तो नहीं हो सकता, पर खबर दी जा सकती है, अैसा कहने पर अुन्होंने कहा: मेरा यहांसे तबादला हो गया है, कल जाना है। मगर आज अितना काम करके जाअूंगा। शामको ही आपरेशन करूंगा। काका आनंदीको लेकर आये। बापूने तुरंत आपरेशनकी सलाह दी। प्रेमलीला बहुत आपत्ति करे तो, अिसकी फूफी घबराये तो?

बापूने कहा: कह देना कि अिसका बाप और मां मैं हूं, और मेरी सलाह है कि आपरेशन करा डाला जाय।

अिस तरह क्षण भरमें बापूका निश्चय हो जाता है। और यह लड़की अिन पंक्तियोंके लिखे जाते समय डॉक्टरके नश्तरके नीचे पड़ी होगी।

शामको लेटे-लेटे कहने लगे: अेक तरफ लक्ष्मीकी शादी, दूसरी तरफ आनन्दीका आपरेशन, तीसरी तरफ नीलाकी भी तो शादी ही है न? अिस स्त्री पर क्या बीत रही होगी? अगर वह हिम्मत करके टिकी रहेगी, तो अुसका श्रेय ही होगा।

रामचंद्रनको पत्र लिखा कि अुसे छावनीसे निकाल दें तो बंगलोरमें रखो, वहां न रह सके तो पूना भेज दो। अभी अुसकी पूरी परीक्षा किये बिना मैं अुसे किसी संस्थामें नहीं रख सकता।

शामको बातें कर रहे थे, तब अद्‌भुत सूर्यास्त हो रहा था।

बापू बोले: देखो तो सही!

वल्लभभाअी: अरे, अिस तरह डूबते सूर्यको क्या देखते हो? अुगतेको पूजना चाहिये।

बापू: हां, हां, यही तो नहा-धोकर कल सवेरे वापस आ खड़ा होगा, तब फिर अिसीको पूजेंगे।

आज कोदंडरावके सामने नीलाके प्रकरणकी पूरी तसवीर रखी। अेक बात नीलाके बारेमें बापूने संतोषकारक कही: कौन जाने कैसे हर वक्त मुझे यही खयाल होता रहता था कि वह मुझसे कुछ न कुछ छिपा रही है। चौथे या पांचवे दिन मैंने अुससे कहा कि कारण कुछ भी हो मगर तुम्हारे बारेमें अभी मेरा विश्वास नहीं जमता। अुसने तुरंत ही कहा: 'कैसे जम सकता है? मैं तो आपको धोखा दे रही हूं। मैंने आपको अभी तक पूरा सत्य कहा ही नहीं।' फिर तो जैसे-जैसे मैं अपने प्रश्नों द्वारा अुसे चीरता गया, वैसे-वैसे अुसने सीधे तीर-से जवाब देने शुरू कर दिये: 'हां, मैंने अनीतिमय जीवन बिताया है। मेरे पतिका जीवन भी अैसा ही था। मैंने कितने

ही लोगोंको धोखा दिया है और फंसाया है।' अुसे अैसा लगा कि भले ही अुसने सारी दुनियाको धोखा दिया हो, पर मुझे धोखा देनेकी कोशिश करना तो धृष्टताकी हद होगी।

परन्तु कोदंडरावको तो सर्वेन्ट्स ऑफ अिंडियामें आये हुअे मन्दिर-प्रवेश सम्बन्धी बिलके लेखोंके बारेमें बुलवाया था। (१) आप सोसायटीकी नीति पेश करते हैं या नहीं? (२) महत्त्वके सवालोंमें आप मुझे पूछ न लिया करें? हम अेक दूसरेके साथ खुलकर चर्चा कर लेंगे। अंतमें भले ही आप अपनी राय कायम रखना। (३) मुझसे सफाअी क्यों नहीं मांगते? हकीकतके बारेमें शंका हो, वहां तो मुझसे जरूर पूछें।

तीनों बातोंका जवाब देनेकी अुन्होंने कोशिश की: नीति जैसी कोअी बात निश्चित नहीं है; मैं अपने विचार बता देनेके बाद राय मांगता हूं। अिस बारेमें वेंकटराव शास्त्रीका मत बिलोंको पसंद करनेवाला आया था, कुंजरूका नहीं आया। पहला बिल मुझे पसंद है, पर दूसरे बिलसे जो कोलाहल होगा वह पसंद नहीं। और आपसे पूछने आअूं अुससे पहले तो मुझे घसीटकर दे देना होता है। वह कैसे दूं?

बापूने अुन्हें बिलोंके बारेमें समझाया: पहला बिल संपूर्ण है। पर पहलेको निरर्थक बनानेका अुपाय लोग कर सकते हैं। मंदिरके बाहर नोटिस लगा सकते हैं कि जो अितनी शर्तोंका पालन करनेवाला न हो, वह मंदिरमें न आये। हरिजन ये शर्तें पूरी नहीं कर सकते अिसलिअे न आयें, और बिल बेकार हो सकता है। अिसीलिअे दो-तीन बिल रखे थे। फिर सरकार अैसी है कि सीधा-सादा और निर्दोष बिल पास होनेमें युग बीत जायेंगे। अुसमें अैसे-अैसे सुधार हों कि आखिर अुसमें कोअी तथ्य ही नहीं रह जाय। अिसलिअे भी यह जरूरी था कि अलग-अलग लोग दो-तीन बिल लायें।

आज लक्ष्मीके विवाहका दिन है। लक्ष्मीको आशीर्वादका सुंदर पत्र लिखा। अुसे बार-बार यह क्यों लिखा होगा कि "तुमसे जितना संयम रखा जा सके अुतना ही रखना।"

१४-३-'३३

आनंदीका आपरेशन सफल हुआ। अुसने बड़ी हिम्मत दिखाअी। अस्पतालमें रातको पासमें कोअी नहीं, नर्स तक नहीं। पानी मांगने पर भी कोअी देनेवाला नहीं। पर लड़की न घबराअी और सवेरे काकासे कहने लगी: नर्स बेचारी अेक होती है और बीमार अनेक। वह कितनोंको संभाल सकती है? बापू यह बात सुनकर खुश हुअे और कहने लगे:

तब तो यह लड़की आश्रमकी शोभा बढ़ा रही है। रात-दिन बापूके मनमें यह विचार रहता होगा कि आश्रम कैसे सुशोभित हो और आश्रमी कहलानेवाले किस तरह आश्रमकी शोभा बढ़ायें। अिसी हेतुसे वे प्रेमावहनसे खुलकर आलोचनायें मांगते हैं। नये जानेवालोंसे भी आलोचना मांगते हैं। मगर हम रहनेवाले! आश्रमको किस तरह शोभायमान करें, अिस विचारसे ही सिर चकराता है।

लक्ष्मण शास्त्री आये। अुनके साथ अुनके निबंधकी बारीकीसे आलोचना करते गये और सुधरवाते गये। अच्छे-अच्छे पंडितोंको भी बापूके साथ बैठने और चर्चा करनेमें शिक्षा मिलती है। कारण स्पष्ट है। बापूकी अुग्र सत्योपासनाको कोअी नहीं पहुंच सकता। दंभ, पाखंड, घृणा और अभिमान वगैरासे भरे हुअे सनातनी पंडितों और शास्त्रियोंको अपनी सत्योपासनाके द्वारा जीतनेकी बापूकी अभिलाषा है।

जवाहरलाल कहते हैं: "मैं तो मानता हूं कि आपका 'हरिजन' अंक भी कट्टर सनातनीका दिल नहीं बदल सकेगा। . . . अिस दुनियामें मूर्खता, पुराणप्रियता और विशेषाधिकारकी किलेबन्दीका बल बड़ा जबरदस्त है। अिसके संयुक्त मोर्चेको महात्मा और संत भी जल्दी नहीं तोड़ सकेंगे। हां, परिस्थितियोंके कारण भूमिका तैयार हो जाय तो दूसरी बात है।"

शास्त्रियार जैसे लोग कहते हैं: "मैं तो अनुभवसे जानता हूं कि ये पंडित बुद्धिको ताला लगाये फिरते हैं। यह कहते हुअे मुझे अफसोस होता है। आप अुन्हें डरा सकते हैं, दबा सकते हैं या खरीद सकते हैं। पर ये लोग अपनी नीति या विचारमें तबदिली करनेमें असमर्थ हैं।"

यह सब जानते हुअे भी बापूकी अुग्र सत्योपासनाकी शक्ति अुन्हें आगे बढ़ाती जा रही है। अुनकी श्रद्धा कहती है कि मेरी सत्योपासना काल और समयको, जो भगवानकी ही विभूति है, भी अनुकूल बना लेगी। सब सुधारक — तुर्गो, कोन्डोर्से और अुसके शिष्य मोर्ली जैसे कथित नास्तिक सुधारक भी — अिस श्रद्धा पर ही प्रगतिके सपने देखते हैं।

१५–३–'३३

अिस बारकी सरकारकी नीति ही दूसरी तरहकी मालूम होती है। देखिये न, केनेनोर जेलमें अुस गुप्ताको अुपवास करते हुअे १२० दिन हो गये। वह अस्थिपिंजर हो गया है और अिसमें शक नहीं कि अुसे मरने देंगे। बंगालमें कैदियों और नजरबन्दोंका हाल बतानेसे अिनकार करते हैं। पूनमचंद रांकाके बारेमें तार आने-जाने नहीं देते। अुसका भी यही हाल है। अिन लोगोंको सुलह करनी ही

नहीं है। देखिये न, अरविन भी कहता है कि हिन्दुस्तान और आयरलैन्डकी स्थितिमें साम्य नहीं। आजकी बातोंमें अितना बापू सहज ही कह गये।

'हरिजनबंधु' के लिअे ६ कालम मेटर अपने हाथसे लिख डाला। अिसके सिवाय अंग्रेजीके लिअे मेरे दो अनुवाद सुधारे।

१६-३-'३३

प्रोफेसर सोआरीस आये। अुन्हें अितना ही कहना था कि 'अीसाअी धर्ममें अस्पृश्यता नहीं होने पर भी जाति है। गोआनी लोगोंमें हमारी पुरानी वंशावलियां देखें तो मालूम होगा कि हमारे नामके साथ ब्राह्मण, क्षत्रिय वगैरा लिखा रहता है। अुदाहरणके लिअे मैं ब्राह्मण हूं। मैं ब्राह्मणोंमें ही अपनी लड़की दे सकता हूं। कोअी प्रेम-विवाह हो जाय तो अलग बात है। वैसे साधारण नियम यह है कि अपनी-अपनी जातिमें ही विवाह हो। अिस तरह बेटी-व्यवहारमें जात-पांतके बंधन हम अच्छी तरह कायम रख रहे हैं। अस्पृश्यता कहीं भी नहीं है। महारोंको हम अपने यहां खाना बनानेके लिअे रखते हैं और अुनके यहां खाने-पीनेको भी जाते हैं। पर अुन्हें कोअी लड़की नहीं देता। कुछ अीसाअी गोआनी महार बड़े ओहदों पर पहुंच गये हैं, पर हममें से ब्राह्मण, भले ही वह अेक चपरासी भी हो तो भी, अुन्हें अपनी लड़की नहीं देता। अिससे यह जाहिर होता है कि जातिकी बात ही अस्पृश्यतासे अलग चीज है। आम्बेडकर अितना क्यों नहीं समझते?

बापू बोले: आप अुनसे बात कीजिये, पत्र-व्यवहार कीजिये और समझाअिये।

सोआरीस: बड़ोदेमें अुन्हें मकान मिलना मुश्किल था और दफ्तरोंमें चपरासी तक अुनके मातहत काम करनेको तैयार नहीं थे। सेमियोल जोशीने अुन्हें अपने यहां ठहराया था, तब मैंने अुनसे मिलनेकी कोशिश की थी, मगर नहीं मिल सका। बादमें मैंने अुन्हें पत्र लिखे, पर जवाब ही न मिला।

गोआनी लोगोंमें यह चीज कैसे रही है, अिसका कारण अुन्होंने बताया: केथोलिक लोगोंने सब वर्णोंसे धर्मान्तर करवाया है, जब कि प्रोटेस्टेन्टोंको सिर्फ अछूतोंमें से ही अीसाअी बननेवाले मिले हैं। नोबिल जैसे केथोलिक पादरी अैसे आये थे, जो ऋषियोंका-सा सादा जीवन बिताते, गेरुआ पहनते और जनेअू रखते, सिर्फ अिस हेतुसे कि ब्राह्मण और क्षत्रियोंको भी अीसाअी धर्मकी तरफ खींचा जा सके। मैं जानता हूं कि दक्षिणमें बिलकुल दूसरी ही प्रथा है। मगर गोआ जैसी हालत और कहीं नहीं है।

बापूके 'आश्रम' के आदर्शको पहुंच सकनेकी आश्रमियोंकी अशक्तिके अुदाहरण पर बापूके अुद्गार:

यह तो धर्मपालनकी बात है। अिसमें अकेले जूझना पड़े तो अकेले जूझना चाहिये। सब छोड़ दें तो भी क्या? आज क्या स्थिति है? मालवीयजीके साथ भी मतभेद प्रगट कर दिया न? बहनके साथ और भाअीके साथ भी यही हालत पैदा कर दी थी न? यह अुदाहरण हुआ, दूसरा भी हो सकता है। और ठोकरें खाते ही जायं, तो भी क्या अिससे प्रयोग छोड़ा जा सकता है? प्रयोग करनेवाले अयोग्य होंगे, मगर अिससे प्रयोग थोड़े ही छोड़ा जा सकता है? गीतामें कहा है न कि

'मनुष्याणाम् सहस्रेषु कश्चिद् यतति सिद्धये।

यततामपि सिद्धानाम् कश्चिन् मां वेत्ति तत्त्वतः ॥'

यह जब सिद्धोंके बारेमें कहा गया है, तब फिर साधककी तो बात ही क्या? और 'तत्त्वतः मां वेत्ति' का अर्थ है जो सत्यको जानता है। सत्यका दर्शन करते-करते नष्ट हो जायं और भले ही कअी जन्म लेने पड़ें, तो भी क्या यह प्रयत्न छोड़ा जा सकता है? हिमालयमें हजारों-लाखों ऋषि-मुनियोंकी हड्डियां हैं, अिसलिअे वह सफेद है, अिसका अर्थ भी यही है कि हजारों साधक और सिद्ध तपस्या कर-करके अुसमें दफन हो गये हैं। गीताके ११वें अध्यायमें 'कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्' जो कहा है, वह काल भी सत्य ही है। वह अनेकोंका क्षय करता है, तब कहीं अेक सिद्ध बनकर निकलता है। अरे, स्थूल परीक्षाओंकी ही बात ले लो। परीक्षामें हजारों लड़कोंमें से अेक पहले नम्बरसे पास होता है। अिसलिअे औरोंका तो संहार ही हो जाता है न? अिस प्रकार सत्यरूप काल अनेक प्रयत्न करनेवालोंका नाश करता है और किसी अेकको सफलता देता है। अिसलिअे हम प्रयत्न कैसे छोड़ दें?

मेरी बारने अपने बारेमें अेक वाक्य लिखा था कि मेरी मांने मुझे सिखाया था कि किसीके दोष देखनेके बजाय गुण ही देखने चाहियें।

१७-३-'३३ पूनमचंद रांकाके अुपवासके बारेमें कुछ दिन पहले मध्य प्रांतके होम मेम्बरको तार दिया था। वह सरकारने नहीं भेजा। अुसके बाद जाजूजीको तार दिया। अुसमें अुन्हें सलाह दी कि पूनमचंदसे मिलकर अुससे अुपवास छुड़वा दें। अुसने अ, ब, क वर्गके सब भेदोंको दूर करानेके लिअे अुपवास किये हैं, अैसी खबर मिलने पर यह सलाह हुअी थी। कटेली यह समाचार दे गया कि सरकारने यह तार भेजनेसे भी अिनकार कर दिया है।

यह खवर मैंने बापूको देरसे दी। अिस पर भी जरा अधीर हुअे और कहा कि जल्दी खवर दी होती तो आज ही पत्र चला जाता। यह तो फिर लड़ लेनेकी वात है।

वल्लभभाअी घवराये, मगर किया क्या जाय? बापूने सरकारको पत्र लिखनेका निश्चय किया।

छगनलालको आमके यार्डमें आनेकी अिजाजत मिल गअी।

दूरवीन दिखलानेके लिअे आकाश-शास्त्रियोंको संध्याके वाद आनेकी प्रार्थना की थी, वह मंजूर न हुअी। अिसमें यह भाव मानकर कि अिन लोगोंको दफ्तरके समय आना चाहिये, बापूने दूसरा पत्र लिखा है।

वल्लभभाअीका अिस पर विनोद: दिन रहते आना चाहिये यही वात है न? तो भले ही अिन लोगोंको दिन रहते आने दें। बाहर कब निकाला जाय, अिस बारेमें तो कोअी नियम नहीं है न? और बाहर भी न निकाल सकते हों, तो भले ही सुबह तक रखें!

आज श्वेतपत्र आ गया।

गोपालनने आकर पूछा: आपने पढ़ा?

१८-३-'३३

अिस पर हंसते-हंसते बापूने कहा: समय नहीं था या पढ़नेकी वृत्ति नहीं थी।

फिर पूछा: पुस्तक बाहर पड़ी है। ले आअूं?

बापू; सरदार शायद पढ़ें। मैं तो नहीं पढ़ूंगा। मैं तो अुसे देखूंगा भी नहीं। क्योंकि मैं अैसी चीजें नहीं देखना चाहता, जिनसे मुझे गुस्सा आ जाय। मैं साधु पुरुष नहीं हूं। मुझे गुस्सा आता है। अलवत्ता, मैं अुसे दवा सकता हूं। मगर गुस्सा करूं और फिर अुसे दबाअूं, अैसा प्रसंग ही मैं किस लिअे मोल लूं?

मैंने बापूसे कहा: यह संवाद गोपालन छाप दे तो?

बापू बोले: तब तो मर ही जायं न! अिसीलिअे तो मैंने कह दिया कि यह छापनेके लिअे नहीं है। यह तो मैंने विनोद कर लिया। मगर अब देखता हूं कि मुझे मौन ही रखना चाहिये। मजाकमें भी मैं क्यों बोलूं?

सतीशबाबूका 'हरिजन' के लिअे भेजा हुआ अेक तार छापने पर शास्त्रीको काफी सीख दी: सारे सवालका अध्ययन करना चाहिये। अैसे महत्त्वके तार बताये विना हरगिज न छापे जायं। अैसे तार न छापकर हम सामनेवाले आदमीका भला ही करते हैं, नुकसान नहीं।

. . . . के प्रकरणके बारेमें आज मुलाकातें हुअीं। बापूको . . . की निर्दोषताके बारेमें संभावना दीखती है। भारी मोहसे पत्र लिखनेके बाद

भी मनुष्य अलिप्त होनेका दावा कर सकता है? अेक नअी पहेली पैदा हो गअी है। हम सबके मत अलग हैं। मगर सारे मामलेमें अनजानमें भी किसीके साथ अन्याय नहीं करनेकी बापूकी वृत्तिमें अुनकी असाधारण अहिंसा छलक रही है। मैं अपने पिताका विचार करता हूं। अैसे पत्र लिखकर अुनके सामने खड़ा रहूं, तो सबसे पहले दो-चार तमाचे पड़ें! फिर भी अैसा खयाल होता है कि बापूकी असाधारण अहिंसा ही नीला जैसीका भेद खुलवा सकी है। दूसरी तरफ यह भी खयाल आता है कि नीला जैसी असाधारण हिम्मत कौन दिखा सकता है?

काकासाहबको बापूने भारी काम सौंपा है। अुसके पिताकी हैसियतसे, आश्रमीकी हैसियतसे, और गुरुकी हैसियतसे अुसे समझाओ, झंझोड़ो और सफाअी मांगो; जब तक आपको संतोष न हो जाय, तब तक अुसे जाने मत देना। अिस बीच बापू अधिक जांचकी — अुसके पत्र पढ़नेकी — जरूरत स्वीकार करते हैं।

१९–३–'३३ . . . . के बारेमें नारणदासभाअीको खूब क्रोधभरा पत्र लिखा। 'दिशो न जाने न लभे च शर्म' शब्द बापूने पहली बार अिस्तेमाल किये। जितना . . . के लिअे पक्षपात है, अुतना ही अुलटा आघात होता है। यह भी लिखा कि कामका बहुत ज्यादा बोझ प्रायश्चित्तका विचार छुड़वाता है। बाहर होता तो पता नहीं क्या करता।

कहा जा सकता है कि अिस और अैसे दूसरे अेक-दो पत्रोंने बापूका सारा रस-कस निचो डाला।

बापूको वाअिसरॉयका वर्णाश्रम स्वराज्य संघके प्रतिनिधि-मंडलको दिया हुआ जवाब बुरा नहीं लगा। अिन लोगोंने तो लिखा था कि "आप गांधीजीको जेलमें से अैसा शरारतभरा प्रचार करनेकी अिजाजत कैसे देते हैं? समझौता मंजूर करके आप गांधीजीके बहकावेमें कैसे आ गये? अब अिस बिलको लोकमतके लिअे खूब घुमवाअिये और संयुक्त कमेटीमें भी हमें प्रतिनिधित्व दीजिये" वगैरा।

वाअिसरॉयने ये सब बातें चुपचाप सुन लीं और कहा: आपको जवाब तो और क्या दिया जाय? आप अच्छा संगठन कर रहे हैं। मैंने पहले सनातन धर्म महामंडलको जो जवाब दिया था, वही आपको देता हूं। मगर देखिये, लोकशासन आ रहा है, अिसलिअे तमाम रूढ़ियोंको भी अुसकी कसौटी पर चढ़ना पड़ेगा।

बापू बोले: यह तो अच्छा धप्पा जमाया। अिसमें अुन्होंने अैसा कुछ नहीं कहा, जो हमें अच्छा न लगे। सुधारकोंके बारेमें भी अेक अक्षर नहीं कहा।

२०–३–'३३ श्वेतपत्र पर चिन्तामणिने पांच कालमका लेख लिखा था। अुसे मैंने पढ़ना शुरू किया। बापू कहने लगे: मुझे अिसकी जरूरत नहीं। यह शान्ता पानवलकरका पत्र मेरे लिअे ज्यादा महत्त्वका है। मुझे वही पढ़कर समझाओ।

शामको श्वेतपत्रकी शरारत करनेकी शक्तिकी बात करते हुअे बापू बोले: फिर भी मेरा खयाल है अुसमें जाना पड़ेगा। हम अगर सब पक्षोंको अेक कर सकें, तो देशी राज्य कुछ भी नहीं कर सकते। तमाम दल — मुसलमान, अछूत वर्ग और दूसरे हिन्दू अेक हो जायं, तब तो हम अिन लोगोंको छका सकते हैं। अलबत्ता, फिर भी सविनयभंग करनेवाले अेक दलको रखना चाहिये। अेक पक्ष सविनयभंग करे और अेक धारासभाओंमें जाय। जैसे दक्षिण अफ्रीकामें अेक सत्याग्रह-सभा (पेसिव रेजिस्टेंस अेसोसियेशन) थी और अेक ट्रान्सवाल अिंडियन अेसोसियेशन था। अिस तरह दो भाग कर दिये गये थे।

वल्लभभाअीने कहा: जैसे आज हरिजनोंका काम करनेवाले और जेलमें जानेवाले, अिस प्रकार दो भाग हो गये हैं।

२१–३–'३३ मनुष्यकी परीक्षा तो पग-पग पर हुआ ही करती है। जो अीश्वरका भक्त है और शूरवीर है — भक्ति शूरवीरकी सच्ची होती है — वह परीक्षा चाहता रहता है। प्रिंसेस अेरिस्टार्शी आज अेक पत्रमें कहती है कि मैं चाहती हूं भगवान मेरी बार-बार परीक्षा करे। अितना शास्त्रीकी स्थिति सुनकर लिखनेका सूझा। यहां आनेके बाद बच्चोंकी शिक्षाका सवाल खड़ा हुआ। तामिल जन्मे हुअे बच्चोंने हिन्दी, बंगला सीखी। बंगलामें पहला नंबर लेनेवाले बच्चोंको बापके जीवनमें नया कदम रखनेके कारण वापस मद्रास जाकर पूना आना पड़ा। दस सालकी अुम्रमें कितनी भाषाअें सीखें? वकीलने प्रेमभाव दिखाकर हरिजनसेवकके लड़केको अपनी पाठशालामें मुफ्त लेनेकी मांग की और लड़कीको भी ले लिया। लड़की पांच बरसकी, पाठशालामें मुश्किलसे रहती, अिसलिअे घर ले आये। अिधर अब घरमें सास और पत्नी दोनों बीमार हैं, दस महीनेका छोटा बच्चा रोता ही रहता है। न कोअी पड़ोसी है न मित्र! घरमें स्त्रियां कायर बन जानेवाली हों, तो यह आदमी आधा

रह जाय। पर यह प्रसन्नचित्त रहता है। कहता है: अरे, यह तो सब कर लेंगे। सेवासदनसे अेकाध बहनको अेक-दो दिनके लिअे बुलवा लेंगे।

*   *   *

आज नारणदासभाअीको. . . . . .के प्रकरण पर क्रोधभरा पत्र लिखा: "जैसे अहिंसाके सामने हिंसा शांत हो जाती है,

२२-३-'३३ वैसे ही शुद्ध सत्यके आगे असत्य शांत हो जाना चाहिये। मैं यह क्यों न देख सका कि ये लोग धोखा दे रहे हैं? मुझमें भीतर ही भीतर असत्य भरा हुआ होगा। मुझे अपने पर क्रोध आता है और अिन बच्चों पर दया आती है।"

पहले बापूने कुम्हार और घड़ेकी अुपमा काममें ली थी, तब दो तरहसे वह गलत लगी थी। अेक कारण यह कि आश्रम कच्ची मिट्टी नहीं है; और दूसरे, मिट्टी भी अलग-अलग किस्मकी होती है। अेक मिट्टीकी अींट बनती है, दूसरीका हुक्का बनता है, तो तीसरीका घड़ा बनता है। मनुष्य कुछ संस्कार लेकर पैदा होता है। अुसे अपने कर्म मिटाने पड़ेंगे या अुनके फल भोगने पड़ेंगे। तब बापू अपने बारेमें अितना अभिमान क्यों रखें? किस लिअे दुःख मोल लें? और, कोअी नीला जैसी बहादुर सत्यवक्ता अपने पिछले जीवन पर धधकती हुअी आग जलानेवाली मिलेगी, तो कोअी धोखा देनेवाले भी मिलेंगे। अिसका क्या किया जाय?

पर बापू अिस विचारके नहीं। अुन्होंने तो . . . को लिखा: "दोष तो मेरा है।" . . . को लिखा: "तुम्हारा भी दोष बताअूं?" और फिर लिखते हैं: "अैसी कअी बातें हो रही हैं, जिनका भगवान अिकट्ठा प्रायश्चित्त करवायेंगे। विचार नहीं कर रखा है, मगर अिस वक्त सूझ गया अिसलिअे लिख डालता हूं।"

पिछले पहर नीलाकी अद्भुत तपश्चर्या और पश्चात्तापसे शुद्ध हुअे जीवनके वर्णनसे भरा हुआ पत्र पढ़ते-पढ़ते कहने लगे: यह पत्र पढ़कर रोना आता है।

शामको बोले: भगवानने मेरे अभिमानको चूर-चूर कर दिया है। यह तेरा आश्रम, ये तेरे बच्चे!

नीलाके पत्रोंका बापूके मन पर बहुत असर हुआ है। और अभी हो ही रहा है। आज. . . .के सामने दोपहरकी मुलाकातमें

२३-३-'३३ यही किस्सा सुनाया और कहा: देखो, अुसने अभी तक मुझमें विश्वास पैदा नहीं किया। यही हाल तुम्हारा है।

पर आज ही अुसे लिखे गये पत्रमें बापूने विश्वास जाहिर किया। अुस पर सत्यके प्रवचन तो जारी ही हैं:

"जब तक सत्य तुम्हारे लिअे स्वाभाविक नहीं हो जाता, तब तक जीवन जरूर कठिन लगेगा और तुम्हें निराशा जैसा लगनेका अनुभव होगा। पर जो व्यक्ति पूर्ण सत्यमय हो जाता है, अुसके लिअे निराशा जैसी कोअी चीज ही नहीं। फिर तो अुसमें सत्य प्रकाशित होता है और अुसके सारे जीवनको अुज्ज्वल करता है। भगवान यानी सत्य ही तुम्हारा पथ-प्रदर्शक होना चाहिये।"

अिसके सिवाय अिस पत्रमें पुनः लिखा:

"आज तुम्हारा बहुत अच्छा पत्र मिला है। अूपरका पत्र कल लिखाया था। सत्य तुम्हें चारों तरफसे घेर ले और तुम्हें भर दे — बापू।"

अुसे पहली बार 'बापू' लिखा।

* * *

२४-३-'३३

नीला पर आज फिर प्रेमका फव्वारा छोड़ा। 'अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्, साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग् व्यवसितो हि सः' यह वाक्य मैंने नीलामें और अुसके प्रति बापूके व्यवहारमें आज प्रत्यक्ष होता देखा। आज अुसे लिखा:

"तुम प्रयत्न करो, अितना ही काफी नहीं। यह जरूरी है कि तुममें बल हो। अीश्वरको प्रयत्नसे संतोष होता है। पर अुसका वचन है कि सच्चे प्रयत्नसे जरूरी बल हमेशा पैदा होता ही है। अिसलिअे वस्तुतः तुम जो परिणाम दिखाओगी, अुस परसे मैं तुम्हारे प्रयत्नकी कीमत आंकनेवाला हूं। यह अच्छी तरहसे समझमें आ रहा है न? बुरे भूतकालको भूल जानेके लिअे तुम्हें भयंकर संग्राम करना पड़ेगा। परन्तु यदि सत्य तुममें बस गया होगा, तो कोअी डर रखनेकी जरूरत नहीं। प्रकाश गहरेसे गहरे अंधकारका नाश करता है। सत्य कालेसे काले पाप पर विजय प्राप्त करता है। पापका ही दूसरा अर्थ असत्य है। अिसलिअे मैं चाहता हूं कि तुम अपनी पहरेदार बनो।"

प्लेटोका 'सद्‌गुण ज्ञान है' (virtue is knowledge) और बापूका 'पाप असत्य है' (sin is untruth) और 'सद्‌गुण सत्य है' (virtue is truth) — ये पास-पास आ जाते हैं। अलबत्ता, अिनमें भेद है। सारा विषय गीताके ज्ञान और योगके कथनोंके साथ रखकर चर्चा करने लायक है।

आज जमनालालजीसे मिले थे। अुनके तबादलेकी ही रिपोर्ट हुअी थी। क्या आसानीसे बला टालनेके लिअे! अिसलिअे कल तबादला हो रहा है। बापूने यह राय दी कि जुर्माना देना या पेरोल पर छूटना दोनों बुरे हैं। अुन्होंने राय अिसलिअे पूछी थी कि वहां और कोअी लोग आपकी राय जानना चाहें तो अुन्हें बताना जरूरी हो जायगा।

फिर अुन्होंने पूछा: यह लड़ाअी कितनी चलेगी? दो बरस या ज्यादा?

बापू बोले: कमसे कम पांच बरस तो मान लो। और यही अच्छा है। हमें कुछ मिल गया होता, तो हमारी फजीहत हो जाती। आज हमारी शोभा बढ़ रही है। देश भी आगे बढ़ रहा है। मैं यह भी नहीं चाहता कि आज समझौता हो जाय। वह होगा भी तो कच्चा ही होगा। और हम तो आज कुछ करके बता नहीं सके, क्योंकि हमारी लड़ाअीमें काफी मैल भरा हुआ है। पांच बरसमें सारा मैल छट जायेगा, और पचास या पांच सौ जितने रहनेवाले होंगे अुतने रह जायंगे।

आज पोलाक बापूसे मिले। मुझे भी पांच मिनट मिलनेकी अिजाजत मिली थी।

२५-३-'३३ मथुरादासके साथ मेहरअली आये थे। अुन्होंने कहा: यह बात गलत है कि अस्पृश्यताके आन्दोलनसे सविनयभंगको धक्का पहुंचा है। यह सच है कि कुछ लोग अिसमें पड़ गये हैं, पर वे लोग थोड़ा-थोड़ा काम जरूर कर रहे हैं। परन्तु जो बात लोग नहीं समझ सकते, वह है राजाजीका सहयोग। अिसका क्या किया जाय? अिसे मैं भी नहीं समझता।

बापूने अुन्हें विस्तारसे समझाया: राजाजीका अस्पृश्यताके काममें पड़नेका धर्म था या नहीं, यह वे जानें। यह तो वही कह सकते हैं। मगर अिसमें कोअी शक नहीं कि अिस कामको हाथमें लेनेके बाद अुन्हें धारासभा तक पहुंचना ही था। यह अुनका धर्म था। सहयोग तो तभी शुरू हो गया, जब मैंने मैक्डोनल्डको सलाह दी कि निर्णय बदलना चाहिये। अुपवास करके समझौता करवाया। अिसमें सहयोग तो था ही। अिस समझौतेमें निश्चय हुआ कि स्वराज्य मिलनेसे पहले अस्पृश्यता मिटाअी जाय। अस्पृश्यता-निवारणका प्रस्ताव तो अभी तक लाया नहीं गया। यह तो जो बुरा कानून है और जो बहुमतको भी अपना मत अमलमें नहीं लाने देता, अुसे बदलनेका कानून बनवानेकी कोशिश हो रही है। अगर हम अुसे न बदलवा सकें, तो समझना चाहिये कि हमने समझौतेके बाद जो प्रतिज्ञा की वह धूलमें मिल गअी। जो बिल

हम लाये हैं, वह तो हमारे अपने स्वार्थकी बात है। सहयोगमें परस्पर लेना-देना होता ही है। यह बिल पास करानेमें हम सरकारको कुछ दे नहीं रहे हैं। सरकार हमारे साथ सहयोग करती है, पर हम अुसके साथ नहीं करते। दुश्मनसे भी कुछ खास मामलोंमें सहयोग मांगा जा सकता है, ताकि अुसके लिअे यह कहनेको न रहे कि हमने मदद नहीं मांगी थी। हमारे प्रतिज्ञा-पालनके लिअे यह बिल जरूरी है। अगर राजगोपालाचार्यका हरिजन-काम हाथमें लेना ठीक हो, तो अुनका बिल वगैराके काममें पड़ना तो बिलकुल ही अुचित था। अिसमें असहयोगके सिद्धांतका भंग नहीं होता। प्रधान मंत्रीके खिलाफ यह लड़ाअी न की होती, तो हिन्दूधर्मका खातमा हो जाता और प्रजाका भी भुरकस निकल जाता। अलबत्ता, अभी तक हम लोगोंकी आपसी लड़ाअी तो खड़ी ही है। आज आंबेडकर चार करोड़के लिअे नहीं बोलता। मगर जब अिन चार करोड़में शक्ति आ जायेगी, तब ये सोच-विचार नहीं करेंगे। ये लोग तुम्हारे कुओंमें जहर डालेंगे और तुम्हें जहर देकर मार डालनेकी कोशिश करेंगे! अिन चार करोड़ मनुष्योंके मन भगवान पल भरमें बदल सकता है। और वे मुसलमान भी बन सकते हैं। लेकिन अैसा न हो तो वे चुन-चुन कर सवर्ण हिन्दुओंको मारेंगे। यह चीज मुझे अच्छी नहीं लगेगी, पर मैं अितना जरूर कहूंगा कि सवर्ण हिन्दू अिसी लायक थे।

मैं तो छोटीसी पगडंडी पर चलनेवाला ठहरा। मुझे तो प्रतिज्ञाका पालन करना ही होगा। और प्रतिज्ञा-पालनके पीछे धर्म डूब जाता हो, या देश डूब जाता हो, तो भले ही डूब जाय। जब मुझ पर हिन्दूधर्मका नाश करनेके आरोप लगानेवाले पत्र आते हैं, तब मैं कहता हूं कि हिन्दूधर्मको जिलानेवाला मैं कौन? हरिजनोंको भी जिलानेवाला मैं कौन? मुझे तो ली गअी प्रतिज्ञा पूर्ण करनी ही पड़ेगी।

आज लोग जो आलोचना कर रहे हैं वह मिथ्या है। सरकारके मंच पर जाकर भी हमारा काम करना हो, तो अुसमें सहयोग क्या हुआ? यों तो मैं विलायत किस लिअे गया था? वह भी तो सहयोग ही था न? अिसलिअे यह बात ही गलत है कि आज अुठाये गये कदमसे सब कुछ नष्ट हो जायगा। जो लोग समझ गये हैं और हर तरहकी मुसीबतका सामना करके भी लड़ाअी चलाते ही रहेंगे, अुनके लिअे हारकी क्या बात है? जो आदमी न समझे, वह भले ही अलग हो जाय। अुतना ही नावमें कम भार हुआ। राजाजीका अेक भी कदम गलत नहीं है। जनताकी लड़ाअीके लिअे अेक अेक कदम जरूरी था। सहयोग तो तब किया माना जाय, जब

वे लोग अमुक चीज देना चाहें और हम अुसे लेने और अुन लोगोंके साथ काम करनेको तैयार हो जायं।

सनातनियोंके नमूनेदार पत्र आते हैं। अेक पत्रमें लिखा है कि सरकार तो अेक तरहसे दुश्मन है, पर आप तो हमारे हजार तरहसे दुश्मन हैं! बेल्जियन कांगोसे अेक आदमी सनातन धर्मका अुल्लेख करके गालियां भेजता है!

२६–३–'३३

डंकन पर बापूकी श्रद्धा बढ़ गयी है। अुसके लिअे मदनापल्लीमें हेडमास्टरकी जगहकी मांग आअी। अुसने लिखा: "मुझे तो आश्रमके आदर्शको मानना है। और अब गांधीजीकी आज्ञामें हूं, अिसलिअे अुनसे पूछे बिना नहीं निकल सकता। कहीं यह मेरे लिअे प्रलोभन तो नहीं है?"

बापूने लिखा: "तुम अिसे प्रलोभन ही समझो। तुम आये तबसे मेरी निगाह तुम पर जमी है। मुझे तो तुम्हें कोअी शुद्ध हरिजन पाठशाला सौंपनी है, जिसके द्वारा तुम मां-बाप और बच्चोंको भी पढ़ा सको।"

मेरीको लिखा: "'पंच' अखबारकी क्या बात की जाय? महादेवको या मुझे 'पंच' देखनेको अेक मिनट भी नहीं मिलता। वैसे हम अकसर यहां अलग-अलग कामोंके धागे जोड़कर 'पंच और जूडी शो' करते जरूर हैं!"

आज 'नागानन्द' पढ़ा। यह गरुड़ कौन है? ये नाग कौन हैं? गरुड़ नागोंको अुठा ले जाता था। जीमूतवाहनको भी अुठा ले गया और मलय पर्वत पर रखकर अुसे खाने लगा। यह मलय पर्वत कहां है? लेकिन मुद्देकी बात यह है कि दूसरोंके दुःखके लिअे प्राण देनेकी प्रथा अनादि कालसे चली ही आ रही है और वह ठेठ सहस्रलिंग तालाबमें प्राण देनेवाले अछूत बालक तक आअी है। नाटकका शुरूका भाग शिथिल है, परन्तु पिछला भाग सुन्दर है। और अनुवाद भी ठीक मालूम होता है। जब जीमूतवाहन गरुड़के लिअे अपना बलिदान देनेको तैयार होता है, अुस समयके अुसके ये शब्द सुन्दर हैं:

"शिला पर चढ़ते हुअे मेरे शरीरमें आनन्दका संचार होता है। अिस वधशिलासे मिलते हुअे जो आनन्द मैं अनुभव करता हूं, अुसके दसवें भागका आनन्द भी चन्दन रससे शीतल मलयवतीका स्पर्श नहीं दे सकता। अपनी प्रियतमाकी बात मैं किस लिअे करूं? अिस शिला पर सोते हुअे जो सुख मैं अनुभव करता हूं, अुसके सामने माताकी गोदमें आरामसे सोनेवाले बालकके सुखकी भी कोअी बिसात नहीं।" (श्री हर्षरचित नागानन्द, अंक ४, श्लोक २३-२४)

मलावारके लोग कहते हैं कि यह घटना अुनके प्रदेशमें हुआी थी। वहीं आज अछूत जितने दुरदुराये जाते हैं, अुतने और कहीं नहीं दुरदुराये जाते!

२७–३–’३३ . . . का पत्र आया। अुसमें अुसने वहुत ही सचाआीके साथ अपने. . . के साथके परिचयोंका वर्णन दिया। यह प्रगट किया कि अुसके प्रति अपना कितना मित्र-ऋण है। लेकिन यह भी वताया कि वह किसी वचनसे वंधा हुआ नहीं है।

मेरीका पत्र सचमुच अुसे शोभा देनेवाला था। अुसने वताया कि शादीका विचार अुसने छोड़ दिया है। मगर अभी तक समता नहीं पा सकी है, अिसलिअे वह त्याग भी कलुषित हो जाता है। वापूने दोनों पत्र . . . के पास रखे और दोनोंके वारेमें शांत हो जानेको कहा। और कभी . . . की तरफ जानेकी वृत्ति न रखनेकी सलाह दी।

आंखोंका चश्मा कैसे छोड़ा जाय, अिस वारेमें आलासे प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त करनेका भी आज ही निश्चय किया था। अिस विषयकी अेक-दो पुस्तकोंका अध्ययन तो वापू कर ही रहे थे। अमेरिकाके अेक डॉक्टरके साथ अिस सम्बन्धमें पत्रव्यवहार भी किया था और ग्रेगका अपना अनुभव पूछा था। ग्रेगने तो वहुत ही प्रोत्साहन देनेवाला जवाव भेजा था। वापूको आलासे वारीकीके साथ सव सूचनाअें लेने और कअी अुलटे-सुलटे सवाल पूछते देखकर मुझे लगा: अभी भी वापूको कितना लोभ है? अव यह चश्मा अुतारनेकी कैसी दुराशा? कितने वरस जीना है? अुसमें चश्मा रहा तो क्या और न रहा तो भी क्या?

अितनेमें तो मानो मेरे मनमें अुठनेवाले विचारोंका ही जवाव देते हों अिस तरह वापूने काकासे कहा: काका, अिस चीज पर थोड़ा समय देना चाहिये। यह चीज सच्ची ही हो तो अिससे कितने लोगोंको लाभ हो और हजारों रुपये वच जायं!

६४ वरसकी अुम्रमें चश्मा अुतारनेकी कला सीखनेके पीछे वापूकी यह दृष्टि थी!

२८–३–’३३ मेजरके साथ दूरवीनके वारेमें वातें हुआीं। सरकारने अुसे आने दिया है, फिर भी अन्दर आने देनेमें अुसकी आनाकानी है। कोअी अुस पर चढ़कर दीवार फांद जाय तो?

वापू: लेकिन हम ही क्या ये खाटें दीवारसे लगाकर नहीं कूद सकते?

वे बोले: मगर आपकी बात कहां है? दूसरे कैदियोंकी है।

बापू: पर वह रात-दिन हमारे पास पड़ी रहेगी। हम चार जन अुसके पास सोते होंगे, फिर भी दरवाजे तोड़कर, ताले तोड़कर कोअी आदमी अुसे अुठा ले जाने और अुसकी मददसे चढ़ने आयेगा, तो हमें क्या पता नहीं चलेगा? लेकिन खैर, आपको अिनकार करना हो तो अिनकार कर दीजिये।

पूनमचन्द रांकाके बारेमें २३ तारीखके पत्रका कोअी जवाब नहीं आया। अिसलिअे बापूने सरकारको फिर लिखनेका विचार किया। सवेरे रांकाके बारेमें अुसकी स्त्रीका अखबारमें आया हुआ पत्र बापूके सामने रखें या नहीं, अिस बारेमें छगनलाल मुझसे पूछने लगे। मैंने कहा: तुरन्त रखो। मगर सरदार तो अुन पर चिढ़ गये।

बापू: सरदारको अिस मामलेकी खबर न लगे। जाते-जाते फिर कहने लगे: नोटिस देना पड़ेगा। अिस तरह अपने सगे-सम्बन्धियोंको और परिचितोंको मर जानेसे रोकनेका हरअेक कैदीका हक है, मेरा तो विशेष है।

वल्लभभाअी: जरा ठहर जाअिये। सरकारका जवाब आने दीजिये।

अन्तमें अुठते हुअे बापू बोले: क्यों काजी साहब, हुक्म देते हैं क्या?

काजी ठंडे हो गये। जवाब नहीं दिया। आमबाड़ीमें जाकर बापूने सरकारको यह नोटिस दिया कि कल तक मुझे जवाब मिलना ही चाहिये। और डोअिलको लिखा: यह पत्र टेलीफोनसे भेजिये, या तार दीजिये।

बादमें मुझसे कहा: आज बैठे रहे तो हाथ मलते रह जायंगे। हम सिर्फ खबर मंगाने और सलाह देनेकी अिजाजत चाहते हैं। अितना मौका तो अुन्हें देना ही पड़ेगा। मेरी सलाह न मानकर अुसे मरना हो तो भले ही मरे।

दोपहरको भंडारी आये, यह कहनेको कि टेलीफोन तो डोअिल न कर सके, मगर आपके खर्चसे वे तार देनेको तैयार हैं।

बापूने कहा: भले ही।

अिसके बाद फिर मेजर आध घंटेमें वापिस आये। कहने लगे: अुसने तो टेलीफोन ही किया और सरकारका जवाब भी मिल गया। वह कहती है कि भारत सरकारके साथ हमारा पत्र-व्यवहार हो रहा है। कल यदि जवाब न आये, तो गांधी परसों तक राह नहीं देखेंगे?

बापूने कहा: सरकारको टेलीफोनसे मेरी तरफसे यह जवाब दीजिये:

"बात अितनी जल्दीकी है कि अिंतजार करना मेरे लिअे बहुत मुश्किल है। अिसके कारण मैंने अब तक बड़ी वेदना सही है। सेठ पूनमचन्द

रांकाको कुछ हो गया, तो यह चीज मुझे जिन्दगी भर खटकती रहेगी कि अैन वक्त पर अुन्हें पत्र लिखनेकी सरकारसे अिजाजत लेनेमें मैं असफल रहा। अिसलिअे मैं तावड़तोड़ जवाब मांगता हूं। मेरा यह सुझाव है कि वम्वअी सरकार अपनी जिम्मेदारी पर मध्यप्रान्तके होम मेम्वरकी मारफ़त सेठ पूनमचन्द रांकाके साथ मुझे पत्र-व्यवहार करनेकी अिजाजत दे।"

नीलाके और पत्र आये। अुसे सुन्दर पत्र लिखा, जिसमें रोटी वनानेकी वर्णनात्मक और विस्तृत सूचनाअें दीं। चकला किस चीज़का वनाया जाय, वेलन कैसा हो, रोटी कितनी बड़ी हो, कितनी मोटी हो, वगैराके वारेमें भी सूचनाअें दीं। वापूको मां वननेका शौक चर्राया है!

लेडी ठाकरसीकी तीन-चार हजारकी दूरवीन आ गअी। अुसके स्टेण्डको अुठानेके लिअे आठ आदमियोंकी जरूरत पड़ी।

वापू कहने लगे: अव अिसे रख लेनेकी नीयत होती है। तव तो आश्रममें ऑब्जरवेटरी (वेधशाला) बनाअी जा सकती है! छूटनेके वाद पांचेक वरस जी जायें, तो सब कुछ हो सकता है।

यानी अभी दस वर्ष जीनेकी वातें हैं।

वल्लभभाअी: अरे भाअी, ऑब्जरवेटरीके लिअे आज भी छोड़ देंगे। साथमें हरिजनोंका काम मिला दीजिये। पर और कुछ न करें, तो जाअिये न, आज ही जाअिये! अैसा कहते हैं तो भी आप मानते कहां हैं?

मृदुलाका अुसे शोभा देनेवाला पत्र वेलगांवसे आया।

२९-३-'३३

नश्तर लगानेकी क्रिया जारी ही है। बापूमें जितनी दया है, अुतनी ही निर्दयतासे वे पत्र लिख सकते हैं। . . . के नाम लिखा गया आजका पत्र अिसी प्रकारका है। . . . के नाम भी अिसी तरहका है, फिर भी अुसमें दयामृत भी कोअी कम नहीं है:

"आश्रममें रहकर आश्रमजीवनके बजाय और कोअी जीवन यापन करना भी सत्य ही है? मेरी यही अिच्छा है कि तुम अिससे छूट जाओ। जो मुझसे करोड़ों कोस दूर रहकर सत्यका सेवन करे, वह मेरे साथ रहकर असत्यका सेवन करनेवालेसे मुझे वहुत ज्यादा प्यारा है। जैसे तुम्हारी परीक्षा करनेमें अेक बार मैं नापास हो गया, अुसी तरह संभव है तुम्हारा अविश्वास करनेमें भी नापास होअूं। मैं अीश्वरसे मांगता हूं कि नापास हो जाअूं। अैसा हो जाय तो पहली असफलता भी मिट ही जाय न? अभी तो मुझे लगता है कि तुम मुझे धोखा ही दे रहे हो।"

आज नीलाको फिर लम्बा पत्र लिखा। अुसमें फिर सत्यकी महिमाका बखान किया और यह बताया कि मेरी कलमसे सत्य और अहिंसाके सिवाय कुछ नहीं निकलता :

"मैं चाहता हूं कि मेरे लिखे हर शब्दसे सत्य और प्रेम टपके। अगर न टपके तो अुसमें मेरे प्रयत्नकी खामी नहीं हो सकती।

"मुझे यकीन है कि जीते जागते सत्य पर तुम्हारी जीती जागती श्रद्धा होगी, तो सहन करनेकी शक्तिसे ज्यादा परीक्षा भगवान तुम्हारी नहीं लेगा।"

अिस पत्रमें छोटी-छोटी सूचनाअें दीं। छोटी-छोटी खबरें मांगी। बाजार कहां है? सागभाजी क्या मिलती है? पानी कहांसे आता है? शहरसे कितनी दूर है? गाय दुहना और बकरी दुहना सीख लेनेको कहा। अिस तरह अिस स्त्रीकी बारीकीसे रचना हो रही है। जब यह सोचता हूं, तब पहले मैंने अेक बार जो आलोचना या शंका की थी, अुसकी सफाअी मिल जाती है। बापू कहते हैं कि घड़ा खराब हो तो अिसमें मिट्टीका दोष है या कुम्हारका? कुम्हारका। मेरी शंका यह थी कि आश्रममें आनेवाले मनुष्य मिट्टी नहीं हैं, और मिट्टी हों तो भी मिट्टी तरह-तरहकी होती है। पर सच बात यह है कि जो आदमी प्रपन्न है, यानी जिसने सब कुछ बापूको सौंप दिया है और जो बापूसे ही दिशाकी आशा रखता है, अुससे बापू यही आशा रखते हैं और मान लेते हैं कि वह अुनके हाथमें मिट्टी बनकर रहेगा। अिसीलिअे मीराबहनको जो पत्र जाते हैं और आजकल नीलाको जो पत्र जाते हैं, अुनमें जीवनकी हरअेक बातके बारेमें सूक्ष्मसे सूक्ष्म सलाह होती है। कल लिखा ही था न कि "भगवान यानी सत्य और तुम्हारे बीचमें आनेका किसीको हक नहीं। मैं आता हूं, क्योंकि मुझे साक्षी रखकर तुमने प्रतिज्ञा ली है।"

ये सब पत्र किसी समय अितिहासमें अमर हो जायंगे।

३०-३-'३३

पूनमचंद रांकाके बारेमें आज पत्र आ गया। पत्र तो कल रातको आ गया था कि जाजूको तार भेजना हो तो गांधी भेज दे। मगर पूनमचंदको सीधा नहीं! अिसमें असली मांग सरकारको माननी पड़ी, अितनी तो जीत हुअी। पर अपनी हठ पूरी करनेकी भी कोशिश की। अिसलिअे बापू फिर अेक पत्र तैयार कर रहे हैं।

मीराबहनकी असहिष्णुताका अेक अुदाहरण आज अुसके पत्रमें से मिलता है। अिसे असहिष्णुता कहिये या अुस पर जो बीती है अुसके अेक प्रत्याघातका नमूना कहिये :

"मैं चाहती हूं कि . . . . अिस व्रतका सौंदर्य और अुसकी आत्यंतिक आवश्यकताको समझे। सेवामय जीवनके लिअे और अीश्वरके प्रकाशकी खोजके लिअे ब्रह्मचर्यकी जरूरतको समझना पहली सीढ़ी है। शरीरका मोहपाश बड़ी खतरनाक चीज़ है। आर्थर रोड जेलमें मेरे बराबरवाले कमरेमें ही अेक दिन दो बच्चे पैदा हुअे। अिस सारी गंदी क्रियाके विचारसे मुझे बेहद घिन हुअी। गर्भाधानसे लेकर जन्म तककी प्रक्रिया बहुत गंदी है। अिस तरह पैदा हुअे हमारे शरीर भारस्वरूप और 'अलगावकी दीवार' जैसे हों तो अिसमें आश्चर्य नहीं। नये पैदा हुअे बच्चोंको देखकर मुझ पर जो पहली छाप पड़ी, वह मोहमायासे भरी हुअी दुनियामें जन्म पानेवाले अंतरात्माको होनेवाले दुःखकी थी। जन्मके बाद बेचारे छोटे बच्चे आधे घंटेमें मर गये।"

बापूने अिस पर अेक सुंदर प्रवचन दिया। अुसमें अुसे याद दिलाया कि गौतम बुद्ध, अीसा और जरथुष्ट्र वगैरा विवाहित स्थितिसे ही पैदा हुअे थे और तुम भी अिसीका परिणाम हो। अुन्होंने ब्रह्मचर्यके बारेमें स्मरणीय अुद्गार प्रगट किये:

"जो ब्रह्मचर्यका महत्त्व समझते हैं और अुसका पालन कर सकते हैं, अुनके लिअे वह बहुत सुंदर वस्तु है। पर अितना मान लेना चाहिये कि देहधारियोंके लिअे यह बड़ी असाधारण वस्तु है। दुनियामें सभी प्राणी नर-मादाके जोड़में रहते हैं और कालके अंत तक अिसी तरह रहेंगे। अिस-लिअे विवाहित जीवन और अुसके परिणामोंके बारेमें अधीर होना शायद ठीक नहीं। साधुपन धारण करनेसे तो हमारा काम ही नहीं चल सकता। अीश्वरकी गति समझमें नहीं आ सकती। अिसलिअे हरअेकके प्रति हमें अुदार रहना चाहिये। स्वयं हमको ही हर क्षण औरोंकी अुदारताकी जरूरत पड़ती है। करोड़ों मनुष्योंके लिअे तो विवाहित जीवन ही विषयी और दुःख-मय जीवनसे मुक्ति पानेका मार्ग है।"

यह तो शंकराचार्यमें शरीर-निंदाके जो श्लोक आते हैं, अुन्हें भी मात करनेवाली चीज है। और मीराबहनको हमारा दिया हुआ शंकराचार्यका नाम सार्थक करनेवाला है! तुलनाके लिअे शंकराचार्यके सुबोध प्रभाकरके नीचेके श्लोक देखिये:

स्त्रीपुंसोः संयोगात् संपाते शुक्रशोणितयोः ।
प्रविशज्जीवः शनकैः स्वकर्मणा देहमाधत्ते ॥
मातृगुरूदरदर्यां कफमूत्रपुरीषपूर्णायाम् ।
जठराग्निज्वालाभिर्नवमासं पच्यते जंतुः ॥

दैवात्प्रसूतिसमये शिशुस्तिरश्चीनतां यदा याति ।
शस्त्रैर्विखण्ड्य स तदा बहिरिह निष्कास्यतेऽतिबलात् ॥
अथवा यंत्रछिद्राद्यदा तु निःसार्यते प्रबलैः ।
प्रसवसमीरैश्च तदायं क्लेशः सोऽप्यनिर्वाच्यः ॥

आज राजाजी आये। दिल्लीकी बातें कीं। बापूने कहा कि वल्लभभाअीने आपके आंसू पोंछनेके लिए लंबा तौलिया भेजा है। जिस पर राजाजी कहने लगे: तौलियेकी जरूरत नहीं, क्योंकि आंखें सूख गअी हैं।

बादमें अुनके भविष्यके कार्यक्रमकी बात निकली: अब मुझे बाहर रह कर कुछ करना नहीं है। जो बिल अिन लोगोंके लिअे ज्यादा खतरनाक है, वह तो आ गया है और अेक दिन वह पास होगा ही। मैं किस लिअे बाहर रहूं?

बापू बोले: अिसका तो मेरा जवाब वही है, जो मैंने पहले दिया था। मेरी यहां बैठे हुअे दूसरी स्थिति है। मैं आपकी स्थितिमें अपनेको नहीं रख सकता। अगर आपके खयालसे सनातनियोंका अितना झूठा जो प्रचार हो रहा है, अुससे आपके सिवा कोअी भी नहीं निबट सकता, तो आप यही काम कीजिये। मगर आपको लगता हो कि आपके जेलमें जानेसे अिस कामको समर्थन मिलेगा तो आप जेलमें जाअिये। मैं चाहता हूं अैसा मानकर यदि आप बाहर रहें, तो यह ठीक नहीं। मैं तो जब तक आप बाहर हैं, तब तक आपसे काम लेता हूं। पर आप बाहर न हों तो भी क्या? मैंने अैसा मानकर यह लड़ाअी शुरू की है कि सब जेलमें हैं और जो बाहर रह गये हैं अुनके जरिये अिसे चलाना है। असलमें तो अीश्वरको अिसे चलाना होगा तो चलेगी। मुझे यह भी पता नहीं कि मैं स्वयं बाहर होअू तो क्या करूं। मुझे अैसा महसूस हो कि प्रतिज्ञा पूरी करनेके लिअे मैं और कोअी काम नहीं कर सकता, तो असंख्य मनुष्योंकी आलोचनाके बावजूद मैं यही काम करूं।

राजाजी बोले: आप तो मेरी स्थिति अधिक कठिन बना रहे हैं। शौकतअली कहते हैं न कि आपको चीजें ज्यादा मुश्किल बनाना आता है।

अिस पर शौकतअलीकी बात निकली। शौकतअलीकी जैसी तारीफ बापूने की, वैसी जिन्हें वे अच्छेसे अच्छे मित्र मानते हों वे भी नहीं करेंगे। अुनकी बुद्धिकी, अुनकी व्यवहार-कुशलताकी, परिस्थितिको समझ लेनेकी शक्तिकी और अुनके निर्णयोंकी — यहां तक कि मुहम्मदअली तो अुन्हींके कहनेमें चलनेमें सलामती मानते थे — बहुत तारीफ की।

फिर राजाजी वोले: केवल अुनकी शादी ही अिस सारी तारीफके लायक नहीं है। अिसीसे यह युरोपका प्रवास हुआ। यह चीज अुनकी राजनीति पर भी सवार रहती है।

अिस पर वापूने कहा: नहीं, अुनकी शादीमें भी हेतु है। अुन्होंने यह माना कि अेक स्त्रीका वे अिस्लाममें लाकर अुद्धार कर रहे हैं। और वह तो विधवा थी, अिसलिअे अुन्होंने निश्चय कर डाला और अपने निश्चयको अमलमें लानेके लिअे दुनियाके खिलाफ जूझे।

राजाजी: अैसा तो वीर कहला चुके सभी साहसी लोग करते।

वापू: नहीं, वे अिनके जैसे नहीं। अुन्हें तो सब कुछ अिस्लामकी दृष्टिसे सूझता है और अुसीके अनुसार वे करते हैं। अिस्लामका वे जो अर्थ करते हैं, अुसे आपको न मानना हो तो न मानिये। मगर वे तो अुसीके अनुसार जीवन विताते हैं। देखिये न, अुनकी शादी पर आलोचनाकी आंधी आ गअी, मगर अुसके सामने खड़े रहनेकी अुनमें हिम्मत तो है न?

यह कहना ही चाहिये कि वे मुझे भी अच्छी तरह जानते हैं। सिर्फ वे मुझे अिस्लामका बड़ा और अेकमात्र शत्रु मानते हैं, और तबसे ही वे मेरा विरोध करते हैं। कोहाटसे ही हम अलग हुअे। मगर अुस वक्त हकीम और ख्वाजा भी यही कहते थे कि यह आदमी जो कहता है वह सच है। अुनका यह कहना था कि जो छोटीसी हिन्दू जाति बड़े मुसलमान समाजमें रहे, अुसे अिसकी मेहरबानी पर ही रहना चाहिये और अिस्लामके अनुसार धर्म भ्रष्ट करना और स्त्रीहरण करना जायज है।

राजाजी: यह भी अिस्लाम है?

वापू: वे यह समझते हैं, अिसका क्या किया जाय? लाहोरमें दोनों भाअी आये और मुझसे कहने लगे: मुसलमान अिसमें साथ नहीं, आप यह आजादीकी लड़ाअी न कीजिये। मैंने अुनसे कहा: यह कैसे हो सकता है? आप दो जन साथ नहीं, अिसलिअे मैं ध्येयको कैसे छोड़ दूं? आपके सिवाय दूसरे मुसलमान तो हैं ही। किसी खास व्यक्तिकी खातिर ध्येयको कभी नहीं छोड़ा जा सकता। वस तबसे अुन्होंने मेरा कट्टर विरोध शुरू किया है।

अिसके वाद हिन्दू धर्मके वारेमें खूब बातें हुअीं। राजाजीने पूछा कि हिन्दू धर्मको कोअी सादा रूप नहीं दिया जा सकता? जैसे अिस्लाम सीधा-सादा है, मुसलमान वनने या वनानेके लिअे वहुत-कुछ करनेकी जरूरत नहीं पड़ती, अुसी तरह हिन्दू धर्मके लिअे कुछ नहीं हो सकता? अितनी अधिक पुस्तकों, अितने आचारों वगैराका आडंबर और किसी भी धर्ममें नहीं।

और हरअेक स्मृति धर्म है। बनारसमें प्रो० अलतेकर मिले थे। वे कहते थे कि स्मृतियां तो अस्पृश्यता बतायेंगी, अुनमें अस्पृश्यता भरी पड़ी है। मगर आप अिस जमानेके अनुकूल नअी स्मृति क्यों नहीं बनाते? साथ ही साथ अपनी राय देते जाते थे कि स्मृति बनानेका शायद वही तरीका हो जो आप कर रहे हैं।

यह तो मानो बापूके अेक जवाबमें से ही निकला कि हिन्दू धर्मको शुद्ध होना चाहिये। आज मुसलमान जो गुंडापन दिखा रहे हैं, अुसका मुकाबला हिन्दू शुद्ध होकर ही कर सकते हैं।

अिस पर यह चर्चा चली कि शुद्ध होनेका क्या अर्थ है और अुसमें से राजाजीके मनमें दिल्लीमें पैदा हुअे विचार बाहर आये।

बापू: अहिंसासे — मरनेकी तैयारीसे ही गुंडापन जीता जा सकता है। अगर हम शुद्ध नहीं होंगे तो केवल जड़तासे ही मर जानेवाले हैं। आज अिस्लाममें भ्रष्टाचार और गुंडापन है। हिन्दू धर्ममें भ्रष्टाचार है, पर गुंडापन अभी तक नहीं आया है। अिसीलिअे मैं कहता हूं कि हिन्दू धर्मको शुद्ध करो।

तब अिस पर सारी चर्चा हुअी कि शुद्ध करनेका क्या अर्थ है।

काकासाहब: आप हिन्दू धर्मको शुद्ध हुआ कब मानेंगे? अस्पृश्यता न रहे तो कोअी और भी शर्तें हैं?

बापू: अस्पृश्यता तो मिटनी ही चाहिये।

राजाजी: शुद्ध करनेको कहते हैं, मगर शुद्धि तो शुद्धिकी खातिर ही हो सकती है, अिस हेतुसे नहीं कि दूसरा कोअी हमें अपनी बराबरीका समझे।

बापू: नहीं। यों तो मुसलमान भी हमें बराबरीके नहीं मानते, काफिर मानते हैं, या जजिया देकर रहनेवाले और आपत्ति कालमें कुछ शर्तों पर अुनकी मददके लायक मानते हैं।

मैंने पूछा: तो हम किस तरह समान बन सकते हैं?

तब राजाजी हिन्दू धर्मकी शुद्धि पर आये और कहने लगे: अेक ही दिशामें समानान्तर होड़ लग रही है, यहां तक कि यह कहना मुश्किल हो गया है कि कट्टर मुसलमानसे सनातनी हिन्दू कम धर्मान्ध है। अिसे शुद्ध करनेके लिअे मेरे खयालसे तो हिन्दू धर्मके मूलभूत सिद्धांत लेकर लोगोंके सामने रखने चाहियें और हिन्दुओंसे कहना चाहिये कि यह सादा धर्म स्वीकार करो।

बापू: यानी यही कहें न कि कलमा पढ़ो? आर्यसमाजियोंने मुसलमानोंकी नकल की है, और वह यहां तक कि वे भी लगभग मुसलमान बन गये। नहीं तो

आप जिसे जंजाल वताते हैं, वह अिस्लाममें भी है। पुस्तकालयके पुस्तकालय भर जायं, अितनी अिस्लामकी पुस्तकें हैं। कुरान पर हजारों भाष्य हैं।

राजाजी: मगर अितने पर भी मुसलमान बननेके लिअे अेक-दो सीधी-सादी वातोंकी जरूरत है।

बापू: वैसा तो हमारा भागवत धर्म है न? अुसमें रामनाम या ॐ नमो भगवते वासुदेवायके सिवाय क्या है? और यों तो कलमेमें भी क्या खूबी भरी है? आखिर हमारी परंपरा, संस्कार और हजारों वर्षकी शिक्षाका अुत्तराधिकार कोअी छोड़ थोड़े ही दिया जा सकता है?

राजाजी: अुसे साहित्यके रूपमें जारी रखें, मगर वह धर्म किस लिअे? अीश्वरप्रेरित किस लिअे?

बापू: यह तो वेद भी कहते हैं कि वेदोंका सार 'ओम्' है। यह कौन कहता है कि वेदका हर शब्द अीश्वरप्रेरित है?

वैसे सब कुछ भावना पर निर्भर है। हरअेक धर्ममें क्या मूर्तिपूजा नहीं है? आज हम यहां मन्दिरमें ही बैठे हैं न?

राजाजी: जो वहम बढ़ गये हैं, अुनके खिलाफ हलचल शुरू कर दें, तो काम चल सकता है। बादमें अेक सीधी-सादी पुस्तक बच्चोंके लिअे तैयार कर देंगे।

बापू: हां, मगर यह पुस्तक बच्चोंके लिअे ही होगी!

हिन्दू धर्मका रहस्य बताते हुअे बापू कहने लगे: अितनी अधिक जातियां आअीं और अुसने अुन्हें अपनेमें समा लिया।

राजाजी: यह कोअी हिन्दू धर्मका तत्त्व नहीं माना जा सकता। यह तो सभी नीचे प्रकारकी रचनाओंका लक्षण है। हिन्दू धर्मने तो किसी हद तक अिस पृथ्वीके जैसा काम किया है। कअी तरहकी वनस्पति सड़कर अुसमें मिल जाती है। हम दूसरे सब धर्म-सम्प्रदायोंकी गन्दगी और कचरा अपनेमें समाकर पचाते रहे हैं।

बापू: हिन्दू धर्म अत्यंत सहिष्णु है। अिसमें और किसी धर्मका अिनकार नहीं है।

राजाजी: हिन्दू धर्मको धर्म ही मुश्किलसे कहा जा सकता है। तमाम प्राचीन दर्शनों (तत्त्वज्ञानों) का वह मूल आधार था। फिर अुसमें तरह-तरहकी चीजें आकर मिलीं। और आज वह बड़ा घूरा बन गया है।

बापू: वह तो सब धर्मोंकी माता है और शुद्ध है।

राजाजी: जैसी पृथ्वी है।

वापू: पृथ्वी भी तो पृथ्वीमाता ही है न? या हिन्दू धर्म महासागर है, जिसमें सब प्रकारकी अशुद्धियोंके आकर मिल जाने पर भी असकी विशुद्धिको कोभी आंच नहीं आती, वल्कि वे सब अशुद्धियां विशुद्ध हो जाती हैं। पर आजकलका हिन्दू धर्म सच्चा हिन्दू धर्म नहीं है। वह तो हिन्दू धर्मकी विडम्बना है।

राजाजी: आपने गीताको अपनाया है, अिसलिअे सनातनी असे भी नीचे गिराने लगे हैं।

वापू: यह तो अच्छा है। तब मैं रामायणको, भागवतको और दूसरे ग्रंथोंको अूंचा स्थान दूंगा। वे लोग अिन सब ग्रंथोंको भी गिरा देंगे, तो अुनके खड़े रहनेके लिअे कुछ नहीं रहेगा। वे लोग आज बड़ी खाअी खोद रहे हैं, जिसमें अुन्हींको दफन होना पड़ेगा। अुनकी सारी झूठ और गालियोंके पीछे कोअी रचनात्मक काम नहीं है। अुनकी सारी कोशिश मेरा सफाया कर डालनेके लिअे है। मगर अेक व्यक्तिके खिलाफ चलाअी हुअी हलचल कहां तक टिकेगी?

शामको रवाना होते वक्त राजाजी वापूसे कहने लगे, मुझे असा लगता कि शायद अस्पृश्यताके लिअे नहीं, पर पापा (राजाजीकी लड़की) के लिअे तो कहीं मैं वाहर नहीं रहा होअूं।

अिस पर वापूने कहा: आपको अिस मामलेमें मेरी तरह निर्दय होना पड़ेगा। नश्तर लगाना पड़ेगा। दोनों लड़कियोंको आश्रममें रख आअिये। अिस लड़कीको यह समझने दीजिये कि यह वाप हमारे लिअे नहीं जीता। तभी वह ठिकाने आयेगी। नहीं तो हम असे खो बैठेंगे।

वापूने ब्रूमकी 'कानूनकी शिक्षायें' (लीगल मैक्सिम्स) पुस्तकका अध्ययन कितना अच्छा किया है, अिसका सबूत अकसर वापू घूमते-घूमते दे डालते हैं। आज सवेरे वापूने शास्त्रीसे अेक पत्र अेक फाअिलमें रखनेको कहा था। वह पत्र बादमें मेरे पास आया और अंतमें प्रेसमें चला गया। वापूने पूछताछ करके सावित किया कि अिस पत्रको फाअिलमें लगानेका पहला फर्ज शास्त्रीका था। अुन्होंने यह मान लिया कि मैं लगाअूंगा। अिस पर वापू कहने लगे: लेटिन शिक्षा है कि Delegata potestas non potest delegari यानी जिसको काम सौंपा गया हो, वह अुस कामको दूसरेको नहीं सौंप सकता। अिसी तरह Bis dat qui cito dat यानी जो जल्दी देता है, वह दुगुना देता

३१–३–'३३

है। (अिसकी तुलना हमारी अिस कहावतसे कीजिये : तुरत दान महापुण्य।) अिस तरहकी दूसरी कहावतें वापू अकसर कहा करते हैं।

सुपरिन्टेन्डेन्टसे आज वातों ही वातोंमें पता लगा कि अेंग्लो-अिंडियन कैदियोंको कोड़ेकी सजा ही नहीं दी जा सकती! अेक कैदी खूव तंग कर रहा है। अुसे डंडा-वेड़ी वगैराकी कअी सजायें हो चुकी हैं और आज अंतमें अुसने आयोडीन पी लिया! अुसकी वात करते हुअे अुन्होंने कहा: वह कोड़ेकी सजासे सीधा हो सकता है। मगर यह दुःखकी वात है कि नियमके अनुसार अिन लोगोंको यह सजा दी ही नहीं जा सकती!

राजाजी आये। अुनके साथ वापूने कलकी वात फिर शुरू की।

वापू वोले: आप शुरू कीजिये, नहीं तो मैं गोलीवार शुरू करता हूं। आप यह चाहते हैं कि हिन्दू जैसा जीमें आये वैसा करें?

राजाजी: अैसा नहीं। मैं यह कहना चाहता हूं कि आज धर्मके नामसे जो कुछ चल रहा है, अुसमें से क्या ज्यादातर फेंक देने लायक नहीं है?

वापू: जरूर है। और यही हम कर रहे हैं।

राजाजी: नहीं। यह क्या किसी पद्धतिके अनुसार और अच्छे ढंगसे हो रहा है?

वापू: अस्पृश्यताको मिटा देनेके साथ ही हिन्दू धर्ममें नवजीवनका संचार होगा। अिसके वाद हम दूसरी निकम्मी चीजें फेंक देनेका काम शुरू करेंगे।

राजाजी: अेक अच्छे हिन्दूका जीवन ल लीजिये। मिसालके तौर पर, आपका जीवन लीजिये। आपने वहुतसी चीजें छोड़ दी हैं। हम हिन्दू धर्मको अिस कक्षा पर क्यों न ले आयें?

वापू: यह कक्षा अैसी नहीं, जिस पर हरअेक आदमीको आना ही चाहिये।

राजाजी: क्यों नहीं? आज आप यह कहकर मूर्ति-पूजाका समर्थन करते हैं कि अेक खास तरहकी वृद्धिके लिअे वह अच्छी चीज है। अव यदि अिस्लाममें मूर्ति-पूजा होगी, तो भी वह अैसी खराव नहीं जैसी आज हिन्दू धर्ममें प्रचलित है।

वापू: आप भूल कर रहे हैं। अिस्लामकी मूर्ति-पूजा तो वहुत स्थूल मानी जायगी। अुसमें तो अेक पुस्तककी और अेक आदमीकी मूर्ति-पूजा है। यहां तक कि अीश्वरको भूला दिया गया है, मगर मुहम्मद नहीं भूलाया जा सकता।

राजाजी : आप जो कहते हैं वह मान लिया जाय, तो भी हममें से कितने ही लोगोंका तो यही हाल है, बल्कि अिससे भी ज्यादा है। छुआछूत और अिसी तरहकी दूसरी बातोंसे सम्बन्ध रखनेवाले वहम देखिये। यह तो कनिष्ठ प्रकारकी मूर्ति-पूजा हुअी। मूर्तिको चढ़ाये जानेवाले नैवेद्य, मूर्तिकी गादी और मूर्तिके बिछौने वगैरा सब चीजोंमें हम पवित्रताका आरोपण करते हैं।

बापू : अुसमें कुछ काव्य है।

राजाजी : यों तो लगभग हरअेक बुरे रिवाजके लिअे कहा जा सकता है।

बापू : नहीं, सबके बारेमें अैसा नहीं कह सकते। अुदाहरणके लिअे, देवदासीकी प्रथाके बारेमें मैं अैसा नहीं कहूंगा।

राजाजी : आप संगीतको मानते हैं और नृत्यको भी मानते हैं। देवदासीकी प्रथा देवताओंके आगे संगीत और नृत्य करनेकी पुरानी प्रणालीका वस्तुत: अेक अवशेष ही है।

बापू : यों तो अस्पृश्यता भी भूतकालके किसी अैसे रिवाजका, जिसके पक्षमें कुछ न कुछ कहा जा सकता है, अवशेष ही होगा। अिसीलिअे मैं 'आजकल पाली जानेवाली' अस्पृश्यताका विरोध करता हूं। अिसी तरह मैं 'आजकलकी' देवदासी प्रथाकी निन्दा करता हूं। सम्भव है अुसका भी आदर्श बहुत अूंचा हो — अपनी लड़कीको अीश्वरकी सेवामें अर्पित करना। किन्तु आज तो अुस आदर्शकी विडम्बना हो रही है।

राजाजी : यही बात मूर्ति-पूजाकी है। शुरूमें अिसके पीछे अीश्वरकी सर्वव्यापकताका विश्वमान्य खयाल होगा, पर आज तो वह बेहूदी चीज बन गअी है।

बापू : नहीं, मूर्ति-पूजा बेहूदी चीज नहीं। जब मैं कहता हूं कि मैं मूर्ति-पूजाको नहीं मानता, तब मैं यह नहीं कहता कि वह पत्थर अीश्वर नहीं है।

राजाजी : पर आप जानते हैं कि अैसा कहनेका नतीजा क्या होगा? कुछ लोग कहेंगे कि हम पत्थरमें अीश्वरको नहीं देख सकते और कुछ कहेंगे कि पत्थरमें अीश्वर है। फिर दोनोंमें डंडे चलेंगे। अिसलिअे मैं तो कहता हूं कि हमें पूजाका कोअी अैसा तरीका ढूंढ निकालना चाहिये, जो सबको मंजूर हो।

बापू : तब आप ही तरीका बताअिये। मैं तो कहता हूं कि अिन सब तरीकोंकी जांच करते-करते अन्तमें हम अेक असंभव चीज पर आ पहुंचेंगे।

राजाजी : मुझे भी अैसा भय है। फिर भी मेरा खयाल है कि आप व्यावहारिक मार्ग बता सकते हैं।

बापू : मैं नहीं मानता। कोअी भी चीज हम दूसरे पर लादने लगेंगे, तो तुरन्त मालूम हो जायगा कि वह परीक्षामें टिक नहीं सकेगी।

राजाजी: अमुक-अमुक बातें नहीं होनी चाहियें, अैसा नकारात्मक रास्ता मैं बता दूं। अुदाहरणके लिअे, भयंकर बेहूदी मूर्तियोंकी पूजा न हो।

बापू: आप अिस तरह अेकके बाद अेक चीजको मिटाते जायंगे, तो देखेंगे कि अेक आदमी कहेगा यह नहीं, दूसरा कहेगा वह नहीं, और तीसरा कहेगा कि फलाना नहीं। अिस तरह करते-करते शेष कुछ भी नहीं रहेगा।

राजाजी: हम असाम्प्रदायिक भजन क्यों न रखें?

काका: कबीरने अैसा ही किया था। और अन्तमें वह भी अपने पीछे अेक संप्रदाय छोड़ गये। अुसका नतीजा और कुछ नहीं हुआ।

राजाजी: किंतु हम फिरसे अिसके लिअे प्रयत्न क्यों न करें? हम ध्यान धरने या मंत्र जपनेकी सूचना दें।

बापू: आप अैसी कोअी भी चीज सुझायेंगे, तो अुस पर अेतराज जरूर अुठाये जायंगे। आपको पता है न कि नामांकित व्यक्तियोंके प्रतीकके रूपमें पुष्प चित्रित करनेकी प्रथाका क्या हाल हुआ? मस्जिदमें केवल वह पुष्पके रूपमें चित्रित किया जा सकता या खोदा जा सकता है, और अुसके लिअे कोअी अेतराज नहीं करेगा। मगर अुनके साथ मशहूर आदमियोंका नाम लिया कि अुसे कोअी बरदाश्त नहीं करेगा। काबाके आसपास ३६० मूर्तियां थीं, पर वे देवताओंकी प्रतिनिधि नहीं, राक्षसोंकी प्रतिनिधि थीं।

राजाजी: आजकलके बहुतसे मन्दिर भी तो अैसे ही हैं न?

बापू: नहीं, अैसा नहीं। वे मूर्तियां अीश्वरकी प्रतिनिधि नहीं थीं, अिसीलिअे तो मुहम्मदने अुन्हें नष्ट किया। अुनमें जो अनिष्ट तत्त्व था, अुसका नाश करना चाहिये था। किचनरने अैसा ही किया था। अुसने कहा कि महादीकी कब्रको नष्ट कर दो, क्योंकि अुसके आसपास लोग संगठित होते हैं। अिसी तरह मुहम्मदने सोचा कि मुझे अिन लोगोंको सुधारना हो, तो अिनकी मूर्तियां हटा देनी चाहियें। पर अन्तमें तो अुसने दूसरी मूर्ति निर्माण कर दी। मैं कुछ करूं तो अुसका भी यही हाल होगा।

राजाजी: अगर अुपमा या रूपक काममें लूं, तो कहूंगा कि मूर्तिको हमें जालिमका रूप न देना चाहिये।

बापू: परन्तु जैसा गीताके दसवें अध्यायमें कहा गया है, यदि आप सब चीजोंमें अीश्वरका रूप देखें, तो कोअी मुश्किल नहीं पैदा होती।

राजाजी: पर अुसके आसपास अैसी बालिश लीला या खेल किस लिअे?

अिसमें बालिश क्या है? जो कृष्ण और राधाको अीश्वर और अुनकी पत्नी मानते हों, अुनका यह मानना कि कृष्ण सोलह हजार गोपियोंके साथ

रास खेलते हैं, क्या वालिश है? तुलसीदास तो सब कुछ रामका ही मानते थे और वे हरअेक चीज पर अपना अर्थ घटाते थे। मगर तुलसीदासकी बात क्यों करें? किसी साधारण हिन्दूसे पूछें, तो वह फौरन कहेगा कि ये तो सब रूपक हैं।

राजाजी: अैसा नहीं। रामानुजाचार्यका अुदाहरण लीजिये। वे तो यह आग्रह रखते थे कि वास्तविक मूर्ति ही अीश्वर है। वे अुसे रूपक नहीं बल्कि सत्य ही मानते थे।

बापू: रामानुज अैसा नहीं कह सकते थे। मैं अितना माननेको तैयार हूं कि लोग अीश्वरके विषयमें जो कल्पनाअें करते हैं, अुसका यह परिणाम है।

राजाजी: अिस प्रतीक-पूजाने अच्छा करनेके बजाय बुरा ज्यादा किया है। हमारे मंदिरोंको लीजिये। भगवान सोयें, भगवान राजभोग करें, भगवानको प्यास लगे और भगवानके बच्चे हों। अैसी प्रतीक-पूजासे नुकसान ही होता है।

बापू: अिसे साबित कर दीजिये। मेरे लिअे तो यह सिद्ध वस्तु है कि असंख्य सीधे-सादे लोगोंके जीवन अच्छे होते हैं, यह मूर्ति-पूजा पर अुनकी श्रद्धाका परिणाम है।

काका: मगर कोअी हद भी तो हो? यह तो देवको छींक आअी, देवको (भक्तकी चूकसे) नाराजी हुअी! यह सब क्या है?

राजाजी: यह धर्म मेरे लिअे नहीं।

बापू: जरूर है।

राजाजी: तब मैं तो कह देता हूं कि मंदिरमें जाकर वहां अीश्वरको देखना मेरे लिअे असंभव है।

बापू: तब आपको मंदिरमें नहीं जाना चाहिये। तामिलनाड़के अेक शास्त्रीने बहुत गम्भीरतापूर्वक प्रतिपादन किया था कि मंदिर-प्रवेशका अधिकार स्त्रियों और शूद्रोंको ही रह गया है। ब्राह्मण तो ज्यादातर कर्म-चाण्डाल हो गये हैं। अुनके लिअे प्रायश्चित्त भी नहीं। जो जन्म-चांडाल हैं, वे प्रायश्चित्त करके शुद्ध हो सकते हैं। अलबत्ता, अुन्हें भी शुद्ध होनेके लिअे कअी जन्म लेने पड़ेंगे।

राजाजी: मस्जिदमें, जहां मूर्ति नहीं होती, जाकर यदि मुसलमान प्रार्थना कर सकता है, तो हिन्दूके लिअे अैसे मंदिर क्यों चाहियें, जहां मूर्तियों पर बहुतसे झूठे-सच्चे गहनोंका ठाट बनाया हुआ हो?

बापू: अेक बार अस्पृश्यताको जाने दीजिये, फिर हम मंदिरोंके सुधारका सवाल हाथमें लेंगे। अगर अस्पृश्यता न होती, तो आजके पाखंडी पंडोंको तो हमने मंदिरोंमें से कभीका निकाल दिया होता।

राजाजी: आप तो जबरदस्तीका बिलकुल निषेध करते हैं?

बापू: जरूर। पर मैं कानूनका निषेध नहीं करता। कानूनके अनुसार काम लेनेमें कोअी जबरदस्ती नहीं। अगर गोविन्दराघव आयर यह बात समझ लें, तो अुन्हें जरूर महसूस हो जायगा कि यह आदमी हिन्दू समाजको अंतरविग्रहसे यानी भयंकर खूनखराबीसे बचा रहा है। महाभारतमें क्या हुआ था, अिसका विचार कीजिये। भीम कीचकका खून पीने बैठा। भयंकर हत्याके दृश्य भी अुसमें आते हैं। गर्भवती स्त्रियोंकी हत्याअें हुअी हैं। अुन पर अत्याचार भी हुअे हैं। जैसा कानपुर और कलकत्तेमें हुआ, अुस तरह स्त्रियोंके स्तन काट डाले गये हैं। अछूत अितने सब अत्याचार कहां तक सहन करते रहेंगे? जब अुनके क्रोधकी आग जलेगी, तब मैंने अभी वर्णन किये अैसे अत्याचार करनेसे अुन्हें कौन रोक सकेगा?

राजाजी: हरिजनोंके लिअे मंदिर बन्द रखे जाते हैं, अुसका क्या यह परिणाम आयेगा?

बापू: सीधी तरह न आयेगा। परन्तु निषेधकी तहमें जो मानस छिपा हुआ है, अुसका यह परिणाम होगा। हरिजनोंके हकोंके लिअे मरनेवाले आदमी आज हमारे पास हों, तो हम अिन परिणामोंको रोक सकते हैं। आप अिसे गांधीकी भविष्यवाणी मान लीजिये। अिसीलिअे मैं आज सनातनी हिन्दुओंसे कहता हूं कि हरिजनोंके लिअे और सब कुछ तुम करो और मन्दिर-प्रवेशका काम मुझ पर छोड़ दो।

राजाजी: पर वे कहते हैं कि आप मन्दिर-प्रवेशका काम छोड़ दें, तो दूसरा सब हम कर लेंगे।

बापू: ओहो! अपना धर्म मैं क्यों छोड़ दूं? मैं कोअी अुन्हें अपना धर्म छोड़नेके लिअे नहीं कहता। परंतु आज कैसी दशा है, अिसका अुन्हें खयाल नहीं। मेरे नाम रामनारायण चौधरीका अेक पत्र आया है, जिसमें पश्चिमी राजपूतानेके हरिजनोंकी खराब हालतका वर्णन है। अेक भी कुअेंसे वे पानी नहीं भर सकते। जानवरोंके हौजमें से अुन्हें गंदा पानी लेना पड़ता है। हौजका अैसा गन्दा पानी वे कहां तक काममें लेते रहेंगे?

राजाजी: अिसका जवाब तो शिवस्वामी आयरने दिया था, वैसा ही कुछ हो सकता है। अुन्होंने कहा था कि मैं खादीके लिअे भी किस लिअे रुपया दूं? कारण यह रुपया देनेसे भी आपका बल बढ़ता है। पर हम दूसरी

बातोंमें चले गये। मैं तो हमारे धर्मको सादा रूप देनेके प्रश्नकी बात कर रहा था। हमारे धर्म पर लादी गअी अिन वालिश चीजोंको किस लिअे रखना चाहिये?

बापू: दूसरे धर्मोंमें जो मूर्ति-पूजा है, क्या वह बालिश नहीं?

राजाजी: यह तो अैसी बात है, जैसे शाकाहार और मांसाहार दोनोंमें हिंसा निहित होने पर भी दोनोंके बीच जमीन आसमानका फर्क है।

१-४-'३३

कल ... बहन और ... आ पहुंचे। अुन्होंने जो बातें कीं, अुससे बापू बहुत घबराये। "यह सब सच हो तो आश्रमको जला ही डालना चाहिये न?" अिस तरह वे कअी बार बोले। आज भी खूब आकुल-व्याकुल थे। सवेरे कहने लगे: ये सब चीजें अेकके बाद अेक हो रही हैं; देखना है अिनका असर मेरे मन पर क्या होता है।

आज काकासाहब प्रो० त्रिवेदीकी बात करते हुअे कहते थे कि यह आदमी सचमुच स्काअुट है, साधु है। चार बजेसे अुठकर अपना काम पूरा करता है, मेहमानोंका आतिथ्य करता है और सख्त मेहनत करता है। अैसे आदमी आश्रम चलानेवाले हों, तो आश्रम सुन्दर ढंगसे चले। अुनके लिअे मेरा पूज्य भाव बढ़ता ही जा रहा है।

मैंने तो अुन्हें जेलमें आये तबसे अुनके बारेमें जो-जो बातें सुनी हैं, अुनके कारण अुन्हें पूज्य माना है और अेक आदर्श गृहस्थके रूपमें देखा है। सतयुगमें अिनसे बढ़कर गृहस्थ कैसे होंगे?

मिस पिटर्सन काश्मीर जाते हुअे रास्तेमें आ गअीं। अेण्ड्रूजकी बात की। अुन्हें बच्चोंके साथ खेलना-कूदना, अुनकी मिठाअी खाना और तेज चाय पीना अच्छा लगता है। आपने अेण्ड्रूजको अच्छी तरह नहीं मूंडा?

बापू: अुनसे सिगार छुड़वा दी, अिससे आगे मूंडनेका काम नहीं बढ़ा। प्रिटोरियामें मैंने अिस गंदी आदतकी आलोचना की और अुन्होंने तुरंत कह दिया: 'तो यह छोड़ी।'

२-४-'३३

आज कुछ पत्र बड़े महत्त्वके थे।

मुझे आज बापूने चेतावनी दी कि तुम बाहर जाओगे, तब बहुतसे लोग तुमसे किसी वक्तव्यकी आशा रखेंगे और तुम यह तो कह ही न सकोगे कि बापूके साथ कोअी बात ही नहीं हुअी और बापूने कोअी विचार प्रगट नहीं किये।

अिसलिअे अच्छी बात यह है कि तुम वक्तव्य तैयार कर लो, अुसे मुझे दिखा लो और बाहर जाकर अुसे प्रकाशित कर दो।

३–४–'३३

वहेराम् खंभाता आये थे। हरिजन-कार्यके लिअे ५०० रुपये भेंट दे गये। अिनकी अपार श्रद्धा देखकर आश्चर्य होता है। कहते थे कि मेरे मनकी शक्ति क्षीण हो गअी है, याद नहीं रहता और बीमार आता है तब पुस्तकें देखनी पड़ती हैं। अिस पर बापूने कहा: अब जब तक फिरसे शक्ति न आ जाय, तब तक प्रेक्टिस करना बिलकुल छोड़ दीजिये। आपकी तरह कोअी डॉक्टर करे और अेक बूंद संखियाके बजाय तीस बूंद दे दे तो!

रेहाना आअी थी। वह . . . की लड़की. . . की बात कहती थी कि अुसे कृष्णकी मूर्ति दिखाअी देती है। वह अुसके चरणोंमें बापूको बैठे हुअे और बापूके सिर पर कृष्णको हाथ रखे हुअे देखती है! बापूसे अलग होते समय रेहाना गद्गद हो गअी।

डॉ० रामनाथन और देसाअी दूरबीन दिखानेके लिअे आये। बापूकी अैसी महत्त्वाकांक्षाअें हैं कि दूरबीन आश्रमकी छत पर चढ़ाअी जाय, बच्चे देखें और नअी खोजबीनमें भी कुछ न कुछ भाग लें।

४–४–'३३ * * *

५–४–'३३

शास्त्री टाअिपिस्टकी कुछ भूलें बापूने बताअीं और अपनेको मदद देनेवाले दूसरे अुत्तम टाअिपिस्टकी बातें अुसे समझाअीं। टाअिपिस्ट लोगोंको अपनी कलामें पारंगत होनेके लिअे कितनी ही बातें जाननी चाहियें। अिस बारेमें दीनशा वाच्छाने बहुत बरस पहले अेक बढ़िया पुस्तक लिखी थी। सुबाराव नामक अेक टाअिपिस्ट था, वैसा मैंने अभी तक दूसरा नहीं देखा। दक्षिण अफ्रीकामें अेक साअिमन नामका अंग्रेज मेरे पास आया था, वैसा भी कोअी नहीं देखा। अुस आदमीने अेक पैसा वेतन नहीं लिया। वह सर जॉर्ज फरार नामक साअुथ अफ्रीकाके अेक लखपतिका खानगी टाअिपिस्ट था। मगर अुसे यह काम पसंद न आया। अिसलिअे मेरे पास आया था और मुझसे कहता था कि आपका काम सच्चा है और दलितोंके लिअे लड़नेवालोंकी मदद करनेमें हमेशा मेरा विश्वास रहा है। अिसीलिअे मैं मुफ्त मदद करता हूं। जब मुझे बुलवानेकी जरूरत पड़े, तब बुलवा लीजिये। मैं दूसरा कोअी भी काम छोड़कर आ जाअूंगा।

ठक्कर बापासे लम्बी मुलाकात हुअी।

अुन्होंने . . . की बात पहले चलाअी। मथुरादास सेठका यह बड़ा आरोप था कि अुसने धमकी देकर सवा सौ वेतन लिया।

६-४-'३३. बापू बोले: अुसका अिससे कममें गुजर न हो तो क्या किया जाय? यह समझा जा सकता है कि आपका दफ्तर अितना वेतन नहीं दे सकता। मगर वह आदमी क्या करे? आप चाहें तो अुसका बजट देख लीजिये और बताअिये कि अुसे अिसमें से कितना कम कर देना चाहिये।

व्यवस्था-खर्चके बारेमें बातें हुअीं। यह कैसे दस फी सदी है? और दस फी सदीसे कैसे चल सकता है? प्रांतोंके और केन्द्रीय बोर्डके आंकड़े लाये थे सो बताये। बापूने समझाया कि हमारा काम ठोस हो, तो दस फी सदीसे भी कम खर्च आये। आप छः लाख अिकट्ठे कीजिये और फिर आज जितना होता है अुतना खर्च कीजिये। आप यह कहें कि आज हमें रुपया नहीं मिलता, तो यह स्वीकार करना चाहिये कि बहुमत हमारे पक्षमें नहीं है। मैं यह कहूं कि सनातनियोंने थैलियोंके मुंह खोल दिये हैं, तो गलत नहीं कहता। वे हिसाब प्रकाशित नहीं करते, मगर अिसमें शक नहीं कि पानीकी तरह रुपये बहा रहे हैं।

ठक्कर बापाने बताया कि . . . का जो प्रतिनिधि-मंडल वाअिसरॉयके पास गया था, अुसका खर्च ५०० रुपये तक हमें देना पड़ा। अिससे बापूको बड़ा आघात पहुंचा। हम अितना खर्च बरदाश्त नहीं कर सकते और अैसा करेंगे तो किसी दिन हमें शर्मिन्दा होना पड़ेगा। यह हमारे लिअे पहला और आखिरी ही अुदाहरण होना चाहिये। जहां हमारे खुद प्रायश्चित्त करनेकी बात है, वहां हम अिन लोगोंको अैसा प्रोत्साहन कैसे दे सकते हैं? अिन लोगोंके प्रतिनिधि-मंडलकी शोभा तो तभी है, जब ये लोग भिखारीके रूपमें जायं। मैं आपसे कहता हूं कि यह रिवाज मत डालिये। नहीं तो अिसी तरह कल दूसरोंको देना पड़ेगा।

गुरुवायुरकी मतगणनाके लिअे २५०० रुपया खर्च हुआ। यह ज्यादा है, मगर मैं अिसे ज्यादा नहीं मानता। यह जरूरी था। मगर खर्चका ढंग मेरा नहीं रखोगे, तो काम चलाना मुश्किल हो जायगा।

प्रान्तोंका यह वहम निकाल देना चाहिये कि वे कुछ भी चंदा नहीं कर सकते। मद्रासमें यह वहम था, मगर गलत साबित हो गया। अुत्कल

जैसे प्रान्तमें लोग अेक अेक पाओी दे सकें, तो अेक अेक पाओी भी अिकट्ठी करनी चाहिये।

ठक्कर बापा: सरकारी सहायता न लेनेकी आपकी बात कुंजरू नहीं समझ सकते। अुन्होंने बहुतसी दलीलें दी हैं। वे कहते हैं कि गांधीजीने समझौता करके सरकारके साथ सहयोग किया। मन्दिर-प्रवेशके काममें मदद चाही। कर्मचारियोंकी मदद लेते हैं, तो रुपयेकी मदद क्यों न ली जाय?

अछूतोंकी शिक्षाके लिअे ज्यादा रुपया प्राप्त करनेको धारासभाअियोंसे कहते हैं, तो सरकारको हमारी मारफत रुपया खर्च करनेको क्यों न कहें?

बापू: मेरी दलील वे समझे ही नहीं और अुन्होंने यही मान लिया है कि मेरा विरोध असहयोगीकी हैसियतसे है। मैंने असहयोगीके रूपमें बात ही नहीं की। मैं तो अुनकी बताओी हुओी सब बातोंमें सहयोग करते हुअे भी कहता हूं कि हम ग्रांट नहीं मांग सकते। सरकार जब तक सब वर्गोंके लिअे कुछ रुपया मजूर करनेका निश्चय न करे, तब तक हम यह वर्गीय ग्रांट नहीं मांग सकते। आज हम मांगें, तो कल मुसलमान मांगेंगे। हमारे पास रुपया न हो तो भले ही बिड़ला भिखारी बन जाय, मगर हम यह ग्रांट नहीं मांग सकते। रुपया हिन्दुओंको ही निकाल कर देना चाहिये। सरकारने किसी खास वर्गकी स्वेच्छासे सेवा करनेवाली संस्थाके लिअे कोओी ग्रांट सुरक्षित रखी हो तो दूसरी बात है। मगर फिर भी मैं तो कहूंगा कि वह ग्रांट अछूतोंकी संस्थायें भले ही ले जायं, हमारे जैसी प्रायश्चित्त करनेवाली संस्था यह ग्रांट नहीं मांग सकती।

जमनालालजी आज कैदीकी पोशाकमें आये। मनुष्य भावनाकी लहरों पर चढ़ कर क्या क्या करता है, यह अुसकी मिसाल है। अुन्होंने बताया कि मैं छूट गया हूं, पर चूंकि यह मानता हूं कि बड़े कैदखानेमें हूं, अिसलिअे यह पोशाक पहनी है।

७-४-'३३

बापू बोले: वह भावना यह पोशाक पहनकर नहीं बताओी जा सकती। अैसे तो बहुत लोग यह पोशाक पहनकर बच जाना चाहेंगे। अिस तरह लोगोंका ध्यान खींचनेकी हमारी अिच्छा न होनी चाहिये और साधारण पोशाक पर कायम रहना ही अच्छा है। हां, तुम अिस पोशाकको आदर्श मानते हो और अिसे हमेशाके लिअे ग्रहण कर लिया हो तो दूसरी बात है। वैसे सच बात तो यह है कि अिस पोशाकमें अंग्रेजोंकी नकल है। हमारी हिन्दुओंकी सभ्य पोशाक तो धोती-कुर्ता है। मैं यह भी नहीं मानता कि अिस जांघियेमें खर्च बहुत बच जाता है।

मैंने कहा: आपने जब कच्छ पहना था, वह जिन्दगीमें अेक संकटका प्रसंग था। जमनालालजीने अैसा ही संकटका अवसर समझकर यह पोशाक ग्रहण की हो तो दूसरी बात है। पर अैसा न हो तो यह नाटक अुचित नहीं लगता।

बापूने फौरन धोती-कुर्ता हमेशाकी तरह पहननेकी सलाह दी और जमनालालजीने अुसे मान लिया। जानकीदेवी भी खुश हो गओीं।

बापूने कहा, मैं यह मानता हूं कि कलकत्ता कांग्रेसके सिलसिलेमें सब मनुष्योंको छोड़ देना पड़ा, यह हमारी बड़ी जीत हुओी है।

रातको सोते समय बकरीदकी खबर पूछी। झगड़े हुअे क्या? यह कहने पर कि कलकत्तेमें हुआ है, अुसकी सारी तफसील मांगी।

८-४-'३२

वल्लभभाओीने कहा कि मुसलमान चुप बैठे हैं, कुछ बोलते नहीं और बराबर सहयोग दे रहे हैं और देते रहेंगे। अिस पर बापू बोले: जब तक मुसलमान देशके हितमें अपना हित नहीं देखेंगे, तब तक हिन्दू-मुस्लिम अेकता नहीं होगी और मालवीयजीकी तमाम कोशिशें बेकार जायंगी। आज मुसलमानोंमें यह भावना नहीं, आज अुन्हें स्वार्थ ही साधना है।

९-४-'३२

डाकमें अेक औसाओी पर्चा आया। हम अुसे रद्दीमें डाल रहे थे कि बापूने अुठा लिया और अुसमें हिन्दूधर्म पर जो चुभनेवाली टीकायें की गओी थीं अुन्हें पढ़ने लगे। पर अुसके बाद वे अुसे शुरूसे आखिर तक देखने बैठ गये और मुझसे कहने लगे कि देखो, ये भाग पढ़ने लायक हैं या नहीं? दो-तीन हिस्सों पर निशान लगाकर मुझसे कहा: ये मुझे बाअिबलके पुराने करारमें से निकाल दो। मैंने थोड़ी-सी मेहनत करके निकाले और पढ़े, तो मालूम हुआ कि बाअिबलके ये अद्भुत अंश थे। अेलियाजार नामके यहूदीने मौतकी सजा मोल लेकर भी सूअरका मांस नहीं खाया और बेहद बहादुरी दिखाकर सत्याग्रहका अुदाहरण पेश किया। अुसकी शहादतकी कथा मैक्केबीजकी दूसरी पुस्तक (यह पुराने करारके 'अेपॉक्रिफल' यानी शंकास्पद या क्षेपक ग्रंथोंमें से अेक है) से मिली। और जोनाके नीनेवेह शहरका नाश होनेकी बात करने पर सारे शहरने, असीरियाके राजासे लेकर प्रजा तक तमाम लोगोंने, किस तरह अुपवास और प्रार्थना करके तथा सादगी वगैराको अपनाकर तपश्चर्यासे शहरका नाश रोका, अिसकी बात भी रोमांचकारी है।

ये दो वातें ढूंढ़ निकालनेके वाद वापू बोले: तुम्हें पता है न कि 'हिन्द स्वराज' में हक्सलीका जो अुद्धरण है, वह मैंने अेक विज्ञापनसे लिया है? अिस प्रकार विज्ञापनमें भी ढूंढ़नेसे कुछ न कुछ अच्छा मिल ही जाता है।

मैंक्रेके साथ वातें: विलायतमें गन्दी चालोंको नष्ट करनेकी वात चल रही है। अुनमें रहनेवाले वहांके अछूत ही कहलायेंगे न?

१०-४-'३३ अुनके साथ यहांके सवालका कितना साम्य है, अैसा अुसने कहा। अिसके जवावमें:

दुनियाके दूसरे हिस्सोंके अस्पृश्यों और यहांके अस्पृश्योंके वीच कोअी तुलना नहीं हो सकती। अिन समस्याओंको हल करनेके तरीके भी दूसरे हैं। अिंग्लैंडमें गन्दी चालोंमें रहनेवालोंका सवाल गरीवीका सवाल है। अमेरिका और दक्षिण अफ्रीकाका सवाल ज्यादा मुश्किल है, क्योंकि वहां रंगद्वेष है। यहांका प्रश्न अुससे भी ज्यादा मुश्किल है, क्योंकि यहां घर किये वैठी हुअी धार्मिक मान्यताओंका नाश करना है। सामाजिक अध:पतनके साथ अिस दुष्ट धार्मिक रुकावटको मिटाना है। अिसलिअे हिन्दुस्तानका प्रश्न तिहेरा मुश्किल है: (१) हरिजनोंको अध:पतनसे वचाना, (२) अुनकी गरीवी दूर करना, (३) सवर्णोंमें से और साथ ही हरिजनोंमें से भी अस्पृश्यताका वहम निर्मूल करना। अिस प्रकार यह अेक अनन्य वस्तु है। अगर हिन्दुस्तानको गृहयुद्धमें फंसाये विना यह सवाल हल किया जा सके, तो वह सारी मानवताके सवालको हल करनेमें वड़ी सहायता मानी जायगी।

सवाल: दूसरे देशोंमें अस्पृश्यताका जो प्रश्न है, अुस पर यहांके हलका कैसे असर होगा?

वापू: असर होगा। क्योंकि मैं मानता हूं कि हिन्दू समाजमें होनेवाली अिस चमत्कारी क्रान्तिका असर दुनियाके दूसरे भागों पर पड़े विना रह ही नहीं सकता। अिसीलिअे मैं समाजमें आत्मशुद्धिका जवरदस्त आन्दोलन करनेको कहता हूं। कोअी कामचलाअू अुपाय करनेसे मुझे संतोष नहीं होगा। मैं चाहता हूं कि हिन्दुओंके आचार और विचारमें जवरदस्त और सच्ची क्रान्ति हो।

कल वाअिवलमें से जो अुद्धरण निकाले थे, अुनका अुपयोग अेण्ड्रूजके अुपवास सम्वंधी पत्रका जवाव देनेमें किया। वह लेख लिखनेके वाद वापू कहने लगे: देखो तो, मानो यह पर्चा भगवानने ही मुझे भेज दिया हो?

अितना सुंदर अुद्धरण है कि अीसाअियों पर अिसका असर हुअे बिना नहीं रहेगा।

नीला नागिनीके नाम आज बड़ा असरकारक पत्र लिखा:

"मांको लड़कीके लिअे जैसी चिन्ता हुआ करती है, वैसी चिन्ता मुझे तुम्हारे लिअे होने लगी है। क्या तुम बीमार पड़ गअी होगी? अपने निश्चयसे डिग गअी होगी? अिस तरहके विचार आते रहते हैं।"

जो अिस मातृप्रेमके लायक है, वह धन्य है।

लल्लूभाअी आ पहुंचे। जापान जानेवाले थे। कहा कि १२०० रुपये किरायेका बंगला जुहू पर लेनेके बजाय ५० पौण्ड खर्च करके जापानकी यात्रा कर आनेका विचार किया है।

११-४-'३३

हॉर्निमेनने बापूका कथित झूठा पत्र छाप दिया। अितना ही नहीं, जब यह कहा गया कि यह पत्र बनावटी है तब कहता है, होम मेम्बर अिनकार करे तो भी हम कहेंगे कि यह पत्र प्रकाशित हो ही गया। बापू अिससे अितने ज्यादा चिढ़ गये कि अुन्होंने गोपालनसे कहा: अैसे पत्र छापना रोकनेके लिअे कोअी आर्डिनेंस नहीं है?

आज सुबह मेजरसे कहने लगे: अैसी जाली चीजें छापना गुनाह माना जाना चाहिये। यह झूठा दस्तावेज बनाना नहीं तो और क्या है? यह कोअी अुपजाअू दिमाग नहीं कहा जा सकता। यह तो बहुत बुरी चीज है।

मेजर आज बातें करते हुअे अनाजके भाव गिना रहे थे और कहते थे कि अेक कैदीकी खुराक पर आजकल दो रुपये मासिकसे कम खर्च आता है।

नीला नागिनीके बारेमें बापूकी चिन्ताको वे अच्छी तरह समझ सके और कहने लगे: यह स्त्री बड़ी तपश्चर्या कर रही है। पर अुसे आप अितनी ज्यादा क्यों तपा रहे हैं? आश्रममें रख दीजिये न?

बापू बोले: अिस तपाअीसे निकली कि आश्रममें। सीधी आश्रममें भेज दूं, तो अुसे अपने जीवनमें किये गये परिवर्तनका पता नहीं लगेगा। और आज जो चिन्ता रखता हूं, अुसका कारण यह है कि अुसे मौजूदा हालतमें डालनेके लिअे मैं जिम्मेदार हूं।

मैक्के कल यहां आया था। अुसकी रिपोर्ट आज 'टाअिम्स'में आ गअी। वह अुसे शोभा देनेवाली है। अुसमें अुसने अनायास बापूकी जो तारीफ की है, वह 'टाअिम्स' वालेको अिच्छा-अनिच्छासे लेनी ही पड़ी है।

आज श्रीमती सरोजिनी नायडू छूट गयीं। छूटकर हरिजनवाड़ेमें (हमारे यार्डमें) आओी थीं। गोपालन पीछे पड़ा हुआ था और श्वेतपत्रके बारेमें पूछ रहा था कि बापू बोले: तुम लिख सकते हो कि जेलके कारण रानीजीके सिरके बाल कुछ सफेद हो गये हैं।

१२-४-'३३

अिस पर सरोजिनी देवीने कहा: अिसके लिअे तो आपके अुपवास जिम्मेदार हैं।

बापू आये अुससे दसेक मिनट पहले अुन्हें यहां लाया गया था। अपने ढंगके अनुसार अुन्होंने पहले ही बात चलाओी: बापू तन्दुरुस्त नहीं दीखते। अुम्र अब ढलने लगी है। अुनकी चालमें पहलेकी-सी फुर्ती नहीं दिखाओी देती।

मैंने कहा: नहीं, अुनकी तंदुरुस्ती बिलकुल अच्छी है और चिन्ताका कोओी कारण नहीं है।

वे अपनी बात पर कायम रहीं। मैं भी अपनी बात पर डटा रहा। तब कहने लगीं: तब अुस दिन कुछ खास तौर पर थके हुअे हों तो कौन जाने?

मैंने कहा: यह ठीक है। अैसा संभव है कि वे अुस दिन थके हुअे हों। शायद कोओी न कोओी बात हुओी हो।

फिर वल्लभभाओीकी बात चली। अुनके बारेमें मैंने कहा: अुन्हें नाककी तकलीफ बहुत है।

तब बोलीं: नाक नहीं, जेलका असर हुअे बिना रहता ही नहीं। बस, जेलका ही असर होना चाहिये। अब शायद रहना जरूरी न हो।

हरिजनकार्यके बारेमें बातें करते हुअे बोलीं: हैदराबादमें ठीक काम हो रहा है।

बापूने पूछा: यह बाजीकृष्णराव कौन है?

वे बोलीं: भला आदमी है। अुनका खयाल है कि जो विधवा मिल जाय अुसकी मदद की जाय और शादी कर दी जाय।

अिनका बात करनेका यही तरीका है।

आज सवेरे बापूके साथ शंकराचार्यके बारेमें बात चली। मैंने कहा: अितने ज्ञानी — व्यवहारज्ञानी — और तीव्र बुद्धिवाले शंकराचार्य अितना नहीं देख सके होंगे कि ये मठ बनाकर अुन्होंने संन्यासियोंके मार्गमें बड़ी रुकावटें डाल दीं, बड़े प्रलोभन रख दिये?

१३-४-'३३

बापू बोले: सच बात है। वे चूक गये। अुन्हें तो अुस समय प्रचलित बौद्ध धर्मको अुखाड़कर दूसरा नया बौद्ध धर्म स्थापित करना था, जिसलिअे अुन्होंने संन्यासियोंका संघ कायम रखा। बुद्धने ज्ञानका सफाया कर दिया था। जिन्होंने अुसे शुरू कर दिया। हिन्दू धर्मके मूल तत्त्वों और ज्ञानको लेकर नींव तो ठीक डाली, किन्तु अूपर जिमारत अैसी रची कि धर्म और ढोंग दोनों मिल गये। पहले ब्राह्मणोंकी तपश्चर्याके कारण ही जो कुछ रह गया सो रह गया। आजकलके सनातनी भी कोअी सनातनी या ब्राह्मण हैं? ये तो सरकारके ही आदमी हैं और सरकार जो चाहती है वह जिनसे कराती है। आज लोग समझते नहीं; अगर समझ जायं तो अुन्हें पता लग जाय कि यह सरकार कितनी जर्जर हो गअी है और तुरंत जो लेना हो सो ले लें।

मैंने कहा: '२१ में जो कार्यक्रम तैयार किया गया था, अुसकी जोड़का कार्यक्रम न तैयार हुआ, न होगा।

बापू बोले: लोगोंमें आत्मविश्वास ही नहीं है, जिसलिअे क्या किया जाय?

आज काफी पत्र लिखे। कल नीलाको दो कालमका लेख बन जाय, अितना बड़ा पत्र लिखवाया था। किसकी संगत की जाय, किसकी न की जाय, क्या खाये-पीये, कपड़े किस तरह धोये, बाल किस ढंगसे धोये, अरीठे किस तरह अिस्तेमाल करे, बाल मुंडवा दे, वगैरा सूचनाओंसे अुसे भर दिया। बापू कैसे प्रेम अुंड़ेल सकते हैं, जिसका दूसरा नमूना दवे बहनोंके नाम लिखे पत्रमें मिला। वह पत्र विनोदका टुकड़ा और प्रेमका अुत्तम नमूना है। अुसमें अिन लड़कियोंके पिताके साथके अपने सम्बन्धको याद किया और कहा:

"केवलरामभाअी और मेरे बड़े भाअी अेकसी अुम्रके थे। दोनों अुदार और खर्चीले थे, दोनोंको भोग प्रिय थे। बादमें दोनोंको वैराग्य हो गया था। दोनोंने स्वतंत्र रूपसे मुझे लिखा कि वे दक्षिण अफ्रीका आकर बाकीका समय बिताना चाहते हैं और अपने बच्चोंकी बांह मुझे पकड़ाना चाहते हैं। मैंने दोनोंकी अिच्छाका स्वागत किया और अुनके आनेकी तैयारी कर ली। मगर यह भाग्यमें था नहीं। दोनों मुझे छोड़कर चल दिये। बड़े भाअीके बच्चे तो मेरे हाथ आये ही नहीं। मैंने कुछ कोशिश भी की। तुम बहनें मुझे बिना प्रयत्नके मिल गअीं। अिसे ऋणानुबन्ध कहें या पूर्व कर्मोका विपाक! आ गअी हो तो मुझे न छोड़ना। मेरी विरासत जो चाहे वह लूट सकता है। तुमसे लूटी जाय अुतनी लूट लेना और शोभायमान होना।"

अिसी प्रकार मित्रताको अुम्रभर कायम रखनेवाली राजकोटकी सुशीलाबहनको लिखते हुअे कहते हैं:

"तुम्हारी मित्रता अखंडित रहे। अुसके रहनेका मार्ग मैंने बता दिया है। यह स्वयंसिद्ध है कि व्यक्तिगत मित्रता अनंतकाल तक हरगिज नहीं रह सकती। **अिसलिअे अुस मित्रताको ओश्वरके साथकी मित्रतामें होम दिया जाय।** अिससे अुसका नाश नहीं होता, परंतु वह विस्तृत हो जाती है, विशुद्ध हो जाती है। निजी मित्रताका आनंद क्षणिक और तुच्छ है। मैं यह समझता हूं कि तुम्हारी मित्रता केवल सेवाके लिअे है। अैसी मित्रतामें निजीपन क्या हो सकता है? यह विचार गांठ बांधकर रख लेना। अनुभवसे अुसकी सचाअी तुम देख लोगी।"

फिर भी थोड़ी देरके लिअे खयाल होता है कि क्या बापूकी डॉ० महेताके साथकी, रेवाशंकरभाअीके साथकी, अेण्ड्रूज और केलनवेकके साथकी मित्रता व्यक्तिगत नहीं थी या नहीं है? मित्रता ओश्वरके ही साथ हो, यह भाव सारा बाअिबलसे लिया हुआ दीखता है। सेण्ट जॉन ऑफ दि क्रॉसका यह वचन देखिये: "किसी व्यक्तिके प्रति हमारा प्रेम शुद्ध आध्यात्मिक हो और ओश्वरके प्रति रही आस्थासे पैदा हुआ हो, तो अुसके साथ ओश्वर-प्रेम भी वृद्धि पाता है। और दुनियावी प्रेमका जैसे-जैसे हमें ज्यादा स्मरण होता है, वैसे-वैसे हमें ओश्वरका भी ज्यादा स्मरण होता है और अुसे पानेकी अिच्छा होती है। अेक प्रेम दूसरे प्रेमके साथ ही बढ़ता जाता है।"

अेरिस्टार्शीको प्रार्थनाका रहस्य समझाया। वह हमेशा यह लिखती रहती है, "मेरे लिअे प्रार्थना कीजिये, मेरी मांके लिअे प्रार्थना कीजिये"; अिसलिअे अुसे विस्तारसे यह समझाना ठीक लगा कि वे प्रार्थनाका क्या अर्थ करते हैं।

कितनी ही स्त्रियां बेचारी बापूसे किसी तावीज या जंतर-मंतरकी आशा रखती होंगी। पंजाबसे अेक स्त्रीका करुणाजनक पत्र बढ़िया अक्षरोंमें लिखा हुआ आया: "मैं आपको परमेश्वर मानती हूं। मेरे पतिमें पवित्रताकी भावना भरिये। मैं हमेशा अुनकी सेवा करूं और वे सदा मुझमें ही अनुरक्त रहें। अुन्हें भी अेक आशीर्वादका पत्र लिखिये और मुझे भी लिखिये।

अुसे बापूने हिन्दीमें लिखा: "तुम्हारा खत पूरा पढ़ गया। तुम्हारे भाव शुद्ध हैं। लेकिन जो शक्तिकी आशा मेरे पास तुमने रखी है, मेरेमें है ही नहीं। मैं भी दूसरोंके जैसा पामर प्राणी हूं और ओश्वरके दर्शनके लिअे अुत्सुक हूं, प्रयत्नशील हूं। मैं अवश्य चाहता हूं कि तुमको और तुम्हारे पतिको ओश्वर दीर्घायु रखे, दोनोंमें पवित्र सेवाभाव पैदा करे, और दोनोंमें परस्पर शुद्ध प्रेमकी वृद्धि करे। यह खत तुम्हारे दोनोंके लिअे समझो। अिसी कारण पतिको अलग खत नहीं लिखता।"

'माला' वाले भोपटकर बापूके प्रति वैर-भक्तिमें विश्वास करते हैं। सभाओंमें वे बापू पर हर प्रकारके आक्षेप करते हैं।

१८-८-'३३ "गांधी 'हरिजन' कहलाता है, मगर सनातनियोंका अरिजन है, अपने लिअे कितना ही रुपया खर्च करता है, मस्कतकी खजूर खाता है, महंगे संतरे-नारंगी खाता है और कोयम्बतूरका शहद खाता है" अित्यादि। हरिभाअू फाटक अिसका जवाब नहीं दे सकते, अिसलिअे अिन सब आक्षेपोंका मसौदा तैयार करके बापूके पास भेज दिया और अुसका जवाब मांगा। बापूने अुन्हें आज लम्बा पत्र लिखवाया।

मीराबहनके नाम आज बापूने लम्बा पत्र लिखा। अुसके पत्रमें ब्रह्मचर्य और विवाहित जीवन सम्बन्धी अपने विचारोंके और 'संसृतिगर्त' के प्रति अपनी घृणाके बारेमें पछतावा है। स्त्रीका पुरुषके बिना काम नहीं चल सकता, पर अिस सम्बन्धका विषयके साथ कोअी वास्ता न होना चाहिये, वह विषयरहित ही होना चाहिये और हो सकता है, यह बात मीराबहनने अपने पत्रमें लिखी है। मीराबहनके नाम आजके पत्रमें बापूने अिसी बात पर अपनी आलोचना की है।

मीराबहनको अेरिस्टार्शीके पवित्र पन्ने भी सब भेज दिये। अिन पन्नोंमें अिस स्त्रीकी भक्ति छलकती है और अिसका प्रमाण मिलता है कि यह स्त्री कैसे सारा दिन अीश्वरकी भक्तिमें बिताती होगी। कुछ पत्रोंमें अुत्तम अुद्धरण होते हैं। आज भेजे हुअे कार्डोंमें से हमेशा याद रखने लायक दो ये हैं:

"Oh Holiest Truth! How have I lied to Thee
I vowed this day Thy festival should be;
But I am dim ere night.
Surely I made my prayer and I did deem
That I could keep in me Thy morning beam
Immaculate and bright.
But my foot slipped, and as I lay, became
My gloomy foe and robbed me of heaven's flame.
Help Thou my darkness, Lord, tell I am light."

(Newman)

"हे पावक सत्य, मैंने तेरा कितना द्रोह किया है। आज तेरा अुत्सव मनानेकी मैंने प्रतिज्ञा ली और शाम होते होते मैं मन्द हो गया। मैंने जब प्रार्थना की थी, तब सचमुच अैसा लगा था कि तेरे प्रभातकी किरण मैं अपनेमें निष्कलंक और प्रकाशित बनाये रखूंगा। किन्तु मेरा पैर फिसल

गया और मैं गिर पड़ा। मैं ही अपना निराशामय दुश्मन बन गया और स्वर्गकी ज्योतिसे मैंने ही अपनेको वंचित कर लिया। मेरे अंधकारको दूर कर। हे भगवान, कह दे कि मैं प्रकाश हूं।"

"He whom Jesus loved hath truly spoken
The holier worship which He deigns to bless
Restores the lost and binds the spirit broken,
And feeds the widow and the fatherless.
Oh brother man! Fold to thy heart thy brother,
Where pity dwells, the peace of God is there.
To worship rightly is to love each other,
Each smile a hymn, each kindly deed a prayer."

(Whittier)

"जिसे अीसा चाहते हैं, अुसीने सच्ची पवित्र पूजा की है। अुसकी पूजा पर अुसके आशीर्वाद अुतरते हैं। वह पतितोंका अुद्धार करता है और टूटे हुअे दिलोंको जोड़ता है। वह विधवाओं और अनाथोंको खिलाता है। हे मानवबंधु! तू अपने भाअीको छातीसे लगा। जहां दया निवास करती है, वहां प्रभुकी शान्ति है। अेक दूसरेको प्रेम करना ही सच्ची पूजा है। प्रत्येक मुस्कराहट भजन है और दयाका हर काम ही प्रार्थना है।"

और यह बापू पर कितना लागू होता है:

"Oh pure reformer! Not in vain
Your trust in human kind;
The good which bloodshed could not gain
Your peaceful zeal shall find.
The truths ye urge are borne abroad
By every wind and tide.
The voice of Nature and of God
Speaks out upon your side.
The weapons which your hands have found
Are those that Heaven hath wrought
Light, Truth and Love your better ground
The free broad field of thought."

"हे पवित्र सुधारक! मानवजाति पर तेरा विश्वास व्यर्थ नहीं। जो भला रक्तपातसे नहीं हो सकता, वह तेरे शान्तिमय अुत्साह और लगनसे

हो जायगा। जिस सत्यका तू आग्रह करता है, वह पवनकी हर लहर पर और ज्वारकी हर तरंग पर दूर-दूर फैल जायेगा। प्रकृति और परमेश्वरकी आवाज तेरे पक्षमें अुठेगी। तेरे हाथमें जो शस्त्र आये हैं, वे प्रभुके बनाये हुअे हैं। प्रकाश, सत्य और प्रेम तेरी अनुकूल भूमिका है, विचारका स्वतंत्र विशाल क्षेत्र है।"

यह कितना सच है! . . . बहनका आजका पत्र ले लीजिये। अुसके पतिने बच्चोंको देखनेके लिअे जो शर्तें लगाअी हैं वे भी दी हैं। ये शर्तें अुसे त्याज्य प्रतीत होती हैं। पतिके पास वापस नहीं जाना है। मगर बच्चोंको चाहती है। अुसने सोचा भी न होगा, अैसा पत्र बापूकी तरफसे अुसे मिलता है:

"मेरे खयालसे ल० की शर्तें तुम्हें बिना संकोच मान लेनी चाहियें। आखिर तो वह तुम्हारा पति है। अुसकी चोट पहुंची हुअी भावनाओंको शान्त करनेमें कोअी छोटापन नहीं है। अिससे तुम अपनी नजरमें और अीश्वरकी नजरमें भी अूंची अुठ जाओगी। और ल० का विरोध न करनेसे तुम अुसका प्रेम फिरसे प्राप्त कर सकोगी। मित्रोंके बीचके सम्बन्धमें अेक पक्षको दूसरे पक्षके विरुद्ध कोअी हक नहीं होते। पति-पत्नी मित्रोंसे भी ज्यादा हैं। आज तुम दोनोंके मार्ग अेक-दूसरेसे अलग हो गये हैं, अिसलिअे अिस सम्बन्धमें कोअी फर्क न पड़ना चाहिये। तुम शांति रखोगी, तो सब बातें ठीक हो जायंगी। बच्चोंका हित सर्वोपरि होना चाहिये; और तुम कोअी आग्रह न रखो, तो अिससे अुस हितकी रक्षा ज्यादा अच्छी तरह होगी। अैसा करके भी तुम्हें संतुष्ट रहना चाहिये। तुम अपने आनंदके लिअे नहीं, मगर अुनके भलेके लिअे अुनसे मिलना चाहती हो। कानून और अदालतकी बात तो अपने दिलसे निकाल ही दो। मेरी बात अच्छी तरह समझमें आ रही है न? अीश्वर तुम्हारा सहायक हो और तुम्हें रास्ता दिखावे।"

अहमदाबादके हरिजन आये। बच्चोंकी तरह टूटी-फूटी भाषा बोलते थे और लाड़ करते थे। अुनके लिअे बापूका 'बापू' नाम सम्पूर्ण है, रहस्यपूर्ण है। वे कहने लगे: "हमारा 'हरिजन' नाम तो बापू, दुनियाके चारों कोनोंमें मशहूर हो जायगा।"

कन्हैयालाल मुंशीको नर्मदाशंकर कविके बारेमें संदेश भेजते हुअे लिखा:

१५-४-'३३

"नर्मदाशंकरको जो गुजराती न जाने, वह गुजराती कैसे माना जाय? मुझे अुनका परिचय बचपनसे ही हो गया था। 'सहु चलो जीतवा जंग ब्यूगलो वागे' — बिगुल बज रहा है, सब लड़ाअी जीतने चलो — गीत गाते-गाते मन थकता ही

नहीं। अुस वक्तका शुरू किया हुआ राग दक्षिण अफ्रीकामें पक्का हुआ। गीताका पुजारी तो मैं बन ही चुका था। मगर नर्मदाशंकरके गीताके अनुवादकी प्रस्तावनाने मेरी गीतामाताकी भक्तिको दृढ़ बना दिया और नर्मदाशंकरके प्रति मेरा आदर बढ़ गया। मुझे अफसोस यही रह गया कि मेरी अनेक प्रवृत्तियोंने मुझे नर्मदाशंकर जैसे लेखक और कविसे भी, जितना मैं चाहता था अुतना, परिचय न करने दिया।

"अिससे ज्यादाकी आशा तो मुझसे नहीं रखते न? अितना भी सवेरे तीन बजे अुठकर लिख सका हूं। हरिजनोंके लिअे जीना मुश्किल है। अुनके लिअे मरनेकी योग्यता प्राप्त करना अिससे भी ज्यादा कठिन है। सत्य-नारायण हमें कायर बना देते हैं। अुनका चुलबुलापन कैसा है? निष्कलंक भेड़ें मांगते हैं, अच्छेसे अच्छे कद्दू मांगते हैं, निष्पाप मनुष्योंके सिर मांगते हैं। कहांसे लायें? अेक मैला-सा विचार मनमें आया कि नापास। तो भी अुन्हें छोड़ा नहीं जा सकता। मगर कवियोंका कवि वह अैसा औीर्ष्यालु है कि दूसरे कवियोंकी पूजा ही नहीं करने देता। यह दुःख कहां रोअूं?"

फिर कवीवाअी ट्रस्टके बारेमें लिखा। अन्तमें मैं और सरदार तुम्हारी पुस्तकें पढ़ रहे हैं, मैं केंचुअकी चालसे और सरदार होड़के बैलोंकी गतिसे। यह लिखकर कहते हैं: "यह स्वीकार कर लूं कि अिस सबमें हमारा स्वार्थ है। तुम दोनोंसे जी भरकर सेवा लेनी है। जिनसे अितनी बड़ी आशा रखें, अुन्हें पूरा जान भी तो लें न?"

मुंशीको लिखे गये अूपरके पत्रके अन्तिम अंशमें बापूकी जो वृत्ति दिखाअी देती है, अुसे मैं सोलह वर्षसे देखता आ रहा हूं। अुन्होंने मनुष्योंका संग्रह किया है, मनुष्योंके प्रति प्रेम दिखाया है, दया दिखाअी है, तो अुसकी तहमें हमेशा यही चीज रही है कि अिस आदमीसे कुछ न कुछ सेवा ली जा सकेगी। अिस वृत्तिके लिअे बापूने 'स्वार्थ' शब्द तो हंसीमें लिखा है। अुसमें 'स्वार्थ' भले ही कहीं न हो, तो भी वणिक वृत्ति तो लगती ही रहती है। क्या अितनी अुस प्रेम आदिकी कीमत कम नहीं होती होगी?

बापू अपने अेक 'डॉक्टरी अनुभव' की बात कर रहे थे। रुपया बचानेके लिअे अुन्होंने अपनी अेक मुवक्किल स्त्रीको अुसके लड़केकी रसौली कटवानेके लिअे गोडफ्रे डॉक्टरके यहां भेजा। गोडफ्रे जड़ था। अुसने नश्तर लगाया, पर कितना काटना चाहिये अिसका अुसे पता ही नहीं था। क्लोरो-फार्म देनेके लिअे बापूको पसंद किया। "अिस काममें कोअी बहुत ज्ञानकी जरूरत नहीं पड़ती, आप ही दे दीजिये।" वह तो काटता ही चला गया, काटता ही चला गया। नतीजा यह हुआ कि आठ घंटेमें वह आदमी चल बसा।

अिसी तरह अेक और केसमें वापूने क्लोरोफार्म दिया था। आम तौर पर चाकूसे नश्तर लगानेकी कोअी वात करता है, तो अुसे वापू वेहूदा मानते हैं। मगर खुदका क्लोरोफार्म देना क्यों नहीं वेहूदा माना? यह समझमें नहीं आता।

. . . आ गये। अुन्हें प्रेमसे नहला दिया। शाम तक रखा; लाड़-चावसे आग्रह करके फल खिलाये और छोटी-छोटी वातें पूछीं। यह साड़ी किसने दिलवाअी, अिसे कहां रंगवाया वगैरा जो वातें रामदास और नीमूको पूछते, वही वातें अुसी ढंगसे अिन दोनोंको पूछीं। यह जोड़ा मिला देने पर मानो वापूके आनंदका पार ही नहीं था।

१६-४-'३२

आश्रमका भार वापूके सिर पर कितना है, अिसका अंदाज आजके आश्रमको लिखे गये पत्रोंसे लग सकता है। प्रेमावहनके पत्रमें लिखा: "गजकी सूंड सिर्फ तिल भर वाहर रही थी। और अुसकी जो स्थिति थी, ठीक वही स्थिति मेरी हो गयी है। पर हरिके नामका स्मरण और रटन चल रहा है, अिसलिअे निर्भय हूं।"

नारणदासको दस पन्नेका पत्र लिखा। अिसमें अुनके प्रति अपना अटूट विश्वास प्रगट किया और आलोचनाओंसे जितना सीखा जा सके अुतना सीखनेका लिखा। अपनी कार्यपद्धतिका मंत्र अेक वाक्यमें वता दिया: "अपने मित्रों और समान विचार रखनेवालोंसे काम लिया जा सकता है, मगर ये लोग हमें मदद नहीं दे सकते। मदद तो आलोचना करनेवालोंकी आलोचनासे ही मिल सकती है।" अिस आशयका वाक्य था।

सवेरे घूमते हुअे . . . भाअी और . . . वहनके वीचके वैमनस्यके वारेमें वातें हो रही थीं। फिर यह वात निकली कि नारणदासके वारेमें किस किसको असंतोष है। छगनलाल और वापूमें वातें हो रही थीं। कुछ भाग मैंने सुना, फिर मुझे लगा कि अिसमें मैं कोअी मदद नहीं दे सकता। और यह भी लगा कि नारणदासको वदलनेकी वातमें मुझे दिलचस्पी नहीं हो सकती। अिसलिअे मैं घूमना वंद करके दूरवीन देखने लगा। पारिजात अभी आकाशमें था। पर वापूको अिससे वड़ा आघात पहुंचा और मुझसे कहने लगे: यह पारिजात देखनेका वक्त है क्या? पारिजात देखनेमें और जो वात हो रही है अुसमें कोअी मुकावला है? यहां जीवन-मरण जैसे महत्त्व-पूर्ण प्रश्नकी चर्चा हो रही है और तुम तारे देखने कैसे गये? यह वात सुनना क्या तुम्हारा फर्ज नहीं था?

मैंने थोड़ी सफाअी दी, तो ठंडे हुअे। पर अुनके हृदयमें जल रहा दावानल साफ दिखाअी दे रहा था।

नीलाका पत्र चार दिनसे नहीं आया था, अिसलिअे फिर बड़ी चिन्तामें पड़ गये। यह तार लिख दिया कि पत्र क्यों नहीं आया? जेलरसे यह कह आनेको मुझसे कहा कि अगर अंग्रेजी डाकमें पत्र न आया हो, तो यह तार दे दिया जाय। सौभाग्यसे पत्र आ गया था। पर पत्रमें तो. . . . की अनेक बुराअियां लिखी थीं। अिसलिअे फिर विचारमें पड़ गये। मेरे साथ थोड़ी बातचीत करके कहा: भले ही तार दे दो, ताकि अेक चिन्ता मिटे। अिसके बाद तुरंत पूना चले आनेको अुसे तार दिलवाया। फिर कहने लगे: सच्ची बन गयी होगी, तो कोअी अड़चन ही नहीं। सच्ची न बनी होगी, तो मालूम हो जायगा। वह न आयेगी तो भी मैं अुसके विरुद्ध अनुमान लगा लूंगा।

१७–४–'३३

आज रातको 'ह्यूमेनिटी अपरूटेड' पूरा किया और 'रेड ब्रेड' हाथमें लिया। रूसके बारेमें अिस लेखककी जोड़का लेखक अभी तक देखनेमें नहीं आया। हॉरेस अेलेक्जेंडरने भी अिसकी जो बात कही थी, वह ठीक ही थी।

आज अचानक घनश्यामदास बिड़लाके पिता राजा बलदेवदास बिड़ला अेक पंडितके साथ चले आये। नासिक तक आकर दर्शनके बिना जाअूं यह अच्छा नहीं, अिस खयालसे आ गये। अस्पृश्यताके सवाल लाये थे। अुन्हें अुस पंडितको विश्वास दिलवाना था कि जाति गुणकर्मानुसार है, जन्मानुसार नहीं। बापूने यह बताकर कि अुसका आधार जन्म और गुणकर्म दोनों पर है अपना मत समझाया। फिर पंडितने 'शास्त्र' के अर्थके बारेमें चर्चा की। आश्चर्यचकित होकर अुसने बापूसे पूछा: क्या वेदमें भी क्षेपक हो सकता है?

१८–४–'३३

बापूने कहा: हां, बहुतसी बातें बुद्धिसे निश्चित की जा सकती हैं। कुछ नहीं भी की जा सकतीं। अुनमें शास्त्रका निर्णय हो सकता है। पर जहां बुद्धिसे स्पष्ट निर्णय होता हो, अैसी बातोंमें भी शास्त्र बुद्धिके विरुद्ध सलाह दे, तो अुसे नहीं माना जा सकता। यह बात सच है कि यह बुद्धि शम-दमका पालन करनेवाले योगीकी या सदाचारी आत्माकी होनी चाहिये। अूंच-नीचके भेद तो हैं ही नहीं। गुणोंसे मनुष्य अूंच-नीच बनता है; वह भी दूसरोंकी दृष्टिसे, अपनी दृष्टिसे नहीं। अपनी दृष्टिमें जो अूंचा बन गया, अुसका पतन तो हो ही गया। यह बात सुनकर बूढ़ेको बड़ा आनंद हुआ।

बादमें कर्मकी बात निकली। अछूतोंके कर्म ही अैसे होंगे, यह निश्चय करनेवाले हम कौन? हम अपने कर्मका विचार करें। कर्मका सारा सिद्धांत ही मानवीय आत्माके अपने समाधानके लिअे है, औरोंका

न्याय करनेके लिअे नहीं। अिसका अेक और कारण भी है कि हमें क्या पता कि दूसरेका अच्छा हो रहा है या बुरा? नल राजाको कर्कोटक नागने काटा था, तो क्या नल राजाके दुष्कर्मके कारण काटा था? अुसे तो मदद करनेके लिअे वह नाग काटा था। रामचंद्रजीको चौदह वरसका वनवास मिला था, सो क्या अुनके दुष्कर्मके कारण मिला था? क्या वह वनवास अुनके लिअे दुःखदायी था? सीताको रावण हर ले गया, तो क्या अुसके दुष्कर्मके कारण ले गया था? पांडवोंको वनवास मिला और अेक साल गुप्तवास मिला, वह भी क्या अुनका पाप था? अिस तरह दूसरोंका न्याय करनेवाले हम कौन?

बूढ़ेको देखकर वड़ा आनंद हुआ। अूंचा कद्दावर डीलडौल। अिनकी लम्वी नाक लड़कोंमें अच्छी तरह आअी है। रामेश्वरदासमें पूरी तरह आया हुआ अिनका अुच्चारण, अिनकी सादगी — आजकल मिलनेवाले जापानी रवड़ और केनवासके वारह आनेके जूते — यह अव धीरे-धीरे लुप्त होने जा रही पुरानी मारवाड़ी सभ्यताके अनुरूप था। यात्रा पर निकले हैं। यह भी यात्राका धाम है। अव यहांसे लड़केके घर ग्वालियर जायंगे। और फिर वहांसे गंगा किनारे हरद्वारमें दो महीने वितायेंगे।

१९–४–'३३

आज कुछ महत्त्वके पत्र लिखे। अेक वंगालीको लिखे गये पत्रमें हिंसा और अहिंसाकी वढ़िया तुलना हुअी है। अहिंसा अैसी चीज है, जो आदर्श रूप है। अिसलिअे हम कह सकते हैं कि हिंसा जितनी कम की जा सके अुतनी करनी चाहिये। हां, विलकुल अहिंसक वनकर जीना संभव नहीं। पर हिंसाको जीवनका नियम कहें, तव तो ज्यादासे ज्यादा हिंसा करनी चाहिये, अैसी वात हो जाती है। अुधर हम देखते हैं कि जालिम भी हिंसाका घमंड न करके यह कहते हैं कि जहां तक वन पड़ा हमने कम हिंसा करनेकी कोशिश की थी।

आज मैंने कहा कि हरिजन नट्टारके झगड़े पर वापूकी लिखी हुअी टिप्पणी* वड़ी नरम थी।

वापूने कहा: जान-वूझकर नरम लिखी है। ये लोग प्रयत्न कर रहे हैं। और थोड़ी-वहुत सनातनियोंकी मदद मिले तो भले ही मिले।

फिर मैंने कहा: वैसे है तो सारी चीज गुस्सा दिलानेवाली। अिक्कीस दिनके अुपवाससे पहले जो पर्चे हिन्दू-मुस्लिम झगड़ोंके आते थे और जो

---

* 'हरिजन', भाग १, अंक ११।

दुःख होता था, वैसा ही दुःख अिस प्रकारकी रिपोर्ट देती है। सिर्फ अुस वक्त लड़ाअी दोनों तरफसे थी। आज अेक ही ओरसे आक्रमण है।

बापू: सही बात है। अुपवासके बिना अंत नहीं होगा।

जमशेद महेताका अेक पत्र 'मुझे चेतावनी' शीर्षकसे बापूने 'हरिजनबंधु'[1] में छापा। और अुस पर धधकता हुआ लेख लिखा और भविष्यवाणी की। हिन्दू धर्मकी तकदीरमें नाश होना लिखा होगा, तो अुसे कौन रोक सकेगा? पर अस्पृश्यता तो मिटकर ही रहेगी। यही लेख 'हरिजन'[2] में दूसरे रूपमें अंग्रेजीमें दिया। अुसे कुछ नरम कह सकते हैं। मगर दोनों लेख अेक ही विषय पर अलग-अलग भाषामें अलग ढंगसे लिखनेकी बापूकी शैलीके अनुपम नमूने हैं।

२०–४–'३३, नरहरिको नोटिस मिलनेकी बात आअी। अखबारमें आया कि अुन्होंने कलेक्टरको कोअी जवाब नहीं दिया।

बापू कहने लगे: यह समझमें नहीं आता कि जवाब कैसे नहीं दिया। अैसा हो तो नहीं सकता कि नरहरि जवाब न दे। पर अुसका रुकना ठीक नहीं। नोटिस मिले तो तुरंत ही अुसका भंग करना अुचित है।

२१–४–'३३ आज मेरे बयानमें फेरबदलकी चर्चा हुअी। कल दोपहरको मुझे बुलाकर कहने लगे: यह बताना चाहिये कि नमकके बारेमें और विदेशी कपड़ेकी तथा शराबकी दुकानों परके धरनेके बारेमें जो नैतिक समझौता हुआ वह भंग हुआ है। अिसके बिना समझौता नहीं हो सकता। फिर आज मैंने पूछा: हुसैन-हसनका अुदाहरण ठीक है?

बापू बोले: ठीक है, क्योंकि अिन लोगोंको यजीदकी हुकूमत मंजूर करनी थी। यहां भी हुकूमत स्वीकार करूं तो सब कुछ करने दें; जैसे बारडोली सत्याग्रह करने दिया और अिन लोगोंको कानूनकी दृष्टिसे अुसका जायज होना स्वीकार करना पड़ा। पर यह अुपमा किसी खास प्रसंग पर ही लागू हो सकती है। यह मैं नहीं कह सकता कि यहां देनेकी जरूरत है या नहीं, क्योंकि अिस अुपमामें अेक चीज ढंक जाती है और वह यह है कि हुसैन-हसनकी

---

१. 'हरिजनबंधु', भाग १, अंक ७ (ता. २३–४–'३३)

२. 'हरिजन', भाग १, अंक ११ (ता. २२–४–'३३)

लड़ाओी तो तलवारकी थी, जब कि यहां अुसका अुपयोग नहीं है। फिर बोले: देखो तो, मैंने कभी कर न देनेके आन्दोलनके बारेमें अेक शब्द नहीं कहा और लोगोंसे अपील भी नहीं की। पर चूंकि अुस चीजको अनीतिमय नहीं माना, अिसलिअे अुसका विरोध भी नहीं किया। अुसे मैंने अपने कार्यक्रममें नहीं गिना, अिसका कारण यह है कि मैं गांवोंके लोगोंको अिस तरह कुरबान करनेके पक्षमें ही नहीं। कुरबान पहले शहरके लोगोंको ही न करूं? मेरा तो युक्त प्रान्तमें भी विरोध ही था और हेलीके साथ आर्थिक दृष्टिसे ही सारी चर्चा हुअी थी। लगान न देनेका आन्दोलन भी अिसी ढंगसे चलाना था। पर जवाहरलालने नहीं माना और अुसे सविनय कानून भंगका रूप दे दिया। अिस हेलीको मेरी बात अच्छी तरह समझमें आ गयी थी और आज वह आदमी यहां हो तो तुरंत अुसका समाधान कर दूं, जरा भी देर न लगे। होरसे यह आदमी कहीं ज्यादा होशियार है। और समझौतेकी बातचीत करनेमें अुसके जैसा ही सीधा है।

छगनलाल जोशीने पूछा: पर महसूल न देना क्या फर्ज नहीं है? कारण यह तो बुरेसे बुरा कर है।

बापू: अिसकी बात ही नहीं। क्योंकि यह दृष्टि नहीं। बात तो सरकारकी हुकूमतको न माननेकी है। और अुसके लिअे कोअी भी अनैतिक कानून लिये जा सकते हैं। अिसलिअे कर न देना सविनयभंग नहीं है। नमकके कानून को लिया, तो वह अुस समयके संयोगोंमें सब कानूनोंमें सबसे ठीक समझकर चुना गया था। सही बात तो यह है कि सन् १९२०-२१ में जो कार्यक्रम था, वही आदर्श है। अुसमें यही विचार किया गया था कि हुकूमतको कायम रखनेके लिअे सबसे मजबूत बुनियाद ये कानून ही हैं। वह सविनय कानून भंग नहीं, पर अुससे अूंची चीज थी। यों तो ये सब चीजें मां-जाअी बहनें हैं, अिसलिअे सबमें कुछ न कुछ समानता तो दिखाअी देगी ही, पर जरा बारीकीसे देखें तो करबन्दी, सविनय भंग, सत्याग्रह और असहयोगसे ये सब अलग-अलग चीजें हैं।

सात दिनमें यह जवाब आया कि विठ्ठलभाअीको दिया हुआ तार पास कर दिया है। अिस पर बापूने कल फिर पत्र लिखा कि यह असह्य वस्तु है। अैसे तार देनेकी मुझे स्वतंत्रता हो, तो यहांके अफसरको ही अुसका फैसला करनेकी अिजाजत होनी चाहिये।

नीलाकी रोज चिन्ता किया करते थे। आज तार आया कि कल आ रही है। अुसके पत्रमें भी तंदुरुस्तीकी बुरी खबर थी। अुसने बालोंका

मुंडन करा लिया है, अिसलिअे धूपमें बैठने या खड़े रहनेकी ताकत नहीं रही, वगैरा बातोंका वर्णन था।

यहां तक आकर बापू कहने लगे: अिस स्त्रीने अेक-अेक वचनका पालन किया है और अब तक सब तरहसे सही रास्ते पर चली है। अिससे मिलना आज मुश्किल हो जायगा। पहली बार आयी थी तब दूसरी बात थी। आज तो मुझे यह भान है कि सब कुछ मैंने कराया है, अिसलिअे नहीं कहा जा सकता कि गद्‌गद हुअे बिना मैं अुससे मिल सकूंगा या नहीं। आज तो मेरे मनमें अुसे देखकर वही भावना पैदा होगी, जैसी विधवा होकर आअी लड़कीको देखकर किसी पिताके मनमें पैदा होती है। मीराकी बात दूसरी थी। वह अपनी अिच्छासे अैसा करती थी और अुसमें भी मैंने कमी कर दी थी। अिसने तो सब कुछ प्रायश्चित्तके रूपमें किया है, और मेरे कहनेसे किया है, अिसलिअे मुझे दुःख होता है।

प्रीवाका पत्र सुंदर था। अदनमें हम थे और सभाके मंचकी जो हालत थी, वही हालत आज जर्मनी और युरोपमें हो गअी है और यह नहीं कहा जा सकता कि कब दावानल फूट पड़ेगा। अैसे समय आप हैं, आपकी हस्ती मौजूद है, यह हकीकत ही हमें बड़ा आश्वासन देनेवाली है।

शामको सिविल सर्जन सरदारको देख गये। खूब जांच की। यह राय हुअी कि 'कोटेराअीज' करनेमें लाभ नहीं। ऑपरेशनसे शायद फायदा हो, यद्यपि निश्चित नहीं कहा जा सकता। पर यहां लंबी छुट्टी-सी है, तो ऑपरेशन कराना ही ठीक होगा।

बापू बोले: ठंडक चाहिये और धूल न चाहिये, अिसके लिअे समुद्र-यात्रा जैसा कोअी दूसरा अुपाय नहीं।

अिस पर वल्लभभाअी बोले: अिसकी अपेक्षा तो मैं यहीं सुख-शांतिसे न मरूं?

सर्जन: अितने निराश होनेकी कोअी ज़रूरत नहीं।

बापू बोले: लीजिये, तो हम निश्चय करते हैं कि आपको समुद्र-यात्रा करनी चाहिये।

वल्लभभाअी: आपको मालूम है कि मैंने अुसे क्या जवाब दिया है? यह कह कर जवाब सुनाया।

बापू: पर जहाज पर भी धूल तो खूब होती है। कोयलेकी रज तो बेहद होती है। हम रंगून गये, तब हमारे कपड़े और सामान सब काले-काले हो गये थे।

सरदार: आपके जैसे डेक पर सफ़र करनेवालोंका यह हाल होता है। हम आपकी तरह डेक पर सफर करनेवाले नहीं हैं। हम तो हमेशा सेलूनमें ही जानेवाले हैं। हमें कभी धूल नहीं लगी।

बापू: भाओी, सेलूनमें भी लगती है। सारे दिन आदमी सफाओी करता ही रहता है।

२२-४-'३३

नीला आ गओी। शास्त्री लेने गया था। बेचारा कहता था कि जिसने पहले जैसा जीवन बिताया था और अब आपके कहनेके अनुसार जो फेरबदल किया है, अुसका विचार करके मेरे रोंगटे खड़े होते थे, मुझे कंपकंपी छूटती थी। पर अुसे देखकर मुझे आनंद हुआ। अुसका खिला हुआ प्रसन्न चेहरा देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। अुसके लड़केको देखकर भी मुझे बड़ा आनन्द हुआ। वह तो पूछता था कि महात्माजीको कब देखूंगा? शिलाकी अहिल्या जिसी तरह हुओी होगी। जिस स्त्रीने अक्षरशः सिद्ध कर दिया है कि स्त्रीकी सहनशक्तिकी कोओी सीमा नहीं होती।

'कागावाका जीवन चरित्र' नामक पुस्तककी 'गोस्पेल ट्रम्पेट' में समालोचना पढ़ी। जैसे नीलाका परिवर्तन चमत्कार कहा जा सकता है, वैसे ही कागावाका भी चमत्कारके रूपमें वर्णन किया गया है।

कागावा अद्वितीय है। कहते हैं कि वह अपने जन्मको चमत्कार मानता है। अुसके जीवनमें जिस कारणसे अैसा परिवर्तन हुआ, वह ओीश्वर कृपाका चमत्कार ही कहा जायगा। पूरी तरह ओीश्वर-विमुख पिताका लड़का, रखेल स्त्रीके पेटसे जन्मा हुआ, नाचनेवाली लड़कीका अवांछनीय बच्चा, अैसे जिस कागावाने ठेठ बचपनसे ही विशुद्धिके लिअे अपनेमें अद्‌भुत अनुराग पैदा किया। अिक्कीस वर्षकी अुम्रमें जब कागावा टोकियोकी मजदूर बस्तियोंमें, जहां जापानकी आबादीके रद्दीसे रद्दी हजारों स्त्री-पुरुष गन्दा जीवन बिताते थे, रहनेके लिअे गया, तब अुसके मित्रोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। अिस अनीतिसे सड़ती हुओी बस्तीके बीच वह पंद्रह बरस रहा। अपनी पत्नीको भी वह वहां रहनेके लिअे ले गया। मददकी जरूरतवाला कोओी भी कागावाकी झोंपड़ीमें रह सकता था। अुसकी झोंपड़ी हमेशा भरी रहती थी। जो समाज अैसी गन्दी और अनीतिमय बस्तियोंको जन्म देता है, अुस समाजको अुसने चुनौती दी। गरीब लोगोंके आर्थिक संघर्षमें अुनका पक्ष लिया। मजदूरोंका अुसने संघ बनाया और अुन्हें रहनेकी अच्छी सुविधाअें मिलें और वे अूंचा जीवन बिताने लगें, अिसके लिअे वह लड़ा। अुसकी पत्नीको अेक

कारखानेमें लड़कियोंके मुकादमकी हैसियतसे छः पैसे रोज मिलते थे। लड़कियोंको छः अधेले मिलते थे। अिन प्रवृत्तियोंको चलानेके कारण कागावाको जेलकी सजा हुअी। पर अुसने हिम्मत नहीं हारी। कागावाके आसपास वेश्याअें, चोर, डाकू और खूनी गुंडे बसते थे। अिनके बीच वह पूरी तरह पवित्र रहा। अन्तमें अुसने दकियानूसी समाजके किलेमें छेद कर दिया। और टोकियोमें जब भूकंप आया और आग लगी, अुसके बाद शिकवा (गन्दी मजदूर बस्ती) को अुसने नेस्तनाबूद करा दिया। परंतु अिस भूकंप और आगने अुस पद्धतिका नाश नहीं किया, जो अिन बस्तियोंको पैदा कर रही थी। अिसलिअे कागावाको तो कुचले हुअे लोगोंकी लड़ाअी लड़नी ही थी। अंतमें सरकारने कागावाको पहचाना। हाल ही में अुसने 'अीश्वरके राज्य' का आन्दोलन शुरू किया है। अुसकी कोशिश दस लाख अीसाअी बनानेकी है। वह कहता है कि दस लाखसे कम अीसाअियोंके द्वारा जापानमें वांछित परिवर्तन नहीं कराया जा सकता।

यहां आम पर मौर आ गये। कुछ दिन तक अैसा लगा कि अुनकी महकसे अुन्मत्त हो जायंगे। फिर छोटी-छोटी कैरियां दिखाअी देने लगीं। यह विचार कर ही रहे थे कि ये सब कैरियां बड़ी होंगी, तब पेड़ झुक जायगा; और नीचे बैठे होंगे तब कभी गिरीं तो सिरमें लगेंगी। अितनेमें, तो ये कैरियां बड़ी होनेके बजाय लूसे मुरझाने लगीं। कोअी खूबसूरत बच्चा किसीकी नजर लगनेसे मुरझाने लगता है और पूनीकी तरह सफेद पड़कर गल जाता है, वैसे ये सब कैरियां मुरझाकर काली पड़ने लगीं। यह आशा थी कि कोअी मुरझा जायंगी तो दूसरी तो बड़ी होंगी ही। पर धीरे-धीरे सभी मुरझा गअीं, भैंसकी तरह काली हो गअीं और खिर पड़ीं। मुझे दुःख हुआ। पर थोड़े ही दिनमें जहांसे ये कैरियां गिरी थीं, वहां नन्हीं-नन्हीं कोपलें फूटने लगीं, अिन कोपलोंमें बारीक पत्ते दीखने लगे। सुबह जितने बड़े देखते शामको अुससे ज्यादा बड़े हो जाते। अिन दस दिनोंमें तो वे शुरूके पत्तों जितने बड़े हो गये हैं और अब यह कहना कठिन है कि शुरूके पत्ते ज्यादा हैं या नये पत्ते। सिर्फ शुरूके पत्ते हिन्दुस्तानके मूल निवासियों जैसे और नये श्वेत आर्यों जैसे लगते हैं। पर कोअी भी लड़ाअी-झगड़ा किये बिना सुखसे बसे हुअे संयुक्त कुटुंबकी तरह वे दिखाअी देते हैं। दूसरी अुपमा काममें लूं तो अिन नये पत्तोंकी कोमलता, चिकनापन और रंग सुन्दर ताजे मक्खन जैसे लगनेवाले प्रफुल्ल, स्वस्थ और सौन्दर्यसे चमकते हुअे बच्चेकी तरह मालूम होते हैं। ये सब परिवर्तन क्या अीश्वरके नये-नये रूप ही नहीं होंगे? सब ऋतुअें बदलती रहती हैं, वे भी क्या

अीश्वरके नये-नये रूप नहीं हैं? ये विचार मनमें छिपे हुअे थे कि आज टॉम्सनकी नीचेकी पंक्तियां पढ़ीं:

"These as they change, Almighty Father, these
Are but the varied God. The rolling year
Is full of Thee. Forth in the pleasing spring
Thy beauty walks, Thy tenderness and love."

"हे सर्वशक्तिमान पिता, ये सब परिवर्तन तेरे ही विविध रूप हैं। बीत रहा वर्ष तुझीसे भरा हुआ है। आनंदमय वसंतमें तेरा सौन्दर्य, तेरी कोमलता और तेरा प्रेम विहार कर रहा है।"

हेमप्रभाको बापूने हिन्दीमें लिखा: "जो कार्य करनेका रहता है, अुसके लिअे समय निश्चित करनेसे वक्तका और शक्तिका संग्रह होता है। शान्ति बढ़ती है। . . . तुझे आश्वासनकी आवश्यकता ही नहीं; तो भी पिता बनकर बैठ गया हूं अिसलिअे जी नहीं रहता। तेरा साथी, मित्र, सखा, पिता सब कुछ अीश्वर है, जिसको हम रामनामसे पहचानते हैं। कल कुछ अैसा ही हुआ। नींद आनेमें देर लगती थी। रामनाम शुरू कर दिया अैसे ही नींद आ गअी।"

बापूको कल नींद क्यों नहीं आअी, यह प्रश्न हेमप्रभादेवीके अिस पत्रसे पैदा होगा। अिसलिअे कल रातका किस्सा यहां बता दूं।

सरदार दो रोजसे, जबसे अुसे तार दिया गया तबसे, यह बात कह रहे थे कि नीलाको आश्रममें भेजना खतरनाक है। कल वह आअी तबसे अुन्हें यह बात खटकने लगी, छगनलालको भी। जिसने अितना पापाचरण किया हो, भोगविलास किया हो, वह अेकाअेक जीवनका कायापलट कैसे कर सकती है? आश्रममें अेक खास तरहके संयमका वातावरण है। यह स्त्री, जिसने कअी तरहके अनुभव किये हैं, आश्रमको भारी पड़ेगी। आश्रम पर गन्दगीका अितना बड़ा भार कैसे डाला जाय? मेरी राय पूछी। मैंने कहा: अिसने अपने पिछले जीवनमें जो बेपरवाह साहस दिखाया है, वही आज भी दिखा रही है। अिसमें असाधारण शक्ति है, अिसलिअे वह बदल गअी हो तो आश्चर्य नहीं। पर अुसकी आंखोंमें मैं अभी तक पहलेके विकार जरूर देखता हूं।

बापू कहने लगे: यह तो अुसका स्वभाव है।

मैंने कहा: हां, पर वह बना हुआ है।

फिर वल्लभभाअीसे कहा: पर आपने दूसरा कोअी विकल्प सोचा है? मुझे बताअिये अिसे आश्रममें न भेजूं तो कहां निकालूं? अिससे यह सब

करानेके बाद मैं अुसे न रखूं तो क्या करूं? और आश्रममें कितने गिरे हुअे आदमी मौजूद हैं, यह आपको पता है? आपसे क्या क्या कहूं? किस-किसकी बात कहूं? यह स्त्री कहती है कि अुसने अैसा किया है, मेरे लिअे अितना काफी है। बादमें वह निभ न सकी और आश्रम अुसके लिअे असह्य हो गया, तो वह चली जायगी। यह स्त्री भूखों मरनेवाली नहीं है; जहां भी जायगी वहीं रास्ता निकाल लेगी।

वल्लभभाअी: मेरे पास विकल्प नहीं है, अिसलिअे क्या कहूं?

फिर मैंने कहा: आपकी प्रकृति और प्रवृत्ति प्रयोग करनेकी ही रही है, अिसलिअे दूसरा विकल्प हो ही नहीं सकता। वैसे, अिससे बिगड़ क्या गया? अुसने अपनी सारी गन्दगी जाहिर कर दी। अुसने पापको समझे बिना पाप किया। अिसलिअे वह अिस वस्तुको पाप समझ ले और अुसे छोड़ना चाहे तो तुरन्त छोड़ सकती है।

बापू: यह पृथक्करण बिलकुल सही है।

मैंने कहा: अिसीलिअे कोअी किसीके बारेमें क्या कह सकता है? जिसकी जितनी पहुंच हो, वह अुतना अुड़नेकी बात करे।

अिस मौके पर . . . का आखिरी पत्र याद आता है। अुसे 'मो सम कौन कुटिल खल कामी' वाली लकीरमें दीनता लगती है, जो अुसे पतनकारी मालूम होती है। मेरा खयाल है कि मैं कोअी भजन गा सकता हूं तो सिर्फ यही गा सकता हूं। और कुछ गानेकी शक्ति नहीं, योग्यता नहीं। अिसलिअे दो स्वभावोंका फर्क है। नित्शे यही तो कहता था? वह पागल होकर मर गया, क्योंकि अुसके गर्वकी तहमें शायद शुद्धि बिलकुल नहीं होगी। . . . के गर्वमें सचमुच गर्व ही न हो और केवल शुद्धिकी मस्ती हो, तो अुसका बाल भी बांका नहीं होगा। पर मेरे सामने तो नित्शे जिसकी निन्दा करता था, वह 'नम्र मनुष्य धन्य हैं, क्योंकि वे अीश्वरको पायेंगे' ही आदर्श है।

नीलाका लड़का कितना अजीब है! मानो अैसा तन्दुरुस्त लड़का कभी देखा ही न हो। बापूसे लिपट गया और 'गांधीजी, गांधीजी' कह कर बातें करने लगा। पांच सालके बच्चेकी तोतली भाषामें भी स्पष्टता, रसिकता, बुद्धि और विनोद था। आप गुरु हैं। मैं गुरु हूं। नीला भी गुरु है।

बापू: पर अुसका बाल कटवा डालना तुझे अच्छा क्यों नहीं लगा?

जवाब: क्योंकि स्त्रियां बाल नहीं कटवातीं।

फिर धीरेसे बापूको पूछता है: गांधीजी, आप तो अच्छे आदमी हैं। फिर भी आपको यहां क्यों बन्द कर रखा है? आप अच्छे हैं, तो भी आपको बन्द करते हैं।

नीला कहने लगी: मैं अिसका जवाब ही नहीं दे सकती। क्या करूं? अिससे कहती हूं कि सरकारने बन्द कर रखा है, तो फिर यह पूछता है कि सरकार क्या है? अितनेमें तो वह बोल ही अुठा: पर सरकार कौन है?

अिस बच्चेमें छलकती हुअी शक्ति देखकर बापू बहुत खुश हुअे। और अुसके सवालोंसे जितने हंसे, अुतने शायद ही जेलमें कभी हंसे होंगे। अुसने बापूसे फूल मांगे। बापूने फूल दिलवा दिये, तो मांने तुरंत ही अुनका हार गूंथकर अुसके सिर पर बांध दिया।

वह कहने लगा: अब तो मैं बच्चोंका 'राजा बन गया।

शामको बापू बोले: अैसा जीवन बिताने पर भी अिस स्त्री और बच्चेके बीच अत्यन्त प्रेम है। और अब तो वह यूनानकी बात भूल गअी है और कहती है कि हमें तो हिन्दुस्तानमें ही मरना है। जो स्त्री अिस प्रकार सर्वस्वका त्याग करने आअी है, वह हरिजनोंके लिअे प्राण निछावर कर दे, तो यह कोअी छोटी-मोटी बात है? हमें तो अैसे प्राणार्पण करनेवाले ही चाहियें। और मुझे यकीन है कि यह अैसी है, जो फांसी पर चढ़नेका मौका आये तो खुशीसे चढ़ जायगी।

आंबेडकर आये। बापूने अुन्हें मद्रासका तार पढ़कर सुनाया।

२२-४-'३३

आंबेडकर: समझौतेसे बच निकलनेका मेरा अिरादा नहीं है। मगर समझौतेके अनुसार अुम्मीदवारोंको दोहरे चुनावका खर्च अुठाना पड़ता है। पहला चुनाव भी खर्चीला होगा और दूसरेका खर्च भी अुन्हें अुठाना पड़ेगा। मैं यह सुझाव देना चाहता हूं कि प्राथमिक चुनाव रद्द कर दिया जाय और हम कहें कि जब तक कोअी अुम्मीदवार अपनी जातिके मत अेक खास संख्यामें प्राप्त न कर ले, तब तक कोअी भी आदमी चुना हुआ जाहिर न किया जा सकेगा। प्राथमिक चुनावसे अुम्मीदवार-मंडल चुने जायं, अिस बातकी जड़में हमारा खयाल यही था कि अंत्यज वर्गोंके विश्वासप्राप्त अुम्मीदवार चुनावमें आ सकें। साधारण चुनावमें अंत्यज वर्गके अमुक मत मिलने ही चाहियें, यह तय कर देनेसे अुम्मीदवार-मंडलकी पद्धति द्वारा जो परिणाम साधनेका विचार किया गया था वह निकल सकता हो, तो यह पद्धति क्यों न अपनाअी जाय? यह पद्धति सुरक्षित प्रतिनिधित्वकी प्रथाके बहुत नजदीक पहुंच जाती है।

बापू: मेरे सामने यह चीज अेकाअेक आअी है और मैंने अिस पर विचार नहीं किया है। आप सब दलोंकी राय ले लीजिये और फिर मुझे बताअिये। संबंधित लोगोंके विचार जाने बिना मैं कोअी राय नहीं बना सकता। और कल तो आप जानेको कहते हैं, अिसलिअे कहा जायगा कि आप देरसे आये हैं।

आंबेडकर: अिस चीजकी जॉअिण्ट पार्लियामेण्ट कमेटीमें चर्चा करनी पड़ेगी।

बापू: भले ही की जाय, पर मैं यह नहीं कह सकता कि मैं अिस चीजको स्वीकार कर सकूंगा। मुझे अिस पर विचार करना पड़ेगा, अिस चीजकी अच्छी तरह जांच करनी होगी।

आंबेडकर: आप अपना जवाब तो मुझे लंदन भेजियेगा। मेरा सुझाव यह है कि प्राथमिक चुनावको साधारण चुनावमें मिला दिया जाय।

बापू: आपने प्रतिशत संख्या तय कर ली है?

आंबेडकर: अंत्यज वर्गके जो लोग मत देने जायं, अुनके २५ प्रतिशत तो कमसे कम होने ही चाहियें।

बापू: मान लीजिये कि किसी अुम्मीदवारको कुल मिलाकर अधिकसे अधिक मत मिले हों और अंत्यज वर्गके २४ प्रतिशत मत मिले हों और दूसरेको कुल मत तो सबसे कम मिले हों और अंत्यज वर्गके २५ प्रतिशत मत मिले हों, तो पहला अुम्मीदवार तो हार गया न? मुहम्मदअलीके बताये हुअे तरीकेमें अैसा ही खटकनेवाला बेहूदापन था।

आंबेडकर: सुरक्षित बैठकें रखनेके सभी तरीकोंमें अैसा बेहूदापन तो होता ही है।

बापू: मेरी बात आप समझे नहीं। मान लीजिये कि बैठक अेक हो और अंत्यज अुम्मीदवार आठ हों, तो साधारण मतदाताओंके जिसे ज्यादासे ज्यादा मत मिले हों वह तो न चुना जाय और जिसे कमसे कम मत मिले हों वह चुन लिया जाय, क्योंकि अंत्यज वर्गके मत अुसे निश्चित की हुअी संख्यामें मिल गये हैं।

आंबेडकर: वैसे तो प्राथमिक चुनावसे अुम्मीदवार-मंडल चुननेकी प्रथाको भी बेहूदा बनाया जा सकता है। वे लोग चारके बजाय अेक ही आदमीको चुनें, और यह अेक आदमी सवर्ण हिन्दुओंको बिलकुल मंजूर न हो तो भी अुसीको चुनना पड़े।

बापू: मैं तो अिस चीजका स्वागत करूंगा।

आंबेडकर: आप तो स्वागत करें, पर पृथक् निर्वाचक-मंडल रखनेका फिर प्रयोजन क्या रहा?

बापू: मैं तो जहां स्पर्धा हो वहांकी बात कर रहा हूं। पर जहां स्पर्धा ही न हो, वहां तो जो अुम्मीदवार आ जाय अुसीको हमें स्वीकार करना पड़ेगा। मैं तो अिस चीजका अपने मनमें विचार कर रहा हूं। मेरे ख़यालसे अुम्मीदवार-मंडलोंकी प्रथासे बचनेका सहलसे सहल अुपाय यह है कि जहां चार अुम्मीदवार चुनने हों, वहां चारसे ज्यादा खड़े ही न किये जायं।

आंबेडकर: मुहम्मदअलीके तरीकेसे मेरा तरीका अलग है। हम अंत्यज मतोंकी अमुक प्रतिशत संख्या चाहते हैं। मुहम्मदअलीके तरीकेमें तो दोनों पक्षोंके अमुक मत बताये गये हैं। मेरे पास बहुतसे लोगोंके पत्र आ रहे हैं। खुद मुझे तो यह डर नहीं है कि पहला चुनाव खर्चीला हो जायगा, पर लोग मुझ पर दबाव डाल रहे हैं। मैं नहीं चाहता कि किसी पर यह असर पड़े कि मैं समझौतेमें से निकल जाना चाहता हूं। मैं अितना ही कहना चाहता हूं कि सुझाये हुअे अिस फेरबदलसे सिद्धांतमें कोअी बाधा नहीं पड़ती।

फिर बापूने गोपालनको जो मुलाकात दी, अुसमें यों लिखवाया:

"डॉ० आंबेडकरको कुछ हरिजन मित्रोंकी तरफसे कुछ शिकायतें मिली हैं। अुनमें बताया गया है कि अुम्मीदवार-मंडलोंकी प्रथाके बजाय और कोअी तरीका रखा जाय तो ठीक हो। अिस परसे वे अपनी सूचनाके बारेमें मेरे विचार जाननेको आये थे। अुन्होंने अेवजमें यह सुझाव दिया है कि अुस अंत्यज अुम्मीदवारको चुना हुआ घोषित किया जाय, जिसे साधारण मतदाताओंमें से अंत्यज मतदाताओंके कमसे कम अमुक प्रतिशत मत मिल गये हों। अिस सूचना पर चूंकि मैंने कोअी विचार नहीं किया, अिसलिअे मैं अुन्हें निश्चित जवाब नहीं दे सका। मैंने अुनसे कहा कि अुन्हें अलग-अलग हरिजन संस्थाओं और साथ ही अिस चीजसे सम्बन्ध रखनेवाले दूसरे दलोंकी राय जान लेनी चाहिये। और वे रायें मुझे बता दें तो फिर मैं अिस पर विचार करूं। फिर भी अुन्होंने मुझसे कहा कि आप अिस सुझाव पर स्वतंत्र रूपमें विचार कीजिये और मुझे अपनी राय लंदन भेज दीजिये। वे कहते हैं कि जहां तक अुनका संबंध है, अुम्मीदवार-मंडलोंकी प्रथासे अुन्हें सन्तोष है और जो समझौता हो चुका है अुससे वे पीछे नहीं हटना चाहते। पर अलग-अलग दिशासे अुन पर दबाव डाला जा रहा है। मेरी निजी राय यह है कि जब तक हरिजनोंको सवर्ण हिन्दुओं पर अविश्वास है, तब तक अुम्मीदवार-मंडलोंकी प्रथा बिलकुल जरूरी है। अुसमें कोअी फेरबदल मैं आसानीसे मंजूर नहीं करूंगा। मैं तो हर सूचनाको केवल हरिजनोंके

दृष्टिकोणसे देखूंगा। अभी तक तो मुझे ज़रा भी अैसा नहीं लगा कि अिस प्रथामें हरिजनों और सवर्ण हिन्दुओंके हितोंमें कोअी संघर्ष है। मेरी पक्की राय है कि जिस चीज़में हरिजनोंका सच्चा हित समाया हो, वह सवर्ण हिन्दुओंके भी हितकी ही होगी। मैं मानता हूं कि मुझमें अिन सवालोंको हरिजनोंके दृष्टिविन्दुसे जांचनेकी शक्ति है। अिसलिअे अगर दुर्भाग्यसे मुझे कोअी भी समर्थन करनेवाला न मिले, मुझे अकेले रह जाना पड़े और अपनी स्थितिका बचाव करनेकी नौबत आ जाय, तो अिसकी मुझे परवाह नहीं।"

लिखवाया हुआ बापूने देख लिया और कहा कि सोमवारके अखबारमें यह आना ही चाहिये।

२४–४–'३३

आंबेडकरके सुझावके बारेमें बापूने वल्लभभाअीको अच्छी तरह सवाल-जवाबके साथ तैयार रहनेको कहा था। शामको वल्लभभाअीके साथ सवाल-जवाब शुरू हुअे।

बापूने पूछा: कहिये आपका क्या विचार है?

वल्लभभाअी: यह तो हिन्दुओंके मतोंके बिना काम चला लेनेकी युक्ति है। कमसे कम ४० प्रतिशत मत तय कर दिये जायं, तो भी ये लोग दलित वर्गके सभी मत खींच लेनेकी कोशिश करेंगे और दूसरेके हिस्सेमें मत रहेंगे ही नहीं।

बापू बोले: परंतु वे ४० के बजाय ५० प्राप्त करें, ६० प्राप्त करें। दूसरेको ६० तो मिल ही जायंगे न?

वल्लभभाअी: पर वे तो अिन्हींको मिलेंगे। आंबेडकरका यही हेतु है।

बापू: आप आंबेडकरको दूर रखिये। कोअी आपके पास वकीलकी हैसियतसे आये और यह कहे कि हिन्दुओंके मत हमें चाहिये ही नहीं या अुनके मत लिये बिना हमें जाना है, अिसके लिअे आप कोअी तरकीब बताअिये। तो आप आंबेडकरकी बताअी हुअी तरकीब सुझायेंगे?

वल्लभभाअी: हां।

बापू: अच्छा, फिर वह पूछे कि कमसे कम कितने प्रतिशत रखें, तो आप क्या कहेंगे?

वल्लभभाअी: तब तो ज्यादासे ज्यादा मांगूंगा।

बापू: पर कितने?

वल्लभभाअी: मुझसे जितना खींचा जाय खींचूंगा।

बापू: आपकी रायके अनुसार दस प्रतिशत हों तो काफी है, पर १५ प्रतिशत हों तो काम नहीं चल सकता।

वल्लभभाअी: अुन्हें राजी करनेके लिअे दस प्रतिशत दे दूंगा। अिससे आगे नहीं जाअूंगा।

मैंने कहा: मगर बापू, सचोट दलील तो आप कल आम्बेडकरके सामने कर चुके हैं कि जिसे २४ प्रतिशत अछूतोंके मत मिलें और हिन्दुओंके अधिकसे अधिक मत मिलें, वह आदमी हार जायगा और जिसे २५ प्रतिशत अछूतोंके मत मिल जायं और हिन्दुओंके कमसे कम मत मिलें, वह आदमी चुन लिया जायगा। यह दलील सम्पूर्ण है। मैं अिसे सारे यरवदा-करारकी जड़ काटनेवाली चीज मानता हूं।

बापू: मैं अिसमें से अिस हद तक अनुमान नहीं लगाता। मुझे तो यह सिर्फ बेहूदी लगती है। पर अब मैं विचार कर देख लूंगा।

२५-४-'३३

कलकी बातका विचार करते हुअे सोये। दूसरे दिन सुबह अेक लम्बा लेख* यरवदा-करार पर लिखा, जिसमें पिछली रातकी सारी दलील जोड़ दी। बापू बोले: हां, यह दलील ठीक है और यह अनुमान भी। मुझे यह आपत्ति सचोट लगती है। अिसलिअे सारी दलील मैंने लेखमें रख दी है।

आज मि० बहादुरजी आ पहुंचे। अुन्होंने मंदिर-प्रवेशके बिलके बारेमें अपनी राय किन हालातमें दी थी सो बात कही और बिल वापस धारासभामें आयेगा तब सुधरी हुअी राय देनेकी बात कही। भूलाभाअीसे भी मिले थे। अुन्होंने कहा कि सोलंकी अछूतके नाते मत दे सकते हैं या नहीं, अिस विषयमें हिन्दू कानून अच्छी तरह देखकर और फैसलोंका अध्ययन करके लिखनेको वे तैयार हैं। पर बापूको अुन्हें लिखना चाहिये। फिर बोले: खुद मुझे तो अिस बारेमें बहुत जानकारी नहीं, अिसीलिअे मैं भूलाभाअीसे मिला था।

जाते-जाते बापूने सहज ही श्रीमती माणेकबाअी बहादुरजीकी तबीयतका हाल पूछा, तो अुन्होंने सरल स्वाभाविक ढंगसे अुनकी बीमारीकी जो कहानी सुनाअी, वह रुलानेवाली और अैसी थी कि अुनके चरणोंमें सिर झुकानेका मन हो।

सन् '१६-'१७ में अुनका दिमाग बिगड़ा। अिसलिअे अेक साल तक समुद्र-यात्रा की, जहाजमें अनेक मुसीबतें भोगीं, और कअी तरहकी चिन्ता और सावधानीके साथ अुनकी रक्षा की। पर अिससे कोअी फायदा नहीं हुआ। अुन्हें जैसे-तैसे आजिजी करके रॉयकी गोली देता रहूं, तब तक फायदा दिखाअी देता है। अच्छी तरह खाती हैं, सोती हैं और प्रसन्न रहती

---

* देखिये 'हरिजनबंधु'; वर्ष १, अंक ८, ता० ३०-४-१९३३।

हैं। बादमें खाना छोड़ देती हैं और बहुत खुशामद करने पर भी नहीं लेतीं। अुन्हें गोली खिलानेके लिअे मैंने भी खानी शुरू कर दी। मुझे भी ज्ञान-तंतुओंकी कमजोरी तो थी ही। मुझे अच्छा फायदा मालूम हुआ, पर शुरुआत तो अुन्हें खिलानेके लिअे ही की। फिर छोड़ दी। अेक दिन वे कहने लगीं कि विलायत जाअूं तो शांति मिले। मार्सेल्स तक ठीक रहीं। अिन गोलियोंकी बारह शीशियां दीं, पर अुनका अुपयोग नहीं किया। मार्सेल्समें फिर दिमाग बिगड़ गया। जहाज चूक गओीं, गाड़ी चूक गओीं। मेरे भाओी और भाभीने मुझे तार दिया कि अुनका पता नहीं। मैं भागा-भागा गया और खोजकर अुन्हें विलायत ले गया। वहांके डॉक्टरोंकी सलाह हुअी कि किसी ग्रामप्रदेशमें खानगी मकानमें या नर्सिंग होममें रखकर अुनकी देखभाल की जाय। अिसमें न पड़कर वापस घर ले आया। जैसे-जैसे चल रहा है और अिस तरह करते-करते सोलह साल हो गये और मैं ६६ वर्षका हो गया। अब यह नहीं कहा जा सकता कि बच्चे मर गये, अिसलिअे पागल हो गओीं। यह मुझे बादमें पता लगा कि यह चीज अुनके कुटुम्बमें है।

मैंने सहज ही पूछा कि हम पर अदालतकी मानहानिका मुकदमा चला था, तब आप अेडवोकेट जनरल थे न?

वे बेचारे भलमनसाहतसे बोले: हां, मैं ही था। मगर मैंने कहा था कि यह मुकदमा मैं नहीं चला सकूंगा; कारण सरकारकी जो राय है, अुससे मेरी राय दूसरी है। बहस करनेके खातिर बहस करूंगा, पर अिसमें मैं दिलचस्पी नहीं ले सकूंगा; अिसमें मेरा दिल नहीं होगा।

अुनके जाने पर बापू कहने लगे: अिस आदमीकी पवित्रता अच्छे-अच्छोंका घमंड मिटा देनेवाली है।

मैंने कहा: ये तो स्थितप्रज्ञ प्रतीत होते हैं। अिनके चरणोंमें मस्तक नमता है।

शास्त्रीके साथ कल बातें की होंगी कि तुम नया आदमी ले आओ तो तुम्हारे लौटने तक अुसे रख लूंगा और फिर तुम्हें वापस रख लेनेमें आपत्ति न होगी। दूसरे दिन हमने अिस व्यवस्थाका बहुत विरोध किया।

मैंने कहा: यह कोअी रोजाना मजदूरी पर काम करनेवालेकी बात थोड़े ही है कि अेक आदमी अपना अेवजी रख जाय?

बापू: वह भाओीको रख जाय और कहे कि वेतन मुझे देना, पर मेरा भाओी काम करेगा तो? तुम गये तब कृष्णदाससे काम चलाया ही था।

यह तुलना बेमौके थी। मैं कोअी अेवजी नहीं रख गया था। मुझे भेज दिया गया था।

वल्लभभाअी: आप अिस आदमीको चार छः महीनेकी नौकरीके बाद ४० रुपयेकी पेन्शन करा दें, यह तो जुल्म होगा। यह तो लोगोंके रुपयेका दुरुपयोग होगा। लोग आपका ही अैसा व्यवहार सहन करेंगे, और कोअी करे तो सहन नहीं करेंगे।

मगर बापू टससे मस नहीं हुअे।

बापू: यह बेचारा दुर्दशामें फंस गया है, अिसलिअे क्या अिसे स्वार्थी माना जाय? हिन्दू परिवारकी कठिनाअियोंका आपको क्या अनुभव है? मुझे है। अिस आदमीको कितने ही लोगोंका भरणपोषण करना पड़ता है? अिसके लिअे अुसका सौ रुपयेमें काम नहीं चलता। यह आप क्यों नहीं समझते? अिसके साथ न्यायकी क्या बात की जाय? जब अिस आदमीने अपने कामसे हमें पूरा संतोष दिया है, तो अिसकी हम कुछ मदद कर सकें तो अिसमें बुराअी क्या है?

मैंने कहा: पर अुसे आना ही हो तो दूसरी बात है। वह तो कहता है कि अच्छी नौकरी मिल गअी तो चला जाअूंगा। तब? अिस तरह हमसे वेतन लेता है और साथ ही ज्यादा अच्छी नौकरीकी तलाशमें रहता है।

बापू: क्यों न रहे? अुसकी हालत ही अैसी है। वह तो साफ-साफ बात कह देता है।

मगर हमारी बहसकी कोअी जरूरत ही नहीं रही। अुसकी जगह काम करनेवाला अच्छा आदमी था, फिर भी अनुभवहीन मालूम हुआ। कअी पत्र, छोटी-छोटी चिट्ठियां भी, अुसने बिलकुल गलत टाअिप कीं। अुसकी अंग्रेजी अच्छी नहीं थी, अिसलिअे अुसे शामको ही बापूने कह दिया: भाअी, तुम जाओ। तुम मुझे हाल लिखते रहना कि तुम्हें कहां नौकरी मिली है? तुम क्या करते हो? वगैरा। तुम्हें रख सकता तो जरूर रखता, पर मेरा काम रुक जायगा। अैसी हालतमें क्या किया जाय?

रातको यार्डमें आकर कहने लगे: शास्त्रीके अेवजीको निकालते वक्त आज कलेजा टूटता था। पर क्या किया जाय?

बापूकी दयाकी अतिशयताका आज यह नया पहलू देखा।

नीला आती है। अुसे बेटी कहते हैं; अुसके लड़केको खिलाते हैं। आज मुझे कहने लगे: महादेव, अिस लड़केके लिअे खेलका साधन पैदा करना चाहिये। कोअी गेंद बनाओ। अगर जेलके दरवाजे पर सूतकी गेंद मिलती हो तो वह

२६-४-'३३

मंगाओ। जब यह सारे दिन अेक क्षण भी शांत नहीं बैठ सकता, तो अिसके लिअे कुछ न कुछ खेल-कूदका साधन कर देना चाहिये।

बापू अुसके खानेकी फिक्र रखते हैं। अुसके और अुसकी मांके कपड़ोंकी चिन्ता रखते हैं। अुसके लिअे धोती अपनी धोतीमें से काटकर दे दी और जूतोंकी मरम्मत करवानी थी, अिसलिअे जूते भी जेलरकी अिजाजतसे जेलके मोचीखानेमें सुधरवानेके लिअे रख लिये!

वल्लभभाअी शामको बोले: भाअी, सब कुछ करेंगे। बड़े बुढ़ापेमें लड़का आया है तो चाहे जितने लाड़ लड़ायेंगे। हमारे बोलनेका काम नहीं!

आज अेक बातमें बापू कहने लगे: जब तक हमारे पास किसी बातके बारेमें पूरा प्रमाण न हो और अुसे दुनियाके सामने साबित न कर सकें, तब तक अुसे कहना ही नहीं चाहिये। यह चीज मैंने गोखलेसे सीखी। गोखलेने रैण्डकी हत्याके बारेमें अिंग्लैंडमें सख्त आलोचना की। गोरे सिपाहियों द्वारा स्त्रियोंकी लाज लूटनेके बारेमें अुन्हें रानडे, वाच्छा वगैराकी तरफसे पत्र मिले थे। अिन परसे अुन्होंने अितनी कड़ी आलोचना की थी। मगर अुनके लौटकर जहाजसे अुतरनेके पहले ही वाच्छा अुनसे जहाज पर मिले और कहा: हमारे लिखे हुअे पत्रोंका अुपयोग नहीं हो सकता, क्योंकि कोअी प्रकट रूपसे सबूत देनेवाला नहीं है। वे पत्र फाड़ डालने चाहियें। गोखलेने वे सब पत्र समुद्रमें फेंक दिये और अेक-अेक आक्षेप वापस लेकर पूरी तरह माफी मांगी। अिसमें लोगोंको कायरता दिखाअी दी, खूब आलोचना हुअी। पर अुन्हें यह अुनका शुद्ध धर्म लगा। कलकत्तेमें जब मैं अुनके साथ था, तब अुन्होंने सारा किस्सा कह सुनाया था।

२७–४–'३३

मार्गरेट आअी। मूर्ख मालूम हुअी। मैंने बापूसे कहा: अिसे कैसे आने दिया जा सकता है? हम नहीं जानते वह क्यों आअी है? यह भी नहीं जानते कि वह नौकरीकी तलाशमें आअी है या दूसरे किसी कामसे। वह तो अेक निर्वासितके तौर पर चली आअी है।

बापू बोले: अुसे जरूर बुलवाया जाय। अुससे हरिजनोंका काम लेना है। वह अिसी कामके लिअे आअी है या नहीं? वह अिस कामके लिअे योग्य है या नहीं? यह भी देखना है। अुससे मिले बिना अिस बारेमें कैसे निश्चय किया जा सकता है?

वह आओी। बापूके पैरों पड़कर कहने लगी: मैं झूठ बोलकर आओी हूं। मैंने यहां आनेका गलत कारण बताया है, यहां रहनेकी झूठी मियाद दी है। मेरे पासपोर्टकी मियाद भी ८ जुलाओीको पूरी होती है। हे बापू, मैं व्रत लूं? मुझे आश्रममें भेज देंगे? मेरे लिअे तो आप परमेश्वर हैं। मुझे हिन्दुस्तानी बना लीजिये। किसीकी दत्तक पुत्री बना दीजिये। नहीं तो मुझे किसी ब्रह्मचर्यकी प्रतिज्ञावालेके साथ ब्याह दीजिये।

बापू खिलखिलाकर हंसे।

दोपहरको अुसने अपनी झूठकी बात नीलासे कही। तब नीला बोली: अरे, अिसमें क्या है? मैंने तो ढेरों झूठ बोली है और डेढ़ माससे अुसे धो रही हूं।

शास्त्री बोला: अिससे कर्मकी कैसी न्यारी गति मालूम होती है! झूठकी मूर्तिके सामने भगवान अुससे झूठ कबूल करा रहा है!

नीलाके कपड़े और भेस अिस स्त्रीको बनावटी लगे। अुसने कहा: ये भद्दे हैं। स्त्री होनेकी शर्म क्यों आनी चाहिये?

शामको आकर बापू कहने लगे: अिस बाओीका मामला मुश्किल दीखता है। मगर अुसे निकालूं कैसे? अिसलिअे अुसे ले लेनेका नारणदासको तार दिया है।

नारणदासको कल लिखा गया पत्र अद्‌भुत था। अुसमें बापूकी चरित्र-चित्रणकी शक्ति अेक-अेक पंक्तिमें दिखाओी देती थी। अुसमें नारणदासको अुदारता सीखनेके लिये जो अपील की है, वह पत्थर पर खुदवाकर रखने लायक है। युधिष्ठिरका अुदाहरण देकर लिखा है कि प्राचीन पुरुषोंके जो गुण हम धर्मग्रंथोंमें वर्णित पाते हैं, अुनका हमें व्यवहारमें पालन करना सीखना चाहिये।

किसी कारणसे शौकतअली और अुनकी पत्नीकी बात निकली।

बापू बोले: अुनकी शादीका तो मैं बचाव ही करनेवाला हूं। अुनकी स्त्रीका अेक वाक्य पढ़ा था कि किसी भी पुरुषके साथ यदि मैं चौबीस घंटे खुश रह सकती हूं तो वह यह पुरुष है। यह वाक्य मैं भूला नहीं हूं। अुसी वक्त मुझे खयाल हुआ कि अिस स्त्रीको अुनके साथ बहुत अनुराग होगा, और अुससे शादी करनेका शौकतअलीने हक हासिल किया है। शौकतअलीके साथके सफरके बहुतसे बढ़िया संस्मरण तो मेरे पास रखे ही हैं।

रॉयटरके डाअिरेक्टर मि० वार्न्स आ पहुंचे। सर अेडवर्ड वककी जगह पर आये हैं। सर जॉर्ज वार्न्सके भतीजे हैं। और कहते थे कि सर जॉर्ज खूब याद करते हैं। अिनके चाचा अमरीका जानेवाले जहाज पर शौकतअलीके साथ थे और अमरीकासे आते वक्त ये खुद शौकतअलीके साथ थे। अुन्होंने शौकतअलीका सलाम भी कहा। वापूने प्रेमसे पूछा: शौकतअलीकी तवीयत कैसी है? मोटे दिखाअी देते हैं?

२८-४-'३३

वार्न्स: शायद ज्यादा मोटे।

वापू: वस ठीक है। तव मेरा वजन अुन्हें भारी नहीं लगेगा।

अिन्हें कोअी खास वात नहीं करनी थी। सिर्फ जान-पहचान करनी थी। वापूने रॉयटरके पुराने डाअिरेक्टर सर रॉडरिक जोन्सको याद किया और कहा: मुझे आशा है आप भी अुनके जैसे ही अच्छे वनेंगे?

अस्पृश्यताके कामके वारेमें आपको संतोष है? यह पूछे जाने पर वापूने कहा: यह तो नहीं कह सकता कि पूरा संतोष है। मैं चाहता हूं कि काम और भी तेजीसे चले। वैसे, काफी स्थिर गतिसे चल रहा है।

यह कहकर रामचंद्रका मदुराके पास दो गणपति मंदिर खुलनेके सम्वन्धमें आया पत्र वताया और कहा: अिस तरह तामिल प्रान्तमें, जहां जवरदस्त कट्टरता है, काम हो रहा है।

अिस पर अुन्होंने पूछा: मदुराका मीनाक्षी मंदिर खुल गया?

अिस सवालको लेकर वापूने कानूनकी सारी कठिनाअी समझाअी। वह वेचारे समझ गये और तुरंत वोले: यह तो ठीक नौकरशाही अकड़ हुअी।

वापू: हां, ये लोग सनातनियोंको विरोधी नहीं वनने देना चाहते। अिसके लिअ तो वेंटिकका-सा साहस चाहिये। राजा राममोहन रायने भी जव देखा कि विरोध वहुत अुग्र हो गया है, तव वे भी नरम पड़ गये। परन्तु वेंटिकने विरोधकी कोअी परवाह ही नहीं की, क्योंकि अुसने महसूस किया कि सती होनेकी प्रथा अमानुषी है। अस्पृश्यताके वारेमें सरकारको आज वैसा ही लगना चाहिये। लोगोंको समझानेके लिअे मनुष्यमें सच्चा धार्मिक दृष्टिकोण होना चाहिये।

लोगोंकी वात चली। लोकमत किसे कहा जाय? वापूने 'Vox Dei vox populi' 'पंच कहे सो परमेश्वर' का सूत्र याद किया और कहा: लोगों पर आधार रखनेका खतरा अुठाना सीखना चाहिये।

अुन्होंने पूछा: आप क्या सचमुच यह मानते हैं कि समाज-सुधारका काम पहले करना चाहिये?

वापू: समाज-सुधारके कामकी जरूरत हमेशा होती है। पर मैंने मॉण्टेग्युको जो जवाव दिया था, वही तुम्हें दूंगा। अुन्होंने मुझे पूछा, आपको मैं राजनीतिमें पड़ा हुआ कैसे पाता हूं? मैंने कहा, यह मेरी वदकिस्मती है। क्योंकि राजनीतिने अपने नागपाशमें आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक सभी वातोंको जकड़ लिया है।

फिर यह समझाया कि खादीमें अुत्पादनके साथ ही वितरण अपने आप किस तरह हो जाता है। और यह वताया कि अमेरीकामें खाद्य-पदार्थ जला डालनेकी जो हैवानियत देखनेमें आती है, वह अत्यंत यंत्राधीनताका परिणाम है। वापूने सिद्धांत पेश किया: जीवनकी प्राथमिक जरूरतोंकी चीजोंको कभी यंत्राधीन न वनाओ। तुम चाहो तो भोगविलासकी चीजें और अैसी ही दूसरी चीजें भले ही मशीनोंसे वनाओ। प्राथमिक जरूरतकी चीजें अैसी हैं कि अुनकी जरूरत जितनी सुधरे हुअे आदमियोंको होती है अुतनी ही वनवासियोंको भी होती है। यंत्रीकरण होने पर अन्तमें घातक प्रतियोगिता और सट्टा आये विना नहीं रहता।

वार्न्स: मेरा विश्वास है कि हिन्दुस्तान रास्ता दिखायेगा।

वापू: मैं यही सपना देख रहा हूं।

वार्न्सने अेक सिद्धांत वताया: अेक पुस्तकमें मैंने अेक दिन पढ़ा था कि 'यह गुलामीकी हालत है कि किसी कामको मैं अिसलिअे करूं कि अुसे करनेको मैं मजवूर हूं और दूसरे आनंदके लिअे तरसा करूं। स्वतंत्र दशा वह है जव मुझे आनन्द लेनेकी अिच्छा हो और वह मुझे अपने काममें मिल जाय।'

फिर अंग्रेजी भाषा और मॅकोलेके वारेमें कुछ वातें हुअीं।

श्रीमती वार्न्सको कर्नलने नहीं आने दिया। अिस पर वापू कहने लगे: अेक रास्ता है। श्रीमती वार्न्स अगर सौ रुपया हरिजनोंके लिअे दान करें, तो अुसे देनेको वे जरूर आ सकती हैं।

वे वोले: सौ रुपये तो हैं ही नहीं, लेकिन २५ रुपये हैं।

वापूने कहा: मैं तो मजाक कर रहा था। फिर किसी समय आ जायं। आज तो नहीं, क्योंकि कर्नल मार्टिनने अिनकार कर दिया है। अिसलिअे वुलवाअूं तो वह वहुत वुरा मान जायगा।

हरविलास शारदा आ पहुंचे। वहुत भले आदमी मालूम हुओ। कुर्सी पर बैठे ही नहीं। असेंवलीमें कैसे हारें हुओं, वातावरण कितना दूषित है, अिसकी बातें कीं। अब तो बिल लोकमतके लिअे घुमानेका प्रस्ताव आयेगा।

२९–४–'३३

वापू: क्या हम अुस पर विचार करनेका प्रस्ताव नहीं ला सकते?

वे बोले: ला सकते हैं। हमारा भी यही विचार था। वाअिसरॉयसे मैंने कहा कि जब अितना आन्दोलन हो रहा है, तब अलग-अलग रायें मांगनेकी क्या जरूरत है? फिर भी अगर रायोंके लिअे बिलको जनतामें घुमाना हो, तो व्यवस्थापिका सभाकी आज्ञासे घुमा दीजिये। पर अुन्होंने नहीं माना। अब तो रंगाको रायके लिअे बिलको घुमानेका अपना प्रस्ताव वापस लेकर विचारके लिअे प्रस्ताव रखना चाहिये। वह न रखें तो दूसरा कोअी नहीं रख सकता, क्योंकि षण्मुखम् चेट्टीने निर्णय दे दिया है कि अेक आदमीने बिल ले लिया तो फिर वह दूसरेके नामसे रद हो जाता है। और अैसा भी डर है कि अुसे वापस लेनेका प्रस्ताव लायें, तो सरकार अुसका विरोध करे और हरा दे।

वापू: वापस लेनेका प्रस्ताव या विचार करनेका प्रस्ताव, दोनोंको हराये तो भले ही हराये। हमें तो यही परिणाम लाना है और वह लुकछिप कर नहीं, पर अभीसे जाहिर कर दिया जाय और लोगोंको तालिम देना शुरू कर दिया जाय। बूढ़ेको यह बात वहुत पसंद आअी।

बूढ़ेने अपने दुःखकी बातें कहीं: जहां बी० अेल० मित्र जैसा कानून मंत्री हो, वहां क्या हो सकता है? वह तो ट्रस्टके कानूनकी बातें करता है। अुसे कितना ही समझाअिये, नहीं समझता और कहता है: गांधीकी यह 'राजनैतिक चाल' है।

वापू: हिन्दू कमेटी भी तो यही कहती है? अभी तक सरकार कहती थी। अब अपने ही लोग कहने लगे।

शारदा: अपने लोग समझते नहीं। पर किसी दिन देखेंगे कि हिन्दू धर्मका नाश हो जायगा। हिन्दू धर्मकी रक्षा हम अूंचे वर्णके लोग नहीं करते, बल्कि ये दलित लोग ही करते हैं। अजमेरमें अेक दंगेमें ये दलित ही आगे रहे थे और मार खाअी थी।

वापू सन्न रह गये। यह फरेबभरी चालबाजी है। 'राजनैतिक चाल' शब्द मानो वापूको चुभ गये।

हृदय व्याकुल होने पर भी वापू कैसा मीठा विनोद करके रिझाते हैं। खंभाताके ५०० रुपयेके दानका नाम नहीं हुआ, पर अेक रुपया प्रसिद्ध

हो गया। अिसलिअे अुन्हें अच्छा न लगा। बापूने अुन्हें पर्चा लिखा: "अेक रुपया देखकर कोअी कहे कि खंभाता कंजूस बन गये या भिखारी हो गये, तो कोअी हर्ज नहीं। ठीक है न?"

मार्गरेटकी जड़ता जैसी आज देखी, वैसी कभी नहीं देखी। बापूको अीश्वर मानना अिसलिअे छोड़ दिया कि बापू मजाक करते हैं। बापूने पुरुष जैसी पोशाक पहननेकी सलाह दी, अिसे वह असभ्य मानती है! नीलाका बच्चा मेरे कंधे पर चढ़कर खेल रहा था। अुसे देखकर मार्गरेट चिढ़ गअी। अुठकर अुसकी बांह पकड़ कर अुठा लिया और जमीन पर पछाड़ दिया।

बापू: तुम्हें शर्म नहीं आती! अिस तरह बच्चेको पछाड़ते हैं? यह लड़का है या पत्थर?

वह निर्लज्ज होकर बोली: अपने कुत्तेके साथ भी मैं अिसी तरह करती थी और अुसे कुछ नहीं होता था।

बापूने कहा: तो बच्चों और कुत्तोंमें कोअी फर्क नहीं?

वह बोली: अपने कुत्तेको मैं बच्चा ही मानती थी।

बापू: मेरे खयालसे तुम्हें शादी करनेकी बड़ी जरूरत है। और वह भी अुचित ढंगसे शादी करनेकी; ब्रह्मचारीसे नहीं, बल्कि बच्चे पैदा करनेवालेसे। तभी तुम्हें पता चलेगा कि बच्चा क्या चीज है!

वह बेवकूफ अिसे भी सहन न कर सकी। अैसी निष्ठुर वृत्तिवाली कोअी स्त्री मैंने नहीं देखी। फिर भी, कअी बातोंमें अुसमें कोमल भाव भी हैं। वे क्या होंगे?

शामको अुसने लड़केको अेक बार फिर पछाड़ा!

नीलाकी नअी लीला मालूम हुअी। अुसने रामस्वामीको लिखा हुआ अेक पत्र बापूको बताया, जिसमें रुद्रमुनिकी दुष्टताका वर्णन किया था।

बापू: अिस दुष्टताकी बात तुमने मुझसे कभी नहीं कही।

वह: मैं लिख चुकी हूं, पर आपका ध्यान नहीं गया, यह मेरा दुर्भाग्य है। मैं यह न समझा सकी या मुझमें अिस हद तक सत्य नहीं आ सका। अतः मेरे कहना चाहने पर भी आप न जान सके!

यह कहकर वह सिसक-सिसक कर रोने लगी। सब बेचैन हो गये। अुस पागलने भी अुसे समझानेकी कोशिश की। पर वह अशांत थी। बापूको फिर धोखा दिया, यह भान अुसे चुभता था। कहने लगी कि मैं कभी रोती नहीं, पर आज रोये बिना नहीं रहा गया। शामको आकर अुनके पत्र देखे। अुनमें अुस बातकी सूचना तक नहीं थी।

आश्रमके बारेमें बातें करते हुअे वल्लभभाओीने कहा: आश्रम बहुत बड़ा हो गया है। अुसमें जो निकम्मे लोग आ गये हैं, अुन्हें निकाल दीजिये। चलनीमें कचरा बार-बार डलता रहा है, अिसलिअे अेक बार अच्छी तरह छान डालिये।

बापू: वल्लभभाओी, आप जो कहते हैं सो सच है। आप सोच लीजिये। अिन दोनोंसे बातें कर लीजिये। कोओी मार्ग सुझाअिये। यह बताअिये कि तात्कालिक कदम क्या अुठाया जाय।

अिन शब्दोंमें संताप था। पर कौन जानता था कि यह संताप अुसकी तहमें रहनेवाली अशांतिकी पूर्वसूचना जैसा था?

३०–४–'३३

रातको सोये परन्तु नींद नहीं आओी। ग्यारह बजेसे कुछ मिनट पहले अुठे। मैं पढ़ रहा था। अुठकर पेशाब कर आये। फिर तड़पते रहे। बादमें सुबह छगनलालसे अपने किये हुअे निश्चयकी बात करते हुअे बोले: ग्यारह बजेसे तो आंख खुल ही गयी थी। १२, १२॥, १ सब घंटे सुने। बड़ा युद्ध मच रहा था। नीलाके विचार आते, अुस जर्मन लड़कीके विचार आते। अिन दोनोंको आश्रममें भेजूं या न भेजूं? मार्गरेट सीधी न रहे तो अुसे जर्मनी भेज दिया जाय। नीलाको भी छुट्टी दी जा सकती है। पर यह तो अूपरका झगड़ा था। अंदरसे आवाज आया करती थी कि अुपवास कर, अुपवास कर। यह मन्थन कोओी तीन दिनसे चल रहा था। चालीस अुपवास करूं या अिक्कीस? हिन्दू-मुस्लिम अेकताके लिअे अिक्कीस किये थे, अिसके लिअे चालीस करने चाहियें। पर नहीं, यह जवाब मिला कि अिक्कीस ही करूं। बस निश्चय हो गया। तब १२॥ बजे होंगे। गर्भिणीके पेटमें बच्चेके हिलने-डुलनेसे जो व्याकुलता होती है, वैसी ही व्याकुलता हो रही थी और मुझे खयाल होता था कि कहीं मैं पागल तो नहीं हो जाअूंगा?

अंतिम निमित्त जरूर नीला ही कही जा सकती है। मनमें खयाल आया कि करोड़ रुपये अिकट्ठे करनेसे यह काम नहीं हो सकता। मेरी व्यवस्था करनेकी शक्ति किस कामकी? आश्रम द्वारा काम लेनेकी आशा रखता हूं, पर वहां तो रात-दिन षड्यंत्र चलते हैं, मैल भरा हुआ है। तब किन आदमियोंसे काम लिया जाय? अिसका निर्णय ही नहीं होता था। अन्तमें यह अन्तर्नाद सुना कि अुपवास कर।

मैं रातको ११॥, १२ बजे सोया था, अिसलिअे प्रार्थनाके बाद मुझे सोनेके लिअे भेज दिया। अिस वक्त मुझे पता नहीं था कि यह तूफान आ रहा है। मैं ५॥ बजे अुठा, तब वे कुछ बातें कर रहे थे, वल्लभभाओी

मौन धारण करके चल रहे थे। छः बजे तक घूमते रहे, पर वल्लभभाअीने अेक शब्द भी नहीं कहा। अेक भी शब्द कहने लायक बात ही नहीं लगी। नाश्ता करने बैठे वहां भी कमरा सुनसान मालूम होता था — यह सुनसान वैसा ही था, जो अंदर धधकते हुअे विचारोंके कारण मालूम होता है। मैंने तो आज अचानक ही 'अुठ जाग मुसाफिर' गाया था; लेकिन यहां तो 'अुठ जाग' का ही अवसर देखा। मार्टिनको लिखा गया पत्र और गृहमंत्रीका तार, दोनोंकी नकल की। फिर देवदासको टेलीफोन करनेकी चिट्ठी लिखकर वक्तव्यकी नकल करने बैठा। कटेली बेचारे भावभरे आये और कहने लगे: यह तो बिना शर्त अुपवास और वह भी अिक्कीस दिनका?

बापू बोले: क्या करूं? तड़पते-तड़पते साफ आवाज आअी, अुपवास कर।

कटेलीने पूछा: अितने जोरसे आवाज सुनी?

बापू: हां, अैसा ही समझिये।

देवदासके आते ही हम आमवाड़ीमें चले गये। देवदास दरवाजेसे ही साथ हो गया। अुसे बेचारेको खयाल हुआ था कि बापू अचानक बीमार हो गये होंगे। अितनेमें बापूने कहा: देख, वल्लभभाअी और महादेवने जरा भी चर्चा नहीं की। वैसे ही तू भी शांतिसे पढ़ ले और यह समझ कि चर्चा करना बेकार है।

देवदास अेक बार पढ़ गया, दूसरी बार पढ़ गया। स्तब्ध हो गया, पर थोड़ी देर बाद वाग्धारा चली। बहादुर बापका बहादुर लड़का बापको अमित शब्दोंमें अुपालंभ देने लगा। रोता जाता और बोलता जाता। बोलनेमें आवेश, क्रोध, दु:ख और तीव्र वेदना थी। रोना रुके तब बोलता, और बोलना रुके तब रोता था।

बापूने कहा: भाअी, अिक्कीस और चालीस दिनका द्वंद्व तो अेक महीनेसे हो रहा है। क्या सभी विचार मनुष्य दूसरोंको बताता है? तीन दिनसे नींद जाती रही। मुझे नींद न आये यह हो सकता है? मगर अिन तीन दिनोंमें घंटों तक नींद नहीं आअी। सवेरे लिखाते वक्त भी अेक बार भी नहीं अूंघा, न आलस्य मालूम हुआ। मानो तीन दिनसे आदमीकी मरनेकी ही तैयारी हो रही हो।

कितने ही समयसे अुथल-पुथल तो मची ही हुअी थी। विचार आते और मैं अुन्हें मनमें से निकालता रहता था। भीतर आग जल रही थी, पर पता नहीं था कि क्या होगा। ग्यारह बजे अुठा, नींद आये ही नहीं। लड़ाअी चलती ही रहती थी। साढ़े बारह बजे द्वंद्वयुद्ध शांत हुआ। अिक्कीस करने

हैं, कबसे करने हैं और कैदीकी हैसियतसे मेरा धर्म क्या है, यह सब साफ समझमें आ गया। अिसके बिना यह काम ही नहीं चल सकता। अितना नहीं करूंगा तो अिस आन्दोलनमें गंदगी घुस जायगी। निश्चय किया, अुठा और लिखने बैठ गया। अुस वक्त भी शरीरमें शांति नहीं थी, सिर चकरा रहा था। अैसा महसूस हुआ कि गिर पड़ूंगा और बेहोश हो जाअूंगा, तो मेरे मनके मनोरथ धरे ही रह जायंगे। पानीकी बोतल ली, पानी पीता गया और शांत होता गया।

देवदास: यानी आश्रम और नीला अन्तिम निमित्त बन गये न?

बापू: हां, यह कह सकते हैं, पर दूसरी ही तरहसे। नीलाका अुपयोग हरिजनसेवाके लिअे करना है। अिसके लिअे कितनी पवित्रता चाहिये? आश्रमका अुपयोग अैसे कामके लिअे ही है। पर जिस आश्रममें जगह-जगह दलबंदियां दिखाअी देती हों, अुसके द्वारा कैसे काम लिया जा सकता है? **आश्रमके लिअे** अुपवास करनेकी बात ही नहीं। अेक बार विचार हुआ था और अुसे साफ तौर पर छोड़ दिया था। अिस बार यह अुपवास न करनेकी काफी कोशिश की, परंतु न करनेका निश्चय करता जाअूं और करनेके प्रसंग आते जायं। अलाहाबादकी रिपोर्ट आअी और अुबल अुठा। अुसे प्लेगका घर बताया और जमींदोज करनेको लिखा। जोहानिस्बर्गमें अलग मुहल्लोंमें प्लेग फूट निकला, तब चौबीस घंटेमें अुन्हें जला डाला था। हम सफाअीकी बातें करते हैं, पर क्या जला डालते हैं? सतीशबाबू कलकत्तेकी बस्तियोंका भयंकर वर्णन करते हैं, पर अुन्हें जला डालनेकी हिम्मत किसकी होती है?

मेरे अकेलेके मरनेसे काम नहीं चलेगा। चल जाय तो मेरा महापुण्य कहा जायगा। अीश्वरकी नजरमें मैं अितना पवित्र गिना जाअूं, अैसा मेरा भाग्य कहां? मैंने अैसा कभी माना ही नहीं। परन्तु बात तो त्रास पैदा करनेकी है। हिंसक भी क्या करता है? लोगोंके मनमें त्रास पैदा करता है। अहिंसक भी यही करता है। दूसरा अुपाय ही नहीं, हृदय दूसरी तरहसे हिलता ही नहीं। अिसमें तर्क करनेकी बात नहीं, परंतु हृदयमें त्रास पैदा करनेकी बात है। जैसे हजारोंकी हत्या होती है और 'ओहो' कहते हुअे हम जाग अुठते हैं, वैसे ही हजारों मरनेको तैयार हो जायं, तो ही चमत्कारी असर हो। मैं करोड़ रुपये अिकट्ठे कर सकूं, तो अुससे क्या तकदीर पलट जायगी? थोड़ी संस्थाअें खड़ी हो जायंगी, पर अुपवासकी छायाके नीचे तो पापके बड़े-बड़े थर अुखड़ जायंगे और लोगोंकी आंखों पर पड़ा हुआ पर्दा अुठ जायगा।

देवदास: यह सब आप भले ही समझाअिये। पर मुझे तो यह वचनभंग लगता है। आपसे कअी बार कहा गया कि पूना-करारका अमल करने दीजिये। अभी अुसे छः महीने भी नहीं हुअे, और आप वचन दे चुके हैं कि मैं अिस तरह अेकाअेक अुपवास नहीं करूंगा। पर बात यह है कि आपका मन कमजोर हो गया है, आपको और कुछ सूझता ही नहीं, और आप घूम-फिरकर अुपवास पर आ जाते हैं। हरिजनोंका काम और किसी तरह नहीं कर सकते, अिसलिअे यह रास्ता पकड़ा! मैं आपसे कहता हूं कि आपका यह वक्तव्य पढ़कर मुझ पर बड़ा खराब असर हुआ है। आप मानते हैं कि लोगोंमें जागृति होगी, पर मैं कहता हूं कि दंभ पैदा होगा। आपकी भूलोंसे किसीकी आध्यात्मिक अुन्नति नहीं होगी। आप हमारे साथ अन्याय कर रहे हैं, हमें नाहक अितनी बड़ी सजा दे रहे हैं। आश्रमके दो बच्चोंने कुछ भूल कर दी, वह स्वाभाविक थी। अुसमें आश्चर्य क्या? आप बेचारे अुन लोगोंको होलीके नारियल न बनाअिये। साफ-साफ यह कहनेके बजाय कि अब मैं निराश हो गया हूं, आप कहते हैं कि आत्मशुद्धिके लिअे अुपवास करता हूं। सारी चीज मुझे सड़ी हुअी लगती है। मैं अिसका जरा भी अच्छा नतीजा नहीं देखता।

बापू खिलखिलाकर हंसते जाते थे।

देवदास: अिस तरह बातको हंसीमें क्यों अुड़ाते हैं? आप जब मुझे नहीं समझा सकते, तो दूसरे आपकी अिस बातको क्या समझेंगे? आपसे बहसमें कोअी जीत नहीं सकता।

बापू: अुपवास धर्मका अविभाज्य अंग है। अिस्लाममें और दूसरे धर्मोंमें सैकड़ों अिस तरह मर मिटे हैं। तू यह आपत्ति जरूर कर सकता है कि यह प्रकट करनेकी क्या जरूरत थी? लेकिन अिसकी भी जरूरत है। यह नअी चीज है। प्राचीन प्रणालीमें मैं जो कुछ देखता हूं, अुसमें सुधार कर रहा हूं। अिसका अनर्थ भी हो सकता है। मेरा किसी अेक आदमीके खिलाफ अुपवास करनेका हेतु हो तो मैं चुपचाप कर लूं। अफ्रीकामें . . . के विरुद्ध अुपवास किये थे, तब अुनका ढिंढोरा कहां पीटा था? पर अहमदाबादमें मजदूरोंके लिअे किये, अिसलिअे मजदूरोंके सामने घोषणा करनेकी जरूरत पड़ी। अिस बार गरीब बेजबानोंके लिअे कर रहा हूं, अिसलिअे अुनके सामने प्रकट करनेकी जरूरत है। यह तो मुझमें जो अेक साधारण शक्ति है, अुसका मैं अुपयोग कर रहा हूं और दुनियाको बताना चाहता हूं कि अिस साधारण शक्तिका अुपयोग

मनुष्यमात्र कर सकता है। संभव है अिसमें दंभ हो, लेकिन तब तो मेरा अैसा अन्त होना ही चाहिये। अिसके परिणामस्वरूप तुम आत्महत्या करो या दंभ करो, यह भी सम्भव है। तो क्या अिसमें कोअी शक है कि दंभी बापके बेटे दंभी ही होंगे? तुम्हारे तमाम अवगुणोंके लिअे मैं जिम्मेदार हूं। गुणोंके लिअे अीश्वरको यश देना चाहिये।

देवदास: आप अैसी-अैसी बातें कहकर जिस चीजका बचाव नहीं हो सकता, अुसका बचाव न कीजिये। यह तो साफ मूर्खताभरी बात है।

बापू: अेक करोड़ मूर्ख मूर्खतापूर्ण अुपवास करें और बादमें अेक सच्चा अुपवास करे तो वह जगतका अुद्धार कर देगा। मूर्खोंका काट-काट कर कीमा बना दिया जाय और अुसमें से राम निकल आये, तो अैसे मूर्खोंका अुपयोग है।

देवदास: किन्तु कोअी तारतम्य भी होगा या नहीं?

बापू: अरे भाअी, तिनके पर मेरुको धारण करनेवालेकी तारतम्य बुद्धि कुछ और ही तरहकी होगी न?

मैंने कहा: आप अिस अुपवासको जब अटल बताते हैं, तब फिर दूसरेकी हिम्मत ही क्या जो आपके साथ बहस करे? सच कहूं तो कोअी आपके साथ क्या झख मारनेको बहस करे? आप तो सबको बेवकूफ समझकर अेक निश्चय कर लेते हैं और कह देते हैं, "लो, यह अटल है।"

बापू: महादेव, महादेव, तुम अितना क्यों नहीं समझते कि अटलका यह अर्थ नहीं है? अटलका अर्थ यह है कि नीतिकी कसौटी पर कसनेसे वह ठीक मालूम हो तो बदल नहीं सकता। पर कोअी बता दे कि यह अुपवास अनुचित है, तो मैं जरूर अुसका विचार छोड़ दूंगा।

मैं: गलत बात क्यों कह रहे हैं? सुबह ही तो आप सरकारको तार दे चुके हैं।

बापू: मैंने अैसे निश्चय बदले नहीं क्या?

मैं: अुपवासका किया हुआ निश्चय कभी बदला है?

बापू: नहीं। पर यह तो अिसलिअे कि कोअी यह बता नहीं सका कि अुपवास गलत है!

मैं: अच्छा, कोअी सैद्धांतिक निश्चय बदला है?

बापू: हां, दक्षिण अफ्रीकामें जब समझौता हुआ, अुस वक्त अेंड्रूजसे मैंने कहा कि यह मंजूर नहीं किया जा सकता। अेंड्रूज बोले: आप बेंजामिन रॉबर्टसनके पास चलिये। मैंने कहा, जरूर चलूंगा। पहले दिन और रातमें चर्चा करके मैंने जवाब दे दिया था कि यह स्वीकार नहीं किया जा सकता।

स्मट्सके घरसे लौटते वक्त पहाड़ी परसे अुतरते हुअे मानो मुझे यह आवाज सुनाअी दी, "यह क्या मूर्खता कर रहा है? यह तो ठीक है।" मैंने तुरन्त ही अेंड्रूजको खड़ा रखकर कहा, "अेंड्रूज मैं तो बेवकूफी कर रहा था।" जनरल स्मट्ससे भी यही बात कही और अुससे माफी मांगी।

अिसी तरह बारडोलीके वक्त हुआ। रेडिंगको खबर दे चुका था, पर देवदासका पत्र आया और मैंने सत्याग्रह स्थगित कर दिया। दुनियाकी हंसी भी सह ली।

मैं: लेकिन आप कहते हैं कि आपकी भूल आपको बताअी जाय। आप तो अिस तरह त्रास पैदा करके दुनियाकी भूल बताकर अुसे सावधान करना चाहते हैं, पर हम कैसे आपमें त्रास पैदा करके आपको समझायें कि आपकी गलती हो रही है?

बापू: यह तो तुम जानो। तुम्हें कोअी तरीका ढूंढना चाहिये। सच बात तो यह है कि अिस चीजका लोप हो गया है, अिसलिअे वह तुरन्त समझमें नहीं आती। कैसे भी लोग किसी भी कारणसे अुपवास करते हैं, अुनका क्या? वह रानडे जो अुपवास करता है वह अुसकी मूर्खता है, पर क्या किया जाय? अिसके पीछे अभिमान है, पर मुझे लगता है कि यह मूर्खता है। अिसलिअे क्या किया जाय?

देवदास: आप घूम-फिरकर अुसी बात पर आ जाते हैं। आप जब अुपवास करनेका निश्चय करके बैठे हैं, तो दलीलें और कारण तो मिल ही जाते हैं।

बापू: भाअी, मुझे अुपवास करनेकी फुरसत नहीं, मेरी कलम भी नहीं रुकी, मेरी जबान भी नहीं थकी, कामका ढेर पड़ा है। पर अुपवास आकर सामने खड़ा ही हो गया, तब क्या किया जाय?

मैं: लेकिन आपको समझा कौन सकता है?

बापू: मुझे तो बच्चा भी समझा सकता है। अिशारेमें समझ जाअूं। देखो तो रामायणकारने लक्ष्मणके मुकाबलेमें कैसे आदमीको रखा? अुन्हींके जैसे ब्रह्मचारी मेघनादको। और फिर दोनोंकी बराबरकी ताकत बताकर कहा कि लक्ष्मणके साथ भगवान थे और अुसे जिताया। अिसी तरह बच्चेके अेक वाक्यमें मुझे चेतने लायक बात मालूम हो जाय, तो मैं चेत जाअूं और बच्चा मुझे जीत सकता है।

मैं: आप कल रातको तेजीमें बात कर रहे थे, तब भी मैं चौंक अुठा था। अुस आवेशमें अिसीकी पूर्व सूचना थी न? अिसलिअे आश्रमकी बातें अिसमें मदद देनेवाली कही जा सकती हैं या नहीं?

बापू: कही जा सकती हैं।

देवदास: फिर भी आप कहते हैं कि आश्रमको अिसमें नहीं मिलाया। आश्रम आज जितना पवित्र है, अुतना पहले कभी नहीं था। आश्रमको क्या दोष देते हैं? आपने कअी बातें अिकट्ठी करके अिस चीजको बिगाड़ दिया है। आपका पिछला अपवास मुझे पसन्द आया था। सुनते ही फौरन मैंने अुसका बचाव किया और वक्तव्य निकाला। पर अिसमें आपने अितनी बातोंकी गड़बड़ कर दी है कि कुछ पता नहीं चलता। तब अिस अुपवासका निर्णायक कारण क्या है?

बापू: अेक भी नहीं। पर शायद कह सकता हूं कि आम्बेडकर जो तूफान मचा रहा है, वह अिसका असली कारण है। अिस आम्बेडकरके खिलाफ मैं क्या कर सकता हूं? गरीब हरिजनोंको किस तरह समझा सकता हूं? मैंने आश्रमको अपवित्र माना ही नहीं। . . . के दोषकी प्रतीति ही नहीं हुअी। हां, अुसकी झूठ अच्छी नहीं लगी। मेरे खयालसे तो आश्रमका सौभाग्य है कि अैसे किस्सोंका पता चल जाता है। और जगह तो कितना ही व्यभिचार चलता होगा, पर पता तक नहीं चलता। आश्रमके कहां अैसे नसीब कि डंकन और मेरी वगैरा जैसे लोग वहां जाकर बैठें? पर अिस तरह आश्रमको सुरक्षित मानना अेक बात है और अिस आश्रमके जरिये हरिजनोंका काम लेना दूसरी बात है।

देवदास: आश्रमको लड़ाअीमें भी होमना है, हरिजनोंके काममें भी होमना है, ये सब दो तरफा बातें क्यों करते हैं?

बापू: तुझे तो समझ ही लेना चाहिये कि लड़ाअी और हरिजन-कार्य अेक ही चीज है।

(बापू सत्यानन्द बोसका पत्र बताते हैं, अुसे देखकर)

देवदास: आज जब लोग शोर मचा रहे हैं कि यरवदा-करार जबरदस्तीसे हुआ है, तब आप लोगोंको दूसरा अुपवास बता रहे हैं, अिसका क्या अर्थ है?

बापू: मैंने अिन लोगोंसे कहा है कि आप जबरदस्तीकी बात क्यों करते हैं? आपने तो बदलेमें अच्छा मुआवजा लिया है। आज तो रविबाबूके 'मुक्तधारा' नाटक जैसी हालत है। किसीको तो बांध खोलना चाहिये और धारा बहानी चाहिये। जो बांध खोलेगा अुसे तो मरना ही पड़ेगा। अुसी तरह जैसे जापानियोंमें तोपका पलीता जलानेवाला आदमी मरता ही है।

कल शारदा आये थे। बेचारेने भलमनसाहतसे बातें कीं कि हमारे लोग नहीं समझते कि हिन्दू धर्मकी रक्षा ये अछूत ही करेंगे। अजमेरमें

दंगे हुअे, तब अिन लोगोंने ही हिन्दुओंकी रक्षा की थी। अिसलिअे हमें अपना कर्तव्य समझकर अस्पृश्यता नहीं मिटाना है, बल्कि अिसलिअे कि ये लोग अैसे वक्त पर काम आते हैं।

और ये बेचारे तो राजनैतिक खेलकी गेंद बन रहे हैं। अिनकी आवाज कारगर तो तब हो, जब हिन्दू अिन्हें अपना बना लें। हजारोंको अुपवास करनेके लिअे कहनेकी बात मेरी योजनामें है जरूर, मगर वह योजना में अिसलिअे नहीं बनाता कि मुझमें यह अभिमान मौजूद है कि मेरे बराबर कोअी योग्य नहीं। ये तो धीरे-धीरे ऑपरेशनके आघात पहुंचाता हूं। अगर मैं जी गया तो कहूंगा कि अभी तो सम्पूर्ण अनशन बाकी है. दूसरे बहुतोंके अुपवास अभी बाकी हैं।

देवदास: आप तो अनजानमें अुलटे रास्ते चले गये हैं और दूसरोंको भी ले जा रहे हैं। आपको दुनियाको अपने साथ लेना है या अकेले ही स्वर्गमें जा बैठना है? जहां विशाल धारा बह रही हो, वहां अेक हाथी खड़ा कर देनेसे थोड़ी देर बहाव रुक जायगा, पर बादमें?

आप जल्दबाजी कर रहे हैं। बार-बार कहते हैं कि अनन्तकालके सामने अेक पीढ़ीकी क्या गिनती है? फिर भी सब कुछ अेक ही सपाटेमें करना चाहते हैं।

बापू: भाअी, जिस पापको धोना है, अुसके लिअे यही अुपाय हो सकता है। अिस तरह कअी लोग अुपवास करेंगे, तभी यह धुलेगा। यह अेकके अुपवाससे नहीं धुलेगा। पर तू बुला ले, राजाजीको बुलवा, मथुरादासको बुलवा। वे शायद तेरे साथ मिल जायंगे। मथुरादास अैसा है, जो अच्छीसे अच्छी बातोंमें भी दोष निकाल दे।

देवदास: अच्छीसे अच्छी बातमें दोष तो आप निकाल रहे हैं। मुझे अैसे आदमीकी जरूरत नहीं।

बापू: तो विनोबाको बुलवा। वह मुझे समझा दें कि भूल हुअी है तो मैं जरूर समझ जाअूंगा और अुपवास छोड़ दूंगा। काका मुझे नहीं समझा सकते। क्योंकि वे मेरे कियेका बचाव ही करेंगे। नारणदासको बुलवा। वह योगी है, पवित्र पुरुष है, दूरदर्शी है. झटपट विचार करके निर्णय दे सकता है। मैं अुसका भक्त हूं। अुसकी राय ले ले। खुरशेद और नरगिस बहनकी राय ले ले। वे दोनों बहनें पारसी हैं, तो भी हिन्दू जैसी हैं। वे जरूर अपनी राय दे सकेंगी, और मेरे साथ झगड़ना होगा तो झगड़ लेंगी।

यह अुपवास तो गरीब हरिजनोंके लिअे है, स्त्रियोंके लिअे है, बच्चोंके लिअे है। स्त्री और बच्चे अिससे पागल-से हो जायंगे। हां, मैं अिन सबको

पागल बना देना चाहता हूं। सारी दुनियाको यह पाप मिटानेके लिअे जाग्रत करना चाहता हूं। अिसलिअे जरूरी है कि यह वक्तव्य जल्दी पत्रोंमें आ जाय। हर चीजका मुहूर्त होता है, अिसका भी है। फिर भी तुझे पूरे अधिकार देता हूं। वल्लभभाअी और महादेवकी राय होने पर भी तुझे अैसा लगे कि अिसे आज न छपाया जाय, तो न छपाना। काकाके साथ बात की? जरूरत हो तो काकाको ले आ।

अिसके बाद आश्रम सम्बन्धी वाक्य वक्तव्यमें से निकलवा दिया।

यार्डमें आनेके बाद 'अिलस्ट्रेटेड वीकली' में ढीली रस्सी पर तीस वर्षसे लटक रहे हिन्दूका चित्र बापूने मुझे बताया, — यह बतानेके लिअे कि किसी न किसी प्रकारकी तपश्चर्या हिन्दू धर्ममें मौजूद ही है।

१–५–'३३ काका, देवदास, रामदास और आला बहन आये। मुझे अकेलेको तो मिलने नहीं दिया जा सकता, अिसलिअे मौन होने पर भी बापूको आमबाड़ीमें आना पड़ा। काकासे तबीयतके हालचाल पूछनेके बाद बातें करनेको कहा।

काका: वक्तव्यको तीन बार पढ़ गया। आप यह कहें कि अीश्वरका आदेश है, तब तो हमारे बहस करनेका सवाल नहीं रहता। फिर भी मुझे अिस अुपवासमें कठोरता और अधीरता मालूम होती है। दुनियाको नोटिस देते हैं और हिन्दू समाजको नहीं देते। जगतमें जगह-जगह खराब हालत है। देशमें भी बड़ी गन्दगी है, मगर हिन्दू समाज आपकी बात सुननेका प्रयत्न कर रहा है। अुसकी आपने बड़ी अवहेलना की है। यह नहीं कहता कि यह अुपवास बेमौका है, मगर बेवक्त है। चाहें तो अेक सालका नोटिस देकर यही तारीख रखिये, और फिर हिसाब मांगिये।

बापू: आपने मेरा वक्तव्य पढ़ा, मगर अुस पर विचार नहीं किया। हजारों बार पढ़नेवालेके गीता नहीं समझनेकी बात जानते हैं?

काका: जानता हूं। पर आप यह दलील दें, तब क्या कहा जाय? अितना कहता हूं कि ध्यानपूर्वक पढ़ा है।

बापू: यह अुपवास ही दूसरी तरहका है। अिसके लिअे नोटिसकी जरूरत कभी होनी ही न चाहिये।

काका: यह भी समझमें आता है। मगर नोटिस नहीं तो अिसमें जल्दबाजी है, अिसका समय अभी नहीं आया। हिन्दू समाजको समय दीजिये।

बापू: नोटिसकी जरूरत नहीं, अितना ही नहीं, बल्कि अिसमें तो बहुत कुछ समाया हुआ है। मेरी कल्पना तो यहां तक गअी कि गंगाकी

कावड़की तरह अिस अुपवासका अन्त हो ही नहीं सकता, अथवा हो सकता है तो अस्पृश्यताका अन्त होने पर ही। अेक ही आदमी अुपवास न करे, बल्कि अेकके बाद अेक अैसे कअी किया करें।

काका: मैं जानता हूं कि बहुतोंको करने पड़ेंगे।

बापू: तो फिर यहां नोटिसकी बात बेमौका नहीं है? आप बिलकुल गलत रास्ते चले गये हैं, यह मैं आपके आगे तो गणितके सवालकी तरह स्पष्ट कर दूंगा। औरोंको समझानेमें भले ही देर लगे।

काका: हमने आपके कामोंको आलोचककी दृष्टिसे देखनेकी आदत ही नहीं डाली। हम तो जो कुछ होता है, अुसे समझनेकी कोशिश करते हैं। अैसा लगता है कि समझनेके प्रयत्नके बावजूद जल्दबाजी हो रही है।

बापू: अरे, यहीं तो गलत रास्ते जाते हैं। आपको तो यह कहना चाहिये कि यह सब देरसे शुरू हुआ, और आपसे यह कहलवाअूंगा। मैं निश्चयपूर्वक मानता हूं कि आपके लिअे तो यह समय खुशीसे नाचनेका है। अब आपको महादेवके साथ बैठकर चर्चा करनी हो तो कर लीजिये। अिसका अर्थ यह नहीं है कि मेरे साथ न करें। मेरा धीरज टूटनेवाला नहीं।

मैं: केवल अुपवासके लिअे ही धीरज टूट गया है।

बापू: यह भी अज्ञानका वचन है। देवदासके मुझे जागृत करनेके बाद अिस अुपवासका रहस्य मैं अितना ज्यादा समझ गया हूं कि हिन्दुस्तानमें तो शायद ही कोअी निकलेगा, जिसे मैं न समझा सकूं।

देवदास: मुझे तो कलकी तरह ही बोलने देंगे न? जरा ज्यादा विचार कर भाषा काममें लूंगा। आप काका जैसे आदमीसे कहते हैं कि तुमने पत्र पढ़ लिया, मगर विचार नहीं किया। आप अपने वक्तव्यकी गीतासे तुलना करते हैं और फिर हमसे कहते हैं कि यह जानते हो न कि हजार बार पढ़नेवाला भी अिसे नहीं समझ सकता? यह धमकी है। अैसी धमकीसे हमें लाभ नहीं होगा।

काका: यह अुपवास किसके खिलाफ है? आलोचना करनेवालोंको क्या पड़ी है? मेरे खयालसे अिसमें आम्बेडकरका कुछ न कुछ हिस्सा होगा। देवदाससे पूछा तो अुसने हां कहा। पर जो लोग आपको जवाब दे सकते हैं, जिनके द्वारा काम लिया जा सकता है, वे सब तो जेलमें पड़े हैं।

बापू: मैंने तो अितना ही स्वीकार किया है कि आम्बेडकर भी अिसमें अेक निमित्त होगा। अिसमें कोअी अेक ही चीज निमित्त नहीं है। कौन है, यह मैं नहीं जानता। मैं तो अितना जानता हूं कि अिस अुपवासकी

जरूरत आज है। अगर यह समयके बाहर हो तो अनीति है। अधीरताको मैं अनीति मानता हूं।

काका: आपने पूछा अिसलिअे बहस करते हैं, वैसे अिसमें कोअी सार नहीं।

बापू: मैंने तो आपसे पूछा नहीं। मैंने तो वल्लभभाअी जैसेका मुंह बन्द कर दिया और कह दिया कि बहस न करो।

काका: आप तो अुपवासके लिअे अयोग्य हैं। आप अुपवास करते हैं, अिसलिअे कृत्रिम वातावरण पैदा होता है। मैं अिस अुपवासका अनिष्ट देख रहा हूं। अिससे गृहयुद्ध होगा। और बयानमें तो लिखा है कि आपके बाद अुपवास जारी रखनेवाले आपसे भी ज्यादा पवित्र होंगे। अिस प्रकार आपके बाद जो अुपवास करेगा, अुसके लिअे कहा जायगा कि अुसने बापूसे भी ज्यादा पवित्र होनेका दावा किया।

बापू: अैसा कहेगा वह मूर्खोंका सरदार होगा। पर दुनिया अैसे लोगोंका स्वागत करेगी। सारे धर्म अिसी तरह आगे बढ़े हैं। यह परंपरा बन्द हो जाय, तो धर्मका अस्त हो जाता है।

काका: आपसे बहस करके क्या नतीजा निकालेंगे? यही कि आप अपनी स्थितिमें ज्यादा मजबूत हो जायंगे। मैंने तो कअी बार यही नीति ग्रहण की है। नरहरिभाअीने अेक बार आपके वचनके बारेमें पूछा था कि बापू कहते हैं कि अिकट्ठा प्रायश्चित्त आ रहा है, अिसका क्या अर्थ? मैंने कहा था कि यह बापूसे नहीं पूछा जा सकता। आपका तो पानीका-सा हाल है; जैसे-जैसे वह ज्यादा जमता जाता है, वैसे-वैसे अुसका कद बढ़ता जाता है।

बापू: यह क्यूनेका क्राअिसिस (बीमारीका जोर कम होनेसे पहलेकी नाजुक स्थिति) है।

अिस चर्चामें भी बापूने विनोद किया। रामदाससे बोले: अपने छोटे भाअी पर कुछ अंकुश रखता है या नहीं? अिसके बाद रामदाससे बापू कहने लगे: तुझे तो हरगिज नहीं घबराना चाहिये। जो घबरानेका कारण न होने पर भी घबराये, वह क्या बहादुर माना जाता है? बहादुर वह है जो घबरानेका कारण होने पर भी हंस सके।

नहा-धोकर बारह बजे बाद अिस यार्डमें आने पर बापू मुझसे बोले: तुम श्रद्धासे देखो यह ठीक है, मगर बुद्धिसे काम लेना चाहिये और अच्छी तरह सब छानबीन कर लेनी चाहिये। तभी तुम मेरा बहुतसा काम हलका कर सकोगे।

मैंने कहा: मैं समझता हूं कि नोटिसकी गुंजाअिश नहीं है। नोटिस तो शर्तोंवाले अुपवासके लिअे ही होता है। मगर नोटिसकी जरूरत नहीं, यह कहनेमें और अिस चीजमें जल्दबाजी नहीं हुई, यह कहनेमें भेद है।

बापू: हां, पर तुम्हें यह समझना है कि यह चीज तो लोगोंने अमुक वचन दिया हो और वे अुसे पाल रहे हों, तो भी आ सकती है। कारण लोग अमुक काम कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं, अिसके साथ अुसका सम्बन्ध ही नहीं। मेरे चारों ओर शुद्धि न हो और मेरे पास अुसे मिटानेका दूसरा कोअी अुपाय ही न हो, तो क्या किया जाय?

प्रेसवालेके साथ मुलाकात:

बापू: पहले जब-जब मुझे अपनी भूल मालूम हो गअी है, तब अुसे सुधार लेनेमें मैं हिचकिचाया नहीं। पर मुझे बिलकुल स्पष्ट प्रतीति होनी चाहिये कि यह मेरी भूल थी।

स०: आपके वक्तव्यमें अितनी गुंजाअिश नहीं रह जाती कि आपके कुछ साथी आपके पास आकर चर्चा कर सकें?

बापू: कुछ तो चर्चा कर भी गये और अुन्हें अिससे आघात लगा है। यह वक्तव्य एकदम सीधासादा है, पर आठ तारीखसे पहले तो कितनी ही संभावनाअें हैं। संभव है आठ तारीखसे पहले मैं मर भी जाअूं।

स०: आपने लिखा है कि भयंकर मलिनताके अुदाहरण आपके ध्यानमें आये हैं। अिनमें से कुछ बतायेंगे? सवर्ण हिन्दुओंके खिलाफ तो आपको शिकायत नहीं है। आपकी शिकायत तो अपने साथियोंके खिलाफ है।

बापू: यह तो आपने गलत अर्थ किया। मुझे खास तौर पर किसीके खिलाफ शिकायत नहीं। मेरी शिकायत अपने ही खिलाफ है। यह भाषाकी छटा नहीं, खूब सोचकर मुंहसे शब्द निकालनेकी आदतवाले आदमीकी भाषा है। यह निर्णय क्यों किया गया, यह मैं नहीं कह सकता। मैं नहीं जानता। जब मैं सोया, तब मेरे मनमें कोअी बात नहीं थी। कोअी अेक बात अिसके लिअे जिम्मेदार है, यह नहीं कहा जा सकता। काफी लम्बे अरसेमें हुअी घटनाओंके अिकट्ठे असरके कारण यह फैसला किया गया है। जब ये घटनाअें घटीं अुस वक्त मैं अुनकी तरफसे आंख मूंदकर नहीं बैठा था। मेरे मन पर अुनका शांत असर होता ही रहता था।

स०: आप कहते हैं कि अीश्वर या शैतान या स्पष्ट दर्शनवाला और कोअी मुझे दिखा दे, तो मैं अुपवास न करूं। अिसमें स्पष्ट दर्शनका फैसला कौन करे?

बापू: मैं अपना अुपवास वापस ले लूं, यह ठोस घटना ही अिसका फैसला करेगी।

मैं अपने साथियोंको बताना चाहता हूं कि मलिनता अिस पवित्र कामको नुकसान पहुंचायेगी।

जहां तक मनुष्यका विचार पहुंच सकता है, वहां तक विचार करके तो मैं कहता हूं कि यह संभव नहीं कि मैं अुपवास छोड़ दूंगा। अलबत्ता, अिस तरह निश्चयात्मक रूपमें मैं नहीं कह सकता। यह तो अीश्वर ही कह सकता है।

मैं नहीं चाहता कि अिस अुपवासमें दूसरे लोग शरीक हों। पर मैं यह जरूर चाहता हूं कि मेरा अुपवास और कअी अुपवासोंका पुरोगामी बने। अिस अुपवासके बाद मैं बच जाअूं, तो मैं स्वयं ही दूसरा अुपवास करनेको प्रेरित हो सकता हूं। अभी तो सितम्बरके अुपवास और अिस अुपवासके बीच जो मूलभूत अन्तर है, अुसे लोगोंको समझ लेना चाहिये। सितम्बरका अुपवास अेक खास कारणके लिअे था। अिस अुपवासमें कोअी निश्चित कारण नहीं बताया जा सकता। अैसे अुपवास तो किसी भी क्षण किये जा सकते हैं। अैसा करनेकी हिन्दुस्तानमें सामान्य प्रथा है। जब कोअी बड़ा सुधार करना हो, तब मनुष्य अिसलिअे अुपवास करता है कि अुस सुधारमें ज्यादा शुद्धि रहे और अुसे ज्यादा वेग मिले। अुसमें वह अपनेको आदेश मिलनेका दावा नहीं करता। अैसे अुपवास दुनियामें सब कहीं स्वीकार किये गये हैं। अुपवास खुद ही अेक बड़ी चीज बन जाती है। यही अुसका बचाव होता है। मेरे अुपवासका दावा अिससे ज्यादा नहीं। मैं जिस मंथनमें से गुजरा हूं, वैसे मंथनके बिना भी मैं यह अुपवास कर सकता था। पर अैसा करनेकी शायद मेरेमें हिम्मत नहीं थी। मैं भारी जिम्मेदारीके बोझके नीचे दब गया और अुससे कांप अुठा। अेकसे अधिक बार मुझे अिसकी प्रेरणा तो हुअी थी कि अुपवास करना चाहिये, पर मैं अुसका विरोध करता रहा। अैसी धार्मिक प्रवृत्तिकी जीतका आधार अुसके करनेवालेकी बौद्धिक शक्ति या दूसरी साधन-सम्पत्ति पर नहीं होता। अुसका आधार केवल आध्यात्मिक सम्पत्ति पर होता है। और आध्यात्मिक सम्पत्ति बढ़ानेका अुपवास बहुत प्रसिद्ध अुपाय है। हरअेक अुपवाससे सोचे हुअे परिणाम नहीं निकलते। पर मेरे वक्तव्यमें मैंने अुसकी कुछ शर्तें दी हैं। जिन्होंने बड़ी धार्मिक प्रवृत्तियां चलाअी हैं, अुनका अनुभव यह है कि बौद्धिक, सांसारिक और अैसे दूसरे साधन आध्यात्मिक पूंजीमें से मिल जाते हैं। आध्यात्मिक पूंजी ही अुनका आधार होती है। आध्यात्मिक पूंजीके बिना वे किसी काममें नहीं आते।

स० : आप कहते हैं कि मैं जिन्दा रहा तो। अितने ज्यादा लम्बे अुपवासमें आप कैसे जीनेकी आशा रखते हैं?

वापू : दस वरस पहले मैंने अितने अुपवास किये हैं। मुझसे अधिक बूढ़े और कमजोर आदमियोंके ज्यादा लम्बे अुपवास करने और जीते रहनेकी वात हमें मालूम है। आध्यात्मिक आधारमें शरीरकी हस्ती कायम रखनेकी अनंत नहीं, तो भी बहुत वड़ी शक्ति होती है।

स० : आप ये अुपवास पूरे करें तो वड़ा चमत्कार होगा।

वापू : चमत्कारोंका जमाना अभी गया नहीं। मैं बहुत ही आशावान हूं। पहला कारण तो यह है कि मुझमें से जिजीविषा गअी नहीं। मेरा कोअी भी डॉक्टर अिसकी गवाही देगा। मनुष्य अपनी शक्ति खूब संग्रह करके रख सकता है।

मैं पूनामें रहूंगा या नहीं, यह निश्चित नहीं कह सकता। मैं जरा भी नहीं मानता कि मुझे छोड़ दिया जायगा।

स० : आप अभीसे अपनी शक्ति संग्रह कर रहे हैं?

वापू : मैं कोअी असाधारण प्रयत्न नहीं करूंगा। जो अुपवास कराता है, वही अुसे पार लगायेगा। मेरे साथी तुमसे कहेंगे कि कल रातको मैं गहरी नींद सोया था।

खुरशेद वहनके साथ वातचीत :

अिस अुपवासके वाद तुरंत ही कोअी अुपवास करनेके योग्य हो, तो अुसे तुरंत ही अुपवास शुरू कर देना चाहिये। अिसे अुपवासोंकी शृंखला कहा जा सकता है। यह चीज रुपयेसे नहीं हो सकती। चतुराअीसे और ज्ञानसे भी नहीं हो सकती। अीश्वर पर रहनेवाली आस्थासे हो सकती है। और अीश्वर पर आस्था हो, तो शरीरका क्षय करना चाहिये। जिसमें आत्माकी जागृति है, जिसे भान है, वह आत्माको मुक्त करनेके लिअे शरीरका क्षय करेगा। मन शरीरकी अपेक्षा ज्यादा अुपवास करता होगा, तो ही यह अुपवास काम करेगा।

अिस लड़ाअीमें राजनैतिक मैल आने लगा है। आप चार करोड़ मनुष्योंको राजनैतिक शतरंजके मोहरे वनायें, तो दुनियाका नाश हो जाय। बंगाली सिर्फ वुद्धिसे काम करनेवाले हैं। अुन्हें कौन समझाये? वे लोग हमें मूर्ख समझते हैं। कुअें खुदवाने, स्कूल खोलने और मंदिर खोलनेसे क्या होगा? अिसकी तहमें प्रायश्चित्तकी भावना हो और हरिजनोंको आप बेटा-बेटी, भाअी-वहन माननेको तैयार हों, तभी कुछ हो सकता है।

हिन्दू धर्म भले ही नष्ट हो जाय, पर असमें तो सारी मनुष्य-जातिके नष्ट हो जानेका डर है। मैं तो जैसे-जैसे सरकारी रिपोर्टें पढ़ता जाता हूं, वैसे-वैसे मेरी आंखें खुलती जाती हैं। मेरी नजर जो पहले अेक मील तक देखती थी, वह अब बंगालकी रिपोर्ट पढ़कर करोड़ों मील दौड़ने लगी है। गरीब बेजबान हरिजन लोगोंको कौन संदेश दे? कौन धीरज बंधाये? लोग अपनी आध्यात्मिक पूंजीको जितना काममें लेते हैं, अुतना ही अिस लड़ाअीको आगे बढ़ाते हैं। अिसमें बुद्धिकी कोअी जरूरत नहीं। बुद्धिसे काम चल जाता तो ये सारे शास्त्री और जज मौजूद हैं। मद्रासके वकील मौजूद हैं। मैं अपनी चतुराअीसे अिन वकीलोंको किस तरह समझा सकता था? पर आध्यात्मिक पूंजीसे ये लोग किस तरह अिनकार कर सकेंगे? हां, मुझे रावण समझा रहा हो, तब तो मुझे मरना ही चाहिये। अगर मैं अिस लड़ाअीमें पशुओंके गलेमें बंधे हुअे आड़े डंडेकी तरह होअूं, तो मुझे जला डालना चाहिये।

हिन्दू धर्ममें तो पग-पग पर अुपवास मौजूद हैं। मेरी मा — मेरी अपढ़ अज्ञान बहन — जैसे लोगोंके जीवनमें अुपवासका महत्त्व था। हिन्दुस्तानकी स्त्रियोंके जीवनमें यह चीज विद्यमान है। लेकिन मेरे जैसे आदमी अुपवास करें, तो दुनिया देखे। और मुझे दिखलाना है। अुस हद तक मुझे अुपवासकी घोषणा करनी पड़ेगी। रामचंद्र समुद्रके सामने अुपवास करते हैं, तो वह सार्वजनिक रूपमें करते हैं। वह भले ही पौराणिक कथा हो — पर कल्पना नहीं है। हिन्दुओंको तो यह सुनकर खुश होना ही चाहिये। पर हिन्दुओंमें हिन्दुत्व रहा ही नहीं। अुपवासकी हंसी अुड़ाअी जा सकती है? जो हंसते हैं वे कल रोयेंगे। रोयेंगे यानी मैं मरूंगा तब नहीं, परंतु अपने पापोंका विचार करके। अुनके घर लुटेंगे तब क्या करेंगे? और हरिजन जब रूठेंगे तब वे क्या नहीं करेंगे? मुसलमानोंको खुदा और कुरानका डर है। पर अिन लोगोंको किसका डर है? अुनके पास तो अीश्वर भी नहीं रहा।

यह सब संगठन बनाकर हो सकता है? मेरे जैसे हजारों मरेंगे, तब यह लड़ाअी रास्ते पर आयेगी। यह तो पांच-सात आदमियोंको छोड़कर शायद ही किसीको पता होगा कि यह लड़ाअी केवल धार्मिक है। यह बतानेके लिअे मैं मरना चाहता हूं। अकेली राजनैतिक सत्तासे क्या होगा? वह मिलेगी तब तो हमारे सिर फूटेंगे। बन्दरको राजनैतिक सत्ता दे दी जाय तो?

खुरशेद: आप हमें खड्डेमें डालकर जा रहे हैं, यह क्या?

बापू: तुम्हें खड्डेमें डालनेवाला दरअसल तुम्हें खड्डेसे निकालना चाहता है।

नीलासे :

"हमारे अन्तरके कोढ़से शरीरका बाह्य कोढ़ ज्यादा अच्छा है। तुम टूटे हुअे गन्नेकी तरह हो। पर मैं तुम्हें साबुत बनाना चाहता हूं।

"मार्गरेटके मामलेमें तो अुसका और मेरा न्याय अीश्वर करेगा। मैंने सब कुछ अुस पर छोड़ दिया है। अेक सुंदर भजनमें कहा है कि मेरी प्रार्थना नहीं सुनेगा तो लाज तेरी जायगी, मेरी नहीं जायगी।"

मथुरादास : आप चौबीसों घंटे हरिजनोंका विचार करते हैं, अिसीलिअे आपको अैसी-अैसी बातें सूझती हैं। अिन्हें तो आप शुद्धिके अुपवास कहते हैं। ये हरिजन अुपवास कैसे ?

बापू : 'यावानर्थ अुदपाने'। यह बात सही है कि हरिजनोंके सवालमें स्वराज आ जाता है। पर हम तो राजनैतिक स्वराजके लिअे लड़ते हैं। यह तो चार करोड़ गुलामोंका स्वराज है। गुलामोंसे भी बदतर — अिन लोगोंको जानवर बनाया और अिनका हमने यह धर्म बना दिया कि ये लोग अपने कर्मका फल भोगते हैं। यह तो धर्मका राक्षसी स्वरूप है। हिन्दू धर्मका अगर यह अर्थ हो, तो मैं भी गीता, मनुस्मृति सबको जला डालूं। आम्बेडकर हिन्दू धर्मका स्वभाव नहीं बदल सकता। हिन्दू धर्ममें जो तपश्चर्या है, जो खोजबीन हो चुकी है, अुतनी और किसी धर्ममें नहीं हुअी। अिन अस्पृश्योंको चाहे जितनी राजनैतिक सत्ता दे दीजिये, पर अुससे क्या होगा ? यों तो कोअी चंगेजखां आकर सारे सवर्ण हिन्दुओंको अुनके घरोंसे निकाल कर अुनमें हरिजनोंको बसा सकता है, मगर अुससे क्या अुद्धार होगा ?

अिस वक्तव्यको समझनेका रास्ता बताअूं। जो सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य और अस्तेयका पालन न करे, वह यह नहीं कर सकता। वे चार यम सत्यकी तहमें हैं।

मथुरादास : सब कारण हरिजनोंके कामके साथ कैसे गुंथे हुअे हैं ?

बापू : कारण मैं अेक ही चीजका ध्यान धर रहा हूं — योगदर्शनमें यह वस्तु स्पष्ट बताअी गअी है।

हिन्दू-मुस्लिम अुपवासका तो कोहाट वगैराके साथ सम्बन्ध था। जो कुछ हुआ था अुसमें मेरा भी हाथ था; अिसलिअे वह प्रायश्चित्त स्वरूप भी था। यह अुपवास कोअी अेक शरीर टिका रहे तब तकका नहीं। अैसे अुपवास तो निरर्थक कहे जायंगे। यह तो शरीरके साथ खेल खेलने जैसा होगा। जिसने आत्मसमर्पण किया है, वही मनुष्य सचमुच अीश्वरका है।

यह अुपवास तो जीवनका खेल है। यह श्रद्धावाद है कि अिस देहसे ओश्वरको काम लेना होगा तो वह अिसे रखेगा।

मथुरादास: यह आपकी शक्तिके बाहरका काम है। अिस चार-दीवारीमें बन्द हैं, अिसका भी असर पड़ेगा या नहीं? शक्ति पर अिसका असर होगा या नहीं?

बापू: हो सकता है, पर अिससे क्या? मुझमें अुपवास करनेकी तो कितनी ही शक्ति भरी पड़ी है। मरनेके कितने ही अवसर आ गये। लेकिन यही विचार करता था कि अिस चारदीवारीमें पड़े-पड़े कैसे अुपवास करूं। हिम्मत नहीं थी। शैतान मनुष्यकी कमजोरी बढ़ा देता है। ओश्वर मनुष्यकी कमजोरी दूर करता है। मुझे रास्ता बतानेवाला शैतान नहीं हो सकता, क्योंकि मैंने संयममय जीवन बिताया है। संयमकी बाड़को शैतान लांघ नहीं सकता। जेल तो क्या? शास्त्र कहते हैं कि तुम्हें नरकमें डाल दिया जाय, तो भी भगवानका नाम लो। मैंने तो माना है कि जब बाहर होता हूं तो दम घुटता है, पर जेलमें बलवान हो जाता हूं।

मथुरादास: जो वस्तुस्थिति आजकल बाहर है अुसमें आप बाहर होते तो आज शायद अुपवास न करते।

बापू: शायद जल्दी अुपवास करता! सरकारके लिअे मैंने आठ दिनकी मियाद रखी। बाहर होता तो तुरन्त ही यह कदम अुठाता।

मथुरादास: पर यह सच है या नहीं कि बाहर यह स्फुरणा न भी होती?

बापू: हां, लेकिन यह सारा युद्ध मैं कर चुका हूं। शास्त्र कह सकते हैं कि जो खुद शून्य हो गया है, वही यह कर सकता है। मैं यह नहीं मानता कि मैंने शून्यताको प्राप्त कर लिया है। तब तो मेरे लिखने-बोलनेकी बात ही न रहे, ओश्वर ही मुझे चलाता रहे। अुस शून्यताको प्राप्त करनेका यह प्रयत्न है, कदम है। काका सन् ३० में आये। तब मैंने मनमें कहा: यह झंझट आ गअी। मैं ओश्वरके साथ बातें करता था, फिर साथीके साथ बातें करनी पड़ीं। गीता रट रहा था और पूरी भी कर लेता। पर अिससे क्या होता? काकाका समागम तो मेरे लिअे बहुत अच्छा था।

मेरे साथ बैठनेवालोंको परिणामसे कुछ नहीं देखना है। मेरे कन्धों पर भले ही शैतान बैठा हो, पर मुझे तो शैतानके द्वारा भी सब कुछ ओश्वर तक पहुंचाना है। अिसीलिअे ओश्वरने कहा है कि शैतान भी मैं ही हूं, जुआ खेलनेवालेका दाव भी मैं ही हूं। चोर भी ओश्वरकी विभूति

है, किन्तु चोरका तो सर्वनाश ही होता है। गंगामें जब कोओी नाला चला जाता है, तब पवित्र हो जाता है; गंगा समुद्रमें जाती है तभी प्राणवायु पैदा करती है न ?

औीश्वर सत्य है यों कहनेके बजाय सत्य औीश्वर है यों कहना ठीक है। अिसलिअे मैं कहता हूं कि मुझसे सब कुछ करानेवाला औीश्वर है।

लौकिक ढंगसे मैं औीश्वरकी चतुर्भुज मूर्ति देखनेका दावा नहीं करता, कोशिश भी नहीं करता। पर मैं सत्यका, जो रूपातीत है, पुजारी हूं। यह हो सकता है कि मैं कुछ समयके लिअे थोड़ा सत्य देख सकूं। हिरण्मयेन पात्रेण सत्यका मुंह ढंका हुआ है। सोना तो चमकता रहता है, पर अुसे भी हटाना है, तभी सत्य दिखाओी देगा। मेरे साथ जो शैतान साथी थे, वे हट गये, भाग गये। मेरा रसोअिया अेक दिन मेरे घर रहा। दूसरे दिन मुझे शैतानको दिखाकर चल दिया! अुस आदमीसे मैंने कहा: अब अिसे दिखाकर, मेरी सेवा करके तू कहां भागता है! वह बोला: नहीं भाओी, आप मुझे नहीं रख सकते. मैं तो नापाक हूं। अिस तरह औीश्वर शैतानके रूपमें दर्शन देता है। औीश्वर अनेक रूपमें आता है। दक्षिण अफ्रीकामें अेक स्त्रीके साथ खेलने जा रहा था कि अुसके पतिने आकर दरवाजा खटखटाया। वेश्याके यहां औीश्वरने मुझे नपुंसक बनाकर बचाया। लंदनमें साथीने बचाया. अपने पुरुषार्थसे तो मैं बचा ही नहीं। मुझे यह कहनेका अधिकार है कि मैं तो औीश्वरके चलाये चला हूं। अिस तरह कितनी ही बार औीश्वरने मुझे रास्ता दिखाया होगा। ये सारे प्रसंग लिख थोड़े ही रखे हैं? पर ये तो सीमाचिह्नकी तरह रह गये हैं। मैं दुबला-पतला और डरपोक, बोलना आता नहीं, पर मेरा गुजर होता रहा है। दांडी-कूचका मुझे क्या पता था? बड़ीसे बड़ी चीज मुझे आश्रममें ही मिली है। जब प्रस्ताव किया तब जवाहर और मोतीलालजीने कार्यक्रम पूछा, मगर मैं कुछ बता न सका। बादमें आश्रममें आकर नमक और दांडी-कूच सूझी।

(काकासे) यह चीज अैसी है कि छोड़ी नहीं जा सकती, सुन्दर है। आज जो करना है सो प्रायश्चित्त नहीं, यह शुद्धियज्ञ है। यह मुझसे सिर्फ चुपचाप नहीं होगा। मैं तो महात्मा ठहरा, अिसलिअे मुझे ढिंढोरा पीटकर अुपवास करना पड़ेगा। मियाद सिर्फ सरकारके खातिर दी, पर वह शोभा दे रही है। यह तो सबका आरम्भ है, हो सके तो शृंखलाबद्ध ही करना है। पर वह पांचों यमोंका पालन करनेवाले ही करेंगे। अितना करेंगे तो ही धर्मकी जय होगी। औीथर और बिजली वगैरा भौतिक शक्तियां हैं। किन्तु दिव्य शक्तिका विकास भगवान मनुष्यके जरिये ही

कर सकता है। अुसे यह मेरे जरिये नहीं कराना होगा और दूसरेको भेजना होगा, तो दूसरेको भेज देगा। 'यदा यदा हि' का क्या अर्थ है? वह तो रोज आया करता है, अवतार लेता ही रहता है। अिस सत्रसे अखंड अुपवास चलेगा। आंधीकी जरूरत है। हलकी-हलकी हवाके झोखोंसे काम नहीं चलेगा। गीताके चौथे अध्यायमें बहुतसे यज्ञ हैं, अुसी तरह हमें सब कुछ हरिजनोंको अर्पण करना है। अितना करेंगे तो अूंचनीचके सारे भेद तो मिट ही जायेंगे। अिससे हरिजन भाग्यवान नहीं हो जायंगे, पर आन्दोलन ठीक रास्ते पर लग जायगा।

मनुष्य काम करें अिसके लिअे ठहरनेकी जरूरत नहीं। अुन्हें प्रोत्साहन देनेके लिअे, वे ज्यादा वेगसे काम करें, अिसके लिअे यह अुपवास है। यह अुपवास किसी खास आदमीके लिअे नहीं, परंतु सबके लिअे है। नीलाका पाप तो जाहिर हो गया। लेकिन हम सब प्रच्छन्न पापी होंगे, तो हम सब भी शुद्ध हो जायंगे।

यह अुपवास समय पर, ठीक मुहूर्तसे हो रहा है। बहुत देरसे नहीं। किसीसे नाराज़ होकर, किसीने यह काम नहीं किया अिसलिअे यह अुपवास नहीं है। किन्तु अस्पृश्यताकी जड़ अुखाड़नेके लिअे है। अंकगणितसे अिसका निवारण होता हो, तो गणितज्ञोंको अिकट्ठा करें। पर अिसमें तो आध्यात्मिक बलकी जरूरत है, यानी अिसमें सभी अिन्द्रियोंका होम करना है। अिनका होम करने पर तुम्हें अपनी निर्बलता अधिकसे अधिक दिखाअी देगी और अीश्वर अधिकसे अधिक याद आयेगा। खुदाको भी खुशामद प्यारी है, अिसीलिअे वह कहता है कि जो मेरा नाम लेगा, वह पार लग जायगा। अुसे यह खिराज लेनेका अधिकार है। जिस राजाको खिराज लेनेका अधिकार है वह ले।

निर्णयवाले अुपवासको शायद थोड़ी देरके लिअे दबाव कहा जा सकता है। किन्तु अिसमें तो किसी पर दबाव है ही नहीं। यहां तो मुझे बताया जाय कि लोगोंने १६ आने काम किया है, तो भी अिसकी जरूरत होगी। यह तो सिर्फ चाल तेज करनेके लिअे ज्यादा तेल डालना या ज्यादा अींधन डालना कहा जायगा।

रामदास: गति देनेवाले आप हैं। आप चले जायंगे तो यह काम बादमें कौन करेगा? क्या कामके लिअे भी आपको जीना नहीं चाहिये?

बापू: जीवन-मरण हमारे हाथमें नहीं। अगर यह अुपवास न करूं, तो दस बरस जीता रहूंगा, अैसी कोअी गारंटी दिलाये तो यह कहा जा सकता है। मगर यह बात तो है ही नहीं। और जीनेका क्या मतलब? सफल

जीवन। धार्मिक काममें सेनापति बनना हो, तो मरकर जीनेका मंत्र बताना चाहिये। अीश्वरको जिलाना हो तो जिलाये, नहीं तो पल भरमें प्राण ले ले। यह भी हो सकता है कि मेरे जीते जी कोअी शक्ति रुंधी पड़ी हो और मेरे प्राण निकलते ही वह प्रगट हो अुठे। 'कर्मण्येवाऽधिकारस्ते' का अर्थ यह है कि तेरी आंखके सामने पड़ा हो सो कर। शक्ति बढ़ानेके लिअे असे काम करने पड़ते हैं। दूसरा काम करनेके लिअे जैसे खानेकी जरूरत पड़ती है, वैसे अिस कामको करनेके लिअे न खानेकी जरूरत है।

अिस अुपवासके पीछे तीन दिनका जागरण मौजूद है — अितना थका हुआ होने पर भी दो-तीन दिन नींद ही नहीं आअी। साढ़े बारह बजे रातको निश्चय हुआ। कितने दिन? सोमवारसे शुरू करनेमें मुश्किल तो नहीं होगी? अरे पामर, अितनी सारी मुश्किलें बीत गअीं, तो यह क्या मुश्किल है? चार बजे पूरा निश्चय किया। अितनेमें वल्लभभाअी आ गये। वल्लभभाअी अभी तक नहीं बोले। बोलेंगे भी नहीं। पर जीता रहा तो बोलेंगे। वे तो बहादुर आदमी हैं।

खुरशेद बहनने कहा: आध्यात्मिक मामलेमें तो मैं कुछ नहीं बोल सकती। मुझे तो अिसके राजनैतिक पहलूकी चिंता है और चर्चा करनी है। अिस बारेमें आपको क्या लगता है? अुपवासका अुस पर क्या असर होगा?

बापू बोले: अुसकी चर्चा मैं बाहर निकलूं तो कर सकता हूं। यहां नहीं हो सकती।

शास्त्रीके साथ बातें करते हुअे कहने लगे: गोखलेके साथ अेक बार बातोंमें मैंने अुनसे कहा था कि अेक ही दलील अेकको अपील करे और दूसरेको जरा भी अच्छी न लगे, यह कैसी बुद्धि? अिसलिअे आध्यात्मिक बातोंमें मनुष्य अंतःप्रेरणासे ही चल सकता है, बुद्धिके चलाये नहीं चल सकता। मैंने कहा है कि रस्किनकी पुस्तक पढ़कर मेरे विचार बदले, लेकिन यह चीज मुझमें मौजूद थी। प्रतीति तो थी ही। मानो दलीलें देनेके लिअे वह पुस्तक मेरे हाथ लग गअी। और वह भी किस समय? गाड़ीमें पढ़नेके लिअे अुपन्यास ले जाते हैं, रस्किन कौन ले जाय? पर मैं अुसे लेकर चला और दूसरे दिन सारी योजनायें बना डालीं। रॉयल होटलमें बैठकर सादगीकी तैयारी की।

शामको वल्लभभाअीसे बोले: आपके अिस तरह जमकर बैठ जानेसे काम नहीं चलेगा। कुछ न कुछ चर्चा कीजिये, समझनेकी कोशिश कीजिये।

मगर वल्लभभाअीकी जबान नहीं खुली सो नहीं ही खुली। बाहर निकाल दें तो कहां रहें, अिसकी थोड़ीसी चर्चा हुअी। वल्लभभाअीने व्यावहारिक बुद्धिसे तुरंत कहा: अिसकी चर्चा आज तो बाहर नहीं होने दी जा सकती, अिसलिअे अहिल्या आश्रम या राजभोजके आश्रममें आजसे पूछताछ नहीं की जा सकती।

सवा बजे अुठकर महत्त्वके पत्र लिखना शुरू कर दिया: शास्त्रीको, जवाहरलालको और टागोरको। बादमें आश्रमकी बारी आअी। आश्रममें जैसे कल कुछ लिखना बाकी रह गया हो, अिस तरह आज पूरा किया: "व्रतोंका पालन करके योगारूढ़ होकर बलिदान होनेको जो तैयार हों, वे रहें, बाकी सब चले जायं। पुरानोंको दया करके रोजाना कुछ रकम बांध दी जाय और अलग रहने दिया जाय।" मैं तो कांप अुठा। आंसू रुकते ही न थे। मुझसे पूछा: क्या सोच रहे हो? मैंने कहा: क्या सोचूं? मेरी तक़दीर! आमबाड़ीमें आकर अपने दुःखके, पापके आंसू गिराये। मुझे अेक भी जवाब देनेका अधिकार नहीं। मैं सिर्फ आपका मजदूर ही हूं। मुझमें गोलियोंके सामने खड़ा रहनेकी शक्ति है, पर अिस ठंडी मौतकी तैयारी नहीं। गोलियोंके सामने खड़ा रहनेके लिअे यम-नियमोंके पालनकी जरूरत हो, तो सामने खड़ा रहनेकी शक्ति होने पर भी मैं अिनकार कर दूं। मुझे अलग कर दीजिये। मैं आपके पैरोंमें बैठने लायक नहीं। जेलमें आकर बैठा यह अेक संयोग है; पर आपके साथ बाहर निकलूं तो धक्का देकर निकाल दीजिये। फिर मैंने अपने पिताकी बात कही। ब्रह्मचर्यकी प्रतिज्ञा न लेनेकी जो बात कही थी, वह याद दिलाअी। तब कहने लगे: क्या यह जरूरी है कि हममें अपने मां-बापकी कमजोरी आनी ही चाहिये। तब तो कमजोरी स्थायी हो जाय। तब तो सनातनियोंकी यह बात हमें माननी पड़ेगी कि अछूत कर्मके फल भोग रहे हैं और अुन्हें भोगने देना चाहिये। परंतु यह जरा भी ठीक नहीं।

२-५-'३३

अिससे पहले युरोपियन यार्डमें सरकारके जासूस आ गये। क्या कलेक्टर जैसे गोरे कर्मचारीको अैसे गंदे कामके लिअे भेजा जा सकता है? अिसलिअे अुस यहूदी डिप्टी कलेक्टरको भेजा गया। अुसने सफाअीसे बात शुरू की:

आपका पुत्र और आपके नजदीकके साथी आपका विचार बदलनेमें असफल हो गये। आपके विचार बदलनेकी कोअी संभावना नहीं दीखती।

मान लीजिये जेल कर्मचारियों पर जोर न पड़ने देनेके खयालसे हम आपको किसी दूसरी जगह ले जानेका निश्चय करें और स्थानका चुनाव करनेका काम आप पर छोड़ दें, तो आप कौनसा स्थान पसंद करेंगे? आप स्थानके बारेमें कोअी सुझाव दें, तो हम अिन लोगोंसे बातचीत शुरू करें। हमारे ध्यानमें बहुतसे स्थान हैं।

बापू: कैदीकी हैसियतसे चुनाव करना मेरा काम है ही नहीं।

डि० क०: यहांके जेल कर्मचारियों पर जरूरतसे ज्यादा जोर पड़ेगा। हमारी तजवीज आपको मंजूर हो तो हम बातचीत शुरू करें।

बापू: पर अैसे मामलेमें मेरी कोअी पसंदगी ही नहीं।

डि० क०: और कुछ नहीं तो आप निजी तौर पर ही मुझे बता दीजिये। यह चीज आपकी पसंदगीके तौर पर बताअी जायगी। हमें जितना विचार अपनी अिंतजामी सहूलियतका करना है, अुतना आपकी सहूलियतका नहीं करना है। हमारी नजरमें बहुतेरे स्थान हैं: लेडी ठाकरसीका बंगला, सर्वेण्ट्स ऑफ अिंडिया सोसायटी, हिंगणे बद्रुक, महिला आश्रम, महिला विद्यापीठ या डेक्कन जीमखानेके अूपरका कोअी स्थान।

बापू: आप जो कहना चाहते हैं सो मैं अच्छी तरह समझता हूं। लेकिन मैं कोअी पसंदगी नहीं करूंगा।

डि० क०: मान लीजिये हम आपको किसी जगह ले जायं, तो क्या आप आपत्ति करेंगे?

बापू: अिसका आधार अिस पर है कि आप अुसे जेल कहते हैं या नहीं कहते। अगर मुझे छोड़ दिया जाय तो मैं अपनी पसन्दगी काममें लूं और जहां अिच्छा हो वहां जाअूं। साबरमती, बम्बअी या और किसी जगह जाअूं। पर भले ही मुझे आप किसी बंगलेमें ले जायं, तो भी अगर अुसका अर्थ यह होता हो कि दूसरी जेलमें मेरा तबादला हो गया, तो आपके पहरेमें जहां आप ले जायेंगे चला जाअूंगा। पुलिसके बजाय भले ही आप मेरे पहरेदार हो जायं। आपके सब हुक्म मैं मानूंगा, सिवाय अिसके कि अुनमें कोअी बात मेरे मानने लायक न हो।

डि० क०: जैसी स्थिति यहां है, ठीक वैसी ही स्थिति हो तो?

बापू: भारत सरकारके हुक्मके शब्द मुझे देखने चाहियें। मान लीजिये मुझे साबरमती रख दें और कहें कि आपकी हलचलों पर अमुक पाबंदियां रखी जायंगी, तो ये पाबंदियां मुझे मंजूर नहीं होंगी। मेरे पिछले अुपवासके दिनोंमें मेरे पास मुलाकाती आते और बातें करते, लेकिन अुनके

और मेरे बीच साफ समझौता रहता था कि बाहरके आन्दोलनके बारेमें मैं बिलकुल चर्चा नहीं करूंगा। मौजूदा हालतमें अपने पर असा अंकुश रखूं, तो मेरी अन्तरात्मा पर बहुत जोर पड़े। किसी भी अीमानदार आदमी पर यह भयंकर बोझ है। लोगोंको और अखबारवालोंको जवाब देते वक्त असे अंकुशके कारण मुझ पर कितना जोर पड़ता है, यह मैं ही जानता हूं। अपने पर जो अंकुश मैंने लगाये हों, अुनकी मर्यादामें रहनेकी अीश्वरदत्त शक्ति मुझमें न हो, तो मेरा कचूमर निकल जाय। मान लीजिये मैं बाहर अुपवास कर रहा हूं और छठे या सातवें दिन मैं मृत्युके किनारे पहुंच जाअूं और मेरे पास आकर कोअी मुझसे कहे कि हिन्दुस्तानके राजनैतिक भविष्यके बारेमें अपने विचार बताअिये, तो जबरदस्त मानसिक प्रयत्नके बिना मैं अपनेको नहीं रोक सकता। परंतु मुझे कैदीके रूपमें दूसरी जगह हटाया गया हो और सब तरहसे अुस जगहको जेल ही माना जाता हो, तो वहांकी शर्तें माननेके सिवाय मेरे पास कोअी और अुपाय ही न रहेगा।

मार्टिनने डिप्टी कलेक्टरसे कहा: यह आदमी आपकी अेक नहीं चलने देगा।

कोदंडरावको विलायतके तार पढ़कर सुनाये और कहा: अेण्ड्रूजके अिस तारके लिअे मैं तैयार नहीं था। मैंने सोचा था कि वह अन्त तक मेरा विरोध करेंगे और बादमें मानेंगे। पर वह अन्तर्वृत्तिसे ही अिस चीजको समझ गये हैं, यह बड़े आशीर्वादके समान है। आपसे मैं कहता हूं कि अिस अुपवासके विरुद्ध मैं लम्बे समय तक झगड़ा हूं। यह बात मैं स्वीकार करता हूं कि अुपवास मुझे भीतरसे ही अच्छा लगता है। पर अिस बार मुझे वह पसंद नहीं था। अुसके विरोधमें मैं बहुतसी आवाजें सुनता रहा, पर अन्तमें यह चीज दीयेकी तरह स्पष्ट रूपमें मेरे सामने आकर खड़ी हो गअी, तब मैं क्या करता? आज सवेरे तीन मित्रोंको मैंने पत्र लिखे हैं। शास्त्री, टागोर और जवाहरलाल। तीनोंके दृष्टिकोण अेक-दूसरेसे बिलकुल अलग हैं। लेकिन अिन तीनोंके आशीर्वाद मुझे मिल जायं, अिन तीनोंकी प्रार्थनाअें अेकत्रित हो जायं, तो यह कितनी सुंदर चीज होगी?

विलायतके तार पढ़नेके बाद कहने लगे: मुझे जाना होगा तो संसारके आशीर्वाद लेकर ही जाअूंगा।

कोदण्डरावसे मजाक किया: आप औपचारिक मुलाकात करने आये हैं या शोक प्रगट करने? या फिर सर्वेण्ट्स ऑफ अिंडिया सोसायटीमें अेक पगलीको रखनेके लिअे मुझसे माफी मंगवाने आये हैं?

यह पगली वही मार्गरेट, जिसने कल अनेक नाटक किये। बापूको पागल शब्दसे संबोधन करके पत्र लिखा, फिर सात बार माफी मांगी और बापूने शामको अुसे छुट्टी दे दी। आज सुबह फिर पत्र आया: "आपने अीश्वरके प्रति मेरी श्रद्धा नष्ट कर दी है, मैं अुपवास करूंगी और मर जाअूंगी। अपने वसीयतनामेमें मैं अपनी सब चीजें आश्रमके लिअे और अपना शरीर सासून अस्पतालके लिअे छोड़ जाती हूं।"

अिस लड़कीके बारेमें क्या कहा जाय? बापू शामको बोले: अिसके पागलपनमें भी अेक पद्धति है। यह सच्ची है और अिसमें कोअी शक नहीं कि जो जीमें आता है बकती रहती है। अिसकी सचाअीमें से अच्छा परिणाम निकल सकता है।

तारोंकी बातें करते हुअे मुझसे पूछने लगे: वल्लभभाअी अभी तक मुझसे चिढ़े हुअे हैं?

मैंने कहा: चिढ़ क्या होगी? दुःख है।

बापू: पर तुमने तो कल अैसा खयाल कराया था कि अुन्हें क्रोध है।

मैंने कहा: तो मेरी भाषा गलत थी। क्रोध हो ही नहीं सकता। अुनकी सम्मति है, यह न मानिये। अुनके दिलमें तीव्र वेदना छाअी हुअी है। पर वे चाहते हैं कि आप जीयें या मरें, कुछ भी हो, आपके चारों तरफ असंतोष, कलह और अप्रसन्नताका वायुमण्डल न हो।

बापू: यह मैं समझता हूं। यह क्या अीश्वरकी थोड़ी दया है कि वल्लभभाअी जैसा बहादुर व्यक्ति पासमें है? अुनमें भारी अीश्वर श्रद्धा तो मौजूद ही है।

मैंने कहा: मैंने तो कल अुनसे कह दिया कि अुपवास जारी रखनेके लिअे हम अभागे चाहे लायक न हों, पर आप तो हैं ही; और आप जारी रखें तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा।

वैकुण्ठभाअी और मथुरादासके साथ:

"तुम पर बमगोला क्या गिराया? पहले पहल बमगोला मुझ पर पड़ा। मैं किसे खबर दूं? गणितके सवालका जवाब कअी दिनों तक न मिले और फिर अेकाअेक मिल जाय, अैसी बात हुअी। धर्मके काममें और कुछ होता ही नहीं। मृत्युरूपी बमगोला हमेशा आ ही पड़ता है। पदमजी और अुनकी लड़की मर ही गये। . . . को मरना चाहिये था, वह नहीं मरा। अिस प्रकार हम तो बमोंके बीचमें पड़े हैं। अैसे बम भी गिर सकते हैं। हमें आघात पहुंचता है, क्योंकि हम हिन्दू धर्मको भूल गये हैं। स्त्रियां यह जानती हैं।

मेरी मांने तो आधी जिन्दगी अुपवासमें बिताअी थी। अेकादशी चूकती नहीं, सोमवार चूकती नहीं, चातुर्मास तो होता ही, बच्चे बीमार हो जायं तो अुपवास — अिलाज हमेशा अुपवास और चंडीपाठसे ही किया जाता था — अिन सबको न रोको, तो मैंने ही क्या गुना किया है?

दोष तो मैंने देख लिया है, पर वह कहा नहीं जा सकता। अभी-अभी अेक पर्चा आया है, पंथकीका। वह तो पागल आदमी है। पर दूसरे भी कअी पत्र आते हैं। अुपवासका निश्चय करनेमें कितनी बातोंका हाथ है, यह नहीं कहा जा सकता।

महादेव कहता है कि नाटार हरिजनोंका किस्सा मुझे गुस्सा दिलानेवाला था। यह बात सच है। हरिजनोंकी हालत तो देखो! स्त्रियां लज्जा तक नहीं ढंक सकतीं। अिसके लिअे तो मैं ४२ दिनके अुपवास करूं। पार्वतीसे शिवजी भला क्यों विवाह करने लगे? अुसनें अुपवास किये तब शिवजीने झख मारकर अुससे विवाह किया। भगवान रामचंद्रजीको भी कहां छोड़ा? भरत कैसा अुपवास करके बैठे? कितने बरसका? यह सब किस लिअे? आजके रावण तो अुस समयके रावणसे भी भयंकर हैं। अुस बेचारेने तो सीताजीको मलिन स्पर्श तक नहीं किया था। मगर आजके रावण?

कितना मैल घुस गया है, अिसकी तुमसे क्या बात करूं? तुम तो अितने प्रेमसे अुमड़ रहे हो कि शायद करोड़ों रुपये अिकट्ठे कर दोगे। पर अरबोंसे भी मेरा पेट कैसे भरेगा? लोगोंके दिल कौन हिला सकता है? पोर्ट आर्थरमें मुर्दोंका पुल बनाया गया था। अिसी तरह अहिंसामें स्वयं दुःख झेलकर सामनेवालेको आघात पहुंचाना है। यह तो मैंने तोपकी बत्ती सुलगा दी है, अिसके बाद अेकके बाद अेक अुपवास करता रहेगा। आज तो झूठ चल रही है, दंभके लिअे दगाबाजी हो रही है, रुपया बरबाद किया जा रहा है और डंडेबाजी हो रही है। ये सब अिस अुपवासके सामने ठंडे पड़ जायंगे। मेरे अेकके अुपवाससे नहीं, पर दूसरे बहुतोंके अुपवाससे। अिसीलिअे मैं कहता हूं कि यह अुपवास साथियोंके लिअे है।

आंबेडकर बेअीमान नहीं है। लेकिन अैसा नहीं दीखता कि अुसकी अीश्वरमें श्रद्धा हो। वह अछूत कहलानेमें गर्व समझता है। अिसमें अुसने राजनीतिको और मिला दिया है। अिस गंदगीको कौन मिटाये? अछूतोंको कौन मनाये? मैंने तो कल कह दिया कि अैसे कामोंका आरम्भ अुपवाससे ही होता है। यह अभ्यास कुछ समयसे बंद हो गया था। अुसे अब मैं फिर

ताजा कर रहा हूं। रॉलेट अेक्टके समय शुरू किया था, पर अब — अब लोगोंने अुसे भुला दिया है।

पर सरकारको कितना सुरक्षित रखकर काम कर रहा हूं? हां, अिसमें खतरा है। मेरा अुपवास तो शुरू हो ही गया है। काम बढ़ गया है। सवा बजे अुठ गया और काम कर रहा हूं। अिसलिअे खाया नहीं जाता। अिस प्रकार अुपवास शुरू होने जैसा ही हो गया।

हमारी 'चंडाल चौकड़ी' ने तो यह निश्चय किया है कि हरिजन मुहल्लेमें जाकर अुपवास किया जाय। पर वह दिन कहां कि मियांके पांवमें जूती हो?

बम्बअीके अुपवासका वक्तव्य तैयार करनेके बाद मथुरादासको बताया था। अिसी तरह दूसरे अुपवासके बारेमें हुआ था।

लीलावती: करोड़ों मनुष्योंकी अिच्छाकी आपको परवाह नहीं?

बापू: कौन जानता है करोड़ोंकी अिच्छा क्या है? वे सब तो आज खुश हो रहे होंगे। रामचंद्रजी वनवासको निकले, तब हजारों लोग बाहर निकल पड़े और देवताओंने फूल बरसाये। आजके करोड़ों हरिजन देवता आनन्दसे नाचते होंगे।

लीला: आपका अीश्वर मेरी समझमें नहीं आता।

बापू: समझमें नहीं आता अिसीलिअे तो यह अुपवास है। वह अीश्वर अितना युक्तिबाज और नाटकी है कि अुसे समझना मुश्किल है।

मथुरादास वसनजी खीमजीसे: अिस लड़ाअीमें कोअी भी गंदा आदमी भाग न ले यह देखना। नहीं तो हाथ मलनेकी नौबत आ जायगी।

मैकेके साथ:

अिंग्लैंडसे प्रिय मित्रोंके संदेश मुझे मिले हैं। अुनसे मुझे बड़ा आनंद हुआ है। मैं जो कदम अुठानेवाला हूं, अुसकी सच्चाअीका अुन्हें अन्तर्वृत्तिसे ही विश्वास हो गया दीखता है। अुन्होंने अिन शब्दोंमें अैसा कहा नहीं है। लेकिन अुनके संदेशोंका मैं यह अर्थ करता हूं। मुझे डर लगता था कि अिस अुपवासका अनोखापन वे नहीं समझ सकेंगे। पर मेरा डर बेबुनियाद निकला। मि० अेण्ड्रूज अपनी तरफसे और मित्रोंकी तरफसे संदेश भेजते हैं। दूसरा सन्देश पोलाक दम्पतीका है। जब मेरी बात समझमें नहीं आअी, तब वे मेरी आलोचना करनेमें कभी नहीं हिचकिचाये। मुझे अैसा अस्पष्ट भय था कि मेरी यह कार्रवाअी अुन्हें पसंद नहीं आयेगी। हिन्दुस्तानसे भी मुझे मित्रोंके संदेश मिलते रहते हैं और मैं आशा रखता हूं कि थोड़े ही

मेरा विश्वास बढ़ता जा रहा है कि मेरे लिअे अिस अुपवासको टालना संभव नहीं था। **अिस प्रवृत्तिको शुद्ध नैतिक भूमिका पर रखना हो और अुसमें घुस जानेवाले स्वार्थी या अशुद्ध आदमियोंसे अुसे मलिन न होने देना हो, तो अिसके सिवाय दूसरा कोअी अुपाय ही नहीं था।** अब मैं आशा रखता हूं कि अस्पृश्यता-निवारणके कार्यक्रमकी अलग-अलग चीजोंको — अस्पृश्यता-निवारणके बिलोंके पक्षमें लोकमत तैयार करनेकी बात तकको — अच्छी तरह सफल बनानेके लिअे अिस बारेमें काम करनेवाले दुगुने जोशसे जुट जायेंगे। मुझे विश्वास हो गया है कि अैसा किये बिना प्रगति रुक जाती। मैं चाहता हूं कि सनातनी और सुधारक अगले सप्ताहोंमें मिल-जुलकर काम करें और अिन कानूनोंमें जो कोअी कमी दिखाअी दे, अुसे दूर करके समझौता कर लें।

आप पूछते हैं कि मुझे छोड़ दिया जाय तो? अिस प्रश्न पर असलमें मैं विचार ही नहीं कर सकता।

वल्लभभाअी अिस अुपवासको किस दृष्टिसे देखते हैं, अिस बात पर अुनका सर पुरुषोत्तमदासको लिखा हुआ पत्र बहुत प्रकाश डालता है:

"बापूने अिस बारकी अपनी प्रतिज्ञामें किसीकी सलाह या सम्मति ली ही नहीं। पिछली बारकी प्रतिज्ञा धार्मिक होने पर भी अुसमें राजनैतिक तत्त्व समाया हुआ था। अतः अुतने भरके लिअे मेरे साथ सलाह करनेकी अुन्होंने जरूरत स्वीकार की थी। अिस बार ली हुअी प्रतिज्ञा केवल धार्मिक होनेके कारण अुसमें मेरी सम्मतिका सवाल ही नहीं था। रातको अेक बजे जब हम सब सो रहे थे, तब अुन्होंने अपना निर्णय किया और डेढ़ बजे वह वक्तव्य तैयार कर डाला, जो प्रकाशित हुआ है। सुबह चार बजे हम अुठे, तब मेरे हाथमें दिया। मैंने देखा कि अुसमें फेरबदल करनेकी जरा भी गुंजाअिश नहीं रखी गअी थी। फिर भी अिस बारेमें पूछकर यकीन कर लिया और जब जान लिया कि निर्णय हो चुका है, तब तो मुझे पक्का विश्वास हो गया कि मेरे लिअे अीश्वरकी अिच्छाको शिरोधार्य कर लेनेके सिवाय और कोअी मार्ग नहीं है।

"और मेरे साथ पहले सलाह की होती तो भी यह माननेका कोअी कारण नहीं कि अुनके किये हुअे निर्णयमें मैं परिवर्तन करा सकता था। हां, मैं अपने दिलके कुछ गुबार जरूर निकाल लेता। वैसे, अिस तरहके केवल धार्मिक निर्णयोंमें फेरबदल करा सकनेकी योग्यता मुझमें नहीं है।

“ आप आकर क्या करेंगे? आप, मैं या कोअी भी क्या कर सकता है? सोचा हुआ तो मालिकका होता है और होगा। किसीकी धार्मिक प्रतिज्ञाको तुड़वानेका निष्फल प्रयत्न करनेके पापमें हम क्यों पड़ें? हिन्दू धर्मका प्रामाणिक और सतत पालन करनेवाला आज कौन है? अगर होता तो आज हमारी यह दशा न होती। तब अैसा धार्मिक पालन करनेवाला जो अेक व्यक्ति हमारी जानकारीमें है, अुस अेककी भी ली हुअी प्रतिज्ञाको सगे-सम्बन्धी या स्नेही आग्रह करके छुड़वा सकते हैं, यह मान लिया जाय तो भी अुससे हिन्दूधर्मको या देशको क्या लाभ होगा? मेरी अल्प-मतिके अनुसार तो अिससे अुलटा ही नतीजा निकलेगा। अिसलिअे अुन्हें रोकनेके प्रयासको मैं अनुचित और बेकार समझता हूं।

“प्रतिज्ञाके गुण-दोष विचारने पर भी यरवदा-समझौतेके बादका हिन्दू समाजके कुछ भागोंका बरताव देखते हुअे और खास तौर पर सनातनी तथा कुछ शिक्षित हिन्दू जिस ढंगसे प्रचार कर रहे हैं, अुसे देखते हुअे जल्दी या देरसे अुपवास तो आने ही वाला था। तब फिर थोड़े दिन और अुपवास टाला न जा सका, अिसीके लिअे शोक क्यों किया जाय? गुरुवायुरका आन्दोलन शुरू हुआ, तबसे आज तक सनातनी जो पत्रव्यवहार कर रहे हैं, वह सब मेरे देखनेमें आया है। हिन्दू धर्मकी रक्षाके नामसे जिस हलाहल झूठ और प्रपंचका भारी प्रयोग हो रहा है, वह भी मैं देख रहा हूं। बड़ेसे बड़े पद पर पहुंचे हुअे हमारे ही कुछ भाअी अिस आन्दोलनको ‘राजनैतिक चालबाजी’ समझते हैं और बापू पर ढोंगका आरोप करते हैं। अैसी दशामें करोड़ों गरीब और अपढ़ अंत्यजोंको दिये हुअे वचनके लिअे ये कहां तक मुह बंद करके देखते रहें? हिन्दू धर्मकी रक्षाका और कोअी मार्ग आपको सूझता है क्या? अगर दूसरा कोअी मार्ग न हो, तो जिसे धर्म अपने प्राणोंसे भी प्यारा हो वह दूसरा क्या करे?

“बापूकी अुम्र और शरीर-संपत्ति देखते हुअे अिक्कीस दिनके अुपवासकी बातसे कंपकंपी जरूर छूटती है। अुन्हें खुद तो विश्वास है कि अीश्वर अुपवास निर्विघ्न पूरा करा देगा। पर मुझे भय है कि यह आशा दुराशा जैसी है। लेकिन जो अनिवार्य है, अुसका शोक करनेसे क्या होगा? प्रभु जो करेंगे वह अच्छा ही होगा।”

पंडितजीके साथ अिसकी चर्चा की कि आश्रमके द्वारा अुपवासका तांता कैसे जारी रखा जा सकता है। अिक्कीस ही किये जायं सो बात नहीं, चौदह भी किये जा सकते हैं। अिस प्रकार आश्रममें कोअी न कोअी तो करता ही

रहेगा। चौदहसे कम तो हरगिज नहीं हो सकते। अिस अरसेमें विनोवा और नारायण शास्त्री जैसे लोग तो वाहर अुपवास करते ही होंगे।

तळगांवकर और हरिभाअू वगैरा आये। तळेगांवकर खूब रोया।

आज भी विनोद करानेवाली मार्गरेट मौजूद थी। अुसने आकर माफी मांगी। अुसे वापूने फटाकसे जोरका तमाचा जमा दिया और कहा: मेरे पास दो विचित्र लड़कियां आ गअी हैं। अेक पापमें डूबी हुअी है; दूसरी पागल है, जो और भी वुरी है।

मार्गरेट: हां, वापू।

वापू: तुम अैसी हो कि मुझमें कुछ अुदासी हो तो अपने विचित्र व्यवहारसे अुसे दूर कर देती हो।

अुसने होटलमें जाकर रहनेकी वात कही, अिसलिअे अुससे सब रुपया ले लिया। गलेका हार निकलवानेकी वात कही, तो वोली कि मुझे सुनारके यहां जाना पड़ेगा।

वापू वोले: अितना सुनार तो मैं हूं ही कि अेक पलमें अिसे निकाल दूं। फिर तुम कहोगी कि मेरा पिता प्रेमी ही नहीं, होशियार भी है। तुमसे ज्यादा होशियार तो है ही। अुसे ओसाअी सेवक संघमें जानेको कहा। फिर पूछा: पता है मूर्खोंके लिअे क्या दवा है? मौन।

मार्गरेट: मुझे माफ कीजिये। मैं जरा अुद्धत हूं।

वापू: नहीं, नहीं। तुम अुद्धत नहीं मानी जा सकतीं। अुद्धत मनुष्योंको तो मेरे पाससे तुरंत लाल चिट्ठी मिल जाती है।

शास्त्री: अुसमें अपवाद होते हैं। अुदाहरणार्थ वह रिपोर्टर।

३-५-'३३

सवेरे मैंने पूछा: अिस अुपवासके वारेमें आप जो कह रहे हैं और लिख रहे हैं, अुससे कृत्रिमता और दंभको प्रोत्साहन नहीं मिलता?

वापू: मैं जानता हूं कि मिल सकता है। लेकिन अुसका क्या अिलाज है? दुनियामें क्या ओश्वरके नामके चारों तरफ बेहद कृत्रिमता और दंभ नहीं फैला हुआ है? धर्मके अिर्दगिर्द भी अैसा ही नहीं हुआ? पर अिससे क्या ओश्वरको भुला दिया जाय? या धर्मको भुला दिया जाय? मैं जानता हूं कि वहुत लोग अनधिकार अुपवास कर वैठेंगे। अुन्हें रोका जा सकता है। अुदाहरणके लिअे, . . . को मैं पहलेसे ही लिख चुका हूं कि तुम यह नहीं कर सकते। अुनकी वुद्धि संकुचित हो गअी है। वे वंगालके

मतको समझनेकी कोशिश ही नहीं करते। तुलसीकृत रामायणकी अुनकी प्रस्तावनामें बड़ी भक्ति और नम्रता भरी हुअी है, पर अुनमें बड़ा अभिमान भी मौजूद है। अुनके लिअे मेरे दिलमें निन्दा तो हो ही नहीं सकती। पर हम तो अुनकी योग्यताका विचार कर रहे हैं।

मैंने पूछा: तो आश्रममें आप अुपवासका सिलसिला जारी रखनेकी जिनसे आशा रखते हैं, वे सब . . . से बढ़कर हैं?

बापू: हां, हां। मैं तुमसे बात कर रहा हूं अिसलिअे कहता हूं, क्योंकि तुम अनर्थ नहीं करोगे। अिन लोगोंमें दूसरी योग्यता चाहे थोड़ी हो, पर . . . की अयोग्यता भी नहीं होगी।

मैंने कहा: लेकिन यह सब अुन्हींको सोचना रहा न? मुझे कोअी पूछे कि गांधीजीके सौ या पांच सौ अुपवास करनेवालोंमें . . . सच्चे हैं या नहीं? तो मैं तो हां ही कहूं।

बापू: यों तो मैं भी हां कहूंगा। पर अुनका नम्बर आखिरमें आयेगा। जैसे छोटेलाल मौका पड़ने पर सबसे बढ़ जानेवाला है, पर आज मैं अुसे अुपवास नहीं करने दूंगा।

अब तुम्हारी तटस्थताकी शिकायतके बारेमें। तुम कहते हो वैसी तटस्थता रहनी ही नहीं चाहिये। मैं अपने निर्णय हजार बार विचार करके करता हूं और करनेके बाद बदलता नहीं। अिसलिअे अिन निश्चयोंमें ही अितनी परिपक्वता होती है कि अुन्हें बदलनेके लिअे अेक भी दलील काम नहीं आ सकती। अुनके लिअे मेरे पास जवाब होता ही है। अिसका क्या किया जाय? तुम कहते हो वैसे तटस्थ तो शास्त्री हैं। पर यह कमजोरी है, जिसकी हंसी वल्लभभाअी कअी बार अुड़ाते हैं और जिसकी कड़ी आलोचना दासने की थी।

मैं अपने अुपवाससे निकलनेवाली बातें आश्रमको न समझाअूं तो किसे समझाअूं? आश्रम अर्थात् मैं। आश्रम मेरी ही मूर्ति है। अिसलिअे जो मैं करता हूं वह आश्रम ही न करे, तो दूसरे किससे आशा रखी जाय? अिसीलिअे मैं आश्रमसे अधिकसे अधिककी आशा रख रहा हूं।

(मैक्रेसे) मैं जानता हूं कि यह जबरदस्त सरकार मेरे लिअे योजनाअें सोच रही है, फिर मैं किस लिअे कोअी चिन्ता करूं?

सरोजिनी: अीश्वरको या शैतानको आपने कोअी मौका नहीं दिया।

बापू: पर सरकारको जरूर देता हूं।

सरो०: अिस समय भी आप स्वास्थ्य अच्छी तरह संभालकर रख रहे हैं।

बापू: मौत आनेसे पहले किस लिअे मरूं?

बा और मीराबहनका हृदयवेधक तार आया। बापूने अुसका वैसा ही मर्मस्पर्शी अुत्तर दिया।

जनरल स्मट्सका अुदार प्रेमसे छलकता हुआ तार अखबारोंमें आ गया है, पर सरकारके वहांसे यहां तक पहुंचनेमें तो अुसे अभी कअी दिन लगेंगे।

सरोजिनी नायडूने कल आते ही बापूको यह पत्र भेजा था:

"यह मैं अपने आनेकी सूचना देनेके लिअे लिख रही हूं। आपके व्यक्तिगत निर्णयके बारेमें मैं जानती हूं कि आप अीश्वर या शैतानको चुनाव करनेका मौका देनेवाले नहीं हैं। आज शाम तक आपसे मिल जाअूंगी, पर वह विरोध करने, बहस करने, समर्थन करने, या निन्दा करनेके लिअे नहीं। आप जितने आप हैं, अुतनी ही मैं भी मैं ही हूं।"

डॉ० अंसारीका कल शामको तार आया था: मैं अिस अुपवासकी मंजूरी नहीं दे सकता, पर अुपवास हो ही जाय और डॉक्टर कहें कि खतरेकी हद तक पहुंच गये, तब आप अुपवास छोड़ दें। अिसका जवाब दिया:

४-५-'३३

"आप तो खुदा पर यकीन रखनेवाले हैं। आपसे कहता हूं सो सच मानिये कि यह अुपवास मैंने अपनी खुशीसे अपने पर नहीं लिया। यह खुदाका सख्त फरमान है। अिसलिअे वही मेरा अदृश्य हकीम है। अगर अुसकी देखभालसे भी मैं न बचा, तो आपके जैसे कुशल डॉक्टर और पैगम्बर साहबको आफतके वक्त मदद देनेवालों (अंसारियों) के वंशज मुझे कैसे बचा सकेंगे? प्यार।"

रंगूनवालोंको अिस नाजुक मौके पर भी जायदादके बंटवारेके बारेमें सलाह लेनी है। बापू बोले: सोमवारको भी मिलने आने देना चाहिये। परम मित्रके पुत्र हैं, अुन्हें अिनकार कैसे किया जाय?

खंभाता जैसेको पर्चा लिखकर तंदुरुस्ती संभालनेकी सलाह दी: "मेरा अुपवास अीश्वरके हाथमें है, अिसलिअे अुसकी चिन्ता होनी ही न चाहिये। अगर वहीं गाय मिल जाय तो अपने सामने अुसका थन साफ करवा कर निकाला हुआ दूध लें तो बहुत अच्छा। दूध और फलोंके रसके अलावा कुछ भी न लीजिये। आपको और तेहमीनाको आशीर्वाद — बापू।"

राजाजीके साथ संवाद:

बापू: कानून-शास्त्रमें भी आत्महत्याका हक माना गया है। आप मुझे पूछेंगे कि रामतीर्थ, रामकृष्ण या विवेकानन्द किसने अैसी तपस्या की है? रामतीर्थने जान-बूझकर आत्महत्या की या समाधिमें अैसा किया, पर अुसका कोअी नतीजा निकला है? आप तो यह भी पूछेंगे कि औसा सूली पर चढ़े. अुसका कोअी असर हुआ है?

राजाजी: पर हिन्दूधर्म आत्महत्या स्वीकार नहीं करता।

बापू: मुझे मालूम नहीं। लेकिन महादेव मुझे कहते थे कि गंगामें डूब मरनेका रिवाज है।

राजाजी: वह तो गंगाजलसे पवित्र होनेके लिअे है। मैं अितना स्वीकार करता हूं कि अिस सारे पापका कारण यदि आप हों तो भले ही आत्महत्या करें। तार्किक दृष्टिसे आपकी जीत होगी, पर अैसी जीत तो आपको नहीं चाहिये न?

बापू: मुझे तो प्रायश्चित्त करना है। नैतिक अुद्देश्य पूरा करनेके लिअे साधन भी नैतिक होने चाहियें। कार्डिनल मेनिंगको तीन बिस्कुट और पानी पर रखा गया था। कार्डिनल मेनिंग जिस धीमी मौतसे मरे कहे जाते हैं, अुससे अिक्कीस दिनके अुपवास करना बहुत आसान है। नैतिक सुधार तपश्चर्या और आत्मशुद्धि जैसे नैतिक साधनोंसे ही हो सकता है। अिसमें जिन वैज्ञानिकोंने अिस चीजका अनुभव किया है, अुनके अुदाहरण लेने पड़ेंगे। मैं और मेरी मां अैसे कुटुंबमें जन्मे हुअे हैं, जिसमें अैसे व्रत लेना रोजमर्राकी चीज थी। अुनका यह अनुभव है। मेरी मांके अैसे कड़े व्रत शायद मेरे पिताको अच्छे न लगते हों, पर अुस पर अिनका कोअी बुरा असर नहीं हुआ था। बल्कि अिस कारणसे अुसके प्रति हमारा आदर बढ़ता ही था।

राजाजी: यह अुदाहरण केवल विचार-साहचर्यका है। मां अैसे व्रत करती थी, अिसलिअे आप भी करें, क्या अिसका सचमुच कोअी बचाव हो सकता है? कोअी आदमी शरीरमें सूआ भोंक ले, तो अिससे लोग कैसे समझेंगे कि मनुष्यको अछूत समझना पाप है?

बापू: तब थोड़े दिनके अुपवास करूं तो? या अिस अुपवासके अंतमें न मरूं तो?

राजाजी: अिन दोनोंके बीच कोअी संबंध ही नहीं। आप तो यह मानते दीखते हैं कि देह-दमन और प्रतीतियोंके बीच गूढ़ सम्बन्ध है। अैसे देह-दमनके विरुद्ध बुद्धने पहली आवाज अुठाअी थी।

बापू: सच्चा अुपवास तब माना जाता है, जब चित्त और आत्माका शरीरके साथ सहयोग हो। बुद्धने जो आपत्ति की थी, वह केवल शरीरके अुपवासके विरुद्ध थी।

राजाजी: दस दिनके बाद आप स्पष्ट विचार करनेकी शक्ति रख सकेंगे?

बापू: पहले तो मैंने रखी ही थी। शुद्ध अुपवाससें विचार ज़्यादा पवित्र हो जाते हैं। हां, अिसका कोअी बाहरी चिन्ह नहीं दिखाअी देता। अेक साथीने पचपन दिनके अुपवास किये, तो भी अुसके विचार शुद्ध नहीं हुअे थे, क्योंकि अुसका चित्त शुद्ध नहीं था। पहले ही दिन अुसने मुझसे चर्चा करनी शुरू कर दी कि अुपवासके अन्तमें वह क्या करेगा। आजकल अुसका दिमाग ठिकाने नहीं है। अुसने मुझे अपने मनकी मलिनता बतानेवाला अेक पत्र लिखा था। किन्तु जिस आदमीका चित्त अीश्वरमें या पवित्र कार्यमें लगा होता है, अुसे जो चीजें शुरूमें अंधकारमय दीखती हैं, वे धीरे-धीरे अधिकाधिक स्पष्ट होने लगती हैं।

राजाजी: यह अेक खास हद तक ही सच माना जा सकता है।

बापू: यह कहनेमें आप खतरनाक भूमिका पर जा रहे हैं। वैज्ञानिकोंका अनुभव आपको मानना चाहिये। जो मनुष्य पवित्र है, सत्यपरायण है और सत्य पर ही कायम रहना चाहता है, वह भौतिक विज्ञानवेत्ताओं जैसा ही वैज्ञानिक है।

राजाजी: पर यह तो अस्वाभाविक स्थिति कही जायगी।

बापू: पशुओंके लिअे अस्वाभाविक हो सकती है, मनुष्योंके लिअे नहीं। आपको अदृश्यका दर्शन करना हो, तो अदृश्य होना पड़ेगा।

राजाजी: आपको अदृश्यका दर्शन करना है?

बापू: हां। क्योंकि मुझे हरिजनोंकी सेवा अुत्तम रूपसे करनी है। अस्पृश्यताको मिटाना हो, तो सोलह करोड़ मनुष्योंके हृदय तक असर पहुंचाना ही चाहिये।

राजाजी: भूतप्रेतसे बचनेके लिअे लकड़ीको छूना अेक वहम है और अुसमें अीश्वरको भी शामिल कर दिया जाता है। पर अिन गूढ़ बातोंकी भी हद होती है।

बापू: मुझे गूढ़ तत्त्वोंसे शर्म नहीं आती। आप तो यह कहना चाहते हैं कि गूढ़ तत्त्वको मानना हानिकारक है।

राजाजी: हां, अगर अुसका परिणाम मौत होता हो।

वापू: आप तो दूध-दही दोनोंमें पैर रखते हैं। वहसके लिअ में कहता हूं कि आपकी यह बात मुझे मंजूर है कि आत्मघाती अुपवास बुरा है, लेकिन सब अुपवास अैसे नहीं होते। आपकी दलीलका अर्थ तो यह होता है कि देह-दमनसे लाभ हो ही नहीं सकता।

राजाजी: हो भी सकता है।

वापू: डॉक्टरी दृष्टिसे?

राजाजी: नहीं, मानसिक दृष्टिसे भी।

वापू: तब आप हार गये। अैसा हो तो अुपवास करनेवाले व्यक्ति पर यह बात छोड़ देनी चाहिये। यह अुपवास मैंने स्वेच्छासे अपने अूपर नहीं लिया। अिसके लिअे मुझे आदेश मिला है।

राजाजी: ठीक। अिस मामलेमें मित्र आपको सलाह तो दे सकते हैं?

वापू: जरूर।

राजाजी: अगर अिसमें ८० फी सदी मौतकी संभावना हो, तब तो यह जुआ होगा। आप कहेंगे कि यह अच्छा जुआ है। मेरे खयालसे तो जेलमें रहकर अेककी अेक बातका मनमें विचार करते रहनेसे आप तारतम्य बुद्धि खो बैठे हैं। आपमें प्रयोग करनेका बहुत जबरदस्त कुतूहल है। यह आप मौतके साथ प्रयोग कर रहे हैं; अिसमें आप गलत रास्ते लगे हैं। अैसा कोअी आदमी बतायेंगे, जिसने आपका यह कदम पसन्द किया हो?

वापू: डंकन, अेण्ड्रूज।

राजाजी: अिन लोगोंकी रायकी कितनी कीमत समझी जाय? अिनसे तो मेरी राय कितनी ही बढ़कर है। अेण्ड्रूजको कमरेको ताला लगाना तक नहीं आता और वे जीवनको ताला लगानेकी बात करते हैं। और आप भी अीश्वरके कानून पूरी तरह जाननेका दावा कैसे कर सकते हैं? मैं तो कहता हूं कि आप ज्यादा सावधान बनें। कभी-कभी अीश्वरकी प्रेरणा मिलना संभव है, पर हमेशा नहीं मिल सकती।

वापू: तो आप अीश्वरी प्रेरणाकी संभावना तो मानते हैं न? मानो अिसलिअे आप अपना केस हार गये।

राजाजी: किन्तु अिस अवसर पर यह प्रेरणा गलत भी हो सकती है। बुद्धिको बन्द कर देनेमें तो अधीरता मालूम पड़ती है। कभी-कभी अीश्वर अधीरताका भी रूप धारण कर लेता है। कभी-कभी दुष्टका रूप भी धारण करता है, कभी मछलीका और कभी कछुअेका रूप धारण करता है। मैं तो यही चाहता हूं कि आप अितना समझ लें कि कभी-कभी आपकी भी भूल होती होगी। मैं चाहता हूं कि अिस मामलेमें आप अितना समझ लें।

वापू: पर परिणाम ज़ाने विना मैं भूल कैसे कबूल करूं? अिस
पवासका निश्चय मैंने अपनी अिच्छाके विरुद्ध जाकर किया है। महादेव
रे पत्रोंसे वतायेंगे कि मेरा मन किस तरह काम कर रहा है।

राजाजी: यह तो आप विचारोंकी गड़बड़ कर रहे हैं।

फिर वापूने यह वर्णन किया कि निश्चय कैसे किया और बोले:
ापकी दलील मान लूं, तव तो मुझे काम करना बन्द कर देना चाहिये।

राजाजी: किन्तु वुद्धिसे विरुद्ध अैसी प्रेरणा नहीं हो सकती।

वापू: मेरी वुद्धिसे विरुद्ध नहीं है। . . .

अिसमें अेकमात्र हेतु शुद्धिका है। मेरी अपनी शुद्धि और साथियोंकी
ुद्धि। दूसरे परिणाम अिसीसे निकल आयेंगे। मैं देख रहा हूं कि मेरी
ज़िंदगीमें अशुद्धि कायम है। अिसका अर्थ यह हुआ कि खुद मुझमें
ाशुद्धि है।

अेक हरिजनसेवकके सामने:

ज़ो मर गये, वे मनुष्य क्या आज काम नहीं करते? पवित्रता आदि
ुण सत्यकी सन्तान हैं। अुनका नाश नहीं होता। सत्यके वृक्षका नाश नहीं,
ासत्यके वृक्षका नाश हो गया है। सत्यके वृक्षके फल आज हम भोग रहे
। मैं तो रामरस लेना चाहता हूं। रामरस मुझे जीता न रखे, तो
ासंवीका रस कैसे जिलायेगा? जो अस्पृश्यताका नाश करना चाहता है,
ुसे रामरस पीना चाहिये। मैं रामको धोखा नहीं दूंगा। मेरी रामकी
ाक्ति हार्दिक हो, तो यह शरीर हरगिज नष्ट नहीं होगा। आपको निश्चिन्त
हना चाहिये और आपके हरिजनोंमें जितने दुराचार हों अुन्हें मिटा देना
ाहिये। अिस पर भी अिस शरीरको नष्ट करनेकी रामकी अिच्छा होगी,
ो वह अिसीलिअे होगी कि शरीर और किसी तरह नष्ट हो, अिसके
ाजाय तो अिसी तरह नष्ट हो, यही अुत्तम है।

फिर वापस राजाजीके साथ:

मेरी स्थिति अैसी नहीं हो गअी है कि दूसरे-तीसरे विचार ही न आवें।

मान लीजिये कि जिन चीजोंको मैं अशुद्ध वताता हूं, वे शुद्ध सावित हो
जायं, तो भी मैं अुपवास करूंगा। अशुद्धियां जरूर हैं और मेरे खयालसे मैं
अुनके लिअ जिम्मेदार हूं। अिसके अलावा अिस सवालका राजनैतिक दृष्टिसे
विचार किया जाता है, यह गलत है। वुनियादी वात यह है कि यह
आन्दोलन धार्मिक वृत्तिसे ही चलाया जाना चाहिये।

धर्म भीतरी समझकी चीज है। वह हृदयकी बात है, श्रद्धाकी बात है, सनातन मूल्यकी बात है। शरीरोंके रूपमें हमारा कोअी सनातन मूल्य नहीं। अीश्वर कहता है कि नामरूपधारी सब वस्तुओंका नाश निश्चित है। सूर्य भी सनातन नहीं। विज्ञान भी अिस मामलेमें गवाही देता है। पर हमारी प्रवृत्तियां भौतिक चीजोंके साथ बंधी हुअी होती हैं। मेरा अुपवास पूरी तरह आध्यात्मिक हेतुके लिअे है। जो मुझसे बुद्धिमें अनंत गुने बढ़कर हों, अुनके सामने मैं बहसमें कैसे टिक सकता हूं? किन्तु जब हृदयकी प्रतीतिकी बात आ जाती है, तब मैं अुनके सामने खड़ा रह सकता हूं; क्योंकि अुसमें कोअी संस्कृत भाषाके ज्ञानकी जरूरत नहीं पड़ती। गरीबोंके सौभाग्यसे अुसका स्थान हृदयमें है और मैं हृदयकी शोधके लिअे अुपवास करता हूं। यद्यपि बरसातके लिअे और दूसरी भौतिक वस्तुओंके लिअे अुपवास करनेकी प्रथा है जरूर।

फिर राजाजीके साथ खूब लड़े, झगड़े, आग बरसाअी और क्रोध तथा आवेशके साथ बोले:

मेरी प्रतीतियोंका आपको आदर करना चाहिये। आप तो मुझे अपनी प्रतीति अेकाअेक छोड़ देनेको कहते हैं। मेरे साथ लड़िये, बहस कीजिये, संभव है मैं भूल करता होअूं। पर आप तो मुझे संभव वस्तुको निश्चित रूपमें माननेको कहते हैं। अगर मैं अिस निश्चितताके साथ अुपवास करता होअूं कि अिस अुपवाससे मेरी मौत हो ही जायगी तो मैं झूठा हूं। जब तक आप मेरे विधानोंको लेकर मुझे विश्वास न करा दें कि अिस चीजमें मेरी भूल है, तब तक आपको मेरा विश्वास विचलित नहीं कर देना चाहिये। कोअी भी मनुष्य अीश्वरके जैसी निश्चितता प्राप्त नहीं कर सकता। पर अपनी नावका खेवैया तो मैं ही हो सकता हूं न?

रातको बापूको अफसोस हुआ। और राजाजीके साथ गुस्सेमें जो बात की, अुसके लिअे अुनसे माफी मांगनेकी प्रतिज्ञा की।

सवेरे दो बजे अुठकर राजाजीको माफीनामा लिखा।

५-५-'३३

शंकरलाल आये। अुनके साथ अुपवासके बारेमें बातें कीं: यह अुपवास सब अुपवासोंसे ज्यादा पवित्र है। यह शुद्धिका काम और किसी तरह हो ही नहीं सकता। मनुष्यको बड़ा काम करना हो और अपना बोझ अीश्वर पर डाल देना हो, तो अुसे शून्य बन जाना चाहिये। यह शून्यता और किस तरहसे प्राप्त की जा सकती है?

हमारे यहां हठयोग है, सांस रोकनेकी क्रिया है। समाधिस्थ मनुष्यको जहर नहीं चढ़ता। दूसरी राजयोगकी क्रिया है। यदि मेरा चिंतन ही अिस तरह जारी रहा कि मैंने अीश्वरके साथ मन जोड़ लिया है — मन समाधिस्थ है — तो मेरा शरीर नहीं गिरेगा। मेरे मनकी समाधि कुदरती ही होगी। अिस अुपवासमें मेरे मन पर पिछले अुपवासोंसे ज्यादा काबू होगा। लेकिन अगर मैं सिर्फ रामरस ही न पीता होअूंगा, तो यह शरीर चला जायगा। अगर मैं चला गया तो यही समझना कि यह काम अीश्वरको मेरे हाथों नहीं कराना था। मैंने नारणदासके क्रोधकी बात करके लिखा कि मुझमें भी क्रोध भरा हुआ है, तब दूसरेके क्रोधकी बात क्या कहूं? यह जो क्रोधरूपी विच्छू पड़ा है, वह मौका पड़ने पर प्रगट हो ही जाता है।

शंकरलाल: मैं तो मानता हूं कि आप विना प्रयोजन अुपकार करनेवाले हैं। मैं अुपवास करूं तो वह किसी खास अुद्देश्यसे होगा। आप किसी अैसे हेतुसे नहीं करेंगे यह मैं जानता हूं। अिसमें आपको दोष बतानेवाला मैं कौन? अितना जरूर कहूंगा कि जो नैतिक परिवर्तन आपको चाहिये, अुसके लिअे समयकी जरूरत है। दांत अुगनेमें भी दो बरस लगते हैं। मैं अितना आपके पास रहा, फिर भी अभी तक मुझमें जरा भी शुद्धि नहीं आअी, तो औरोंकी क्या बात करूं? पामर किसान, हरिजन, आज अनेक प्रकारसे परेशान हैं। अुन्हें और परेशान न कीजिये।

मैं आपसे करोड़ों मील दूर रहनेके लायक भी नहीं। आपके पास रहूं तो आपकी अेक अेक चीजको अपवित्र कर दूं। फिर भी आप मेरी मां किस लिअे बने? मैं तो कामना करता हूं कि आप जियें। अिसे मोह कहिये, या जो चाहें सो कहिये। मैं तो अपना पापी दिल आपके सामने खोल रहा हूं।

मैक्रेकी गप्प थी कि आप तीन दिनमें छूट जायंगे। छूटनेके बाद क्या करेंगे?

बापू: जब तक मैं छूट नहीं जाता, तब तक यह नहीं कह सकता कि छूटनेके बाद क्या करूंगा।

फिर मार्गरेटके बारेमें बोले:

अुसमें जो विचित्रता है, अुससे अुसे बचा लेनेकी जरूरत है। विरोधमें अुपवास करनेका अुसने जो पागल निश्चय किया है, अुसे धीरे-धीरे समझाकर छुड़वाना चाहिये। मैंने जो पवित्र निश्चय किया है, वह किसीके अैसे निर्णयसे बदल नहीं सकता। अिसलिअे मैं आशा रखता हूं कि जो कोअी अुसे संभालेगा, अुसमें अितनी मानव-दया होगी कि अुसके पागल विचारमें अुसे प्रोत्साहन नहीं देगा।

अिस अुपवासका विचार मैं छोड़ दूं, तो मैं बिलकुल निकम्मा आदमी बन जाअूं। कारण मैं मानता हूं कि यह अीश्वरका भेजा हुआ है। हां, अैसा माननेमें मेरा भ्रम हो सकता है।

आठ तारीखको बारह बजे मेरी स्वतंत्रता शुरू होनी है। पर तुम कहते हो अुस तरह जेलसे छूटकर नहीं।

मेरे बारेमें यदि अितना कहा जाय कि मैंने कभी दुष्टतासे काम नहीं लिया, तो मुझे पूरी तरह सन्तोष होगा।

केलकरने कहा कि अिसमें जबरदस्ती है।

बापू: मैं जो मांगता हूं, वह सब भी सनातनी दे दें, तो भी मैं अुपवास करूंगा। तब जबरदस्तीकी बात ही कहां रह जाती है?

जमनालालजीका तार आया: "आनेकी जीमें आअी। पर पैसा अुछाला तो परिणामस्वरूप रह गया हूं।"

सरोजिनी हंसकर कहने लगीं: तब अिसके लिअे भी पैसा अुछाला जाय तो कैसा रहे कि आपको अुपवास करना चाहिये या नहीं?

राजाजीने फिर बहस की: अेक बात साफ है कि आप मरनेका निश्चय नहीं कर बैठे हैं।

बापू: हां, अितना तो साफ है। लेकिन डॉक्टर कहें कि आप अिक्कीस दिनके अुपवासमें जिन्दा नहीं रह सकते, तो अिससे मैं अपने निश्चयसे डिगूंगा नहीं। अैसी संभावना दीखती तो नहीं कि कमजोर पड़ जाअूंगा। मेरा विश्वास तो बढ़ता ही जा रहा है कि अीश्वर मेरे बूतेसे बाहर मेरी परीक्षा नहीं लेगा।

<table><tr><td>६-५-'३३</td><td>राजाजीके साथ नरसिंहमकी चिन्ता करते हैं और यह चर्चा करते हैं कि अुसे लोनावला भेजा जाय या सिंहगढ़। राजाजी यह चर्चा करनेसे साफ अिनकार करते हैं, फिर भी बापू आग्रहपूर्वक चर्चा करते हैं।</td></tr></table>

आज सवेरे कहने लगे: मेरा शरीर मुझे अत्यन्त स्वस्थ लगता है। धुरंधर कहते हैं कि अिस अुपवासका निश्चय कर डाला, यह मानसिक दृष्टिसे बहुत अनुकूल चीज होगी। यह बात मैं भी मानता हूं। देखो न, पिछले अुपवासके समय मैं शरीर पर प्रयोग कर रहा था—रोटी, चपाती और डबल रोटी, वगैराका। अिस बार तो अिस अुपवासकी तैयारी फल और दूधसे महीने भर पहलेसे हो रही है।

बादमें बोले: और मुझे तो यह पक्का विश्वास है कि अीश्वरको मुझे अिस कामके लिअे जिलाना है। मेरी मौत हो जाय तो भी आस्तिक लोगोंको तो जरा भी नहीं डरना है। अुनकी आस्था कायम रहेगी। पर नास्तिक और भी आस्तिक बनेंगे और सनातनी नाचेंगे। कौन जाने भगवान क्या चाहता होगा।

(राजाजीसे) मैं कहता हूं कि नीलाके या आश्रमके बालकोंके किस्सोंसे यह अुपवास नहीं आया। यह मैं सोलह आने सच कहता हूं।

लक्ष्मण शास्त्री: अुपवासकी प्रतिज्ञा करनेके बादकी आपकी हालत देखता हूं, तो मुझे आपके चेहरे पर शान्ति और आनन्द मालूम होता है, जो मैं पहले नहीं देखता था।

अुनके सामने अुपवासके कारणोंका पृथक्करण किया: तीन भाग — (१) हरिजनों पर हो रहे अत्याचार; (२) अेक प्रोफेसर लिखते हैं कि हम हरिजनोंसे ही हिन्दूधर्मकी रक्षा कर सकेंगे; अिसमें गुण्डाशाही है और स्वार्थ है; (३) हरिजनसेवकोंके दिलमें है कि राजनैतिक सत्तासे सब कुछ हो सकेगा। अुनमें अपवित्रता मौजूद है। अुसके भयानक अुदाहरण मेरे पास आये हैं।

धार्मिक परिवर्तनके लिअे यज्ञके सिवाय दूसरा अुपाय नहीं है।

हरिलालके पत्रका हृदय-परिवर्तन करनेवाला अुत्तर दिया। काकाके सामने बोले: हरिलाल अगर वापस मिलता हो, तो अुसके लिअे बयालीस अुपवास करूं।

मनमोहनदास रामजी अपने लड़केके साथ आये।

म० रा०: अंत्यजोंके लिअे सब सुविधाअें कर देना हमारा फर्ज है। अिसी तरहका व्यवहार हो रहा है। कुछ मान्यताअें अितनी गहरी जड़ें जमा कर बैठ गअी हैं कि अुनमें यह परिवर्तन करना मुश्किल है।

मन्दिरोंके बारेमें सब राजी हों यानी कौन? ट्रस्टी राजी होंगे, पर अन्दर जानेवाले राजी हैं? ये लोग अंत्यजोंके साथ जानेको रजामन्द न हों तो? अिसलिअे अेकमत हुअे बिना रोज मारपीट होगी। वैरसे काम कम होता है। यह काम किसी दिन तो होगा हीं। काल बलवान है, पर बलात्कारसे वह न होगा।

बापू: मैं तो बलात्कार चाहता ही नहीं।

म० रा०: यह जो पतन हुआ है अुसका कारण यह है कि धर्माचार्य अपना कर्तव्य भूल गये हैं। अुनसे मैं तो कहता हूं कि आप सुअीकी नोक पर हैं। कब अुखड़ जायंगे, यह नहीं कहा जा सकता।

बापू: अिसीलिअे मैं कहता हूं कि धर्म कानूनके हाथमें चला जाय, यह मैं नहीं चाहता। मैं तो मित्रोंसे कह रहा हूं कि अस्पृश्यता-निवारणका बिल पास कर दो तो मन्दिर-प्रवेशके बिलकी जरूरत नहीं।

डॉ० सैयदसे बापूने कहा कि २९ तारीखको मिलने आना। यह अपनी निश्चित तारीख देता हूं।

सैयद: मैं आपके लिअे प्रार्थना करूंगा।

बापू: दुष्टके लिअे जरूर प्रार्थना करना।

जादव नामक हरिजन विद्यार्थी कहता है कि मुझे आपके सिवाय और किसीसे मदद नहीं लेनी, क्योंकि सारी दुनिया झूठी है।

बापू: तब तो तुझे मुझको छोड़ देना चाहिये। अगर मेरे तमाम साथी झूठे हों, तब मैं तो झूठका पुतला हूं।

वह थोड़ी देर स्तब्ध रहा और फिर सिसक-सिसक कर रो पड़ा और बोला: ' अगर जगत झूठा न हो तो आप हमें छोड़कर क्यों चले जा रहे हैं? हम पापी हैं, आपके सब साथी पापी हैं, अिसीलिअे आप चले जा रहे हैं न?

बापू: मैं कहां चला जा रहा हूं? मैं तो जीता ही रहूंगा। देख मैं जीता रहूंगा और तुझसे कहता हूं कि २९ तारीखको मेरे लिअे अेक नारंगी लेकर आना। तेरी नारंगीके रससे अुपवास तोड़ूंगा। वह सुन खुश होकर चला गया।

अेक मुलाकात:

मेरी बदकिस्मतीसे अीश्वरको या सत्यको यह अुपवास जब भेजना चाहिये था अुससे बहुत देरमें भेजा है। पर अीश्वरका काजी मैं कौन? अिसलिअे मुझे अुसके कड़े फरमानको मानना ही पड़ता है। मेरी राय यह है कि यरवदा-करार हो जानेके बाद हरिजनकार्यका आरंभ करनेसे पहले मुझे अैसे अुपवास करने चाहिये थे। पर अैसा होना नहीं लिखा होगा, अिस-लिअे अुपवास अब आये। प्रवृत्ति शुरू हो जानेके बाद अुसकी तैयारीके रूपमें यज्ञ अब होता है। लेकिन साथ ही साथ यह शुद्धियज्ञ भी है। आपको अितना समझना चाहिये कि ये सब निश्चय करनेके बादकी दलीलें हैं। जब मुझे महसूस हुआ कि मुझे स्पष्ट आदेश मिल गया है, अुस वक्त ये सारी दलीलें मेरे सामने नहीं थीं। अुस वक्त तो आदेश मेरे सामने आकर खड़ा हो गया और मैं अुसके वश हो गया। आपके दूसरे सवालका जवाब अब बहुत सीधा और आसान हो जाता है। यह अुपवास मेरे दुःखकी प्रतिक्रिया बिलकुल नहीं। मैं जिन्हें अशुद्धियां कहता हूं और आप जिन्हें अनुचित कार्य

कहते हैं, अुनके लिअे यह प्रायश्चित्त जरूर है, और वह अनिवार्य था। मैं पूरे विश्वासके साथ कह सकता हूं कि यह बात भी बिलकुल गलत है कि अशुद्धिके आघात पहुंचानेवाले अुदाहरण पाये गये, अिसीलिअे मैं अुपवास कर रहा हूं। क्योंकि जो बड़ी अशुद्धियां मेरे ध्यानमें आअीं, अुनकी तारीखें भी मैं दे सकता हूं। और फिर भी व्यक्तियोंके अुन दोषोंके लिअे अुपवास करनेका मुझे अुस समय कारण नहीं जान पड़ा था। व्यक्तियोंके दोषोंके लिअे मैंने पहले अुपवास जरूर किये हैं, पर कैदीके रूपमें जेलमें मैं अैसे अुपवास नहीं कर सकता। परन्तु हरिजनकार्य जैसा महान आन्दोलन चलाना दूसरी ही बात है। व्यक्तिके दोषके लिअे हर बार अुपवास करना किसी भी मनुष्यकी शक्तिके बाहर बात है। यद्यपि यह जरूर कहा जा सकता है कि अैसे अुदाहरणोंके कारण अुपवासके लिअे मेरे दिलमें अनजाने भूमिका तैयार हुअी, फिर भी अिस यज्ञके लिअे मुख्यत: या पूरी तरह कोअी अेक प्रसंग या व्यक्ति जिम्मेदार है, अैसा मैं निश्चित रूपसे अंगुली अुठाकर नहीं बता सकता। यह कहा जा सकता है कि अिस अुपवासकी बहुत समय पहले जरूरत थी, लेकिन मैं आज कर रहा हूं। जरूरत अिसलिअे थी कि मेरी अपनी और मेरे साथियोंकी शुद्धि आवश्यक है।

अिसलिअे सोमवार ८ तारीखको बारह बजे मैं जीता रहा, तो यह अुपवास शुरू हो जायगा।

सवेरे कहने लगे: अच्छा, अब तो भगवान रखेंगे तो ३० तारीखको गीताका पाठ करेंगे। और सबके साथ तो न जाने कब?

७–५–'३३ वल्लभभाअी: मैं तो २९ तारीखको कैसे साथ रहूंगा?

बापू: अीश्वरकी शक्ति अपार है, वह अकल्पित वस्तुअें भी कराता है। २८ तारीखको ही अिकट्ठे हो जायं तो?

सुपरिन्टेंडेंट आये और बोले: अुस यार्डमें जाअिये। अेक सेवक ले जायगा।

बापू: सब या मैं अकेला? पिछले अुपवासके समय भी अैसा ही हुआ था।

वह बोला: अच्छा तो पूछकर आअूंगा। कल जाअिये।

दिन भर पत्र ही लिखते रहे। मेरा लेख सुधारा और अिसमें राजाजी पर किये हुअे क्रोधके बारेमें भी अिशारा करनेको कहा।

विलायतके सब मित्रोंको पत्र लिखे। हेनरीको लिखा:

"तुम्हारा प्रेमभरा संदेश मैं रख छोड़ता हूं। अिस परीक्षामें वह भोजनसे भी ज्यादा काम देगा। मनुष्य केवल रोटी पर ही नहीं जी सकता।"

निर्मलाबहन बकुभाअीको:

"मैं जानता हूं कि असंख्य भाअी-बहनोंको दुःख हो रहा है। पर महाव्यथाके बिना कभी जन्म हुआ है? हम नये जन्मके लिअे तड़पते हैं, अिसलिअे मैं तो अिस महाव्यथासे शुभकी ही आशा रखता हूं। धीरज रखकर जो सेवा हो सके करना।"

मीराको:

"मैं चाहता हूं कि मेरे साथ तुम्हें भी अैसा महसूस हो कि यह अुपवास अीश्वरकी अब तक मुझे दी हुअी भेंटोंमें सबसे बड़ी भेंट है। मैं भयके साथ और कांपते हुअे अिसका विचार करता हूं, यह मेरी कमजोर श्रद्धाकी निशानी है। पर अिस बार मेरे अंदर अैसा आनन्द प्रगट हुआ है, जैसा मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया। मैं चाहता हूं कि तुम अिस आनंदकी हिस्सेदार बनो। हम अुपवासका अर्थ समझते नहीं और यह मान लेते हैं कि स्थूल भोजन करना बन्द कर दिया कि अुपवास हो गया। पर यह कोअी बात नहीं। खुराक न लेना अुपवासका अनिवार्य अंग जरूर है, पर अुसका सबसे बड़ा अंग नहीं है। बड़ेसे बड़ा अंग तो प्रार्थना, अीश्वरके साथ अेकरूप होना है। यह चीज स्थूल भोजनसे ज्यादा अच्छी और अुचित है।"

चार्लीको:

"ज्यों-ज्यों समय बीत रहा है, त्यों-त्यों अिस अुपवासके समर्थनमें ज्यादा सबूत मिलते जा रहे हैं। चारों तरफ होनेवाली घटनाओंने सोचे हुअे अुपवासके बिना मेरा चूरा-चूरा कर डाला होता। किन्तु संकल्प कर लेनेके बाद अिन घटनाओंके बीचमें मैं अब शांत खड़ा हूं। अब पहलेसे बहुत ज्यादा विश्वासके साथ यह सब कुछ मैं अीश्वरके चरणोंमें रख सकता हूं।"

बाको:

"गीताके अेक नहीं अनेक श्लोकोंका भाव यह है कि जो काम अीश्वरके नाम पर अुसकी प्रेरणासे होता है, अुसे वही पूरा कराता है। कर्ता-हर्ता तो वही है, अिसलिअे हम तो कोरेके कोरे हैं। जैसे कोअी लकड़ीसे दूसरेको मारे तो वह काम लकड़ीका नहीं, परन्तु लकड़ीके मालिकका है। अिसी तरह अगर हम अपना शरीर अीश्वरको सौंप दें और वह शरीरसे कोअी काम कराये, तो वह काम शरीरका नहीं बल्कि अीश्वरका है। यश-अपयश अुसीका है। अिसलिअे समझ लेना कि जिसने अुपवास कराया है, वह अुसे जरूर पार लगायेगा।"

अफीको :

"आखिर तुमसे नहीं रहा गया। पर तुम्हारे लम्बे तारके लिअे मैं क्षमा करता हूं। वेचारे गरीब हरिजन! वे कहेंगे कि अुनके बहुतसे सेवकोंमें से अेकके लिअे जितना प्रेम तुम्हें है, अुतना हमारे (हरिजनोंके) लिअे नहीं है। अुनकी यह शिकायत क्या सही नहीं है? अुनसे मैं कहूंगा कि अब तुम सुधर जाओगी।

"मैं जानता हूं कि तुम मेरे लिअे प्रार्थना करती ही हो। ये प्रार्थनाअें मुझे टिका रखेंगी। यह पत्र तुम्हारे पास पहुंचेगा तब तक तो यदि अीश्वरकी अिच्छा होगी तो अुपवासकी आधी मंजिल तक पहुंच जाअूंगा। पर अुसने और कुछ सोचा होगा, तो वह भी अुतना ही अच्छा होगा। यह शरीर काम करना बन्द कर देगा, तो अुससे कोअी आत्मा काम बन्द नहीं कर देगी। यह अुपवास अीश्वरकी भेंट है। मैं चाहता हूं कि तुम अिस खुशीमें शरीक हो जाओ। अीश्वर तुम्हें शांति दे।"

[८-५-'३३ के रोज बारह बजे अुपवास शुरू हुआ। अुसी दिन शामको छः बजे बाद बापूको छोड़ दिया गया। छूटकर वे लेडी विट्ठलदास ठाकरसीके बंगले पर गये और अुन्होंने अेक वक्तव्य लिख डाला। रातको ११ बजे कांग्रेसके अध्यक्ष श्री अणेको बुलवा लिया। सविनयभंगकी लड़ाअी ६ हफ्तेके लिअे बन्द रखनेकी अुन्हें सलाह दी और अपना वक्तव्य अुनसे पसंद करवाकर अखबारवालोंको दे दिया।

महादेवभाअी यरवदा जेलसे १९ तारीखको छूटे और १९ व २० को वे पूनामें बापूके साथ रहे। बादमें बापूने अुन्हें साबरमती आश्रममें भेजा। २६ तारीखको आश्रमसे लौटकर वे बापूसे मिले।

ता० ८-५-'३३ से ३१-५-'३३ तककी डायरी महादेवभाअी लिख नहीं सके। पर बापूके अुपवास पर 'वह अनोखा अग्निहोत्र' शीर्षकसे अुन्होंने 'हरिजनबन्धु' में जो दस लेख, लिखे हैं, वे परिशिष्ट ३ में दिये गये हैं।

— **संपादक**]

भविष्यकी बातें हुअीं। बापूको निश्चित रूपसे लगता है कि अुन्हें वापस ले जायंगे, पर अभी अुनकी तदुरुस्ती सुधरने देंगे।

१-६-'३३ बादमें राजनैतिक परिस्थिति पर बापूने खुद ही बोलना शुरू किया:

दोनों पक्षोंने जो रुख लिया है, अुससे लौटना अुनके लिअे मुश्किल है। दोनोंकी स्थिति बिलकुल साफ है। सरकारको अपनी अख्तियार की

हुआी नीति पर निर्दयताके साथ अच्छी तरह अमल करना है। मैं अिसे अच्छी तरह समझ सकता हूं। मेरे मनमें अुसका जवाब भी बिलकुल स्पष्ट है। किसानोंको और आम जनताको हमें अिस लड़ाअीमें शामिल नहीं करना चाहिये। हम अुन पर जरा भी बोझ न पड़ने दें। अकेले शिक्षित वर्गमें से ही जो हमारे पक्षमें आयें, सिर्फ अुन पर ही आधार रखें। अुन्हें भी कांग्रेसकी तरफसे किसी आर्थिक मददकी आशा नहीं रखनी चाहिये। जिन्हें मददकी जरूरत हो, वे अपने मित्रों, पड़ोसियों और अैसे ही दूसरे लोगोंसे ले लें। वे लगातार जेलमें जाते ही रहें। कोअी प्रदर्शन न किये जायं। जैसे, कांग्रेसके अधिवेशन करना बन्द हो जाना चाहिये। जरूरत हो तो नामको अेक डिक्टेटर मुकर्रर कर दिया जाय। मगर अैसा करनेमें मुश्किल आयेगी, यह मैं जानता हूं। अिसलिअे डिक्टेटर भी मुकर्रर न किया जाय।

लड़ाअीमें जरा भी गुप्तता तो होनी ही न चाहिये। करबन्दीका कार्यक्रम भी नहीं हो सकता। मुझे खुद तो हमेशा अैसा लगा है कि स्वराज्यके लिअे करबन्दीकी लड़ाअी बहुत मुश्किल चीज है। यह चीज बड़े महत्त्वकी जरूर है, पर अुसके लिअे हमारी तैयारी कभी थी ही नहीं। अब तक हमने करबन्दीकी जो लड़ाअियां लड़ी हैं, अुनके अुद्देश्य मर्यादित थे, और अुनके लिअे वे बिलकुल जरूरी थीं। पर स्वराज्यके लिअे करबन्दीकी लड़ाअी लड़ना खेल नहीं है। हम यह बात साफ तौर पर जाहिर कर दें और अपने वक्तव्यमें लोगोंको यह कह दें कि अिस तरह लड़ाअीको सीमित करनेमें हम लड़ाअीको जरा भी नहीं छोड़ते, और जिन लोगोंने कष्ट सहन किया है अुन्हें भी नहीं छोड़ते। बल्कि लड़ाअीको और भी अूंची भूमिका पर पहुंचा रहे हैं। किसी न किसी दिन तो जब्त हुअी तमाम जमीन वापस मिलने ही वाली है। लोगोंमें यह विश्वास होना ही चाहिये। लेकिन जिनमें यह विश्वास न हो, वे जमीनको खोअी हुअी समझ लें। बड़ी लड़ाअियोंमें लोगोंने हमेशा जान और माल गंवाये हैं।

अपने दावे और अपने ध्येय हम फिरसे जाहिर कर दें। देशको अुस ध्येयसे दूर नहीं, बल्कि अुसके ज्यादा नजदीक ले जानेके लिअे जो-जो करना पड़े अुसे जरा भी हिचकिचाये बिना करनेके लिअे राष्ट्रके सामने कार्यक्रम रखें। अिस चीजकी चर्चा मैंने वल्लभभाअीके साथ की है। मैंने अिस पर खूब विचार किया है और मैं अिन बड़े-बड़े निर्णयों पर पहुंचा हूं।

राजाजी: परन्तु जिन लोगोंने अभी तक जमीन वगैरा गंवाया है, अुनका क्या होगा? मुझे तो यह अेक ही विचार — जायदाद वापस दिला देनेका — सत्ता हस्तगत करनेको ललचाता है। जो विधान वे तैयार कर

रहे हैं, अुसमें मैं देखता हूं कि जायदाद वापस लेनेमें भी कोअी वाधा नहीं पड़ेगी। मैं नहीं जानता यह विचार मुझे अपनी कमजोरीसे आ रहा है या मेरी अिस प्रकारकी प्रतीतिके कारण आ रहा है।

वापू: अिसमें कमजोरीका सवाल ही नहीं। अिस और अैसी दूसरी चीजोंके लिअे सत्ता लेनेका विचार मुझे भी आया है। और वल्लभभाअी भी अुसमें सहमत हुअे हैं। किन्तु आज हमें सत्ता लेनेका विचार जरा भी नहीं करना चाहिये। आज तो हमें लड़ाअीको तीव्रताके अूंचेसे अूंचे दर्जे पर जारी रखनेका ही विचार करना चाहिये। अुसे चलानेके लिअे हम सिर्फ आधे दर्जन ही रह जायं, तो मुझे अुसकी परवाह नहीं।

फिर राजाजीने नीचे लिखे सवालों पर विचार करनेका सुझाव दिया: (१) व्यक्तिगत रूपमें हम जो कुछ कर सकते हों, अुसके सिवाय हम संगठित रूपमें कुछ भी कर सकते हैं या नहीं? (२) अिस योजनामें अेक दूसरेके साथ संवन्ध रखना, संगठन वनाये रखना असंभव हो जाता है।

वापू: मैं खुद तो व्यक्तिगत रूपमें जितना हो सके अुसीसे संतोष मानूंगा।

राजाजी: आप गुप्तताकी मनाही कर देते हैं, तव कुछ तरहके काम तो असंभव ही हो जाते हैं।

वापू: मुझे तो थोड़े लोगोंमें अूंचेसे अूंचे प्रकारके वलिदानकी भावना जगानी है। अिसके लिअे शुद्ध कुन्दन जैसी देशभक्तिकी जरूरत है। अुस पर हम सुंदर अिमारत खड़ी कर सकेंगे। अैसा नहीं करेंगे तो पत्तोंके महलकी तरह सव कुछ धड़ामसे नीचे गिर जायगा। अिसमें से हम सच्चा सत्याग्रह पैदा कर लें। पूरी शुद्ध न हों, अैसी वहुतसी चीजोंकी अपेक्षा विलकुल शुद्ध अेक ही चीज ज्यादा अच्छी है।

सवेरे छः वजे।

२-८-'३३

राजाजी: अुपवासके वादके आपके वक्तव्यके अलावा और कुछ भी करनेकी अिस समय जरूरत है क्या?

वापू: शुरूमें मैंने वाअिसरॉयको मुलाकातके लिअे जो अर्जी दी थी, अुसे फिरसे ताजी करना चाहिये। मैं अिरविन-गांधी समझौता फिरसे अमलमें लाने, नमक लेनेकी अिजाजत देने और विदेशी कपड़े और शराबकी दुकानों पर विलकुल शान्त धरना देनेकी छूट देनेकी मांग करूंगा।

राजाजी: आपके वक्तव्यका जवाब तो वे दे चुके हैं। क्या आपको लगता है कि अिस विषयमें फिर कुछ लिखा जाय?

बापू: मुझे लगता है कि बातचीत जहां रुक गअी थी, वहांसे फिर शुरू करनेका मैंने जो वचन दिया है, अुसे हमें अीमानदारीसे पूरी तरह पालना चाहिये।

राजाजी: परन्तु अिन लोगोंने तो कहा है कि सविनयभंग पूरी तरह वापस लेकर आअिये।

बापू: बातचीत शुरू करनेके बाद वे अैसा कह सकते हैं। यह चीज तो जब सुलहकी शर्तोंकी चर्चा हो तब कही जा सकती है। आज सविनय-भंग वापस लेनेके लिअे जो तंत्र चाहिये वह कहां है? सविनयभंग कौन वापस ले? अिसलिअे कैदियोंको छोड़नेसे पहले सविनयभंग वापस लेनेकी शर्त हो ही नहीं सकती। मुझमें हारकी भावना जरा भी नहीं है। हम यह खयाल ही बरदाश्त नहीं कर सकते कि हमने बुरा किया है या समझौतेको तोड़ा है। अैसी शर्तों पर सुलह हो ही नहीं सकती। अैसी शर्त मान लें, तो हम बाजी हार जायं और बरबाद हो जायं। हमारा दावा तो यह है कि गांधी-अिरविन समझौतेका भंग हमारी तरफसे जरा भी नहीं हुआ। तुम्हें चाहिये तो अिसकी जांच करनेके लिअे पंच मुकर्रर करो। निष्पक्ष पंचका फ़ैसला माननेको मैं तैयार हूं। लेकिन अैसे किसी सुझाव पर विचार करनेके लिअे वे तैयार ही नहीं हैं। मेरा तो खयाल है कि अिस बार भी वाअिसरॉयका अुत्तर पिछली बार जैसा ही मिलेगा। वह कहेगा, हम मह मानते हैं कि सविनयभंग बिना शर्तके और पूरी तरह छोड़ देनेके सिवाय और किसी बातकी चर्चा करनी हो, तो आपसे मिलनेका कोअी अर्थ नहीं। फिर भी यह जरूरी है कि कोअी मार्ग बतानेवाला नहीं, मगर सिर्फ अुससे मिलनेकी मांग करनेवाला पत्र लिखा जाय।

राजाजी: भारत मंत्रीको कुछ न लिखा जाय?

बापू: अुसके विचार तो मैं जानता हूं। रंगस्वामीने मुझसे कहा था कि होरने अुनको मित्रतापूर्ण निजी पत्र लिखा था कि श्वेतपत्रमें अपरिवर्तनीय कुछ भी नहीं है, अिसलिअे अुन्हें मिलने आना चाहिये। अिस परसे रंगस्वामी अुसे मिलने गये। होरको लगता है कि अुसका काम कुछ सुधार कर देना और दुनियाको बता देना है कि सब दलों, नरम दलवालों और कांग्रेसका भी पूरा सहयोग अुन्हें मिल रहा है। 'रंगस्वामीसे सुधारोंके पक्षमें कुछ कहलवा सकें, तो बहुत अच्छी बात है। पर वह अिनकार कर दे, तो यह भी ठीक है।' अैसा अुसका रुख है। वैसे शिमलाका तंत्र भी वही चलाता है।

अिन सब बातोंके पीछे वािअसरॉयका नहीं, परंतु अुसका हाथ है। बर्कनहेडकी नीति पर वह ज्यादा मीठे ढंगसे अमल कर रहा है। अिसमें मैं आपसे कोअी नअी बात नहीं कह रहा हूं। क्योंकि ये सब समाचार लेकर ही मैं लंदनसे आया था। और अिंग्लैण्डमें सभी — अिरविन, बाल्डविन, केण्टरबरीका आर्च बिशप — अुसकी नीतिका बचाव कर रहे हैं।

अेल्विनको अिरविनके लिखे हुअे पत्रका जिक्र करके राजाजी कहने लगे: अिरविन यह मानता दीखता है कि समझौतेका अितना ज्यादा भंग हुआ है कि अुसको फिरसे ताजा नहीं किया जा सकता। अिसलिअे समझौतेकी जरा भी बात करना जरूरी नहीं है।

बापू: यह तो चर्चा यहां तक पहुंचे तो हम अुसकी बात चलायें। पर हम मिलेंगे तो भी अन्तमें कोअी नतीजा निकलनेवाला नहीं है। बर्कनहेड और रीडिंगने यही कहा था: 'अगर लड़ाअी न करनी हो, तो पार्लियामेण्ट जो दे रही है वह आपको ले लेना चाहिये; और पार्लियामेण्ट धीरे-धीरे सुधार देनेवाली है। अुससे आपको संतोष होना चाहिये।'

लेकिन अभी तो आपसमें विश्वास या आदर है ही नहीं।

राजाजी: अिस सारे प्रकरणकी आलोचना शास्त्रीने ठीक की है। आज अुनकी क्या राय है, यह हम अुनसे पूछें?

बापू: आपको अुनसे मिलना हो तो मिलिये। यहां तो वे आयेंगे ही नहीं। सर्वेण्ट्स ऑफ अिंडिया सोसायटीके वार्षिक अधिवेशन पर भी अुन्होंने कोअी खास बात नहीं कही और न अपनी नीति जाहिर की।

राजाजी: आप जो नीति सूचित कर रहे हैं, वह अितनी अधिक क्रान्तिकारी है कि अुसे कुछ ही व्यक्ति अमलमें ला सकते हैं। लेकिन सरकार पर या लोगों पर अुसका कोअी असर नहीं होगा।

बापू: मुझे अिसकी परवाह नहीं। आप जैसा कहते हैं, वैसा हो सकता है। असा परिणाम मुझे अिष्ट है। छोटी-छोटी बातोंमें लोगोंको जो परेशान किया जाता है, अुससे मुझे चोट लगती है। अिसमें तो जो राजीखुशीसे आगे आयेंगे, अुन्हें ही सहन करना होगा।

राजाजी: तब सामूहिक लड़ाअी तो बिलकुल बन्द ही हो जाती है।

बापू: यही सारी बातोंकी कुंजी बन जायगी। हमने बिना किसी योजनाके चाहे जैसे सामूहिक लड़ाअीको चलने देनेमें भूल की है। जब शुरूसे आखिर तककी निश्चित योजना लोग दिलसे समझ लेंगे, तब सामूहिक लड़ाअी होगी। जब जिम्मेदार लोगोंको यह महसूस हो जायगा कि लोग

जमीन-जायदाद गंवाने और अिससे भी भारी कष्ट सहन करनेको तैयार हैं तब लोग अैसी लड़ाअी छेड़ेंगे।

राजाजी: क्या आप अैसा नहीं मानते कि जनवरी १९३२ में करबन्दीकी लड़ाअीकी जो घोषणा की गअी थी, वह असमय थी?

बापू: थी तो जरूर। मैंने तो १९३१ में टंडन वगैरासे कहा था कि स्वराज्यके लिअे करबन्दीकी लड़ाअी चलानेकी हमारी शक्तिके बारेमें मुझे विश्वास नहीं है।

राजाजी: अगर भूल हुअी थी, तो क्या अुसे हमें सुधार नहीं लेना चाहिये?

बापू: भूल सुधारनेके लिअे भी मैं अैसा नहीं कहूंगा कि यह लड़ाअी वापस ले ली जाय।

राजाजी: हम लड़ाअी पूरी तरह वापस ले लें, तो भी सरकार सारी जमीन-जायदाद वापस नहीं देगी।

बापू: सरकार अैसी कोअी बात सुनेगी ही नहीं।

[ता० ३-६-'३३ और ४-६-'३३ की डायरी नहीं लिखी गअी। — सं०]

मीराको लिखा: "तुम्हें फिरसे बुखार आ गया, जिससे मुझे चिन्ता हो रही है। तुम्हें सच्चा आत्मसंयम सीखना ही चाहिये। यह कोअी पढ़नेसे नहीं आता। यह तो तभी आता है, जब हमें अिस बातका निश्चित साक्षात्कार हो जाय कि अीश्वर हमारे साथ है और वह अिस तरह हमारी सम्हाल रखता है, जैसे अुसे और कोअी काम ही न हो। मैं यह नहीं जानता कि यह स्थिति कैसे प्राप्त की जा सकती है। जिन्हें श्रद्धा होती है, अुनके कंधोंसे सभी चिन्ताओंका भार अुतर जाता है। हममें श्रद्धा भी हो और मन पर दबाव भी रहे, ये दोनों बातें अेक साथ हो ही नहीं सकतीं। अिसलिअे मनको बिलकुल हलका बना डालो।"

५-६-'३३

यह पत्र बापूने अपने ही हाथसे लिखा। कल मथुरादासने कहा: "अैसे अुपवास किये जायं या न किये जायं, यह सवाल है। यह ठीक नहीं मालूम होता कि सारी दुनियाको अिसीका विचार करनेमें लगा दिया जाय। किसीको कुछ सूझ ही न पड़े, अितने डॉक्टर और अितनी बड़ी झंझट हो।

फिर भी दुनियाके साथ मेरा अितना निकटका संबन्ध हो गया है, अिसलिअे और क्या हो सकता है?"

"चि० नारणदास,

६–६–'३३

"हां, मैं देख रहा हूं कि चलता-फिरता होनेमें मुझे देर लगेगी। हाथ भी तुरंत काम नहीं देंगे। कल महादेवसे वहांका हाल सुना। अुसे दिये हुअे पत्र देख लिये। थोड़ीसी गलतफहमी मालूम होती है। मेरे कहनेका मतलब तो यह है कि सत्यकी खोजमें कहो या अहिंसाके मार्गमें कहो, हमारा आखिरी कदम तो मनुष्यमात्रका अनशन ही हो सकता है। आश्रममें खाने-पीने वगैराके जो फेरबदल अुपवासके सिलसिलेमें हुअे, वे तो अुस कदमके पूरक होने चाहियें। अितना समझ लेना जरूरी है। जो अिसे न समझे, वह फेरबदलकी झंझटमें न पड़े। मेरे कहनेका आशय यह नहीं था कि सबको अनशनकी श्रृंखलामें शरीक होना ही चाहिये या आश्रमसे चले जाना चाहिये। मैं जरा ठीक हो जाअूं, तब तुम यहां आओगे, यह मुझे पसंद है। अगले सप्ताह जब चाहो आ सकते हो। बहुत बातोंमें तो मैं नहीं पड़ूंगा, पर अपने मुद्दे समझाने और तुम्हारी शंकाओंका निवारण करने लायक तो मैं स्वस्थ हो ही जाअूंगा। किसीको घबराहटमें पड़नेकी जरूरत नहीं। मेरा धर्म अितना ही है कि मैं सत्यको जिस तरह समझता हूं, अुस तरह समझाअूं। तुम सब अुसमें से जितना अपना सको, अुतना अपना लो। मुझे नअी सृष्टि नहीं रचनी है। वहींसे तुम्हें प्रश्न पूछने हों तो पूछना। तुम आनेका विचार करो, तब जिसे साथ लाना हो लेते आना।"

[ता० २–७–'३३ तककी डायरी नहीं लिखी गअी। —सं०]

आश्रमको पत्र:

३–७–'३३

"जिन बहनोंने अपने रसोड़े अलग कर लिये हैं, वे भले ही करें। अिसीमें मैं भलाअी देखता हूं। अिसमें चावल ही अकेला कारण नहीं है। चावल तो है ही। चावलके बिना जिनका काम नहीं चलता और जिन्हें कभी-कभी थोड़ी दूसरी चीजें भी चाहियें, अुनसे और लोग द्वेष न करें। दूसरे जो करते हों, अुससे घृणा न की जाय। यह समझनेसे ही काम चलेगा कि सब जो कुछ करते हैं, अपने भलेके लिअे ही करते हैं। औरोंकी देखादेखी किसीको कुछ न करना

चाहिये। करनेमें सार भी नहीं। अिसलिअे आम रसोड़ेमें तो दूध-घीके सिवाय जहां तक हो सके जेलसे मिलती-जुलती खुराक रहे, यही ठीक मालूम होता है। हमारी परीक्षाका समय तो अब आ रहा है। कब आ जायगा, यह मैं नहीं जानता। परंतु आयेगा और आना चाहिये, अिस बारेमें मुझे शंका नहीं है। जिन्होंने अपने मन और शरीर अुसके लिअे तैयार कर लिये होंगे, वे जीतेंगे। जिन्होंने नहीं तैयार किये होंगे, वह हार जायंगे। जगतमें सदा अैसा ही होता रहा है। जो बहनें अलग रसोअी बनाती हैं, अुनकी कोअी आलोचना न करें। अैसा करनेका किसीको अधिकार नहीं है। आलोचनाका कारण ही नहीं है। अपने बूतेसे बाहर कौन जा सकता है? और किसीकी खुराककी आलोचना करने जैसी दूसरी कोअी भद्दी बात नहीं। अिसमें जो जितना संयम पाले, अुतना कम समझा जाय। परंतु किसीको किसीके संयमका हिसाब लगानेका अधिकार नहीं। हिसाब लगानेका कोअी साधन भी नहीं है। अपने मिर्च-मसालेके त्यागको मैं कोअी बड़ी बात नहीं समझता। लेकिन हरिलाल शराब छोड़ सके, तो मेरे खयालसे अुसके संयमकी मात्रा बड़ी मानी जायगी। कुछ लोगोंके लिअे मसालेके त्यागकी कीमत भी अुतनी ही हो सकती है। रेवाशंकरभाअीको बीड़ी छोड़ना बहुत भारी हो गया था। अहिंसाके सब प्रयोग अैसे मामलेमें करने होते हैं। ये सब बातें सबको अनुकूलतासे समझाना।"

[ता० ४-७-'३३ से ११-७-'३३ तककी डायरी नहीं लिखी गअी। -सं०]

कांग्रेसियोंकी अवैध (informal) परिषदमें:

१२-७-'३३

मेहरअलीने जो कुछ कहा, वह न कहा होता तो अच्छा होता। केलकर कांग्रेसके सदस्य हैं ही। अुन्होंने क्या किया, क्या न किया, अिसका यहां विचार नहीं हो सकता। अध्यक्षने किसे निमंत्रण दिया, किसे नहीं दिया, यह भी हमारे हाथकी बात नहीं थी। शास्त्रीको निमंत्रण दिया ही नहीं गया। अुन्हें तो मैंने खुद निजी निमंत्रण भेजा है। घनश्यामदासको निमंत्रण भेजा गया था, पर मैंने अुन्हें आनेकी सलाह ही नहीं दी। लेकिन यह तो हो गया। हममें अितनी घृणा न होनी चाहिये।

अेक मनुष्यके लिअे सविनयभंगकी लड़ाअी दो बार मुलतवी करनी पड़ी, यह हमारे लिअे शर्मकी बात है। मैंने जो वक्तव्य प्रकाशित किया, अुसमें सरदारका हाथ नहीं था। सिर्फ गुप्तताके बारेमें हम वहम जरूर करने

थे। मुझे यह महसूस होता ही रहता था कि मैं जेलसे निकला सो मेरी ताकत या जनताकी ताकतसे नहीं निकला। अिसलिअे आज भी मेरा अेक पैर यरवदामें है और दूसरा पर्णकुटीमें। लेकिन जब मैंने वक्तव्य प्रकाशित किया, तब मेरा विचार यह था कि अिस अुपवाससे बहुतोंको दुःख और अफसोस होगा, सब स्तब्ध होंगे। अतः मुझे कुछ न कुछ वक्तव्य देना चाहिये। फिर डॉक्टरोंके साथ सलाह करनेके बाद छः हफ्तोंके लिअे लड़ाअी बन्द रखनेको लिखा। अुसमें सरकारके साथ सलाह-मशविरा करनेकी कोअी बात नहीं है। मेरा न्याय तो यह है कि जिसे दुश्मन समझें, अुसके साथ बातचीत करना पाप नहीं है। अगर आप यह मानते हों कि सत्याग्रहका शस्त्र अच्छा है और आपकी यह राय हो कि अुसे स्थायी बनाना चाहिये, तो मुझे आप सबकी सलाह लेनी चाहिये। अिसलिअे मैंने विचार किया कि महासमितिके जो सदस्य बाहर हों अुन सबको बुलवाना चाहिये, — महासमितिके सदस्यकी हैसियतसे नहीं, बल्कि कांग्रेसीकी हैसियतसे। मैंने तो अपना विचार कर लिया है, पर आपसे सलाह करके कोअी विचार बदला जा सके तो बदलनेको तैयार हूं। आपकी राय सुननेके बाद अपनी बात कायम रखूंगा, तो वह भी कह दूंगा। आपसे कहूंगा कि अिन बातों पर संक्षेपमें चर्चा कीजिये। मैं तो आपको जानता हूं, यह पता नहीं कि आप मुझे जानते हैं या नहीं। मेरे पास पत्र आते थे, अुनसे मुझे मालूम हुआ कि कुछ कांग्रेसियोंकी राय है कि (१) सविनयभंग मुलतवी कर देना चाहिये। यदि अैसी बात हो तो किस अर्थमें मुलतवी किया जाय? आगेकी तैयारीके लिअे? या जिस तरह सरकार चाहती है अुस तरह? (२) जो जारी रखनेकी सलाह देना चाहते हैं, वे कुछ न बोलें तो भी कोअी हर्ज नहीं। (३) जो यह मानते हों कि सरकारके साथ समझौता करके लड़ाअी मुलतवी कर देना चाहिये, वे वैसा कहें। (४) जो लोग मुलतवी करनेमें विश्वास रखते हों, वे बतायें कि मुलतवी करके हम क्या करें? लेकिन वे लोग कौंसिलोंमें जानेकी बातें न करें। क्योंकि आज हमारे पास कुछ नहीं है, और सुधार तो हवामें हैं।

सामूहिक सविनयभंगको फिरसे जिन्दा करनेके लिअे मैं आन्दोलन नहीं चलाअूंगा। पर यह तो आप मुझसे हरगिज नहीं कहेंगे कि मैं अपने अस्तित्वसे अिनकार कर दूं और लाखों लोगोंको मैंने जो आशाअें दिलाअी हैं अुनसे अिनकार कर दूं।

[ता० १३–७–'३३ की डायरी नहीं लिखी गअी। —सं०]

अवैध परिषद जारी रही।

१४–७–'३३

मुझसे कहा गया है कि मैं राष्ट्रभाषामें बोलता हूं, जिसे बहुत लोग नहीं समझते। मैं जानता हूं कि दक्षिण प्रान्तोंके भाओी अपराधी हैं। जो मित्र राष्ट्रभाषा नहीं समझ सकते, अुनकी खातिर थोड़ीसी बात अंग्रेजीमें कहूंगा। अलबत्ता, अैसा करनेमें मुझे संकोच और दुःख होता है। वर्षोंसे मैं बार-बार यह चेतावनी देता रहा हूं। जो मित्र हिन्दुस्तानी नहीं समझ सकते, अुन्हें अब जाग्रत हो जाना चाहिये और जरा भी समय न खोकर राष्ट्रभाषाकी पढ़ाओी शुरू कर देनी चाहिये। रोज आप ध्यानपूर्वक अेक-अेक घंटा दें, तो थोड़े ही दिनोंमें न सिर्फ समझने लायक, बल्कि बोलने लायक भी हिन्दुस्तानी आपको आ जायगी।

आज यहां बोलना मेरे लिअे कठिन है। अपने विचारोंको व्यवस्थित किये बिना मैं यहां आ गया हूं। क्या कहूं यह सोच लेनेका मेरा अिरादा तो था, पर मुझमें अभी अच्छी तरह शक्ति नहीं आओी और व्यवस्थित भाषण मैं सोच नहीं सका। अिसलिअे अपना कहना मैं अच्छी तरह स्पष्ट न कर सकूं, तो आप मुझे क्षमा करेंगे। अपने भाषणमें मुझे बड़े लम्बे-चौड़े क्षेत्र पर नजर डालनी है। यह भी नहीं जानता कि मैं अपना भाषण कब पूरा कर सकूंगा, अिसलिअे बीमार आदमीके प्रति मैं अुदारताकी मांग करता हूं। यह अवसर अैसा है कि जहां तक हो सके मुझे सब विचार पूरी तरह आपके सामने रखने चाहियें और आपके सब प्रश्नोंके अुत्तर देने चाहियें। मेरे विरुद्ध तीन पाप करनेका आक्षेप है। अुनकी चर्चा करके मैं अपनी स्थिति स्पष्ट करना चाहता हूं। (१) यह कहा जाता है कि पहला पाप मैंने यरवदा-करार करा कर किया है। (२) दूसरा पाप मेरा यह बताया जाता है कि जेलमें से हरिजन-सेवाका काम शुरू किया और अिस तरह शर्तिया स्वतंत्रता प्राप्त की। (३) तीसरा पाप मेरा यह कहा जाता है कि अिस लड़ाओीको स्थगित करनेमें मैं निमित्त बना हूं।

पहलेके बारेमें मुझे अितना ही कहना है कि आपको मुझे अपनी सारी मर्यादाओंके साथ स्वीकार करना है। मैंने गोलमेज परिषदमें सार्वजनिक रूपमें प्रतिज्ञा की थी कि हरिजनोंके अलग निर्वाचन-क्षेत्र बनाये जायेंगे तो अिसे रोकनेके लिअे मैं अपने प्राणोंकी बाजी लगा दूंगा। जब मैंने देखा कि ब्रिटिश मंत्रि-मंडलने अिसे निश्चित हकीकत बना दिया है, तब मुझे अपनी प्रतिज्ञाका पालन करना पड़ा। अिसलिअे अिस चीजका मुझे जरा भी पश्चात्ताप नहीं होता।

दूसरे आक्षेपके वारेमें मुझे अितना ही कहना है कि पूना-करार करनेकी मुख्य जिम्मेदारी मेरी होनेके कारण स्वाभाविक तौर पर ही मुझसे यह अपेक्षा रखी जाती कि अिस पवित्र समझौतेकी सब शर्तोंका पूरा-पूरा पालन करानेके लिअे मुझे पूरी कोशिश करनी चाहिये। हरिजनोंके अलग निर्वाचन-क्षेत्रोंका न रहना ही काफी नहीं था, पर बम्बअीमें हुअी हिन्दू लोगोंकी सार्वजनिक सभामें हरिजनोंको जो वचन दिये गये थे, अुनका पालन होना ज्यादा जरूरी था। यह कहा जा सकता है कि वाहर रहनेवाले अिसके लिअे कोशिश करते। पर अिससे मैं अपनी जिम्मेदारीसे अिनकार नहीं कर सकता। अितना कहकर मैं अिस चीज पर पर्दा डाल देना चाहता हूं। काम करनेकी जो स्वतंत्रता मैंने प्राप्त की, वह अपनेको कुरवान करके प्राप्त की है।

तीसरे आक्षेपके वारेमें मुझे स्वीकार करना चाहिये कि मुझे हमेशा यह खयाल रहा है कि मैं लोगोंके दिलोंमें वहुत प्रेम और महत्त्वका स्थान प्राप्त कर सका हूं। परिस्थितियोंने मुझे थोड़े समयके लिअे यरवदाके दरवाजोंसे वाहर रख दिया है। ये दरवाजे ज्यों ही मेरे पीछे वन्द हुअे और मैं वाहर निकला, त्यों ही मुझे महसूस हुआ कि कितने ही साथियोंका ध्यान मेरी तरफ आकृष्ट हो रहा है। मेरे अुपवासके कारण ये लोग वहुत वेचैन रहेंगे और लड़ाअी ढीली पड़ जायगी। मुझे यह भी लगा कि जब मैं मौतके साथ कुश्ती कर रहा होअूंगा, तव जेल और लाठीके हमलोंके और अैसे ही दूसरे समाचार सुनकर यदि मैं वच सकूं, तो मुझे अिससे राहत मिलेगी। जव तक मैं जेलमें था, मुझे अिन समाचारोंसे क्षोभ नहीं होता था। लेकिन वाहर होअूं तव तो भोजन कर रहा होअूं या अुपवास कर रहा होअूं, मुझे लाठीके हमलेका परिणाम भोगनेमें हिस्सा लेने या मेरे भाग्यमें और जो भी आये अुसे वरदाश्त करनेकी जोखम अुठानी ही चाहिये। पर विस्तर तो मैं छोड़ नहीं सकता और अिस तरह अपना भाग मैं ले नहीं सकता। आप कहेंगे कि मुझमें अितनी हिम्मत होनी चाहिये थी। अगर अितनी हिम्मत होती तव तो मैंने जोखम अुठाअी ही होती और कानून भंग करके मैं वापस जेल चला गया होता। मैं नहीं गया, यह शायद डरपोकपनके कारण भी हुआ होगा। मगर अितना तो मुझे मालूम था कि मैं अैसा करूंगा, तो मेरे कितने ही साथियोंको घवराहट होगी। अिसलिअे मनुष्यकी हैसियतसे मेरे लिअे जो रास्ता संभव था, वह मैंने ले लिया।

अिस तरह मैं वाहर आ गया। और वाहर आते ही दिमाग काम करने लगा। अितनेमें अखवारोंके दो प्रतिनिधि आ गये, जिनके लिअे मेरे दिलमें

कुछ आदर है। अुन्हें मैंने वक्तव्य लिखवाना शुरू किया और लिखवाते-लिखवाते स्वाभाविक तौर पर ही लड़ाअीको फिलहाल स्थगित करनेका मुझे विचार आ गया। मैं सच कहता हूं कि मैंने अिनमें जरा भी अतिशयोक्ति नहीं की और जरा अल्पोक्ति भी नहीं की। फिर मैंने अखबारवालोंको चेतावनी दी कि कांग्रेसके सर्वाधिकारीसे पूछे बिना कुछ भी न छापा जाय। लड़ाअीको दूसरी बार स्थगित करनेकी बात तो अिसमें से पैदा होनेवाला स्वाभाविक परिणाम था। मैं अितना मूर्ख था कि यह भूल गया कि मैं ६४ वर्षका हो गया हूं। मुझे यह याद ही नहीं रहा। फिर जब खोज हुअी कि ६४ साल हो गये हैं और पहले जैसी शक्ति आनेमें ६ हफ्तोंसे ज्यादा समयकी जरूरत होगी और मेरी ज्यादा सेवा-शुश्रूषा करनी पड़ेगी, तब स्वाभाविक रूपमें ही लड़ाअी स्थगित रखनेका समय लम्बाया गया।

मैंने अपने भाषणके शुरूमें ही बता दिया है कि स्थगित करनेकी अिस कार्रवाअीका सरकारके साथ कोअी संबंध नहीं है। पर सत्याग्रहीकी हैसियतसे विरोधीके साथ भी बातचीत करनेका मेरा अिरादा था और मेरी कोशिश भी थी। सत्याग्रही विरोधीके हृदय-परिवर्तनकी सदा आशा रखता है। अंग्रेज लोगोंमें भी हमारी ही तरह मूर्खताअें, कमजोरियां, भावनाअें और अच्छाअियां होती हैं। यद्यपि मैंने अिस राजको 'शैतानी' कहनेमें कोअी कसर नहीं रखी, फिर भी यह शब्द मैंने तंत्रके लिअे अिस्तेमाल किया है। अेक भी अंग्रेजके प्रति मुझे द्वेष नहीं, यह बात मैं ठेठ १९१९ से कहता रहा हूं। डायरके प्रति मुझे जरा भी द्वेष नहीं था। अुस वक्त मैंने कहा था कि सजाकी जरूरत होगी तो सजा देनेका काम अीश्वरका है। मनुष्यका फर्ज तो क्षमा करना है। यह चीज सत्याग्रहके शास्त्रमें है। मैं आखिरी दम तक विरोधीसे भी अपील करूंगा। मैं किसीसे कमजोरीके कारण अपील नहीं करूंगा। वैसे मैं बच्चोंसे भी अपील कर सकता हूं, पर अिसमें मेरी सबलता होगी। जब मुझे अपनी कमजोरी मालूम हो जाय, तब मैं कह दूंगा कि 'अब मैं आगे नहीं चल सकता।' हिन्दू-मुस्लिम अेकताके बारेमें मैंने मित्रोंसे अैसा ही कह दिया है। मुसलमान मित्रोंसे अपील करनेकी मुझमें ताकत नहीं। मेरे हृदयके भीतर तो अचल और अमिट श्रद्धा है कि हिन्दू, मुसलमान और दूसरी जातियां अेक होकर ही रहेंगी। लेकिन वह समय जल्दी या देरसे जब तक आ नहीं जाता, तब तक यह प्रश्न हाथमें लेनेसे मैं आग्रहपूर्वक अिनकार करता हूं। मुझे अधिक बल मिले और अिस कामको हाथमें लेनेका अीश्वरकी तरफसे आदेश मिले, जिसके लिअे मैं

प्रार्थना कर रहा हूं। आज तो हिन्दुओं पर मेरा कोअी प्रभाव नहीं पड़ता। मुसलमानों और सीखों पर अिससे भी कम पड़ता है। अपनी अिस कमजोरीके कारण ही मैं अिस काममें नहीं पड़ता। मुझमें झूठी नम्रता नहीं है। मैं जानता हूं कि सत्याग्रहके शास्त्रमें मेरा कोअी साथी नहीं। सत्याग्रहमें मैं अद्वितीय हूं। और अीश्वर मुझे जिलायेगा, तो मैं अपना यह दावा साबित करके दिखा दूंगा। अिसलिअे मैं सरकारको कुछ लिखूं, तो अुसमें भी मेरा बल होगा। अिसलिअे मैं चाहता हूं कि आप मुझे वाअिसरॉयको लिखनेकी अिजाजत दीजिये। वाअिसरॉय मेरा अपमान नहीं कर सकता। मेरा अपमान करनेवाला कौन है? हम खुद अपना अपमान करें, यह दूसरी बात है। वैसे, पृथ्वी पर किसी भी सत्ताकी ताकत नहीं कि वह हमारा अपमान कर सके। दुश्मन तो हमारे भीतर ही बैठा होता है। वह कोअी बाहर नहीं होता। अिसलिअे आप मेरी सलाह मानिये और वाअिसरॉयको लिखनेकी अिजाजत मुझे दीजिये। मैं अिसलिअे नहीं लिखना चाहता कि हमारा मानभंग हो, बल्कि अिसलिअे, लिखना चाहता हूं कि हमारा मान बढ़े। यह चीज सत्याग्रहके गर्भमें मौजूद है कि अिज्जतके साथ सुलहकी हमेशा कोशिश की जाय। आज चाहे अुसकी आशा न दिखाअी दे, लेकिन सरकारके अिरादोंकी हम पहलेसे क्यों कल्पना कर लें? अीश्वरके बालक हैं, अीश्वर नहीं। अिसलिअे मैं तो सब कुछ अीश्वरके हाथोंमें छोड़ देने पर विश्वास रखता हूं। हम बिलकुल तुच्छ हैं, अिसलिअे यह नहीं कह सकते कि किसी चीजके लिअे हम अकेले ही जिम्मेदार हैं। अैसा कहना असंभव और अुद्धततापूर्ण दावा है। मैं वाअिसरॉयसे मिलना चाहता हूं, अिसमें हमारी कमजोरी नहीं, बल्कि हमारा बल है। मैं अुनके साथ समानताके नाते बात करूंगा। अिसमें किसका अपमान होगा? मेरा अपमान तो कोअी कर नहीं सकता। जो सम्मानपूर्ण संधि करनेसे अिनकार करता है, वह अपमानित होता है। अगर आप यह बात न मानते हों, तो मैं कहूंगा कि आप सत्याग्रहका ककहरा भी नहीं समझते। आप यह भी नहीं समझते कि राजनैतिक कुशलता किस बातमें है। आपको मानना चाहिये कि मुझमें थोड़ीसी राजनैतिक कुशलता है। अिन सब बातोंके बिना मैं यह भार ढो नहीं सका होता और सत्याग्रहके बिना यह कठिन जीवन जी न सका होता।

अिस समय हम पर्णकुटीमें बीमारके बिस्तरके सामने नहीं बैठे, पर छोटेसे सुन्दर हॉलमें लोकमान्यकी छाया तले बैठे हैं। मैं आशा रखता हूं कि हम अलग-अलग दिशाओंमें खींचतान करके पक्ष-विपक्ष पैदा नहीं करेंगे

और न अेक-दूसरेसे अलग हो जायंगे। हम अितने मूर्ख नहीं। आजके दिनके अन्तमें और कुछ नहीं तो डूबते हुअेका सहारा बननेवाला तिनका तो भी हम ढूंढ निकालेंगे।

जो भाअी यहां बोल चुके हैं, अुनकी बातें मैंने ध्यानसे सुनी है। फिर भी हरअेक वक्ताने क्या क्या कहा, अिसकी परीक्षा लें तो मुझे मुश्किलसे ३३ फी सदी नंबर मिलें। यह माननेमें मेहरअलीने भूल की है कि मैं अूंघ रहा था। मैं खूब थक गया था और नींद मुझ पर सवार भी हो गअी थी। यों तो गोलमेज परिषदमें भी मैं तमाम भाषण शब्दशः सुननेकी प्रतिज्ञा लेकर नहीं बैठा था। मेरा वह फर्ज भी नहीं था। वहांके बहुतसे मुहरोंमें से अेक मुहरा मैं भी था।

यहां हुअे भाषणोंसे मेरी रायमें कोअी फर्क नहीं पड़ा। अुल्टे मैं जो कामचलाअू राय बनाकर आया था, वह ज्यादा पक्की हो गअी है। मुझे आपको अफसोसके साथ बताना पड़ता है कि अेक भी मामलेमें मुझे अपनी राय बदलनेका कारण नहीं मिला। लेकिन यदि आप यह अनुमान लगायें कि राय बदलनेका मेरा अिरादा ही नहीं था, तो आप मेरे साथ बड़ा अन्याय करेंगे। मैं आपको अैसे बहुतसे अुदाहरण दे सकता हूं, जहां छोटे बच्चोंके कहनेसे मैंने अपनी भूल सुधारी है। जो दुश्मन या विरोधी माने जाते हों, अुनके कहनेसे भी मैंने अपनी भूल सुधारी है। मुझे कोअी पूर्वग्रह नहीं हैं। सत्यकी आराधनाके सिवाय मुझे और कोअी अुद्देश्य सिद्ध नहीं करना है। मेरी सत्योपासनाके कारण मनुष्योंकी आत्माको कुतर खानेवाले भयसे मैं बच जाता हूं। अिमर्सन कहता है कि हमेशा सुसंगतताका आग्रह रखना तो छोटे दिलके मनुष्योंके दिमागमें घुसा हुआ भूत है। यह वाक्य मुझे पूरी तरह मान्य है। मेरा दिल तंग नहीं, विशाल है। मगर अिस दिल पर आपकी किसी दलीलका कोअी असर नहीं हो सका। मेरे विचार दृढ़ रहे हैं। और दुगुने विश्वासके साथ मैं आपको सलाह देनेके लिअे तैयार हुआ हूं। आपको सविनयभंग जारी रखना है या बन्द करना है? और बन्द करना हो तो किसी शर्तके साथ बन्द करना है या बिना शर्त बन्द करना है? अिस बारेमें अपनी राय देनेके लिअे मैंने आपको यहां बुलवाया है। जो रायें यहां प्रगट की गअीं, अुनका ज्यादा झुकाव अिस तरफ होता जा रहा है कि सविनयभंग वापस ले लिया जाना चाहिये। सब भाषणोंकी छानबीन करके मैं यहां यह बताने नहीं बैठूंगा कि अुनकी सब दलीलें कमजोर हैं। परन्तु अिन सब भाषणोंका स्पष्ट असर मुझ पर यह हुआ है कि आपके मनमें कोअी

सार नहीं है। विधाताका खेल यह है कि सविनयभंग वापस ले लेनेके लिअे आप जो दलीलें पेश कर रहे हैं, वे ही सब दलीलों में सविनयभंग जारी रखनेके लिअे दे रहा हूं।

कुछ वक्ताओंने कहा है कि लड़ाअीमें भाग लेनेवाले लोग थक गये हैं और अुन्हें आराम देना चाहिये। वे अगर कहते कि 'हम थक गये हैं', तो यह मैं समझ सकता था। पर वे तो यह कहते हैं कि दूसरे लोग थक गये हैं। तब मैं यह कहता हूं कि हम जो नहीं थके, वे ज्यादा जोरसे डांड चलायें। काठियावाड़में चलते हुअे बैलोंको ही आर चुभोअी जाती है। हम सब राष्ट्रकी गाड़ी खींचनेवाले बैल हैं। अुनमें से कुछ बैल थक जायं, तो हम क्यों कमजोर पड़ें? यह सत्याग्रहका नियम नहीं। हिंसक युद्धका भी यह नियम नहीं। मुझसे तो आप अितिहास ज्यादा जानते हैं। और अितिहास अैसे अुदाहरणोंसे भरा पड़ा है कि जहां अधिक सैनिक थक गये हों, वहां थोड़ोंने लड़ाअी जारी रखकर विजय प्राप्त की है। हमारे यहां क्या थर्मोपॉलियां नहीं हुअीं? अुनका वर्णन करनेवाले केवल हिन्दुस्तानी ही नहीं, टॉड जैसे अंग्रेजोंने भी अुनका वर्णन किया है। वे कहते हैं कि राजपूत अेक खास जाति है। जो कुछ भी हो, पर टॉड अितनी गवाही तो देता ही है कि हिन्दुस्तान कायरोंका देश नहीं है। अपने पूर्वजोंकी अिन वीरगाथाओंसे हम बल प्राप्त करें। कोअी राजपूत अैसा नहीं निकला, जिसने यह कहा हो कि मेरे साथी कमजोर पड़ गये हैं अिसलिअे मैं शरण जाता हूं। आज अिस्लाम दुनियामें खड़ा है, वह भी अपने मुट्ठी भर आदमियोंकी बहादुरीके कारण खड़ा है। दुनियाकी हरअेक जातिका अितिहास पराक्रमकी गाथाओंसे भरा है। मुझे तो आश्चर्य और दुःख भी हुआ कि क्या हम जैसे राष्ट्रके चुने हुअे लोग (अगर सच्चे प्रतिनिधि हों तो) यह घोषणा करेंगे कि अिन सब मुसीबतोंके कारण हम थक गये हैं और हार गये हैं, आगे लड़नेकी हममें ताकत नहीं रही? अिस महान महाराष्ट्रीकी, जो हमारे लिअे बहादुरीका और त्यागका अुत्तराधिकार छोड़ गया है, छायाके नीचे अिस हॉलमें अिकट्ठे हुअे आप लोगोंसे मैं अपील करता हूं कि अिस सारी कायरताको निकाल डालिये। बहादुर आदमियोंको थकावट कैसी? दक्षिण अफ्रीकामें साधारण अंग्रेजोंने कैसी बहादुरी दिखाअी है, अुसका मैं साक्षी हूं। 'लंदन टाअिम्स' को लिखना पड़ा कि तमाम सेनापति गधे थे, पर सिपाही शूरवीर थे। अेकके बाद अेक सेनापतिके हार खा जाने पर भी अंग्रेज सिपाहियोंको हमें यश देना चाहिये कि अुनमें से ज्यादातर अैसे शूरवीर थे, जो यह कहनेको तैयार नहीं थे कि हम थक गये हैं। लड़ाअीके बाद अुनका मूल मंत्र यह था कि 'रोजकी

तरह कामकाज जारी है' (Business as usual)। हमारे दुश्मन माने जानेवाले लोगोंके अितिहाससे क्या अितना सबक हम न लें? हममें अितने बलिदान देनेकी शक्ति नहीं, जिससे दुश्मनोंका हृदय पिघल जाय? पिघलनेमें भले ही समय लगे। आप कहेंगे कि मैं तो आपकी भावनाओंसे अपील कर रहा हूं। पर मनुष्यमें भावना न हो तो मनुष्यका मूल्य ही क्या है? भावना तो पशुमें भी होती है। और हम तो पशुसे अूंचे हैं। कारण हममें अिस चीजका भान है। मैं कहता हूं कि हमने अभी कुछ नहीं खोया है। यदि हमने कुछ खोया है, तो आत्मविश्वास खोया है।

अिन तीन दिनोंमें हम खींचतानके वादविवादमें पड़ गये। किसीने कहा कि हमारे कर्णाटकके लोग बिलकुल तैयार हैं, पर अुन्हें थोड़े आरामकी जरूरत है। मैं कहता हूं कि यह कहनेवाले आप कौन हैं कि अुन्हें आरामकी जरूरत है? अेक भाअीने कहा कि बम्बअीसे कुछ रुपया भेज दिया जाय, तो हमारे लोग जागृत हो जायं। लेकिन अिन बातोंमें क्या दम है? लोगोंको आरामकी जरूरत है, अिसका आपके पास क्या सबूत है? हम अपना ही न्याय करें। अपने कांटेसे सारे राष्ट्रका न्याय न तोलने लगें। वीर पुरुषके लिअे तो अेक ही न्याय होता है: अपन स्थान पर डटा रहे और मर मिटे। मुझे आश्चर्य तो यह होता है कि हर आदमी सत्याग्रहके साधनमें विश्वास जाहिर करता है और बात अुससे अुलटी ही करता है। मैं कहता हूं कि सत्याग्रहीके लिअे आराम जैसी कोअी चीज ही नहीं। क्या आप यह समझते हैं कि जब सेना कूच करती हो, तब कोअी आराम लेने बैठ सकता है? कोअी सिपाही थक जाय तो अुसे अीश्वरकी दया पर छोड़कर फौज तो आगे बढ़ जाती है। दक्षिण अफ्रीकामें जब मैंने अहिंसक कूच की थी, तब सब स्त्री-पुरुषोंके साथ मैंने शर्त कर ली थी कि कोअी स्त्री थक जायगी तो अुसे भी अकेली छोड़कर आगे बढ़ने जितना निर्दय मैं बन जाअूंगा। अुसकी रक्षा करनेके लिअे किसी सिपाहीको पीछे नहीं छोड़ूंगा। अिसके सिवाय और कुछ कर ही नहीं सकता था। और अीश्वरका अुपकार मानता हूं कि किसी स्त्रीको कोअी आंच नहीं आअी। रास्तेमें जब लोगोंको मालूम हुआ कि हम किस हेतुसे कूच कर रहे हैं, तब अुन्होंने अपने पानीके नल हमारे लिअे खोल दिये। [दक्षिण अफ्रीकामें कुअें नहीं होते। बरसातके पानीसे हौज भरकर रखने पड़ते हैं।] किसी करुण घटनाके बिना हम अपनी कूच जारी रख सके। अुसी तरह यहां भी हमें आगे बढ़ते जाना है। कोअी थक जाय तो अुसे अकेला छोड़कर हमें आगे बढ़ना है। हम मर जायंगे, तो हमें विजयमाला प्राप्त होगी। हमारी समाधि पर लेख लिखे जायंगे कि जिन वीरोंने आराम नहीं जाना, जो कभी डिगे नहीं और किसी मददकी आशाके बिना लड़ते-लड़ते

मरे, अुन्होंने मुक्ति संपादन की है। अिसलिअे हमें यह सोचना है कि हममें अिस लड़ाअीको आगे बढ़ानेकी श्रद्धा और हिम्मत है या नहीं। आपने जो दलीलें पेश की हैं अुन दलीलों परसे ही मैं तो आपसे कहता हूं कि लड़ाअी बन्द की ही नहीं जा सकती।

लेकिन आप तो कहते हैं कि विना शर्तके लड़ाअी वापस ले लीजिये। मैं कहता हूं कि आप लड़ाअी वापस ले लेना ही चाहते हों, तो भी विना शर्तके तो वापस हरगिज न लीजिये। यह कदम विघातक होगा। 'विना शर्त' का अर्थ, यदि हम अीमानदार हों तो, यह होता है कि सरकार जिस तरह चाहती है अुस तरह हम लड़ाअीको समेट लें। यदि हम दूसरा अर्थ करें, तो अुसमें अप्रामाणिकता है। पर मैं तो कहता हूं कि हम लड़ाअी वापस ले ही नहीं सकते। हमारी लड़ाअी तो १९२० से जारी है। ठोस कारण मिले विना हम अुसे बन्द कर ही नहीं सकते। सम्मानपूर्ण समझौता ठोस कारण कहा जा सकता है। रचनात्मक कार्य करनेके लिअे भी लड़ाअीको रोका नहीं जा सकता। सरकार जिस अर्थमें लड़ाअी वापस लिवाना चाहती है, अुससे किसी दूसरे अर्थमें लड़ाअी वापस लेकर आप रचनात्मक कार्यक्रम बना ही नहीं सकते। लड़ाअी वापस लेनेकी तहमें कैसा विघातक अर्थ छिपा हुआ है, यह आप जानते हैं? विघातक अर्थ यह है कि फिर किसी समझौतेकी आशा ही नहीं रह जाती। अिसलिअे आप लड़ाअी वापस लेते हैं, तो जनताके साथ विश्वासघात करते हैं। समझौतेमें कुछ भी प्राप्त किये बिना लड़ाअी रोकनेका आपको कोअी हक नहीं। जब तक हमारे गलेमें लगी हुअी घातक नागपाश छूट नहीं जाती, तब तक लड़ाअी समेट लेनेकी बात ही कैसे की जा सकती है? मैं तो चाहता हूं कि हम सब अिसमें मर मिटें, ताकि हमारे हाड़-मांस और खून सब अिस भारत-भूमिको समृद्ध बनानेमें खादका काम दे सकें। अिस नागपाशसे छूटनेकी अभी तो कोअी सूरत नजर नहीं आती, अिसलिअे भी लड़ाअी समेट लेना राष्ट्रके हितमें नहीं है। हम लड़ाअी वापस लेना चाहते हों, तो सम्मानपूर्ण समझौतेका कोअी मार्ग ढूंढ़ना ही चाहिये। लेकिन थक कर तो हम लड़ाअी समेट ही नहीं सकते। आपका सेनापति गलत साबित हुआ है, अैसा भी आपको लगता हो, तब भी परिस्थितिका सामना करनेकी आपमें हिम्मत होनी चाहिये और आपको कहना चाहिये, 'कभी नहीं हारना'...।

आप कुछ भी कार्यक्रम तैयार कर लीजिये, पर सरकारके साथ समझौता हुअे विना कांग्रेस अुस कार्यक्रमको अमलमें नहीं ला सकेगी। अेक भाअीने कहा कि मैं तो अेक करोड़ सदस्य बनाना चाहता हूं। मैं कहता हूं कि अुन्हें दस सदस्य भी नहीं मिलेंगे। अुन्हें बारडोलीके नजदीक कोअी फटकने भी नहीं देगा।

अभी हम प्लेगके पंजेमें फंसे हुओ देशमें हैं। स्थायी बंधन हमें जकड़ रहे हैं और हमें पीस रहे हैं। हम अकेले ही रह जायं, तो भी सरकारसे लड़ते-लड़ते चूर-चूर होनेको हमें तैयार रहना चाहिये। सरकार चाहती है अुस अर्थमें नहीं, बल्कि हमारे अपने अर्थमें। मैं तो अकेला रह जाअूंगा, तो भी जब तक मेरे शरीरमें प्राण हैं तब तक सरकारके साथ लड़ूंगा। राष्ट्रकी अिज्जत लुटने नहीं दूंगा।

यह कहा जाता है कि लड़ाअी जैसे आजकल चल रही है वैसे चलने दी जाय। मैं कहता हूं कि राष्ट्रकी तंदुरुस्तीके खातिर अुसमें फेरबदल करनेकी जरूरत है। जिस तरह आजकल चल रही है अुसी तरह अुसे चलने देंगे, तो हम थककर चूर हो जायंगे। छोटे बच्चेके हाथमें आपने कभी छुरी दी हुअी देखी है? यह शस्त्र भी अैसा है कि अुसे अच्छी तरह चलाना न आता हो, तो हम अपने ही हाथ, पैर और गला काट बैठेंगे। पर अपने गले हम काट बैठें, अिसे भी मैं अिस अमानुषी सल्तनतके अधीन होनेसे ज्यादा अच्छा कहूंगा।

अिसलिअे मेरा सुझाव तो यह है कि हम अपना कार्यक्रम फिरसे अच्छी तरह बनायें। हम सामूहिक सविनयभंग स्थगित कर दें और व्यक्तिगत सविनयभंग अच्छी तरह चलायें। व्यक्तिगत सविनयभंगमें हरअेक आदमीको व्यक्तिगत ढंगसे सविनय कानून भंग करनेका अधिकार रहता है। हरअेक आदमी अपना नेता बन जाता है और अपनी जिम्मेदारी पर काम करता है। वही अपना सेनापति और वही अपना सिपाही होता है। वह अपनी तमाम नावें जला डालता है और बाकी लोग जीते हैं या मरते हैं, अिसकी परवाह नहीं करता। वह सब कुछ जान-बूझकर अीश्वरके हाथोंमें सौंप देता है।

आपको यह भी विश्वास रखना चाहिये कि अैसे देशप्रेमी मनुष्य निकल आयेंगे, जो जेल जानेकी अिच्छा न रखते हों, लेकिन जेल जानेवालोंके कुटुम्बियोंको मदद देनेको तैयार हों। वैसे मेरी अपनी आशा तो अकेले अीश्वर पर ही है। अिसमें किसान भी भाग ले सकते हैं, पर सामूहिक रूपमें नहीं। मनुष्य समूहमें होता है तब यह विचार करता है कि बिल्लीके गलेमें घण्टी कौन बांधे। पर व्यक्तिगत सविनयभंग करनेके लिअे भले दो-तीन आदमी ही निकलें; अेक आदमी निकले, तो वह भी अग्निको प्रज्वलित रखनेके लिअे काफी है। हमें अेक आदमीसे भी सन्तोष होना चाहिये। वह राष्ट्रकी विरोध करनेकी शक्तिका प्रतिनिधि बनेगा। अिसके सिवाय और कोअी मार्ग आपके पास हो तो मुझे बताअिये। आपने रचनात्मक कार्यक्रमकी बात कही है सो ठीक है। मगर

हममें सविनयभंग करनेकी शक्ति न हो, तो ये सब कार्यक्रम किसी कामके नहीं। अगर आपको अैसा लगता हो कि सविनयभंगसे राष्ट्रका अुद्देश्य पूरा नहीं हुआ और यह अब खतम हो चुकी शक्ति है तो वैसा कहिये। मगर आपमें श्रद्धा हो तो अेक ही दीया जलता हुआ रखिये। समय आने पर अेकसे अनेक प्रगट हो जायंगे।

मैंने यह बतानेकी कोशिश की है कि सरकारसे कोओी समझौता हुअे बिना लड़ाओीको समेट लेना निरा भ्रमजाल है। यह घातक खतरा है। अिसलिअे मैं कहता हूं कि मेरी सलाह मानिये। हम अैसा कहें कि जनतामें अपनी जिम्मेदारी पर लड़नेकी ताकत आने तक अुससे सम्बन्ध रखनेवाला सविनयभंग स्थगित किया जाता है।

अब गुप्तताके बारेमें दो शब्द कह दूं। आपमें से बहुतोंका खयाल है कि गुप्तताके बिना यह लड़ाओी चलाओी ही नहीं जा सकती। मुझे ज्यादा समय होता तो मैं आपको साबित करके दिखा देता कि गुप्तताने हमारे संगठन और हमारी लड़ाओीको ढीला कर डाला है। मैं तो किसी भी तरहकी गुप्तताको हानिकारक समझता हूं। सन् '३१ में मैंने 'नवजीवन'को छिपे तौर पर चलने दिया, यह मेरी कमजोरी थी। यह मैंने भयंकर भूल की थी। अिससे सत्याग्रहका नियम भंग होता है।

अेक साथीकी वफादारीके बारेमें जो आक्षेप किये गये हैं, अुनके सम्बन्धमें दो शब्द कहूंगा। यह कहा जाता है कि हरिजन बिल धारासभामें पेश हुअे, तब राजाजीने सरकारके साथ सहयोग किया। अिसमें कोओी अपराध है तो वह मेरा है। अुसमें सत्याग्रह या सविनयभंगके कानूनसे मेल न खानेवाली कोओी चीज नहीं थी।

अपने भाषणमें मैंने अपनी तमाम भावनाअें अुंडेल दी हैं, अिसके लिअे आप मुझे क्षमा कीजिये। अूंचीसे अूंची भावनाके बिना यह लड़ाओी चलाना असंभव है। नफे-नुकसानका हिसाब लगाकर यह लड़ाओी नहीं चलाओी जा सकती। आशाओं और भावनाओंसे अुमड़ते हुअे स्त्री-पुरुष ही लड़ाओीमें शरीक होते हैं। दूसरे लोग अुसमें नहीं पड़ सकते। अेक दूसरेसे विरोधी दिशामें खींचतान करनेवाले अनेक बलोंके नीचे हमारा देश कुचला जा रहा है। भावनाके आवेशमें आये बिना अिन बलोंको चुनौती नहीं दी जा सकती। आज हम अिन बलोंका विरोध नहीं करेंगे, तो भावी संतान हमें दोष देगी। अपने ध्येय तक पहुंचे बिना हम रुक नहीं सकते। आप लोग मुझे स्वप्नदर्शी या झूठा आशावादी समझना चाहें तो भले ही समझ लीजिये। लेकिन मैं जानता

हूं कि राजनैतिक मामलोंको में भी थोड़ा समझता हूं। नास्तिक लोग भी भावनाके आवेशमें काम करते पाये गये हैं। मिसालके तौर पर ब्रेडलॉ। हमारी सारी चर्चामें औश्वर साक्षी बनकर रहे। हम कोअी कमजोर कदम न अुठायें। मेरे प्रभावमें आकर आप कुछ न कीजिये। आपके दिल पर में असर न डाल सका होअूं, तो मेरी बातको छोड़ दीजिये। यह मुझे अच्छा लगेगा। मेरी ख़ातिर आप कुछ न कीजिये। संपूर्ण आत्म-विसर्जन तक जो कुछ भी करें, मातृभूमिकी खातिर करें। में आपसे अूंचा नहीं हूं। जिस दुनियाका हो आदमी हूं। में पार्थिव प्राणी हूं। पृथ्वीकी रजसे जरा भी अूंचा नहीं हूं और अूंचा होनेकी महत्त्वाकांक्षा भी नहीं रखता। आपका आभार मानता हूं।

सवाल-जवाब

आसफअली: हम जो कुछ करेंगे, अुस परसे आपके सिद्धान्तका मूल्य नहीं आंका जायगा। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि देशकी खातिर हमें न छोड़िये। आपका निर्णय आखिरी हो और हममें से कुछ कायर बन जायं, तो भी आपके केसरिया बाना पहननेसे क्या होगा! राजपूतोंको क्या मिल गया? आपको आध्यात्मिक बालाकलावा* तो नहीं करना है? हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि फिरसे संगठित होनेके लिअे थोड़ा समय दीजिये। पर आपको हमारा त्याग ही करना हो तो मुझे कुछ नहीं कहना है।

आबिदअली: धरना और नमक-सत्याग्रहके लिअे आपको यह लड़ाअी करनी है?

बापू: मुझसे अेक सवाल पूछा गया है कि जेलमें जानेके बाद वहांसे फिर हरिजनकार्य शुरू करेंगे? जवाबमें मुझे अितना ही कहना है कि मुझे देखना पड़ेगा कि मुझे कैसी जेल मिलती है। किसी भी तरहकी हो, में देखूंगा कि हरिजनकार्य जारी रखना संभव है या नहीं? हमारी लड़ाअीकी शुरुआत १९२०से हुअी है। लाहोर और कराचीके प्रस्तावोंसे हमने अुसके मुद्दे ज्यादा व्यापक बना दिये हैं। मेरी आशा तो यही है कि जब तक आजादी नहीं मिल जाती, तब तक लड़ाअी जारी ही रहेगी। मेरा अेक पैर यरवदा जेलमें है और दूसरा यहां है। हमारी लड़ाअी जारी ही रहे, यह आपको सोचना है। यह तो

* रूसके दक्षिणमें सेवेस्तोपोलके अग्निकोणमें ६ मील दूर यह अेक छोटासा बंदरगाह है। क्रीमियन युद्धके समय यह अंग्रेजोंका मुख्य केन्द्र था। वहां छः सौ मनुष्योंके किये हुअे आत्मबलिदानके लिअे यह प्रसिद्ध है।

अवैध सभा है। यहां किसीको, हमारे कामचलाअू अध्यक्षको भी, लड़ाअी बन्द करनेका अधिकार नहीं है। मैं जो कुछ यहां कह रहा हूं, वह भी सलाहके तौर पर है। मान लीजिये, आपको लड़ाअी बन्द करनी है, तो अुसके लिअे कांग्रेसकी महासमिति बुलानी चाहिये। आप मुझे वाअिसरॉयको लिखनेकी अिजाजत दें, तो अुसमें भी मेरा स्थान दूतका होगा। मैं जो भी शर्तें पेश करूंगा, अुन्हें मुझे कांग्रेसकी महासमितिसे मंजूर करवाना पड़ेगा। अिस तरहके समझौतेसे आजादी तो कोसों दूर होगी। हमें आजादी देना अिंग्लैंडके हाथमें नहीं है। आजादी तो हमें अपनी ताकतसे लेनी है। फिलहाल अनुभवियोंकी राय यह है कि सुधार १९३५ के अन्तमें आयेंगे। लेकिन आजादी मिलनेसे पहले तो हमें जानकी बाजी लगाकर लड़ना पड़ेगा। हरअेक सत्याग्रहीको अपने आप सविनयभंगका कार्यक्रम पैदा कर लेना पड़ेगा। तीस करोड़ आदमी भी, हरअेक अपना नेता बनकर व्यक्तिगत सविनयभंग कर सकते हैं। या अेक आदमीकी सरदारीमें सौ आदमी अिकट्ठे होकर भी व्यक्तिगत सविनयभंग कर सकते हैं। व्यक्तिगत सविनयभंगमें किसी भी मनुष्यकी शक्ति या अुत्साहको रोका नहीं जा सकता। मेरी स्थिति क्या है, यह यहां अप्रस्तुत है। विधानकी रूसे तो सविनयभंग जारी रखनेका मुझे पूरा अधिकार है। अैसा हो सकता है कि कांग्रेसकी महासमितिकी बैठक होनेसे पहले भी मैं जेलमें पहुंच जाअूं। जिस दिन मुझे यह मालूम हो जाय कि मैं आपके साथ बातचीत नहीं कर सकता, या आजादीसे चल-फिर नहीं सकता या मुझ पर किसी भी तरहकी पाबन्दी लगानेवाला हुक्म दिया जाय, तो क्या अैसे हुक्मको मानना मुझे या आपमें से किसीको भी शोभा दे सकता है? अपने भाषणमें मैंने जो यह कहा कि हम स्थायी बंधनमें हैं, अुसका यही अर्थ था।

स० : कांग्रेसके सर्वाधिकारीकी व्यक्तिगत सविनयभंगमें क्या स्थिति होगी?

बापू : व्यक्तिगत सविनयभंग करनेवालेके लिअे किसी भी सर्वाधिकारीकी अिजाजत लेनेकी बात ही नहीं है। हरअेक आदमी अपना नेता बन जाता है। व्यक्तिगत सविनयभंगमें सर्वाधिकारीकी कोअी जरूरत नहीं। किसी हुक्मकी भी जरूरत नहीं।

स० : कोअी अेक तालुका भस्मीभूत हो जाना चाहे, तो वह अैसा कर सकता है?

बापू : जरूर। मैं तो चाहता हूं कि हरअेक तालुका अैसा करे। अिसके लिअे कांग्रेसके हुक्मकी जरूरत नहीं। लेकिन यह तालुका कांग्रेसके नाम पर और कांग्रेसके आश्रयमें अैसा करेगा। × × ×

वाअिसरॉयको लिखनेकी मुझे कोओी चटपटी नहीं लगी है। आप अिजाजत नहीं देंगे, तो मैं नहीं लिखूंगा। × × ×

गढ़वाल और मेरठके कैदी छूटने ही चाहियें, अैसी शर्त समझौतेके लिअे अनिवार्य नहीं है।

स० : व्यक्तिगत सविनयभंगके आपके सुझावमें कोअी अैसा आदमी सम्मति दे सकता है, जो थोड़े महीने बाद सविनयभंग करनेवाला हो?

बापू : यह नाजुक सवाल है। मनुष्य अैसी सम्मति तो दे सकता है, पर अुसे राष्ट्रके प्रति और अपने आपके प्रति वफादार होना चाहिये। × × ×

बचपनसे ही अपने बच्चोंको मैंने अपने खिलाफ विद्रोह करना सिखाया है। × × ×

मैंने यह आशा नहीं रखी कि आज राय देनेवाला हरअेक आदमी कल ही सीधा जेलमें पहुंच जायगा। × × ×

किसी भी सत्याग्रहीका, जब तक वह खुद जिन्दा है, तब तक यह कहना ठीक नहीं कि अुसके तंत्रका कोअी संचालक नहीं है। × × ×

जिन शर्तोंमें आम जनताकी रक्षा न होती हो, अुन्हें मैं सम्मानपूर्ण नहीं मानूंगा। × × ×

किसी भी किसानको जमीनका लगान अदा कर देनेके लिअे कांग्रेस हुक्म नहीं दे सकती। जो लोग जेलमें जायंगे या दूसरी तकलीफें बरदाश्त करेंगे, अुन्हें कांग्रेस तो शाबाशी ही देगी।

[ता० १५ की डायरी नहीं लिखी गअी। —सं०]

अेक आश्रमवासीके साथ लड़ाअीमें आश्रमके हिस्सेके सम्बन्धमें हुअी बातचीत :

१६-७-'३३

स० : व्यक्तिगत सविनयभंग शुरू हो जाय और आश्रमसे जितने जेल जानेवाले हों, वे जेलमें पहुंच जायं, तो बादमें बाकी रहनेवालोंको आश्रमकी सारी प्रवृत्तियां समेट लेनी चाहियें या नहीं? समेट लें तो क्या क्या? और किस हद तक?

बापू: मेरी राय यह है कि समय आने पर आश्रमको सब काम बन्द करके अपनी आहुति दे देनी चाहिये। वह मौका अिसी वक्त न भी हो। ये समाचार मैंने कहलवा दिये हैं। समय कब आयेगा, यह बाहर रहनेवाले तय करेंगे।

स०: कौनसी प्रवृत्ति जारी रखी जाय, यह आप तय कर जायंगे या जो मौके पर होगा वह तय करेगा?

बापू: जहां सभी प्रवृत्तियां बन्द कर देनेकी बात है, वहां यह प्रश्न ही नहीं रहता कि कौनसी जारी रखी जाय।

स०: जिन्हें हम अपनी संस्थाअें मानते हैं वे या जो आश्रमके माने जाते हैं, वे अुस कामको छोड़कर लड़ाअीमें कूद पड़ें या नहीं?

बापू: अिसका जवाब अूपर आ जाता है। पर किसी पर दबाव न डाला जाय।

स०: आश्रममें जितने बालिग हैं, अुन्हें जेलमें ही जाना चाहिये या वे अपनी पढ़ाअीमें या दूसरे धंधेमें लगे रह सकते हैं?

बापू: धर्म तो प्रत्यक्ष है। लेकिन यह हो सकता है कि सबको वह प्रत्यक्ष न मालूम हो, यानी सब अपनी अिच्छा और शक्तिके अनुसार करें।

स०: स्वराज्यके सब कामोंमें अिस समय सबसे पहला काम कौनसा है?

बापू: मुझे तो सबसे पहला काम सविनयभंग ही लगता है।

स०: संभव है आश्रमको गैरक़ानूनी करार न दें और अभी जो काम वहां हो रहा है अुसे होने दें, तो फिर आश्रमको सविनयभंगका केन्द्र बनाया जा सकता है? वैसा काम करके हम आश्रमको गैरकानूनी करार देनेके लिअे सरकारको निमंत्रण दे सकते हैं?

बापू: यही मैंने अूपर बताया है। समय आने पर आश्रमको अपने आप कुरबान हो जाना चाहिये। सरकारके निमंत्रणका कोअी अिन्तजार न करे।

[ता० १७ और १८ की डायरी नहीं लिखी गअी। —सं०]

अे० पी० आअी० को:

१९-७-'३३

पार्लियामेण्टमें हिन्दुस्तान सम्बन्धी चर्चाके दरमियान सर सेम्युअल होरके दिये हुअे भाषणका अहवाल मैंने पढ़ा है। वाअिसरॉयके तारसे जो दुःख मुझे हुआ, वही दुःख और आश्चर्य अिस अहवालको पढ़कर हुआ है। × × × मेरे अुपवासके बाद मैं नियमित रूपसे अखबार नहीं पढ़ सका हूं। पिछले दस-बारह दिनोंमें

तो मैंने अखबार पर नजर भी नहीं डाली। अिसी कारणसे कि मुझे जरा भी वक्त नहीं मिला। अिसलिअे मैं नहीं कह सकता कि अवैध परिषदके बारेमें अखबारोंमें आया हुआ हाल अुस परिषदमें जो कुछ हुआ अुसका सच्चा प्रतिबिम्ब है या नहीं। मेरे कहनेका मतलब यह नहीं कि अखबारोंके विवरण सब गलत ही हैं। पर मैं यह कहता हूं कि ये विवरण अनधिकृत होनेके कारण सरकारको अुन पर ध्यान नहीं देना चाहिये था। अैसे अवैध सम्मेलनोंमें मैं या और कोअी जो कुछ बोले हों, अुसके साथ वाअिसरॉयका क्या वास्ता? वाअिसरॉय मुझे मुलाकात देते, तो अुस मुलाकातमें जो कुछ मैं कहता अुस परसे अुन्हें अपना फैसला करना चाहिये था। अिस परिषदकी कार्रवाअीको जान-बूझकर गुप्त रखा गया था, ताकि मुलाकातकी मेरी प्रार्थना पर अुसका कोअी असर न हो। अखबारोंके विवरणकी सचाअीसे अिनकार करनेको मुझसे अभी तक कहा जाता है। पर अिन सब अखबारोंकी फाअिलें ध्यानसे देखे बिना मैं अैसा कैसे कर सकता हूं? मैं कितने अखबार पढ़ने बैठूं? अिसलिअे मैं कहता हूं कि यह सूचना व्यावहारिक नहीं। मुलाकातकी मांग करते समय मैंने कोअी शर्त नहीं रखी थी, अितना काफी होना चाहिये था। सुलहकी कोअी संभावना है या नहीं, यह विचार करनेके लिअे मैंने मुलाकातकी विनती की थी। अिसलिअे मेरी मांग पर अिसी तरहसे विचार करना चाहिये था। लेकिन सरकार तो अिस समय मुझे यह सवाल पूछना चाहती है कि मैंने देशको सविनयभंगकी लड़ाअी शुरू करनेकी जो सलाह दी, अुसका मुझे पश्चात्ताप है या नहीं? और मैं अिस लड़ाअीको बिना शर्त वापस ले लेनेकी सलाह देनेको तैयार हूं या नहीं? अिन सवालोंका जवाब तो मैंने पहले ही दे दिया है।

अपने लिअे तो मैं कहता हूं कि मेरी तरफसे समझौतेके द्वार कभी बन्द नहीं होंगे। जरा भी मौका मिलने पर वाअिसरॉयके महलका दरवाजा खट-खटानेमें मुझे संकोच नहीं होगा। पर मैं समझता हूं कि सरकारने तो कांग्रेस जब तक सविनयभंगकी लड़ाअी पूरी तरह समेट नहीं लेती, तब तक अपना दरवाजा पूरी तरह बन्द कर लिया है। मैं आशा रखता हूं कि कांग्रेस अिस तरह कभी सविनयभंगकी लड़ाअी वापस नहीं लेगी।

अिस लड़ाअीके स्थगित रहनेके कालमें किसी भी कानूनको तोड़नेके रूपमें कोअी भी काम करनेका मेरा अिरादा नहीं है। अिस महीनेके आखिर तक तो मैं कुछ नहीं करूंगा।

'टाअिम्स ऑफ अिंडिया' के प्रतिनिधिको मुलाकात :

सामूहिक सविनयभंगमें बहुत लोग भेड़की तरह चलते हैं। नेता जो कहे अुसीके अनुसार करते हैं। और सब साथ-साथ पार होते या डूबते हैं। व्यक्तिगत सविनयभंगमें हरअेक आदमी अपना नेता बन जाता है। अेक आदमी कमजोर पड़े, तो अुसका

२०-७-'३३

असर दूसरे आदमी पर नहीं पड़ता। अेक करोड़ मनुष्य भी व्यक्तिगत सविनय-भंग कर सकते हैं। अिसका अर्थ यह है कि हरअेक आदमी दूसरेसे स्वतंत्र रहकर और अपनी ज़िम्मेदारी पर काम करता है। किन्तु अिसका अर्थ यह नहीं करना चाहिये कि ये सब लोग अेक विचारके या अेक ध्येयवाले न हों और परस्पर विरोधी दिशामें जायं। अुलटे हरअेक आदमी अेक ही अुद्देश्यसे और अेक ही झंडेके नीचे काम करता होना चाहिये। सब अेक-दूसरेसे स्वतंत्र होने पर भी अेक ही दिशामें खींचनेको जोर लगायेंगे। व्यक्तिगत सविनय-भंगकी खूबी तो अिसमें है कि अुसमें हार जैसी चीज ही नहीं रहती। कोअी भी दुनियावी ताकत कितनी ही बलवान क्यों न हो, वह व्यक्तिगत सविनयभंग करनेवालेको हरा नहीं सकती।

व्यक्तिगत सविनयभंगमें व्यक्तिको जो ठीक लगे और सत्य तथा अहिंसाके सिद्धांतके अनुसार कांग्रेसने जो आदेश दिया हो, वह सब आ जाता है।

स० : जेलके सीखचोंमें जा बैठनेसे देशको क्या लाभ होगा?

बापू : मुझे यह लगे कि देशको अिससे कोअी लाभ नहीं होता, तो मुझे सविनयभंग बन्द कर देना चाहिये। परन्तु सविनयभंगकी तहमें तो यह सिद्धांत है कि अन्यायी राज्यमें स्वतंत्रताप्रिय मनुष्यको बाहरकी अपेक्षा जेलमें ही सच्ची आजादी लगती है।

स० : आपको अैसा नहीं लगता कि पूनाकी परिषदके परिणामस्वरूप दो या अधिक दल हो जायंगे और कांग्रेसमें फूट पड़ जायगी?

बापू : मैं नहीं समझता कि जरा भी अैसा परिणाम होगा। कांग्रेसियोंमें परिषदके समय तीव्र मतभेद दिखाअी जरूर दिये, पर पूना-परिषदमें अेक दूसरेके प्रति जैसी सद्भावना थी, झगड़ालूपनका जैसा नितान्त अभाव था और अध्यक्षकी आज्ञाका जिस तत्परतासे पालन होता था, वैसा मैंने और परिषदोंमें नहीं देखा। मैं तो सचमुच मानता हूं कि कांग्रेसमें जरा भी फूट नहीं पड़ेगी; और सुधरा हुआ कार्यक्रम जब अध्यक्षकी तरफसे प्रकाशित किया जायगा, तब मालूम होगा कि हर तरहकी रायवालोंको अुससे पूरा-पूरा संतोष ही होगा।

स०: जिस तरहसे क्या आप थोड़ा-थोड़ा करके सविनयभंग वापस ले लेना चाहते हैं?

वापू: मुझे अैसा कभी नहीं लगा कि लड़ाअीमें शिथिलता आ गअी हो तो अुसे स्वीकार कर लेनेमें कोअी छोटापन या कमजोरी है। अिसलिअे मैंने सामूहिक सविनयभंग स्थगित करनेकी सलाह दी है। अिस हद तक पीछे हटनेकी बात मैंने साफ तौर पर स्वीकार की है। मुझे यह लगा होता कि किसी भी तरहका सविनयभंग अिस समय संभव नहीं है और अिस तरहकी राय रखनेवाला मैं अकेला ही होता, तो भी सविनयभंगको पूरी तरह वापस ले लेनेकी मैं सलाह दे देता। किन्तु सत्याग्रहमें व्यक्तिगत सविनयभंगका शस्त्र अमोघ और अजेय है। वाअिसरॉयसे मुलाकातकी मांग तो मैंने अिसलिअे की कि परिषदके और सदस्योंकी तरह मैं भी अुत्सुक था कि यदि सम्मानपूर्ण समझौता हो सके, तो व्यक्तिगत सविनयभंग भी बन्द कर दिया जाय। अिस प्रकार आप देखेंगे कि मुलाकातकी मांगकी तहमें अैसा दुराग्रह नहीं था कि व्यक्तिगत सविनयभंग भी किसी हालतमें वापस नहीं लिया जायगा।

सरकार जब तक मुझे बाहर रहने देगी तब तक बाहर हूं, या लड़ाअीके स्थगित रहनेकी मीआद ३१ जुलाअी है तब तक मैं बाहर हूं।

मेरा मत यह है कि अिस बार अिंग्लैंडके मित्र बहुत कम मदद दे सकते हैं। × × × वाअिसरॉयका रवैया बिलकुल गलत है, अिस बारेमें मेरे मनमें जरा भी शंका नहीं। लोगोंके ज्यादा अूंचे और ज्यादा शुद्ध ढंग पर कष्ट सहन करनेके सिवाय कोअी मार्ग नहीं है।

[ता० २१ की डायरी नहीं लिखी गअी। – सं०]

अहमदाबादमें हरिजनोंकी सभामें भाषण:

२२-७-'३३

म्युनिसिपैलिटीसे मेरी मांग है कि मैला अुठानेके लिअे टोकरीके बजाय कोअी दूसरी अच्छी सुविधा भंगी भाअियोंके लिअे कर देनी चाहिये। भंगीका काम साफ ढंगसे और स्वास्थ्यकी दृष्टिसे अच्छी तरह करनेका शास्त्र है और मैं अुसे जानता हूं। भंगी भाअी-बहन टोकरीमें ही मैला अुठाना पसंद करते हैं। पश्चिममें बोझा अुठानेकी यह प्रथा नहीं है। मैंने बालटियोंका सुझाव दिया, अिस पर दो आपत्तियां की गअी हैं। यह काम दो आदमियोंके बिना नहीं हो सकता। अिसलिअे वेतन दो आदमियोंमें बंट जानेके कारण कम मिलेगा। दूसरे, बालटियोंसे काम नहीं चलेगा। पर ये आपत्तियां ठीक नहीं हैं। बालटियोंकी व्यवस्था ज्यादा सुविधाजनक है। और भंगी भाअी पूरा काम

करें तो अुन्हें वेतन कम ही मिले, अैसी कोअी बात नहीं। दक्षिण अफ्रीकामें जेलकी बालटियां हम दो आदमी आसानीसे अुठाकर आध मील तक ले जाते थे। आपको यह पसंद हो तो मैं म्युनिसिपैलिटीसे बात करूं।

भंगी भाअी-बहनोंको यह काम करके तुरन्त अच्छी तरह नहाना चाहिये। नहानेकी सुविधाकी मांग म्युनिसिपैलिटीसे मैं कर सकता हूं, पर भंगी भाअी-बहनोंको अुसका अुपयोग करना चाहिये। अब जब कि जागृति हो गअी है और हिन्दू धर्ममें हमें सुधार करना है, तब हमारे तमाम कामोंमें और हम सबमें जागृति होनी चाहिये और सुधार होने चाहियें।

अछूतोंमें भी आपसमें जो दीवारें हैं, वे मिटनी चाहियें। ढेढ़ भंगीको अपनेसे हलका समझे और अलग रखे, यह ठीक नहीं। ठक्करबापाको हार कर अकेले ढेड़ोंकी या अकेले भंगियोंकी पाठशालायें खोलनी पड़ती हैं। अिसमें दोष सारे हिन्दू समाजका है, लेकिन हमें यह दोष निकालना और यह सुधार करना ही पड़ेगा।

सवर्ण हिन्दुओंको क्या क्या करना चाहिये, अिसका आपने जिक्र किया है। वे लोग अपना धर्म पालें या न पालें, आपको तो अपना धर्म पालना ही चाहिये। हमें सवर्ण हिन्दुओंका विचार नहीं करना है। आपके जरिये मैं अुनके पास विचार नहीं पहुंचा सकता। अिस शुद्धिके काममें आपको भीतर ही भीतर बहुत कुछ करना है। आप अितना भी कर लें तो अस्पृश्यताका नाश हो जायगा। सवर्ण हिन्दू प्रायश्चित्त करें या न करें, पर आप अपना धर्म पालें तो कथित अुच्च वर्णके हिन्दुओंका अूंचापन न जाने कहां चला जायगा। आप मुझसे यह न पूछिये कि क्या अुच्च वर्णके हिन्दू मद्यपान, मांसाहार और व्यभिचार वगैरा नहीं करते? सिर्फ हमें ही छोड़नेको क्यों कहते हैं? अैसी बहस आप मेरे साथ न करें। वे लोग अैसा करते हों या सारी दुनिया बुरा करे, तो भी आप अैसा क्यों करें? आपको तो निरंतर जागृति रखकर सुधार करनेमें जुटे ही रहना चाहिये।

आप देशका धन बढ़ाते हैं, क्योंकि आपके धंधे अुत्पादक हैं। आप मिलोंमें काम करें या स्वतंत्र काम करें यह मुझे पसंद है; आप कितनी ही नक्काशी या कारीगरी करें, यह भी मुझे पसंद है; आप खूब पढ़ें, यह भी मुझे अच्छा लगेगा। मगर आप अपने बच्चोंको पढ़ाकर अुन्हें क्लर्की करनेको न कहना। मैं भंगीका काम करके अपना गुजर करता होअूं, तो अपने लड़केसे भी यही काम कराअूं। और मुझमें योग्यता हो, तो म्युनिसिपैलिटीका अध्यक्ष बनकर भंगीका काम करते हुअे शहरकी सरदारी भी करूं।

अिसलिअे मेरी आपको सलाह है कि आप स्वतंत्र बनें, स्वावलम्बी बनें और अपनी बुद्धि पर आधार रखें। आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता। अिसलिअे आप जहां तक हो सके खुद पुरुषार्थ करके अच्छे बनें।

केशवजीने मुझे अेक सुझाव दिया है कि हरिजन-सेवक-संघमें हरिजनोंका प्रतिनिधित्व होना चाहिये। लेकिन अिसमें गलतफहमी है। हरिजन-सेवक-संघ तो सवर्ण हिन्दुओंके प्रायश्चित्त करनेके लिअे संघ है। सवर्ण हिन्दू प्रायश्चित्त करें, तो अुसमें हरिजन किस लिअे शामिल हों? हरिजनोंको कोअी प्रायश्चित्त नहीं करना है। फिर भी हरिजनोंका अेक सलाहकार मंडल भले ही रहे। वह हरिजन-सेवक-संघको सलाह दे। मेरा प्रायश्चित्त तभी शोभा देगा, जब मैं अपने पापोंको धोनेके लिअे स्वयं कुछ न कुछ करूं। आप सलाहकारके तौर पर प्रायश्चित्त मंडलको सहायता दीजिये। आप यह सलाह दें कि फलां जगह पाठशाला खोलिये और फलां जगह कुअेंकी व्यवस्था कीजिये। लेकिन अगर आप ही संघके व्यवस्थापक बन जायंगे, तो सवर्ण हिन्दू छूट जायंगे और सारा बोझा आपके सिर पर आ पड़ेगा। अिसमें सत्ताकी या अधिकार रखनेकी बात ही नहीं। मैंने तो व्यवस्था सम्बन्धी खर्च कमसे कम करनेकी बात कही है। व्यवस्थाके जरूरतसे ज्यादा खर्चको मैंने चोरी कहा है। अिन संस्थामें नियुक्त होनेसे आपको झूठा संतोष हो जायगा, लेकिन कोअी लाभ नहीं होगा। मेरी यह सलाह सोनेके अक्षरोंमें लिख कर रखना।

अस्पृश्यता-निवारणके कामके लिअे गुजरात सबसे कठिन प्रान्त है। यहां वैष्णवोंका बोलबाला है और अुनमें श्रावक मिल गये हैं। वैसे अखा भगत तो गा गया है कि छुआछूत हिन्दू धर्मका फालतू अंग है। गुजरातमें आप लोगोंकी सबसे बुरी हालत है। फिर भी मैं आपके साथ मरनेको तैयार हूं न?

[ता० २३ से २६ तककी डायरी नहीं लिखी गअी — सं०]

'टाअिम्स ऑफ अिंडिया'के प्रतिनिधिसे :

नागिनी देवी, मार्गरेट और डंकनको राजनैतिक मामलोंमें या सविनय-भंगमें भाग नहीं लेना है। वे अिस वक्त आश्रममें हरिजनसेवाकी तालीम पा रहे हैं। आश्रम बिखर जाय तो मैं अुन्हें वर्धा भेजनेका अिन्तजाम कर दूंगा।

२७–७–'३३

वहां अुनकी तालीम जारी रहेगी। दूसरे आश्रमवासी, जो सविनयभंगकी लड़ाअीमें भाग नहीं लेना चाहते, अपने-अपने घर चले जायंगे। पुराने कार्यकर्ताओंको और अुनके बच्चोंको जहां अुनके रहने और शिक्षाकी

सुविधा होगी वहां भेज दिया जायगा। आश्रमकी जमीन, मकान और जंगम सम्पत्तिका सरकारको जो करना हो करे। सरकारको पहलेसे सूचना किये विना मैं कुछ नहीं करूंगा। मैं अभी तक तय नहीं कर सका हूं कि निश्चितरूपसे क्या कदम अुठाअूंगा। यह भी हो सकता है कि मेरे कुछ करनेसे पहले ही सरकार मेरे खिलाफ कार्रवाअी करके मेरी सारी योजनाओंको विफल कर दे। पर सन् १९०६ में मैंने सत्याग्रहका आविष्कार किया, तभीसे मेरा जीवन अिसी तरह चलता आ रहा है।

[ता० २८ से ३० तककी डायरी नहीं लिखी गअी। —सं०]

साबरमती

३१–७–'३३

शामको आनन्दी, वाबू, वनमाला, हमीद, वहीद, सुलताना, बचु, शारदा और मोहन कुल नौ बच्चोंको अनसूयावहनके सुपुर्द कर दिया। वापस लौटते समय मेरी आंखें डबडबा आअीं। अनसूयांबहन भी खूब रोअीं और बापूके पैर पड़ीं।

रातको बापूने आश्रमवासियोंको प्रवचन दिया। गोपीचन्दका त्याग याद दिलाया, जीवन भरका भेख लेनेकी बात कही और सबके मनमें यह बसा दिया कि अेक आदमी भी रह जाय तो कूच करना ही है। सिंह-नीतिसे काम लेना है। सिंह झुंडमें नहीं घूमते। भेड़ें झुंड बनाकर घूमती हैं। यह कहकर सबको विदा दी कि हमें ३३ करोड़का भार अुठाकर और प्रतिनिधि बन-कर निकलना है।

आश्रमसे आकर विद्यापीठकी पुस्तकोंका दान-पत्र लिखा।

दु:खी दुर्गाको खुश करनेके बजाय क्रोध करके मैंने अुसका जी दुखाया, अिसका दु:ख मनमें ही रह गया।

रातको अेक बजकर बीस मिनिट पर पुलिस दल आया। बाको, बापूको और मुझे अिमरजन्सी पावर्स धारा ३ के अनुसार तलब किया। जमनालालजी पास ही सो रहे थे। पुलिसका घरमें घुसना हुआ और अुसी वक्त तारवालेका अेफीका तार लेकर आना हुआ। गिरफ्तारीसे पहले मथुरादासने तार पढ़कर सुनाया: "आपके पास हूं।"

अुतरते-अुतरते मैंने बाल (नारायण) से कहा: तुझे नहीं पकड़ा अिसलिअे तूने कल कूच शुरू कर देना। मगर बादमें जब पुलिससे मालूम हुआ कि आश्रम पर भी धावा हुआ है, तो बापूने अुनसे कहा कि अगर सभी कूचवालोंको पकड़ना है तो बाल ही यहां रह जाता है। अिसलिअे पुलिसने बालको भी साथ ले लिया।

आश्रमके सामने थोड़ी देर बापूकी गाड़ी खड़ी रही। हमारी भी खड़ी रही। हमारी गाड़ीमें बा, मैं और बाल थे।

दरवाजे पर पहुंचने पर अरविन कलेक्टरने बयान लिया। बापूने बयान दिया कि मैं शांतिभंग करनेवाला नहीं, बल्कि स्थापित करनेवाला हूं। और सविनयभंगका अुद्देश्य भी आखिरमें शांति कायम करना ही है।

अिसके बाद मुझे बुलाया। मैंने कहा: देशमें डरकी बीमारी फूट निकली है। अुससे निपटनेके लिअे और स्वराज्य लेनेके लिअे सविनयभंग पर अमल करने और अुसका प्रचार करनेकी मेरी प्रतिज्ञा है।

दो-ढाअी बजे मैं और बापू साबरमती जेलके अेक यार्डमें सोये। दो खाटें रखी हुअी थीं। दूसरी कोअी तैयारी नहीं थी।

१-८-'३३

बापू कहने लगे: तिलक महाराजकी श्राद्ध-तिथि आज कैसे अच्छे ढंगसे मनाअी गअी? बंबअी जानेसे अिनकार करनेमें समझदारी ही हुअी न? अेफीके तारकी बात करके बोले: यह चमत्कार नहीं तो क्या है? गिरफ्तारीके समय ही तार आये और तारमें 'प्यार' या 'अीश्वर आपकी रक्षा करे' या अैसे ही दूसरे शब्दोंके बजाय 'आपके पास हूं' शब्द हों, तो अुनसे यह मालूम होता है मानो हमारी गिरफ्तारीके समय वह पास ही खड़ी है।

अडवानी आये। खूब आवभगत की। बापूने तो अुनके जाते ही पहला काम हरिजन-कार्यके लिअे छूट मांगनेका पत्र लिखनेका किया।

अडवानीने खबर दी कि बाको मीराबहनके साथ रखा गया है। सबेरे अुबली हुअी लौकी आअी थी, अुसमें मैंने लौकीका सूप बनाया। शामको बाको लौकी भेज दी। अुन्होंने बापूके लिअे सूप बनाकर भेजा। यह लम्बे अर्सेके लिअे बाके हाथका सूप लेनेका आखिरी मौका था, क्योंकि शामको ही अडवानीने आकर कहा: हमारी दोस्ती थोड़ी ही देरकी है। आप बोरिये-बिस्तर बांधिये। वल्लभभाअीकी बातें कर रहे थे और यह सोच रहे थे कि अुनके मन पर क्या बीत रही होगी, अितनेमें अडवानी आ गये।

जल्दीसे सामान बांधकर तैयार हो गये। दरवाजे पर से बुलावा आनेसे पहले बापू जरा सो लिये।

जाते-जाते मैंने दुर्गाको चिट्ठी लिखी, माफी मांगी और अीश्वरने सबकी लाज रख ली, अिसके लिअे अुसे धन्यवाद दिया।

मोटरें दरवाजे पर खड़ी थीं। पुलिस सुपरिन्टेंडेंट प्राअिड साबरमती स्टेशनके साअिडिंगमें पड़े हुअे अेक सलूनके सामने खड़ा था। हमें सलूनमें

बिठाया गया और सलून चला । अंदर दो रेलवे पुलिसके अिन्स्पेक्टर थे। सलून भी किसी रेलवे अफसरका ही मालूम हुआ। 'सांताक्रूज तक हम हैं, आगे कहां जाना है अिसका हमें पता नहीं; हमें तो आपको मि० कोण्डनके सुपुर्द कर देना है। मि० कोण्डन मि० गांधीके पुराने मित्र हैं,' यह अुनमें से अेक अफसरने बताया। बादमें कहने लगा: 'आपको कुछ जरूरत हो तो मांग लीजिये। कारण आपके खर्चके लिअे हमें १ रुपयेकी बड़ी रकम दी गअी है!' यह कहकर वह हंसा।

२–८–'३३ सवेरे सांताक्रूज पर गाड़ी रुकी और हमें मि० कोण्डनने मोटरमें बिठाया। दूसरी मोटरमें सामान भरा गया। मोटरमें अेक बोतलमें बकरीका दूध, अंगूर और मोसंबी तैयार रखे गये थे। रास्तेमें अच्छी बरसात हुअी। दो बार मोटरके टायर फटे। खंडालाके घाट पर स्व० नरोत्तम मुरारजी याद आये। मैंने 'अेट्ना पर अेम्पीडोक्लिस' याद किया। बापूने पूछा: सचमुच ही अेम्पीडोक्लिसकी अिस तरह मौत हुअी या यह काल्पनिक कथा है?

सवा ग्यारह बजे पर्णकुटी दिखाअी देने लगी और डेक्कन कॉलेज रोड परसे दाहिनी ओर मुड़कर साढ़े ग्यारह बजे गाड़ी दरवाजेमें जा खड़ी हुअी। दरवाजे पर खंडेरावका हंसमुख चेहरा स्वागतके लिअे था ही। फिर पारखी दिखाअी दिये। कटेली साहब नहीं थे। हमारे आनेकी सूचना पहलेसे किसीको नहीं दी गअी थी, यह खबर पारखीने दी। यार्डमें घुसकर वल्लभ-भाअीको देखनेकी अुत्सुकता थी। पर वहां तो न वल्लभभाअी मिले और न जोशी मिले। दरवाजे पर मुहर लगी हुअी थी। बापू बोले: घोंसला ज्योंका त्यों है, पर पंछी अुड़ गये हैं।

धीरे-धीरे पता चला कि सरदारको ऑपरेशनके लिअे बम्बअी ले गये हैं और जोशीको सेपरेटमें रख दिया गया है। रातको 'टाअिम्स' देखनेको मिला। अुसे देखकर बापूने तुरंत ही गृहमंत्रीको पत्र लिखा कि हम सरकारका हुक्म नहीं मानेंगे; हुक्म जारी करके अुसका सार्वजनिक रूपमें अनादर कराकर आपको असुविधामें डालनेका हमें क्यों मौका देते हैं?

३–८–'३३ सवेरे अुठते ही 'टाअिम्स' देखा। अुसमें हमारा भविष्य बता दिया गया था कि गांधीको पूना लाकर तुरंत छोड़ दिया जायगा। और वे आज्ञाभंग करेंगे, तो अुन्हें वापस गिरफ्तार कर लिया जायगा। बापूने फौरन वह पत्र मार्टिन साहबको दे दिया। थोड़ी देर बाद मेक्लाकन कलेक्टर आये। सदाकी भांति

हंसमुखी बातें करनेकी वृत्तिमें नहीं थे, मगर चेहरा तो हंस ही रहा था। अुन्होंने कहा: सरकार अिस तरहका हुक्म जारी करना चाहती है। आपको क्या कहना है?

बापूने कहा: मुझे जो कहना था मैं गृहमंत्रीको लिख चुका हूं और अुसमें कुछ भी जोड़ना नहीं चाहता। दोपहरको मुझसे भी यही जवाब कलेक्टरका पर्सनल असिस्टेण्ट ले गया। हुक्म वहीका वही था। हुक्ममें विदेशी मालके बहिष्कारका प्रचार न करनेकी भी बात थी। अिससे बापूको बड़ा आश्चर्य और चिढ़ हुअी। मेक्लाकनने जाते-जाते कहा: यहां लौटने पर आपको आनंद हुआ दीखता है। यह तो आपका दूसरा घर ही है।

बापूने कहा: दूसरा नहीं। यह अेक ही घर है।

अब यह निश्चय हो गया कि कल यह हुक्म मिलने ही वाला है। यरवदा छोड़नेके हुक्मका अर्थ है यरवदाके चक्कर काटते रहना। सामानका क्या होगा?

बापू बोले: हम तो कह देंगे कि सामान संभाल लो, हमें पकड़नेके बाद जहां ले जाओ वहां भेज देना। वापस आ गये तो सामानका यहां रहना अच्छा ही होगा। पर हमें तो सिर्फ अेक थैली कंधे पर रखकर ही चलना है। निश्चय कड़ा था। मैंने जो कपड़े छोड़ दिये थे अुन सबको अिकट्ठा करके वापस गांठ बांध दी।

वल्लभभाअीका खयाल हर वक्त आता था, पर गुत्थी किसी तरह सुलझती नहीं थी।

४-८-'३३

९ बजनेमें १० मिनिट थे कि मार्टिनने आकर कहा: मुझे आपको बाहर निकाल देना है। यह कहकर हुक्म बताया और साथ ही साथ खबर दी कि सामान आपका भले ही यहां पड़ा रहे। आपके लिअे गाड़ी है, अुसमें पर्णकुटी जाअिये, मित्रोंसे मिलिये और पर्णकुटी न छोड़ेंगे तो कहा जायगा कि आपने हुक्मको नहीं माना है। हम खुश होकर दरवाजे पर गये। दफ्तरमें ओ गोर्मन था। बहुत खुश होकर गुड मार्निंग किया। वह आजकल पूनामें है, बहुत साल बाद मिलना हुआ, वगैरा बातें प्रेमपूर्वक कीं। हमें मार्टिनने हुक्म दिये। हुक्मों पर दस्तखत मजिस्ट्रेटके नहीं, परंतु गृहमंत्री मैक्सवेलके थे। अुनमें से 'विदेशी मालका बहिष्कार' की बात निकाल दी गअी थी।

दरवाजे पर नाटक शुरू हुआ। खानगी टैक्सीमें बिठाकर गोर्मनने पूछा: आप पर्णकुटी जायंगे?

बापू बोले: नहीं, यहीं कहीं चक्कर काटते रहेंगे, अिसलिअे हमें किसी शांत जगह ले चलिये।

वह बोला: अच्छा। आपको पासके अेक रास्ते पर ले जाया जायगा। वहां साढ़े नव बजे मि० जेनर आपको नोटिस देंगे और दस मिनिट बाद आपको पकड़ लिया जायगा। हमारा जुलूस चला। अेक बंगलेके सामने गाड़ी खड़ी हुअी। जो डाक आअी हुअी थी, वह सब हमने खोली, पढ़ी और पूरी की। अितनेमें अुसने पकड़नेका नोटिस दिया और मोटर वापस जेलकी तरफ चली। रास्तेमें टैक्सीवाला अीसाअी कहने लगा: कल मुझे बुलाया गया था और जेल पर खड़ा रहनेको कहा गया था। किसीसे बात न करनेको भी कहा गया था। अिसलिअे मैं सारा खेल समझ गया। मगर मैं क्या करता? मैं तो किरायेका टैक्सीवाला ठहरा! अिस तरह अिस आदमीने बातें तो शर्मा कर कीं, मगर शामको हमारा मुकदमा हुआ, तब गवाही देने भी वही आया। शायद रुपया मिला होगा, दबाव भी पड़ा होगा।

हम दस बजे वापस दाखिल हुअे। मार्टिनसे बापूने हंसते-हंसते कहा: मोटरकी सैर अच्छी रही!

आकर बापूने गृहमंत्रीको पत्र लिखा कि हरिजन-कार्यके लिअे मुझे जवाब मिलना ही चाहिये, यह काम रोका नहीं जा सकता, अिसे तो मुझे प्राणोंका खतरा अुठाकर भी करना ही पड़ेगा। सोमवार तक जवाब चाहिये।

मैंने बापूसे कहा: आदमी सरकारके कानून तोड़े और फिर वह मानव-दयाका जो काम करता हो अुसकी छूट चाहे, तो क्या सरकार छूट देनेके लिअे बंधी हुअी है?

बापू कहने लगे: हां। मेरी तरह कानून तोड़नेवालेको देनेके लिअे बंधी हुअी है।

मैंने कहा: यानी नैतिक दोषवाला अपराध न किया हो तो, यही न?

बापू: हां। वैसे चोरी वगैरा करनेवाले आदमी भी अैसी मांग कर सकते हैं। पर अुन्हें अपनी मांग साबित करना कठिन होगा।

मैंने पूछा: हिंसात्मक अपराध करनेवाला?

बापू: जरूर मांग कर सकता है, क्योंकि हिंसा अुसका सिद्धांत हो, तो वह अुस कारणसे जेलमें आकर बैठ जानेके बाद मानव-दयाका काम शुरू कर सकता है। यह काम देनेके कारण मुझे प्रसिद्धि मिलती है, अिसका तो क्या किया जाय? पर सरकार अिससे बच नहीं सकती।

दोपहरको दो बजे बापूको मुकदमेके लिअे बुलवाया गया। बापूने मजिस्ट्रेटके सामने बयान दिया। अुन्होंने बताया कि मैं शांति चाहनेवाला नागरिक

हूं। यह भी कहा कि जिस कानूनकी रूसे यह मुकदमा चल रहा है, वह यह बतानेके लिअे काफी है कि सरकारके कानून मानने लायक नहीं है। गरीब-अमीर, पढ़े-लिखे और अनपढ़ सबका अितना पतन हो गया है और सब अितने डर गये हैं कि अिस वातावरणमें जीना मुश्किल हो गया। अिस-लिअे मैंने जेलमें आनेका निश्चय किया। कैदियोंके वर्गीकरणके बारेमें कड़ी आलोचना की और अंतमें अफसरोंके विनयके लिअे आभार माना। मथुरादास मिलने आये थे। अुन्हें सारे मुकदमेमें बैठनेका अलभ्य लाभ मिल गया। मैंक्रे और गोपालन भी थे। मथुरादास मैक्सवेलकी खास मंजूरी लेकर आये थे। अुनसे सोमवार तकके नोटिसकी बात कही। मैंक्रेसे भी बापूने कहा: हरिजन-कार्य मेरे लिअे श्वासोच्छ्वासके समान है।

अुसने सजाके बाद कहा: तो हम साल भर बाद मिलेंगे।

बापूने जोर देकर कहा: नहीं। हरिजन-कार्य शुरू करूंगा, तो तुम मुझसे तुरंत मिलोगे ही न? मैं राजनैतिक कैदी होअूं या 'सी' क्लासका कैदी होअूं, मुझे हरिजन-कार्य करनेकी अिजाजत तो मिलनी ही चाहिये। वह तो मेरे लिअे प्राणोंके समान है।

अुसने पूछा: और आपको अिजाजत न दें तो?

बापूने सोचकर कहा: मैंने तुमसे कह दिया न कि यह काम तो मेरे लिअे प्राणोंके समान है।

मैंने कहा: वल्लभभाअी होते तो आजका पत्र आपको न लिखने देते। वे कहते कि अभी थोड़े दिन अिंतजार कीजिये, अभी आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं, आप अुपवास करनेके योग्य नहीं।

बापू बोले: हां। पर शायद अिस मामलेमें वे मान जाते।

बापूको और मुझे अेक-अेक सालकी सादी कैदकी सजा हुअी थी। जुर्माना नहीं हुआ।

मैंने बापूसे कहा: आपके साथ आनेमें अितना लाभ है। सादी कैद और जुर्माना नहीं।

५–८–'३३

सबेरे मार्टिनने कहा: आप 'अे' क्लासके कैदी हैं, अिसलिअे 'अे' क्लासको जो खानेको मिलता है वही आपको मिलेगा, बाकी आपको अपने खर्चसे मंगाना पड़ेगा।

बापू बोले: मेरे खर्चेकी बात न कीजिये। और फिर आश्रमको तोड़ देनेके बाद तो मैं किसी मित्रसे भी नहीं कहूंगा कि मेरे लिअे रुपया रख दो।

पहले दिन मथुरादासको मना कर चुके थे।

मार्टिनने कहा: यह बात नहीं कि आपको चाहिये सो नहीं मिलेगा, पर मैंने तो आपको नियम बताया है। और कुछ नहीं, तो डॉक्टरी कारणसे तो मैं दे ही सकता हूं। पर आप मुझे लिखकर बता दीजिये कि आपको क्या क्या चाहिये।

अिसलिअे बापूने बापस पत्र लिखा। अुसमें यह बताकर कि अुन्हें कमसे कम क्या चाहिये, लिखा कि अखबारों और पत्रोंके बारेमें सरकारको जो सूझे सो करे, पर हरिजन-कार्य और साथी कैदियोंके साथ मानवताका सम्बन्ध, ये दो बातें मेरे लिअे प्राणके समान हैं। अिन्हें मैं नहीं छोड़ सकता।

हमें छूटते समय ढेरों अखबार दिये गये थे। आज मुझे बापूने कहा कि अिनमें से आश्रमके भाअियों और बहनोंके बारेमें 'खबरें' निकालनेके लिअे 'बम्बअी समाचार', 'फ्री प्रेस' वगैरा पढ़ जाओ। बापूने आश्रमके बारेमें सरकारको जो पत्र लिखा था, वह 'फ्री प्रेस' ने पूरा छापा था, और 'क्रॉनिकल' ने 'गांधीजीके पत्रका पूरा हाल' शीर्षकके नीचे 'भाअी श्री' से शुरू करके 'विनीत सेवक' तक पत्र अुद्धरण चिन्होंमें रखा था। मगर अिसमें सरकार पर लगाये गये अिलजाम छोड़ दिये गये थे और सरकारके जुल्म और लोगोंके अध:पतनके खिलाफ यह कदम है, यह बात वह खा गया था। फिर भी शीर्षक 'सारा हाल' रखा था। अिसमें जान-बूझकर धोखेबाजी शायद न हो। सारा पत्र अुप-सम्पादकने लिया हो और शीर्षक तथा 'सारा हाल नीचे लिखे अनुसार है', यह निकाल देना रह गया हो, अैसा अुदार अर्थ किया जा सकता है। लापरवाही तो थी ही।

डाकमें किसी गुमनाम सज्जनने अेक पौण्डका नोट भेजा था।

६-८-'३३

पारखी आकर कह गये कि सरकारका जवाब आया है कि हरिजन-कार्यके लिअे मांगी हुअी अिजाजतके संबंधमें विचार हो रहा है, पर जवाब सोमवार तक नहीं मिल सकता। अिस पर बापूने तुरंत ही गृहमंत्रीको दूसरा पत्र भेज दिया कि भले ही वह जवाब देरसे आये, पर तीन बातोंका अुत्तर सोमवार तक देना ही पड़ेगा: (१) 'हरिजन' में लेख लिखकर देनेके लिअे और आगामी अंकके बारेमें सूचनाअें देनेके लिअे काका या स्वामी आनंदसे मिलनेकी अिजाजत; (२) डॉ० टैगोरको जवाब देनेकी अिजाजत; (३) युरोपके साथियोंको और विनोबाको पत्र लिखनेकी अिजाजत। अिसका जवाब सोमवार तक मांगा!

दस बजे सरकारका अुत्तर आया और ग्यारह बजे बापूने यह पत्र भेजा। फिर कहने लगे: आज रविवार है। गालियां तो देंगे, पर क्या किया जाय? बैठे कैसे रहें?

रातको साढ़े दस बजे पारखी सरकारका लम्बा जवाब लेकर आये! जवाबमें चिढ़ थी, मगर सोमवारसे पहले जवाब देनेका अपना फर्ज स्वीकार कर लिया, यह कुछ कम नहीं था। अुत्तरमें पहली मांग जेलकी धारा ४५४ के अनुसार स्वीकार की गअी; दूसरी मांग पहुंच लिखने तक ही, और जवाब लिखें तो 'अ' वर्गके कैदीकी हैसियतसे पाक्षिक पत्रके तौर पर लिख सकते हैं, यह कहकर अधूरी स्वीकार की; और तीसरी मांग यह कहकर मान ली कि अेक ही आदमीको सबके बारेमें लिखें और पाक्षिक पत्र काममें लें!

७–८–'३३

दूसरे दिन बापूने 'हरिजन' के लिअे लेख लिखा। किसी आर्यसमाजीने पत्र लिखा था, अुसी पर आलोचनाके रूपमें लेख जड़ दिया। मैंने सतीशबाबूके हरिजन चित्रोंमें से कुछ बनाया। काका साहबको मिलने बुलवाया, रविबाबूको पहुंच भेजी और विनोबाको पत्र लिखा। विनोबाके पत्रमें अुपवासकी शृंखलाके बारेमें लिखा। अुसका सार: शृंखला मेरे मनमें रम रही है। अुसके बिना अैसा लगता है कि हरिजन प्रश्नका निपटारा होना असंभव है। अलबत्ता, कहनेका मतलब यह नहीं है कि अिसीसे निपट जायगा। अिससे ज्यादाकी भी जरूरत हो सकती है। पर यह तो खयाल होता ही रहता है कि अितनेके बिना हरगिज काम नहीं चलेगा।

रातके आये हुअे पत्रका जवाब लिखवा रहे थे कि अितनेमें कानूस बुलाने आया। काकासे मिले। अुन्हें तो बहुत बातें करनी थीं, पर बापूने मर्यादा बता दी। मर्यादा बतानेसे पहले काका कह चुके थे कि अखबारोंमें खबर है कि वल्लभभाअी नासिक गये हैं और राजाजी पकड़े जायंगे, वगैरा।

'टाअिम्स' में आज मुकदमेका सारा हाल और पूरा बयान था। मगर सब बहुत ही द्वेषपूर्ण ढंगसे दिया गया था। यह गप्प ही थी कि कार्रवाअीके दरम्यान गांधी थक जाते थे, कार्रवाअी सुननेवाला कोअी न मिला! अिसमें नीचताकी हद थी। सरकारने अुन्हींको खबर दी थी और आधे घंटेमें बाहर निकालकर वापस जेलमें बन्द कर दिया, यह बात ही वह खा गया था। हरिजनोंके बारेमें बापूके अुद्गार अक्षरशः आये थे।

यह भी खबर थी कि आज अहमदाबादमें दूसरे २६ आदमी गांव जानेका नोटिस देकर पकड़े गये।

बापू कहने लगे: यह तो होगा ही। अिन २६ को कौन कहने गया था कि तुम आश्रममें जाकर खड़े रहना?

मैंने कहा: मैंने अगेसे कहा था कि अहमदाबाद सौ आदमी देगा। बावन तो हो गये। और मुझे पांच हजारकी आशा है।

बापू: नहीं, ज्यादासे ज्यादा दो हज़ार। मुझे तो पांच सौ या दो-तीन सौ सच्चे मर मिटनेवालोंसे भी संतोष हो जायगा। जवाहर निकलेगा तो वह बन्द करनेकी तो बात भी नहीं करेगा। फिर हिसाब लगाया कि सब प्रान्तोंसे कितने निकलेंगे। बिहारसे पांच सौ गिने। मैंने अेक हजार कहे। यू० पी० का तो पूछना ही क्या? यह भी आशा रखी कि बम्बअीसे तो काफी संख्या निकलेगी। और बंगाल और सिन्धसे भी। बाकी रहा पंजाब सो वहां शून्य। हां, यह पता यहीं चलता कि . . . कैसे बाहर रह सकते हैं।

रातको सरकारके जवाबका अुत्तर लिखवाना शुरू किया। लम्बा जवाब लिखवाने लगे, पर तुरंत कहा: अितना लम्बा जवाब नहीं हो सकता। यह कहकर पिछला भाग निकाल डाला। जवाब छोटा कर दिया।

मैंने कहा: आप तो रोज-रोज पत्र लिखते हैं।

बापू कहने लगे: अिन्हें भले ही खयाल हो कि वल्लभभाअी चले गये तो अिसने रोज पत्र लिखनेका रास्ता निकाला है। मुझे लगता है कि हरिजन-कामकी अिजाजत देनी ही पड़ेगी, कोअी न कोअी धारा ढूंढ़ लेंगे, कुछ न कुछ रास्ता निकाल लेंगे। हां, यदि वे यही सोच लें कि यह तो अैसा आदमी है जो जियेगा तब तक सियेगा, हम कहां तक अिसके सिये हुअे कपड़े पहनते रहेंगे, तो बात अलग है। अिस बार तो अुसे मरने ही दो, अुसे जबरदस्ती खिलायेंगे, वगैरा सोचलें तो कौन जाने? हरिजनोंके लिअे मुझे मरना पड़े और वह भी ज़ेलमें, तो अिससे सुंदर और क्या हो सकता है? मेरे जीवनमें जो कुछ करना है, वह सब अिसमें आ गया।

फिर बोले: मुझे अुम्मीद तो यह है कि होर अिस बार भी कहेगा कि देखो भाअी, हम अुसे तो अिजाजत दे चुके हैं; अुससे बच नहीं सकते। वह पूरी तरह बेहया बन चुका है। तुम अुसे अुपवास कराकर भी महत्त्व दोगे। अिससे तो वह जो करे सो करने दो। अब अुसकी कोअी सुनेगा नहीं।

वल्लभभाअीको नासिक ले गये, अिसके लिअे दुःख हुआ। हम मौज करते थे, सो भी अिन लोगोंसे देखा नहीं गया। जरा मामला ठिकाने पड़नेके बाद मैं अिन लोगोंको लिखनेवाला हूं कि वल्लभभाअीने क्या गुनाह किया था कि अुन्हें हटा दिया? हमने तो आपको किसी तरह तंग नहीं किया।

प्रार्थनाके बाद अुस पत्रको फिर सुधारा और सवेरे दे देनेके लिअे तैयार किया।

८-८-'३३ सुबह मार्टिन साहबसे खबर मिली कि वल्लभभाअीका ऑपरेशन हुआ ही नहीं, पर अुन्हें यहांसे सीधे नासिक ले गये हैं। बादमें तो यह भी पता लगा कि कटेली साहबके नाम अुनका कपड़े मंगवानेका पत्र आया है! बापू बोले: तो अिन लोगोंने वल्लभभाअीको भी धोखा ही दिया न? अुन्हें बेचारेको यही खयाल था कि ऑपरेशनके लिअे ले जा रहे हैं। कैसी नीचता है!

आज 'टाअिम्स' में बाके और पन्द्रह दूसरोंके पकड़े जानेके, और दूसरे सोलह जनोंके साथ भी अैसा ही होनेके, राजाजीकी कूच और अुनकी गिरफ्तारीके तथा पेरीनबहन, आबिदअली और अन्य लोगोंके पकड़े जानेके समाचार आये। लखनअूसे भी अैसी ही खबरें आअीं। बापू बड़े खुश हुअे। देवदासका समाचार अच्छा न लगा। पर मैंने कहा: यह खबर पूरी नहीं हो सकती। अैसा नहीं लगता कि देवदास अिस तरह लिख देगा।

बापू बोले: आगे न जानेका ही हुक्म हो, तो अुसे तोड़ना ही चाहिये। लेकिन और कोअी बात होगी। देवदास और लक्ष्मी दोनोंमें से अेक भी हारनेवाला नहीं है, अिसलिअे कुछ भी निर्णय नहीं दिया जा सकता। अपने कदमके बारेमें अुसके पास कुछ न कुछ कहनेको जरूर होगा। वैसे, शादी तो असलमें की दरबारके सूर्यकान्तने। शादी की और फिर अेकके बाद अेक करके कअी बार दोनों जेलमें जाते ही रहे हैं। यह बड़ी बहादुरी है। दरबारकी बहादुरी तो असाधारण है ही।

शामको यह सूचना आअी कि लकड़ियां और साग अपने खर्चसे मंगा लें। अिस पर बापूने कटेलीको पत्र लिखा कि अगर यही बात है और सरकारका हुक्म हो कि मुझे 'अ' वर्गके भोजनके सिवाय कुछ न दिया जाय, तो मुझे 'क' वर्गकी खुराक देना शुरू कीजिये। अिसके बाद कटेली आये। अुनके साथ सफाअी हो गअी। अुन्होंने कहा: सुबह साहबसे पूछ कर बताअूंगा।

वल्लभभाअीको नासिक भेज दिया और वह भी अुन्हें यह धोखा देकर कि ऑपरेशनके लिअे बम्बअी ले जा रहे हैं, अिस सारी बातका बापू पर बड़ा असर हुआ। बोले: यह घाव जल्दी नहीं भर सकेगा। अैसी नीचता किस लिअे की होगी? यह तो वल्लभभाअीको धोखा ही दिया न?

सवेरे कटेलीने आकर कहा: साहबने कहा, मुझे हुक्म मिल गया था, मगर मैं कहना भूल गया था। गांधीको डॉक्टरी कारणोंसे सब कुछ ही देना है। अिसलिअे सारा खर्च अस्पतालके खातेमें पड़ेगा।

९–८–'३३

हरिजन-कार्यके बारेमें अभी अुत्तर नहीं आया। बापू कहने लगे: कल नोटिस जायगा कि सोमवार तक जवाब चाहिये, और फिर सोमवारको नोटिस दूंगा कि बुधवारको कार्रवाअी करनी पड़ेगी। यह बात कहनेके थोड़े ही मिनटों बाद 'टाअिम्स'में 'राष्ट्रवादी दृष्टिसे' (थ्रू नेशनलिस्ट आअिज) के अन्तमें, बिना किसी मेलके, बिना शीर्षकके, लिखा देखता हूं कि:

"मि० गांधी जेलमें क्या करनेका अिरादा रखते हैं, अिस संबंधमें दो-तीन दिनसे बम्बअीमें चौंकानेवाली अफवाहें सुनी जा रही हैं। अंतिम महाबलिदानके रूपमें बिना शर्त आमरण अुपवास करेंगे, अिस बातको तो जिम्मेदार हलकोंमें महत्त्व नहीं दिया जाता। पर यह माननेकी तरफ ज्यादा लोगोंका सुझाव है कि वे आगे-पीछे अैसी कोअी बात करनेकी कोशिश करेंगे, जिससे फौरन सबका ध्यान अुन पर केन्द्रित हो जाय। अिसलिअे यरवदासे मि० गांधीके बारेमें हमें कोअी भी समाचार मिलें, तो अुनसे अेकदम आश्चर्य नहीं होगा।"

अैसा लगता है कि हरिजनोंके कामके बारेमें अिनकार करना है और यह सब कार्रवाअी पेशबन्दीके तौर पर है। जब यह पढ़कर सुनाया तो बापूको भी अैसा ही लगा। मुझे तो सारा विचार भय और कंपकंपी पैदा करता है।

यह पेरेग्राफ पढ़कर ही बापूने आज ही पत्र लिखनेका निश्चय किया। प्रार्थनासे पहले लिखा। पिछले साल ३ नवम्बरको आये हुअे भारत सरकारके हुक्मकी नकल साथ नत्थी की और सुबह वह पत्र भेजनेके लिअे तैयार कर दिया। नकल साथ नत्थी करनेका कारण बताते हुअे बोले: आज 'टाअिम्स' का पेरेग्राफ देखकर अैसा लगा कि सत्ताके नशेमें चूर मनुष्य पिछली बातें भूल सकते हैं। हो सकता है कि वे पिछला हुक्म भी न देखें और गंभीर भूल कर बैठें। अिससे अुन्हें बचाना चाहिये। भूल कर बैठनेके बाद वह कदम वापस लिवाना मुश्किल हो जाता है।

मैंने पूछा: अुपवास करना पड़ा तो क्या मैं साथ हो सकता हूं?

अिसके जवाबमें कहने लगे: नहीं। यह तो गंभीर भूल होगी। अिसमें मेरा अुपवास लजायेगा। अिस तरह सहानुभूतिमें अुपवास नहीं किया जा सकता।

मैंने कहा: तो आप रोज घुलते और कमजोर होते रहें, वह मैं देखा करूं?

बापू: हां। मेरे मरनेके बाद तुम अुपवास करना। शायद करना तुम्हारा धर्म हो जाय। पर यह तो सब मेरे मरनेके बाद तुम्हारे सोचनेकी बातें हैं। मेरे खयालसे देश भी यह तो सहन नहीं करेगा।

मैंने कहा: सहानुभूतिमें अुपवास करनेकी बात नहीं है। जिस मामलेमें दिया हुआ वचन सरकार तोड़े और अैसा अन्याय होता हो जो साधारण आदमीको भी चुभे, तो अुसे देखते न रहकर हमें अुपवास नहीं करना चाहिये?

बापू: तब तो सामूहिक भूख हड़ताल होनी चाहिये। और वह हो तो अुसे बलवा बताकर सरकार फौरन दबा दे। और तुम बलवा करके मुझे बचाना चाहो, यह भी ठीक नहीं। सच बात तो यह है कि मेरा अुपवास अिस प्रकारका अुपवास ही नहीं है। मैं तो सरकारको भी बता दूं कि यह अुपवास तुम्हें धमकी देनेके लिअे नहीं है। तुम यह देखो कि न्याय क्या है। धमकी समझकर अुसके वश होकर कुछ न करो। अुपवासका धमकीके तौर पर अुपयोग करना तो बुरी ही बात है। अलबत्ता, सरकार भी डरपोक होती है, अिसलिअे हमेशा वह न्याय नहीं देखती और धमकीके वश भी हो जाती है। पर हमें तो शुद्ध न्याय चाहिये। अुसे समझना चाहिये कि यह अेक बड़ा वचनभंग है।

सरकार क्या कदम अुठा सकती है, अिस बारेमें तर्क-वितर्क चला। मैंने आयरलैंडकी चूहे-बिल्लीकी नीतिकी बात कही। बापूको अिसका पता नहीं था। बापू कहने लगे: हां। अैसा भी कर तो सकती है। तब जरूर मेरी कड़ी परीक्षा होगी।

डडलीकी अेक लड़की विम्बलडनकी आखिरी स्पर्धामें बड़ी विजय प्राप्त करके घर गअी, तो डडलीके मेयरने गांवमें जलसा किया। 'स्केच' में अुसका चित्र है। २५-३० हजार आदमी होंगे। मेयरने गांवकी तरफसे लड़कीको हीरेसे जड़ी हुअी हाथ-घड़ी और सुन्दर आलमारी भेंट की। जिन लोगोंके स्वभावमें साहस है, साहसके लिअे वे कुछ भी कर सकते हैं, अपने प्राण तक दे सकते हैं। अुनके लिअे साहसकी ही कीमत है। अेमी जॉनसनके पीछे लोग पागल हैं! अिंग्लैंडकी खाड़ी कमसे कम समयमें तैरकर पार करनेवालीके पीछे लोग पागल! और हमारा साहस? नारायण और दूसरे बच्चोंको अनसूयाबहनके घर पर छोड़कर आते समय आंखोंमें आंसू आ गये और अभी तक बच्चोंका खयाल आता ही रहता है!

'मैन्चेस्टर गार्डियन' में पढ़ते लायक सामग्री कितनी ज्यादा होती है और खबरें भी कितनी भरी रहती हैं? वैसे कितनी ही तो यहांके रायटरके संवाददाताकी भेजी हुअी ही होती होंगी? अुदाहरणके लिअे यह देखिये:

१०-८-'३३

"पूनाकी परिषदमें सविनयभंग वापस ले लेनेके पक्षमें भारी बहुमत था। सत्रह वक्ताओंमें से सोलह अिस मार्गको अपनानेके पक्षमें थे। अलबत्ता, बहुतोंने मि० गांधी और कांग्रेसकी कार्य-समिति पर हमले भी किये कि आप यह स्वीकार ही क्यों करते हैं कि लड़ाअी दब गअी है? किसी अज्ञात कारणसे, जैसा कि रायटरका पूनाका संवाददाता कहता है, मि० गांधी अिस परिषदमें तेज मोटरसे पहुंचे। अुनकी मोटरकी रफ्तार रास्तेकी भीड़के बावजूद बहुत जगह ५० मील फी घण्टे तक पहुंच गअी थी।"

अिस झूठमें क्या रहस्य होगा? क्या हेतु होगा?

मगर कुछ बातें तो बड़ी जानने लायक होती हैं। अुदाहरणके लिअे चीन संबंधी अेक लेखमें यह बताया है कि चीनमें कम्युनिज्म (साम्यवाद) का खतरा स्पष्ट है। जापान चीनके हरअेक दुश्मनको अप्रत्यक्ष रूपमें मदद देता है, अिसलिअे कम्युनिस्टोंकी वहां बन आअी है।

"साम्यवादके खिलाफ चीनकी लड़ाअीमें खास तौर पर ध्यान खींचनेवाला और लगभग नाटकीय तत्त्व तो यह है कि वहां बोलशेविज्म केवल अेक सिद्धान्त, अेक प्रचार या अेक पक्ष नहीं है। वहां तो बड़े विशाल प्रदेश पर प्रभुत्व जमानेका प्रश्न है। क्यांगसी अब तक अपने पर होनेवाले हमलोंके विरुद्ध टिका हुआ है। अिस प्रान्तका विस्तार स्विट्जरलैंडसे पांच गुना अधिक है। अिसकी आबादी लगभग तीन करोड़ है। लाल सेनाने अुसके लगभग $\frac{3}{4}$ भाग पर कब्जा कर लिया है। अुन्होंने आक्रमणका आरंभ लोगोंके कत्लेआमके साथ किया। अिसकी सरकारी संख्या अेक लाख छियासी हजारकी है। लगभग २० लाख मनुष्योंको अुन्होंने प्रान्तसे बाहर निकाल दिया है और अेक लाखसे ज्यादा घर जला डाले हैं। अुसके बाद क्यांगसीमें अुन्होंने व्यवस्थित सरकार क़ायम कर दी!"

भगवान जाने अिसमें कितनी सचाअी होगी! मगर यह बात सही है कि जबसे सन-यात-सेनने साम्यवादियोंकी मदद ली, तबसे वहां अुनका पदार्पण हुआ।

जर्मनीमें साम्यवादियोंकी दुर्दशाके अनेक करुण चित्र अुसमें दिये गये हैं। राअिस्टागकी सोशियल डेमोक्रेटिक पार्टीके नेता डॉक्टर ब्रेट शीड ऑक्सफर्डमें नेशनल पीस कांग्रेसमें बोले थे: "जर्मनीमें अिस वक्त पचास हजार आदमी

नजरबन्दोंकी छावनियोंमें हैं। अुन्हें यह मालूम नहीं है कि वहां अुन्हें किस लिअे रखा गया है। अुनके साथ निर्दय व्यवहार किया जाता है। कभी-कभी तो अुनकी हत्याअें भी होती हैं। जो लोग नाजी सत्ताका समर्थन नहीं करते, अुनके लिअे जर्मनी कैदखाने और कब्र जैसा बन गया है।"

बापूको जब यह बताया तो वे बोले: हमारे यहां भी लगभग यही हालत है। अगर हम ज्यादा जोर करें, तो हमारी अक्षरशः यही हालत कर दी जाय।

जर्मनीमें यहूदियोंकी दुर्दशा तो है ही: "नाजियोंके विरुद्ध किसी भी तरहकी राय रखनेवालों पर जुल्मकी वर्षा होती है। सारी यहूदी जातिको बेरोक सताया जा रहा है। अुन्हें नौकरियोंसे निकाल दिया जाता है। अुनकी जायदाद जब्त कर ली जाती है। अुन्हें जेलोंमें या नजर-बन्दोंकी छावनियोंमें ठूंस दिया जाता है। कुछ नजरबन्दोंकी छावनियोंमें तो अुनकी बहुत दुर्दशा की जाती है। . . . अैसे अवसर पर हमें विदेशोंकी राजनीतिमें दखल न देनेकी नीति छोड़ देनेकी हिमायत करते हुअे कर्नल वेजवुडने कहा था कि चूंकि अैसा हाल हो रहा है, अिसलिअे हमें अपने हृदयोंको कड़ा न बनने देना चाहिये और अिस तरह शान्त नहीं बैठे रहना चाहिये, मानो हमारे जीवनके साथ अुनका कोअी वास्ता न हो।"

लेकिन हिन्दुस्तानमें जो कुछ हो रहा है अुसका क्या?

दुनियाका व्यापार कम होता जा रहा है, यह दिखानेवाली सुन्दर आकृति देकर अिसके आंकड़े दिये गये हैं कि पिछले पांच सालमें व्यापार कैसे घटता गया है:

वर्ष	व्यापार (करोड़ डॉलरमें)
१९२९	५३५
१९३०	४८५
१९३१	३२६
१९३२	२१३
१९३३	१३८

जेम्स मेटर्न नामक अमरीकन हवाबाजके साहसका वर्णन तो अैसा है, जो किसी पाठमालामें पाठके रूपमें दिया जा सकता है। हमारे बच्चोंको अैसे साहसके पाठ जितने पढ़ाये जायं, अुतने ही कम हैं। कल ही बापू बिड़लाकी हिम्मत और समयसूचकताकी बात कर रहे थे। वे हवाअी जहाजमें कराची जा रहे थे और हैदराबाद पहुंचने पर कोअी दुर्घटना हो गअी, अिसलिअे अुन्होंने खुद ही कोअी जगह देखकर वहां विमानको अुतारनेकी मांग की थी। अिस मेटर्नका नीचेका हाल लिख रखने लायक है:

अुड्डयनके अितिहासमें वड़े अुल्लेखनीय साहसकी कथा रायटरका मास्कोका संवाददाता देता है। युवक जेम्स मेटर्न अमरीकी हवावाज था। अलास्काके नोम अड्डे पर पहुंचनेके लिअे पूर्वी साअिवेरियाके खावारोव्स्क शहरको छोड़नेके वाद थोड़े ही समयमें वह गुम हो गया। तीन सप्ताह वाद अुत्तरी ध्रुवके नजदीकके वीरान वर्फके प्रदेशमें वह जा पड़ा।

अिन तीन सप्ताहोंमें मेटर्नको अेक ही वार मनुष्यके निशान देखनेको मिले थे, और वह भी निराशाके किनारे पहुंचनेवाली हालतमें। कोअी आता-जाता जहाज मिल जायगा, अिस आशामें वह अनादिर नदीके किनारे पर भटकता रहा। अेक दिन भोजनकी खोजमें भटकते-भटकते वह नदीसे दूर चला गया। आसपास नजर डालने पर अुसने अेक नाव अुतरते प्रवाहमें जाती देखी। अुसने हाथ हिलाकर अुस नाववालेका ध्यान अपनी तरफ खींचनेकी वड़ी कोशिश की, मगर अन्तर वहुत ज्यादा था और वह नदीके किनारे पहुंचा तव तक नाव गायव हो गअी।

खावारोव्स्क छोड़नेके वाद चौदह घण्टेमें — जव वह पृथ्वीकी प्रदक्षिणा करते हुअे वहुत ही खतरनाक जगह पर था तव — मेटर्नको पता चला कि अुसके विमानमें कोअी विगाड़ हो गया है। 'सेंचुरी ऑफ प्रोग्रेस' नामके लाल रंगे हुअे अुसके विमान (मोनोप्लेन) का अिंजन वहुत ज्यादा तपने लगा। अिंजनकी यह खरावी अुसे अितनी ज्यादा गंभीर मालूम हुअी कि अुसने नीचे अुतरनेका निश्चय किया। अनुकूल स्थानकी खोजमें वह दो घण्टे तक अुड़ता रहा। परन्तु नीचे अैसी पहाड़ी और अूवड़खावड़ जमीन थी कि सुरक्षितताके साथ अुतरनेकी कम ही आशा होती थी। और अुस प्रदेशमें वड़े दलदल और छोटे तालाव भी वहुत थे।

मगर यह सोचकर कि अव तो जो होना हो सो होगा, तक़दीर आजमानेके सिवाय कोअी अुपाय नहीं था। मेटर्नने शक्तिभर सव कुछ कर लिया, परन्तु अुसके विमानका अिंजन अितना ज्यादा विगड़ गया था कि अुतरनेके सिवाय और कोअी अुपाय नहीं था। आखिर वह नीचे अुतरा और विमान टकराकर टूट गया। यद्यपि अुसका शरीर कुछ छिल गया, पर अिसके सिवाय और किसी हानिके विना वह वच गया।

वह सोवियट रूसके वहुत दूरके और वहुत ही वीरान अिलाकेमें आ पड़ा। वहां वारहसिंगोंको पालनेवाले कुछ खानावदोश लोग अिधर-अुधर रहते थे। अनादिर चुकोटका नामकी सवसे नजदीककी वस्ती वहांसे ८० मील दूर थी।

आठ दिन तक वह वहीं रहा, जहां विमान टूटा था। अनादिर नदीके किनारे अूपर-नीचे घूमनेमें वह अपना ज्यादातर समय बिताता था। पासमें चॉकलेट-बिस्कुट थे। खूब भूख लगने पर थोड़े-थोड़े खा लेता था। वह खाद्य भी तीन दिनमें पूरा हो गया। फिर अुनके पास अेक बन्दूक थी, अुससे छोटे-छोटे जानवरोंका शिकार करने लगा। मगर वह शिकार अुसे बहुत कम मिलता और अक्सर अुसे लंघन करने पड़ते थे। नवें दिन मेटर्नने निश्चय किया कि वहां देवदारकी किस्मके जो सेडर नामक पेड़ होते हैं, अुनकी लकड़ीकी झोंपड़ी बांधकर नदीके किनारे रहे। जिस तरह अुसने छः दिन बिताये, मगर ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये, त्यों-त्यों मदद मिलनेकी अुसकी आशा मिटती गअी। ठंड, भूख और निराशाका असर अुसके मन और शरीर पर अधिकाधिक होता रहा। खाबारोव्स्क छोड़नेके बाद ठीक पंद्रह दिनमें २९ जूनकी रातको जब वह बिल्कुल निराश हो गया था, तब चुकची नामके वहांके निवासियोंकी दो नावें अुसके देखनेमें आअीं। अुसके बनाये हुअे निशानकी तरफ नाववालोंका ध्यान गया। अुन्होंने मेटर्नके पास जाकर अुसे अपनी नावमें ले लिया और अनादिर चुकोटकासे पांच मील दूर, जहां वे रहते थे वहां, ले गये। आराम और भोजनसे जब वह कुछ स्वस्थ हुआ, तो चुकोटकाकी आबादीसे चौदह मील दूर मछलीमारोंकी अेक बस्ती थी वहां अुसे ले जाया गया। वहां सोवियट सरहदके पहरेदार अुसे मिले, जिन्हें अुसके गुम होनेके समाचार दिये जा चुके थे और जो अुसकी खोजमें ही थे। वे अुसे चुकोटकाकी बस्तीमें ले गये, जहां अुसकी अच्छी तरह देखभाल हुअी और वह भलाचंगा हो गया।

स्वस्थ होने पर मेटर्नको पहला विचार अपने विमानका आया। जहां विमान टूटकर गिरा था, अुस जगह जानेके लिअे अेक छोटासा दल तैयार किया गया। मेटर्नके कहनेसे विमानमें से अिंजन और अुसका नियंत्रण करने-वाले यंत्र निकालकर बस्तीमें ले जाये गये। और सब भाग वहीं छोड़ दिये गये। जुलाअीकी आठ तारीखको यह दल अनादिर चुकोटका वापिस आया। मेटर्नकी सही-सलामतीके तार तो सम्बन्धित स्थानों पर पहले ही भेज दिये गये थे।

मेटर्नको सोवियट विमानमें अुत्तर साअिबेरियासे नोम पहुंचा दिया गया। मेटर्नकी प्रार्थना पर अुसे ले जानेके लिअे अमरीकी विमान वहां आ पहुंचा था।

जेम्स मेटर्न विमानमें पृथ्वीकी परिक्रमा करनेके लिये ३ जूनको न्यूयार्कसे रवाना हुआ था और सब जगह घूमता-घूमता १२

जूनको खाम्रारोव्स्क पहुंचा था। अूपरका वर्णन अिसके बाद हुअी घटनाओंका है।

बापूकी अेकाग्रता अुनके असाधारण गुणोंमें से अेक है। अिस अेकाग्रताके कारण ही मेरे खयालसे अुनका पुस्तकोंका वाचन बहुत जल्दी होता है। पहले पांच दिनमें जवाहरकी भेजी हुअी पुस्तक 'सत्ताके लिअे आनेवाली लड़ाअी' (दि कमिंग स्ट्रगल फॉर पावर) पूरी कर दी। अपनी राय देते हुअे बोले: तुम जितनी तारीफ करते हो अुतनी सब बातें तो मुझे अिसमें नहीं लगीं। अिस आदमीकी हकीकतें जमा करनेकी शक्ति अच्छी है, मगर अनुमान जल्दीमें लगाये गये हैं। कम्युनिज्मके लिअे वह अुज्ज्वल भविष्य देखता है, मगर अुसकी खामियां बिलकुल नहीं देखीं। जवाहरको पसन्द आअी, अिसका कारण यह है कि लेखकने किसी भी आदमीको अिसमें छोड़ा नहीं। मेक्डोनल्डको आड़े हाथों लिया है, और वेल्स जैसे लेखकको भी बिल्कुल नीचे गिरा दिया है। यह सब जवाहरको पसन्द आने जैसा है।

दूसरे दिन 'तिलोत्तमा' नाटक पढ़ा। बादमें 'आरोग्यके बारेमें साधारण ज्ञान' पढ़ लिया और बोले: अिसमें तो अब कुछ प्रकरण बिलकुल नये लिख डालने पड़ेंगे। सुधारनेसे काम हरगिज नहीं चलेगा। अिसे लिखे पच्चीस वर्ष हो गये। वह 'अिंडियन ओपीनियन' के पाठकोंके लिअे लिखी गअी थी।

आज सवेरे 'पंजाबके अेक गांवमें देखा और सुना हुआ' (सीन अेण्ड हर्ड अिन अे पंजाब विलेज) पुस्तक पढ़ी। मुझे पूछा: तुम्हें यह किताब बहुत अच्छी खास तौर पर किस कारणसे मालूम हुअी?

मैंने कहा: अिसकी शैली मोहक है। किसी विदेशीने हमारे गांवोंके लोगोंका और अुनके जीवनकी छोटी-छोटी बातोंका अितना सच्चा चित्र शायद ही खींचा होगा। और अिसे लिखनेवाली लेखिका हमारे लोगोंके नीचेसे नीचे वर्गके माने जानेवाले लोगोंमें ओतप्रोत होकर रही, यह भी ध्यान देने लायक बात है। और अन्तमें अुसने अपने अनुभव सचाअीभरे ढंगसे बतानेकी कोशिश की है।

बापू: यह सब बात सही है, मगर मुझे अिसमें कोअी नअी चीज नहीं मिली।

मैंने कहा: शैली नअी चीज है। हमारे लोग अितने ओतप्रोत होकर अैसी शैलीमें लिखें, तो अिन पुस्तकोंकी बहुत कद्र हो। यह लेखिका जिस तरह ओतप्रोत होकर रही है, अुसी तरह हमारे काम करनेवालोंको भी रहना सीखना चाहिये।

बापू: मगर वह तो अपना धर्म फैलानेके लिअे लोगोंमें ओतप्रोत होकर रही थी। जिसमें सबसे अच्छा चित्र वह है, जिसमें वह अुस भंगी स्त्रीके यहां जाती है और चाय पीती है; और फिर भी वह अेक हद तक ही अच्छा है। हां, यह बात सही है कि अुसने अपने मंथन अेक हद तक सचाअीसे बयान करनेकी कोशिश की है। पर वह भी अेक खास हद तक। अुसमें जो कुछ लिखा गया है, अुससे अधिक लिखना बाकी रह गया है। जो पत्र छापे गये हैं, अुनमें से बहुतसा भाग छोड़ दिया गया है। और लोगोंकी यह आलोचना तो लेखिकाने मोल ली ही है कि हम लोगोंकी नहीं बने, अिसलिअे तुम हमें छोड़ गअीं!

वैसे, तादृश चित्र अच्छे हैं।

फिर कहने लगे: ज्यों-ज्यों दिन बीत रहे हैं, त्यों-त्यों मैं हरिजन-कार्यके लिअे अधीर होता जा रहा हूं। काठियावाड़के काम करनेवालोंको गोदता न रहूं, तो काम बिलकुल बन्द हो जाय। अब अगले सप्ताह तो अिधर या अुधर मालूम हो ही जायगा।

मैंने कहा: भारत सरकारका पत्र ही अैसा है कि अुनके लिअे बच निकलनेकी जगह ही नहीं है।

बापू: जगह तो नहीं, पर कौन जाने? ये लोग अिस बार बहुत चिढ़ गये हैं। पिछली बार जितने अच्छे थे, अुतने ही अिस बार बुरे हो सकते हैं। अुन्होंने यह आशा रखी होगी कि या तो यह आदमी सिर्फ हरिजनोंका काम ही करेगा या अुपवाससे बचेगा ही नहीं, या बच भी गया तो बिलकुल अपंग बन जायगा। राजाजी और सरोजिनीने भी तो यही सोचा था? पर मेरी मानसिक शक्तिको तो कभी आंच नहीं आअी, बल्कि २१ दिनके बाद भी अुपवास लम्बा खींचनेकी जीवनशक्ति मुझमें मौजूद ही थी। . . .

मैंने आज कहा: वल्लभभाअी आपसे मिलेंगे तब कहेंगे, अुपवास करके क्या फायदा अुठाया? मुझे अलग करा दिया और नासिक भिजवा दिया, अितना ही न?

बापू: तो साथ ही मैं कहूंगा कि आपको नासिकका अनुभव कराया और मुझे 'अ' वर्गका कैदी बननेका लाभ मिला, यह क्या कोअी थोड़ा लाभ है?

* * *

बा और दूसरी १५ बहनोंको और १६ भाअियोंको छः-छः महीनेकी सजा हुअी। दुर्गा और प्रेमाबहनको 'ब' वर्ग मिला। बापू खिलखिलाकर हंसे और कहने लगे: 'ब' वर्गके लिअे सेक्रेटरीकी बहू बनना पड़ता है और अंग्रेजी

पढ़ना पड़ता है क्यों? फिर बोले: अिन लोगोंको यह कैसे मालूम हुआ कि प्रेमा ग्रेज्युअेट है? प्रेमाने तो नहीं कहा होगा?

मैंने कहा: अंग्रेजीमें बातचीत की होगी, अिससे कल्पना कर ली होगी।

बापू: तो यह गलत है न? अंग्रेजीमें किस लिअे बात करे?

मैंने कहा: हमारे यहांके खुफिया पुलिसवाले तो आश्रमके सब आदमियोंका शुरूसे आखिर तकका अितिहास जानते हैं। प्रेमाबहन अैसी नहीं कि यह बात कहें; अिससे अुलटे वे अंग्रेजीके अज्ञानका ढोंग करें अैसी जरूर हैं।

बापू: यह बात सही है। अिसलिअे आशा रखें कि अुसने कुछ भी नहीं कहा होगा। मगर बी० अे० होनेसे ही 'ब' वर्ग दिया, यह कैसी बात है?

मैंने कहा: पुरुषोंको भी देते हों तो अच्छा है!

बापू: (खिलखिलाकर हंसते हुअे) यह तो कैसे करें? तब तो सैकड़ोंको 'ब' वर्ग देना पड़े। बालजीको 'क' वर्ग ही दिया है न? अमतुल सलाम कैसी लड़की है? अुसके लिअे मेरा आदर बढ़ता ही रहा है।

जानकीबाअीको छोड़ दिया, पर वह किसी भी तरह जेल गये बिना न रहेंगी।

११-८-'३३

आज मथुरादास बापूसे मिलने आये। 'अ' क्लासके कैदीके रूपमें मुलाकात करनेकी बापूकी अिच्छा न थी। पर मथुरादासको अिनकार न कर सके। यह कहकर कि अबकी बार मीराबहनको लेकर आना, कहा कि यह माननेकी जरूरत नहीं है कि मैं बादमें भी मुलाकात करता रहूंगा। अुन्होंने खबर दी कि अणेने १३ तारीखको जंगलका कानून तोड़नेका नोटिस दिया है और १० तारीखको जयरामदासने नोटिस दिया है।

देवदास दिल्लीमें न घुसनेके हुक्मको तोड़कर ६ मासके लिअे जेलमें गये।

शामको घूमते वक्त फिर हरिजनोंके कामकी बातें चलीं। जवाहरको अिस कामसे क्यों विरोध है? वह तो कहते हैं कि यह काम करनेसे बापू कैदी ही नहीं रह जाते। लोगोंको लगता ही नहीं कि वे कैदी हैं। अैसा क्यों है?

बापू: अिसका कारण यह है कि वह अिस कामके रहस्यको समझे नहीं हैं। सत्याग्रहके रहस्यको भी नहीं समझे। मुझे दिनोंदिन यह

महसूस हो रहा है कि सत्याग्रहको किसी खास चीज पर केन्द्रित करना चाहिये। अभी हम सत्ता लेनेके लिअे सत्याग्रह कर रहे हैं, जब कि सत्याग्रह तो सत्ताका खातमा करनेके लिअे हो सकता है। सत्ताका अर्थ ही हिंसा है। सत्ताको टिकाये रखनेके लिअे फौज चाहिये। सत्याग्रहके मूलमें सत्ताका त्याग है। सत्याग्रही कौंसिलों वगैरासे दूर रहेंगे, तो ही अुन्हें स्वच्छ कर सकेंगे। मेरे ११ मुद्दे मोतीलालजीको पसंद नहीं थे और जवाहरको भी पसन्द नहीं थे। लेकिन मैं अुन पर अभी तक कायम हूं।

मैंने पूछा: तब तो आप यह मानते हैं कि स्वराज्यके अेवजमें सुराज्यसे काम चल सकता है।

बापू: नहीं। कैम्पबेल बेनरमेनका सुराज्य तो आश्रयदाताके नाते भला करनेवाला राज्य है। वह स्वराज्यकी जगह नहीं ले सकता। मगर हमारा ११ मुद्दोंवाला तो सच्चा सुराज्य है और वही स्वराज्य है। अिसलिअे वह स्वतंत्रताके बजाय काम दे सकता है। यह चीज अभी और ज्यादा मैं समझा सकता हूं। पर आज तो अुसका अवसर कहां है? अवसर आयेगा तो फिर देशको अिन ११ मुद्दों पर ले आअूंगा। मुसलमानोंको सारी सत्ता दे दें, तो अुन्हें आधीन कर लिया, यह कहनेमें भी सत्याग्रहका मर्म समझा दिया जाता है। सत्ता लेनेके लिअे सत्याग्रह हो ही नहीं सकता। सत्ता हाथमें लेकर अुसका त्याग करनेमें सत्याग्रह हो सकता है, ताकि वह सत्ता शुद्ध रूपमें कायम रहे।

कलकी बात मैंने फिर छेड़ी और बापूने आज ज्यादा स्पष्टीकरण किया:

१२–८–'३३

सत्याग्रह सत्ता लेनेके लिअे हो ही नहीं सकता। सत्ताको शुद्ध रखनेके लिअे, सत्ताका सदुपयोग करनेके लिअे वह हो सकता है। हमने आज तक जिस हद तक सत्ता लेनेके लिअे सत्याग्रह किया है, अुस हद तक हमने भूल की है; और यह भूल सुधार लेनी चाहिये। अिसमें कोअी प्रायश्चित्त करनेकी बात नहीं है। क्योंकि यह तो सिर्फ अेक हथियारका जिस कामके लिअे अुपयोग नहीं हो सकता, अुस कामके लिअे अुपयोग किया कहा जायगा। अुपयोग करना बन्द कर दें तो काफी है। अहिंसाका अुपयोग हिंसाके लिअे हरगिज नहीं हो सकता।

सत्याग्रहको किसी खास चीज पर केन्द्रित करना चाहिये, यानी सत्ता लेनेके लिअे नहीं, बल्कि अुस वस्तुको सिद्ध करनेके लिअे हो सकता है। ये चीजें ११ हों या ११ सौ हों। जिन चीजोंको आजकी व्यवस्थामें ही हासिल करते

जायं। अुनके सामने कमजोर व्यवस्था टिक नहीं सकती, वह तो टूट ही जायगी। अिस प्रकार तंत्रका अपने आप सुधार होगा। फिर भी तंत्रमें सत्ताकी बात आये तब हम अलग रहें। 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः'। हम मत दें, मत देने लायक सत्ता भले ही काममें लें, लेकिन अुसे भी राम और रावणके चुनावमें रामको चुननेके लिअे ही। अलबत्ता, राम भी जिस हद तक सत्ताका अुपयोग करेगा, अुस हद तक हिंसा तो करेगा ही।

हमारा तो अेक सत्याग्रह-दल होगा, जो सत्ताको सीधी करनेके लिअे ही जीयेगा, जिसे सत्ता लेनेका विचार तक न होगा। अिसलिअे आज में यह मानता हूं कि सत्यमूर्तिका धारासभामें जानेका विचार करना ही अुचित है। अुसका जाना ही अच्छा है, क्योंकि वह सत्याग्रही नहीं है। पर जब अेक दल धारासभामें जाता होगा और कांग्रेस अुसे धारासभामें भेजती होगी, तब कांग्रेससे स्वतंत्र ही अेक दल सत्याग्रह करता होगा। धारासभामें जानेवाला आदमी तो जेलखानेमें जा कर नहीं बैठ सकता।

मैंने पूछा: तब तो शास्त्रीके अिस कथनमें कि कांग्रेसको अलग रखकर आप स्वतंत्र रूपमें सत्याग्रह कीजिये और आप जो कहते हैं, अुसमें क्या फर्क है?

बापू: फर्क अितना ही है कि जबरन कुछ नहीं हो सकता। आज हम निकल जायं तो जबरन निकलेंगे, कांग्रेसकी हंसी होगी और कांग्रेस निस्तेज हो जायगी। मोतीलालजीने कांग्रेससे ही अधिकार मांग लिया और लड़े तो अुनकी शोभा हुअी। अिसी तरह ये लोग कह दें कि हमें तो धारासभाओंका काम करना है और आप भले ही सत्याग्रह कीजिये, तो हम खुशीसे निकल जायंगे।

हम सत्ताकी बात भूल जायं, तो मुसलमानोंके साथका झगड़ा तो फौरन शांत हो जाय।

मैंने पूछा: लेकिन सत्ताकी बात तो हिन्दुओंमें जो सत्याग्रही हिन्दू हों, वे ही भूल जायं न?

बापू: हां। अिसलिअे सत्याग्रहीकी हैसियतसे हमारा झगड़ा नहीं रहेगा।

मैं तो जिस दिन बाहर निकलूंगा, अुस दिन सत्ता लेनेका विरोध करूंगा। पर यह बात सत्याग्रहियोंके लिअे है। धारासभाओंका विचार करनेसे मेरे सिरमें चक्कर आते हैं — यह जो बात मैंने अपने बयानमें कही है, सो मेरे सिरके लिअे कही है, सत्यमूर्तिके सिरके लिअे नहीं। दूसरे लोग जरूर अिसका विचार कर सकते हैं। अेक तरहसे 'सर्वेन्ट्स ऑफ अिंडिया' ने जो लिखा

है, वह सही है कि कांग्रेसी लोग गये होते तो आज सरकार यह नहीं कह सकती थी कि गांधीकी गिरफ्तारीमें देशका समर्थन है।

कल रातको सोते-सोते 'भर्तृहरि नाटक' (वाघजी आशाराम शाह कृत) में से अेक पंक्ति याद करके कहने लगे: 'अे रे जखम जोगे नहीं मटे', यह पंक्ति वल्लभभाअीके जुदा होनेका विचार करके हर वक्त याद आती है।

फिर कहा कि जिंदगीमें यहां और विलायतमें कुल २० नाटक देखे होंगे, हालां कि मेरे शौकके अनुसार तो सैकड़ों देखने चाहिये थे।

१३-८-'३२

सवेरे घूमते-घूमते मैंने कहा: वल्लभभाअीको तो रोज लिखनेका मन करता होगा, पर अुनका पत्र कौन आने देगा?

बापू: क्यों आने देंगे? और अब तो वहां अुन पर ज्यादा पाबंदियां लग गअी होंगी। यहां मेरे साथ बहुत कुछ छूट थी, वह सब खतम हो गअी होगी। और नये जेलके नये कानून होंगे। अेक तरहसे ठीक भी है कि वल्लभभाअी यहां नहीं हैं, क्योंकि आज होते तो अुन्हें नींद न आती। अधीर होकर घूमते और कहते, अभी तक पत्र क्यों नहीं आया? अिन लोगोंने यह विचार किया होगा, वह जाल रचा होगा, अिस तरहके विचार किया करते।

मैंने कहा: यह सच है। मुझे तो चिन्ता होती है। परंतु बस यही आखिरी श्रद्धा है कि अीश्वरको जब तक आपके सत्यका दुनियाको लाभ देना होगा, तब तक वह किसीको सत्यके खिलाफ खड़ा नहीं रहने देगा।

बापू: यह ठीक है। और मेरे अुपवास करनेकी बात होगी, तो निश्चित समझ लेना कि यहां मेरी मृत्यु करके अिस सवालका और स्वराज्यका भी फैसला अीश्वरको करना है। मैं यहां यह काम करता हुआ मरूं और अिन लोगोंके हाथों मरूं, अिसके जैसी दूसरी कौनसी बात हो सकती है? और आज भी कोअी जवाब नहीं है, अिसलिअे मुझे कुछ-कुछ शंका होने लगी है। वे अिस प्रसंगसे बच निकलनेकी भारी कोशिशमें लगे मालूम होते हैं। मगर सांप-छछूंदरकी-सी हालत हो गअी है। अिसलिअे क्या करें? वैसे मुझे मारनेका ही निश्चय कर लिया होगा, तो बहुतोंको अपनी तरफ मिलानेकी कोशिश करके ही अैसा करेंगे। यद्यपि मुझे लगता है कि मुझे अिस तरह मरने देनेके लिअे मंत्रि-मंडलकी मंजूरी लेनी होगी। और मैं अभी तक भी मानता हूं कि अिनमेंसे अरविन, मेकडोनल्ड और होर तीनों विरोध करेंगे। ये लोग जरूर कहेंगे कि अिस निरुपद्रवी आदमीको जेलमें बैठे-बैठे अितना करने दो। अिधर अिन लोगोंको चिन्ता हो गअी है कि जेलमें अिस आदमीने हमें हमेशा हराया

है, सो कैसे सहा जाय? और अिस वार तो सजा भी साल भरकी दी है। और फिर अेक सालके बाद भी ये भगवान जैसेके तैसे रहेंगे। अिसलिअे अेक बार आखिर तक लड़ लिया जाय। भगवान जाने क्या होगा!

१४-८-'३३

आज प्रातःकाल तो बापूका मौन था, मगर ११ बजे नोटिस लिख डाला और मुझसे कहा कि बारा बजते ही पहुंचा देना है, अिसलिअे तुरंत तैयार कर लो। छोटासा और साफ पत्र था: हरिजन-कार्यके बिना मेरे लिअे जीना असंभव है। यरवदा-समझौतेके अनुसार आप मुझे यह काम करने देनेको बंधे हुअे हैं। मेरी मांग न्यायपूर्ण मालूम हो तो मान लीजिये, नहीं तो मुझे मरने दीजिये।

शामको बातें हुअीं। अभी तक कोअी जवाब नहीं आया, अिसलिअे बापू कहने लगे: अब स्वीकृति आनेकी आशा कम है। यद्यपि ये लोग अिस हद तक जायं तो यह अुनकी निरी दुष्टता होगी। मेरा तो अिससे कोअी मतलब नहीं। मैं तो, जैसा जवाहरने कहा था, जिअूंगा तो भी हरिजनोंके लिअे और मरूंगा तो भी हरिजनोंके लिअे। मेरी तो शृंखला पूरी हुअी मानी जायगी। पर अिनकी दुष्टताके कारण मरना पड़े यह असह्य है। मनुष्य स्वभाव दुष्टताकी अिस हद तक पहुंच जाय, यह भयंकर चीज है। अब भी यह आशा रखें कि अीश्वर अहिंसाकी अितनी ज्यादा परीक्षा नहीं लेगा। संभव है कि होरके साथ अिन लोगोंकी बातचीत चल रही हो और होर तो झक्की आदमी है। वह तो अुस तरहका मनुष्य है कि अेक प्रस्ताव बम्बअीने किया हो तो अुस पर भी वह कायम रहे। कुछ भी हो, मेरे लिअे तो यह काम करते हुअे मौत आ जाय अिससे अच्छा और क्या हो सकता है?

शामको मानो सरकारकी स्थितिका ही मनमें विचार कर रहे हों, अिस तरह कहने लगे: जवाब तो आयेगा, पर बुधवारको आयेगा और अुसमें यह होगा:

"सरकारने आपको काफी लंबे अर्से तक बरदाश्त कर लिया है। अब अेक अव्यावहारिक स्वप्नदृष्टाकी स्वच्छन्दताको और अधिक सहन करना सरकारके गौरवको शोभा नहीं देता। अिसलिअे सरकारको यह बताते हुअे अफसोस होता है कि गांधीको कह दिया जाय कि अुन्हें जो जीमें आये करनेकी आजादी तो है ही; फिर भी अुन्होंने जो मार्ग अपनाया है, अुसी पर डटे रहनेकी अुनकी जिद होगी, तो सरकारको मजबूर होकर अुन्हें जबरदस्ती खाना खिलाना पड़ेगा।"

कुछ अिसी तरहका जवाब आयेगा। पर यह कहा जा सकता है कि साफ अिनकार करनेका निश्चय नहीं कर सके, अिसलिअे देर हो रही है। मैंने यह भी सोच रखा था कि आज भी फिर समय मांगें, तो मैं कहूंगा कि हरिजनोंका काम करने दें और पत्र लिखने दें, तो मुलाकातोंके लिअे अेक सप्ताह और ठहरनेके लिअे मैं तैयार हूं।

मैंने कहा कि यह अेक तरहसे अच्छा है कि अेण्ड्रूज अिस मौके पर आ रहे हैं। अिस पर बापू बोले: क्या खाक अच्छा है? वे आकर कुछ नहीं कर सकते। अुन्हें धक्का देकर बाहर निकाल देंगे। भले होंगे तो कह देंगे, आप अिंग्लैंड लौट जाअिये।

विट्ठलदास ठाकरसीका जीवनचरित्र रोज वाचनालयमें (पाखानेमें कमोड पर बैठे बैठे) पढ़ते हैं। अुनका जीवन बहुत जानने लायक है, किन्तु कल्याणरायने व्यर्थका विस्तार बढ़ाया है और अुसकी शैलीमें कुछ नहीं है। अंग्रेजी पुस्तकमें भी यही होगा। बापू कहने लगे: मैं तो अिसके बारेमें प्रेमलीलाबहनको लिखूंगा। जिसके प्रेम और सेवाका अितना ज्यादा अनुभव हुआ, अुसके पतिका जीवनचरित्र पढ़ना ही चाहिये।

आजकी खबर है कि वाअिसरॉयने अपने सम्मानमें पाठशालाअें बंद कराअीं। बापू बोले कि तुम जैसे भद्दे रूपमें कह रहे हो, वैसे कोअी नहीं कहेगा। अिसके बाद यह खबर थी कि गवर्नरका कुत्ता लंदनके टेलीफोन पर भोंका और अुसका भोंकना विलायतने सुना। बापू पहले तो खूब हंसे, फिर कहने लगे: लेकिन यह बताता है कि कुत्ता भी कुटुंबीजन है। अिस भावका विस्तार करके दुनियाके तमाम कुत्तोंके बारेमें यह भाव रखा जाय, तो कोअी हर्ज ही नहीं।

शामको "हरिने भजतां हजी कोअीनी लाज" भजन गाया गया।

बापू बोले: अिसी स्वरमें अिसे बचपनमें सुना था और यह स्वर मनमें से निकलता ही नहीं। जब गाया जाय, तभी मीठा लगता है। बिलकुल सादा भजन है, लेकिन पहली ही कड़ीमें कविको जो कहना था, सो सब कह दिया है।

मैंने कहा: प्रेमळदासके बारेमें और कुछ तो नहीं जानता, पर जैसे प्रीतमका "हरिनो मारग छे शूरानो" यह अेक ही भजन रह गया होता तो भी अुसका नाम अमर हो जाता, अुसी तरह प्रेमळदासके अिस भजनके बारेमें भी कहा जा सकता है। अिसमें अुसने भक्तोंका जो चुनाव किया है, वह भी देखने लायक है।

बापू: ठीक है। अिसमें बेढंगी भक्तिकी बात नहीं है। अिसमें तो सांवलियाके साथ लौ लगानेकी बात है। यह संपूर्ण प्रपत्तिसे ही हो सकता है।

आज सवेरे मेजर मार्टिन अेक पत्र लेकर आये। यह पत्र कल शामको पांच बजे दफ्तरमें आ गया था। मगर अुसे पड़ा रहने दिया। पत्रमें यह सूचना थी कि 'हरिजन' के कामके लिअे स्थानापन्न संपादकके साथ अेक मुलाकात गांधीको करनी हो तो कर लें, सरकारका हुक्म आनेमें अभी देर लगेगी। बापूने तुरंत जवाब लिखवाया कि "पत्रके संपादनके लिअे मुझे अखबार और पत्र पढ़ने चाहियें। अिसलिअे मुझे यहांके सब पत्र मिलें और अुनके सिवाय हरिजन कार्यालयमें आये हुअे पत्र तथा अखबार मिलें, तो कल मैं अुपवास नहीं करूंगा और सरकारी हुक्मोंका अिंतजार करूंगा।

१५–८–'३३

बापूसे मैंने कहा: कोअी आकर बात कर जाय तो बहुतसी बातें हल हो जायं।

बापू बोले: नहीं, ये तो मेरे साथ बात करना ही नहीं चाहते। अब अुन्होंने नअी नीति अपनाअी है। और करें भी क्या? मेरे साथ बात करनेमें मुझे जवाब न दे सकें, अैसा अुन्हें अनुभव हुआ हो तो फिर मुझसे बात कैसे करें?

वल्लभभाअीका पत्र कटेलीके नाम आया था, वह देखनेको मिला। बापूने पूछा: अुन्हींके अक्षरोंमें है?

मैंने कहा: हां।

अिसलिअे अेक बार सुन लेने पर भी फिर बापूने अुसे पढ़ लिया और शामको बातें करते वक्त फिर वल्लभभाअीकी याद ताजी की: भले होंगे तो वहां भी चार बजे प्रार्थना करना जारी रखा होगा। अब भोजनालय बनानेके विचार पर आये होंगे, और पुस्तकें मंगाअी हैं अिसलिअे सातवळेकरकी पुस्तकें पढ़ते-पढ़ते चक्कर काटेंगे। फिर भर्तृहरिका वाक्य दुबारा याद किया: "अे रे जखम जोगे नहीं मटे।"

मैंने कहा: अब तो वियोग लम्बा ही है न?

बापू बोले: अब अुपाय नहीं है। भीख मांगें तो अुपाय है, पर भीख मांगनेमें प्रतिष्ठा खो बैठेंगे।

बुद्धके विषयमें गौड़की पुस्तक बहुत पसंद आअी और अुसे आंखों पर जोर डालकर भी दो दिनमें खतम कर दिया। तुरंत डॉ० दत्तकी पुस्तक ले ली। अुसे समाप्त किया और अेण्ड्रूजकी ली। यह कहा कि बुद्ध संबंधी पुस्तकमें शोपनहोरके अुपनिषदोंकी प्रशंसामें जो वाक्य हैं, अुन्हें कअी वर्ष पहले पढ़ा था तो भी अभी भूला नहीं हूं। लेकिन अिस बारेमें शंका थी कि अुनमें 'असलके अपवादके साथ' में 'असल' शब्दका क्या अर्थ है और कहा

कि आज भी शंका है। अुसके अर्थके बारेमें थोड़ी चर्चा की और अिस नतीजे पर पहुंचे कि अुसका अर्थ वेद ही है। निरहंकार और निर्मलताके बारेमें लाओत्जेके ओीसवी सन्से हजार वर्ष पहलेके अुद्धरण पढ़कर आश्चर्यचकित हुअे और मुझे पढ़कर सुनाये।

१६–८–'३३

आज अुपवास शुरू करनेका दिन था, पर बापू तो पुस्तकें पढ़नेमें तल्लीन थे। अेण्ड्रूजकी पुस्तक पढ़ते हुअे अुसमेंके कुछ समझमें न आनेवाले वाक्य सुनाते जा रहे थे। बादमें ओक्सफर्ड डिक्शनरीका जेबी संस्करण लेकर मुझसे नया सीखा हुआ शब्द 'रिगर'(rigor) देखा, फिर प्रस्तावना पढ़ी और बादमें भीतरसे अुसे अच्छी तरह देखकर खूब बड़ाअी करने लगे।

आज भी सरकारके जवाबकी बाट देखी, बारह बजे अुपवास शुरू करनेका निर्णय किया। निर्णय करनेसे पहले अेक पत्र लिखवाया, जिसमें मार्टिनको लिखा कि अब मेरे लिअे फल और दूध भेजना बन्द कर दीजिये। आरंभ करनेके समय मैंने 'अुठ जाग मुसाफिर' गाया और फिर बापूने १२ वें और १७ वें अध्यायका पाठ करनेको कहा, जिन्हें हम दोनोंने साथ पढ़ा।

मैंने कहा: अुपवासके किसी दिन आपको छोड़ दें, तो अुपवास छोड़ ही देना चाहिये न?

बापू: तब तो छूट ही जाता है। कारण बाहर तो मैं सब काम कर सकता हूं। पर ये क्या छोड़नेवाले हैं?

मैंने कहा: अुन्हें नियमोंकी बाधा हो तो आपको छोड़ दें और फिर १८२७ के रेग्युलेशनके मातहत पकड़कर हरिजन-कार्यकी छूट दे दें।

बापू: नहीं, नहीं। यह सब जरूरतसे ज्यादा आशा है।

मैं: तब तो अुपवास करनेका ही निश्चय हुआ। ठीक है न? फिर तो जबरदस्ती खिला भी सकते हैं।

बापू: मुझ पर अितनी ज्यादा मर्यादा नहीं रखेंगे। और अुपवास भी लम्बा नहीं चलने देंगे। अिन लोगोंको सुंदर ढंगसे कुछ करना आता ही नहीं। अिसलिअे मुझे झूलता रखेंगे। अेण्ड्रूज आयेंगे तो वे भी कुछ न कुछ हलचल जरूर करेंगे। यों तो घनश्यामदास और मालवीयजी हैं, अिसलिअे आन्दोलन तो होगा ही।

फिर कहने लगे: हरिजनोंके लिअे अिस तरह मरना अुनकी सबसे बड़ी सेवा है। हरिजनोंके लिअे भाषण न किया जा सके, लिखा न जा सके, तब तो मेरी मौत आ जायगी। और हरिजन तो अिशारेमें समझ जायंगे।

मैं मुश्किलमें पड़कर अपनी कोठरीमें सो गया। दोपहरके बाद बापूका काता हुआ सूत अुतार रहा था कि मार्टिन आये और ठीक फौजी अदासे सरकारके हुक्म पढ़कर सुना दिये — सिर्फ हरिजनकार्यके लिअे: (१) अखबार मिलेंगे, पर दो से ज्यादा आदमियोंसे मुलाकात नहीं कर सकेंगे। अखबारोंके प्रतिनिधियोंसे नहीं मिल सकेंगे, किसी मुलाकातके बारेमें अखबारोंमें कुछ नहीं दे सकेंगे। (२) 'हरिजन' के लिअे हफ्तेमें तीन बार लेख भेज सकेंगे। (३) अेक कैदी टाअिपिस्टकी मदद मिल सकेगी। (४) मर्यादित संख्यामें पत्र लिख सकेंगे।

यह तो टेलीफोन पर अुसने डोअिलसे हुक्मोंकी नकल ले ली थी, सो पढ़कर सुना दी। अुसीने कहा: जब ये लोग हुक्म जारी करते हैं, तब सीधे हुक्म क्यों नहीं जारी करते? आपको देनेकी डाकके बारेमें तो कुछ लिखा ही नहीं!

बापू: यह रह गया होगा, क्योंकि वे लोग जल्दीमें थे।

वह खड़ा हो गया और बोला: अब आप अिसे अच्छी तरह पढ़कर विचार कर लीजिये। कल तो बकरियां भेजूं न?

बापूने जल्दीमें कह दिया: आज अभी भेज दीजिये।

मुझे जरा धक्का लगा, पर मैं न बोला। बापूने पत्र लिखवाना शुरू किया। लिखवा दिया, पर पत्र पढ़कर मुझे संतोष नहीं हो रहा था। मैंने अुसमें कोअी सुधार सुझानेकी कोशिश की। फिर बोला: सन् '३२ में हडसनने जो छूट दी थी और जिसके संतोषजनक न मालूम होनेके कारण आपने अुपवासका नोटिस दिया था, अुसमें और अिसमें कितना फर्क है, यह देखना चाहिये।

बापू बोले: अिसमें फर्क तो है, पर अब तो तुम दूसरा ही पत्र लिखो। यह तो अैसी ही बात हो गअी, जैसी हेल्सिंग फोर्स जानेका निश्चय करके तुरंत अिरादा छोड़ दिया था। मैं देख रहा हूं कि अुपवास हरगिज नहीं तोड़ा जा सकता। पत्र लिखो।

यह कहकर पत्र लिखवाया। ये हुक्म भारत सरकारके असल हुक्मोंकी हद तक नहीं पहुंचते; अितना ही नहीं, अुनकी आत्मा भी अिनमें नहीं है और ये सरकारका दरिद्रीपन बताते हैं। अिसलिअे अिन्हें मंजूर करके बादमें सरकारके साथ लम्बी चर्चा करनेकी बेकार झंझटमें पड़ना ठीक नहीं; अुपवास कर ही डालना पड़ेगा, यह कहा और यही भाव पत्रमें ले आये।

मैंने कहा: अिसमें अविश्वास भी है और यह भी स्वीकार नहीं किया गया है कि आपने पिछले साल अपना वचन अच्छी तरह पालन किया था।

बापू बोले: नहीं, अविश्वास नहीं। अविश्वास हो तो हर किसीको मिलने न दें, पर अिसमें नीचता है। यह नीचता कैसे सहन कर ली जाय? पत्र गया और यार्डमें चक्कर काटने लगे। मुझे कहने लगे: अुपवास छोड़ देता तो मेरे दुःखका पार न रहता। अब तुम पर थोड़ा दोष तो आयेगा कि अिस आदमीने अुपवास जारी रखवाया। और तुम कुछ अंशोंमें जिम्मेदार तो हो ही। तुम्हें अिन हुक्मोंसे संतोष हो जाता, तो मुझे शंका ही न होती। आदमीके मन पर किन-किन चीजोंका असर पड़ता है, यह पता थोड़े ही लगता है? मानवता और दुर्बलताके बीचमें जो पतली डोरी मौजूद है, क्या अुसका पता चलता है? पर मुझे यकीन है कि अिनमें तुम्हारा हिस्सा है। अिसी तरह तुम मुझे मेरी कमजोरियोंसे बचाते रहना।

मैंने कहा: कमजोरीकी बात नहीं, सही निर्णयशक्तिकी बात है। अिसलिअे बार-बार तोलनेका ख़याल हुआ; और आपने चकरियां भेजनेको जो तुरंत कह दिया, वह मुझे जल्दबाजी मालूम हुआी।

फिर हंसते-हंसते बोले: वल्लभभाओी होते तो कहते कि मंजूर कर लीजिये, अिसमें बहुत कुछ आ जाता है, बादमें लड़ लेंगे। पर यह ठीक नहीं। अुपवास छूट गया होता, तो मैं भारी दुःखमें पड़ जाता। फिर कहने लगे: दो आदमियोंसे मिलनेकी छूटका अर्थ यह हुआ कि बिड़ला, कवि और मालवीयजी आये हों तो मैं किसे अिनकार करूं? और दो मुलाकातोंका मतलब यही समझें कि दफ्तरमें मुलाकात हो। नहीं, अब तो लड़ ही लेना अच्छा है।

रातको जल्दी लेट गये। लेटे-लेटे कहने लगे: अड़ासी मासके बाद फिर अुपवास करना कोओी आसान बात नहीं है। ओीश्वर लाज रखे तो अच्छा। फिर बोले: अच्छी परीक्षा होनेवाली है और अुसकी जरूरत है। बेचारे प्यारेलालने ग्यारह अुपवास किये थे। दासताने और देवने तेरह किये थे। पर अिन लोगोंका किसीने भाव थोड़े ही पूछा था? मेरा भी भाव न पूछा जाय, तो यह अनुभव करने लायक है।

बापूको रातको नींद अच्छी आओी, पर प्रार्थनाके समय मुझसे कहा कि पौने तीन बजेसे जग गया था और अिस श्लोकका

१७-८-'३३ विचार कर रहा था:

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते।
योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते॥

अिसमें भिड़े शास्त्रीका अर्थ मेरे गले नहीं अुतरता। वे जो कहते हैं कि योगारूढ़को शम साधनेके लिअे कर्मके साधनकी जरूरत है और योगारूढ़ वननेकी अिच्छा करनेवालेको योग साधनेके लिअे कर्मके साधनकी जरूरत है, सो मुझे ठीक नहीं लगता। मुझे तो जो शुद्ध शब्दार्थ सीधा वैठता है वही ठीक लगता है; यानी योगारूढ़ वननेकी अिच्छावालेके लिअे कर्म साधन और योगारूढ़के लिअे शान्ति साधन है।

मैंने कहा: तव तो आप शांकर-सिद्धांतका समर्थन करते हैं कि संन्यासीको कर्म करनेकी जरूरत नहीं।

वापू: समर्थन करता भी हूं और नहीं भी करता — करता अिस हद तक हूं कि अुसकी शांति ही कार्यसिद्ध करती रहती है, अिसलिअे अुसे कर्मकी जरूरत नहीं। और नहीं करता अिस हद तक कि अुसके शांत होने पर भी अुसका संकल्प तो जनहितका ही होगा। योगारूढ़के पास वैठे हुअे मनुष्यको विच्छू काट ले तो वह देखता नहीं रहेगा, वल्कि अपनी संकल्पशक्तिसे, कुछ भी कर्म किये विना, अुसका विच्छू अुतार देगा या अुसके विच्छूका जहर चूस लेगा। जनक राजाकी नगरी जल रही थी, तो भी जनक राजा शांत वैठा था। लेकिन वह शांत नहीं वैठा था। अुसकी शांति ही नगरीको शांत कर रही थी। कभी वह अपनी शांति छोड़कर निकल पड़ता और वंवेवालोंसे कहता कि मुझे भी वम्वा दे दो, तो वम्वेवालोंका ध्यान अुसकी तरफ लग जाता और वे लोग अच्छी तरह काम न कर सके होते। मैं तो लौकिक अुदाहरण लेता हूं। अिस विश्वाससे कि राजा वैसा चाहता है, क्या कुछ वातें नहीं होतीं? वाअिसरॉय आनेवाला हो तो अुसके लिअे अितने लोग मानपत्रकी तैयारी करें, अितने लोग शहर सजायें, वगैरा वातोंका हुक्म वाअिसरॉय न देता हो तो भी ये होती रहती हैं। अिसी तरह मनुष्य शांत रहकर कअी वातें करता ही रहता है। यही अर्थ अकर्ममें कर्मका है।

१२ वें अध्यायका 'श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासात्' वाला श्लोक पहेली जैसा लगा — मानो ज्ञान, ध्यानसे सम्वंध रखनेवाली कोअी वात पहलेके श्लोकोंमें हो ही नहीं और यह श्लोक कहीं वाहरसे लाकर रख दिया गया हो!

सवेरे शांकरभाष्य और भिड़ेकी गीता और 'गीताअी' लेकर वारहवां अध्याय पढ़ने वैठे ही थे कि मार्टिन लाल-पीला होकर आया और कहने लगा: आपने तो अपना विचार वदल दिया। मैं सरकारको खवर भी दे चुका था। मुझे फिर फोन करना पड़ा।

बापूने समझाया कि जितनी जल्दी आपको खबर दी जा सकती थी अुतनी जल्दी दी गअी।

मार्टिन: आपका पत्र ही मैं न समझ सका। आपको पत्र चाहियें, तो अुसके बारेमें बात हो सकती है।

बापू: पर मैं आगेके लिअे क्यों रखूं? मेरे लिअे तो ये हुक्म ही अधूरे हैं। आपके जानेके बाद मैंने अुन्हें पढ़ा, फिर पढ़ा और मुझे लगा कि अिसमें तो मैं अुलझनमें फंस जाता हूं।

मार्टिन: लेकिन पत्र अैसा कारण नहीं है, जिसके लिअे आप अुपवास करें। फिर भी आप कहते हैं कि मैं सरकार पर जबरदस्ती नहीं करता।

बापू: मैं तो अब भी कहता हूं कि मैं जबरदस्ती नहीं करता, न करना चाहता; मैं तो सिर्फ अितना ही कहता हूं कि मेरा काम असंभव हो जाय, तो मैं जी नहीं सकता। जो हुक्म अभी दिये गये हैं, अुनसे मेरा काम नहीं चल सकता।

बापूने यह समझानेवाला लंबा तफ़सीलवार पत्र तुरंत लिखवाया कि अुन्हें क्या चाहिये और मांग की कि मुझे छूट देनी हो तो भारत सरकारके मूल हुक्मके अनुसार पूरी छूट दीजिये। अुसमें यह भी मांग की कि 'हरिजन'के लेख देने हैं, अिसलिअे आज काकाको मुझे बारह बजेसे पहले मिलना चाहिये; और मुझे अपने अखबार तथा पत्र भी मिलने चाहियें।

ये अखबार और पत्र तो न मिले, लेकिन मार्टिन काकाको मिलनेके लिअे बारह बजेसे पहले ले आया और हंसनेकी, विनोद करनेकी कोशिश की:

देखिये, आपसे मिलनेके लिअे मैं काका कालेलकरको यहां ले आया हूं। यह मेरी भलाअी नहीं है? अभी मुझे फोन पर हुक्म मिला कि काकाको आने दिया जाय और आपकी दो 'हरिजन' मुलाकातें करने दी जायं।

और फिर बोला: आप नाहक शरीरको बिगाड़ रहे हैं! सरकार ताबड़तोड़ कैसे काम करे? सरकारके काम तो धीरे-धीरे ही होते हैं।

बापू: पर मैंने तो पंद्रह दिन दिये थे। यह ताबड़तोड़ कहा जायगा? और भारत सरकारके हुक्म तो थे ही।

अिस पर वह कहने लगा: लेकिन वे तो आप पर तब लागू होते थे, जब आप राजबन्दी थे।

बापू: मेरे राजबन्दी होनेके साथ अुनका कोअी ताल्लुक नहीं। अेक असाधारण परिस्थितिसे, जिसकी जड़ गोलमेज परिषद है, यह चीज पैदा हुअी। आप जानते हैं कि समझौता स्वीकार करनेके लिअे ब्रिटिश मंत्रि-

मंडलकी जल्दीसे वैठक हुअी थी? और यह चीज अुसीमें से स्वाभाविक रूपमें पैदा हुअी थी। अिस प्रकार मैं राजवन्दी होअूं या सावारण कैदी होअूं, वह चीज कायम रहती है।

फिर वापूने पूछा: मेरा पत्र भेज दिया?

वह वोला: जरूर। वह पत्र कैसे रोका जा सकता था? पर आप तो तुरंत ही जवाव मांगते हैं। अिन लोगोंको शिमला और लंदनसे भी वातें करनी पड़ती होंगी, अिसका आप खयाल ही नहीं करते।

वापू: मैंने तो अुन्हें पन्द्रह दिन दिये थे।

वह चुप हो गया।

लल्लूभाअी शामलदास जापानसे हरिजनोंके लिअे १७०० रुपयेका चेक लेकर आये थे। अिसका भी वापूने वातोंमें अुपयोग कर लिया। अैसे चेक आयें तो पड़े रहें और मैं अुनकी पहुंच भी न लिखूं?

अिस पर वह वोला: तव तो आपको सोचकर जेलमें आना था।

वापू कहने लगे: विचार तो कर ही लिया था, लेकिन आप अपने पहलेके हुक्मोंको ही निगल जायं तो क्या किया जाय?

अिसके वाद काका आये। काकाने कहा: अिस विषयमें 'हरिजन'में लिखनेका विचार था।

वापू वोले: अेक अक्षर भी नहीं लिखा जा सकता। मुझसे मिलते हो और मुझे यहां अिस हालतमें देखा, अिस जानकारीका भी अुपयोग 'हरिजन'में नहीं हो सकता। दूसरे अखवारोंके लिअे हो सकता है, मगर वह भी तुम न करना। तुम स्वतंत्ररूपमें लिखो तो दूसरी वात है। मगर मुझसे मिले हो अिसलिअे और अिस जानकारीका लाभ अुठाकर कुछ भी न लिखो, यही हमें शोभा देगा। ये लोग झूठी-झूठी वातें छापते रहेंगे और मैं अिस अुपवासमें मर भी गया तो क्या हुआ? यह वड़ीसे वड़ी हरिजनसेवा होगी।

कोअी चार वार गरम पानी लिया और कहते रहे कि अिस तरह पानी पिया जा सके तो अच्छा। मगर शामको कहने लगे कि मुश्किल होने लगी है, मतली होती है। प्रार्थनाके समय गरम पानी पीते हुअे काफी तकलीफ हुअी।

शामको वापूका वजन ९९ निकला, कल १०१ था। सुवह नाड़ीकी गति ६२ थी, शामको ६४ हो गअी। नहानेके लिअे स्ट्रेचरमें ले गये थे। पानी डेढ़ सेर तक पी सके। रोज अिस तरह पी सकें तो शायद चार-पांच दिन विना किसी गड़वड़के वीत जायंगे।

अुपवासका तीसरा दिन है। सुबह चार बजे मुझसे कहने लगे कि गुजराती 'हरिजन' के लिअे कुछ लिखना चाहिये। मैं तो
१८–८–'३३ अितना बेचैन था कि मुझे तो कुछ भी कहना नहीं सूझा। मैंने कहा: कल जो कुछ दिया है, अुसका अनुवाद होगा। मगर सुबह नौ साढ़े नौ बजे तो लिखवाने लगे और दो छोटे-छोटे लेख लिखवा दिये। यशवन्तप्रसादभाअीकी मृत्युका तार आया, अिसलिअे थक जाने पर भी अेक तीसरा लेख अुनके बारेमें लिखवाया। वह लिख रहे थे कि काका आ गये।

यह कहकर कि काकाको अुपवासके बारेमें कुछ लिखने दीजिये, मैंने अुस पर अेक नोट लिख रखा था। पर अुसे देनेसे अिनकार कर दिया। "मैं जिअूंगा तो कुछ न कुछ लिखूंगा। मेरे मरनेके बाद तो 'हरिजन'में जो लिखना हो सो लिखना। मैंने सरकारसे शुद्ध न्याय मांगा है। मेरा अुपवास अिसलिअे है कि मैं अिस न्यायके बिना जिन्दा नहीं रह सकता। अिस विषयकी मैं चर्चा किस लिअे करूं?

बस फैसला हो गया कि 'हरिजन'में कुछ नहीं लिखा जा सकता।

अिसके बाद अेण्ड्रूज आये। अुन्होंने अस्पृश्यताके बारेमें बातें करनेकी अिजाजत ली थी और मेक्सवेलसे मिलकर अुपवासके बारेमें बातें करनेकी मंजूरी ले ली थी। मुझे बड़ी आशा हुअी। पर अुन्होंने तो जितने सौम्य रूपमें संभव था अुतने सौम्य रूपमें सरकारका ही पक्ष पेश किया और जितनी मिठाससे कहा जा सकता है अुतनी मिठाससे अुपवास छोड़ देनेके लिअे कहा। विलायतमें अेगेथा, पोलाक, कार्ल हीथ वगैरा मित्र यह मानते थे कि राजबन्दीकी हैसियतसे और कुछ खास कारणोंसे हरिजनकार्यकी अिजाजत दी थी, पर सजा पाये हुअे कैदीके रूपमें तो वह नहीं मिल सकती। बापूको यह छूट किस तरह दी जा सकती है? बापूने अुन्हें भारत सरकारके हुक्म दिखाये। अुन्होंने ठंडे दिलसे पढ़ लिये और कुछ न बोले। फिर कहने लगे: यह तो ठीक है। लेकिन सरकारकी कठिनाअी भी तो समझनी चाहिये न?

बापू बोले: प्रबंध सम्बन्धी कठिनाअियोंको पार करनेमें मैं मदद दे सकता हूं। मगर मेरे साथ कोअी बात करनेको कहां तैयार है? मानवताका संबंध ही नहीं रहा।

बापूने बताया कि अिस मामलेमें सजा पाये हुअे कैदी और राजबन्दीकी स्थितिमें फर्क हो ही नहीं सकता। मगर अंग्रेज होनेके नाते वे अंग्रेजोंकी अमुक भूल तो समझ ही नहीं सकते थे।

अेण्ड्रूज: पर आपने तो सरकारके सिर पर यह पिस्तोल तान रखी है कि अितना न दोगे तो मैं मर जाअूंगा। मुझे सचमुच अिन सब बातोंसे आश्चर्य ही हुआ। मैंने तो मान रखा था कि आप जेलमें अेक साल शांतिसे रहेंगे और अिस शांतिके द्वारा काम करेंगे।

बापूने अपने व्रतका धार्मिक अर्थ समझाया: अिसमें धर्मकी बात न हो तो मैं लड़ूं ही नहीं। मुझे सजा पाये हुअे कैदीकी हैसियतसे यहां लाकर ये सुविधायें छीन लेना सरकारका दोहरा अन्याय लगता है। मुझसे वैरका बदला लेनेके लिअे ही यह सब कुछ किया गया है।

अेण्ड्रूज बोले: सरकारके मनमें द्वेष या वैर नहीं है। मेक्सवेलको भी बहुत दुःख था। सरकार आपसे अुपवास नहीं कराना चाहती।

अेण्ड्रूज साहबका यह सुझाव था कि आप सरकारकी स्थितिको समझें और महीने-पन्द्रह दिनकी आजमाअिश करनेके बाद ज्यादा सुविधाअें मांगें। अुन्होंने मानव संबंधके बारेमें पूछा: आप किस अफसरसे आपके पास आकर बात करनेकी अपेक्षा रखते हैं?

बापू बोले: कोअी भी आये। अुनकी कठिनाअी मालूम हो, तो मैं बहुत कुछ कम कर दूं।

अेण्ड्रूजने कुछ समझौतेके रास्ते सुझाये। सुपरिंटेंडेंट पर सब कुछ छोड़ दिया जाय, कुछ लिखे बिना वही अपनी समझके अनुसार अमल करे, वगैरा। मगर यहां जब अेण्ड्रूज ये बातें कर रहे थे, तब अुधर सरकारका जवाब तैयार हो रहा था। अेण्ड्रूजके जानेके बाद अुसे लेकर मार्टिन आये। काकासे मालूम हुआ था कि सरकारने अेक वक्तव्य प्रकाशित किया है। अुसमें लड़ाअी, अपमान और मरना हो तो मरो, ये भाव स्पष्ट थे। गीले तौलियेसे शरीरको पोंछवानेके बाद बापूने अुसका दृढ़तासे जवाब दिया। सरकारके जले पर नमक छिड़कनेके लिअे बड़ा खेद प्रगट किया और वचनभंगसे बचनेके लिअे कहा।

अेण्ड्रूज आये थे, तब तो बापूने कहा था: यह आ गये तो अच्छा हुआ। ये सरकार और हमारे बीचमें कड़ी जरूर बन सकते हैं।

अिस पत्रका विचार करके ही मानो रातको तेल मलवानेके बाद बोले: महादेव, अिस बार तुम्हें मुझे खो देनेके लिअे तैयार रहना होगा। सरकारने निश्चय कर लिया दीखता है। हमारा भी निश्चय है। अैसा ही हो तो हमारे खयालसे अिसमें सब कुछ अच्छा है। आज तो लोग भी स्तब्ध हो गये हों तो चुप रहेंगे और सब कुछ देखते रहेंगे। मगर हजारों वर्ष तक अिस बातकी प्रशंसा की जायगी। मुझे प्रशंसा नहीं करानी है। मगर लोग

यह कहेंगे कि यह कदम मूर्खतापूर्ण नहीं था। जॉन ऑफ आर्क पर यह अिलजाम लगाये गये थे कि वह डायन थी, जादूगरनी थी। पर आज वह पूजी जाती है। वही बात यहां होगी। आज मुझे भले ही बेवकूफ और पाखंडी कहें, लेकिन सौ वर्ष बाद कोअी अैसा नहीं कहेगा। मेरे लिअे तो कुछ करना बाकी नहीं रहा। मुझे अब यह भी नहीं समझाना है कि हरिजनोंका प्रश्न कैसे हल हो। खादीके बारेमें, सत्यके बारेमें, और अहिंसाके बारेमें अब मुझे कोअी नअी बात कहनी नहीं रह गअी है। अिसलिअे मैं शान्तिसे चला जाअूं, यही अच्छा है। किसी रोगसे या और किसी तरह मरनेकी अपेक्षा यह मौत हजार गुनी ज्यादा अच्छी है। गीताके दूसरे अध्यायके अंतिम श्लोककी स्थितिमें चला जाअूं तो अीश्वरका आभार मानूं — 'अेषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति' — अिसमें जरा भी मोह न हो, यही हमारी अिच्छा होनी चाहिये। मेरी भूल आज भी कोअी बता दे, तो मैं मान लूं। मौतके किनारे बैठा होअूं, तब भी कोअी भूल साबित कर दे, तो अुसकी माफी मांगूं और कह दूं कि मैं मूर्ख था. अब मुझे अपनी मूर्खताका फल भोगने दो। तुम्हें तो कोअी विचार करना ही नहीं है। तुम्हें शांतिसे काम करते रहना है। आज जो हो सके वह करना, कलका कल सूझा देगा।

मैं चुपचाप अिन शब्दोंको सुनता रहा।

आज प्रातःकाल कर्नल . . . आया था। यह आदमी अगर बूढ़ा न हो तो अुसकी बेहयाअीके लिअे अुसके गाल पर अेक तमाचा मारनेकी जीमें आती है। आप तो बनियेकी तरह दूसरेके घर जाकर यह कह रहे हैं कि अितना रुपया लाओ, नहीं तो मैं मर जाअूंगा। अरे भले मानस, सब कुछ छोड़कर यही काम कीजिये न। आप कहते हैं कि हरिजन-कार्य तो मेरे प्राणोंके समान है; तो फिर कानूनभंगको भूल क्यों नहीं जाते? मैं लॉर्ड विलिंग्डनसे मिलकर आया हूं। मेरे साथ वे बहुत अच्छा सम्बन्ध रखते हैं। मुझे मिलनेको तार दिया था, लेडीके और अपने बीचमें मुझे बैठाया और हिन्दुस्तानी सिपाहियोंमें मेरे कामकी सब बातें पूछीं। मेरे सिपाहियोंमें बहुतसे हरिजन लोग थे। हमने हिन्दुस्तानी सिपाहियोंका घर खोला है। अिन लोगोंको खुश करनेके लिअे जलसे होते हैं। वहां चाय, कॉफी, बिस्कुट और डबल रोटी वगैरा देते हैं। अिस तरहकी बकवास करके अुसने सिर दुखा दिया। मैंने कहा, आप अितनी बातें कहते हैं, तब अैसा लगता है कि आत्मकथा लिख रहे हैं। क्या लिख रहे हैं? मगर वह मजाकको क्या समझे? अुसने तो बकवास जारी ही रखी।

बापू बोले: मुझे अपने सोल्जर्स होममें रखियेगा। मैं तो सोल्जर (सिपाही) ही हूं, और यह तो आप जानते ही हैं न कि सोल्जर लड़ते-लड़ते नहीं थकता? जाते-जाते फिर लॉर्ड विलिंग्डनके गुणगान किये। फिर कहने लगा: 'टाअिम्स'ने बताया है कि आपको सुविधायें मिल गअी हैं। अब किस लिअे अुपवास करते हैं? अिस बार क्या अुस अिटालियनकी तरह ४५ अुपवास करने हैं?

अुपवासका चौथा दिन।

१९-८-'३३

रात ठीक नहीं निकली। टूटी-फूटी नींद आअी। मुझे दो बजे बाद किसी तरह नींद आअी ही नहीं। बापूके कहे हुअे शब्द मेरे कानोंमें गूंजते ही रहे। दोसे साढ़े छः तक सेवाका मौका मिला। बापूकी कमर और पैर खूब टूटते थे। अुन्हें दबाया। सुबह पत्रकी नकल करके अुसे भेजा।

'टाअिम्स' रोज कटा हुआ मिलता है, अिसके लिअे मार्टिनसे शिकायत की थी। वह बोला: कैदियोंके लिअे यह काट-छांट करनी पड़ती है। अगर आपको कोअी अपना 'टाअिम्स' भेज दे, तो पूरा मिल जायगा। फिर बोला: मेरी काटी हुअी कतरन मिल जायगी तो भेज दूंगा।

मार्टिन अेंड्रूजको लेकर आया। वे मेक्सवेलके यहांसे ही आ रहे थे। अुन्हें भी अैसा लगा कि कलका पत्र जले पर नमक है। पर अुन्हें जवाब यह मिला कि जेलमें रहकर अिससे ज्यादा सुविधाअें नहीं दी जा सकतीं। जेलमें से अितना बड़ा आन्दोलन नहीं चलाया जा सकता।

बापू बोले: तो फिर अुन्हें मेरे जैसेके लिअे दूसरी जेल खोलनी चाहिये।

अिस पर अेंड्रूज बोले: हां, कल मैं यही विचार कर रहा था।

काकाने यह सुझाव दिया कि बापूको ये लोग और कहीं क्यों नहीं रख देते? अेंड्रूजके पास कोअी चीज नहीं थी, पर वे कहते थे कि रातको आपने ही कोअी विचार कर रखा हो और रास्ता निकाला हो तो बताअिये।

बापूने फिर कहा: रास्ता मानवताके सम्बन्धका है। अिन लोगोंको समझनेकी परवाह ही कहां है?

अिस पर अेंड्रूज कहने लगे: मेक्सवेलने तो बहुत ही मीठी बातें कीं और मुझे तमाम भीतरी बातें सुनाअीं, मानो मैं अुनका निजी मित्र होअूं। मैं फिर मेक्सवेलसे मिलूंगा और हो सका तो अुन्हें लेकर आअूंगा।

बापू कहने लगे: भले ही आयें, मैं बात कर लूंगा। सरकार यह भी जानती है कि मुझे समझाना कितना आसान है। अभी तो ये भूल गये हैं। ये चाहें तो बहुत कुछ जल्दीसे कर सकते हैं। न करना चाहें तो अिनका काम धीरी गाड़ीकी तरह चलता है। शौकत मुहम्मदको जेलमें रखा था, अुसी तरह मुझे रख सकते हैं। मुझे चाहे जहां कैदीके तौर पर रखें तो काफी है। मैं पैरोल पर नहीं छूटूंगा। चाहें तो मुझे किसी बंगलेमें रख दें। मेरे अूपर सुपरिण्टेंडेंट रख दें। अुसे कोअी काम तो करना होगा ही नहीं। जान लेगा कौन आया था और कौन नहीं। फिर मुझे हमेशाके लिअे राजबन्दी मान सकते हैं। मैं अुपवास करूं तो मुझे छोड़नेकी भी जरूरत नहीं। कुछ भी करनेकी जरूरत नहीं।

मानो कोअी बिलकुल नअी दिशा मिली हो, अैसा समझकर अैंड्रूज चले गये और वापस आनेका कह गये। जाते-जाते बापूसे दूध लेनेका फिर आग्रह किया।

बापूने कहा: यह प्रतिज्ञाकी बात है।

अिस पर बोले: तो आग्रह नहीं करूंगा।

देखें, अब कल क्या नअी चीज लेकर आते हैं।

आज कर्नल मार्टिनकी जबान खुली। अैंड्रूज बात कर रहे थे कि अुसने कहा: मैं खानगी बात कहता हूं। आप जब पकड़े जानेवाले थे, तब मैं तीन घण्टे तक सरकारी भवनमें था। यहां नहीं रखा जा सकता, और कहीं रखनेका बन्दोबस्त कीजिये, अिस बारेमें तीन घण्टे तक चर्चा की गअी। और परिणामस्वरूप मुझे टेलीफोन मिला: सवेरे तुम्हारे यहां आ रहे हैं। अिन लोगोंको यरवदाके सिवाय कोअी जगह ही नहीं मिलती। और हमारी स्थिति विषम हो जाती है। हम जेलके नियमोंके बाहर विचार नहीं कर सकते और फिर कुछ देना पड़ता है, तो वह भी आधे मनसे देते हैं।

यह बेचारा सवेरे 'टाअिम्स'की कतरन देनेको कह गया था, परन्तु डोअिलने अुसे मना कर दिया!

अुसके जानेके बाद बापू कहने लगे: मुझे अदनमें रख दिया होता तो क्या मैं अिनकार करनेवाला था? वहां क्या हरिजन-कार्य कर सकता था? कुछ नहीं। मगर आज मुझे वे अपनी कठिनाअीमें से निकलनेके लिअे अदन ले जायं, तो मैं अिनकार कर दूंगा। महादेव, मुझे बाहर निकाल दें और नजरबन्द कर दें, तो तुम्हें तो यहीं रखेंगे न?

मैंने कहा: किसी भी तरह मामला सुलझ जाय तो अच्छा है। मुझे कहीं भी रख दें, अिसकी परवाह नहीं।

मैंने बापूको खबर दी कि २१ ता० को सूर्यग्रहण है। और वह पूनामें ८-५३ बजे दिखाओ देगा और १२ बजे तक रहेगा। साथ ही साथ कहा; लेकिन यह हमारा ग्रहण खुले तब न!

बापू: हां, यह खुल जाय तो लेडी ठाकरसीके यहांसे हम अिसे देखनेके लिअे दूरबीन मंगायें।

मैंने कहा: बापू, रातको मनुष्य निराश क्यों हो जाता है और अुसे निराशा क्यों घेर लेती है? और दिनमें यह निराशा कहां अुड़ जाती है?

बापू: सूर्यका कोअी असर तो जरूर है। वैसे, रातको अेक प्रकारका सौम्य प्रभाव तारे और चन्द्रमा भी डालते ही हैं।

मैंने कहा: बूकर वाशिंग्टन अेक जगह अपने बचपनके अनुभव बयान करते हुअे कहता है, "कोयलेकी खानके काले अंधेरेसे ज्यादा अंधेरा कौनसा होता है?" मुझे तो पढ़ने पर लगा कि निराशा ज्यादा अंधकारमय है। क्योंकि मैं अिस वृत्तिमें था।

बापू: तुमने तो वही किया जो मैंने लंदनकी मेट्रिककी परीक्षामें किया था। मेट्रिकमें हमसे सामान्य ज्ञानके सवालोंमें पूछा गया था कि सुवर्णसे ज्यादा सुवर्णमय क्या है? और मैंने लिखा था कि सत्य ज्यादा सुवर्णमय है।

मैंने कहा: अैसी-अैसी बातें भी वहां पूछते हैं?

बापू: परीक्षा लेनेकी भी कला है न? कुछ लोग अपनी मूर्खता परीक्षाके सवाल निकालनेमें प्रदर्शित करते हैं। हमसे मेट्रिकमें किसीने "मनने मनसुखनुं सुख दीधुं, रतितंत्र स्वरूप अनूप कीधुं" ये पंक्तियां समझानेको कहा था। वह मूर्ख ही होगा न! गोवर्धनभाअीकी यह बिलकुल रसहीन कविता हम क्यों जानें? वह न आती हो तो क्या साबित होगा? गोवर्धन-भाअी और मनसुखरामका क्या संबंध था, यह सब हमें क्यों जानना चाहिये?

अुपवासमें शांतिसे पड़े-पड़े बापू अैसे-अैसे चुटकुले सुनाते हैं। कल गोखलेकी दोष निकालनेकी वृत्तिका अेक किस्सा सुनाया था। वे अुबला हुआ पानी पी रहे थे। पीते-पीते कहने लगे: यह अंग्रेजी ढंगसे नहीं पीया जा सकता और चम्मचसे पीयें तो आवाज जरूर होती है। हमारे पोरबन्दरवाले जो कालिदास हैं, अुनसे मैं कहूं कि अिस देशमें (विलायतमें) अिस तरह सबड़-सबड़कर नहीं खाते, तो वे और ज्यादा सबड़-सबड़ करते। गोखलेको अिन छोटी-छोटी बातोंकी बड़ी चिढ़ थी। विलायतमें हमसे कहने लगे: अिस तरह चप्पल पहन कर क्यों आते हो? अिससे काम नहीं चलेगा। यहां बूट पहनने ही चाहियें।

अिसलिअे अुन्हें खुश करनेके लिये केलनवेक और मैं सेंट जेम्स पार्क तक चप्पल पहनकर जाते। वहांसे बूट पहन लेते तथा चप्पल अखबारमें लपेट कर बगलमें रख लेते और नेशनल लिबरल क्लबमें बूट पहनकर जाते। फिर भी हम अुनसे कह जरूर देते थे कि आपकी खातिर हमने यह भेस बनाया है, चप्पल नीचे रखकर आये हैं।

अेक दिन लंदनमें मैं मोटरमें पास बैठा हुआ था कि मेरे बूटकी तरफ देखकर बापू कहने लगे: महादेव, बूट तो अच्छी तरह चमकते हुअे चाहियें। यह यहांकी सभ्यता है। रास्तेमें दो पेनी दे दो तो बड़े-बड़े बूट पॉलिश कर देगा।

गोखलेके शिष्य जो ठहरे!

वल्लभभाअीको यहांसे अुनकी सारी चीजें भेजीं। अेक-अेक चीज याद करके बापूका दिल भर आता था। फिर तीन बजे मेरा काम पूरा हुआ तो मुझसे कहने लगे: अब तुम आराम लो। मैं आराम लेनेके लिअे लेटा, मगर शिवरतन महोता आ गये। बड़े रंगीले आदमी मालूम हुअे। बिड़ला समधी भी अपने जैसे बुद्धिमान ही चुनते हैं। जहां आदमी हैं वहां रुपया नहीं मिलता, और जहां रुपया है वहां आदमी नहीं मिलते। अुनकी पाठशालामें तीन हरिजन आये, तो मारवाड़ी भाग गये। फिर ज्यादा हरिजन आये। बादमें कुछ मारवाड़ी वापस आ गये और कुछ सनातन पाठशालामें जाने लगे। मैंने ५०,००० रुपये दिये हैं। मगर अैसा कोअी होशियार आदमी नहीं मिलता, जो अच्छी व्यवस्था कर सके और अुद्योगशाला चला सके। आप मुझे अच्छा आदमी ढूंढ़ दीजिये।

बापू बोले: यह काम निपट जाय, तो मैं जरूर ढूंढ़कर भेजूंगा।

अिस पर शिवरतनको मौका मिला: बापू, आप क्या भेजेंगे? आप तो अिस तरह अुपवास लेकर बैठ गये हैं। अिस तरह भी कहीं अुपवास होते हैं? आपको हमसे काम लेना है या अुपवास ही करते रहना है? हम भटक जायंगे। आपके राजनैतिक कामसे भी मुझे तो यह काम बड़ा मालूम होता है। यह तो जाहिर है कि हमारे हिन्दुओंमें अिन हरिजनोंके लिअे कोअी हमदर्दी नहीं है। मगर दूसरे व्यवहारमें भी वे लोग शुद्ध नहीं हैं, तब आप यह क्या लेकर बैठ जाते हैं? पांच मुलाकातोंके बजाय दो कीजिये, कैदखानेमें आनेके बाद यह कैसे कहा जा सकता है कि मुझे चाहिये अुतनी ही सुविधा दीजिये। हरिजनोंको तो थोड़ा ही नुकसान अुठाना पड़ेगा, मगर हम सबको तो आप खूब रुलायेंगे। निर्णयके खिलाफ लड़े थे सो तो ठीक था, मगर यह क्या है? थोड़ीसी ज्यादा

मुलाकातोंके लिअे कोअी लड़ता है? कअी बार आपके काम हमें परेशानीमें डाल देते हैं। अेक आदमी कहता था कि जैसे जमशेद समय-समय पर अिस्तीफा देता है और वापस ले लेता है, वैसे महात्माजी अुपवास करते हैं और वापस ले लेते हैं। हमको तो अैसा लगता है कि स्वराज्यके बड़े भगीरथ कामके सामने अिस बातका क्या महत्त्व है, जिसके लिअे आप प्राण देने बैठे हैं? हमारे लाखोंके दिल दुख रहे हैं। आप हम सबकी बात क्या नहीं मानेंगे?

बापू: धर्मका आचरण कोअी आसान चीज नहीं है। शरीरको रखनेसे धर्मकी रक्षा नहीं होती, पर शरीरको छोड़नेसे ही धर्मकी रक्षा होती है। यह शरीर कहां चिरस्थायी है? और यह माननेवाला मैं कौन हूं कि स्वराज्यका बड़ा काम मेरे पास है? बड़े काम और छोटे काममें फर्क नहीं। पर यह जानना चाहिये कि कौनसा काम किस वक्त करना चाहिये। कल रातको मेरे बराबरमें जमीन पर अेक वॉर्डर सो रहा था। अुसे देखकर मुझे खयाल हुआ कि अिस पर कोअी सांप आ जाय तो मेरा क्या धर्म है? मुझमें अशक्ति होने पर भी मुझे अिसे बचानेकी कोशिश करनी चाहिये, फिर भले ही वह सांप मुझे काट ले। अेक बच्चा बड़ी आफतमें है। अुसे बचानेका मुझे मौका है, पर बचानेमें मुझे मौतकी जोखम अुठानी पड़ती है। तो क्या न अुठाअूं? यह सोचकर बैठा रहूं कि मुझे तो स्वराज्यका बड़ा काम करना है, अैसे तुच्छ काम मैं कैसे करूं? तब तो मेरा बड़ा काम भी ठप हो जायगा। यहां आज धर्म हो गया कि मुझे लड़ ही लेना पड़ेगा। थोड़ी या ज्यादा मुलाकातोंकी बात नहीं है। ये तो अेक हाथसे देनेका दावा करते हैं और दूसरे हाथसे सब कुछ ले लेते हैं। साफ कह दें कि हम यह काम नहीं करने देंगे। कहते तो यह हैं कि हम करने देते हैं, लेकिन दरअसल कुछ भी नहीं करने देना है।

शिवरतन फिर कहने लगे: आपसे बहसमें कोअी जीत नहीं सकता। आप कअी बातें सुनायेंगे, हम मूढ़की तरह सुन लेंगे, पर कुछ समझेंगे नहीं। हम तो यह समझते हैं कि आप अुपवास छोड़ दीजिये। हम सबकी खातिर छोड़ दीजिये।

बापू: तो धीरज रखो। धीरे-धीरे सब समझमें आ जायगा। यह विश्वास रखो कि अीश्वरको काम लेना होगा तो मुझे कभी नहीं मरने देगा।

शिवरतन चले गये, पर अपनी सुगंध मानो वातावरणमें छोड़ गये और बापूको और मुझे यह लगा कि वे आ गये यह बहुत अच्छा हुआ।

अुपवासका पांचवा दिन।

कर्नल मार्टिन दो मामलोंमें झूठे पड़े, यानी अुनकी धारणा गलत निकली। अुन्हें खयाल था कि अखबारोंकी लौ हुआी कतरन हमें दी जा सकती है। अुनकी यह भावना डोअिलने गलत साबित कर दी। अुन्होंने कहा था कि सिविल सर्जन और डॉक्टर गिल्डरको लेकर आअूंगा। मगर गिल्डर नहीं आये या न आ सके।

२०-८-'३२

अिन सब बातोंका विचार करके बापू कहने लगे: ये लोग अिस बार कुछ नहीं करेंगे। गिल्डरको अिनकार ही किया होगा।

मेक्सवेलको अपने लिखे हुअे पत्रका मसौदा मैंने बापूको दिखाया। बापू बोले: यह लिखनेमें कोअी सार नहीं। तुमने जो मांगा है, वह देनेको शायद वे तैयार हो जायं। पर हमारा काम अिससे नहीं चल सकता। मैंने सुपरिंटेंडेंटको अिस तरह अधिकार देनेकी बात कही है कि भारत सरकारके हुक्मको मानकर ये लोग अुसका अमल करनेकी सत्ता सुपरिंटेंडेंटको दें। लेकिन सच बात तो यह है कि अिन लोगोंको कुछ करना ही नहीं था। अेंड्रूजको तो भगा दिया होगा। दो दिन मीठी-मीठी बातें करके अुन्हें बनाया। पर अपनी कमजोरी वे लोग नहीं देख सकते।

मैंने पूछा कि मौन हमेशाकी तरह लेंगे या देरसे? यह अिसलिअे कि शायद अेंड्रूज आ जायं। अिस पर बापू बोले कि लिखकर बात करूंगा। फिर सो गये और १२-३० पर अुठे। मुझे पूछा: मैं ११ बजे बाद बोला तो नहीं? मैंने कहा: नहीं। पर अिसके पहलेसे भी आप नहीं बोले। अिस पर कहने लगे: संकल्प ११ बजेका था।

तेल मलनेकी बात कही तो अिनकार कर दिया। आज अितनी शक्ति नहीं है।

अेनीमा देकर पास खड़ा था कि कटेली साहबने बाके आनेकी खबर दी और कहा कि अुन्हें १५ मिनटके लिअे यहां लानेकी अिजाजत मिली है। मैंने कहा: ले आअिये।

१०-१५ मिनटमें बा आअीं। वही बा थीं। अुनके दिलमें दुःखका समुद्र होगा, परन्तु मुंह पर अपार शांति थी। बापू अेनीमाका पानी लेकर पटे पर सो रहे थे। अुन्होंने प्रणाम करके बापूकी छाती पर सिर रख दिया। मेरी आंखोंमें पानी आ गया, पर अुनकी आंखोंमें अेक भी

आंसू नहीं था। हंसते हुअे कहा: फिर अुपवास! मुझे तो जेलर और सुपरिंटेंडेंटने आनेके लिअे कहा, तब जीमें आअी कि अिनकार कर दूं। मगर यह सोचकर कि अिनकार नहीं करना चाहिये, मैंने अिनकार नहीं किया। यहां आकर स्नान किया और मिलनेके लिअे तैयार हुअी। सुपरिंटेंडेंटने बताया कि आपको साथ रखनेका हुक्म नहीं आया है, क्योंकि गांधी तो युरोपियन यार्डमें हैं। मगर १५ मिनटके लिअे आपको यार्डमें ले चलता हूं। मैंने कहा: तो मुझे यहां नहीं लाना चाहिये था। मैंने कब मांग की थी कि मुझे ले चलो? बापू खुश हो गये और सिर हिलाकर अपनी सम्मति प्रगट करते रहे।

बापूने दूसरी बहनोंका हाल पूछा। बाने सबका हाल सुनाया। दुर्गा और प्रेमाको कैसे साथ रखा गया, प्रेमाने कैसे 'सी' क्लास मांगा, अुन्हें किस तरह 'सी' क्लासमें ले गये और वापस 'बी' में लाये — वगैरा बातें कहीं। दूसरे दिन सबको छोड़ा तब सब भाअी-बहन मिले थे।

बाने कहा: जब हमें हुक्म दिया, तब थोड़ी देरके लिअे विचार हुआ कि अहमदाबाद जाकर हुक्मको तोड़ें। हमसे कहा गया था कि आपको रास्तेमें ही पकड़ लेंगे। तब मैंने कहा: तो लीजिये यहीं बैठे हैं, पकड़ना हो तो पकड़िये। कुछ बहनोंको यह अच्छा न लगा। अुन्हें अपने बच्चोंसे मिलना था। मैंने अुनसे कहा: मेरी भूल हुअी, मगर अब क्या किया जाय?

अमतुलकी तबीयत खराब है और दूध लेनेसे अिनकार करती है, यह बात भी कही। पहले दिन लीलावती खूब रोअी। यह सब बताता है कि बहनोंमें मेल कितना कम है। आध्यात्मिक अुत्कृष्टता प्राप्त करनेमें भी कितनी ज्यादती होती है, कितनी रुकावटें आतीं हैं?

बापूने मुलाकातके अंतमें अपने वचन लिखे: "तू बहादुर बनी रहना। १५ मिनटके लिअे न आना। अब तुझे ले जाते हों तो भले ही ले जायं। सब बहनोंको आशीर्वाद कहना। मेरी रक्षा अीश्वर करेगा।"

बाने कहा: जरूर करेगा। पर आप अब अुपवास जल्दीसे छोड़ दीजिये।

बाके जाने पर बापूने लिखा: "बाकी बहादुरीमें कमी नहीं आअी।"

मानो बाने आकर बापूके प्राणोंमें प्राण भर दिये, नये रक्तका संचार कर दिया, नअी आशा और विश्वास अुंड़ेल दिया। अैसी बहादुरीके सामने कौन हिम्मत हार सकता है? बाकी बहादुरीके लिअे द्रौपदी जैसे प्राचीन

दृष्टांत याद करने पड़ते हैं और अिन सबकी जड़में वाओी अनतिम पतिपरायणता और ब्रह्मचर्य ही है।

यह लिख रहा था कि कटेली आये और खबर दी कि बापूको अस्पतालमें ले जानेके लिअे अेम्बुलेंस आ रही है। आधे घण्टेमें सारा सामान बांधा।

"यहांका सोडा तो अेक बार पी लेने दीजिये!" यह लिखकर दिया और मैंने प्याला भरकर दिया।

अन्तमें मैंने कहा: पहले अुपवासमें वल्लभभाओीको अलग किया और दूसरेमें आप मुझे अलग कर रहे हैं।

अिस पर लिखा: "ओीश्वर सब तरहसे हमें तपा रहा है। आजके भजनमें यही चीज तो थी? 'महाकष्ट पाम्या विना'। अुदास होना ही नहीं चाहिये। जिस समय जो आये, वह सुखके साथ सह लेना चाहिये। आनेवाले क्षणका विचार ही न करना चाहिये।"

मैंने कहा: अुदासीकी बात नहीं है। मुझे यह वियोग सहन करना पड़ेगा, मगर आपकी तो कुशल ही है। जिस दिन साथ-साथ पकड़े गये, अुस दिन कहां सपनेमें भी खयाल था कि साथ रखेंगे?

अिस पर लिखा: "'आजनो ल्हावो लीजीअे रे काल कोणे दीठी छे', यह चार्वाक भी कह सकता है और भक्त भी कह सकता है।"

मुझे कल रातको 'महाकष्ट पाम्या विना कृष्ण कोने मल्या', यह याद आया। अिसका रटन मनमें चलता रहा और आज सुबह अुसे अच्छी तरह गाया। जाते-जाते बापूने अुसे याद किया, यह भी आनन्दकी ही बात है, न?

अिस प्रकार जरासी देरमें मैं अकेला हो गया। जैसे ओीश्वरकी गति समझमें नहीं आ सकती, वैसे ही सरकारकी भी नहीं आती। सरकारका यंत्र चलता रहता है। अुसका कोओी भाग अेकदम रुक जाता है और गति बदल जाती है। तब भी जो भाग अेकदम रुक जाता है, वह कुछ समय तक पहलेकी गतिके जोरसे अपने आप चलता ही रहता है। अिसके स्पष्ट चिह्नके रूपमें मैं आज बाहर सोनेका मजा लूट रहा हूं। अितना ही नहीं, बापूकी सेवाके लिअे तीन कैदी जो बाहर सोनेके लिअे आये थे, अुन्हें भी आज बाहर सोनेको मिला। बापूके लिअे आये हुअे बर्फके ढेर अभी तक पड़े हैं। शायद बापूके लिअे सुबह चार बजे कैदियोंको जगाने जो सिपाही आता है, वह भी आये!

[बापूको यरवदा जेलसे सासून अस्पताल ले गये। और महादेवभाअीका बेलगांव जेलमें तबादला कर दिया गया। सासून अस्पतालमें बापूकी तबीयत तेजीसे बिगड़ने लगी। अिक्कीस दिनके अुपवास २९ मअीको पूरे हुअे और १६ अगस्तको यह अुपवास शुरू हो गया। अिस प्रकार अिक्कीस अुपवासोंको तीन महीने भी पूरे नहीं हुअे थे कि फिर अुपवास आ गया। अिसलिअे अिस बार शरीरको बहुत ही कष्ट हुआ। अिसमें भी २४ तारीखसे पहलेके दो-तीन दिनोंकी शारीरिक वेदना तो बहुत ही विषम थी। बापूने छूटनेके बाद अपने ही लिखे हुअे अेक पत्रमें अपनी हालत अिस तरह बयान की है: "मैं तो आशा छोड़ बैठा था। २३ तारीखकी रातको जब कै हुअी, तब मुझे खयाल हुआ कि अब ज्यादा नहीं टिक सकता। मौतसे नहीं लड़ा जा सकता। २४ तारीखकी दुपहरको तो अपने पासकी चीजोंका दान भी कर दिया।"

नर्सों और सेवकोंको चीजें दे दीं और बादमें कह दिया कि अब कोअी मुझसे न बोले और मुझे पानी भी न दे। बा पासमें थीं, अुन्हें भी जानेको कह दिया। और आंखें बन्द करके रामनाम लेने लगे। बा बेचारी स्तब्ध होकर खड़ी रहीं।

अिसी समय मि० अेंड्रूज, जो तीन दिनसे बम्बअी केगवर्नरको बापूको छोड़ देनेके लिअे समझा रहे थे, अपने प्रयत्नमें सफल हुअे और बापूको छोड़नेका हुक्म लेकर तेज मोटरसे अस्पतालमें आये तथा वहांसे बापू और बाको अपने साथ लेकर पर्णकुटी गये।

तबीयत जरा अच्छी हुअी कि बापूने घोषणा की कि अगरचे सरकारने अुन्हें छोड़ दिया है, फिर भी वे अेक सालकी मियाद पूरी होने तक सीधे तौर पर सविनयभंगकी लड़ाअीमें भाग नहीं लेंगे और सारा समय मुख्यत: हरिजन-कार्यमें ही बितायेंगे। अिसके बाद अुन्होंने अैतिहासिक हरिजन-यात्रा शुरू की और अस्पृश्यता-निवारणके लिअे और अुसके सिलसिलेमें चन्दा जमा करनेके लिअे सारे देशमें भ्रमण किया। —संपादक]

परिशिष्ट

१. हिन्दूधर्मकी परीक्षा (क्रमशः)
२. दूसरा प्रायोपवेशन
३. वह अनोखा अग्निहोत्र
४. सरकारके साथ पत्रव्यवहार
५. गांधीजीके तीन वक्तव्य।

हिन्दू धर्मकी परीक्षा (क्रमशः)

१८

सुधारक शास्त्रियोंकी राय*

पंढरपुरके भगवान शास्त्री धारूलकर और अुनके साथ आये हुअे दूसरे लोगोंके साथ मित्रताभरी चर्चा करनेका लाभ मुझे मिला था। अिन सज्जनोंने मेरे सामने सफाअी दी थी कि वे व्यक्तिगत हैसियतसे मेरे पास आये हैं, किसी संस्थाके प्रतिनिधिके रूपमें नहीं। अुनका अुद्देश्य यह समझना था कि आम तौर पर अस्पृश्यताके बारेमें और खास तौर पर हरिजनोंके मंदिर-प्रवेश आन्दोलनके बारेमें मेरी स्थिति क्या है। वे सनातनी दृष्टिकोण अुपस्थित करते थे। और अुसे समझनेमें मुझे मदद देने और हो सके तो मुझसे अुसे स्वीकार करानेका भी अुनका अिरादा था।

अुनके साथ मेरी लम्बी चर्चा हुअी। सनातनी पंडितोंका दृष्टिकोण समझनेकी मेरी कोशिशमें कोअी कमी न रहे, अिसलिअे और भगवान शास्त्री धारूलकरके साथ की गअी व्यवस्थाके अनुसार शास्त्रोंके निष्णात और आम तौर पर मेरी स्थितिका समर्थन करनेवाले कुछ मित्रोंको मैंने निमंत्रण दिया था, ताकि मेरे मन पर दोनों विचारसरणियोंका असर पड़ सके।

मैं अितना कह दूं कि अुनकी दलीलों और अुनके वादविवादको मैंने बहुत ही धीरज और आदरके साथ ध्यान देकर सुना। लगभग ५० वर्षसे जो विचार मैं रखता आया हूं, अुसमें मुझे कोअी भूल दिखाअी नहीं दी। मैं जानता हूं कि भूल कितनी ही पुरानी हो, पर अिससे वह भूल मिट नहीं जाती। मैं अपनेको सत्यका नम्र अुपासक और दूसरे मनुष्योंकी तरह ही भूलका पात्र समझता हूं। अिसलिअे मेरी भूल समझमें आ जाय, तो मैं अुस भूलको माननेके लिअे हमेशा तैयार रहता हूं। मगर अिन चर्चाओंके

---

* १५वां वक्तव्य, ता० ३-१-१९३३

अन्तमें मेरा यह विश्वास और भी दृढ़ हुआ है कि हिन्दू समाजमें जिस प्रकारकी अस्पृश्यता आजकल पाली जाती है, अुसके लिअे शास्त्रोंका कोअी आधार नहीं है। अस्पृश्यताके बारेमें 'आज जैसी समझी जाती है और पाली जाती है वैसी' यह विशेषण मैं हमेशा काममें लेता हूं। अुसे पूरा महत्त्व न देनेके कारण बहुतोंने मेरे साथ बड़ा अन्याय किया है।

अिन लम्बी चर्चाओंका मेरे मन पर क्या असर पड़ा, अुसे यहां न बताते हुअे जिन पंडितों या शास्त्रियोंने आम तौर पर मेरी बातका समर्थन किया है, अुनके अस्पृश्यता विषयक शास्त्रार्थके बारेमें मैंने अुनकी जो लिखित राय ले ली है, अुसे दे देना ज्यादा ठीक होगा। वह मूल हिन्दीमें है। अुसे नीचे देता हूं:

"हिन्दू धर्मशास्त्रोंमें तीन प्रकारके 'अस्पृश्य' माने गये हैं:

१. जन्मसे अस्पृश्य माने जानेवाले लोग, यानी शूद्र पुरुष और ब्राह्मण स्त्रीसे पैदा होनेवाली संतान।

२. पांच महापातकोंके दोषवाले या शास्त्रमें निषिद्ध माने गये अमुक कृत्य करनेवाले लोग।

३. अशुद्ध दशामें रहनेवाला कोअी भी मनुष्य।

"यह बतानेवाला कोअी आधार हमारे पास नहीं है कि आज जिन जातियोंको अस्पृश्य माना जाता है, अुनमें से कोअी भी पहली श्रेणीमें आती है। अिसलिअे पहली श्रेणीके अस्पृश्यों पर या अुनके बहिष्कार पर लागू होनेवाले नियम आजकलकी किसी भी अस्पृश्य मानी जानेवाली जाति पर लागू नहीं हो सकते। पर किसी जातिको पहली श्रेणीका मान लिया जाय, तो भी शुद्ध और स्वच्छ रहन-सहनसे और शैव या वैष्णव या दूसरे अैसे किसी सम्प्रदायमें शरीक हो जानेसे वे अस्पृश्यतासे मुक्त हो सकते हैं और चारों वर्णोंके लोग आम तौर पर जो अधिकार भोगते हैं, वे सब ये भी भोग सकते हैं।

"यह स्पष्ट है कि दूसरे प्रकारकी अस्पृश्यता किसी भी संपूर्ण जाति या अेक वर्ग पर लागू नहीं हो सकती। हर जातिमें अैसे दोषवाले व्यक्ति हो सकते हैं। आजकलके 'अस्पृश्यों' की अस्पृश्यता अिस दूसरे प्रकारमें गिनाअी गअी पतित दशाके कारण नहीं और न यह बताया जा सकता है कि वे अैसे पतित माता-पिताकी संतान हैं। दूसरी श्रेणीमें बताये हुअे महापातकोंके दोषवाले लोग अुचित प्रायश्चित्त करें, तो पूरी तरह शुद्ध हो सकते हैं। जो पतित माता-पिता अिस तरह शुद्ध न हुअे हों,

अुनकी सन्तानको अस्पृश्य नहीं माना जा सकता। अैसी संतानको अस्पृश्य माननेवाले कुछ स्मृतिकार हैं, किन्तु वे अिनकी शुद्धिके लिअे प्रायश्चित्तकी कुछ छोटी-छोटी विधियां बताते हैं। जिन लोगोंने अैसे आचरणका दोष किया हो, जिससे वे अस्पृश्य बन जाते हों, वे अुन आचरणोंको छोड़ दें तो अस्पृश्यताके दोषसे मुक्त हो सकते हैं।

"जब मनुष्य अशुद्ध दशामें हो, अुस समयकी तीसरे प्रकारकी अस्पृश्यता सब जातियोंमें होती है, भले वे अस्पृश्य मानी जाती हों या न मानी जाती हों। चमार, भंगी और अैसे दूसरे लोगोंको सिर्फ अुनके धंधेके कारण हमेशा अस्पृश्य माननेके लिअे शास्त्रोंमें कोअी आधार नहीं है। अुनकी अस्पृश्यता तो अुनके कामसे होनेवाली बाहरी अस्वच्छताके कारण है। यह तीसरे प्रकारकी अस्पृश्यता स्नान कर लेने और कपड़े बदल डालनेसे मिट जाती है।

"अिसलिअे यह जरूरी है कि चारों वर्णोंको मिलनेवाले सारे हक — जैसे मंदिर-प्रवेश, पाठशालाओंमें जाना, सार्वजनिक स्थानोंमें जाना या कुअें, घाट, तालाब और नदी वगैराका अुपयोग करना — आजकलके कथित अस्पृश्योंको दूसरे लोगोंके बराबर ही मिलने चाहियें। अैसे आम हकोंसे अुन्हें वंचित रखना गलत है। यह धर्मशास्त्रोंके वचनोंसे, अुनके मूलभूत सिद्धान्तोंसे और अुनके भावसे सिद्ध किया जा सकता है।

(सही) स्वामी केवलानंद (नारायण शास्त्री मराठे)
लक्ष्मण शास्त्री जोशी
भगवानदास
आनंदशंकर ध्रुव
अिन्दिरारमण शास्त्री
केशव लक्ष्मण दफ्तरी
अेन० अेच० पुरन्दरे।"

अिन हस्ताक्षर करनेवालोंका लोगोंको परिचय देनेकी जरा भी जरूरत नहीं। लेकिन मैं अितना कह सकता हूं कि जो अपनेको सनातनी कहते हैं, अुनके बराबर ही सनातन धर्मको पेश करनेका अिन लोगोंका दावा है।

अिसके सिवाय महामहोपाध्याय प्रमथनाथ तर्कभूषण, पंडित श्रीधर शास्त्री पाठक, श्रीकृष्ण धनसुख मिश्र और चिन्तामणराव वैद्यकी कीमती रायें भी मेरी बातके समर्थनमें मुझे मिली हैं। अिन सबके छपने ही मैं अुन्हें तुरंत लोगोंके सामने रखनेकी आशा रखता हूं।

अिन पंडितोंकी रायका अर्थ लोकभाषामें कहें तो यह होता है कि किसी भी मनुष्य पर स्थायी अस्पृश्यताकी मुहर नहीं लग सकती। यह स्पष्ट है कि आज किसी भी वर्गके लिअे जन्मसे अस्पृश्यता जैसी चीज नहीं हो सकती। और अस्पृश्यताके दोषके पात्र होनेवाले व्यक्तियोंको समाजमें से ढूंढ़ निकालना लगभग असंभव है। पांच महापातकोंके दोषवाले तो जरूर होंगे। पर सारी जातियोंमें कोअी-कोअी लोग अैसे पापवाले हो सकते हैं। आजकल समाज अुनकी तरफ ध्यान नहीं देता। दूसरी श्रेणीमें जो निषिद्ध आचरण गिनाये गये हैं, वे मुर्दार मांस और गोमांस खानेके बारेमें हैं। आजकल अस्पृश्य मानी जानेवाली जातियोंमें कुछ लोग अैसा मांसभक्षण करनेवाले हैं। पर सवर्ण हिन्दू अच्छी तरह कोशिश करें, तो यह चीज अुनसे आसानीसे छुड़वाअी जा सकती है। आज तो गोमांस या मुर्दार मांस छोड़ देनेके लिअे जो प्रोत्साहन चाहिये, अुसीका अभाव है।

तीसरी श्रेणीमें प्रसंगोपात्त हुअी अशुद्धिका वर्णन है। अुसमें कोअी निन्दनीय बात नहीं। अैसी अशुद्धि तो खास मौकों पर सभीके लिअे अनिवार्य होती है। अुन मौकोंके जाते ही यह अशुद्धि मिट जाती है।

अिन हस्ताक्षर करनेवालोंने शास्त्रोंका सही अर्थ किया हो, तो भंगियों, चमारों और अैसे दूसरे लोगोंकी स्थायी अस्पृश्योंमें गिनती करके हम बहुत वर्षोंसे अुनके साथ बड़ा अन्याय करते रहे हैं। अुनके धंधे दूसरे धंधोंकी तरह ही अिज्जतवाले हैं। और यह तो हम मानते ही हैं कि अैसे दूसरे धंधोंसे, जिन पर हम अस्पृश्यताकी मुहर नहीं लगाते, ये धंधे समाजकी हस्तीके लिअे ज्यादा अनिवार्य हैं।

१९

सनातनियोंसे*

यह अपील मैं आपसे अेक सनातनी बंधुकी हैसियतसे कर रहा हूं। यद्यपि आप खुद अपने विरुद्ध होकर मेरा अिनकार करनेका प्रयत्न कर रहे हैं। आपमें से कुछ लोग मुझे खूब गालियां दे रहे हैं और मेरी मानहानि करनेवाले आक्षेप मुझ पर लगा रहे हैं, यही मेरे लिअे तो आपके विकृत प्रेमकी निशानी है। मेरी स्थिति अेक पत्नीके जैसी है, जिसके बहुतसे पति अुसे अस्वीकार करनेकी कोशिश करते हैं, क्योंकि वह गरीब स्त्री बेचारी अुन सब पतिदेवोंको समान सन्तोष नहीं दे सकती। मगर अिस पत्नीका अिनकार न हो सकनेके कारण (क्योंकि सब पति जानते हैं कि अिस स्वयंसेवक गुलामने अुन सबकी सेवा करनेका पूरा प्रयत्न तो किया ही है) वे अपनी सारी कोपाग्नि अुस पर बरसाते हैं और जितनी गालियां दे सकते हैं अुसे देते हैं। यह वफादार पत्नी पक्की नमकहलाल है, अिसलिअे अिस तूफानकी आंधी अपने परसे गुजर जाने देती है। क्योंकि वह तो जानती है कि अुस पर लगाये गये सारे आक्षेप बिलकुल गलत हैं। आंधी शांत हो जानेके बाद वह पत्नी सब पतियोंको बहुत प्रिय बन जाती है। अुन पतियोंको अपनी कठोरता पर हंसी आती है और समझमें आ जाता है कि अिस अटूट सब्रवाली पत्नीने अपना सर्वस्व अुनके अर्पण कर रखा था। मैं भविष्यवाणी करनेका साहस करता हूं कि मेरे बारेमें भी यही होनेवाला है।

गीतामें, जो सनातनी ग्रंथ है, अिस विषय पर बड़े सचोट श्लोक हैं। आप सबको अैसा लगता है कि मैंने आपका बिगाड़ किया है, और यह चीज मनमें घोटते रहनेसे आप अिस समय क्रोधके आवेशमें आ गये हैं। यह श्लोक देखिये :

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

क्रोधसे मूढ़ता पैदा होती है। मूढ़तासे स्मृति नष्ट हो जाती है और स्मृतिनाशसे ज्ञानका नाश हो जाता है। और जिसका ज्ञान नष्ट हो गया, वह मरेके समान है।

---

* १६वां वक्तव्य, ता० ४-१-१९३३

अपने क्रोधावेशमें आप अितना भी नहीं जानते कि आप क्या कर रहे हैं। जिस अुद्देश्यसे प्रेरित होकर मैं यह सब कर रहा हूं, अुस बारेमें आप जानकारी प्राप्त करनेकी भी परवाह नहीं करते।

सनातन धर्मका अर्थ

मैं आपके सामने कुछ हकीकतें रखूंगा। जिस व्याख्याको लोग समझ सकें अुसके अनुसार सनातन धर्म अैसा सदाचार है, जिसका लोग पालन कर सकें। अिसमें दुराचार और बुरी आदतोंका निषेध है, फिर भले वे कितनी ही प्रचलित हों। धर्म वह है, जो धारण करता है। दुराचार और बुरी आदतें धारण नहीं कर सकतीं, अिसलिअे वे दोनों कभी धर्म नहीं हो सकते। सारे मुद्दे तटस्थ भावसे लोगोंके सामने रख दिये जायं। अुसके बाद वे अैसा मार्ग पसन्द करें, जो तत्त्वतः अनिष्ट न हो, तो क्या यह सनातन धर्म नहीं? जो सिद्धान्त और सदाचारके नियम सनातन धर्मके नामसे पहचाने जाते हैं, क्या अुनकी अिसी तरह वृद्धि नहीं होती रही है? सनातन धर्मका सदा विकास होते रहनेके लिअे क्या यह क्रम अनिवार्य नहीं?

यहां तक मैं अपनी बात आपको समझा सका होअूं, तो आप अितना जान लीजिये कि मैं जो कुछ कर रहा हूं, अुसमें जो मार्ग मुझे अच्छा लगता है अुस मार्ग पर लोग मेरे साथ कहां तक आ सकेंगे, अिसे खोज निकालनेसे ज्यादा और कुछ नहीं है। अिसमें कुछ पंडित भी, जिन्होंने शास्त्रोंके मूल ग्रंथोंका अध्ययन किया है, मेरे साथ हैं। वे कहते हैं कि अुनके अर्थके अनुसार मेरे मार्गके लिअे शास्त्रोंका आधार है। किन्तु आप यह आपत्ति करते हैं कि वे शास्त्रोंका गलत अर्थ करते हैं। ठीक, तो फिर ये दो अलग-अलग अर्थ हम लोगोंके सामने रखें और अुनसे पूछें कि अुन्हें कौनसा अर्थ मंजूर है। यदि वे मेरा अर्थ स्वीकार करें, तो वह सनातन धर्म कहलायेगा या नहीं? मैं तो कहता हूं कि आप अिसके बाद भी मेरा अर्थ मंजूर न कीजिये। आप अपने अर्थ पर कायम रहिये। पर अैसा करेंगे तो आप अुसे सनातन धर्म नहीं कह सकेंगे। आप तो कहते हैं कि आप जो अर्थ करते हैं वही सनातन धर्म है, क्योंकि आप यह मानकर चलते हैं कि देहातियोंका बड़ा बहुमत आपका अर्थ स्वीकार करेगा। आप मेरा सनातनी होनेका दावा नहीं मानते, क्योंकि आप मानते हैं कि लोगोंके सामने अुसे रखा जाय, तो लोग अुसे मंजूर नहीं करेंगे। लेकिन सनातनी होनेका दावा मैं कोअी बेभान स्थितिमें नहीं करता। मैं करोड़ों लोगोंके बीच वर्षोंसे भटकता रहा हूं। अुनके सामने राजनैतिक मनुष्यके

रूपमें नहीं, बल्कि अेक धर्मपरायण पुरुषके रूपमें गया हूं, और अुन्होंने भी मुझे धर्मपरायण पुरुषके रूपमें ही स्वीकार किया है। आज आप अितने आवेशके साथ जो मेरा अिनकार कर रहे हैं, यह बात ही साबित करती है कि आपने स्वयं मुझे अब तक राजनैतिक मनुष्य नहीं, बल्कि धार्मिक मनुष्य माना था। आप लोग अितना भी नहीं देख सके कि राजनैतिक मनुष्य तो मुझे कुछ समझते ही नहीं? वे तो मुझे अपने काममें दखल देनेवाला और अव्यावहारिक सपने देखनेवाला मानते हैं। हां, धार्मिक सभाओंमें मेरा दिलसे ही स्वागत किया गया है। १९१५में जब मुझे लगभग अनजान रहनेका सौभाग्य प्राप्त था, तब भी यही होता था।

मन्दिर जानेवाले अिसका निर्णय करें

अगर आप शांतिसे परिस्थितिका अध्ययन करेंगे, तो आप देखेंगे कि गुरुवायुरमें या और भी किसी जगह में अपने दावेकी परीक्षा करनेके सिवाय और कुछ नहीं करता। अिसमें आपके दावेकी परीक्षा भी अपने आप हो जाती है। सनातन धर्मके मेरे अर्थके अनुसार मुझे अिस निर्णय पर पहुंचना पड़ा है कि हिन्दू लोगोंके बहुत बड़े भागको अछूत मानने और दूसरे अनेक प्रतिबन्धोंके साथ-साथ मन्दिर-प्रवेशका प्रतिबन्ध अुन पर लगानेमें सवर्ण हिन्दुओंने बड़ी भूल की है। आप कहते हैं कि आपका सनातन धर्म ही आपको मजबूर करता है कि अिन हिन्दुओंको अछूत माना जाय और अिसलिअे जिस ढंगसे आप मन्दिरमें जाते हैं अुस ढंगसे अुन्हें किसी भी हालतमें मन्दिरमें जानेके लिअे अयोग्य समझा जाय। मैं कहता हूं कि सनातन धर्मके अिन दो अर्थोंमें न्याय करनेका काम मन्दिरोंमें जानेवालोंको सौंप दीजिये। पर जब अितनी सीधी-सादी बात मैं पेश करता हूं, तो आप क्रोधसे अुबल अुठते हैं। आपकी यह बात अुचित या साधारण समझदारीकी अथवा सहिष्णुताकी नहीं मानी जा सकती।

मुझे विश्वास है कि अहिन्दुओंको जो हक देनेसे आपने अिनकार नहीं किया, अुतना हक तो आप मुझे जरूर देंगे। यानी जहां तक मैं अनुचित, अनीतिमय या शंकास्पद ढंग अख्तियार न करूं, वहां तक मैं अपनी रायका प्रचार करता रहूं। मेरे अुपवासको आप अेक तरहका बलात्कार कहते हैं। केवल अुपवासको बलात्कार बताना सनातनियोंको शोभा नहीं देता, क्योंकि किसी भी धर्मके अितिहासके पन्ने अुलट कर देखेंगे, तो धर्म पर संकट आनेके समय अुपवास करनेके अनेक अुदाहरण आपको मिल जायेंगे। मेरे अिस कथनके समर्थनमें अैसे सुविख्यात अुदाहरण देकर मैं आपकी बुद्धिका अपमान नहीं करूंगा। फिलहाल तो अुपवासकी बात भी बन्द है।

मन्दिर-प्रवेश कानूनके आलोचक

डॉ० सुब्बारायन जो सादा कानून पेश करना चाहते हैं, अुसके विरुद्ध आपने बड़ा शोरगुल मचाया है और यह नारा शुरू कर दिया है कि 'धर्म खतरेमें है।' पर अिस कानूनके मसौदेका आप अच्छी तरह अध्ययन करेंगे, तो देखेंगे कि अुसमें संबन्धित लोगोंकी अिच्छाको जान लेने और अुसे अमलमें लानेके प्रयत्नके सिवाय और कुछ नहीं है। सनातनियोंके कहनेसे ही ब्रिटिश अदालतें अिसमें न पड़ी होतीं, आजके जैसी मिलीजुली धारासभायें हिन्दू धाराशास्त्रियोंके कहनेसे ही अेक धार्मिक स्वरूपका कानून पास न करतीं, तो यह कानून पेश करनेकी कोअी जरूरत नहीं थी। अिस प्रकार आप देखेंगे कि यह कानून आजकी परिस्थिति द्वारा पैदा की हुअी अेक रुकावट दूर करना चाहता है। हिन्दू धर्ममें नये सुधार करवाना अुसका हेतु नहीं है। आज जैसा अंग्रेजी कानून है, अुसके अनुसार तो सिर्फ अेक आदमी भी बड़े जनसमुदायकी अिच्छाको कुचल सकता है। दस हजारमें से नौ हजार नौ सौ निन्यानवेका मत हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें हो, तो भी अेक आदमी अुसमें बाधा डाल सकता है। आज आपको यह चीज अनुकूल लगती है, लेकिन आप अिसका शांतिसे विचार करेंगे तो जरूर अिस नतीजे पर पहुंचेंगे कि आपके लिअे और मेरे लिअे भी यह परिस्थिति बड़ी खतरनाक है। यह अैसी चीज है जो धार्मिक जीवनको मृतप्राय बना सकती है। सनातन धर्म या यों कहिये कि सब धर्मोंमें न्यायकी पूरी गुंजाअिश होनी चाहिये। मेरा खयाल है कि आप कपटका खेल नहीं चाहते। पर अभी जो कानून मौजूद है, अुसे न बदला गया तो यही होगा।

न्यायवृत्तिकी कसौटी

आपमें कुछ भी न्यायवृत्ति हो, तो अुसे दिखानेके लिअे अेक और कसौटी मैं बताता हूं। आप अिससे अिनकार नहीं करेंगे कि बहुमतमें न सही, पर काफी संख्यामें अैसे प्रतिष्ठित हिन्दू हैं, जो हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशको हिन्दूधर्मके साथ सुसंगत मानते हैं। न्यायवृत्तिकी दृष्टिसे देखते हुअे मैंने अेक, जिसमें किसी संशोधनकी गुंजाअिश नहीं, अैसा अुपाय सुझाया है। अुसमें सारे पूर्वग्रह और तमाम विधिनिषेध कायम रहते हैं। गुरुवायुरके ही मन्दिरका विचार करें — और मेरा अुपाय अभी तो गुरुवायुरके मन्दिर तक ही सीमित है — तो वह थोड़ेसे फेर-बदलके साथ प्रचलित प्रणालीके अनुसार है। अिस मन्दिरमें वर्षमें पूरे अेक दिन दूसरे हिन्दुओंके साथ बिना किसी रोकटोकके हरिजनोंको परम्परासे जाने दिया जाता है। मेरा सुझाव यह है कि अुन्हें हर रोज अेक

निश्चित समय पर मंदिरमें जाने दिया जाय। अुक्त प्रणालीको ध्यानमें रखते हुअे मेरा यह सुझाव थोड़ा भी असाधारण या अधार्मिक नहीं है। आप कहेंगे कि अेकादशीके दिन तो सब जातियोंके लोग बिना किसी प्रतिबंधके वहां अिकट्ठे होते हैं और अुसके बाद मन्दिरको शुद्ध किया जाता है। यद्यपि अिस तरह मन्दिरको शुद्ध करनेका विचार मुझे खटकता है, फिर भी अैसी शुद्धिसे विरोधियोंको संतोष होता हो तो भले ही रोज मन्दिरकी शुद्धि की जाय।

सनातनियोंकी तरफसे मुझे मिलनेवाले बहुतसे पत्रोंमें यह बताया जाता है कि सनातनी जिस अस्पृश्यताका प्रतिपादन करते हैं, अुसमें जरा भी तिरस्कारकी भावना नहीं है। ये पत्रलेखक कहते हैं कि यद्यपि हरिजन भी अीश्वरकी ही सन्तान हैं और भगवानकी नजरमें दूसरे सब लोगोंकी तरह ही हैं, पर अुच्च नैतिक कारणोंसे धर्म अुन्हें अलग रखनेके लिअे कहता है; हां, हमें अिन्हें प्रेमके साथ अलग रखना चाहिये, तिरस्कारसे नहीं। अिसलिअे नागरिक हक तो अुन्हें पूरे-पूरे मिलने ही चाहियें। हम अिस दावेकी परीक्षा वर्तमान स्थितिके प्रकाशमें करेंगे।

(१) कौन अस्पृश्य माना जाता है और किस लिअे, आपने अिसकी जांच की है?

(२) अेक बड़ी मार्मिक और मेरी रायमें बड़ी निर्दय व्यवस्थासे अुन्हें जमीनसे वंचित रखा जाता है। सो किस तरह, यह आप जानते हैं? किसीके पास जमीन हो तो भी दूसरे सवर्ण हिन्दू जमीनका जैसा अुपयोग कर सकते हैं, वैसा अुपयोग हरिजन नहीं कर सकते।

(३) सार्वजनिक अुपयोगकी बहुतसी सुविधाओंका अुपभोग, जब कि दूसरे सब लोग कर सकते हैं, हरिजन नहीं कर सकते। आपने अुनके लिअे ये सब सुविधायें अलग नहीं दीं। हरिजन प्यासे मर जायं, तो भी अुन्हें बूंद भर पानी देनेकी व्यवस्था आपने नहीं की।

(४) जिन सवारियोंको आप काममें ले सकते हैं, वे सब अुनके लिअे अलभ्य होती हैं।

(५) अुन्हें डॉक्टरी और धार्मिक मदद भी नहीं दी जाती।

ये सब अगर आपके हरिजनोंके प्रति प्रेमके सुफल हों, तो क्या आप अिस बातमें मुझसे सहमत नहीं होंगे कि अिस प्रेमसे तो तिरस्कार कहीं अच्छा है? अूपर मैंने जो हालत बयान की है, अुससे ज्यादा बुरी हालतकी मैं कल्पना नहीं कर सकता। मैं आपसे कहता हूं कि दुनियामें किसी भी जगह अैसी स्थिति नहीं है, जैसी हमारे यहां है। और अिसमें भी भद्दी बात तो यह है कि यह सब हम धर्मके नाम पर करते हैं।

मैं अपनी अन्तरात्माकी वेदनासे निकलनेवाली यह आह आप तक पहुंचा रहा हूं। अिस वेदना और अिस शर्ममें शरीक होने और मुझे सहयोग देनेकी मैं आपसे प्रार्थना करता हूं। सनातन धर्म फिरसे प्राणवान हो और करोड़ों लोग अपने जीवनमें अुसे जीता-जागता बनायें, अिसके सिवाय और कोअी अुद्देश्य मुझे पूरा नहीं करना है। आजकल तो हम अिस धर्मसे अिनकार करते दिखाअी देते हैं। आपमें जागृति आअी है, अिससे मुझे आनंद होता है। किन्तु अब आपको काम करनेमें लग जाना चाहिये और मेरे साथ बिलकुल व्यर्थके झगड़े करनेमें अपना समय बरबाद न करके हिन्दू धर्ममें कहां-कहां बुराअियां घुस गअी हैं, यह निश्चय करना और अुन बुराअियोंको दूर करनेके लिअे प्रचंड प्रयत्न शुरू करना चाहिये। मेरे साथके आपके झगड़ेको मैं व्यर्थका अिसलिअे कहता हूं कि अिस झगड़ेमें मैं शरीक नहीं होअूंगा। अंग्रेजीमें अेक कहावत है कि झगड़ा करनेके लिअे भी दो आदमियोंकी जरूरत होती है। वह दूसरा आदमी जुटानेमें मैं आपकी मदद नहीं करूंगा।

२०

सुझाये हुअे समझौतेके समर्थनमें

[५ जनवरीको अे० पी० आअी०के सम्वाददाताको दी हुअी मुलाकातमें गुरुवायुरके मन्दिरके संबन्धमें जो समझौता सुझाया था, अुससे हरिजनों और सवर्णोंके बीचका भेदभाव स्थायी हो जायगा, अिस टीकाके अुत्तरमें गांधीजीने नीचे लिखी बातें कहीं:]

प्रश्न: आपके समझौतेसे अस्पृश्यता क्या अेक हद तक स्थायी नहीं बन जाती?

बापू: मैं अैसा नहीं मानता। मेरी सूचनामें अितना ही है कि मन्दिरमें जानेवालोंके जिस खास वर्गको अभी तक अैसा महसूस होता है कि मंदिरमें जाते समय हरिजनोंके साथ मिल जानेमें वे कोअी बुरा काम करते हैं, अुसके पूर्वग्रहका आदर किया जाय। सुधारकी यह प्रवृत्ति जबरदस्तीकी नहीं, बल्कि हृदय-परिवर्तनकी होनेके कारण मैंने अपना प्रस्ताव अिस अिरादेसे पेश किया है कि अन्तरात्माके विरोधवाला अेक भी आदमी हो तो अुसके विधिनिषेधका मान रखा जाय। तत्त्वतः जो मामले धार्मिक हैं, अुनमें जहां तक हो सके

बहुमतकी अिच्छा पर अमल नहीं करना चाहिये। मेरे समझौतेसे अैसे विरोधवालोंको दिनके अेक खास भागमें अुसी तरह पूजा करनेकी आजादी रहती है, जैसे अिस सुधारके होनेसे पहले वे करते थे।

मेरी सूचनाका आधार बेशक यह मान्यता है कि गुरुवायुरके मंदिरमें (अभी तो मेरा समझौता गुरुवायुर मंदिरके लिअे ही है) जानेवाला सवर्ण हिन्दुओंका बहुत बड़ा बहुमत हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें है। अगर समझौता मान लिया जाय और अुस पर अमल होने पर मेरी धारणा गलत निकले, तो मैं मान लूंगा कि अुसके कारण भेदभाव स्थायी बनता है। मगर सवर्णोंका बहुमत हरिजनोंके मंदिर-प्रवेशके पक्षमें हो, तो मेरा समझौता हरिजनोंके और साथ ही मंदिरमें जानेवाले सवर्णोंके बहुमतके अुदार संयमकी निशानी होगा। यदि यह मालूम पड़े कि सुधारक अल्पमतमें हैं, तो अिस प्रश्न पर विचार करना होगा कि अैसे समझौतेका लाभ हरिजनोंको अुठाना चाहिये या नहीं।

अंतमें तो सभी समझौतोंका सार यह होता है कि अन्तिम विचार रखनेवाले दो पक्षोंके बीच अेक भी पक्षके सिद्धांतको कुर्बान किये बिना आधे रास्तेमें मेलजोल किया जाय। हरिजनों और सुधारकोंका सिद्धांत तो यह है कि वे दोनों समानताके हकसे मंदिरमें जाकर पूजा करें। किस समय पूजा की जाय, यह कोअी महत्त्वका प्रश्न नहीं है। विरोध करनेवालोंका सिद्धांत यह है कि अपनी धार्मिक भावनाको आघात पहुंचाये बिना वे हरिजनोंके साथ पूजा नहीं कर सकते। मेरा समझौता अिस आपत्तिका पूरी तरह आदर करता है, लेकिन अुनकी आपत्तिके साथ सुसंगत रहकर अुनके पूजा करनेके समयकी मर्यादा बांधता है।

२१

समझौतेका विशेष स्पष्टीकरण*

मैं देख रहा हूं कि मंदिर-प्रवेशके संबंधमें मैंने जो समझौता सुझाया है, अुसके बारेमें बड़ी गलतफहमी फैल रही है और हरिजनोंमें भी अुसके कारण असंतोष है। अुनमें असंतोष होना बहुत स्वाभाविक है। जहां अितना ज्यादा भेदभाव फैला हुआ हो, वहां अुसकी गन्ध आये अैसी कोअी भी चीज फौरन ही शककी नजरसे देखी जाती है और अुसकी निन्दा की जाती है।

परंतु अपनी सूचनाके बारेमें मुझे पूरा विश्वास है और अिसके विरुद्ध अितनी आलोचनाअें होने पर भी मैं अुस सूचनाको वापस लेनेका कोअी कारण नहीं देखता। मेरी सूचनाके अनुसार कोअी भी मंदिर हरिजनोंके लिअे खोला जाय, तो अुस सूचना पर अमल करना व्यवहारमें बहुत आसान मालूम होगा। अितना ही नहीं, पर जिन हरिजनोंको अिस समय असमानताकी शंका होती है और यह लगता है कि हम सनातनी रायके सामने झुक गये, अुन्हें मालूम होगा कि सनातनियोंकी रायका पूरी तरह आदर करते हुअे भी अपने सिद्धांतके मामलेमें हम कुछ भी नहीं छोड़ते। हमारा सिद्धांत तो यह है कि हरिजनोंको मंदिरमें ले जाना हो, तो बाकीके हिन्दुओंके साथ पूरी समानताकी शर्त पर ले जाना चाहिये।

सुझावकी तहमें अहिंसा है

किन्तु धर्मके मामलेमें कोअी जबरदस्ती नहीं हो सकती। अिसलिअे जो अपने पूर्वग्रहोंको धार्मिक विश्वासके बराबर महत्त्व देते हैं, अुनके पूर्वग्रहोंका मुख्य सिद्धांतके साथ सुसंगत रहकर जितना आदर किया जा सकता हो अुतना करना चाहिये। आपत्ति अुठानेवालोंको जो धार्मिक आश्वासन पानेका हक है, अुस आश्वासनसे वे वंचित न रहें, अैसी कोअी योजना ढूंढ़ निकालनेकी जरूरत थी। यह तभी हो सकता है, जब अुनके लिअे कोअी खास अैसा समय नियत कर दिया जाय, जब वे हरिजनोंसे अलग रहकर दर्शन कर सकें।

यह चीज सुधारकोंको कितनी ही अनुचित मालूम हो, मुझे भी मालूम होती है, तो भी अितना तो निश्चित है कि लोगोंमें अैसी भावना मौजूद है कि

* १७वां वक्तव्य, ता० ११-१-१९३३

जिस मंदिरमें मूर्तिकी प्रतिष्ठा की गअी हो, वहां अुनके खयालसे निषिद्ध वर्गके लोग आयें, तो मूर्तिका प्रभाव बिलकुल नष्ट न हो जाय तो भी कम अवश्य हो जाता है। जो लोग अैसी भावना रखते हैं, अुनकी भावनाको छुड़वा देनेका काम कानून या हथियारके जोरसे करना संभव नहीं। यह भावना तो अुनकी बुद्धिको अपील करके निर्मूल की जा सकती है, या तब मिट सकती है जब वे लोग अनुभवसे यह देख लें कि जो अुस सनातनी विश्वासके विरुद्ध बरताव करते हैं, अुनके अैसा करने पर भी अुन पर देवताका कोप नहीं होता। मुझे यकीन है कि हिन्दू समाजमें और धर्ममें समान दर्जा प्राप्त करनकी अपनी अुचित मांग मंजूर करानेकी कोशिश करनेवाले हरिजन किसी मनुष्यकी भावनाको ठेस पहुंचाना तो हरगिज नहीं चाहेंगे।

यह सबकी परीक्षाका समय है

हमको यह मौका मानो भगवानने दिया है। यह सवर्ण हिन्दुओंकी परीक्षा है। बम्बअीमें पिछले सितम्बरमें हिन्दू प्रतिनिधियोंकी सभामें जो प्रस्ताव पास किया गया था, क्या अुसे सवर्ण हिन्दुओंकी आम जनताका समर्थन है? या नहीं? अगर समर्थन हो तो मन्दिरके द्वार हरिजनोंके लिअे स्वेच्छासे खुल जाने चाहियें। मंदिरोंमें दर्शन करने जानेवालोंका बहुमत अिस तरह मंदिर खोल देनेके लिअे अपनी अिच्छा असंदिग्ध शब्दोंमें व्यक्त करे, तो अुस प्रस्तावका पूरी तरह पालन हुआ माना जायगा। मानव व्यवहारमें सौ फी सदी सम्मति पाना लगभग असंभव है। और धार्मिक मामलोंमें तो हमें विरोधी रायका आदर करना ही चाहिये। मेरी सूचनामें यही चीज है; अिससे ज्यादा अिसमें कुछ नहीं। अुसमें सबकी कड़ी परीक्षा है।

आपत्ति अुठानेवाले, जो अल्पमतमें हैं, अगर अपने विश्वासमें सच्चे हों और विरोधियोंके प्रति सहिष्णु हों, तो अपने लिअे सुविधा कर लेनेके बाद वे अपने विरोधियोंको भी अैसी ही सुविधा देना पसंद करेंगे। अिसी तरह सुधारक भी सच्चे हों और अपने विरोधियोंके प्रति सहनशील हों, तो अुनके विरोधी जिस ढंगसे पूजा करते रहे हैं, अुन्हें अुसी तरह पूजा कर सकनेकी सुविधा देंगे। और हरिजन भी सुधारकोंके साथ समान भावसे अपना हक भोग सकेंगे, अिसलिअे अुन्हें कोअी शिकायत करनेका कारण नहीं रहेगा और फिर तो वे दूसरों पर जबरदस्ती करनेकी अिच्छा नहीं रखेंगे।

मतगणनाका अुद्देश्य

मेरे सुझावका आधार यह विश्वास है कि मतगणना की जाय, तो मंदिर जानेवालोंका बहुमत हरिजनोंके मंदिर-प्रवेशके पक्षमें मत देगा। यानी वे सबके

लिअे निश्चित किये हुअे मामूली समय पर ही मन्दिरमें दर्शन करने जायंगे और आपत्ति अुठानेवालोंके लिअे तय किये गये अलग समय पर मन्दिर नहीं जायंगे। व्यवहारमें यह मालूम हो जाय कि सुधारकोंकी संख्या नहींके बराबर है, तो स्वाभाविक रूपमें ही वे अैसे मंदिरोंमें जाना बंद कर देंगे। दुर्भाग्यसे अधिकांश मंदिरोंमें अैसा अल्पमत पाया गया, तो अुन्हें सचमुच अिस नतीजे पर पहुंचना पड़ेगा कि बम्बअीके प्रस्तावको सवर्ण हिन्दुओंका समर्थन नहीं है।

लेकिन हरिजन मित्र तो कहते हैं: "हमारे जानेके बाद मन्दिरोंके शुद्ध किये जानेके विरुद्ध आपने जो अितना कहा और लिखा है, अुसका क्या हुआ?" अलबत्ता, मैं पहलेकी तरह ही शुद्धिके विरुद्ध हूं। हरिजनोंके जानेके बाद अगर मंदिरोंको शुद्ध करनेका नियम बन जाय, तो यही मानना चाहिये कि अस्पृश्यता नहीं मिटी है। पर मेरे सुझावमें जिस शुद्धिकी बात है, वह तो आपत्ति अुठानेवालोंकी भावनाके साथ हरिजनोंकी और सुधारकोंके बहुमतकी तरफसे मिलनेवाली अेक रियायत है। अिस प्रकार यहां मंदिरोंकी शुद्धि बिलकुल दूसरा ही रूप ले लेती है। हमारे मित्रोंकी भावनाका आदर करनेके लिअे क्या हम कितनी ही बातें नहीं करते? और कितनी अधिक बातें सह नहीं लेते?

हृदय-परिवर्तन

हरिजनोंके सामने, सारे हिन्दू समाजके सामने सवाल तो यह है कि कुल मिलाकर सवर्ण हिन्दू समाजका हृदय-परिवर्तन हुआ है या नहीं? और **आज जैसी मौजूद है वैसी** अस्पृश्यताको मिटानेके लिअे वे तैयार हैं या नहीं? सवर्ण हिन्दुओंका बहुमत अस्पृश्यताको मिटानेकी रायका हो, तो सुधारकों और साथ ही हरिजनों — दोनोंका यह कर्तव्य हो जाता है कि यदि अल्पमत सुधारकोंके साथ सहमत नहीं हो सकता हो और अुसका मतभेद गहरी धार्मिक भावना पर दारमदार रखता हो, तो अुन्हें जहां तक हो सके सुविधा कर दी जाय। परस्पर सहिष्णुता रखना मानवकुलका नियम है और मेरे सुझावमें अिस नियमका दृढ़तासे पालन करनेकी बात है।

मैं अिस अेक वाक्य पर खास जोर देना चाहता हूं कि अभीकी लड़ाअी हिन्दू समाजमें **आज जैसी मौजूद है वैसी** अस्पृश्यताके विरुद्ध है; किसी न किसी रूपमें सारी मनुष्यजातिमें जो अस्पृश्यता पाअी जाती है, अुसके विरुद्ध नहीं है। अैसी अस्पृश्यता किसी मनुष्यके प्रति नहीं होती, बल्कि

अुसके कामके प्रति या अुसके व्यवहारके प्रति होती है। सफाअी या स्वास्थ्य-रक्षाके या अैसे और दूसरे नियमोंसे पूरी तरह मुक्त होनेका यहां आशय नहीं है। अैसे नियमोंका पालन तो आज भी मंदिरमें जानेवाले हर व्यक्तिके लिअे आवश्यक है। मेरा आग्रह तो यह है कि अिन नियमोंका पालन करनेवाले हर हरिजनको औरोंके साथ समानताके नाते हर सार्वजनिक मंदिरमें जानेका हक होना चाहिये।

२२

मंदिर-प्रवेशके प्रश्न पर प्रकाश

[मद्रासके 'जस्टिस' पत्र, जो अब बंद हो गया है, के संपादकको गांधीजीने नीचेका पत्र लिखा था। मंदिर-प्रवेशके प्रश्न पर, खास तौर पर गांधीजीके सुझाये हुअे समझौते पर, वह बहुत अच्छा प्रकाश डालता है। अिसलिअे सारा पत्र यहां दिया जाता है।]

आपका पत्र साथमें भेजी हुअी तीन कतरनोंके साथ मुझे मिल गया। अुस-अुस लेखकी तारीखके क्रमसे मैं अुनका जवाब दे रहा हूं। २८ दिसम्बरके लेखका कोअी जवाब देनेकी जरूरत नहीं है। अुपवास मुलतवी रखनेके संबन्धमें २९ तारीखके लेखमें आपने मेरे कृत्यको दरगुजर करके मेहरबानी दिखाअी है, क्योंकि आप अुपवासकी पद्धतिके विरुद्ध हैं। पर मैं मित्रोंकी अैसी मेहरबानी पर, खास तौर पर धार्मिक मामलोंमें, जीना नहीं चाहता। मेरे सौभाग्यसे अेक महत्त्वकी शर्तकी तरफ, जिसके कारण अुपवास अपने आप मुलतवी हो जाता था, आपका ध्यान न जानेसे आपने यह मेहरबानी दिखाअी है। वह शर्त यह थी कि कोअी अैसी कानूनी मुश्किल रह जाय, जिसका अुपाय निश्चित की हुअी मियादमें न हो सके, तो मुझे अपना अुपवास मुलतवी रखना चाहिये। यह कठिनाअी वाअिसरॉयकी मंजूरीके अभावके रूपमें आअी। अगर मैंने २ जनवरीको अुपवास शुरू कर दिया होता, तो मुझे डर है कि मेरे अुपवासकी अुपवासके तौर पर तो आपने निन्दा की ही होती, साथ ही अिस रूपमें भी निन्दा की होती कि अैसा अुपवास भारत सरकार पर बलात्कार करने जैसा है। अिस तरह आप देखेंगे कि अुपवास अिसलिअे मुलतवी नहीं हुआ कि अुसकी निरुपयोगिता मेरी समझमें आ गअी है, बल्कि अिसलिअे मुलतवी हुआ कि जो मुश्किल पहलेसे सोच ली

गअी थी और जिसके लिअे अपवाद रख लिया गया था, अुस मुश्किलके बाधक होते हुअे भी मैं अुपवास करूं तो यह अेक पापाचरण होगा।

आपके आखिरी लेख, यानी ४ जनवरीवालेका लंबा जवाब देनेकी जरूरत है। लेकिन मैं यह कोशिश नहीं करूंगा। क्योंकि अभी मेरे पास समय नहीं है। समझौतेके अपने सुझावमें मैं कोअी भी सिद्धांत नहीं छोड़ रहा हूं। मैंने अिस लड़ाअीमें स्वेच्छासे बने हुअे हरिजनकी हैसियतसे अपनेको हरिजनोंकी स्थितिमें रखनेकी पूरी कोशिश की है। मंदिर-प्रवेशके विरुद्ध आपत्ति अुठानेवालेसे मैं कहता हूं: "आप मेरी मौजूदगीसे या मेरे स्पर्शसे अपवित्र हो जाते हों, तो आप अकेले मूर्ति-पूजा कर सकें अिसके लिअे मैं आपके वास्ते खास तौर पर अलग समय निकाल देनेको तैयार हूं। जिस सचाअीका मैं अपने लिअे दावा करता हूं, वह सचाअी मैं आपमें भी माननेको तैयार हूं। मंदिरमें पूजा करनेका अधिकार जितना मैं अपना मानता हूं अुतना आपका भी मानता हूं। अिसलिअे आपके लिअे तय किये हुअे समय पर आप पूजा कीजिये और मेरे लिअे तय किये हुअे समय पर सुधारक हिन्दुओंके साथ मैं पूजा करूंगा। रूढ़िसे आपको यह मानना सिखाया गया है कि मन्दिरमें मेरे प्रवेश करनेसे मूर्तिका प्रभाव घट जायगा। यद्यपि मैं यह बात मानता नहीं, तो भी मैं अितनी रियायत देनेको तैयार हूं कि हम पूजा कर लें, अुसके बाद मंदिरका पुजारी मंदिरको शुद्ध कर ले।"

पंडित पंचानन तर्करत्नके सामने जब मैंने अपनी समझौतेकी सूचना रखी, तब मैंने अपने मनमें सोच लिया था कि यह सब हो सकता है। अिस सूचनाकी तहमें अेक बड़ी चीज मान ली गअी है कि हरिजनोंके मंदिर-प्रवेशके विरुद्ध अेतराज करनेवाले बहुत तुच्छ अल्पमतमें होंगे। अगर यह धारणा सच हो, तो ही अिस सुझावकी कुछ भी कीमत है।

सच्चे दिलकी कड़ी कसौटी

अिसलिअे मेरे सुझावमें अिस प्रश्नसे संबंध रखनेवाले तमाम लोगोंकी असरकारक और कड़ी कसौटी है। मंदिर-प्रवेश पर आपत्ति अुठानेवाले, शास्त्री लोग भी, जिसे वे सनातन धर्म समझते हैं, अुस धर्मके कारण विरोध करनेमें सच्चे होंगे, तो वे मेरी सूचनाको अंगीकार कर लेंगे। अिसी तरह अगर सुधारक और हरिजन सच्चे होंगे, तो वे भी मेरी सूचनाको आनंदसे स्वीकार करेंगे; और अगर विरोधी पक्षकी तरफसे वह मंजूर कर ली जाय, तो अुसे सुधारकी दिशामें अेक बड़ा कदम समझेंगे। अगर अनुभवसे यह मालूम हो कि संयुक्त समय पर पूजा करनेवाले सवर्ण हिन्दुओंकी संख्या बहुत थोड़ी

रहती है, तो यह सुधारकोंके लिअे हार मानी जायगी। और यह माना जायगा कि हरिजनोंका अैसे मंदिरोंमें, जहां अुनका स्वागत नहीं होता, जाना बंद हो जाना चाहिये। हरिजनोंको मंदिरमें जाना ही हो तो हिन्दुओंकी हैसियतसे और सवर्ण हिन्दुओंके बहुत बड़े बहुमतके, जो यह मानता हो कि अब तक अछूत माने जानेवाले वर्गके स्पर्शसे वे जरा भी अपवित्र नहीं होते, स्वागत करने पर ही जाना चाहिये।

सूचनाकी अुत्पत्ति

अिसके बजाय और कोअी निराकरण बलात्कारके समान हो जायगा। पहलेके अपने अेक वाक्यमें मैंने जो कहा था, वह आपको याद होगा कि जहां-जहां मन्दिरोंमें जानेवालोंका बहुमत हरिजनोंके मंदिर-प्रवेशके विरुद्ध हो, वहां-वहां हरिजन न जायं। लेकिन जहां सुधारक बहुमतमें हों, वहां हरिजनोंके साथ अिन सुधारकोंको मंदिरका अधिकार मिलना चाहिये और अल्पमतमें रहनेवालोंकी अिच्छा अगर अैसी हो तो अुन्हें अपने लिअे अलग मंदिर बनवा लेने चाहियें। किन्तु पंडित पंचानन तर्करत्नके साथ जब चर्चा हो रही थी, अुस समय मुझे अपनी अिस सूचनामें दोष दिखाअी दिया। यह बात निःसन्देह है — पर बात सही है या गलत, यह प्रश्न यहां प्रस्तुत नहीं है — कि हजारों लोग अपने अिष्टदेवके मंदिरोंमें अेक खास पवित्रताका आरोपण करते हैं। अुनके मतसे अिस पवित्रताका आरोपण दूसरी मूर्तिमें नहीं हो सकता। प्राचीन कालसे चली आनेवाली यह पवित्रता नअी मूर्तिमें या नये मंदिरमें केवल मनुष्यकी अिच्छासे नहीं लाअी जा सकती। अिसी परसे अभी घोषित की गअी सूचना मुझे सूझ गअी। अिस सूचनाका कुछ भी मूल्य हो, तो मंदिरकी शुद्धि करनेकी बात मुझे माननी ही चाहिये। कारण अिसमें अल्पमतकी धार्मिक भावनाके प्रति बहुत ध्यानपूर्वक आदर दिखानेकी बात है।

शास्त्रोंके प्रति बहुत आदर

जब आप देखेंगे कि अहिंसा मेरे लिअे अेक अैसा धर्म सिद्धांत है, जिस पर हर कल्पनीय अवसर पर अमल हो सकता है, तब आप मेरे साथ सहमत न हों तो भी मेरी विचारसरणीके साथ आपकी हमदर्दी जरूर होगी। हो सकता है कि अपने सिद्धांत पर अमल करनेमें मैं कअी बार असफल रहूं, परंतु अिससे अुस सिद्धांतकी कीमत कम नहीं हो जाती। वैसे ही यह चीज अिस चर्चाके साथ प्रस्तुत भी नहीं है। मेरी अहिंसा मुझे यह सिखाती है कि किसी खास मंदिरमें जानेवाले किसी भी भक्तकी

मेरे विरुद्ध कुछ भी कहा जाता हो, तो भी मेरे लिअे तो अस्पृश्यताके विरुद्ध यह लड़ाअी शुद्ध धार्मिक लड़ाअी है। हिन्दू धर्ममें बहुत बड़ा सुधार करनेका यह आन्दोलन है। अिस हिन्दू धर्मके बारेमें मैंने कितनी ही बार कहा है कि जिस तरहकी अस्पृश्यताको हम आजकल जानते हैं, वह निर्मूल न कर दी जायगी तो अिस हिन्दू धर्मका नाश हो जायगा। मुझे यह भी स्वीकार करना चाहिये कि हिन्दू शास्त्रोंको जिस तरह मैं समझता हूं, अुसके अनुसार अुनके प्रति मुझे बड़ी भक्ति है। पर अपने विचार मैं दूसरों पर जबरन नहीं लाद सकता। जब अेक दूसरेसे विरोधी अर्थ और विरोधी विचार पेश किये जाते हैं, तब मुझे अपने विचारोंको अपने आप काम करने देना चाहिये। और जहां-जहां मुझसे हो सकेगा, वहां-वहां मेरा रवैया तो दूसरे विचारों और दूसरे अर्थोंके लिअे सुविधा कर देनेका रहेगा।

आप ये चीजें ध्यानमें रखेंगे तो मेरी स्थिति समझ सकेंगे। अितना ही नहीं, पूरे दिलसे मेरा समर्थन करेंगे। और मुझे आपके समर्थनकी जरूरत है। मुझे तो हरअेक हिन्दूका समर्थन चाहिये। मैं जानता हूं कि आपका पत्र प्रगतिशील विचार रखनेवाले हिन्दुओंके बहुत बड़े समूहका प्रतिनिधि है और जब आप मुझे समझानेका कष्ट करते हैं, तब मैं आपका पूरी तरह समर्थन प्राप्त करनेका अपना प्रयत्न जल्दीसे छोड़ नहीं सकता।

आपने मुझे बहुत गलत ढंगसे पूछा है कि 'अिंग्लैण्डका जो कट्टरपंथी दल हिन्दुस्तानको राजनैतिक सुधार देना लम्बे भविष्य तक मुलतवी रखना चाहता है, क्या मैं सचमुच अुनकी अन्तरात्माको संतोष देनेके लिअे सम्मत होअूंगा?' मैंने अूपरके अंशोंमें जो कुछ कहा है, अुसे ध्यानमें रखते हुअे मंदिर-प्रवेशके संबंधमें जो स्थिति है और आपके प्रश्नकी तहमें जो स्थिति है, अुन दोनोंके बीच कोअी साम्य ही नहीं, यह दिखानेकी कोशिश करके मैं आपकी बुद्धिका अपमान नहीं करूंगा।

'हरिजन' शब्दकी अुत्पत्ति

अन्तमें अस्पृश्योंके लिअे 'हरिजन' शब्दका अुपयोग किया जाता है, अुस पर आपने आपत्ति की है। मुझे लगता है कि आप यह नहीं जानते कि पहले पहल यह शब्द कैसे काममें आने लगा। कुछ 'अस्पृश्य' मित्रोंने, जिन्हें 'अस्पृश्य' कहलाना अच्छा नहीं लगता था, यह शब्द सुझाया। और यह शब्द सुझानेका कारण यह अर्थ था कि गुजरातके अेक भक्त कविने अपने अेक

भजनमें अछूतोंके संबन्धमें यह शब्द अिस्तेमाल किया है। मैंने तो यह शब्द फौरन पकड़ लिया, क्योंकि दूसरी तरह भी अुसका अस्पृश्योंके साथ बहुत मेल बैठता था। दुनियामें सबसे ज्यादा तिरस्कृत लोग भगवानके सबसे ज्यादा प्रेमपात्र होते हैं।

यह शब्द अिस्तेमाल करनेकी जड़में या अुसे जारी रखनेमें किसी भी तरहकी गुलाम मनोवृत्ति कैसे है, यह मैं नहीं समझ सकता। हम अैसी आशा रखें कि जब अस्पृश्यता पूरी तरह दफना दी जायगी, तब हम सब हरिजन बनने यानी भगवानके सच्चे भक्त बननेकी कोशिश करेंगे।

२३

कांग्रेसियोंसे*

अिन दिनों बहुतसे कांग्रेसी मेरे पास आकर मुझे कहते हैं कि जेलके भीतरसे मैंने अस्पृश्यताके विरुद्ध आन्दोलन चलानेका जो काम शुरू किया है, अुसके बारेमें कांग्रेसी हलकोंमें कानाफूसी होती रहती है और अुनकी समझमें यह नहीं आता कि वे सविनयभंगका काम ही जारी रखें या अस्पृश्यताके विरुद्ध लड़ाअीमें सक्रिय भाग लेने लग जायं? अिस सवालसे मुझे कोअी आश्चर्य नहीं होता। यह सवाल पूछनेवालोंसे मैं अितना ही कह सकता हूं:

मुझे नहीं लगता कि मेरे व्यवहारमें कोअी असंगति है। अीश्वरने मुझे जो कुछ बुद्धि या शक्ति दी है अुसे काममें लेनेका मौका आने पर भी मैं अुसका अुपयोग न करूं, तो अिसमें पाप न हो तो भी मूर्खता तो जरूर है। सविनय-भंगके लिअे मैं अपनी सारी शक्तिका अुपयोग कर रहा हूं। मुझे मालूम हुआ कि अिसके अलावा भी हरिजनोंकी सेवा करनेकी शक्ति मुझमें मौजूद है, जिसे मैं काममें ला सकता हूं। अिसलिअे मैं अुसका अुपयोग कर रहा हूं। अैसा करके मैं अपने प्राप्त धर्मसे या कर्तव्यसे जरा भी च्युत नहीं होता। हरिजनोंकी सेवा मैं अतिरिक्त कामकी तरह कर रहा हूं। अिस प्रकार मेरे सामने दोमें से अेकका चुनाव करनेका सवाल ही नहीं था। परन्तु मैं जानता हूं कि जो अिस समय जेलकी दीवारोंके बाहर हैं, अुनका मामला दूसरा है। जो सविनयभंग करनेवाले हैं, अुन्हें यह फैसला करना है कि वे सविनय-

* १८ वां वक्तव्य, ता० ७-१-१९३३

भंगका काम जारी रखें, या अस्पृश्यता-निवारणका काम हाथमें लें? अिन लोगोंके लिअे मैं अिस सवालका निर्णय नहीं कर सकता।

मेरे मनकी रचना अैसी है कि जहां मैं अेक बार जेलके दरवाजेमें घुसा कि फिर सविनयभंगका किसी भी तरह मार्गदर्शन करनेके लिअे असमर्थ बन जाता हूं। मैं मार्गदर्शन कर सकूं तो भी मुझे करना नहीं चाहिये। क्योंकि हरिजनोंका काम करनेके लिअे मुझे जो बड़ी रियायतें मिली हैं, अुनका लाभ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपमें और छिपे या खुले तौर पर अिस आन्दोलनका मार्गदर्शन करनेमें न लेनेके वचनसे मैं बंधा हुआ हूं। अिसलिअे मुझसे पूछे बिना हरअेक भाअी-बहनको अपना निर्णय खुद कर लेना चाहिये।

अिसमें कोअी पहेली नहीं

मेरे अैसे विचार होनेके कारण मैंने अपनी पत्नी और अपने लड़केको भी रास्ता बतानेसे अिनकार कर दिया है। अस्पृश्यता मिटानेकी मेरी अपील हरअेक सवर्ण हिन्दूसे है, फिर वह कांग्रेसी हो या और कोअी हो। क्योंकि अुपवासके सप्ताहके दिनोंमें बम्बअीमें जो प्रस्ताव पास हुआ था, अुससे हरअेक हिन्दू, जहां तक अुसका निजी सम्बन्ध है वहां तक, अस्पृश्यता दूर करने और अपने पड़ोसियोंको भी वैसा ही करनेको समझानेके वचनसे बंधा हुआ है। अुसके पहले भागमें केवल अेक मानसिक क्रिया करनेकी बात है और जहां अुसके अनुसार कुछ काम करना हो, वहां अपने निजी व्यवहारमें अुसे करके दिखानेकी बात है। अुसका दूसरा भाग अस्पृश्यता-निवारणके लिअे प्रचार करना है। अुसमें हरअेक भाअी या बहनको, जहां दोनों काम साथ-साथ न हो सकते हों वहां, यह चुनाव करना है कि वह अिस प्रचार-कार्यमें पड़े या अपना मौजूदा काम जारी रखे।

जो कांग्रेसी सविनयभंगकी प्रतिज्ञासे बंधे हुअे हैं, अुनके सामने यह पहेली जरूर खड़ी होती है। पर वह तभी खड़ी होती है, जब वे यह जाननेके मिथ्या प्रयत्नमें पड़ते हैं कि अिस बारेमें मेरी क्या राय है। मेरे खयालसे मैंने तो अपनी स्थिति साफ कर दी है कि अिस बारेमें मेरी कोअी राय है ही नहीं कि वे क्या करें। जब जेलके भीतरसे अस्पृश्यताके कामका संचालन करनेका मैंने निर्णय किया, तब मेरे सामने केवल सविनयभंग करनेवालोंका वर्ग था ही नहीं। मेरे सामने तो सारा हिन्दू समाज था। वह सारा समाज अिस काममें मुझे जवाब देनेमें असफल साबित हो जाय, तो अकेले सविनयभंग करनेवाले अिस युगों पुरानी बुराअीको मिटा नहीं सकते। पर यह हो सकता है कि सविनयभंग करनेवालोंको अस्पृश्यता-निवारणका काम करनेका खास आदेश मालूम हो, या

अुन्हें यह लगे कि अनुशासनपूर्ण सविनयभंग करनेकी ताकत अुनमें नहीं रही, या सविनयभंगका जोश खतम हो गया है, या सविनयभंग जैसी चीज ही नहीं रही और जो कुछ विरोध बाकी है, अुसमें विनय नहीं रह गया, या वह अविनयी बन गया है।

यह जाहिर है कि अिन सब प्रश्नोंको सोचनेमें मैं अुपयोगी मार्गदर्शन नहीं कर सकता। ये सब प्रश्न अैसे हैं, जिनके बारेमें वे ही निर्णय कर सकते हैं, जो बाहर हैं। अगर अधिक मनुष्योंके दिलमें शंका हो, तो वे अिकट्ठे होकर विचार करें और अिस बारेमें निर्णय करें कि मौजूदा हालतमें क्या मार्ग अपनाया जाय। जिनके मनमें शंका ही नहीं है, वे अुस सुविख्यात संस्कृत श्लोक[1] को याद करें, जिसका ठीक अर्थ अुसीसे मिलती-जुलती अुतनी ही मशहूर अंग्रेजी कहावतमें आ जाता है: 'जो है अुससे ज्यादा लेनेकी कोशिशमें पासका भी खो बैठते हैं।'[2]

२४

गृहयुद्ध असंभव है

१६ जनवरी १९३३ को अे० पी० आअी० के प्रतिनिधिको मुलाकात देते हुअे गांधीजीने अहमदाबादके सेठ चिमनलाल गिरधरदास पारेखके वाअिसरॉयको दिये गये तारके बारेमें आश्चर्य प्रगट किया। अुस तारमें वाअिसरॉयसे आग्रह-पूर्वक यह प्रार्थना की गअी थी कि अस्पृश्यता संबंधी दोनों कानूनोंको धारा-सभाओंमें पेश करनेकी आप मंजूरी न दें। अुसमें यह भी कहा गया था कि अगर मंजूरी दे दी गअी, तो धार्मिक गृहयुद्ध होनेकी पूरी संभावना है।

गांधीजीने कहा: मुझे विश्वास है कि सेठ चिमनलाल यह मान ही नहीं सकते कि देशमें गृहयुद्धकी जरा भी संभावना है। सनातनियोंसे की गअी अपनी अपीलमें मैंने साफ कर दिया है कि मैं यह कल्पना ही नहीं कर सकता कि अैसा हो सकता है। सुधारकोंको यदि कोअी जानता है तो मैं जानता हूं। विग्रह तो तभी होता है, जब अेक दूसरेसे लड़नेको दोनों ही दल तैयार हों। दोनों हाथ मिलाये बिना ताली नहीं बज सकती। जो अपनेको सनातनी

---

१ यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवं परिसेवते।
ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव च॥

२ Much wants more and loses all.

कहते हैं, वे गृहयुद्ध करनेका अिरादा रखते हों, तो भी वे अपने हथियार हवामें ही घुमानेवाले हैं। लेकिन गृहयुद्ध किस लिअे होना ही चाहिये? वाअिसरॉय जो मंजूरी देनेकी रस्म अदा करनेवाले हैं, वह पास हुअे क़ानूनके बारेमें नहीं, पेश होनेवाले कानूनके बारेमें होगी; और अुस कानूनके पास होनेके बाद भी अुसमें लड़ाअीकी तो ज़रा भी गुंजाअिश नहीं।

लड़ाअीकी संभावना तो तब मानी जा सकती है, जब बाजी सुधारकोंके हाथसे जाती रहे और निराश हुअे या अुकताये हुअे हरिजन अपनी तरफ़से यह आन्दोलन अुठायें और सवर्ण हिन्दुओंके सारे समूहके खिलाफ अपने हकोंके लिअे लड़ें। परन्तु 'सनातन धर्म' की अिज्जत रखनेके लिअे सुधारक जब तक जिन्दा हैं, तब तक तो अैसी संभावना बहुत दूर है।

यह कानून तभी पास हो सकता है, जब कि ठोस हिन्दू लोकमत अिसके पक्षमें हो। लोकमतका पृष्ठबल न हो, तो कानून पास नहीं हो सकता। अिसलिअे मैं तो आशा रखता हूं कि आपने अभी जिस तारकी तरफ मेरा ध्यान खींचा है, अुससे किसीको भड़कनेकी जरूरत नहीं।

२५

हिन्दू समाजको चुनौती*

देशके सामने अिस समय अस्पृश्यता संबंधी जो दो बिल हैं, अुनके बारेमें सरकारका यह फ़ैसला है कि दोनों बिलोंको अुन धारासभाओंके सामने और देशके सामने पेश करनेकी अिजाजत सरकार नहीं देती। यह पढ़कर मैं अफ़सोस जाहिर किये बिना नहीं रह सकता। डॉ० सुब्बारायनका बिल मंदिर-प्रवेशके ख़ास प्रश्न तक ही और वह भी मद्रास प्रान्त तक ही सीमित है। और मंदिर खोलने न खोलनेका आधार अुस मंदिरमें जानेका हक रखनेवाले लोगोंके बहुमतकी राय पर रहता है। अिससे अलग-अलग पक्षोंके बीच झगड़ा होनेकी संभावना कमसे कम रह जाती है; और अगर सुधारक अपना हिस्सा अच्छी तरह अदा करें यानी मेरे समझौतेमें सुझाये अनुसार बिलकुल तुच्छ अल्पमतकी भी धार्मिक भावनाका आदर करें, तो झगड़ेकी संभावना जरा भी नहीं रहती। संभव है अिस प्रकार होना भाग्यमें न लिखा हो। सनातनी लोगोंके

* १९वां वक्तव्य, ता० २४-१-१९३३

कथनानुसार तो कट्टर सनातनी दृष्टिसे दोनों बिलोंमें मद्रासका बिल कम बुरा था। अुससे निपटना सुधारकोंके लिअे और व्यक्तिगत रूपमें मेरे लिअे भी, बाजी लगाकर अुपवास करनेवालेकी हैसियतसे, ज्यादा आसान था। वािअसरॉयने मंजूरी दे दी होती, तो बहुत संभव है गुरुवायुरके मामलेमें मेरा अुपवास रुक जाता।

मगर भारत सरकारने दूसरा ही चाहा था। अुसमें भी मुझे अीश्वरका हाथ समझनेका प्रयत्न करना चाहिये। वह मेरी पूरी परीक्षा लेना चाहता है। अुसे परीक्षा लेनी है, तो अुसके लिये काफी बल भी अुसीको देना पड़ेगा। जो पूरी तरह अुसकी अिच्छाके आधीन हो जाते हैं, अुन्हें अैसा बल देनेका अुसने हमेशासे वचन दे ही रखा है।

अखिल भारतीय स्वरूपका बिल बहुत संक्षिप्त है। नकारात्मक स्वरूपका होनेके कारण वह अेक तरहसे सुधारकोंकी कोअी सीधी मदद नहीं करता। अुसमें तो सिर्फ यह है कि यह कानून अैसे किसी भी या हरअेक सनातनीकी मदद करनेसे अिनकार करता है, जो हिन्दू समाज पर अपनी अिच्छाको लादनेके लिअे सरकारी अदालतोंकी मदद लेनेका प्रयत्न करे और अिस प्रकार हिन्दू समाजको जो रिवाज हिन्दू शास्त्रोंके विरुद्ध लगता हो और मनुष्यकी स्वाभाविक नैतिक बुद्धिको भी पसन्द न हो, अुस रिवाज पर अमल करानेका प्रयत्न करे। वह कानूनी अस्पृश्यताको मिटा देता है और सामाजिक तथा धार्मिक अस्पृश्यताको अुसके भाग्य पर छोड़ देता है। अिस बिलको दी गअी मंजूरी, भले ही अुसमें अैसा अिरादा न हो तो भी, हिन्दू धर्म और सुधारकोंके लिअे चुनौतीके समान है। अगर सुधारक अपने प्रति सच्चे साबित होंगे, तो हिन्दू धर्म अपने भाग्यसे आप निपट लेगा।

अिस प्रकार विचार करने पर भारत सरकारका निर्णय अीश्वर-प्रेरित माना जाना चाहिये। वह मुद्देकी सफाअी करता है। हिन्दुस्तानके और दुनियाके लिअे हिन्दुस्तानमें होनेवाले नैतिक प्रयासका भारी महत्त्व समझनेका काम वह आसान बना देता है। जिस स्वाभाविक भूमिका पर वह धीरे-धीरे जा रहा था, अुस पर वह अुसे अेक सपाटेमें पहुंचा देता है।

आजीवन सुधारक और योद्धाकी हैसियतसे मुझे पूरी नम्रताके साथ अिस चुनौतीको स्वीकार कर लेना चाहिये। पूज्य पंडित मदनमोहन मालवीयजीकी अध्यक्षतामें जो प्रस्ताव पास हुआ है, अुसके साथ जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध हो, अैसे हर हिन्दूको भी यह चुनौती स्वीकार कर लेनी चाहिये। वह प्रस्ताव अिस प्रकार है:

"यह परिषद निश्चय करती है कि आजके बाद हिन्दू समाजमें जन्मके कारण किसीको भी अस्पृश्य नहीं माना जायगा और अब तक जिन्हें अस्पृश्य माना गया है, अुनके सार्वजनिक कुओं, सार्वजनिक रास्तों, और सार्वजनिक संस्थाओंके अुपयोग संबंधी अधिकार दूसरे हिन्दुओंके बराबर ही माने जायंगे। अिन अधिकारोंको मौका मिलते ही सबसे पहले कानूनकी स्वीकृति दी जायगी; और **अगर वह स्वीकृति पहले नहीं मिल चुकी होगी,** तो अुसके लिअे बनाया जानेवाला कानून स्वराज्य पार्लियामेण्टके सबसे पहले कानूनोंमें से अेक होगा।

"और यह भी निश्चय किया जाता है कि कथित अस्पृश्यों पर प्रचलित रूढ़िके अनुसार आजकल जो सामाजिक अपमान — मंदिरप्रवेशके प्रतिबंध तकका — लादे जाते हैं, वे न्यायपूर्ण और शान्तिमय अुपायोंसे जल्दीसे जल्दी दूर हों, यह देखना सारे हिन्दू नेताओंका फर्ज समझा जायगा।"

अूपरके प्रस्तावमें बड़े टाअिपमें छपे शब्द पाठकोंको सावधानीके साथ ध्यानमें रखने चाहियें। अिस प्रस्तावमें धारणा यह रखी गअी है कि संभव हो तो स्वराज पार्लियामेण्टकी स्थापना होनेसे भी पहले अस्पृश्यता कानूनमें तो मिट ही जानी चाहिये। हमारे सामने अब यह अवसर आ खड़ा हुआ है। जो हिन्दू हिन्दूधर्मकी अिज्जतकी या हरिजनोंको दिये गये वचनको पूरा करनेकी लगन रखता हो, अुसे यह मौका हाथसे जाने नहीं देना चाहिये। सनातनियोंको भी, अगर वे अखिल भारतीय बिलका वही अर्थ करते हों जो मैं करता हूं, अिस बिलका विरोध नहीं करना चाहिये। क्योंकि क्या अिन लोगोंने मुझसे यह नहीं कहा था, और अपने लेखोंमें भी यह नहीं बताया था कि हरिजनोंको सवर्ण हिन्दुओंके बराबर ही राजनैतिक और नागरिक हक मिलें, अिस पर अुन्हें जरा भी आपत्ति नहीं है? दूसरे शब्दोंमें कहें तो कानूनकी नजरमें हरिजनोंको और लोगों जैसा ही समझा जाय, तो अुन्हें कोअी अेतराज नहीं है। धर्मकी नजरमें वे अेकसे नहीं माने जायं, अिसका सम्बंध सनातनियोंसे और अुनकी धर्मबुद्धिसे है। लेकिन अब अेक मानवबन्धु पर अपनी धर्मबुद्धि लादनेके लिअे अुस कानूनकी मदद नहीं ली जा सकेगी। जिन सनातनी शास्त्रियोंसे मिलनेका मुझे आनन्द मिला है, वे मेरे सामने अैसे ही श्लोक अुद्धृत कर सके हैं कि कोअी आदमी 'अस्पृश्य'के स्पर्शसे अपवित्र हो गया हो, तो अुसे शुद्ध होनेके लिअे या तो स्नान करना चाहिये या पानीका आचमन कर लेना चाहिये। 'अस्पृश्य' मनुष्य किसी सार्वजनिक स्थान पर, मन्दिर तकमें, जाय तो अुसके लिअे अुसे सजा देनेको कहीं भी नहीं कहा गया है। अेक

धर्मतंत्रके नियमभंगका अपराध करने पर किसी 'अस्पृश्य'को सजा देनेके लिअे किसी भी प्रसंग पर राज्यके कानूनकी मदद नहीं लेनी चाहिये। यह बिल कानूनके अैसे हस्तक्षेपको अुचित रूपमें असंभव बना देता है।

अिस बिलके अनुसार हरिजनोंके लिअे मन्दिर खोलनेका प्रबन्ध आपसी समझौतेसे किया जा सकेगा। जहां मन्दिरमें जानेवाले लोगोंका मत सुधारके लिअे परिपक्व नहीं हुआ होगा, वहां कुदरती तौर पर ही हरिजन मन्दिरमें नहीं जा सकेंगे। जहां लोकमत परिपक्व हो गया होगा, वहां बहुमतकी अिच्छाको विफल करनेमें कोअी व्यक्ति या कुछ लोग कानूनका आश्रय नहीं ले सकेंगे।

आन्दोलन व्यापक बनता है

परन्तु सनातनियोंको जो निर्णय करना हो करें। मन्दिर-प्रवेशका आन्दोलन ठेठ दक्षिणमें गुरुवायुरसे लेकर अुत्तरमें हरद्वार तक व्यापक बन रहा है। मेरा अुपवास भी, यद्यपि अभी तक मुलतवी है, अब सिर्फ गुरुवायुर पर आधार नहीं रखता । अब तो वह अपने आप सारे मन्दिरों पर लागू होगा। यानी मद्रासका जो बिल सिर्फ गुरुवायुर तक ही सीमित था, अुसके बारेमें सुधारक क्या करते हैं, अिस पर मेरा अुपवास अवलम्बित नहीं रहता, बल्कि अुस अखिल भारतीय बिल पर निर्भर रहता है, जो गुरुवायुर सहित दूसरे सब मन्दिरों पर लागू होता है।

मेरे सारे जीवनमें हमेशा अैसा ही होता रहा है। मेरी अिच्छा हो या न हो, तो भी मैं अेक कदमसे दूसरे कदम पर स्वाभाविक रूपमें ही चला गया हूं। मैं अपना लक्ष्य मद्रास बिल तक ही सीमित रखना चाहता था। मेरे लिअे वह काफी था। पिछले शनिवारको ही यानी २१ जनवरीको अे० पी० के दिल्लीके संवाददाताकी दी हुअी आगाहीके बारेमें मेरी राय पूछी गअी, तब मद्रास बिलकी अपेक्षा अखिल भारतीय बिलके बारेमें कुछ भी राय देनेसे मैंने अिनकार कर दिया था। अुस अधिक बड़ी और ज्यादा गंभीर जिम्मेदारीको अुठानेके लिअे मैं तैयार नहीं था। लेकिन अब अेक सिद्ध वस्तुके रूपमें जब यह जिम्मेदारी मुझ पर आ ही पड़ी है, तो मैं पीछे नहीं हट सकता।

प्रायश्चित्त द्वारा प्रचार

सरकारी घोषणापत्रसे किसीके मनमें यह विचार आ सकता है कि अिस बिलका अन्त अेक लम्बी निष्फल वेदनामें होगा और वह राज्यके कानूनका

केवल आर्थिक और शिक्षा सम्बंधी प्रश्न पर ही अपना सारा ध्यान केन्द्रित करता। लेकिन अिस सवालको हाथमें लेकर तो मैंने अपनी जो कुछ भी प्रतिष्ठा होगी, अुसे खतरेमें ही डाला है। क्योंकि मैं मानता हूं कि जब तक हरिजनोंको मंदिर-प्रवेश नहीं मिलेगा, तब तक यह नहीं कहा जा सकता कि हिन्दू समाजमें से अस्पृश्यता मिट गअी।

सनातनियोंसे मांग

गांधीजीने यह भी कहा: श्री आयंगर और दूसरे सनातनी लोगोंके सामने, जो यह कहते हैं कि हम हरिजनोंके साथ बुरा बरताव नहीं रखना चाहते और अुनकी आर्थिक और दूसरी सांसारिक स्थिति सुधारना चाहते हैं, मैं अेक मांग पेश करता हूं। वे हरिजन सेवक संघमें शामिल हो जायं, अुसे रुपयेकी मदद दें, और हरिजनोंकी सांसारिक स्थिति सुधारनेका कार्यक्रम हाथमें लें। केवल मंदिर-प्रवेशका प्रश्न मुझ पर और मेरे जैसे विचार रखनेवालों पर छोड़ दें। श्री आयंगरको मालूम होगा कि संघमें कांग्रेसी बहुत थोड़े हैं। अुसमें बहुतसे प्रमुख अुदारपंथी शामिल हैं। सनातनी जैसा कहते हैं वैसा यदि वे सचमुच करना चाहते हों, तो संघको रुपया और कार्यकर्ता देकर वे संघ पर अधिकार कर सकते हैं और संघकी नीति निर्माण कर सकते हैं। यह चीज अुन्हें अनुकूल न आये, तो वे दूसरी प्रतिस्पर्धी संस्था खोल लें और सारे देशमें अुसकी शाखाअें फैला दें और अिस तरह हरिजनोंको अुपकृत करके अुनके हृदय जीत लें। मैं मन्दिर-प्रवेशका आन्दोलन चलाकर धार्मिक पुण्य कमाने और यह साबित करनेका मौका लूंगा कि अेक सपाटेमें हरिजनों और सवर्ण हिन्दुओंका अुद्धार हो सकता है, दोनोंकी शुद्धि भी हो सकती है और हरिजनोंकी सांसारिक स्थिति भी अपने आप सुधारी जा सकती है। श्री आयंगरको समझना चाहिये कि बड़े जनसमूहसे सम्बंध रखनेवाले मामलोंमें कोअी 'चाल' बहुत दिन तक नहीं चल सकती। अुसे तो हरअेक आदमी अपील कर सकता और समझा सकता है। अिसलिअे वहां तो अन्तमें अीमानदारी और ठोस काम ही सफल हो सकते हैं।

धार्मिक मामलोंमें हस्तक्षेप नहीं

धार्मिक मामलोंमें हस्तक्षेपका आक्षेप किया जाता है, अिस प्रश्नके बारेमें तो पहलेके वक्तव्यमें मैंने कहा ही है। अपने विचारको मैं यहां दोहरा दूं कि जब लोगोंके हाथमें सच्ची सत्ता आयेगी, तब भी यदि राज्यकी तरफसे धार्मिक हस्तक्षेप होगा तो अुसका विरोध करने मैं आगे रहूंगा। पर सनातनी दोनों ही हाथोंमें लड्डू नहीं रख सकते। मेरे जैसेको

जो अेक पूर्वग्रह या अुससे भी खराब चीज मालूम होती है, अुसे कायम रखनेके लिअे अुन्हें कानूनकी मदद लेनी है — जैसी अुन्होंने पहले ली थी — और जब मैं अिस हस्तक्षेपको दूर करनेका प्रयत्न करता हूं, तब अुस पूर्वग्रहके ठेकेदार धार्मिक मामलोंमें हस्तक्षेप करनेका शोरगुल मचानेको तैयार हो गये हैं। असलमें मैं तो अुनके अुस पूर्वग्रहका भी आदर करनेको तैयार हूं। कारण मैं देखता हूं कि मुझे जो पूर्वग्रह लगता हो, वह दूसरोंको संभव है सच्चा ज्ञान लगता हो। पर यह चीज अैसी है जिसके लिअे कानूनकी मदद नहीं ली जा सकती। कानून तो अपने सामने आनेवाले प्रश्नोंका दुनियावी ढंगसे ही विचार कर सकता है। किसी आगम या शास्त्रमें चोरीका समर्थन किया गया हो, तो अिससे कानून अुसे मान्य नहीं कर सकता। मुझे अपने आश्रममें अैसे पड़ोसी मिले हैं, जो अीमानदारीसे यह मानते हैं कि अुनकी जातिको स्वयं अीश्वरने चोरी करनेका धंधा बख्शा है। मैं तो अुनके अिस पूर्वग्रहको भी कदाचित् माननेको तैयार हो जाअूं, पर कानून तो नहीं मानेगा। यह मैं काल्पनिक अुदाहरण नहीं देता, बल्कि आजकलके वास्तविक अनुभवकी बात कह रहा हूं।

हिन्दू धर्मकी विशुद्धि होनी चाहिये

श्री आयंगर मेरे बारेमें कहते हैं कि मैं शास्त्रोंको नहीं मानता। अिस आक्षेपके समर्थनमें वे मेरा अेक भी वाक्य नहीं बता सकेंगे। वे शास्त्रोंका अपना किया हुआ अर्थ ही अचूक होनेका दावा करते हैं और अुसकी प्रामाणिकताके विषयमें अपना ही निर्णय सही मानते हैं, अिसके लिअे अुन्हें जरूरतसे ज्यादा भला वकील मानना चाहिये। वे और अुनके दूसरे साथी, जो मेरे खिलाफ तरह-तरहके आक्षेप करते हैं और अिन आक्षेपोंको साबित करनेके लिअे मेरे लेखोंकी तोड़-मरोड़ करते हैं, अुनसे मैं पूछता हूं कि क्या अैसे तरीकोंसे आप सनातन धर्मको कायम रख सकेंगे? मैं जब कहता हूं कि नया धर्म स्थापित करने या नया धर्म सम्प्रदाय चलानेकी मेरी जरा भी अिच्छा हो, तो अैसा कहनेकी शक्ति मैं रखता हूं, तब अुन्हें यह मान लेना चाहिये। किन्तु हिन्दू धर्मके द्वारा ही प्रकाश, आनंद और शांति प्राप्त करनेके सिवाय अिस दुनियामें मेरी कोअी अिच्छा नहीं। अिसी कारण मैं अुसे विशुद्ध हुआ देखना चाहता हूं। हिन्दू धर्म मुझे संतोष देता है, क्योंकि अुसे जिस तरह मैंने समझा है और जिस ढंगसे मैं अुसका आचरण कर रहा हूं, अुसी तरह वह मुझे दूसरे तमाम धर्मोंके प्रति पूरी तरह समभाव रखनेकी और दूसरे धर्मोंके अनुयायियोंको भी अपने सगे भाअी-बहन

माननेकी प्रेरणा देता है। गीताका, वेदोंका, अुपनिषदोंका, भागवतका और महाभारतका मेरे खयालका हिन्दू धर्म मुझे सिखाता है कि जीवमात्र अेक है और अीश्वरके सामने न कोअी अूंचा है और न कोअी नीचा। वादविवाद करनेसे मुझे अरुचि है, किन्तु असत्य और अशुद्धिसे मुझे अुससे भी ज्यादा अरुचि है। अिन बुराअियोंके खिलाफ लड़नेमें मेरा साथ देनेके लिअे मैं सनातनियोंको आमंत्रण देता हूं।

२७

पूजार्थीका हक

पुरीके जगद्‌गुरु शंकराचार्यके श्री रंगा आयरको लिखे गये पत्र पर और श्री रंगा आयरके दिये हुअे अुत्तर पर आलोचना करते हुअे गांधीजीने अे० पी० आअी० को दी हुअी मुलाकातमें कहा:

सचमुच मुझे अफसोस होता है कि जगद्‌गुरुने अिन बिलोंके बारेमें अैसा पत्र लिखा। मेरी राय यह है कि ये बिल किसी भी तरह या किसी भी रूपमें धार्मिक स्वतंत्रतामें दखल नहीं देते। अिससे अुलटे, दोनों बिल धार्मिक स्वतंत्रताकी अच्छी तरह रक्षा करते हैं। जगद्‌गुरु द्वारा की गअी तुलना भी सही नहीं है। जिसका शास्त्रीय ज्ञान चाहिये अैसा कोअी शास्त्रीय प्रश्न ही अिन बिलोंमें नहीं, जिसे निर्णयके लिअे लोगोंके सामने पेश करना चाहिये। पूजा करते समय अुसके साथ कौन आ सकता है और कौन नहीं आ सकता, अिसका निर्णय करनेका पूजार्थीको हमेशा हक है। आपको अिसे धर्मका फेरबदल कहना हो तो कहिये, परंतु अिस हकसे आप लोगोंको वंचित नहीं कर सकते।

लोगोंसे जो हक कभी छीना नहीं जाना चाहिये था, वह हक अुन्हें वापस देनेमें कोअी धार्मिक हस्तक्षेप नहीं होता। अगर यह स्वीकार कर लिया जाय कि मंदिरमें पूजाके लिअे जानेवालोंमें से सौ फी सदीकी अैसी अिच्छा हो तो वे मंदिरमें जानेके नियमोंमें फेरबदल कर सकते हैं, तब तो अितना आपको आसानीसे मान लेना पड़ेगा कि काफी बड़ा बहुमत, जहां तक अुससे अलग रहकर पूजा करनेकी अल्पमतकी आजादीमें बाधा न पड़ती हो वहां तक, मंदिर-प्रवेशके बारेमें निर्णय करनेका हक रखता है। सुधारकोंके बारेमें, जो अुसी धर्मके अनुयायी होनेका और अुन्हीं शास्त्रोंको

माननेका दावा करते हैं, जगद्गुरु जैसे जिम्मेदार आदमीका यह कहना कि ये लोग तो सनातन धर्मके द्रोही हैं बहुत गंभीर बात मानी जायगी। और यह बात तो मेरी समझमें ही नहीं आती कि ये बिल पास करना कैसे विधानके विरुद्ध है।

दुर्भाग्यपूर्ण तुलना

अिस प्रकार जगद्गुरुका पत्र आपत्तिजनक है। अुसके साथ ही मुझे यह लगता है कि श्री रंगा आयरके जवाबमें भी कुछ सुधार करनेकी जरूरत है। मलाबारका लोकमत बिलोंके विरुद्ध है और अिसलिअे हरिजनोंके मंदिर-प्रवेशके भी विरुद्ध है तथा गुरुवायुरकी मतगणनाका परिणाम अिससे अुलटी बातकी सूचनाके रूपमें माना जाना चाहिये, अिस बारेमें अुन्हें जितना भरोसा है अुतना मुझे नहीं है। मलाबार हो आनेवाले और आंखों देखनेवाले आदमियोंने मुझसे कहा है कि वहांका लोकमत किसी भी तरह मंदिर-प्रवेशके खिलाफ नहीं है। पर यह चीज अैसी है कि अिसका निर्णय किसी भी स्थान पर, जहां दोनों पक्ष संयुक्त देखरेखमें गैर-सरकारी मतगणनाके लिअे सहमत हों, हो सकता है।

अपने अति अुत्साहमें और मेरे प्रति रहे अंधप्रेमके कारण श्री रंगा आयर अेक दुर्भाग्यपूर्ण तुलना करनेमें फंस गये हैं। मैं किसी भी तरह अपने आपको बुद्धके साथ तुलना किये जाने योग्य नहीं मानता। मैं अपनेको बिलकुल मामूली आदमी, अेक अदना कार्यकर्ता, और दूसरे मनुष्यकी तरह ही भूलका पात्र मानता हूं। मैं केवल नम्र सत्यशोधक हूं। और यह तुलना तो अेक और कारणसे भी दुर्भाग्यपूर्ण है। सनातनी कहेंगे कि बुद्ध तो नास्तिक था और वेदकी प्रामाणिकता और वेदकी अीश्वरीयतामें विश्वास नहीं रखता था, हालांकि असलमें तो यह बात ही नहीं थी कि वह नास्तिक था और वेदोंको नहीं मानता था। किन्तु वह क्या था, यह हमारे विषयके लिअे अप्रस्तुत है। सवाल यही है कि बहुजन समाज अुसके बारेमें क्या मानता है। अिसलिअे मुझे भी अगर नास्तिक और वेदकी अीश्वरीयतामें न माननेवाला समझ लिया गया, तो यह कहा जायगा कि समग्र रूपमें हिन्दू शास्त्रोंका विचार करके आधुनिक अस्पृश्यताको शास्त्रोंके विरुद्ध मानकर अुससे अिनकार करनेकी बात अेक सुधारककी हैसियतसे हिन्दुओंसे कहनेका मुझे कोअी हक नहीं।

दूसरा प्रायोपवेशन

[गांधीजी द्वारा खुद अपने २१ दिनके अुपवासके वारेमें लिखे हुअे और 'हरिजनबंधु'में प्रकाशित हुअे लेख अिस परिशिष्टमें दिये गये हैं।]

१

दूसरा प्रायोपवेशन

अिस अुपवासका निश्चय मैं झटपट नहीं कर सका। कितने ही दिनसे भीतर ही भीतर अुथलपुथल मच रही थी। कअी वार विचार आया कि अुपवास कर डालूं, फिर भी मैं अपने आपसे लड़ता ही रहा। लेकिन मानो हरिजन-दिवस मनानेकी तैयारीके रूपमें अेक दो घंटेके मंथनके अन्तमें मुझे वार-वार आवाज आअी: 'तो कर ही डाल न!' मैंने अिसका भी विरोध किया, परंतु यह विरोध तुरंत शांत हो गया और आधी रातके वाद स्पष्ट निर्णायक अुत्तर मिला — 'तुझे अुपवास करना ही पड़ेगा।' अिस तरह जव वादल विखर गये तो अुसकी मियाद और तारीख तो अुसी समय तय हो गअी — सोमवार ८ तारीखकी दोपहरसे शुरू करके सोमवार २९ मअीकी दोपहरको पूर्णाहुति हो। अिस प्रकार हृदयने अिक्कीस दिनका आत्मशुद्धिका अुपवास करनेकी प्रतिज्ञा कर ली। आत्मशुद्धिके अुपवासमें कोअी शर्त नहीं हो सकती। अिस अुपवासका वाहरी परिस्थितियोंसे संवंध न होनेके कारण अुसे वापस लेनेका भी सवाल नहीं अुठ सकता।

यह अुपवास किन कारणोंसे हुआ, यह नहीं कहा जा सकता। अनेक कारणोंका असर प्रगट-अप्रगट रूपमें मुझ पर होता ही गया और अिन सवका आखिरी परिणाम अिस अुपवासकी प्रतिज्ञाके रूपमें आया। पर अितनी गवाही तो मेरी आत्मा दे ही रही है कि हरअेक घटना हरिजनसेवाके साथ निकट संवंध रखनेवाली है। मुझसे यह पूछा जाय कि यह अुपवास किसके

विरुद्ध किया गया है, तो मुझे कहना चाहिये कि कोअी खास व्यक्ति मेरे ध्यानमें नहीं था; और सच कहूं तो यह अैसे हरअेक व्यक्तिके विरुद्ध है, जिसे अुपवासकी धार्मिकताके बारेमें श्रद्धा है और जो अुसके अुत्सवमें, अभी अुसमें शरीक होनेकी लालसाके बिना, भाग लेना चाहता है। किन्तु अिससे भी ज्यादा सच यह है कि यह अुपवास मेरे अपने विरुद्ध है। महाभीषण पापका नाश करनेके लिअे बड़े पुण्यका पुंज चाहिये। वह मुझमें न हो, मेरे साथियोंमें न हो, तो यह धर्मयुद्ध कैसे चल सकता है? पग-पग पर जहां सावधानी रखने और जागृत रहकर चलनेकी जरूरत हो, वहां बेखबर रहें तो सारा आन्दोलन चूर-चूर हो जाय और बेचारे हरिजनोंका बीचमें ही भुरकस निकल जाय। यह अुपवास मेरी और सब साथियोंकी अधिक आत्मशुद्धिके लिअे प्रार्थना है।

परंतु अिस अुपवासको जिसका अन्तःकरण स्वीकार करे, अुसे मेरे साथ अिसमें शरीक नहीं होना है। यह तो अपनी और मेरी पीड़ाके लिअे किया हुआ तामसी तप होगा।

लेकिन यह अुपवास चिनगारी अवश्य सिद्ध होगा। आत्मशुद्धिका यह यज्ञ मेरे अुपवासके साथ समाप्त नहीं होगा, बल्कि आरंभ होगा। मुझसे कहीं पवित्र और अधिकारपूर्ण व्यक्ति मौजूद हैं, जो अिस यज्ञको जारी रखेंगे, ज्यादा शुद्धि प्रदान करेंगे।

अैसे महायज्ञके बिना अस्पृश्यतारूपी भयंकर पापका अन्त असंभव मालूम होता है। पिछले छः महीनोंमें पंडितों और शास्त्रियों, निरक्षरों और साक्षरों, प्राचीनों और सनातनियों, हरिजनों और गैरहरिजनोंके साथ मैंने खूब चर्चा की, अुनके पत्र पढ़े, लेख देखे और अिस बारेमें मेरी आंखें खुलीं कि यह भीषण राक्षस जितनी मैंने कल्पना की थी, अुससे बहुत ज्यादा भयानक है। अिसे नाश करनेमें न लाखों रुपये काम आयेंगे, न संघोंकी स्थापना काम आयेगी, और न हरिजनोंके हाथोंमें राजनैतिक सत्ता दिला देना काफी होगा — यद्यपि तीनोंकी जरूरत है। किन्तु अिस बाहरी साधन-संपत्तिकी बुनियाद भीतरी साधन-संपत्ति पर खड़ी हो, तो ही वह सफल हो सकती है। थैली खुल जाय, लेकिन दिलमें कंजूसी हो तो? संघ स्थापित हो किन्तु दिलमें अुन संघोंको व्यर्थ करनेवाले स्वार्थ और मैल भरे हों तो? हरिजनोंको बाह्य सत्ता मिल जाय, परंतु दिलमें 'हम हिन्दू हैं' अिस प्रकारके विश्वाससे मिलनेवाली सत्ता न हो तो? अिसलिअे सर्वोपरि आवश्यकता आत्मशुद्धिकी है। वह अुपवास और प्रार्थनासे ही पैदा हो सकती है। सत्यरूपी अीश्वरके दर्शन अपने बलके

अभिमानीको नहीं होते, परंतु हारे हुअे, निराधार और रामको ही अपना बल माननेवाले निर्बलको होते हैं।

किन्तु शरीरको स्थूल भोजन देना बंद करनेसे कुछ नहीं होता। जब तक सब अिन्द्रियां विषयोंका आहार करना बंद न कर दें, तब तक परके दर्शन नहीं हो सकते; और बंद कर दें तो ही रोम-रोममें सत्यरूपी ओीश्वर व्याप्त होगा और प्रगट होगा। अिस प्रकार अैसे आध्यात्मिक अुपवासके लिअे तो वे ही अधिकारी होंगे, जिन्होंने यमोंका जाग्रत पालन किया होगा, जिनमें विरोधी तो क्या आततायीके प्रति भी अहिंसा होगी, जिन्होंने ब्रह्मचर्यका पालन किया होगा तथा जिन्होंने अपरिग्रह और अस्तेयका सेवन किया होगा। अिस साधन-संपत्तिके बिना अेक भी आदमी मेरे पीछे अुपवास शुरू न करे।

अगले सप्ताहसे शुरू होनेवाले अुपवासका कोअी अनर्थ न करे। मुझे मरनेकी जरा भी अिच्छा नहीं। मुझे तो हरिजन-सेवाके लिअे जितना जिया जा सके जीना है, यद्यपि अैसी आशा रखता हूं कि अिस सेवाके लिअे मरना भी पड़े तो मरनेकी मेरी पूरी तैयारी होगी। परंतु मुझे तो अिस अुपवाससे अपने लिअे और अपने साथियोंके लिअे ओीश्वरसे अधिक शुद्धिकी, अधिक तन्मयताकी, अधिक आत्मसमर्पणकी भिक्षा मांगनी है। मुझे तो कुन्दन जैसे चारित्र्यके काम करनेवाले साथी चाहियें, जब कि मेरी नजरमें तो भयंकर मलिनताके अुदाहरण आये हैं। अैसे लोग हरिजन-सेवाके कामको छोड़ दें, अैसी अुनसे अिस अुपवास द्वारा नम्र विनती है। और अिस आन्दोलन पर और भी अेक आक्षेप होता है। अनेक सनातनी मित्र और दूसरे महापुरुष मानते हैं कि यह युद्ध धर्मयुद्ध नहीं, परंतु राजनैतिक चालबाजी है। अुपवास किये बिना और किस तरह अिन लोगोंको समझा सकता हूं कि अुसका राजनैतिक चालोंसे कोअी सम्बंध नहीं, वह शुद्ध धार्मिक प्रवृत्ति है? आशा है कि अिसमें मैं सफल होअूंगा।

ओीश्वरको अिस शरीरसे अधिक सेवा लेनी होगी, तो जरूर वह अिसे बनाये रखनेका प्रबन्ध करेगा। स्थूल भोजन बन्द हो जाने पर वह आध्यात्मिक भोजन भेजना शुरू कर देगा। परंतु ओीश्वरको भी मनुष्योंके द्वारा ही काम लेना पड़ता है न! अिसलिअे जो भाअी-बहन अस्पृश्यताको बिलकुल नष्ट कर देनेकी अनिवार्य आवश्यकता समझ गये हैं, वे सवर्ण हिन्दुओंकी तरफसे हरिजनोंको दिये गये वचनका सम्पूर्ण पालन करके मुझे जरूरी आध्यात्मिक भोजन पहुंचायेंगे।

साथी अिस अुपवाससे न घबरायें। अुनमें तो अिससे ज्यादा हिम्मत आनी चाहिये। सबको अपने-अपने स्थान पर डटे रहना चाहिये। और जो फिलहाल अुचित आराम या रोग-निवारणके लिअे बाहर गये हुअे हैं, अुन्हें वहीं रह जाना शोभा देगा, कारण वह अुनका योग्य स्थान होगा — जैसे सशक्त कार्यकर्ताओंका अपने-अपने स्थान पर रहकर काममें लगे रहना ठीक होगा। जिसे मेरे साथ हरिजन-कार्यके सिलसिलेमें कोओी चर्चा करनी हो या कोओी सलाह-सूचना वगैरा लेनी हो, अुसके सिवाय अन्य किसीके यहां दौड़ आनेकी जरूरत मुझे मालूम नहीं होती।

क्या मित्रोंसे यह प्रार्थना करनेकी जरूरत है कि वे अिस अुपवासको मुलतवी करने या छोड़ने या अिसमें कोओी फेरबदल करनेका आग्रह न करें? मुझे अुन्हें विश्वास दिलाना चाहिये कि मैं अुपवासकी बाट देखते हुअे बेकार नहीं बैठा था। यह अुपवास तो, जैसा मैंने कहा है, मेरी गोदमें आ पड़ा। फिर मैं अिसे कैसे फेंक सकता था? अिसलिअे हिन्दुस्तानके और बाहरके मित्रोंसे मेरी प्रार्थना है कि वे मेरे लिअे और मेरे साथ प्रार्थना करें कि अिस अग्नि-परीक्षामें से मैं निर्विघ्न पार हो जाअूं; और मैं खुद जीअूं या मरूं, तो भी जिस कार्यके लिअे मैंने अुपवासकी प्रतिज्ञा की है, वह कार्य सांगोपांग पूरा हो।

अपने सनातनी मित्रोंसे भी मैं जरूर प्रार्थना करूंगा कि वे भी प्रार्थना करें कि अुपवासके अंतमें भले मेरा कुछ भी हो जाय, परंतु सत्यका मुख हिरण्मय पात्रसे ढंका हुआ है, वह पात्र हट जाय और समस्त हिन्दू संसारको शुद्ध सत्यके दर्शन हों।

३० अप्रैल, १९३३

२

यज्ञका आरंभ

मैं बचपनसे सीखता आया हूं कि अच्छे कामोंका — धार्मिक कामोंका आरंभ देहशुद्धि और आत्मशुद्धिसे ही किया जाय। जो अुपवास सितंबर मासमें हुआ, अुसे अैसे यज्ञका स्वरूप नहीं दिया जा सकता था। अुस अुपवासकी तहमें रहा संकल्प सरकारी योजनामें फेरबदल करने तक ही सीमित था। दूसरी हरिजन-सेवा अुसका अनिवार्य फल थी। वह तो करनी ही पड़ती। मगर संकल्पबल योजनाके फेरबदलके साथ समाप्त हो गया और अुपवास

भी पूरा हुआ। अुस अुपवासके पीछे शर्त थी और अुस हद तक वह अिस अुपवाससे घटिया था।

सेवाकार्यका आरंभ बादमें हुआ। मैं अब देखता हूं कि वह आरंभ सूखा था। अुसके पीछे शुद्धियज्ञ नहीं था। यह संभव है कि अिस यज्ञके अभावमें अस्पृश्यता-निवारणके युद्धने पूर्ण धार्मिक स्वरूप नहीं लिया।

अुपवासकी प्रेरणाके समय मुझे यह भान नहीं था। यह कहना मुश्किल है कि किस अेक कारणसे अुपवासका निश्चय हुआ। यह अुपवास मेरे दूसरे प्रसिद्ध अुपवासोंसे निराला है। अिसमें केवल शुद्धिका हेतु है। अिसे करते हुअे शरीर नष्ट हो जाय, तो अुसे मैं अकल्पित होते हुअे भी शुभ परिणाम मानूंगा। और मैं चाहता हूं कि सब अैसा ही मानें। हरिजनोंका चिन्तन करते हुअे, अुनकी शुद्ध सेवाकी भावना रखते हुअे मैं शरीर छोड़ूं, तो अिसे मैं सेवाका अच्छा आरंभ समझूंगा। किन्तु अिस यज्ञमें मेरी धारणा मरकर सेवा करनेकी नहीं, जी कर करनेकी है। अीश्वरने और कुछ सोचा होगा तो अुसे मिथ्या कर सकनेवाला कौन है? जैसे जीकर सेवा करनेकी हिम्मत है, वैसे ही मरकर भी करनेकी है। अिसलिअे जीवन-मरणको हम सब अेक ही चीज समझें।

जो अिस अुपवाससे कांप रहे हैं, वे शरीरका मोह छोड़ दें। मनुष्य देह छोड़ता है तो अपना काम भी छोड़ देता है, अैसी बात बिलकुल नहीं है। देह मरती है, आत्मा नहीं मरती। कर्ता अकर्ता आत्मा है। वह चिरजीवी है, अमर है। हम जानें या न जानें, चाहें या न चाहें, प्रयत्नमात्रका संबंध आत्मासे है — फिर भले ही वह अुसे अूपर ले जाय या नीचे।

अभी तो मेरी प्रबल अिच्छा अेक ही है। हम सब यह समझने लगें कि यह अस्पृश्यता-निवारणका काम धार्मिक है और वह धार्मिक साधनोंके बिना सिद्ध नहीं हो सकता। हरिजनोंकी सेवामें दूसरे हिन्दुओंकी शुद्धि है। दूसरे हिन्दुओंकी शुद्धि न हो और हरिजनोंकी आर्थिक या राजनैतिक स्थिति सुधरती हो, तो भी अिससे हिन्दूधर्म शुद्ध नहीं होता। अस्पृश्यतारूपी मैल अैसा है कि अगर यह न निकला, तो हिन्दू धर्मको अवश्य खा जायगा। अिस मैलको निकालनेके लिअे असंख्य हिन्दुओंका हृदय-परिवर्तन आवश्यक है।

यह सबको दीयेकी तरह स्पष्ट मालूम होना चाहिये कि यह मैल आत्मशुद्धिके सिवाय और किसी भी साधनसे नहीं निकलेगा। यह स्पष्ट करनेवाला सबसे अुत्तम साधन मनसा, वाचा, कर्मणा अुपवास-यज्ञ है। केवल शरीरका अुपवास मिथ्या कष्ट है। वह दंभ भी हो सकता है। जिसका

मन अन्न और फल मांगना छोड़ देता है, अुसका शरीर स्वभावसे ही ये चीजें नहीं मांगता। जिसका शरीर अन्न-फल नहीं लेता, लेकिन मन अुसीमें फिरता है, वह शरीरसे अुपवास करते हुअे भी खाता ही रहता है। अधिकतर अुपवास अैसे ही होते हैं। वे सब धर्मकी दृष्टिसे निरर्थक हैं, अुनका हानिकर होना भी पूरी तरह संभव है। अिस प्रकार धार्मिक अुपवासमें मनकी पूरी तैयारी होना निहायत जरूरी है। मेरी आत्मा गवाही देती है कि मेरी यह तैयारी है। संभव है अैसे यज्ञ करनेमें बहुतोंका शरीर छूट जाय। अैसा हो तो भी अैसे ही अनेक यज्ञोंके बिना यह अस्पृश्यता दूर नहीं होगी। अुनके बिना कभी सदियोंसे जड़ जमाया हुआ मैल नहीं निकलेगा। अुस यज्ञमें मेरी ओरसे पहल हो, यही ठीक है।

अगर अिक्कीस दिनके अुपवासके अन्तमें मेरा शरीर न रहे, तो पाठकोंको मान ही लेना चाहिये कि यह शरीर अिस और दूसरी सेवाके लिअे निकम्मा था। यहां श्रद्धाकी अत्यंत आवश्यकता है। अंधश्रद्धा तो बहुत पाअी जाती है, अिसलिअे श्रद्धा ही निन्दा करने लायक हो गअी है। किन्तु जैसे ज्यादातर अंधे लोगोंके होनेसे अेक देखनेवाला निकम्मा नहीं हो जाता, बल्कि अंधोंका मार्गदर्शक बनता है, अुसी तरह असंख्य लोगोंकी अंधी श्रद्धाका निवारण अेककी देखती श्रद्धा कर सकती है। मुझे अैसी श्रद्धा प्राप्त करनी है। दूसरे स्त्री-पुरुष भी प्रयत्न करें। अुसे प्राप्त करनेमें मनसा, वाचा, कर्मणा किये जानेवाले अेक या अनेक अुपवास अुपयोगी सिद्ध होंगे।

३

अमोघ तप

यह लेख मैं शनिवार ६ तारीखको सुबह लिख रहा हूं। बहुतसे मित्रोंकी बातें सुनीं। अुनका मोह या प्रेम मुझे आगामी महायज्ञसे रोकना चाहता है। अन्तरात्मा कहती है: 'रुकना पाप है। जिस सत्यनारायणके नाम पर यज्ञका संकल्प किया है, वही अपनी अिच्छानुसार यज्ञ पूरा करायेगा।'

बाह्य दृष्टिसे मैं जितना देखता हूं, मुझे प्रतीत होता है कि कुछ भी हो जाय, मुझे अुपवास करना ही चाहिये। पंडित सन्तानमने पंजाबके कामका अेक विवरण मुझे दिया है। अुसमें लाला मोहनलालने जो तीन प्रश्न पूछे हैं, वे संक्षेपमें नीचे देता हूं:

(१) पंजाबमें आर्यसमाजी, सनातनी, सिक्ख, मुसलमान और औसाओी सब हरिजनोंको अपनी तरफ खींचना चाहते हैं।

(२) हरिजनोंमें औसे नेता निकल आये हैं, जिनका लोभ बढ़ता जा रहा है। अुस लोभको संतुष्ट करना असंभव है।

(३) पंजाबमें अिसी अुद्देश्यसे काम करनेवाला प्रतिस्पर्धी संघ है।

पाठक पढ़कर चकित होंगे कि मेरा अुपवास अिन प्रश्नोंका अुत्तर है। यानी हरिजन-सेवक-संघके सेवकोंको समझना चाहिये कि यह काम सिर्फ धार्मिक है और धार्मिक दृष्टिसे होना चाहिये। अितना स्पष्ट हो जाय, तो ये तीनों प्रश्न हल हो जाते हैं। दूसरे धर्मों और सम्प्रदायोंके लोग जो काम कर रहे हैं, अुसे मैं धार्मिक नहीं मानता। हरिजनसेवक अगर धार्मिक भावनासे काम करेंगे, तो अुनमें आत्म-विश्वास आ जायगा कि अुनकी सेवा ही सेवाका फल है। सेवकोंको तो न्यायका ही व्यवहार रखना है। अिसलिअे हरिजन नेता या और कोअी भी अनुचित दबाव डालें तो अुससे वे दब न जायं। धर्म-भावनासे किये हुअे कामका असर प्रतिस्पर्धी संघों पर पड़े बिना रह ही नहीं सकता।

औसे चमत्कारी 'धर्म'की व्याख्या क्या है? धर्म वह है जो आत्माको शुद्ध करता है, जो फलकी आकांक्षा नहीं रखता, जिसे अटूट विश्वास है और जिसमें स्वार्थका होना असंभव है। जो कार्य अिस धर्मके अनुकूल है, वह धार्मिक है। अिस अर्थमें हरिजनोंकी सेवा धार्मिक कामोंमें सवर्ण हिन्दुओंकी शुद्धिका रूप लेती है, अुनका प्रायश्चित्त बनती है। अगर यह बात अच्छी तरह समझमें आ जाय, तो किसीको कोअी शंका न रहे। हरअेक स्त्री-पुरुष या संघ यथाशक्ति हरिजनसेवा करके शुद्ध हो, किसीकी निन्दा न करे और न द्वेष रखे। अिसमें राजनैतिक लाभकी कहीं बात ही नहीं है।

परंतु यह कहना आसान है, करना कठिन है। अिसका अर्थ यह हुआ कि धर्म बुद्धिगम्य नहीं, हृदयगम्य है। हृदयकी जागृतिके लिअे तपके सिवाय दूसरा कोअी अुपाय नहीं है। तप त्यागकी परिसीमा है। तपका आरंभ अुपवाससे होता है। दुःख सहनेका नाम तप है। अुपवासका दुःख अुपवासी ही जानता है। जो चीज मैं दलीलोंसे नहीं समझा सकता, वह अुपवास रूपी तपसे समझानेकी आशा रखता हूं।

औसा हो या न हो, अिस तपके बिना मुझे शांति नहीं मिलेगी। क्योंकि मेरा विश्वास है कि अीश्वर मुझसे यही चाहता है। यह तप करते हुअे शरीर चला जायगा, तो लोग समझ लेंगे कि अिस देहका मेरा काम पूरा हो

गया है, मेरा सम्बन्ध समाप्त हो गया है। अिसमें खेद या दुःखकी गुंजािअश नहीं। और हरिजन-सेवा करते हुअे शरीरका अंत हो, अिससे अच्छी बात मेरे लिअे या हरिजनकार्यके लिअे और क्या हो सकती है? अगर यह तप निर्विघ्न पूरा हो जायगा, तो मेरा आत्मविश्वास और सेवा-शक्ति बढ़ेगी। किसी भी हालतमें अितना तो स्पष्ट हो जायगा कि हरिजन-सेवक-संघका काम केवल धार्मिक है, सवर्ण हिन्दुओंके प्रायश्चित्त स्वरूप है और अिस काममें अैसे लोगोंके लिअे स्थान नहीं, जो पवित्र नहीं हैं।

कोअी यह न समझे कि केवल दैहिक अुपवासमें कोअी शक्ति भरी हुअी है। अैसे अुपवासमें मन और वाणीका साथ होना चाहिये। मनसा, वाचा, कर्मणा किया हुआ अुपवास भी आत्मशुद्धिके साधनोंमें अेक आवश्यक साधन है। अिसी कारण मैंने दूसरे लेखमें कह दिया है कि हर आदमीको अुपवास करनेका अधिकार नहीं हो सकता।

ता० ६–५–१९३३

४

अीश्वरकी भेंट

सत्यनारायणने मेरी जो परीक्षा शुरू की है वह कितनी जरूरी है, अिसका नया-नया प्रमाण मुझे मिलता ही जा रहा है। अुपवास न किया होता तो जो चीज मेरी नजरके सामने आती जा रही है, अुसे जानकर मेरा दिल टूट जाता। हरिजनकार्य पर अुसका कुछ भी असर हो, पर मैं खुद तो अुपवास करके बच ही गया हूं। अुपवाससे मैं अुठूंगा या नहीं, यह तुच्छ-सी बात है। संभव यह है कि अुपवास न किया होता तो मैं हरिजनोंकी अधिक सेवा नहीं, बल्कि किसी भी प्रकारकी सेवा करनेके अयोग्य बन जाता।

कुछ मित्रोंने मुझे जरूरी तार देकर यह कदम अुठानेसे रोकनेकी कोशिश की है। मैं आशा रखता हूं कि ये मित्र समझ लेंगे कि मैंने जीवनको जिस ढंगसे बनाया है, अुसमें अुपवास अनिवार्य है। यह तो मैं स्वतंत्र रूपमें विचार करते हुअे कहता हूं। मैंने जो यह दावा किया है कि यह अुपवास अीश्वरकी प्रेरणासे किया गया है, सो तो कायम ही है। जिन्होंने मुझे तार भेजे हैं, अुन सबको मैं अलग-अलग जवाब नहीं दे रहा हूं, अिसके लिअे वे मुझे क्षमा करेंगे। मुझ पर कामका दबाव अितना ज्यादा रहा कि तारोंकी जो वर्षा हो रही थी, अुससे निपट सकना मेरे लिअे

असंभव हो गया था। अब यह लिखनेके बाद दो घंटेमें अुपवास शुरू हो जायगा, अिसलिअे सब मित्रों और हितचिन्तकोंसे मेरी विनती है कि वे अैसी प्रार्थना करें कि अीश्वर मुझे अिस अग्नि-परीक्षामें से हारे बिना पार होनेकी शक्ति दे। मैं स्वीकार करता हूं कि मुझमें जो भी शक्ति होगी, वह अीश्वरकी ही दी हुअी होगी। अुसके सिवाय और कोअी शक्ति मुझमें नहीं है। अीश्वर आज तक मेरी पुकार सुने बिना नहीं रहा। अिसलिअे मुझे अुसका अितना भरोसा है कि अिस बार भी वह दौड़कर मेरी मददको आये बिना नहीं रहेगा।

अेक हरिजन संस्थाने तार भेजा है। अुसमें कहा गया है कि मेरा अुपवास गैरजरूरी है, क्योंकि हरिजनोंको सवर्ण हिन्दुओंकी मददकी कोअी जरूरत नहीं। वे अिस मददके बिना ही अपना काम चला लेंगे। अिस संस्थाकी दृष्टिसे अुसका कहना सच है, सिर्फ अितना स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि अुपवास शुरू करनेमें मेरा अुद्देश्य हरिजनों पर अुपकार करना नहीं, बल्कि अपनी और साथियोंकी शुद्धि करना है। हरिजनसेवा सवर्ण हिन्दुओंका धर्म है। अुन्होंने अपने ही भाअियोंके साथ जो अन्याय किया है, अुसका जो प्रायश्चित्त अुन्हें करना है, यह सेवा तो अुसका अंशमात्र है। कुछ हरिजन अिस सेवाका क्रोधसे जो तिरस्कार कर रहे हैं, अुसे मैं अच्छी तरह समझ सकता हूं। मैं आशा रखता हूं कि हरिजनोंके बड़े भागके लिअे अिस सेवाको अुदार भावसे स्वीकार करनेका समय अभी चला नहीं गया है। मेरे नाम अुनके जो बहुसंख्यक संदेश आये हैं, अुन परसे मुझे अिस बारेमें रत्तीभर शंका नहीं रही कि हरिजनोंने अिस सेवाको स्वीकार कर लिया है।

सनातनी हिन्दुओंको अिस अुपवासमें अभी तक बलात्कारकी बू आती है। अेक अेक मंदिर खुल जाय और सवर्ण हिन्दुओंके हृदयसे अस्पृश्यताकी जड़ नष्ट हो जाय, तो भी यह अुपवास अिक्कीस दिनके पहले नहीं छूटेगा। अितना अगर ये सनातनी समझ लें, तो शायद वे मान लेंगे कि अिस अुपवासमें किसी प्रकारका बलात्कार नहीं है।

अिस अुपवासका अुद्देश्य वैरभाव दूर करना, हृदयकी शुद्धि करना और यह बात स्पष्ट करना है कि यह आन्दोलन केवल धार्मिक है और अिसे धार्मिक साधनोंसे ही चलाना है। अीश्वर अिस यज्ञको आशीर्वाद दे और अुसका अुद्देश्य सफल करे।

ता० ८-५-१९३३
सवेरे १० बजे

५

अीश्वरकी कृपा

अेक मिनिटमें मैं अुपवास छोडूंगा। जिस अीश्वरके नामसे और जिसके प्रति श्रद्धा रखकर यह अुपवास शुरू किया गया था, अुसीके नामसे वह छूटेगा। आज मेरी श्रद्धा कम नहीं हुअी, बल्कि बढ़ी है। यह अवसर केवल अीश्वरका नाम लेनेका और भजन करनेका है। लेकिन डॉक्टरों, मित्रों और दूसरे लोगोंने मुझ पर जो असीम प्रेम बरसाया है, अुसे मैं कैसे भूल सकता हूं? अिसलिअे अुसका जिक्र कर देता हूं। क्योंकि वह भी अीश्वरकी कृपाका अेक भाग है। अुसका बदला तो अीश्वर ही देगा। हरिजन भाअियोंका यहां आना मुझे बहुत अच्छा लगा है। मैं नहीं जानता कि अीश्वरको मुझसे अब क्या काम लेना है। पर कुछ भी लेना हो, मैं निश्चिंत हूं। अिसके लिअे वही शक्ति दे देगा।

ता० २९–५–'३३
दोपहरके १२–२०

६

अनशनके बारेमें

अनशन पूरा होनेके बादसे ही मुझे यह लग रहा था कि अपने अनशनके बाद सार्वजनिक रूपमें कुछ भी लिखूं, तो वह हरिजनोंके बारेमें, 'हरिजन' पत्रमें और अनशनके सम्बंधमें ही हो सकता है। अीश्वर-कृपासे यह अिच्छा पूरी हुअी और अिसी कृपाके कारण भविष्यमें कुछ-न-कुछ पहलेकी तरह 'हरिजनबंधु' में देनेकी आशा रखता हूं। पर अिसका यह अर्थ नहीं कि अब मुझमें आये हुअे कामको निपटानेकी शक्ति पहलेकी तरह आ गअी है। अभी तक मुझे बड़ी सावधानीसे रहना पड़ता है और बिस्तर पर भी लेटे रहना होता है। अिसलिअे खास तौर पर मुझे पत्र लिखनेवालोंसे मैं धीरज रखनेकी प्रार्थना करता हूं। शायद मुझे अच्छा होनेमें अभी अेक महीना और चाहिये। कौन जानता है कि अिस अेक महीनेमें क्या होगा? हम क्षणजीवी हैं। दूसरे ही पलमें क्या होगा, अिसका भी हमें पता नहीं होता। तो फिर मेरे जैसे हरिजनसेवकोंकी अभिलाषाओंके बारेमें तो

कहा ही क्या जाय? 'हरिजनबंधु' के जो पाठक अुसे सेवाभावसे ही लेते और पढ़ते हैं, अुन्हें मेरी सलाह तो यह है कि वे मेरे लेखों और रायोंकी प्रतीक्षा ही न करें। हरिजनसेवाका मार्ग तो बिलकुल स्पष्ट है। क्षेत्र विशाल है। 'हरिजनबंधु' हर हफ्ते चालू प्रवृत्तियोंकी कल्पना करानेका प्रयत्न करता है। वह यह भी बतानेका प्रयत्न करता है कि क्या करना चाहिये, क्या हो सकता है और वह कैसे किया जा सकता है। अुसमें से सबको कुछ न कुछ सेवा करनेको मिल जाना चाहिये। तो फिर मेरे लेख या मेरी रायकी क्या जरूरत रहती है? मुझे अुसके लिअे कुछ लिखनेकी अिच्छा हो जाती है, तो वह सिर्फ आत्म-संतोषके लिअे ही होती है। जब मुझे पाठकोंसे कुछ कहना रहता है, समझाना रहता है, तभी लिखनेकी जरूरत होती है। किन्तु लिखनेकी जरूरत हो या न हो, या मुझमें लिखनेकी शक्ति न रहे या मुझे अवकाश न हो, तो भी मैं आशा रखता हूं कि पाठक शिथिल न हों और 'हरिजनबंधु' के साथ अपने सम्बन्ध कायम रखें।

अब अनशनके बारेमें लिखता हूं।

बहुतोंने यह प्रश्न किया है कि अीश्वरकी प्रेरणा क्या चीज थी? वह प्रेरणा मुझे किस तरह हुअी? यह मैंने कैसे जाना कि वह अीश्वरकी ही प्रेरणा थी? क्या मैंने अीश्वरके दर्शन किये हैं? मुझे अुसका साक्षात्कार हुआ है? अिस तरहके प्रश्न होते ही रहते हैं।

मेरे लिअे अीश्वर-प्रेरणा, अन्तरकी गूढ़ आवाज, अंत:प्रेरणा और सत्यका संदेश वगैरा अेक ही अर्थके सूचक शब्द हैं। मुझे किसी आकृतिके दर्शन नहीं हुअे। अीश्वरका साक्षात्कार नहीं हुआ। मैं यह नहीं मानता कि अिस जन्ममें साक्षात्कार होना होगा तो भी किसी आकृतिका दर्शन होगा। अीश्वर निराकार है, अिसलिअे अीश्वरका दर्शन आकृतिके रूपमें नहीं हो सकता। जिसे अीश्वरका साक्षात्कार हो जाता है, वह सर्वथा निष्कलंक बन जाता है। वह पूर्ण-काम हो जाता है। अुसके विचारमें दोष, अपूर्णता या मैल नहीं होता। अुसका कार्यमात्र सम्पूर्ण होता है, क्योंकि वह स्वयं कुछ करता ही नहीं। अुसके भीतर रहनेवाला अन्तर्यामी ही सब कुछ करता है। वह तो अुसीमें समाकर शून्यवत् हो गया है। अैसा साक्षात्कार करोड़ोंमें किसी अेकको ही होता होगा। हो जरूर सकता है, अिस बारेमें मुझे बिलकुल शंका नहीं। मुझे यह साक्षात्कार करनेकी अभिलाषा है, किन्तु मुझे हुआ नहीं। और मैं जानता हूं कि मैं अभी अुससे बहुत दूर हूं। मुझे जो प्रेरणा हुअी, वह दूसरी ही चीज थी; और अैसी प्रेरणा समय-समय पर या किसी समय बहुतोंको होती है। अैसी प्रेरणा होनेके लिअे खास साधनाकी जरूरत तो होती

ही है। मामूलीसे मामूली बात करनेकी शक्ति प्राप्त करनेके लिअे भी अगर कुछ न कुछ प्रयत्न, कुछ न कुछ साधनाकी जरूरत रहती है, तो अीश्वरकी प्रेरणा प्राप्त करनेकी योग्यताके लिअे प्रयत्न और साधनाकी जरूरत हो, अिसमें क्या आश्चर्य? मुझे जो प्रेरणा हुअी वह यह थी: जिस रातको यह प्रेरणा हुअी, अुस रातको बड़ा हृदय-मंथन होता रहा। चित्त व्याकुल था। मार्ग सूझता नहीं था। जिम्मेदारीका बोझा मुझे कुचले डालता था। अितनेमें मैंने अेकाअेक आवाज सुनी। मैंने देखा कि वह बहुत दूरसे आती हुअी मालूम होने पर भी बिलकुल नजदीककी थी। यह अनुभव असाधारण था। यह आवाज भी अैसी ही थी, जैसे हमें कोअी मनुष्य कुछ कहता है। अिच्छा न होने पर भी अुसे सुने बिना चल ही नहीं सकता, यह मैं साफ देख सका। अुस समय मेरी स्वप्नावस्था नहीं थी। मैं बिलकुल जाग्रत था। असलमें रातकी पहली नींद लेकर मैं अुठा था। यह भी न समझ सका कि मैं कैसे अुठ गया। आवाज सुननेके बाद हृदयकी वेदना शांत हो गअी। मैंने निश्चय कर लिया, अनशनका दिन और अुसका समय निश्चित किया। मेरा भार अेकदम हलका हो गया और हृदय अुल्लासमय हो गया। वह समय ११ से १२ बजेके बीचका था। थकनेके बजाय मैं ताजा हो गया। अिसलिअे आकाशके नीचे बिस्तर पर जहां पड़ा था, वहांसे अुठकर कोठरीमें जाकर और लालटेन जलाकर मुझे जो लिखना था वह लिखने बैठा। वह लेख पाठकोंने देख लिया होगा।

क्या मैं यह सिद्ध कर सकता हूं कि वह अीश्वरी प्रेरणा थी और मेरे संतप्त मस्तिष्ककी तरंग नहीं थी? अैसा प्रश्न पूछा गया है। अूपर किये हुअे वर्णनको जो नहीं मान सकता, अुसके लिअे मेरे पास दूसरा सबूत नहीं है। पूछनेवाला जरूर कह सकता है कि मेरा वर्णन केवल आत्मवंचना है। अैसा और लोगोंके बारेमें भी हुआ है। मैं यह तो हरगिज नहीं कह सकता कि मेरे विषयमें आत्मवंचनाकी संभावना थी ही नहीं। अैसा कहूं तो अुसे साबित नहीं कर सकता। मगर अितना जरूर कहता हूं कि सारी दुनिया मेरा कहना न माने और विरुद्ध राय दे, तो भी मैं अपने अिस विश्वास पर कायम रहूंगा कि मैंने भीतरी आवाज सुनी और मुझे अीश्वर-प्रेरणा हुअी है।

परंतु कुछ लोग तो अीश्वरके अस्तित्वसे ही अिनकार करनेवाले हैं। वे तो यही कहते हैं कि अीश्वर-जैसी कोअी शक्ति ही नहीं, वह केवल मनुष्यकी कल्पनामें ही रहता है। जहां अिस विचारका बोलबाला हो, वहां यह कहा जा सकता है कि किसी भी चीजका अस्तित्व नहीं है। क्योंकि अैसे लोगोंको

तो सब कुछ कल्पनाके घोड़े जैसा ही लगना चाहिये। अैसे लोग भले ही मेरे कथनको कल्पनाका अेक नया घोड़ा मानें। मगर अुन्हें भी समझना चाहिये कि जब तक यह कल्पना मुझ पर अधिकार जमाये हुअे है, तब तक मैं अुसीके आधीन रहकर काम कर सकता हूं। सच्चीसे सच्ची चीजें भी सापेक्ष या औरोंके प्रमाणमें ही सच्ची होती हैं। सम्पूर्ण और शुद्ध सत्य तो केवल अीश्वरके बारेमें ही हो सकता है। अपने लिअे तो जो आवाज मैंने सुनी, वह मुझे अपने अस्तित्वसे भी ज्यादा सच मालूम हुअी है। अैसी आवाजें मैंने पहले भी सुनी हैं। अुनके अनुसार चलकर मैंने कुछ खोया नहीं, बल्कि बहुत कुछ पाया है। और दूसरे लोगोंका भी, जिन्होंने अैसी आवाजें सुननेका दावा किया है, यही अनुभव है।

* * *

अेक दूसरा सवाल भी जरा सोच लेने लायक है। जिस अनशनके दरमियान कअी होशियार डॉक्टरोंकी अुपस्थिति और मदद रहती हो और वे अत्यंत प्रेमपूर्वक अुपवासीकी देखभाल कर रहे हों और अुसे रास्ता बता रहे हों, जहां अपवासीको अनेक प्रकारसे आराम दिया जाता हो — और मेरे लिअे यह सब कुछ हुआ है — वह अनशन क्या अीश्वर-प्रेरित माना जा सकता है? अिस तरह होनेवाली आलोचनामें कोअी सार नहीं, यह तुरंत नहीं कहा जा सकता। अिसमें तो कोअी शक नहीं कि मेरे लिअे जो-जो सुविधाअें कर दी गअी थीं, वे न होतीं और किसी अेकान्त स्थानमें किसीकी मददके बिना अुपवास किया होता, तो जिस प्रेरणाका दावा मैंने किया है, वह ज्यादा चमक अुठती।

अिस तरह आलोचनाको अेक हद तक मान लेने पर भी मुझे कहना चाहिये कि प्रेमी मित्रोंकी अुदारताका मैंने जो अुपयोग किया है, अुसके लिअे न मुझे पछतावा है, न शर्म। मैं मृत्युके साथ लड़ रहा था। अिसलिअे मेरी प्रतिज्ञाके विरुद्ध न जानेवाली जितनी मदद मिल गअी, अुस सबको मैंने अीश्वरकी भेजी हुअी मदद मानकर नम्रतापूर्वक स्वीकार कर लिया।

कोअी मुझसे पूछे कि अनशनके अुचित होनेके बारेमें मुझे अब कोअी शंका है या नहीं? तो मैं कह सकता हूं कि मुझे जरा भी शंका नहीं; अितना ही नहीं, अिस अनुभवके मेरे पास तो अत्यंत मीठे ही स्मरण हैं। यद्यपि शरीरकी व्यथा तो काफी थी, परंतु अुस समयकी अवर्णनीय आन्तरिक शांतिसे अुस व्यथाका पूरी तरह बदला मिल गया। शांति तो मुझे अपने सभी अनशनोंमें मिली है, किन्तु अिस आख़िरी अनशनकी शांति बहुत ज्यादा थी। शायद अुसका कारण यह था कि अिस बार मेरी दृष्टि अनशनके किसी भी परिणाम

पर नहीं थी। पहलेके अनशनोंमें मुझे अैसे परिणामोंकी आशा रहती थी, जो कुछ न कुछ साफ तौर पर दिखाअी दे सकते हैं; जब कि अिस अुपवासके बारेमें अैसी कोअी बात थी ही नहीं। अितनी श्रद्धा जरूर थी कि अिसके परिणाम-स्वरूप आत्मशुद्धि और दूसरे साथियोंकी शुद्धि तो थोड़ी बहुत होगी ही। साथी अितना जरूर समझ लेंगे कि भीतरी शुद्धिके बिना सच्ची हरिजनसेवा असंभव है। लेकिन अैसे परिणामका अन्दाज लगानेका हमारे पास कोअी पैमाना नहीं होता। अिसलिअे परिणाम पर बाह्य दृष्टि रखनेके बजाय अुन अिक्कीस दिनोंमें मैं मुख्यतः अन्तर्मुख रहा, यह कहा जा सकता है।

* * *

अिस अनशनके स्वरूप पर थोड़ा ज्यादा विचार कर लेना जरूरी है। क्या वह केवल देहदमन था? मेरा दृढ़ विश्वास है कि केवल देहदमनके लिअे किया गया अुपवास डॉक्टरी दृष्टिसे शरीरको कुछ लाभ ही पहुंचाता है। अिसके अलावा अुसका कोअी खास असर नहीं होता। यह मैं जानता हूं कि मेरा अुपवास देहदमनके लिअे बिलकुल नहीं था। जिस समय अुपवास किया गया था, वह समय मेरी कल्पनाके बाहर था। अिस अरसेमें लिखे गये मित्रोंके नामके पत्र यह साफ बताते हैं कि तात्कालिक अनशन मेरी दृष्टिके बिलकुल बाहर था। मेरे लिअे यह अनशन हृदयसे निकली हुअी अीश्वरके प्रति याचना या प्रार्थना थी। जैसे-जैसे मैं प्रार्थनाका अनुभव करता आया हूं, वैसे-वैसे मुझे साफ मालूम होता गया है कि थोड़े-बहुत अनशनके बिना शुद्ध प्रार्थना असंभव है। यहां अनशनका विस्तृत अर्थ करना जरूरी है। अनशनका अर्थ है अपनी सब अिन्द्रियोंको पोषण देनेकी क्रिया थोड़े-बहुत अंशोंमें बन्द कर देना। प्रार्थना हृदयगत वस्तु है। प्रार्थना करता हुआ मनुष्य न आंखोंसे दूसरा कुछ देखता है, न कानोंसे दूसरा कुछ सुनता है, न दूसरी अिन्द्रियोंका व्यापार करता है; अुसके विचार भी सिर्फ प्रार्थनामें ही लगे रहते हैं। तो फिर अैसे समय खानेकी क्रिया मन्द हो जाय या बिलकुल बन्द हो जाय तो अिसमें क्या आश्चर्य? अिस प्रकार जो मनुष्य प्रार्थनामें ही लगा हुआ होता है, अुसे और कुछ भी क्रिया करना नहीं सूझ सकता। अैसा अेक समय जरूर आ सकता है, जब मनुष्य केवल प्रार्थनामय हो जाता है। अिसीका अर्थ है साक्षात्कार। अैसे समय तो वह खाता-पीता या कुछ भी काम करता हो, तो भी प्रार्थना ही करता है, क्योंकि अुसकी प्रवृत्तिमात्र अेक महायज्ञ है। वह स्वयं शून्यवत् बनकर रहता है। अिसे सन्तोंने 'सहज समाधि' कहा है। असंख्य मनुष्य अनशनमय प्रार्थना करते हों, तो अुनमें से थोड़े-बहुत ही 'सहज समाधि'

प्राप्त कर सकते हैं। अतः मेरे जैसे मामूली आदमीके लिअे तो सर्वेन्द्रिय-दमनसे ही प्रार्थनाका आरंभ हो सकता है। अनशनका अिस प्रकार विचार करने पर आध्यात्मिक दृष्टिसे होनेवाला अनशन दुःखतप्त हृदयका नाद है। अुसमें आत्माकी परमात्मामें लीन हो जानेकी तीक्ष्ण वृत्ति होती है। यह तो मैं नहीं जानता कि मेरा अनशन कहां तक अिस प्रकारका था। पर मैं यह जानता हूं कि वह अनशन सिर्फ अिसी दृष्टिसे हुआ था। अीश्वर-प्रेरणाकी मेरी भूख बहुत वर्षोंकी है। यह भूख अभी तक तृप्त नहीं हुअी है। मैं यह कह सकता हूं कि मेरा सारा पुरुषार्थ अिसके लिअे है कि मेरा छोटेसे छोटा काम भी अीश्वर-प्रेरित ही हो।

परिणामकी अपेक्षा न होने पर भी मैं अिस अनशनके कुछ परिणाम देख सका हूं। अिस अनशनसे प्रेरित होकर कुछ साथियोंने अपनी शुद्धि की है। मेरा अनशन सिर्फ अुन्हीं साथियोंके दोषोंसे सम्बन्ध नहीं रखता था, जिन्हें मैं जानता था। वह हरिजनसेवामें लगे हुअे साथीमात्रकी और मेरी अपनी शुद्धिके लिअे था। अुपवासको पूरा हुअे अभी थोड़ा ही समय हुआ है। अिस बीच भी जो प्रमाण मेरे पास आये हैं, अुनसे जाहिर होता है कि अनशनसे साथियोंमें शुद्धि हुअी है और हो रही है। यह भी कहा जा सकता है कि अिस अनशनसे यह बात काफी स्पष्ट हुअी है कि हरिजनसेवाका काम केवल धार्मिक प्रवृत्ति है, वह धार्मिक दृष्टिसे होना चाहिये और अुसमें धार्मिक वृत्तिवाले शुद्ध हृदयके सेवक और सेविकाअें होनी चाहियें।

*　　　*　　　*

अस्पृश्यता-निवारणका अर्थ अितना ही नहीं है कि हरिजनोंकी आर्थिक और सामाजिक स्थितिमें सुधार हो जाय। अिस कामका ध्येय अिससे बहुत आगे बढ़ा हुआ है। अस्पृश्यता अनादि कालसे चली आ रही अीश्वरनिर्मित व्यवस्था है, अैसा माननेवाले असंख्य हिन्दुओंके हृदयोंको हिलाना है। यह तो स्पष्ट ही है कि अिस ध्येयको हम प्राप्त कर लें, तो हरिजनोंकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति अपने आप सुधर जायगी। अुनकी हीन दशाका सबसे बड़ा कारण अस्पृश्यताका भूत है। परन्तु धर्मके नाम पर होनेवाला यह अधर्म दूर करने और अूंच-नीचकी भावनाको बिलकुल मिटा देनेका अर्थ होगा हिन्दुओंके हृदयका जबरदस्त परिवर्तन कर देना और हिन्दूधर्मको धीरे-धीरे नष्ट करनेवाले जहरको निकाल डालना। अैसा परिवर्तन मनुष्यमात्रमें रहनेवाली दयाकी भावनाको जागृत करनेसे ही हो सकता है। यह जागृति अनशनमय प्रार्थनासे संभव है, अैसा मेरा दृढ़ विश्वास है और अैसी पूर्वजोंकी भी साक्षी है।

अिसलिअ दिन-दिन मेरा यह विश्वास पक्का होता जा रहा है कि प्रार्थना रूपी अनशनोंकी अेक शृंखला बनानी चाहिये, जिसमें योग्य पुरुष और स्त्रियां अपना-अपना हिस्सा दें और अुस शृंखलाकी कड़ियां बन जायं। यह शृंखला कैसे बने, यह सब मैं अभी साफ तौर पर नहीं जानता, लेकिन अुसके लिअे खूब कोशिश कर रहा हूं। अगर यह शृंखला तैयार की जा सकती हो, तो मेरा दृढ़ विश्वास है कि अुससे सुधारक, सनातनी और हरिजन तीनोंको लाभ होगा। जगत भी अुस लाभसे वंचित नहीं रहेगा। हरिजन भाअी-बहनोंके पत्र बताते हैं कि अुनमें मेरे अनशनसे विशेष जागृति हुअी है। हिन्दुस्तानके बाहरसे आनेवाले अनेक पत्र बताते हैं कि व्यक्तियोंके हृदयमें वहां भी जागृति हुअी है। और अगर मेरे जैसे अेक आदमीके अपूर्ण अनशनसे अितनी जागृति हो सकती है, तो जब अनशनोंकी अविच्छिन्न शृंखला कायम होगी और अुसमें अनेक निर्दोष भाअी-बहन आडम्बरके बिना, डॉक्टरों वगैराकी मददकी आशाके बगैर और दूसरी चिन्ताके बिना अपना बलिदान देंगे, तो अुसका परिणाम कितना बड़ा होगा और अुसका असर कहां तक पहुंचेगा, अिसका हिसाब कौन लगा सकता है?

ता० ९-७-१९३३

अेक अनोखा अग्निहोत्र

१

[श्री महादेवभाअीके साथ मुलाकात]

[पू० गांधीजीके अुपवासके सम्बन्धमें विस्तारपूर्वक और विश्वासपात्र तफसील जाननेका साधन महादेवभाअी हैं। अुनसे लेख तो मिल नहीं सकते थे क्योंकि वे कैदी थे! पर अुनसे प्रश्न करके अुत्तर तो प्राप्त किये जा सके थे अुन्हें यहां प्रश्नोत्तरके रूपमें दे रहे हैं। —संपादक, ह० बं०]

अकल्पित ?

प्र० — आप अिस महाप्रसंग पर 'हरिजनबन्धु' के लिअे लेख नहीं दे सकते?

अु० — मैं दोहरा कैदी ठहरा; अेक सरकारका, परन्तु अुससे भी ज्यादा बापूका। अिसलिअे लेख तो मैं कैसे दे सकता हूं?

प्र० — किन्तु आपसे प्रश्न पूछूं तो? आपसे जितना खुलकर प्रश्न पूछ सकता हूं, अुतना खुलकर गांधीजीसे नहीं पूछ सकता; और गांधीजीको अितनी तकलीफ देनेकी मैं धृष्टता भी नहीं कर सकता।

अु० — यह अेक दृष्टि है जरूर। भले ही पूछिये। मैं जवाब दूंगा।

प्र० — धन्यवाद। क्या अिस अुपवासकी अुत्पत्ति समझायेंगे?

अु० — समझा सकूं तो जरूर समझाअूं। घटनाओंकी सांकलें कैसे जुड़ती हैं, यह भला कौन अिन्सान जान सका है? कभी कौवेके बैठनेसे ताड़ गिर पड़ता है, कभी बत्ती सुलगानेसे सुरंग फटती है, कभी अेकाअेक ज्वालामुखी फूट पड़ता है और भूकंप हो जाते हैं। हम कच्ची कल्पनाअें लगाते हैं। असली सांकल तो वह **महा सुनार** ही जोड़ सकता है। मगर स्थूल सांकल मैं जोड़ देता हूं। १४ अप्रैलको मेजर भंडारी गये और नये सुपरिंटेंडेंट कर्नल मार्टिन आये। अुन्होंने मजाक किया: 'अब तो अुपवास नहीं करेंगे न?' गांधीजीने कहा: 'आशा तो यही है कि नहीं करना पड़ेगा।' २८ तारीखको अेक हरिजन युवक

कभी प्रश्न लेकर आया था। अुनमें पहला ही प्रश्न यह था: 'अब आप अुपवास तो नहीं करेंगे?' गांधीजी कहने लगे: मुझे नहीं लगता। २९ तारीखकी रातको कुछ अुद्वेगजनक संवाद हुअे थे, किन्तु हमेशाकी तरह ८ बजे शांतिसे सो गये। वल्लभभाअीके साथ कुछ न कुछ विनोद तो होता ही रहता था। मैं अेक पुस्तक पढ़नेमें लीन था, अिसलिअे रातको बारह बजे सोया। अुसी समय वे अुठे तो मेरी लालटेन देखी होगी। डरकर मैंने लालटेन बुझा दी और सो गया। लेकिन साढ़े बारह बजे तो वे खुद ही अुठ गये थे। हमें किसीको पता नहीं। पौने चार बजे हम सब सदाकी भांति अुठे और चार बजे प्रार्थना करने बैठे। कौन जाने कैसे पिछले दो महीनेमें किसी दिन नहीं, लेकिन आज ही सबरे मैंने प्रार्थनामें 'अुठ जाग मुसाफिर भोर भअी, अब रैन कहां जो सोवत है' गाया। पिछले अुपवासका आरंभ करते समय अुन्होंने खुद ही अिसे गवाया था। प्रार्थना पूरी हुअी अुस समय तक हमें किसीको कुछ खबर नहीं थी। मुझे आधी रात तक लालटेन जलानेके लिअे डांटेंगे, यह डर था। मुझसे पूछा: 'कब सोये थे?' मैंने जवाब दिया तो बोले: 'मुझे लगा कि तुम जाग रहे हो। अच्छा, तो तुरंत सो जाओ और फिर साढ़े पांच बजे अुठ जाना'। मैं कुछ न समझा। मैं गया कि वल्लभभाअीके हाथमें अपना लिखा हुआ बयान बापूने रख दिया और साथ ही साथ कह दिया: 'वल्लभभाअी, शांत चित्तसे पढ़ लो। अिसमें बहसकी तो गुंजाअिश ही नहीं, अिसलिअे बहस न करना।' सरदारने पढ़ लिया। अेक बार पढ़ा, दूसरी बार पढ़ा और स्तब्ध हो गये। मैं साढ़े पांच बजे अुठा। मुझे छगनलालने कहा: 'बापूने अिक्कीस दिनका अुपवास शुरू किया है।' मैं चौंका। बापू और वल्लभभाअी चक्कर काट रहे थे, वहां गया। आधा घण्टा हम घूमे। बापूने खुद दो-चार वाक्य कहे होंगे, मगर हममें से किसीने अेक शब्द भी नहीं निकाला। अैसे महाप्रसंग पर न विचारको मार्ग मिलता है, न आंसुओंको। आध घण्टे बाद वल्लभभाअीने मेरे सामने मौन खोला: 'अिनसे ज्यादा पवित्र कोअी है? यह किसे मालूम है कि अीश्वरको अिन्हें रखना है या अुठा लेना है? किन्तु अिनके मन और आत्माका प्रवाह जिस दिशामें बहता हो, हम तन, मन और वचनके मौनके साथ अुसके अनुकूल बनें।' अिस मौनको जिन अडिग सरदारने निहायत वफादार सिपाहीके अनुशासनके अनुसार आज तक रखा है और आगे भी रखेंगे।

मगर मैं तो सरदारकी बातोंमें बह गया। अितना कहनेके बाद थोड़े शब्दोंमें बापूका दिया हुआ वर्णन देता हूं: 'भाअी, कुछ समयसे अिक्कीस और चालीस दिनके बीच द्वंद्व चल रहा है। क्या सभी विचार मनुष्य दूसरोंको

बताता है ? बता सकता हूं ? तीन दिनसे नींद गायब है। मुझे नींद न आये, अैसा हो सकता है ? पर अिन तीन दिनसे घण्टों नींद नहीं आती; रातको दो बजे अुठकर काम करता होअूं तो भी सवेरे लिखते समय अेक बार भी अूंघ नहीं आती, अंगड़ाअी लेने तककी जीमें नहीं आती। मानो तीन दिनसे किसी महाप्रलयकी तैयारी हो रही हो! अिस तरह अुथल-पुथल कबसे मच रही थी, यह कहना कठिन है। किन्तु कअी बार अनेक प्रसंगों पर अनशनके विचार आते थे और अुन्हें दिलसे निकालता ही रहता था। रातको सोया तब पता नहीं था कि आज कुछ आ रहा है। किन्तु ग्यारह बजे बाद जाग गया। तारोंके दर्शन करता रहा, रामनाम लिया, किन्तु घूम-फिरकर यही विचार आता : अितना घबरा रहा है, तो अुपवास क्यों नहीं करता? कर डाल न। यह मंथन भी काफी चला। साढ़े बारह बजे साफ अचूक आवाज आअी : तुझे अुपवास करना ही पड़ेगा। निश्चय हो गया। फिर यह निश्चय करनेमें जरा भी समय न लगा कि अिक्कीस दिनका अुपवास करना है। लेकिन कैदी होनेके कारण आठ दिन बाद करना चाहिये। हरिजनसेवाका काम भी अिसके बिना असंभव है। अितना न करूं तो हरिजनकार्यमें गन्दगी घुस जायगी और अुसका नाश हो जायगा। अुठा, तुरन्त बयान लिखने लगा और तुम प्रार्थनाके लिअे आये, तब मैंने आखिरी वाक्य पूरा किया था।'

हमारे पापके लिअे

प्र० — धन्यवाद। आप अपने मनकी स्थिति बयान कर सकेंगे?

अु० — कठिन काम है। मेरे दिलकी हालत गांधीजी जानते हैं। अपने आंसुओंसे मैंने अुनके चरण धोये हैं। अिसलिअे जरा शांत होकर जवाब देनेका प्रयत्न कर सकता हूं। बापूकी सेवामें मैं बूढ़ा हो चला। अुनके जीवनके अनेक अमूल्य अवसरों पर अुनके चरणोंमें रहा। अुनके हिन्दुस्तानके सभी अुपवासोंके समय अुनके चरणोंके सामने होनेका मुझे सौभाग्य मिला — सन् १९१८ के मजदूरोंके अुपवाससे लेकर आज तक। पंद्रह साल पहले अुन्हें विन्ध्याचल जैसा बड़ा देखा था, तो आज अुन्हें हिमालय जैसा बड़ा देख रहा हूं; पर मैं तो जितना बड़ा था, अुतना ही रहा। अनेक पाप हुअे हैं, होते हैं, पश्चात्ताप होता है और अन्तमें जहां था, वहीं हूं। यह कोअी कम दुर्दशा है? अिसी कारण बापूने अुपवास किया है, यह कहूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अिसी अंकमें आप अेक बहनकी करुण कहानी पढ़ेंगे।* अुसमें और मुझमें

---

* देखिये 'अेक पवित्र अिकरार' ह० बं०, ता० ७-५-१९३३, भाग १, अंक ९, पृष्ठ ६६।

फर्क अितना ही है कि अुसने पाप-कर्म किये, किन्तु अुसे पापका भान नहीं था। मैं यह नहीं कह सकता कि मुझे अपने पापोंका भान कभी नहीं था। अिसलिअे कोअी यह न माने कि यह अुपवास अुस बहनके करुण अिकरारका फल है। लेकिन यह कहूंगा कि अनेक हृदयोंमें दबे और छिपे हुअे पापोंके अिकरारका परिणाम है।

प्र० — मेरा आपको अिन बातोंमें घसीटनेका अधिकार नहीं। मैं तो अुपवासके बारेमें आपकी राय पूछना चाहता था। मैंने सुना था कि आप, सरदार वल्लभभाअी वगैरा पूज्य बापूजीके अुपवासके खिलाफ लड़े थे।

अु० — कहां सुना? देवदासकी बात कहते हों तो ठीक है। देवदास तो अपने पिताका पुत्र है न? अुसके धधकते हुअे आंसुओंसे अुबलते हुअे अुपालम्भका मैं साक्षी हूं। लेकिन सरदारके बारेमें मैंने जो अूपर कहा है, वह अक्षरशः सत्य है। सरदार तो कोअी बहस करे, यह सहन नहीं कर सकते। बहस करने-वालोंसे वे कहते हैं: 'अिन्हें न सताओ। अिन तिलोंमें बहुत तेल नहीं है। ज्यादा कुचलोगे तो तेल नहीं निकलेगा, बल्कि अंगारे झरेंगे।' अपनी स्थिति मैं बयान कर चुका। मेरी बुद्धि कुंठित हो जाती है और कअी बार मैं प्रश्न पूछता हूं, किन्तु वह केवल प्रणिपात और सेवाभावसे अुनसे समझनेके लिअे। अीश्वरका, पुण्य और पापका तथा सत्यका जो दर्शन मैंने बापूमें पाया है, वह और कहीं नहीं पाया। अिसलिअे पंगु आचरणके होते हुअे भी मेरी बुद्धि यह शंका करनेका साहस नहीं कर सकती कि अुनका निर्णय भूलभरा होगा।

हरिजनोंके लिअे

प्र० — तो मैं आपके साथ बुद्धिके प्रयोग करने नहीं आया। यह अुपवास, आपसे जितना मैंने समझा है, अुससे तो मुझे लगता है कि अपने चारों तरफकी अशुद्धियोंसे घबराकर गांधीजीने किया है। तब यह क्यों कहा जाता है कि वह हरिजनोंके लिअे हुआ है?

अु० — कारण हरिजनकार्यके सिवाय आजकल गांधीजीको दूसरा कोअी विचार ही नहीं आता और अुसके चारों तरफ ही सारी बातें जमा हो जाती हैं। अशुद्धि किसकी? अशुद्धियां तो बहुतसी मौजूद हैं। शराबखाने मौजूद हैं, दूसरे कअी नरकखाने मौजूद हैं। किन्तु हरिजनोंका काम करनेवालोंमें अशुद्धि हो, तो यह आन्दोलन कैसे चल सकता है? यह सारी लड़ाअी शुद्ध धार्मिक है, हिन्दू धर्ममें घुसी हुअी भयंकर गंदगीको निकालनेके लिअे है। अिस गंदगीको अशुद्ध सेवक कैसे निकाल सकते हैं? किन्तु अिससे यह माननेका कारण नहीं कि

सभी या अधिक सेवक अशुद्ध हैं। लेकिन अगर अेक भी सेवक भयंकर पापाचारी हो, तब भी आन्दोलन तो ठप ही हो जाय न?

प्र० — पर यह लड़ाओी तो अच्छी तरह चल रही है। सब अपना-अपना हिस्सा अदा कर रहे हैं। विनोबा जैसे ऋषि हरिजनसेवाके लिअे क्षेत्रसंन्यास लेकर बैठ गये हैं। अनेक पवित्र बहनें अिस काममें अपना पूरा समय दे रही हैं। विद्यागौरी जैसी पूज्य बहन हरिजन मोहल्ला साफ करे, दस साल पहले अिसकी कल्पना किसने की थी? अप्पा पटवर्धन जैसे साधु जेलमें बैठे भंगीसेवाके व्रतके लिअे शरीर छोड़नेकी प्रतिज्ञा करें, यह कोओी अैसी वैसी बात है? ठक्कर बापा जैसे पुण्यात्मा अिसी कामके लिअे फकीरी लिये बैठे हैं, यह क्या कम है?

हृदयकी ज्वाला

अु० — आप ठीक कहते हैं। मेरा मन भी अिसी बहसमें पड़ रहा था। गांधीजीके मनने किस तरह काम किया था और आज वह कैसे कर रहा है, यह अुनके शब्दोंमें कहनेकी कोशिश करूंगा। अनेक बातोंमें से जमा किये हुअे वचन यहां दूंगा। यज्ञके अिस प्रथम सप्ताहमें अुनकी वाग्धारा अैसी चल रही थी कि अुससे पन्नों पर पन्ने भर जायं। यहां तो अुसमें से थोड़ा ही दिया जा सकता है: "मुझमें निराशा पैदा नहीं हुओी है। क्या मैं यह नहीं जानता कि हरिजनकार्य चल रहा है? किन्तु पिछले तीन-चार मासमें कुछ बातें अैसी हुओी हैं, जो मेरे हृदयमें शूलकी तरह चुभ गओी हैं। महादेव मुझे याद दिलाता है कि नाटार-हरिजनोंके झगड़ेकी खबर आओी, अुस दिन मैंने सन् २४ के अिक्कीस अुपवासोंको याद किया था। मेरे खयालसे नाटार लोग मद्रास प्रान्तमें हरिजनों पर जो जुल्म ढा रहे हैं, अुनके लिअे चालीस अुपवास करूं तो भी कम हैं। हरिजन बहनें बेचारी फटे-टूटे कपड़े पहनकर अपनी लाज ढांकें, यह भी अुन लोगोंको असह्य है, और वह भी धर्मके नाम पर! राजपूताना करोड़पति मारवाड़ियोंकी भूमि होने पर भी वहां हरिजनोंको साफ पानीकी बूंद भी पीनेको नहीं मिलती; पशुओंके जिस हौजमें मनुष्य आबदस्त लेते हैं, अुसमें से अुन्हें कहीं-कहीं पानी मिलता है। यह शर्मकी बात किसे कही जाय? अलाहाबादके अछूत मोहल्लों और कलकत्तेकी अछूत बस्तियों जैसे नरक और किसी देशमें होंगे? यह बात ठीक है कि हम काम करते हैं, लेकिन हम डॉ० आंबेडकर जैसोंके दिलमें अपने बारेमें विश्वास क्यों पैदा नहीं कर सकते? हमारे शुद्ध धार्मिक आन्दोलनको बड़े-बड़े सनातनी कानून-पंडित राजनैतिक चाल बताते हैं, यह भी हमारी बदकिस्मती ही है न? अैसे दुःखमें डूबे हुअे लोगोंका राजनीतिकी शतरंजके मोहरोंके रूपमें अुपयोग

हो रहा है, यह कितनी दुःखद बात है! बड़े-बड़े धर्म-धुरन्धर अैसे हलाहल पापका पुण्यके रूपमें संग्रह करें और अपनी विद्वत्ताके बल पर अधर्मको धर्म सिद्ध करनेके लिअे आकाश-पाताल अेक करें, अिससे ज्यादा अफसोसकी बात और क्या हो सकती है? रावणको हम राक्षस कहते हैं, पापकी मूर्ति कहते हैं, लेकिन रावण बेचारेने तो सीतामाताका मलिन स्पर्श तक नहीं किया था। लेकिन आजकलके हमारे रावण? ये अुससे कहीं बुरे हैं। हम गुलामीके कष्टोंको जानते हैं, पर हमारे देशकी गुलामी पर तो धर्मकी मुहर लगी हुअी है। अिस भयंकर राक्षसके खिलाफ किस तरह लड़ें? मैं हिन्दू धर्मका पुजारी हूं, हिन्दू धर्मके कारण ही मैं अीसाअी धर्म और अिस्लामसे प्रेम करता हूं। अिस हिन्दू धर्ममें अैसे भीषण रूप धारण करनेवाली अस्पृश्यता! तब क्या मैं धर्मका त्याग कर दूं, यानी हिन्दू धर्मको छोड़ दूं? किन्तु अुसका त्याग कर दूं, तो मेरा तो सर्वस्व चला जाय। फिर भी अस्पृश्यताके कलंकवाला यह धर्म मेरे कामका नहीं। तब मैं करूं क्या? मुझे हिन्दू धर्ममें ही बताया हुआ रामबाण अुपाय करना पड़ेगा। यही अुपाय मैंने अपनाया है। यह लड़ाअी सिर्फ बुद्धिकी ही नहीं रही। बुद्धिसे मैं महारथी शास्त्रियोंको किस तरह मात करता? बुद्धिसे क्या गुंडेपनको रोक सकता था? बुद्धिसे मैं नाटारोंको कैसे समझा सकता हूं कि हरिजन अुनके भाअी हैं?

"पर आप कहते हैं कि हम कुअें खोद रहे हैं, पाठशालाअें खोल रहे हैं, छात्रवृत्तियां दे रहे हैं, संघ चला रहे हैं। ये साधन ठीक हैं। किन्तु आध्यात्मिक आधारके बिना ये सब पंगु हैं। अिस तरह पैवन्द लगा-लगाकर आकाशको ढंकना हो, तो चंगेजखां जैसा कोअी निकल सकता है, जो लाखों कुअें खुदवा दे, पाठशालाअें खुलवा दे, सवर्ण हिन्दुओंसे अुनके महल खाली कराकर अुनमें हरिजनोंको बसा दे। पर अिससे दिलोंमें बसी हुअी अस्पृश्यता कैसे निकलेगी? यह अुपवास अुस राक्षसको भस्म करनेके लिअे है। गणितसे अिसका निवारण होता हो, तो हम गणितियोंको अिकट्ठा करें। पर अिसमें तो आध्यात्मिक बलकी जरूरत है, यह धर्मयुद्ध है; और धर्मयुद्धमें जिसे सेनापति बनना है, अुसे मरकर जीनेका मंत्र बताना है। अलबत्ता, हमें समझना चाहिये कि जीवन-मरण हमारे हाथमें नहीं, यह अुपवास सुझानेवाले परम शक्तिमान प्रभुके हाथमें है। यह अुपवास न करूं तो मैं दस साल तक जिन्दा रहूंगा, अैसी कोअी मुझे गारंटी देता हो तब तो ठीक है। पर वह तो कोअी देता नहीं। अीश्वरको मुझे जिलाना हो तो जिलाये। नहीं तो दो दिनमें प्राण ले ले। यह भी हो सकता है कि मेरे जीते जी कोअी महाशक्ति रुकी बैठी हो और मेरे

प्राण निकलने पर वह शक्ति प्रगट हो जाय। सब बातोंकी अेक बात कह दूं। दूसरा काम करनेके लिअे जैसे खानेकी जरूरत पड़ती है, अुसी तरह अिस कामको पार लगानेके लिअे **न** खानेकी जरूरत है। शरीरको ही नहीं, बल्कि मन और अिन्द्रियमात्रको भी अुपवासकी जरूरत है।"

'रामरससे जीअूंगा'

प्र०—माफ कीजिये। लेकिन क्या आपको यह सब भयानक नहीं लगता?

अु०—मेरे भयकी क्या बिसात है? हमारी सारी जिन्दगी अनेक डर जमा करती रही है। मेरे डरके बनिस्बत गांधीजीकी अिच्छाका महत्त्व ज्यादा है। क्योंकि अुस अिच्छाकी सरस्वती औश्वरेच्छाकी गंगामें मिल गअी है।

प्र०—किन्तु आप तो अूपर कह चुके हैं कि गांधीजीने कह दिया है कि धार्मिक सेनापतिको मरकर जीनेका मंत्र सिखाना चाहिये। तो फिर यह कहनेका कोअी अर्थ है कि गांधीजीको जीनेकी अिच्छा है?

अु०—अक्षरशः सच है। गांधीजीने यदि अिस तरह यह प्रतिज्ञा ली हो कि अिस अुपवाससे निश्चित रूपसे मौत ही होगी, तब तो गांधीजी झूठे ठहर सकते हैं। अुन्होंने प्रतिज्ञाको प्रगट करते समय स्वयं जो कुछ कहा है वह अक्षरशः सच है। हां, अुन्हें यह ज्ञान तो था और है कि अुसमें जोखम भरी है। अेक हरिजन भाअी खुद अुपवास शुरू करनेके लिअे कहने आये थे। दूसरे यह प्रार्थना करने आये थे कि नाममात्रके भोजन पर या दो मोसंबियों पर रहिये। अुनके समक्ष गांधीजीने ये अुद्‌गार प्रगट किये थे: "मैं तो अिन अिक्कीस दिनोंमें रामरस पीता रहूंगा। रामरस मुझे जीता न रख सकेगा, तो मोसंबीका रस कैसे जिलायेगा? जिसे अस्पृश्यताके रावणका नाश करना हो, अुसे हर समय रामरस पीना ही पड़ेगा। और मेरी रामभक्ति हृदयकी होगी—और अवश्य है—तब तो राम अिस शरीरको नष्ट नहीं होने देगा। क्योंकि अभी तक यह अिच्छा मौजूद है कि रामको अर्पण किया हुआ शरीर राम बनाये रखे। पर तुम हरिजनोंको तो अेक बात याद रख लेनी चाहिये। जो रामबाण अुपाय मैंने अपनाया है, अुसके अनुकूल बनो। यह भी समझ लो कि खुद तुम्हारे लिअे भी दूसरा कोअी अुपाय नहीं है। 'स्पृश्य' हिन्दूको जो कहना हो कहे, जो करना हो करे, तुम तो अपने हृदय और शरीरके सारे मैल धोकर सच्चे हरिजन बन जाओ।"

पर वे हरिजन तो बेचारे घबरा रहे थे। 'आप जीते हैं तब तक हमारा रक्षक है। आप न जीयेंगे तो हमारा सब कुछ चला गया समझिये।' अिसके जवाबमें बापूने कहा:

"तुम्हारा और मेरा रक्षक राम बैठा है। मुझे अपना रक्षक मानोगे तो पापमें पड़ोगे। और तुमसे मैंने कह दिया कि रामरस तो जिलानेवाला है। फिर भी कहता हूं कि यदि शरीर नष्ट हो जाय, तो क्या हुआ? जो लोग मर गये, वे क्या काम नहीं करते? दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द और रामतीर्थ — अिन सबके चोले नष्ट हो गये, तो क्या वे काम करते बन्द हो गये? मैं तो प्रत्यक्ष देख रहा हूं कि वे जितना काम आज कर रहे हैं, अुतना शायद जीते जी नहीं करते थे। अिसका कारण यह है कि सत्य अमर है और असत्य प्रतिक्षण नाशवान् है। शरीर असत्य है। असत्य रूपी जो अुनके शरीर थे, अुनका नाश हो गया। परन्तु सत्यरूपी अुनके शरीरोंका — अुनकी पवित्रता, अुनके त्याग, और अुनके प्रेरित किये हुअे जीवन-मंत्रोंका नाश नहीं हुआ। वे आज हमें जिला रहे हैं। अुनके शरीर रूपी असत्यके वृक्षकी जड़ें सूख गअी हैं; लेकिन अुनके सत्यके वृक्षके फल आज भी हम चख रहे हैं और चखते ही रहेंगे।"

प्र० — मैं यह पूछने ही जा रहा था कि हरिजनोंके लिअे क्या सन्देश है, अितनेमें आपने मुझे ये शब्द सुना दिये। अिसके लिअे मैं आपका आभार मानता हूं।

अु० — मैं आपसे कहता हूं कि गंगाजीका जो अखंड प्रवाह वह रहा है, अुसमें से ये कुछ बूंदें ही देनेकी कोशिश है। अिसमें भी संस्कार चाहिये न? कोअी अिस गंगामें पवित्र हो जायगा। अुसने ये शब्द याद रखे हों या न रखे हों, अिसकी क्या चिन्ता है? और मेरे जैसा लेनेकी कोशिश करनेवाला ले-लेकर पोली हथेलीमें कितना रख सकता था?

हिन्दू धर्मकी जड़ी-बूटी

प्र० — आपने पहले कहा कि हिन्दू धर्मका नाश करनेवाले राक्षसका नाश हिन्दू धर्मके बताये हुअे शस्त्रसे ही होगा। वह क्या है? हिन्दू धर्मने अुपवासका अुपाय बताया है?

अु० — अच्छा पूछा। अिस बारेमें कहते तो बापूजी थकते ही नहीं। थोड़े ही अुद्गार यहां देता हूं:

"हिन्दू धर्ममें तो पग-पग पर अुपवास मौजूद हैं। मेरी मां — अपढ़ और अज्ञान, परन्तु धर्मकी मूर्ति — का सारा जीवन अुपवास करते बीता। हिन्दू स्त्रीमात्रमें यह चीज मौजूद है। चातुर्मास करो, चांद्रायण करो, अेकादशी करो, यह कहकर अुपवासने सारे जीवनको बुन दिया है। अनेक हिन्दू अुपवास किया करते हैं, अिसे कौन जानता है? कितने ही गंगा किनारे जाकर

और ताड़केश्वरमें कअी दिनों तक लंघन करके शरीरको नष्ट करते हैं, अिसे कौन जानता है? मैं तो 'महात्मा' हो गया, अिसलिअे मेरी डोंडी पिट जाती है। डोंडी भले ही पिटे, मुझे तो पोथियोंमें पड़े हुअे और आज लुप्तप्राय हो रहे धर्मका आचरण करके दिखाना है। रामचंद्रजी और वानर-सेनाने प्रायोपवेशन करके समुद्रसे रास्ता लिया था। ये औरोंके लिअे भले ही बच्चोंको समझानेकी बातें हों, पर मेरे लिअे वे अक्षरशः सच हैं। आज हिन्दुओंमें हिन्दुत्व रहा ही नहीं, अिसलिअे मेरे ये अुद्‌गार हंसी करने लायक मालूम होते हैं। पर मैं कहता हूं — याद रखना — जो आज हंस रहे हैं, वे कल रोयेंगे। मैं मरूंगा अिसलिअे या मैं मरूंगा तब रोयेंगे, सो बात नहीं। लेकिन अपने पापोंका विचार करके रोयेंगे, अपने पापोंका फल भोगेंगे तब रोयेंगे, और वर्तमान अन्यायसे रुष्ट हरिजनोंको अुलटी मति सूझने पर जिनका ठोर ठिकाना भी बाकी नहीं रहेगा वे रोयेंगे।

"अस्पृश्यतासे हिन्दू धर्म तो डूब ही जायगा, पर सारी मनुष्य-जातिके डूब जानेका भी डर है। लोग जितनी अपनी आध्यात्मिक पूंजी लगायेंगे, अुतना ही यह आन्दोलन चलेगा। यह अकलका खेल नहीं है। अकलका ही खेल हो, तो मुझसे ज्यादा बुद्धि शास्त्रियोंमें और मद्रासके वकील-बैरिस्टरोंमें मौजूद है। अिन लोगोंकी चतुराअीको मैं अपनी चतुराअीसे क्या जीत सकता हूं? पर ये लोग मेरे अुपवासकी अवहेलना नहीं कर सकते। मेरे अुपवासकी करेंगे, तो दूसरोंके अुपवास तैयार ही रहेंगे। मेरे जैसे कअी मरेंगे, तभी यह लड़ाअी सही रास्ते पर लगेगी। गीतामें कअी तरहके यज्ञ बताये हैं। यह अवसर सब कुछ होम देनेका — हरिजन देवताको अर्पण कर देनेका है। आज तो सनातनी हिन्दुओंको राह दिखानेवाले सनातनी अुन्हें खड्डेमें डाल रहे हैं; हरिजनोंको राजनैतिक सत्ताकी मोहिनी लगाकर रास्ता बतानेवाले हरिजनोंको खड्डेमें डाल रहे हैं। अिन दोनोंको अिस खड्डेसे निकालनेके लिअे यह अुपवास है। यह अुपवास नंगे, भूखे, गरीब और बेजबान हरिजनोंके लिअे है, स्त्रियोंके लिअे है, बच्चोंके लिअे है।"

'मुझे बहनोंको पागल बनाना है'

प्र० — पर अुन लोगोंमें अिस अुपवाससे भय पैदा हो गया है।

अु० — यही बात बापूसे कही गअी थी। अुन्होंने जवाब दिया था: "हां, मुझे भय पैदा करना है। कोअी निर्दय सेनापति हजारोंकी हत्या करके भय अुत्पन्न करता है। मुझे अिस तरह भय पैदा करना है। मगर अुस अर्थमें नहीं जिसमें आप कहते हैं कि स्त्रियों और हरिजनोंमें डर पैदा हो गया है।

मुझे अुनमें खलबली मचा देनी है। अुन्हें पागल बना देना है। मैं जानता हूं कि अनेक बहनोंके आशीर्वादोंकी मुझ पर वर्षा हो रही है, हरिजनोंकी ओरसे भी वर्षा हो रही है। मैं यह भी जानता हूं कि मेरे अिस नये मार्ग पर चलनेवाले बहुतसे पवित्र पुरुष न मिलें, तो भी अनेक पवित्र बहनें तो मिल ही जायंगी।"

रामसे रूठना

प्र० — मैंने आपको काफी तंग किया है। अब और कुछ नहीं चाहता। अेक बात आखिरी पूछ लूं। क्या यह अुपवास आजकल काम करनेवालोंके प्रति अविश्वास प्रगट नहीं करता? काम करनेवाले तो बेचारे अपना वचन पाल रहे हैं। किसी व्यक्तिकी अपवित्रताके लिअे सारी जनताको अिस तरह अुलझन और परेशानीमें डाला जा सकता है? किसी भी तरह हो, यह गांधीजीका रूठना ही कहा जायगा। मैं तो लोगोंकी बातें पेश कर रहा हूं।

अु० —— आपने तो बहुतसी बातें कर डालीं। लोग कितना कर रहे हैं और कितना नहीं कर रहे, अिसके साथ अिस अुपवासका कोअी वास्ता नहीं, और न अिसका वास्ता कार्यकर्ताओंके कामसे है। किसी अेक व्यक्तिकी अपवित्रतासे पीड़ित होकर यह अुपवास किया गया है, यह भी लोग मानते हों तो भूल है। यह भी नहीं कि किसी कार्यकर्तासे गांधीजी नाराज हो गये हों। लोग रुपयेकी वर्षा नहीं कर रहे, अिस कारण भी यह अुपवास नहीं है। करोड़ रुपया बम्बअी अिकट्ठा कर देती, तो भी यह अुपवास होता ही। अुपवासके दिनोंमें अुनके पास हजारों-लाखों स्थानोंसे अैसे अिकरार पहुंचें कि हमने अस्पृश्यताको तिलांजलि दे दी है, तो वे अुनके लिअे अमृतके समान होंगे, पर अिससे वे अुपवास बन्द नहीं कर देंगे। कारण यह अुपवास 'अर्थार्थी' का नहीं, 'आर्त' का है। गांधीजी बार-बार कहते हैं: "संस्थाओंके, रुपयेके और राजनैतिक सत्ताके बल पर हिन्दू धर्मकी रक्षा नहीं की जा सकती। सारी आध्यात्मिक पूंजी खर्च कर डालने पर ही हिन्दू धर्मकी रक्षा होगी।" अिस अुपवाससे अिस बड़ी लड़ाअीका अेक नया युग शुरू होता है। अिस अुपवाससे शुरू होनेवाला अग्निहोत्र अस्पृश्यताके भस्म हो जाने तक अखण्ड जलता रहेगा। गांधीजीका रूठना और किसीके साथ नहीं, अपने साथ है, अपने रामके साथ है। अपने आसपासकी और अपने देशमें फैली हुअी अपवित्रता देखकर वे त्रस्त जरूर हुअे हैं और भीतर-भीतर यह शंका करके कि कहीं यह अपनी ही अपवित्रताकी परछाअीं तो नहीं है आजकल भगवानके साथ झगड़ रहे हैं। भक्त तुलसीदासकी भक्तिमय किन्तु तीर-सी तीखी भाषामें गांधीजी भगवानको पुकार-पुकार कर कह रहे हैं:

कह तुलसीदास सुन रामा,
लूटहिं तस्कर तव धामा,
चिन्ता यह मोहि अपारा,
अपजस नहिं होअी तुम्हारा।

—'मैं तो हमेशासे लाज खोकर बैठा हूं, भगवान, पर मुझे यह चिन्ता हो रही है कि कहीं तेरी लाज न जाती रहे।'

२

[श्री महादेवभाअीसे दूसरी मुलाकात हो सकनेसे पहले ही गांधीजी छूट गये और जेलके द्वार बन्द हो गये। अिसलिअे अब तो महादेवभाअीकी अंग्रेजी 'हरिजन' के संवाददाताको दी हुअी मुलाकातका अनुवाद देकर ही हमें सन्तोष करना पड़ेगा। अनुवादमें महादेवभाअीकी मौलिक लिखावटकी मधुरता और प्रसाद नहीं आ सकता, अिसके लिअे हम पाठकोंसे क्षमा मांगते हैं।
—संपादक, ह० बं०]

शुद्धियज्ञका आरंभ

प्र०—पिछली बार आपने अेक बात कही थी अुससे मैं तो विचारमें पड़ गया हूं। आपने कहा कि अिस अुपवाससे अिस धार्मिक आन्दोलनमें नये युगका आरंभ होता है। यह बात और साफ तौर पर समझायेंगे?

अु०—खुशीसे। पर मैं कहूं अिससे तो गांधीजीने अखबारोंके सम्वाद-दाताओंको जो छोटासा सन्देश दिया था, वही सुना दूं तो अच्छा है: "मेरे दुर्भाग्यसे सत्यनारायणने मुझे यह अुपवास बहुत देरसे भेजा। किन्तु अीश्वरीय योजनाकी आलोचना करनेवाला मैं कौन? अिसलिअे मैं तो अुसके नचाये नाचता हूं। लेकिन मैं मानता हूं कि यरवदा-समझौता होनेके बाद मुझे अैसा अुपवास करके ही हरिजनकार्य शुरू करना चाहिये था। यह मंगलाचरण अब बादमें हो रहा है। यह शुद्धियज्ञ भी है, क्योंकि यह शुद्धि करनी ही पड़ेगी। पर यह बात मुझे अब सूझ रही है। जब मुझे लगा कि अीश्वर मुझे आज्ञा दे रहा है, तब मेरे सामने अैसी कोअी दलील नहीं थी। अन्तर्यामीकी जो आवाज आअी, अुसके सामने मैं मजबूर हो गया। आप पूछते हैं, यह दुःखका अुभार नहीं है? अिसका जवाब सीधासादा है। यह दुःखका अुभार हरगिज नहीं। मैल धो डालनेके लिअे तप तो यह

हैं ही। शुरूमें अुपवास नहीं किया, अिसलिअे यह शुद्धि किये विना भी अव काम नहीं चल सकता। और आप पूछते हैं: 'जैसा अपने लेखमें आपने कहा है, भयंकर मलिनताके अुदाहरण देखकर तो आपने यह अुपवास नहीं किया है?' मैं आपसे कहता हूं कि यह वात विलकुल गलत है। और यह मैं आपको सौ फी सदी भरोसेके साथ कहता हूं, क्योंकि मैं आपको अिन भयंकर अुदाहरणोंके मेरे सामने आनेकी तारीखें वता सकता हूं। अुस समय मुझे खयाल हुआ कि अिन किस्सोंके कारण मुझे अुपवास करनेकी जरूरत नहीं है। अैसी व्यक्तिगत घटनाओंके कारण मैंने अुपवास किये जरूर हैं। पर जेलमें रहकर मैं अैसे अुपवास कर ही नहीं सकता। हरिजनसेवा जैसी वड़ी प्रवृत्तिमें अिस तरह हरअेक निजी घटनाके लिअे अुपवास करते रहना किसी भी मनुष्यके वूतेकी वात नहीं है। अिसमें शक नहीं कि अिन घटनाओंका मेरे मन पर अज्ञात रूपमें असर हुआ होगा, परन्तु मैं अुंगली अुठाकर यह नहीं कह सकता कि यह अुपवास किसी अेक ही घटनाके कारण हुआ है। यह अुपवास हरिजनकार्यके मंगलाचरणके रूपमें है और अिस दृष्टिसे अुसे वहुत पहले करना चाहिये था। दूसरी तरह सोचने पर अपनी और साथियोंकी शुद्धिके लिअे भी अुसे वहुत पहले करनेकी जरूरत थी।" मैं आपसे कहता हूं कि वापूने १२ से ६ वजे तक कअी आदमियोंसे वातें करनेके वाद शामको यह सन्देश दिया था और असाधारण तेजीके साथ लिखवा दिया था।

राजाजीकी वेदना

प्र० — आपने मुझे सरदारका हाल तो वता दिया। क्या यह न वतायेंगे कि अिस अुपवाससे दूसरे साथियोंकी कैसी हालत हुअी है?

अु० — गांधीजीके प्राणोंसे भी प्यारे साथियोंमें अेक राजाजी हैं। अुपवासकी वात सुनकर अुन्होंने जो तार भेजा था, वह तो आपने पढ़ ही लिया है। अुस तारका अेक अेक शब्द गहरी वेदनासे जल रहा था। गांधीजीके साथ सवसे ज्यादा दलीलें राजाजीने कीं। यह तो आप नहीं चाहेंगे कि मैं यहां अुनकी वातचीतका वर्णन दूं। अैसा करना मेरे लिअे वड़ा अविवेक होगा।

प्र० — यह मैं समझता हूं, पर अखवारोंमें तरह-तरहकी वातें आअी हैं, अिसलिअे मैं आपसे सही हकीकत जानना चाहता हूं।

अु० — सच कहूं? वह सारा संवाद अितना पवित्र है कि यहां नहीं दिया जा सकता। और मैं देना चाहूं तो भी नहीं दे सकता। राजाजीका

हृदय अपनी बुद्धि और बापूके प्रति निष्ठाके बीचके संग्राममें पिसा जा रहा है, यह देखकर दुःख हुअे बिना नहीं रह सकता था। गांधीजीके सबसे निकटके और सबसे ज्यादा श्रद्धावाले साथियोंमें से अेक राजाजी हैं। अुनकी बुद्धिके प्रभावके सामने अच्छे-अच्छे मात हो गये हैं। अुनकी नम्रताकी तो हद ही नहीं। अिसलिअे बापूका महत्त्वका निर्णय राजाजीके गले नहीं अुतर सका, यह देखकर हमारे बहुतोंके हृदयमें तो बड़ी वेदना हुअी थी। पर अुन सारी दलीलोंकी तहमें, अुस सख्त विरोधकी जड़में राजाजीका प्रेम अुमड़ रहा था और अुस भक्तिने ही आखिर अुनके मनको सांत्वना दी। यह तो मैं भरोसेके साथ नहीं कह सकता कि अुनकी शंकाअें दूर हो गअी हैं या बापूकी अुपवास सम्बन्धी श्रद्धाकी छूत अुन्हें लग गयी है। राजाजीकी बुद्धिकी विजय मैंने अनेक बार देखी है, पर अिस विषम अवसर पर वह बुद्धि कीचड़में फंस गअी मालूम हुअी। अुदाहरणके लिअे, अुन्होंने यह भी दलील दी कि यह देहदमन तो बुरे ढंगकी हिंसा है। अुन्होंने यह भी कहा: अैसा कहना कि जिस अीश्वरने यह प्रण कराया है वही अुसे पार लगायेगा, यह दावा करनेके बराबर है कि अपनी भूल हो ही नहीं सकती। गांधीजीने राजाजीको मिठाससे कहा, 'अिस अुपवासके अन्तमें आप मेरा समर्थन ही करेंगे। आपको मेरी श्रद्धा डिगानेकी कोशिश न करनी चाहिये।'

अेक पवित्र प्रसंग

यहां अेक पवित्र प्रसंगका वर्णन करना बेमौके नहीं होगा। यह अिस बातका अुदाहरण है कि अच्छेसे अच्छे आदमीसे भी कैसी भूल हो जाती है। राजाजी और शंकरलाल बेंकर गांधीजीके सामने सुझाव लेकर आये थे कि अुपवास शुरू होनेसे पहले डॉक्टरको शरीरकी जांच कर लेने दें। गांधीजीने कहा: 'अिस तरह मैं डॉक्टरसे जांच नहीं करवा सकता, क्योंकि यह तो मेरी अश्रद्धाकी निशानी होगी।' राजाजीने कहा: 'तब आप हमारी अेक भी बात नहीं मानते और यह दावा करते हैं कि आपसे भूल होती ही नहीं।' यह वचन सुनकर गांधीजी अुबल पड़े और बोले: 'मेरी श्रद्धा पर आप अैसा प्रहार नहीं कर सकते। मुझे विश्वास है कि मैं अुपवाससे जीता अुठूंगा। अितना आपके और मेरे लिअे काफी होना चाहिये। मेरी श्रद्धाको कमजोर न करना आपका मित्र-धर्म है। अुपवास शुरू होनेसे पहले डॉक्टरसे जांच कराना मैं मंजूर नहीं कर सकता।' दोनों मित्र गांधीजीका अिस तरह जी दुखाने पर अफसोस करते हुअे चले गये। बादमें शामको घूमते-घूमते गांधीजीको क्षण-भरमें अपनी भूल सूझ गअी। तब कहने लगे: 'अुनके

साथ मैंने बड़ा अन्याय किया। मनुष्य कितना दुर्बल है, कितनी भूलें करता है! शुद्धिके लिअे अुपवास करने बैठा हूं, तो भी मित्रों पर मैंने क्रोध किया। अुनसे क्षमा मांगूंगा।' दूसरे दिन सुबह राजाजीके नाम यह पत्र भेजा:

"आप मुझे प्राणोंसे भी ज्यादा प्रिय हैं। मैंने आपका और शंकरलालका बहुत ही जी दुखाया। यह कहनेकी जरूरत नहीं कि आप मुझे क्षमा कर दीजिये, क्योंकि क्षमा तो आपने मुझे मांगनेसे पहले ही कर दिया है। पर मैंने कल बेवकूफीसे जिस बातसे अिनकार किया था, वही बात अब करनेको तैयार हूं। अभी या जब आपकी अिच्छा हो, मैं किसी भी डॉक्टरसे जांच करवानेको तैयार हूं। शर्त अितनी ही है कि सरकारकी अिजाजत मिलनी चाहिये। मेरे खयालसे अिस जांचका परिणाम प्रकाशित नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह डर है कि अुसका राजनैतिक अुपयोग होगा। मुझे यह भी कहना चाहिये कि डॉक्टरसे जांच करानेसे अुपवासका आरंभ रुकेगा नहीं।

"मिलने पर और बातें करेंगे। यह तो अुस मैलको निकाल डालनेके लिअे ही लिखा है, जो कल मेरे हृदयमें घुस गया था।"

पर दूसरे दिन तो राजाजी हंसते-हंसते आये और कहने लगे: "आपको क्षमा मांगनेकी कोअी जरूरत नहीं थी। आपसे तो हम ज्यादा चिढ़ गये थे। अब हमने जांच न करानेका ही निश्चय किया है।"

यह प्रसंग मैंने विस्तारसे बयान किया है, क्योंकि यह हमारे लिअे चेतावनीके रूपमें है। यह हमें बताता है कि अच्छेसे अच्छे मनुष्यको भी हमेशा काम-क्रोधसे सचेत रहना चाहिये; और अिससे हम यह भी देखते हैं कि जहां दूसरेका दिल न दुखानेकी आतुरता होती है, वहां ये घाव कितने जल्दी भर जाते हैं।

ये मित्र गांधीजीके निकट तो थे ही, अिस प्रसंगसे और भी निकट आ गये हैं। हमें यह भी समझना चाहिये कि जब क्षमा मांगें, तब कंजूसीसे न मांगना चाहिये। अैसी क्षमा मांगनेका कोअी अर्थ नहीं।

दूसरे साथी

स० — अिस प्रसंगका आपने अितना सुन्दर वर्णन किया, अुसके लिअे बड़ा आभारी हूं। अब दूसरे साथियोंके बारेमें कहेंगे?

ज० — पंडित जवाहरलालका नाम सबसे पहले मेरी जबान पर आता है। वे बाहर होते तो गांधीजीके साथ अैसी ही प्रेमकी लड़ाअी अुन्होंने की

होती। पर जेलमें से अुनका जो संदेशा आया, अुससे गांधीजीकी आंखोंमें आंसू आ गये। विजलीकी चमक जैसे शब्दोंमें जवाहरलालने अपनी सारी भक्ति अुंड़ेलकर लिखा है: "आपका पत्र मिला। जिस चीजको मैं समझता नहीं, अुसमें मैं क्या कह सकता हूं? अिस जगतमें भटका हुआ मैं अकेले आपको ही दीपस्तंभकी तरह देखता हूं और अंधेरेमें रास्ता ढूंढ़नेको हाथ-पैर मारता हूं। पर ठेस लगने पर गिर पड़ता हूं। कुछ भी हो, मेरा प्रेम कायम है और मैं आपका ही विचार करता हूं।" डॉक्टर अनसारीको लगा कि 'जब जीवन-दीप बुझता दीखे, तब डॉक्टरोंकी बात मानना स्वीकार कीजिये,' अितनी विनती गांधीजीसे स्वीकार कराअी जा सके, तो देशकी वेदना कुछ कम हो जाय। डॉक्टरकी अिस अश्रद्धाको मिटानेके लिअे गांधीजी अुन्हें जवाब लिखते हैं: "आप तो खुदा पर यकीन रखनेवाले हैं। आपसे कहता हूं अुसे सही समझिये कि यह अुपवास मैंने अपनी मरजीसे नहीं किया। यह खुदाका फरमान है। अिसलिअे वही मेरी रक्षा करेगा और देखभाल रखेगा। और अुसकी देखभालसे मैं नहीं बचा, तो आपके जैसे कुशल डॉक्टर और पैगम्बर साहबको आफतके वक्त मदद देनेवाले अनसारियोंके वंशज मुझे किस तरह बचायेंगे? सलाम।" (जिन्हें पता न हो वे जान लें कि पैगम्बर साहब जब मक्कासे हिजरत कर गये, तब अुन हिजरतियोंको मदीनेमें जिन शेखोंने मदद दी थी, वे अनसारी कहलाते हैं।) दूसरे साथियोंके हृदय भी बिंध रहे हैं, परंतु वे श्रद्धाके जोरसे जैसे तैसे टिके रहनेकी कोशिश कर रहे हैं। श्री घनश्यामदास बिड़ला हृदयकी व्यथा और प्रेमसे छलकते हुअे शब्दोंमें लिखते हैं: "अिस समाचारसे मैं हिल गया हूं। धीरे-धीरे मेरी समझमें आया कि अंतमें सब ठीक हो जायगा। मुझे विश्वास है कि आप अिस अग्नि-परीक्षामें से पार हो जायंगे। और अिन अिक्कीस दिनोंके अन्तमें कोअी चमत्कारिक परिवर्तन हों तो भी हमें क्या पता? यह श्रद्धाकी भाषा है। बुद्धि भी अिसके सुरमें सुर मिलाती है। लेकिन चित्तको अभी शांति नहीं होती। मुझे आपके पास दौड़कर आ जाने और वहीं रहनेकी बहुत अिच्छा हुअी। लेकिन दूसरोंके लिअे गलत अुदाहरण न बने, अिसलिअे मनको रोक रखा है।" जमनालालजी तो अलमोड़ेसे कभीके यरवदा दौड़ आये होते; परंतु ज्यादा विचार करके अुन्होंने चिट्ठी डाली और अंतमें रह गये। लेकिन सबसे ज्यादा अुत्साह देनेवाले संदेश तो महर्षि दादाभाअीकी पौत्रियोंके हैं। श्रीमती गोशीबहन लिखती हैं: "तो आप फिर हमारे लिअे वधस्तंभ पर चढ़ रहे हैं! मुझमें तो अितनी श्रद्धा है कि आप अिस यज्ञसे पार अुतरेंगे और सारे देशको अेक सीढ़ी अूंचा चढ़ा देंगे। हमारे अगले तीन सप्ताह विषम वेदनामें बीतेंगे और

अुसे हम सह लेंगी।" अिनसे छोटी खुरशेदवहन लिखती हैं: "आपने यह कदम अुठाया, अिसके लिअे मैं अीश्वरका नाम रट रही हूं। अन्तरमें आनंदके सिवाय और कोअी भावना पैदा नहीं होती। सत्यकी जय ही होगी। अीश्वर हमारा वेली है और श्रद्धा हमारा शस्त्र है। अुसने आपके द्वारा अपना पैगाम भेजा है। अुसीकी अिच्छा वलवान है।" दूसरे अनेक संदेश मैं यहां नहीं दे सकता। किन्तु अितने वहादुर साथियोंके होते हुअे भी जो मनुष्य निराश हो वह नास्तिक ही होगा।

वा और मीरावहन

काश जिस दृढ़ता और हिम्मतसे पू० वा और मीरावहन अिस अग्नि-प्रवेशकी वात सह रही हैं, अुसे वर्णन करनेके लिअे मेरे पास शब्द होते! समाचार सुनकर अुन्होंने जो संदेश भेजा, अुसमें दिखाअी गअी हिम्मत विलक्षण गौरवशाली है: "आज ही अुपवासकी खवर मिली। वा मुझसे कहती हैं कि वे हक्की-वक्की रह गअी हैं और आपके निर्णयको भूलभरा मानती हैं। परंतु आपने कव किसीकी सुनी है, जो अुनकी भी सुनेंगे? वे अपने हृदयकी प्रार्थना भेज रही हैं। मैं दिङ्मूढ़ वन गअी हूं। लेकिन मानती हूं कि यह अीश्वरी आदेश है और अिस तरह दुःखमें भी खुश हूं। हार्दिक प्रार्थना।"

तारका नीचे लिखा जवाव जव गांधीजीने लिखा, तव अुनकी आंखोंमें हर्षाश्रु आ गये थे:

"वासे कहना कि अुसके पिताने अुसके लिअे अैसा साथी ढूंढ़ दिया है, जिसे निभा लेनेमें और कोअी स्त्री तो खतम ही हो जाती। अुसका वहुमूल्य प्रेम मेरे हृदयमें अंकित हो चुका है। अुसे अन्त तक हिम्मत रखनी चाहिये। तुम्हारे लिअे तो मुझे यही कहना है कि अीश्वरने तुम्हारे जैसी लड़की मुझे दी, यह अुसकी कृपा है। अीश्वरके मुझे दिये हुअे अिस सवसे नये कामसे तुम सदा खुश होना और अैसा करके अपनी वहादुरी सावित करना।"

मित्रोंके संदेश

जिन मित्रोंके प्रेमको गांधीजी हमेशा चाहते हैं और जिनकी राय पर पूरे आदरसे विचार करते हैं, अुनके संदेशोंकी वात मुझे अलग करनी चाहिये। १ मअीकी रातको दो वजे पहले पहल अुन्होंने गुरुदेव, मालवीयजी और माननीय

शास्त्रीजीको पत्र लिखे। मालवीयजीका शोकयुक्त और प्रेमपूर्ण अुलहनेका तार तो कभीसे अखबारोंमें छप गया है। मालवीयजीके अनुरूप ही सारा तार है। अपनी तबीयत अच्छी न होनेके कारण आज तो वे यरवदा दौड़कर नहीं आये, पर जब आयेंगे तब, मैं जानता हूं, पिछली दफाकी तरह अिस बार भी वे गांधीजीको अुपवाससे रोकनेके लिअे शास्त्र अुद्धृत कर करके आंसूभरी दलीलें देंगे और धर्मकी आख्यायिकाअें सुनायेंगे। फिर भी जब देखेंगे कि वे डिगते ही नहीं, तब फिर आंसू लाकर, शास्त्रोंके अुपयुक्त श्लोक सुनाकर अुनके निर्णयको आशीर्वाद देकर शोभायमान करेंगे। कविवर टैगोरने अखबारोंमें अपना मत प्रगट किया है, मगर अभी तक आनंदयुक्त आशीर्वचन भेजनेकी तत्परता नहीं दिखाअी है। शास्त्री अभी तो चुप बैठे हैं।*

प्रेमके संदेश

विदेशोंसे आनेवाले संदेशोंमें सबसे पहले संदेश श्री अेण्ड्रूज और पोलाक दम्पतीके थे। दोनोंको पढ़कर आश्चर्य तो हुआ, पर आनंद भी हुआ। श्री अेण्ड्रूजने कहा कि मैं आपका निर्णय स्वीकार करता हूं और समझ गया हूं। पोलाक दम्पतीने अपने संदेशमें अपनी तरफसे प्रार्थना भेजी है। ये दो संदेश अिंग्लैण्डके अनेक मित्रोंकी भावनाके प्रतिनिधिके रूपमें माने जा सकते हैं। अेक और तार, जिसे पढ़कर गांधीजी अुतने ही खुश हुअे श्री रोमां रोलां और अुनकी बहनकी तरफसे है कि "हम सदा आपके साथ हैं।"

विदेशी तारोंमें से अुन्हींके तार मैंने यहां दिये हैं, जो गांधीजीके अधिकसे अधिक निकट हैं और जिन्हें जनता जानती है। दूसरे कितने ही अैसे लोगोंके भी तार हैं, जिनसे गांधीजी कभी मिले ही नहीं। अुनमें भी अुनकी अिस अग्नि-परीक्षासे पार होनेके लिअे काफी आध्यात्मिक भोजन मिल जाता है। युरोप जानेसे पहले श्रीमती सोफिया वाड़ियाने पत्र लिखकर अपना विरोध प्रेमपूर्वक बताया है। पर साथ ही वे कहती हैं कि प्रभु आपको पार अुतारे। पत्रके साथ हरिजनसेवाके लिअे ३०० रुपयेका चेक भेजा है, और अपने पत्रके अन्तमें लिखती हैं: "मुझे लगता है कि यह रकम अिससे बड़ी होती तो कितना अच्छा होता। ८ मअीको हम मेडम ब्लेवेट्स्कीकी जयंती मनानेवाले हैं। अुस शुभ अवसर पर मैं आपको यह भेज रही हूं।"

---

* यह छपनेके बाद अुनका प्रेमपूर्ण सन्देश मिल गया। —संपादक

" न जायते म्रियते वा कदाचित्
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ "

अेक पारसी मित्रने अपने पत्रके साथ सौ रुपयेका चेक भेजा है। अुनके पत्रमें से अेक वाक्य यहां देता हूं: "अगर आपका मरण हो जाय, तो करोड़ों जी जायंगे। अगर आप सफल हुअे, तो करोड़ों अपना पुनरुद्धार कर लेंगे।"

हरिजनोंके भी बेशुमार संदेश आये हैं। सबके दिलों पर बड़ा असर हुआ है और वे अुपवासका मर्म अिशारेमें समझ गये हैं। अुनमें से कुछ गांधीजीसे यह विनती करते हैं कि हमारे झोंपड़ोंमें आकर आप अुपवास-यज्ञ कीजिये। हरिजनसेवक पंडित लोग अपने आशीर्वाद भेजते हैं और हरिजनसेवामें जीवन अर्पण करनेवाले वे कोढ़ी पंडित महाभारतमें से प्रसंगोचित श्लोक अुद्धृत करके भेजते हैं। सताराके अेक भले मित्रने गांधीजीके हृदयको पसंद आनेवाली अेक पवित्र याददिहानी भेजी है: " आप ८ मअीके दिन अुपवास शुरू कर रहे हैं। यह नृसिंह-जयंतीका दिन है। अुस दिन प्रह्लादने सारी अग्निपरीक्षा पार करके नृसिंह भगवानके साक्षात् दर्शन किये। अुस दिन नृसिंह अवतारने हिरण्यकशिपुका संहार किया। मैं अीश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि आपका आत्मशुद्धि यज्ञ हिरण्यकशिपुसे ज्यादा भयंकर अस्पृश्यता रूपी राक्षसका संहार करे।"

पाठकोंको याद होगा कि ठेठ बचपनसे गांधीजी प्रह्लादको आदर्श सत्याग्रहीके रूपमें गणना करते आये हैं।

कलकत्तेके अेक अस्पतालसे अेक बीमार मुसलमान भाअी लिखते हैं: "मनुष्य मर्त्य है। ऋषियों और पैगम्बरोंको हम सदाके लिअे जिन्दा नहीं रख सके। हम आपको बचा नहीं सकते, मगर आपका काम आगे जारी रखकर आपको चिरजीवी बना सकते हैं। ओहोदके युद्धमें अैसी अफवाह फैली थी कि पैगम्बर साहब मारे गये। नतीजा यह हुआ कि अुनके अनुयायियोंमें निराशा और शिथिलता छा गअी। तब अुन्होंने अीश्वरी आवाज सुनी कि तुम निराश न होओ, बल्कि सत्पथ पर चलते रहो और सत्यके लिअे लड़ते रहो। पर पैगम्बर साहब मारे नहीं गये थे। स्वराज्यके आने और अस्पृश्यताका नाश होने तक दयालु खुदा आपको सलामत रखे।"

प्रश्न — आनेवाले अुपवासके बारेमें गांधीजीकी क्या मनोदशा है सो बताअियेगा ?

अुत्तर — हां, अिसका अुत्तर मैं आपको तुरंत दे सकता हूं। अुपवासके कारण वे शांति और कर्तव्यपालनकी आन्तरिक प्रसन्नता अनुभव करते हैं। पर पिछले सप्ताह अुन्हें किसीने आम्रभवनमें देखा हो, तो अुसे मालूम हुअे बिना नहीं रह सकता कि बाहरी प्रसन्नताकी भी कोअी कमी नहीं रही। अुसके द्वारा तो अुन्होंने मेरे जैसे नासमझ साथियोंके शोकके आंसू भी सुखा दिये हैं। अेक अखबारवाले भाअीने पूछा: "आप ८ तारीखको क्या आशा रखते हैं?" बापूने तुरंत जवाब दिया: "अुस दिन १२ बजे मेरी स्वतंत्रता शुरू हो जायगी।" पूछनेवाले भाअीने सोचा कि यह जबरदस्त जवाब है और वह अुसे लिखने जा रहा था कि अितनेमें गांधीजीने आगे कहा, "आप सोचते हैं वैसी स्वतंत्रता नहीं, पर आपके जैसे अखबारोंके प्रतिनिधियोंसे मिलनेवाली स्वतंत्रता कहता हूं।" थोड़ी देर ठहरनेके बाद अुन्होंने हंसी छोड़कर गंभीर भावसे कहा, "मेरे लिअे यह कहा जाय कि मैंने कभी आसुरी आचरण नहीं किया, तो मुझे संतोष होगा।" जमनालालजीका तार आया कि चिट्ठी डालकर तय हुआ है कि मुझे अलमोड़ा रहना चाहिये। अुस समय सरोजिनी देवी गांधीजीसे चर्चा कर रही थीं कि कठिन प्रसंग आ जाय, तब डॉक्टरोंकी सलाहपर ध्यान देना चाहिये। जोरसे हंसते-हंसते अुन्होंने तार पढ़कर कहा, "देखिये, समझदार आदमी — आपसे भी समझदार — तो यह है।" सरोजिनी देवीने अिस तारका अुपयोग अुनके विरुद्ध करके तुरंत कहा: "ठीक है, तो आप अुपवास करें या न करें, अिसके लिअे चलिये हम भी चिट्ठी डाल लें।" जवाब भी अुतना ही जल्दी मिल गया: "नहीं, नहीं, यह नहीं; चिट्ठी अिस बात पर डालें कि आपको मेरा सिर और ज्यादा पचाना चाहिये या नहीं।"

शनिवार शामको देरसे ५ बजे खबर आअी कि कोअी हरिजन बालक मिलना चाहता है। समय तो था ही नहीं, परंतु बेचारा लड़का कअी घंटोंसे दरवाजे पर बैठा बाट जोह रहा था और अुसे वापस धकेल देनेकी मेरी हिम्मत नहीं हुअी। पांच महीने पहले वह आया था। अुस समय अुसने गांधीजीसे छात्रवृत्ति मांगी थी और गांधीजीसे वचन ले लिया था कि कॉलेजके प्रिंसिपलका प्रमाणपत्र ले आयेगा तो मददके लिअे विचार करेंगे। अिस अरसेमें अुस लड़केको बहुत मुसीबतें अुठानी पड़ीं। अब परीक्षा पास करके प्रिंसिपलका

प्रमाणपत्र लेकर अुसने मुलाकात मांगी थी। जेलमें आनेके लिअे चप्पलकी जोड़ी खरीदनेकी मुसीबत सहकर अुसने दाम जमा किये थे।

गांधीजीको याद नहीं रहा कि यह लड़का कौन है, अिसलिअे पूछा: "अितनी देर हो जाने और मेरे पास अेक मिनट भी फुरसत न होनेकी बात जानते हुअे भी अिस लड़केने मुलाकात क्यों मांगी?" मैंने अुन्हें समझाया और कहा: "अेक मिनटसे ज्यादा समय वह नहीं लेगा। वह अितने ही आश्वासनकी आशा रखता है कि ठक्करबापा अुसकी बात पर ध्यान देंगे और अुसकी मदद करेंगे।"

अुन्होंने लड़केसे कहा: "ठीक है। मैं यह आश्वासन देता हूं। अब तो तुम्हें संतोष हुआ?"

साथ लाये हुअे फूल गांधीजीके चरणोंमें चढ़ाकर अुसने कहा: "जी नहीं, मैं दूसरोंसे पूछने किस लिअे जाअूं?"

गांधीजी: "यह क्यों?"

"अिसलिअे कि मुझे औरोंमें विश्वास नहीं। मेरा तो आप पर ही विश्वास है। और सब तो अप्रामाणिक हैं।"

गांधीजी: "अगर मेरे साथी अिस तरह अप्रामाणिक हैं, तो मैं सबसे ज्यादा अप्रामाणिक ठहरा। फिर तो तुम्हें मुझ पर भी विश्वास नहीं रखना चाहिये।"

अब तक तो वह लड़का बहादुरीसे कटाक्षका यह ढोंग करता रहा। फिर अुससे न रहा गया और वह रो पड़ा। हिचकियां भरते अुसने कहा: "तो फिर आप हमें छोड़कर जानेको किस लिअे तैयार हो गये? आप ही कहते हैं कि आपके साथी अपवित्र हैं। आपके आसपास पवित्रताका वायुमंडल नहीं और आमरण अनशन व्रत लेना चाहिये।"

"पर तुम यह कहते हो कि मैं तुम्हें छोड़कर जा रहा हूं? मैं नहीं जाअूंगा।"

लड़केकी आंखोंमें फिर आंसू अुमड़ आये और वह बोला: "मैं यह कैसे मानूं?"

"मैं तुम्हें भरोसेके साथ कहता हूं कि मैं नहीं मरूंगा। चलो, हमारे बीच करार हुआ: सोमवार २९ मअीको दोपहरमें तुम्हें नारंगी लेकर आना है। मुझे अुसके रससे अुपवास खोलना है। और बादमें हम तुम्हारी छात्रवृत्तिके बारेमें बात करेंगे। बोलो, अब तो तुम्हें संतोष है?"

लड़केके चेहरे पर हर्ष चमक रहा था। अुसके आंसू सूख गये थे। अुसने कहा: "हां।"

"तो अब तुम अपना वचन पालन करना," यह कहकर गांधीजीने और सबकी हंसीके साथ-साथ अपनी हंसीसे जेलका आंगन गूंजा दिया।

अिस और बादमें जो मीठी बात मैं कहूंगा अुसके बीचमें अेक दुःखद बात भी हुअी थी। अुस दुःखद बातको हम भूल जायं, पर दूसरी घटनाओंका संग्रह करेंगे। सरोजिनी देवी गांधीजीके आशीर्वादके लिअे आअी हुअी अेक हाल ही में विवाहित जोड़ीको लाअी थीं। अुस नवोढ़ा लड़कीको गांधीजी तिलक स्वराज्य फण्डके जमानेसे जानते थे। अुसने अुस समय बहुतसा रुपया जमा किया था और अपने अधिकतर गहने दे दिये थे। "तुम्हें वे दिन याद हैं न? तुम्हारी शादीसे मुझे खुशी हुअी। पर यहांसे तुम्हें मुफ्त आशीर्वाद नहीं मिलेगा। तुम्हें पहले हरिजनोंको आशीर्वाद देना चाहिये।"

नवोढ़ा बोली: "किस तरह दूं? आपको चाहिये सो मांग लीजिये।"

"पर मैं कैसे मांगूं? तुम्हें तो अपने पतिकी आज्ञा लेनी चाहिये। मुझे तुम दोनोंके बीच झगड़ा नहीं कराना है।"

"हम दोनोंके बीचमें झगड़ेकी कोअी गुंजाअिश ही नहीं," अुसने यह दृढ़तापूर्वक कहा। सारी मंडली खिलखिलाकर हंस रही थी और अुसने अपनी सोनेकी चूड़ियां गांधीजीके चरणोंमें रख दीं।

अिस तरह तो मैं बात पर बात मिला कर और घंटोंके घंटे लेकर आपको थका सकता हूं। पर अब अेक बात, जो मैंने खास तौर पर रख छोड़ी है, कहकर मुझे खतम कर देना चाहिये। जब आम्रभवनमें शास्त्रार्थ हो रहा था, तब अेक सुधारक शास्त्री बार-बार आते थे। वे कल आये थे। अुनसे यह कहे बिना नहीं रहा गया कि "अुन दिनों मैं गांधीजीके चेहरे पर वेदनाकी छाया देखता था। आज वह शांति और आनंद दिखाअी देते हैं, जो पहले कभी नहीं देखे।" मैंने कहा: "आप सच कहते हैं। अितने महीने अिन्होंने अुस वेदनाको संग्रह कर रखा था। आज अिन्होंने अुपवासका द्वार ढूंढ़ लिया है। अब वह सारा वेदनाका भार अिनके मन परसे हट गया है और कर्तव्यपालनके भानसे अिनमें अपार शांति और आनंद आ गये हैं।"

अीश्वरकी सर्वश्रेष्ठ देन

स० — अब आप यह बतायें कि अुपवास-यज्ञ किस तरह आरंभ हुआ?

ज० — पिछले अुपवासकी तरह यह भी जेलमें शुरू हुआ। अिस बार आम्रभवनमें शुरूआत हुअी और प्रारंभिक प्रार्थनामें कुछ आश्रमवासी भाअी-बहन और काफी संख्यामें मित्र मौजूद थे। कुछ भी अिन्तजाम किये बिना

अनायास ही अुस समय अधिकतर जातियोंके प्रतिनिधि अुपस्थित थे। पारसी, ओसाओ, मुसलमान और हिन्दू सभी अुस मौके पर दिलमें अेकसा दुःख महसूस कर रहे थे। सबसे अधिक हृदयद्रावक दृश्य अेक मुसलमान भाओका था, जिसने अश्रुपूर्ण मुखसे गांधीजीके चरण चूमे और अेक अमरीकन पत्रकारने जब गांधीजीसे हाथ मिलाया, तब अुसका रोना न रुक सका और आंसू आ गये।

गांधीजी कितने आनंदसे अुपवासकी वाट देखते हैं, यह बात मैं आपसे कह चुका हूं। अनशनके शुरू होनेके कुछ ही समय पहले अुन्होंने मीराबहनको अेक पत्र लिखा था। अुसमें से थोड़ासा आपको बता दूं: "मैं यह मानता हूं कि यह अुपवास वह देन है, जो ओश्वरने मुझे आज तक कभी नहीं दी। मैं चाहता हूं कि तुम भी असा मानो। यह मेरी अपूर्ण श्रद्धाका चिह्न है कि मैं अिसके लिअे भय और कंपकंपीके साथ प्रयाण कर रहा हूं। पर आज जो आनंद मुझे है, वह कभी नहीं था। मैं चाहता हूं तुम मेरे साथ अिस आनंदमें शरीक हो।" अितना कहनेके बाद आगे जाना मेरे लिअे पापके समान है। यह आनंद अुनका हमेशाका साथी बने।

३

१० दिनमें

'हरिजनबंधु' के लिअे पहले हफ्ते जब लेख लिखा था, तब संयोगवश अुसे प्रश्नोत्तरीका रूप दे दिया था। दूसरे हफ्ते भी अिसी तरह लिख सकनेकी आशा थी। परंतु पामर मनुष्यकी आशायें कब पूरी होती हैं? सच तो यह है कि मनुष्यका आशा रखना ही गलत है। वह अपनी आशायें ओश्वरको सौंप दे यही सही है। अिस महातपसे अितना सीख लें तो भी बहुत है।

८ तारीखकी शामको हमारे जुदा होनेसे पहले गांधीजीको जो अेक छोटासा सत्याग्रह करना पड़ा था, अुसकी बात 'हरिजनबंधु' में लिखी नहीं जा सकती। पर अलग होते समय जितनी देरमें मैंने सामान बांधा, अुतनी देर तक गांधीजीकी सरदारके साथ खूब घुटती रही — मानो सरदारको वियोगके लिअे तैयार कर रहे हों! परंतु ज्यादा सही बात यह है कि गांधीजी अपनेको सरदारके वियोगके लिअे तैयार कर रहे थे। दिनके ही कुछ घंटे अलग होना पड़ा, अितनेमें ही पुकार अुठे थे: 'वे तो मेरे लिअे मांसे भी ज्यादा हैं।'

जाते-जाते सरदारसे कहा: 'देखना ३० तारीखको फिर अिकट्ठे हो जायंगे। आप वाहर न रहेंगे तो हम दोनों वापस अंदर होंगे।' सरदार: '३० को तो सरकारकी भी हिम्मत आपको वापस अंदर लानेकी नहीं होगी।' वापू: 'तो अेक दो सप्ताह वाद सही। पर अिसमें भी कोअी शक है कि या तो हम दोनों वाहर होंगे या अंदर होंगे?' सरदार: 'कौन जानता है?' गांधीजी: 'भगवान सव कुछ जानता है और वही कर सकता है।'

हमारे पास यह विश्वास कहां है? यही विश्वास गांधीजीसे तन-मन-धनकी वाजी लगवाता है और हमारा अविश्वास हमें रुलाता है। वियोगके १० दिन कैसे निकले, यह क्यों कर लिखा जाय? आत्म-कथा थोड़े ही लिखने वैठा हूं? पर अितना तो कह ही दूं कि सरदारकी आत्मीयताके विना ये दिन दूभर हो जाते। आज आकर वापूके चरणोंमें सिर झुकाया, तव अुनका पहला सवाल यही था: 'वल्लभभाअी कैसे हैं?' दूसरा सवाल 'क्यों, दिल तो लग गया था?' यानी 'आंसू तो नहीं वहाये थे?'

ये सवाल पूछते समय अुनकी आवाज, अुनका पहले जैसा प्रफुल्ल नहीं परंतु पहले ही जैसा प्रसन्न हास्य, और मुखकी कान्ति वगैरा देखकर मैं सानंदाश्चर्यमें डूव गया। मैंने अेक भी सवाल की आशा नहीं रखी थी, क्योंकि पिछले सालके सितम्वरके अुपवासमें तीसरे दिनसे आवाज वैठने लगी थी और छठे दिन तो आवाज रही ही नहीं थी। आज तो वापू खुद कहते हैं: 'मुझमें पूरी-पूरी स्फूर्ति है। आवाज, हलचल वगैरा हर चीजका सावधानीके साथ संग्रह कर रहा हूं। अैसा दीखता तो है कि अीश्वर पार लगा देगा।'

अिसके वाद वहुत वातें हुअीं, जिनके साथ पाठकोंका संवंध नहीं। मगर अेक पवित्र वातकी याद दिला दूं। यहांके मेरे मित्र मेरी आशा लगाये वैठे थे। चंद्रशंकर तो वेचारे 'हरिजनवंधु' की दृष्टिसे ही विचार कर सकते थे। मैं अुन्हें क्या लिख कर दूं? अुपवास अगर गांधीजीकी अिच्छानुसार अुत्सवकी चीज लगती हो, तो अुसके अुत्सवगान लिखनेका भी मुझे भान न रहना चाहिये, अुसके रहस्यमें मुझे तल्लीन हो जाना चाहिये, अन्तर्मुख वनना चाहिये और वोलना छोड़ देना चाहिये। अगर वह दुःखकी वात हो, असह्य हो, तो मुझे गांधीजीका विरोध करना चाहिये। आज तक तो अुसे समझनेका— समझानेका नहीं, परंतु समझनेका ही प्रयत्न कर रहा हूं। मेरे लेख अुसे समझनेके प्रयत्नमात्र हैं। अिन प्रयत्नोंमें आज नअी स्फूर्ति मिली है। "यह अुपवास केवल धर्मके लिअे है, यह चीज मुझे तो क्षण-क्षण अधिक प्रतीत होती जा रही है। दुनियाको भी हो जायगी। तुम आज छूट कर आ गये।

आश्रम यह चीज तुमसे समझनेकी आशा रखेगा। तुम समझा सकोगे। लोग यह आशा रखते होंगे कि आज तुम्हारा स्थान मेरे पास है, पर तुम्हारा स्थान आश्रममें है — भले अेक-दो दिनके लिअे ही सही। और तुम मुझे छोड़कर आश्रम जाओगे तो यह भी लोगोंके लिअे अेक सवक हो जायगा कि यह अुपवास धर्मके लिअे है।" अिन शब्दोंके लिअे मैं तैयार था, आश्रम जानेकें लिअे तैयार था, अिसलिअे तुरंत ही मैंने कहा: 'तैयार ही हूं।' पर यह तो कैसे कह सकता हूं कि समझानेको जानेके लिअे तैयार था? — समझने, प्रायश्चित्तका कुछ रहस्य समझने और अुसमें भाग लेनेको तैयार था, समझानेका भार लेकर जानेको तैयार नहीं था।

पर मेरी स्थिति वहुतसे पाठकोंकी-सी है, अिसलिअे वे आसानीसे समझ सकेंगे। भाअी चंद्रशंकरने यहांके वातावरणका वयान करते हुअे जो कुछ लिखा है, वह मेरे देखनेमें आया है। अुसमें मेरे अपने सम्वन्धका भाग मैं रोक सकता था, पर मुझे रोकनेकी जरूरत मालूम नहीं हुअी। गेरसप्पाकी वात अुन्होंने अच्छी याद की। यह वात सच है, पर अुसमें अेक कटु रहस्य भरा हुआ है। गांधीजी मेरे लिअे गेरसप्पा हैं, पर गेरसप्पाका वेग कौन सह सका है जो मैं सह सकूंगा? नलका या छोटे झरनेका पानी मुश्किलसे सहा जा सकता है, पर गेरसप्पाके नीचे तो चूर-चूर होकर सफाया हो जाय। आज गांधीजी मानो पुकार कर कह रहे हैं: 'वरदाश्त करो या चूर-चूर होकर मिट जाओ।' अिन दोनोंमें से अेक करनेकी अीश्वर मुझे शक्ति दे, देशको दें। मेरे खयालसे वेचारे देशकी भी मेरी ही जैसी हालत है। रोज सुवह गीता-पाठ करता हूं। अुसमें शांति, वल, समाधान और ज्ञानका ढेर भरा है। पर पाठ करनेके वाद यही भाव गूंजते रहते हैं:

> "तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो ॥
> आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद।
> विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम् ॥"

आशाकी किरणें

अिस प्रकार दस दिन ध्यान धरकर, दस दिन वाद निकट आकर जव अुग्र तेजसे चकाचौंध होती है, तव जरा अन्तर्मुख होने पर धीरज वंधता है, शांति मिलती है, तपके अुग्र तेज़के वजाय सौम्य स्वरूपके कुछ दर्शन होते हैं, अविश्वास और अश्रद्धाकी घवराहट दूर होती है और श्रद्धा फिर अपना स्थान ले लेती है। अपनी अशक्ति, अपनी अपवित्रता पर मुझे क्यों जोर देना चाहिये? मेरे अपने लिअे भले ही जोर दूं, पर दूसरोंको क्यों भूलूं?

अगर मेरी अशक्ति और अपवित्रता सब जगह भरी हो, तब तो अैसे किसीकी प्रार्थना काम नहीं आयेगी और हम गांधीजीको खो बैठेंगे। पर सौभाग्यकी बात यह है कि गांधीजीने ही जो प्रेम, पवित्रता और त्याग अिन पन्द्रह वर्षोंमें जाग्रत किया है, अुसके परिणामस्वरूप अनेक पवित्र विभूतियां मौजूद हैं, जिनकी प्रार्थना अिस बार जरूर काम करेगी। मीराबहन, जिनका नामस्मरण भी थोड़ी देरके लिअे तो मनुष्यको पवित्र कर सकता है, बेचारी साबरमतीके कारावासमें पड़ी-पड़ी जो प्रार्थना कर रही होंगी, वह प्रार्थना गांधीजीकी अिच्छाको नहीं ताकत देगी तो कौन देगा? जवाहरलालकी, जिनकी आत्माका जौहर गांधीजीके नाम आये हुअे अुनके दो तारोंमें और पत्रोंमें चमक रहा है, प्रार्थना क्या बेकार जायगी? औरोंके नाम कहां दूं?

और अिस देशके बाहर दूसरे कितने ही पवित्र व्यक्ति जागरणभरी प्रार्थना कर रहे हैं, अिसका बहुतोंको पता न होगा। जर्मनीमें अेक बहन बैठी हैं, जिन्हें गांधीजीके पहले दर्शन और अुनका पहला परिचय पिछली युरोपकी यात्राके समय हुआ था। अुनका पत्र अेक भी डाकमें न हो, यह नहीं होता। वे हरिजनोंके लिअे नियमित रूपसे रुपये जमा करके भेजनेमें नहीं चूकतीं। अुनके प्रेमभरे पत्र देने लगूं, तो 'हरिजनबंधु' के सारे पन्ने भर जायं। और विलनवमें संन्यास लेकर बैठे हुअे ऋषि रोमां रोलां — जिन्होंने गांधीजीको चर्म-चक्षुओंसे देखनेके पहले आर्ष दृष्टिसे देखकर गांधीजीका पाश्चात्य जगतको अद्भुत परिचय दिया था — जो कुछ लिखते हैं, अुसमें अुनकी अुमड़ती हुअी भक्तिके अलावा सबके लिअे आशा और आश्वासन रहते हैं। अुसका अनुवाद 'हरिजनबंधु' में आ गया है। अुस पर 'हरिजनबंधु' के पाठक विचार करें और अुसे हजम करनेकी कोशिश करें। हिंसासे अुबल रहे, जल रहे युरोपकी रग-रग यह महात्मा जानता है और यह मानता है कि शायद अुस हिंसाकी भूखको बुझानेके लिअे ही यह अग्निहोत्र आरंभ हुआ है। यह समझने और सोचनेकी बात है। किन्तु हमारे यहां — अपने घरमें, समाजमें, धर्ममें, राज्यमें, क्या कम आग लग रही है? कम अन्याय और अत्याचार हो रहे हैं? अिस आगको शांत करनेके लिअे अहिंसाकी पराकाष्ठा रूपी यह गंगाकी धारा काम नहीं आयेगी, तो और कौन काम आयेगा? पर ओश्वरकी अिच्छा होगी तो अिस विचारको मैं अगले अंकमें आगे बढ़ाअूंगा।

४

आश्रम कौनसा ?

पिछले 'हरिजनबंधु' में मैंने गांधीजीसे मिलकर तुरंत ही लिखा था। दूसरे दिन मैंने गांधीजीसे विदा ली। वह मेरे लिअे कठिन अवसर था। 'तुम्हारा स्थान आश्रममें है' ये शब्द मेरे कानोंमें गूंज रहे थे। आश्रम अुनकी प्रिय कृति, आश्रम ही अुनका शरीर है, अिसलिअे आश्रमके विचार अुन्हें अिस तपश्चर्यामें बार-बार आते हों तो आश्चर्य नहीं। अुन्हें अपना सारा काम आश्रमके द्वारा लेना है। स्वराज्यकी आखिरी लड़ाअीका श्रीगणेश आश्रमसे दांडी-कूच करके ही किया गया था। अिस पवित्र धर्मयुद्धको जो नया स्वरूप देनेका विचार है, वह भी आश्रमके द्वारा ही क्यों न शुरू किया जाय? रावणसे भी ज्यादा भयंकर राक्षसको मारनेके लिअे कितनी पवित्रता चाहिये? आश्रममें अैसी पवित्रता न हो, तो आश्रमका अुपयोग अिस धर्मयुद्धमें कैसे किया जा सकता है? साधनोंकी शुद्धि पर गांधीजीने जितना जोर दिया है, अुतना और किसी सुधारकने नहीं दिया होगा। पर अिस युद्धके बारेमें खास तौर पर जरूरतसे ज्यादा दिखाअी देनेवाला जोर पवित्र साधनों पर अिसलिअे दिया गया है कि अिस युद्ध जैसा विकट युद्ध और शुद्ध धार्मिक युद्ध अभी तक लड़ा नहीं गया था। मामूली साग काटनेके चाकूको भी हम धो-धाकर साफ किये बिना अुसका अुपयोग नहीं करते। कोअी सर्जन आपरेशन करते समय अपने हथियारोंको अुबलते पानीमें डालकर शुद्ध किये बिना काममें नहीं ले सकता; ले तो वह अपने कामके लिअे नालायक ठहरे और अपराधी भी करार दिया जाय। तब युगोंसे पाताल तक जड़ जमाये बैठी हुअी, धर्मवृक्षके सहारे बढ़ती रहनेवाली अिस विष-बेलकी जड़ें काटनेके लिअे आश्रमरूपी शस्त्रका अुपयोग करना हो, तो अुस शस्त्रको जितना स्वच्छ, तेज और चमकदार बनाया जा सके अुतना कम है। 'तुम्हारा स्थान आश्रममें है।' अितनेसे वाक्यमें मैंने क्षणभरमें अितना अर्थ पढ़ लिया, यद्यपि गांधीजी खुद निकाल सकते हों तो अिससे ज्यादा गहरा अर्थ निकाल दें।

यह मर्म समझकर मैं जिस कामके लिअे आश्रम जा रहा हूं, अुसके बारेमें सोचकर कांप अुठा। गांधीजीसे ज्यादा बात करनेकी, अुनसे ज्यादा बात करवानेकी हिम्मत न हुअी। मैंने सजल नेत्रोंसे अुनसे विदा ली, पर

जाते-जाते कहा: "मैं प्रत्यक्ष देख रहा हूं कि यह अुपवास जैसे आपका रामके साथ रूठना है, वैसे ही आपकी आत्माका आपके शरीरके – आश्रमके – विरुद्ध बलवा है। यह शरीर अिस आत्माके योग्य न बने, तो आप अिसे छोड़कर भाग जायंगे, यह भी दीयेकी तरह साफ दीखता है। पर कांपते-कांपते अेक बात कह दूं? आप यह क्यों मान लें कि आपका शरीर साबरमती आश्रममें ही समाया हुआ है? पिछले पन्द्रह वर्षोंमें आपने जिस निष्प्राण देशमें प्राण पूरे हैं, वह सारा देश आपका आश्रम है, आपका शरीर है। अेक अंग सड़ा हुआ हो, तो अुसका नाश करने लायक निर्दय सदयता आपमें है। आश्रम अेक छोटासा अंग है, अुसको नष्ट करके साबरमतीमें फेंक दीजिये। पर अिस विराट शरीरके बहुतसे अंग तो देशमें हैं। हम सब पत्थर हों, तो भी देशमें आपने बहुतेरे हीरे पैदा किये हैं। मेरी मांग यह है कि आप केवल आश्रमका ही विचार करके अधीर न बनें।"

मुझे यह सवाल बहुत बार पूछा गया है कि मुझे आश्रममें अेकाअेक कैसे आना पड़ा। अिसके जवाबमें अितना पवित्र प्रसंग बतानेके सिवाय मैं और क्या कर सकता हूं? अुपवाससे आरंभ किये गये अनोखे अग्निहोत्रमें आश्रम क्या भाग ले सकता है, भाग लेनेका अुसका बूता या योग्यता है या नहीं, यह सब देखनेके लिअे मेरा आश्रम आना अनिवार्य था।

वल्लभभाअीकी वेदना और श्रद्धा

सरदारकी थोड़ीसी कथा मैंने पिछले अंकमें कही थी। थोड़ी अिस मौके पर भी कहनेकी जरूरत है। पिछले अंकमें ही कह सकता था, पर समय नहीं था, स्वस्थता नहीं थी। सरदार आसानीसे स्वस्थता खो बैठनेवाले व्यक्ति नहीं हैं। अुपवासकी बात सुनकर अुन्होंने जो स्तब्धता महसूस की थी और क्षण भर बाद जो अुद्‌गार प्रगट किये थे, वे मैं अपने पहले लेखमें दे चुका हूं। अिसके बाद वे स्वस्थ होने लगे। २ तारीखको अुनके नाम सर पुरुषोत्तमदासका पत्र आया था। अुसके जवाबमें अुन्होंने जो पत्र लिखा था, वह वेदनापूर्ण होने पर भी अुनकी दीर्घदृष्टि, शांत समझ और श्रद्धाको विलक्षण ढंगसे प्रकट करता है। अुस पत्रसे सभी लोग समझ और धीरज दोनों प्राप्त करें। सरदार और सर पुरुषोत्तमदासकी अिजाजतके बिना अुस पत्रका अुपयोग करनेकी आजादी अिसलिअे ले रहा हूं कि अिस पुण्यपर्वमें गांधीजीसे विलग हुअे सरदारकी याद सबको आती है और अुनके हृद्‌गत भाव जाननेको सभी आतुर हैं। यह रहा वह पत्र: (पत्रके लिअे देखिये, पृष्ठ २८०-८१)

अिस पत्रके छपनेके दूसरे दिन तो गांधीजीका अुपवास पूरा हो जायगा। २ तारीखको लिखे गये पत्रके अंतमें भय और निराशाकी छाया है। किन्तु अंतिम वाक्य वल्लभभाअीके धर्म-प्रवण हृदयकी श्रद्धा दिखाता है।

'आश्रम' शब्दकी मेरी अपनी व्याख्या करते समय मुझे वल्लभभाअी याद आ गये, अुनका पत्र याद आ गया। कौन कहेगा कि मैं आश्रममें हूं और वल्लभभाअी आश्रममें नहीं? मेरा अन्तर गवाही दे रहा है कि वे मुझसे सौ गुने अधिक आश्रमी हैं।

यज्ञमालाका युग

गांधीजीने अुपवासकी घोषणा करते समय जो वक्तव्य प्रकाशित किया था, अुसमें कहा था कि संभव है यह यज्ञ अेक बड़ी यज्ञमालाका आरंभ हो। गांधीजीके अग्निहोत्रको तुरंत ही दूसरे याज्ञिक अपना लेंगे, या अुसकी अग्नि शान्त होनेका खतरा मालूम होने पर दूसरे यज्ञ होंगे, या देशमें स्थान-स्थान पर यज्ञोंकी वेदियां रची जायंगी, यह चीज कालके गर्भमें छिपी हुअी है। गांधीजीके शब्दोंमें क्या मर्म छिपा हुआ है, यह भी मुझे मालूम नहीं। पर यह यज्ञमालाओंका युग है, अिसे रोमां रोलां जैसे क्रान्तदर्शी कवि तो ताड़ गये हैं।

पिछले अंकमें अिस ऋषि कविके पत्रका मैंने अुल्लेख किया है। अिस यज्ञमालाकी बात करते समय अिस पत्र पर थोड़ासा विवेचन करना अुचित समझता हूं। अिस पत्रका प्रथम भाग, हजारों कोस दूर बैठे हुअे भी, भीषण अन्यायके प्रति पुण्य प्रकोपसे जल अुठनेवाले हृदयके अुद्गार हैं। वैसे, अुसमें सनातनियोंके प्रति जो आक्षेप दिखाअी देते हैं, वे अुन पर कोअी लागू न करे। अिन पवित्र तीन सप्ताहोंमें अिस बातका विचार भी हमें नहीं आना चाहिये। सनातनी हमारे देशके भीतर हैं या बाहर हैं? सनातनी सहधर्मी हैं या परधर्मी? सनातनियोंके और हमारे हाड़मांस अलग-अलग हैं? अिस अुपवासकी हमारी जिम्मेदारी क्या सनातनियोंसे कम है? युगोंसे सारा देश निद्रामें पड़ा हुआ था। अुसमें सनातनी भी हैं। थोड़े बहुत जाग गये तो क्या वे दोषमुक्त हो गये? और जागनेके बाद भी अुनमें शुद्धि न हो तो? तब तो वे न जागे जैसे ही हैं, शायद न जागे हुओंसे भी बुरे हैं। अिसलिअे अगर मैं यह कहूं कि जागे हुओंकी जिम्मेदारी अुलटी ज्यादा है तो अत्युक्ति न होगी।

अब आता हूं अुस कविके पत्रके दूसरे और अमूल्य भाग पर। कवि युरोपके गृहयुद्धसे कांप रहे हैं, आनेवाला गृहयुद्ध पिछलेसे भी ज्यादा

भीषण होगा, जिसका अुन्हें दर्शन हो गया है। क्या अैसे गृहयुद्धकी ज्वालाको यह नया आहुति-मार्ग, आत्मसमर्पण-मार्ग शांत नहीं करेगा? ये क्रांतदर्शी कवि भविष्यवाणी करते हैं कि करेगा। दूसरा रास्ता नहीं है। हिंसाके मार्गकी आखिरी हद हम युरोपमें देख रहे हैं। हवामें विमान अुड़ाकर हत्याकाण्ड करनेसे संतोष न होगा, तो अन्तमें अिससे भी आगे जायेंगे। आगे जाकर कितनी गहराअीमें पड़ेंगे, यह राम जाने। पर वहांसे वापस अुठाकर अुन्हें खींच निकालनेके लिअे भी यही अेक राजमार्ग है। अहिंसाके मार्गकी छोटी चोटियां यमनियमादिका पालन है, परंतु अंतिम शिखर आत्म-विसर्जन है। हिंसा केवल सवलका हथियार है, जब कि अहिंसा निर्वल-सबल, स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध सबका हथियार है। जहां धर्मके नाम पर अपनेको अूंची माननेवाली जाति अिस हरिजन जाति पर असह्य अत्याचार करे—और वह अत्याचार जो नाटार लोग दक्षिण भारतमें कर रहे हैं, अुससे बुरा कौनसा हो सकता है?—वहां और कौनसा रास्ता काम आ सकता है? हरिजन स्त्रियां अपनी लाज भी पूरी न ढंक सकें, ढंककर आम रास्ते पर निकलें तो नाटार महाजनोंका पारा चढ़ जाय! यह दृश्य भीषण है। अुसकी भीषणतासे क्षुब्ध हो अुठी कौन वीरबाला अुस स्थान पर जाकर आत्मसमर्पण करनेको लालायित न होगी? राजपूतानेमें अेक प्रदेशमें हरिजनोंको पीनेके पानीकी कठिनाअी है। मीलों चलने पर मैले हौजसे, जहां पशु-पक्षी प्यास बुझाते हैं और जिसे मूर्ख मनुष्य गंदगी करके पशु-पक्षीके लिअे भी अयोग्य बना देता है, शायद हरिजन पानी ले सकते हैं! क्या यह अत्याचार कंपकंपी पैदा करनेवाला नहीं है? अैसा कोअी भी वीर पैदा न होगा, जो अुस भूमिमें जाकर जमकर बैठ जाय और प्रतिज्ञा कर ले, कि जब तक हरिजनोंको स्वच्छ निर्मल जल नहीं मिलेगा, मैं अपने होठों पर पानीकी अेक बूंद भी नहीं रखूंगा? पर अब अिसका अधिक विस्तार नहीं करूंगा। कवि रोमां रोलांका अेक वाक्य मनन करने लायक है। अुसीका विचार करके खतम करूंगा। मानव-समाजके अुन्होंने दो विभाग किये हैं—पीड़क और पीड़ित। पीड़क कष्ट दे रहे हैं, खूनकी नदियां बहा रहे हैं और पीड़ित क्रोधित हो रहे हैं। मगर पीड़ितोंमें से कुछको वह खून शहीद बना रहा है, तो कुछको मतवाला कर रहा है, अुनके होश भुलवा रहा है और अुनके लिअे विषरूप हो रहा है। कुछ बेचारोंको लगता है कि जिस शस्त्रसे हम पीड़ित हो रहे हैं, शायद अुसी शस्त्रसे हमारा अुद्धार हो जायगा। अिसके जैसी करुण दशा और क्या होगी? यह तो युरोपका वर्णन है। पर यहांका क्यों नहीं? हरिजन आज बेजबान हैं, कुछ बोलने लगे हैं। कल अुनमें कोप प्रवेश करेगा, परसों वे यह मानने लगेंगे कि हम

भी अपने पीड़कोंके हथियार काममें लें तो? तो — कहकर रुक जानेमें ही बुद्धिमानी है। यह वाक्य पूरा करते हुअे कलम और काया कांपती है। अिस गृहयुद्धको रोकने, पीड़ित हरिजनोंके लिअे भी अेक ही अुद्धारक मार्ग बतानेके लिअे यह अनोखा अग्निहोत्र शुरू किया गया है।

५

नाभिनन्देत मरणं नाभिनन्देत जीवितम्।
कालमेव प्रतीक्षेत निर्देशं भृतको यथा॥ मनुस्मृति॥

अमानत वापस

२५ तारीखको आश्रमसे वापस चलकर २६ तारीखको मैं 'पर्णकुटी' में अुपस्थित हुआ। दिनरात होनेवाली चिन्तामें मैंने प्रत्यक्ष भाग नहीं लिया था, पर अुलटे दूर रहनेके कारण मेरी मानसिक चिन्ता अधिक बढ़ गअी थी। यहां आकर यह मानसिक चिन्ता कम हो गअी। १९ तारीखको छूटने पर मेरे मन पर जो छाप पड़ी थी, २६ तारीखको आने पर अुससे दूसरी ही छाप पड़ी। और २८ तारीखको अुससे भी भिन्न छाप पड़ी। मेरे छूटनेसे पहले भाअी देवदासकी तरफसे मुझे खबरें तो जेलमें मिलती ही रहती थीं। अेक दिन मुझे खबर मिली थी — और अुसके लिअे मैं तैयार था — कि 'बापू दिन-दिन अधिक अन्तर्मुख होते जा रहे हैं, शरीरका ध्यान थोड़ा ही रखते हैं।' अुस दिन बापूका दिनों-दिन ज्यादा दुर्बल होता हुआ शरीर देखकर देवदासने कहा था, 'बापू, आप हजामत बनवा लें तो शायद हमें आपका कुम्हलाता हुआ चेहरा कुछ कम कुम्हलाया हुआ दिखाअी दे और चिन्ता कम हो जाय।' बापूने कहा था, 'हजामत आज नहीं, तीसरे हफ्ते, या अिससे भी अच्छा तो यह है कि आखिरी दिन कराअूं। मुझे शरीरका विचार कमसे कम आता है और रामनामके सिवाय मुझे किसी दूसरी चीजका विचार ही नहीं करना है।' अितने पर भी जब मैं २६ तारीखको आया, तब मुझे चिन्ता हो रही थी कि मैं क्या जवाब दूंगा। आश्रमसे अुन्होंने क्या आशा रखी होगी और मैं अुनकी आशाको कहां तक पूरा करूंगा। २६ तारीखको पहुंचते ही मुझे बुलाया। पर मुझे मालूम हो गया कि मेरी चिन्ताका कुछ भी कारण नहीं था। मैंने कहा कि 'आश्रममें खूब बातें की हैं, आपके पत्र वगैरा बार-बार पढ़कर समझ लिये हैं और आपका अुपवास खुलनेके बाद

आपसे ज्यादा चर्चा करूंगा।' अिस पर अुन्होंने प्रसन्नतासे कहा: 'यह ठीक है।' अुस दिन अुन्हें किसी बातकी परवाह नहीं थी। पर २८ तारीखको मानो अुनकी मनोवृत्तिमें परिवर्तन हो गया। मैंने अुन्हें अिस ढंगसे विचार करते हुअे देखा, मानो अुन्होंने अपना शरीर, जो वे अीश्वरके सुपुर्द कर चुके थे, वापस ले लिया। २८ को सुबह मौन लेनेसे पहले जब अुन्होंने मुझे बुलाया, तब मैंने देखा कि अुनकी शांतिका कोअी पार नहीं था। अुन्होंने पूछा: 'कलके लिअे क्या कार्यक्रम रखा है? डॉक्टर अनसारी कुरान शरीफकी कोअी आयत बोलेंगे। अीसाअी सेवा संघवाले कोअी भजन गायेंगे। हमारा वैष्णव जन तो है ही।' मैंने कहा: 'हमने अैसा ही कुछ सोच रखा था। हमारी योजना यह थी कि यह प्रार्थना ११॥ बजे शुरू की जाय और १२ बजे पूरी कर दी जाय, ताकि १२ बजे आप अुपवास खोल सकें।' अुन्होंने तुरन्त ही कहा: 'नहीं, सब कुछ प्रार्थनाके बाद। और अुपवास तो १२ बजे शुरू हुआ था, अिसलिअे १२ बजे ही पूरा होगा। अुसके बाद ही प्रार्थना करनी है।' पूज्य कस्तूरबा तो सुबहसे मुझे पूछ रही थीं कि गांधीजीने ८ मअीके दिन कितने बजे आखिरी फलाहार किया था, और जब मैंने अुनसे कहा कि आखिरी फलोंका रस ११॥ बजे लिया था, तब अुन्हें आशा थी कि २९ को भी ११॥ बजे ही अुपवास खुल जायगा। अिधर गांधीजीने तो अैसी योजना बताअी कि ठेठ १२॥ बजे ही सब कुछ पूरा हो। पूज्य कस्तूरबा जरा परेशान हुअीं। मैंने हंसते-हंसते कहा: 'बा, २१ दिनसे १ घंटा और ज्यादा सही।' कस्तूरबा हंसीं। गांधीजी भी जरा हंसे और अिशारा किया कि यही ठीक है। अितना होनेके बाद शामको ५ बजे फिर मुझे अुनके पास जाना पड़ा, — जाना अिसलिअे पड़ा कि अुनके मौनके कारण बड़े अक्षरोंमें लिखी हुअी कुछ सूचनाअें अुनके परिचारक पढ़ नहीं सके थे। अिन सूचनाओंमें लिखा था: "महादेव कहता था कि अीशावास्य भी बोला जायगा। यह नहीं चलेगा। अिसकी अपेक्षा तो 'सिद्धोऽथ बुद्धोऽथवा' वाला श्लोक बोलना। फिर कविका वह गीत अमिय बोले या महादेव बोले। वह श्लोक भजनावलिमें है।'

अिस तरह अुन्होंने अब मनमें निश्चय कर लिया था कि अीश्वरको सौंपी हुअी अमानत अीश्वरने वापस दे दी है और अुसका अधिक अुपयोग करनेका विचार तो करना ही पड़ेगा।

चमत्कार

२९ मअीको दुनियाको विश्वास हो गया कि चमत्कारका जमाना अभी बीत नहीं गया है। कैसे बीते? चमत्कारमय, लीलामय, परम करुणानिधान

सतत क्षण-क्षण हमारे साथ है, था और रहेगा — जिसे यह श्रद्धा है, अुसे अिसमें शंका हो ही नहीं सकती कि क्षण-क्षण चमत्कार होते ही रहेंगे। फर्क सिर्फ अितना ही है कि चमत्कारका अर्थ दुनियाका और गांधीजीका अलग-अलग है। जब अुपवाससे पहले अेक अखबारवालेने गांधीजीसे कहा था कि डॉक्टर तो कहते हैं कि 'अिस बार आप बच जायं तो चमत्कार ही होगा।' तब गांधीजीने तुरन्त कहा था: 'अच्छा, तो मैं कहता हूं कि चमत्कारका जमाना बीत नहीं गया।' अिसका कोअी यह अर्थ न करे कि अगर गांधीजीका शरीर नष्ट हो जाता, तो यह सिद्ध हो जाता कि करुणामय अीश्वरके चमत्कार बन्द हो गये हैं। गांधीजी तो अुस घटनाको भी अीश्वरका चमत्कार ही मानते, क्योंकि सच्चे अीश्वर-भक्तके लिअे घटना-मात्र अेक चमत्कार ही है। यह श्रद्धा शुद्ध प्रपत्तिसे पैदा होती है। और यह श्रद्धा जिसकी रगरगमें व्याप्त होती है, अुसके क्षणिक अुद्गारोंमें भी दीर्घ चिंतनकी ही झंकार सुनाअी देती है, अुसके प्रासंगिक विनोदोंमें भी गंभीर सत्य छिपा रहता है। अैसे ही निश्चिन्त होकर बैठे हुअे कोअी महात्मा मस्त होकर कह सकते हैं: 'अुसे रखना होगा तो रखेगा और अुठा लेना होगा तो अुठा लेगा।' छः तारीखको जब वह हरिजन युवक आया और अुसके साथ मीठा संवाद करके गांधीजीने अुसे कहा कि 'तू २९ तारीखको बारह बजे अेक नारंगी लेकर आना, मैं तेरी नारंगीके रससे अुपवास खोलूंगा', तब अुस वचनमें मधुर विनोद ही नहीं था, बल्कि करुणामयकी लीलाका दर्शन था। अिसीलिअे अुन्होंने अुपवास छूटनेके चार दिन पहले डॉ० विधान रायसे कहा था: 'हार गया तो भी जीत होगी!' महात्मा कबीरके वचनोंमें हम यह मस्ती पाते हैं। शरीरकी चादरकी अुपमा देकर अुस सिद्धहस्त जुलाहेने भगवानने अुसे किस तरह बुना अिसका वर्णन किया और फिर अपने बारेमें कहा कि:

> दास कबीर जतनसे ओढ़ी
> ज्योंकी त्यों धर दीनी चदरिया।

जिसने अपनी चादर हमेशाके लिअे जैसीकी तैसी बुनकरको सौंप दी है, वही अुस जुलाहेके साथ खेल खेल सकता है, बाजी लगा सकता है। यह मस्त फकीर ही गा सका:

> तन मन धन बाजी लागी,
> हो तन मन धन बाजी;
> हारी तो पिअुकी भअी रे,
> जीती तो पिअु मोर हो।
>
> — तन मन धन बाजी

अिस प्रकार हार और जीत दोनोंको जो अपनी मानता ही नहीं, जिसने ये दोनों अीश्वरको सौंप दी हैं, वही कह सकता है कि हार-जीत दोनों मेरे लिअे अच्छी हैं, दोनोंमें मेरी जीत है।

सोनेका सूर्य

फिर भी हमारे जैसे प्राकृत जनोंके लिअे अुनके जीनेमें ही जीत थी, अुनके जीनेमें ही चमत्कार था; और वे मौतके मुंहमें से वापस आ जायं, अिसीमें हिन्दुस्तानके लिअे सोनेके सूर्यका अुदय था। हजारों और लाखोंने यह प्रार्थना की थी और अुस प्रार्थनाको सुनकर लीलामय भगवानने २९ तारीखके दिन सोनेका सूर्य अुगाना मंजूर किया। ८ मअीको जो गंभीर पावक दृश्य जेलमें दिखाअी देता था, वही दृश्य २९ मअीके दिन 'पर्णकुटी' में सबको देखनेको मिला। ८ मअीको गांधीजी सरकारके कैदी थे। अुस दिन सरकारके बंधनमें जितना गांभीर्य और पावित्र्य लाया जा सकता था, अुतना लाना था। आज स्वतंत्र रूपमें हम सूर्य पर जितना मुलम्मा चढ़ा सकते हैं, अुतना चढ़ा सकते थे। पर सरोजिनी देवीने अपने छलकते हुअे कवित्व और अुमड़ती हुअी अुदारताको दबाकर सोनेके सूर्यको चमक देनेकी अिच्छाको रोक लिया, जान-बूझकर थोड़े ही आदमियोंको बुलाया, और अनुदार बन कर बहुतोंको अिनकार कर दिया था। पर हरिजनोंके लिअे अुन्होंने छूट रखी थी। अुस हरिजन विद्यार्थीकी मैं दो दिनसे बाट देख रहा था। दुःखकी बात है कि मेरे पास अुसका पता नहीं था, नहीं तो मैं अुसे पकड़ लाता। पर मैंने आशा रखी थी कि समय पर वह आ जायगा। अुसे आने देनेके लिअे मैंने सबसे कह रखा था। अुसका नाम भी दे रखा था। पर वह न आया। अखबारवालोंने छाप दिया कि वह आया है। मि० हॉर्निमैनने किसी भी लड़केको खड़ा करके अुसका चित्र भी दे दिया है। मि० हॉर्निमैनको अखबार चलानेकी कलाके लिअे यह झूठका मुलम्मा चढ़ाना जरूरी मालूम होता है, मुझे नहीं होता। सत्यको किसी भी तरहके मुलम्मेकी जरूरत नहीं। मैं यह मानता हूं कि असत्यके मुलम्मेसे तो सत्य असत्य ही बन जाता है, काला पड़ जाता है। अिसलिअे मुझे तो सच्ची बात ही कहनी पड़ती है। खैर।

अिस प्रकार अुस धन्य दिवस पर परम भाग्यशाली गं० स्व० प्रेमलीला बहन ठाकरसीके भाग्यमें ही गांधीजीके लिअे नारंगीका रस तैयार करनेका काम आया। और जिन्होंने ८ तारीखको गांधीजीके लिअे अपना महल खोल दिया, बल्कि पहलेसे ही सारी झंझट अुठा ली, अुनका यह भाग्य

हो तो अिसमें ओीश्वरकी कृपाके सिवाय और क्या हो सकता है? 'झंझट' अिसलिअे कहता हूं कि अुन्हें भी गांधीजीके बारेमें कम चिन्ता नहीं थी। जैसे सरकारका खयाल था कि अिस बार गांधीजी नहीं अुठेंगे, अुसी तरह अतिस्नेही मित्रोंको भी डर था कि कहीं कुछ हो न जाय! अैसा डर होते हुअे भी गांधीजीको अपने घरमें अुपवास करनेके लिअे बुलाना और गांधीजीके अनेक सेवकोंके लिअे अपने महलको धर्मशाला बना देना या सचमुच पर्णकुटी बना डालना असाधारण साहस था, ओीश्वरश्रद्धा थी। अुनकी यह हिम्मत और श्रद्धा सफल हुअी।

हरिजन युवक तो नहीं आया, पर दूसरे बहुतसे हरिजन भाअी-बहन आये थे। अहमदाबादसे कीकाभाअी और अुनकी मंडलीके लोग पहले ही अिजाजत लेकर आ गये थे। पूनाके श्री राजभोजके आश्रमके और श्री शिंदेके आश्रमके भाअी-बहन भी मौजूद थे, और गांधीजीको पहला हार देनेवाली अेक हरिजन बहन थी। यह बहन अचानक ही आ गअी थी और अुसने हार दिया अिसलिअे अुस बहनको गं० स्व० प्रेमलीलाबहन और दूसरी बहनोंकी मंडलीने अपनेमें मिला लिया। सब हरिजन भाअी सच्चे हरिजनसेवक ठक्कर बापा और जमनालालजीके आसपास घेरा बनाकर गांधीजीके सामने बैठे थे।

सब लोग अवसरके गांभीर्यके अनुरूप शांति रखकर बैठे थे, बच्चे भी शांत थे। अखबारवाले भी अपने कैमरे वगैरा छोड़कर आये थे। अुपवासका आरंभ रामधुनसे हुआ था, अुसकी पूर्णाहुति भी रामधुनसे शुरू हुअी। बादमें डॉ० अनसारी साहब, जिनकी खुशीका आज पार नहीं था, डॉक्टरी छोड़कर थोड़ी देरके लिअे मौलवी बन गये। पहले दिन शामको ही डॉक्टर साहबने मुझे कह दिया था: 'भाअी मेरा खानदान तो मौलवियोंका ही खानदान है। मेरे यहां किसीको अरबी न आती हो यह हो ही नहीं सकता। सिर्फ मैं ही नापाक निकला। लेकिन बापूकी अिच्छा हुअी कि मैं कुरानशरीफ पढ़ूं, अिसलिअे यह तो बड़ा सौभाग्य है।' वे बड़े ही प्रेमके साथ कुरानशरीफ देख गये, अुसमें से अुपवास सम्बन्धी आयतें निकालीं, और यह बता दिया कि वह अिस्लामके लिअे प्रिय वस्तु है और मानो गांधीजीके ही शब्दोंमें अुसका रहस्य कह दिया कि अुपवासमें मनुष्य अिंद्रिय-मात्रको—मनको निराहार रखता है, विषयोंका रसमात्र लेना बन्द कर देता है और आत्माको ओीश्वर-प्रणिधानके आहारसे मस्त रखता है। ओीसाअी सेवा संघके दो भाअियोंने अिस पुण्य प्रसंग पर अपने भक्तोंके लिअे प्राण अर्पण करनेवाले महात्मा ओीसाके बलिदानकी महिमा गानेवाला भजन सुनाया। अुसके बाद प्रोफेसर वाड़ियाने जरथोस्ती प्रार्थना की और सारी आर्य

प्रार्थनाओंकी अेकवाक्यता बतानेवाली प्रार्थना की, और बादमें काकासाहबने गांधीजीका कलका सुझाया हुआ श्लोक गाया——भगवानका नाम, आकृति और स्वरूप कुछ भी हो, पर जिसमें रागद्वेषरूपी विषकी पीड़ा नहीं, जो परम करुणामय है और जो निर्मल प्रेममय है, अैसे भगवानका ध्यान करनेवाला यह श्लोक अिस अवसरके लिअे समुचित था:

विष्णुर्वा त्रिपुरान्तको भवतु वा ब्रह्मा सुरेन्द्रोऽथवा
भानुर्वा शशलक्षणोऽथ भगवान् बुद्धोऽथ सिद्धोऽथवा ।
रागद्वेषविषार्तिमोहरहितः सत्त्वानुकंपोद्यतो
यः सर्वैः सह संस्कृतो गुणगणैस्तस्मै नमः सर्वदा ।।

अिसके बाद कविवर टैगोरका गीत गाना, भाअी अमिय चक्रवर्तीके यह कहनेपर कि अुन्हें गानेकी आदत नहीं है, मेरे हिस्सेमें आया:

जीवन जखन शुकाये जाय, करुणा-धाराय अेशो
सकल माधुरी लुकाये जाय, गीत-सुधारसे अेशो।

भारतका जीवन, भारतके प्राण सूख जानेवाले हैं, अैसा डर सबको हो गया था, और अिक्कीस दिन सबके श्वासोच्छ्वासमें मानो यही प्रार्थना थी, तब भगवान करुणा बरसाते, गीत सुधा सरसाते हुअे आये। अन्तमें हरअेक सुख-दुःखके, हर्ष और परीक्षाके मौके पर समताका स्मरण करानेवाला परम वैष्णवोंका माना हुआ 'वैष्णव जन तो तेने कहीअे' वाला भजन गाया गया और प्रार्थना पूरी हुअी।

पर पारणा? पारणामें अभी देर थी। सब पारणा करानेको आतुर थे, पर गांधीजी अभी आतुर नहीं थे। अीश्वरकृपा भी प्रत्यक्ष मूर्तस्वरूप ग्रहण करती है, तो अुसके लिअे धन्यवाद भी मूर्तरूपमें मानना चाहिये। अुसके बिना पारणा कैसे हो? अुन्होंने बड़ी कोशिश करके मित्रोंको सुनानेके लिअे मेरे कानमें नीचे लिखे शब्द कहे। परम करुणामयकी करुणाको स्वीकार करते हुअे अुनकी कृतज्ञतासे गीली हुअी आंखें मैं देख सका:

'अेक मिनटमें मैं अुपवास छोड़ दूंगा। जिस अीश्वरके नामसे और जिसकी श्रद्धासे यह अुपवास शुरू किया था, अुसीके नामसे वह छूटेगा। मेरी श्रद्धा आज घटी नहीं, बल्कि बढ़ी है। यह अवसर केवल अीश्वरका नाम लेने और भजन करनेका है। पर मुझ पर डॉक्टरों, मित्रों और दूसरे लोगोंने जो अटूट प्रेम अुंडेला है, अुसे मैं कैसे भूल सकता हूं? अिसलिअे अुसका अुल्लेख कर देता हूं; क्योंकि यह भी अीश्वरकी कृपाका अेक भाग है। अुनको बदला तो अीश्वर ही देगा। हरिजन भाअी यहां आये हैं, यह मुझे

बहुत अच्छा लगा। अब ओश्वरको मुझसे क्या काम लेना है, यह मैं नहीं जानता। पर कुछ भी लेना हो, मैं निश्चिन्त हूं। अुसके लिअे वह शक्ति दे देगा।'

अिस प्रकार जिनकी सेवामें गांधीजीने ओश्वरकी कृपा देखी, अुनके नाम देनेकी जरूरत है? नाम तो अखबारोंमें रोज छपे हैं। डॉक्टरोंके नाम सब जानते हैं। पर डॉ० अनसारी और डॉ० विधानके नाम फिरसे लेनेको जी चाहता है। दोनोंका धंधा खूब चलता है, और दोनोंके जिम्मे खूब रुपया देनेवाले बीमारोंकी देखभालका काम है। पर डॉ० अनसारी अुपवासके ज्यादातर दिनोंमें अपना धंधा, अपने बीमार और अपनी नाजुक तंदुरुस्ती सबको भूलकर गांधीजीके पास बैठे रहे। डॉ० विधान राय भी डॉ० अनसारीके तार देते ही आ गये और ३० तारीख तक रहे। डॉ० देशमुख, पटेल वगैरा बम्बअीकी मंडली और पूनाके डॉक्टर तो जब बुलायें तभी मौजूद थे। पर अिनमें भी डॉ० दिनशा महेताकी सेवाकी जितनी कदर की जाय अुतनी ही थोड़ी है। यह कहें कि अुन्होंने अपना प्राकृतिक चिकित्साका आरोग्य भवन गांधीजीकी सेवाके लिअे अर्पण कर दिया था तो भी कोअी हर्ज नहीं। वे खुद और अुनके साथी अपनी तमाम साधन-सामग्री सहित दिन-रात गांधीजीकी सेवामें हाजिर रहते थे। वे तो अब भी, जब यह लेख लिखा जा रहा है, मौजूद हैं।

अुपवासके दिनोंमें चौबीसों घण्टे और अुपवास पूरा हो जानेके बाद अब भी गांधीजीकी अतंद्रित मूक सेवा करते रहनेवाले अपने मित्रोंके नाम देना तो अुनका अपमान करना होगा।

अिस सारी सेवाका, सेवारूपी अिस सारी प्रार्थनाका पलड़ा मेरे जैसोंकी भूलों और पापोंके पलड़ेसे कुछ भारी होगा, तभी गांधीजी फिरसे सजीवन हुअे होंगे न! कुछ मित्रोंने लिखा है कि गांधीजीका पुनर्जन्म हुआ है। सच बात है। अनेकानेक मित्रोंके अभिनन्दनके, प्रार्थनाके तार आये हैं, अभी तक आते जा रहे हैं, अुपवासके दिनोंमें भी आते थे। भाअी मथुरादास त्रिकमजीने, जिन्होंने अिन पत्रों और तारोंको रख छोड़ने और जितने दिखाने चाहियें अुतने ही दिखानेका अप्रिय काम स्वीकार किया था, सब कुछ संभालकर रखा है। अनेक मित्रोंने अपने प्रेमकी अनेक निशानियां भेजी हैं, वैद्योंने तेल भेजे हैं, डॉक्टरोंने दवाअियां भेजी हैं, हरिजन विद्यार्थियोंने शहद भेजा है, कुछने गंगाजल भेजा है। पर अेक प्रेमभेंटका अुल्लेख किये बिना नहीं रहा जाता। बम्बअीसे अेक मुसलमान भाअीने अेक छोटीसी डिबियामें दो नाजुक चूड़ियां और हलदी-कुंकुम भेजे हैं, और यह भेंट भेजते हुअे नीचेके प्रेमल अुद्गार प्रगट किये हैं: 'प्यारी बहन कस्तूरबाअी, आपका सौभाग्य-चूड़ा जन्मजन्मान्तर

तक अखण्ड रहे, अिस प्रार्थनाके साथ ये दो सौभाग्यकी चूड़ियां और हलदी-कुंकुम आपको २९ तारीखको पहुंचे, अिस तरह अेक मुसलमान भाअी अीश्वर-प्रार्थनाके साथ भेज रहा है। अिसे स्वीकार कीजिये।' अिस भाअीने अपना पता भी नहीं भेजा, अिसलिअे क्या किया जाय? पर ये पंक्तियां अुनके देखनेमें आ जायं, तो अुन्हें मालूम हो जायगा कि पूज्य कस्तूरवाने प्रेमसे अिस कुंकुमकी विन्दी माथे पर लगाअी और थोड़ी देरके लिअे चूड़ियां भी पहनीं। वहुत मोटी होनेके कारण हमेशा नहीं पहनी जा सकती थीं। गांधीजीसे जव यह वात कही गअी, तव अुन पर भी वड़ा असर हुआ। अिन और अैसे कितने ही अज्ञात भाअी-वहनोंकी प्रार्थनाके परिणामस्वरूप गांधीजी जीते हैं।

दूसरी वाजी

पर अिस जीतके साथ अेक प्रकारके विचार पूरे हुअे, और अुपवास पूरा होते ही मानो गांधीजी दूसरी वाजीके विचार करने लगे हैं। मनुस्मृतिका अिस लेखके अूपर दिया हुआ श्लोक मानो अुनके जीवनकी रग-रगमें समा गया हो, यह अनुभव अुपवासके समाप्त होते ही मुझे हुआ। जिसने प्रपत्ति साध ली है, वह न मृत्युसे खुश होता है, न जीनेसे। मगर जैसे नौकर मालिकके हुक्मकी वाट देखते हुअे हमेशा तावेदार वनकर खड़ा रहता है, वैसे ही वह अदृष्टकी प्रतीक्षामें रहता है। अिसी तावेदारीके भक्तिपूर्ण भावसे मीरावाअीने कहा है:

'मने चाकर राखो जी'

मालिकने अेक काम सौंपा था, सो पूरा हो गया। अव दूसरा काम क्या है, अिसकी प्रतीक्षा गांधीजी चाकर भावसे कर रहे हैं। अिसे प्रत्यक्ष वतानेवाली अेक चिट्ठी थी, जो अुपवास समाप्त होते ही अुन्होंने मीरावहनको लिखी थी। हाथमें ताकत नहीं, परन्तु अुसी दिन काग़ज और चिट्ठी मांगी और कांपते हाथोंसे, वड़े अक्षरोंमें, चश्मा लगाये विना, अपनी प्रियतमा पुत्री मीरावहनको अिस तरह लिखा: 'अभी-अभी अुपवास छूटा है। अव और नये कामका आरंभ होता है। अिसे किस तरह पार लगाया जाय, यह वह प्रभु जाने। वही सारी वाजी जमा देगा, वही सामग्री जुटा देगा।'

पर हम अुनके सेवक? हम सेवक होनेका विरुद लेकर तो घूमते हैं, पर सेवा कर नहीं सके। अगर सच्ची सेवा की होती, तो क्या अिस अुपवासकी नौवत आती? आज तो थोड़ी देरके लिअे हमारे चेहरों पर हंसी आ गअी है, पर हमें हंसते देखकर गांधीजी कहते होंगे: 'ये लोग कितने मूर्ख हैं! अेक

विघ्न टल जानेमें अितनी खुशीकी क्या बात है? जिस महाव्यथाकी जड़ अुखाड़नी है, वह तो अभी कायम है; और जब तक वह है, तब तक ये लोग क्यों नहीं समझते कि यह काया फिर भगवानके ही सुपुर्द है?' मैं अूपर लिख चुका हूं कि सोनेका सूर्य अुगा है। पर हम सबके लिअे तो सोनेका सूर्य तब अुगेगा, जब प्रत्येक हरिजनके घरमें अुस सोनेके सूर्यकी किरणें गरमी, रोशनी और जीवन पहुंचाती होंगी, जब अुस सूर्यकी किरणें गांधीजीके नामसे फिरनेवाले और 'सत्याग्रही' की पदवी लेकर घूमनेवाले हम सबके दिलोंमें चमक, प्रकाश और पवित्रता पहुंचायेंगी और हमें भाअी-भाअीके दुःखसे द्रवित होनेवाले बनायेंगी।

६

वह क्यों नहीं आया?

मैं पिछले अंकमें बता चुका हूं कि जिस हरिजन युवकको २९ तारीखको गांधीजीके लिअे नारंगी लेकर आना था, वह अुस दिन नहीं आया था। पर १ जूनको अुसका बिना टिकिटका पत्र आया, जिसमें अुसने शिकायत की थी कि 'मैं आया था, लेकिन मुझे भीतर नहीं आने दिया गया!' मैंने अुसे तुरन्त बुलाया। अुसे लिखा कि अब भी अपनी नारंगी लेकर आ जाओ। गांधीजी अेक दिन खा रहे थे, तभी वह आ पहुंचा। गांधीजीने अुसके हाथसे नारंगी लेकर तुरन्त खा ली। वह खुश हो गया। मैंने अुससे कहा कि 'मैं मान नहीं सकता कि तू आया हो और तुझे कोअी अिनकार कर दे; क्योंकि मैंने तीन-चार आदमियोंको कह रखा था कि जाधव नामका युवक आये तो अुसे तुरन्त अन्दर आने देना।' अिस पर अुसने कहा कि वह बारह बजे नहीं आया था, शामको छः साढ़े छः बजे आया था। क्योंकि कालेजकी छुट्टियोंमें अुसने नौकरी ढूंढ़ ली थी और सोमवारको छुट्टी नहीं मिल सकती थी। मैंने अुससे जरा ज्यादा पूछताछ की, तो अुसने धीरे-धीरे अपनी मनस्थिति बताअी। अुसने कहा कि अुपवासके दिनोंमें वह दो-तीन बार पर्णकुटी आ गया था। गांधीजीकी तबीयतके समाचार पूछ गया था। पर २९ तारीखको आनेकी अुसकी हिम्मत किसी भी तरह न हुअी। मैंने अुससे कहा: 'तेरी जगह मैं होता तो यह अमूल्य अवसर नहीं खोता। मुझसे १२ बजे न आया जाता, तो सवेरे आ जाता। पर यह जानकर कि मेरे हाथसे फल लेकर गांधीजी अुपवास छोड़ेंगे और गांधीजीका दिया हुआ

वचन भगवान पूरा करा रहे हैं, मैं यह मौका तो हाथसे जाने ही न देता।' अिस पर अुसने गद्गद कंठसे कहा: 'अब यह सब मेरी समझमें आ रहा है। पर असल बात यह थी कि मेरे दिलमें यह विचार आया कि मेरा अितना बड़ा सौभाग्य कहां कि मेरे हाथसे गांधीजी संतरा लें और अुपवास छोड़ें! अुन्होंने तो अुस दिन प्रेमसे कहा था कि तू संतरा लेकर आना। पर मेरे लिअे यह मान लेना तो गजब ही हो जाता! अिसलिअे मैं जान-बूझकर नहीं आया, मेरी हिम्मत ही न हुअी। और मुझे यह भी खयाल हुआ कि मैं अिस तरह जाअूंगा, तो अखबारोंमें मेरा नाम छपेगा और मैं अपनी जातिके दूसरे मनुष्योंकी अीर्ष्याका पात्र बनूंगा। पर भीतर ही भीतर तो मेरा यही खयाल था कि मेरा अितना बड़ा सौभाग्य कहां? न जानेमें ही समझदारी है।' यह कहते-कहते अुसकी आंखें डबडबा आअीं। मैंने कहा: 'कोअी बात नहीं। अब मैं सब बात समझ गया। अिसमें अफसोस करनेका कोअी कारण नहीं।' पर मैं यह नहीं कह सकता कि वह स्वस्थ होकर घर गया। यह किस्सा क्या बताता है? अितना ही बताता है कि अस्पृश्यताको हमने अितनी मजबूतीसे अपने मनमें बैठा लिया है कि अुसका जहर रग-रगमें फैल गया है। और बेचारे हरिजन यह मानते हैं कि अिससे पैदा होनेवाली हीनता हमारी हड्डियोंमें समा गअी है। पर यह हीनता हरिजनोंकी है या हमारी? हमारे ही अेक अंगमें अपने बारेमें अितनी हीन भावना हो, और वह जिस हालतमें है अुसीमें पड़ा रहना बरदाश्त करे, तो यह हमारे लिअे शर्मकी बात है या अुसके लिअे? गांधीजीके अुपवाससे हम अितना भी समझ सके हों तो बहुत है।

विदेशी आलोचक

विदेशी मित्रोंमें से दीनबन्धु अेंड्रूज और ऋषि रोमां रोलांके विचार मैं बता चुका हूं। यहां आज अपरिचित विदेशियोंके विचारोंका दिग्दर्शन करेंगे। यह तो स्पष्ट है कि अिस अुपवासने दूर-दूर अमेरिका, कनाड़ा और स्विट्जरलैंडमें बैठे हुअे मनुष्योंको भी विचार करनेमें लगा दिया। यह दूसरी बात है कि अुनमें से कुछने मजेदार आलोचनाअें की हैं। कुछने अुपवासके लिअे बाअिबलमें से आधार दिये हैं, तो कुछने यह बतानेकी कोशिश की है कि अैसे अुपवासोंके लिअे जरा भी आधार नहीं है। कुछ मताग्रही लोग अिस हद तक चले गये हैं कि 'आपके अुपवास अुत्तम हैं और आप अपने देशके लिअे प्राण देनेको तैयार हुअे हैं अिस बारेमें कोअी शंका नहीं। अिस बारेमें भी कोअी शंका नहीं कि केवल पवित्रताके लिअे ही आपने ये अुपवास किये हैं। किन्तु ये अुपवास सफल भी होंगे? पश्चात्ताप, अुपवास और प्रार्थना वगैरा तो अुसीके सफल होते हैं,

जो ओसाको अपना तारनहार मानता है।' असी धर्मान्धतासे ही दुनियामें धार्मिक मतभेद और झगड़े पैदा हुअे हैं। पर अितनी धर्मान्धता भी अिस अुपवासमें तप और पवित्र अुद्देश्य देख सकती है, यह ध्यान देने लायक बात है।

पर यह तो हुअी अूपरी आलोचना करनेवालोंकी बात। थोड़ा गहरा सोचकर देखनेवालोंने तो लिखा है कि: 'अितने हजार मिल दूर बैठे हुअे भी दिन-रात हमारी यही प्रार्थना रहती है कि आपके अुपवास सफल हों। हमें शंका नहीं कि आप सफल होंगे।' अेक बहनका पत्र हृदयद्रावक है। पाठकोंको याद होगा कि गांधीजीने अुपवास शुरू करनेसे पहले अेक बातचीतके दौरानमें कहा था कि मैं तो स्त्रियों और बच्चोंको पागल बनाना चाहता हूं। अुस समय वे हिन्दुस्तानी स्त्रियों और बच्चोंकी ही बात नहीं कर रहे थे, अुनके ध्यानमें दुनियाकी स्त्रियां और बच्चे थे। कनाड़ासे लिखनेवाली अेक बहनका पत्र अेक करुण आत्मकथा है। अुसके स्वजन दुराचार और पापमें डूबे हुअे हैं। अिस दुराचारको वह आंखों देखती है, फिर भी कोअी अुपाय नहीं कर सकती। अिस अुपवासकी बात सुनकर वह जाग्रत हुअी। अिसमें अुसे आशाकी किरणें दिखाअी दीं। थोड़ी देरके लिअे अुसे खयाल हुआ कि दुनियाके पापसे परेशान होकर गांधीजीने विचार किया कि असी दुनियामें जीनेसे क्या लाभ? फिर धीरे-धीरे अुसके मनमें यह विचार अुदय हुआ कि दुनियामें पापसे लड़नेके दो अुपाय हैं — हिंसाका और अहिंसाका, पवित्रताका और अपवित्रताका। गांधीजी अुपवासका यह मार्ग खुला कर रहे हैं; और लम्बे पत्रके अन्तमें यह बहन पुकार अुठती है: "जगतको पवित्रताके मार्ग पर अग्रसर करनेका प्रयत्न करनेवालेको अनेक नमस्कार। आपकी 'आत्मकथा' पढ़ी। यह भी अब ज्यादा समझमें आती है। मेरा तो खयाल है कि पवित्रताका रास्ता जितना हिन्दुओंने समझा है, अुतना पाश्चात्य लोग नहीं समझ सके। अपने दुःखसे बचनेका आप मुझे कोअी रास्ता बताअिये। हमें पवित्रताका मार्ग दिखानेवाले दीपस्तंभ जैसे आप अनेकों वर्ष जियें।" कौन कहेगा कि कार्य और विचारके आध्यात्मिक प्रभाव पर देशकालके बंधन लागू हो सकते हैं? मअीकी दो तारीखका लिखा हुआ अिस बहनका पत्र अनेक बहनों और भाअियोंके लिअे आशाप्रद और श्रद्धाप्रद साबित होगा, असी आशा है।

मित्रोंकी गवाही

पर यह तो अपरिचित भाअी-बहनोंकी गवाही हुअी — हालांकि अिन्हें अपरिचित क्यों कहा जाय? वसुधाको कुटुंब मानें और अनुभव करें, तो जान-अनजान और मित्र-अमित्रका भेद मिट जाता है। अुपवासके अग्निहोत्रको

अुसी क्षण समझकर अुससे आशाकी चिनगारी लेनेवाली अूपरकी वहनको अपरिचित कहना भाषाका अुपहास करने जैसा मालूम होता है। पर भाषाका स्थूल प्रयोग करें, तो अूपर लिखे गये मत अपरिचित मित्रोंके हैं। अव परिचित मित्रों पर आता हूं। रोमां रोलां जैसे क्रांतदर्शी ऋषिके विचार पर तो मैं लम्बा विवेचन कर चुका हूं। अव और मित्रोंके विचारोंका थोड़ा दिग्दर्शन कर लें। विलायतमें दीनवन्धु अेंड्रूज और अुनकी मंडली पर अुपवासका क्या असर हुआ, अिस वारेमें लिखते हुअे दीनवन्धु अेंड्रूज कहते हैं: "सितम्वरके अुपवासका मैंने वचाव किया है। अुसके वारेमें मैंने वहुत विवेचन किया है। पर 'आमरण अनशन' यह शव्द ही मुझे हमेशा खटका है। मानो अुसमें मरनेकी अिच्छाकी गंध आती है, और यह गंध मुझे असह्य है। अिस अुपवासमें वह गंध विलकुल नहीं पाअी जाती, यह वहुत अच्छी वात हुअी। अिसीलिअे मैंने आपको तुरन्त तार किया कि 'मैंने सारी स्थिति समझ ली है।' अिसीलिअे आपको अुपवास छोड़नेका तार देनेकी अनेक मित्रोंकी आग्रहभरी सूचनाको मैंने नहीं माना और अुलटे मैंने तार किया कि सव समझता हूं।" अुनके साथ रात-दिन काम करनेवाली अेक वहन लिखती है: "मैं तो धर्मको नहीं समझती। मेरी मोटी वुद्धि ठहरी। पर असल वात यह है कि मेरे जैसी स्थूल वुद्धिवालीके दिमागमें भी आसानीसे यह वात आ गअी कि यह मनुष्य अेक सिद्धान्तके लिअे प्राण देने वैठा है। अुसकी हृदयशुद्धिके वारेमें कौन शंका कर सकता है? सव समझ गये कि यह आदमी अपनी श्रद्धा और तत्त्वनिष्ठाको आखिरी हद तक ले गया है।"

अेक और वहनके, जो गांधीजीके साथ वहुत वर्षोंसे लड़कीका-सा सम्वन्ध रखती है, हर्षका कोअी पार नहीं। वह लिखती है: "चमत्कार करनेवाला अीश्वर अभी तक वैठा है, अिसकी प्रत्यक्ष प्रतीति हमें अव हुअी। आपको हमारे जैसे अनेकोंकी प्रार्थना और प्रेमके वेतारके सन्देश संसारकी दसों दिशाओंसे मिलते ही रहे होंगे, और अिसमें मुझे शंका नहीं कि अुन्हींके वल पर आप जीये। आपने तो मुझे वहुत समय पहले लिख दिया था कि जो भगवानसे वहुत लेता है, अुसे अुसका सौगुना वापस देना चाहिये। ये शव्द मैंने दीवार पर लिख रखे हैं और आज अिन शव्दोंका मानो हमें नया ही अर्थ मालूम हो रहा है। आपके अुपवाससे मिलनेवाली सीख हम न समझें, तो हमारे जैसे जड़ और मूर्ख दूसरे कौन होंगे? पत्थर जैसे दिलवाले भी समझ सकेंगे कि प्रेममें वड़ा जादू है। प्रेमके चमत्कार कैसे होंगे, यह कौन कह सकता है? प्रेम हिमाचलको पिघलाता है और प्रेम ही कच्चे सोनेका मैल साफ करके अुसे कुंदन वना देता है।" विलायतके अुत्तरसे 'मध्यमवर्गके, शिक्षितवर्गके' अेक सज्जन लिखते

है: "आपके जीवनके कारण मुझे अपने बच्चोंको ओीसा और बुद्ध जैसोंका जीवन समझाना बहुत आसान हो गया है। मेरी लड़की आपकी मूर्तिके सामने प्रार्थना करती है और कहती है कि जैसे ओीसाने अपने प्राण अर्पण किये, वैसे गांधीजी आज प्राण देनेको तैयार हुओे हैं। अिस छोटी-सी लड़कीको यह कौन समझाने गया था? मैंने नहीं समझाया, पर अिसने अपने आप समझ लिया।" और लड़कों और लड़कियोंकी बात करते हुओे अेक और बहनके पत्रमें से थोड़ेसे वाक्य अुद्धृत करता हूं। निर्दोष बच्चोंमें कैसा दिव्यदर्शन भरा है, अिसका दूसरा अच्छा नमूना कहां मिल सकेगा? "हम आपकी बातें कर रहे थे कि अितनेमें छोटी बच्ची बोल अुठी कि बापूके प्राण चले गये, तो भी वे तो ओीश्वरके पास ही जायंगे, क्योंकि ओीश्वरको बापू अच्छे लगते हैं। और वहां अुन्हें कितना सुख और शांति मिलेगी? वहां न कोओी जेल होगी — ठीक है न? मेरे खयालसे तो वहां जेल नहीं होगी — और न होगी सरकारके साथकी लड़ाओी!"

यह नहीं कहा जा सकता कि ये सब मित्र और स्वजन बिलकुल चिन्ता-मुक्त थे। अुनकी प्रार्थनामें भी भय और चिन्ताका कंपन था। किन्तु दक्षिण अफ्रीकाके अेक मित्रके पत्रमें जो श्रद्धा दीखती है, अुसकी तुलना तो गांधीजीकी श्रद्धाके साथ ही हो सकती है। वह पत्र १३ मओीका लिखा हुआ है, यानी अुस वक्त गांधीजीके अुपवासको सिर्फ पांच दिन हुओे थे। और यह जानकर लिखा गया है कि वह ३० तारीखको मिलेगा। अिसमें सिर्फ तीन ही वाक्य हैं: "आपके अुपवास निर्विघ्न समाप्त होने पर बधाओी। यह अिसलिओे लिख रहा हूं कि मुझे जरा भी शंका नहीं कि अुपवास निर्विघ्न समाप्त होंगे। आपका मनोबल न समझनेवालोंकी ही आशा और श्रद्धा डगमगा सकती है, औरोंकी नहीं।"

अिन विदेशियोंकी श्रद्धासे हम कब रंगे जा सकेंगे?

अैरणकी चोरी, सूओीका दान

भाओी चंद्रशंकरने पिछले अंकमें गांधीजीको 'पत्र-पुष्प' भेजनेवालोंका अुल्लेख किया है। अुपवास पूरा होनेके बाद छोटे-बड़े मनीऑर्डर आते रहते हैं और शायद आगे भी आते रहेंगे। कुछ लोगोंने प्रेमसे शुद्ध शहद, फल वगैरा दूर-दूरके आसाम, बंगाल और लंका जैसे स्थानोंसे भेजे हैं। अेक भाओीका पत्र अभी मिला। वह मामूली क्लर्क है। पर अुसे खयाल हुआ कि अुपवासके दिनोंमें अेक समय खाये, आम न खाये और अिससे बचा हुआ रुपया हरिजनोंके लिओे भेज दे। अिस तरह करके अुसने रोज आठ आने बचाये और रु. १०-८-० का मनीऑर्डर भेजा है। अेक और सज्जन, जो अच्छा कमाते हैं और शिक्षित

हैं, लिखते हैं: "हम तो अुपवाससे जाग्रत हुअे। मेरे भतीजेने पूछा, गांधीजीने तो अुपवास किया है, पर हम क्या करेंगे? अिन २१ दिनोंमें विचार करनेके बाद मानो २९ तारीखकी दुपहरको ही मुझे जवाब मिला: 'और कुछ नहीं तो अपने व्यसन और वैभव छोड़ दे। सिगरेट तो छोड़ दे! मैं ३० रुपया महीना भेज सकूंगा। बताअिये, कहां भेजूं? मैंने अपने दफ्तरके आदमियोंसे कहा: 'तुम्हें अपने वेतनका ढाअी फी सदी हरिजन-कार्यके लिअे देना चाहिये।' वे राजी हो गये। अिससे २० रुपये मासिक हो जायंगे। अिस प्रकार हम ५० रुपये मासिक भेज सकेंगे। यह कोअी बड़ी भारी रकम नहीं है, और अिससे हरिजनोंकी सच्ची सेवा कितनी होगी यह तो भगवान जाने। शायद अिसमें दयाके गर्भमें रहनेवाला अपमान भी हो। पर जो हुआ सो हुआ। अिस खयालसे कि जितना हो अुतना करना चाहिये, अितनी रकम हम भेजेंगे। आप कोअी अधिक ठोस सेवाका मार्ग बतायेंगे?"

ये भाअी जो लिखते हैं सो अक्षरशः सच है। अितनी बड़ी तपश्चर्या, अितना बड़ा देश और अितने करोड़ हरिजनोंके होते हुअे भी त्यागकी भावना मुट्ठीभर मनुष्योंमें आअी और अुन्होंने यथाशक्ति दान दिया। पर अितनेसे हमारा काम नहीं बन सकता। यह अैरणकी चोरी करके बदलेमें सूअीका दान करने जैसी बात है। सारा देश सनातनी हिन्दुओंसे नहीं भरा है। लाखों हिन्दू अस्पृश्यता-निवारणको माननेवाले हैं। सनातनियोंमें भी अधिकतर हरिजनोंकी स्थिति सुधारनेमें माननेवाले हैं। अुपवासके दिनोंमें और अुपवासके बाद होनेवाली सभाओंमें हजारों और लाखोंकी अुपस्थिति रही होगी। अुनमें से अिन मुट्ठीभर लोगोंको ही यज्ञकी चिनगारी मिली? दूसरे सबने अपना हरिजनप्रेम, हरिजनसेवा करनेकी अिच्छा, आत्मशुद्धि और धर्मशुद्धिकी भावना किस ढंगसे व्यक्त की? क्या वे यह मानते हैं कि सभाओंमें जानेसे ही वह सब प्रगट हो गया? अिन सबने २१ दिनोंमें अेक निश्चय किया होता तो? सबने २१ दिनोंमें अपने रोजके खर्चमें से पांच फी सदी भी बचाकर भेजनेका निश्चय किया होता तो? मैंने श्री राजगोपालाचार्यको अिस प्रकारकी सूचनावाली अेक अपील समस्त हिन्दुओंसे करनेका सुझाव दिया था। पर अुन्हें वह सुझाव ठीक नहीं लगा — अिस कारण कि अुपवासके साथ अैसी प्रार्थना या सूचना हमें करनी ही न चाहिये! जैसे यह अुपवास स्वाभाविक है, वैसे ही अिन तीन सप्ताहोंका त्याग, दान वगैरा सब कुछ स्वयंस्फूर्तिसे हुआ स्वाभाविक ही होना चाहिये। यह दलील मेरे गले अुतर गअी और हम चुप रहे। पर अब तो हम अिस दिशामें विचार करें, अब तो होश संभालें!

७

रेशमकी डोर

ज्यों-ज्यों अुपवासके सिलसिलेमें आये हुअे विदेशोंके पत्र देखता जाता हूं, त्यों-त्यों अुनमें कुछ बहुत कीमती पत्र मिलते जा रहे हैं, जिनका अुल्लेख किये बिना नहीं रहा जाता।

अुपवासमें गांधीजीको अनेकोंके आशीर्वाद मिले थे, पर ये आशीर्वाद देनेवालोंमें अमेरिकासे लिखनेवाली अेक बहनके बराबर वयोवृद्ध दूसरा कोअी शायद ही होगा। ९० वर्षकी अुम्र होने पर भी अुसके अक्षर स्पष्ट और अकम्प हैं। वह लिखती है: "बहुत देरसे लिख रही हूं, पर आपको हिम्मत और आशा दिलानेके लिअे ही लिख रही हूं। आपका अचल मनोबल और सर्व शक्तिमान विघ्नहारी भगवानकी सहायता — अिन दोका — विचार करते हैं तो लगता है कि आपका बाल भी बांका न होगा, और मुझे विश्वास है कि आप अपने देशके भलेके लिअे अिस अुपवाससे अुठे बिना नहीं रहेंगे।"

मों० प्रीवा, जो विलायतसे लौटते समय स्विट्जरलैंडसे हमारे साथ हो गये थे और जिन्होंने हिन्दुस्तानमें दो महीने रहकर युरोपको यहांकी स्थितिका दिग्दर्शन कराया था, अुपवासके बारेमें लिखते हैं: "आपका खयाल तो हर घड़ी आता है। पर न जाने हमें क्यों पिछले साल सितम्बर महीनेमें जो धक्का लगा था, वैसा धक्का अिस बार नहीं लगा और दुःख भी नहीं होता। हम दोनोंको आशा और विश्वास है, और दुःख होने पर भी हम हिम्मत नहीं हारे हैं और प्रसन्न भी रहते हैं; क्योंकि आपकी अैसी आज्ञा है। . . . अहिंसामें ही हमें आशाकी किरण दिखाअी देती है, यही हमारा मंत्र है, और अिसीके लिअे आज आप जीवनकी बाजी लगाये बैठे हैं। अैसी आशा रखता हूं कि हिन्दुस्तान किसी भी हालतमें अहिंसाको नहीं छोड़ेगा।"

अमेरिकाका अेक पत्र बहुत विचार और मधुर आग्रहसे भरा हुआ है। अुसकी दलील मनोरंजक है और थोड़ी देरके लिअे बुद्धिको भुलावेमें डाल देनेवाली है: "आप किसी छोटे अुद्देश्यके लिअे कुछ करते ही नहीं; आपको अपने कर्तव्यका भान है, अिसलिअे जो कुछ करते हैं सो समझकर ही करते होंगे। पर यदि आप चले गये, तो आपका देश बिना मालिकके जानवर जैसा हो जायगा और अुसे आपके जैसा दूसरा नेता कौन मिलेगा? आपका यह खयाल हो कि अुपवास अनिवार्य है और शरीरको नष्ट करके आपको

सिर्फ यश ही छोड़ जाना चाहिये, तो दूसरी बात है। पर मुझे अैसा नहीं लगता। अभी आपके चले जानेका समय नहीं आया। आज तो दुनियाकी विभिन्न प्रजायें बहरी, गूंगी और अन्धी हो गअी हैं। आपकी सजीव आवाजका जितना असर होगा, अुतना आपकी निःशब्द आत्माका नहीं होगा। हथियार चमकदार, तेज और धारवाले हों, तब अुन्हें छोड़ना कोअी आसान बात नहीं है। आपके जैसी भली आत्माका दुनियामें अभी परिचय होनेकी जरूरत है। और परिचय होने पर जगत याद करेगा। आपका काम अभी बाकी है और आपको जीना चाहिये, यह तो आप खुद भी कहते हैं। कुछ भी हो, आपकी प्रार्थनामें मैं अपनी प्रार्थना भी मिलाअूंगा। और कुछ नहीं तो आपकी जीवन-डोरी बढ़ानेके लिअे अितनी अेक रेशमकी डोर तो बढ़ेगी। मैं और मेरे देशवासी दुनियाभरमें जहां-जहां होंगे, वहांसे आपके कार्यके प्रति भक्तिभाव दिखाते रहेंगे।"

अिन पन्नोंमें अिस मधुर पत्र पर विवेचन करना अप्रासंगिक है। गांधीजीने जिस वृत्तिसे अुपवास किया है, अुसे हिन्दुस्तानी पाठक जानते हैं। अुनकी अनन्य भक्तिमें जीवनेच्छा और अुदासीनता दोनों मौजूद थीं। मैं कौन, और चाहे जैसा भी होअूं तो भी मेरी हस्ती यह मानने जितनी अनिवार्य कैसे हो सकती है कि मैं न रहा तो देश निराधार हो जायगा? यह भाव गांधीजीको हर समय रहा है, और अुपवास हथियार छोड़ देनेके बराबर नहीं; अुपवास तो शरीररूपी हथियारको अधिक तेजस्वी और ज्यादा तेज बनानेके लिअे है। अंधी, बहरी और गूंगी प्रजाओंकी बात छोड़ दें, लेकिन हमारे यहीं कितने आंखोंके अंधे और कान और जबान होते हुअे भी गूंगे बनकर बैठे हुअे लोगोंको हम नहीं देखते? अिन अंधोंको देखने, सुनने और बोलनेवाले बनानेके लिअे क्या बमके धड़ाकेकी जरूरत है? क्या अिससे ज्यादा बड़ा धड़ाका करने और प्रकाश डालनेकी शक्ति अुपवासमें नहीं है? न होती तो क्या हजारों मील दूरसे अनेक लोग सगे भाअी-बहनों और पुराने मित्रोंकी तरह अिस प्रकार लिखते?

अेक अनमोल भेंट

अिस तरहकी रेशमी डोरी भेजनेवाले अेक और व्यक्तिका अुल्लेख किये बिना काम नहीं चलेगा। सभी जानते हैं कि अेक जर्मन बहन नियमित रूपसे 'हरिजन' पढ़ती है और हरिजन-कार्यमें दिलचस्पी लेती है। अुसके दानका जिक्र अिस पत्रमें पहले हो चुका है। अुस बहनसे अुपवासके समय न रहा गया, अिसलिअे अुसने गांधीजीको तार दिया। अुसके जवाबमें गांधीजीने मीठा अुलहना देकर

लिखा था: "आखिर तुमसे रहा नहीं गया न? पर अिस बार लंबा तार दिया, अुसके लिअे में चिढ़ूंगा नहीं। अफसोस अितना ही है कि बेचारे हरिजन क्या कहेंगे? वे कहेंगे, देखिये ये बहन हरिजनसेवकोंमें से अेक पर जितना प्रेम रखती है, अुतना प्रेम हम पर क्यों नहीं रखती? क्या अुनकी यह शिकायत सच नहीं होगी? मैं अुनसे कहूंगा कि अब तुम सुधर जाओगी।"

बहनने सुधार तो किया, लेकिन जितना सोचा था अुससे भी कहीं अधिक! अुपवासके दिनोंमें अुसके पत्रोंकी धारा चलती थी। अुसने तीसरे दिनके अुपवास किये, जागरण किये, प्रार्थना की और गांधीजीको भगवानके सुपुर्द कर दिया। अुसकी प्रार्थना भी कैसी थी? "अीश्वर मेरे हृदयमें से तमाम मैल दूर करे, ताकि आपका बाल भी बांका न हो!" अेक ओर कुछ अीसाअी गांधीजीको लिखते हैं कि जब तक आप अीसाअी नहीं बन जाते, तब तक आपका अुपवास सफल नहीं होगा। दूसरी ओर यह बहन कहती है: "आपके अुपवासके कारण मैं अीसाके बलिदानका रहस्य ज्यादा समझ सकी हूं। पिछले अीस्टरमें मैंनें आपको लिखा था कि सब कुछ अीसाको अर्पण कर दीजिये। पर मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि आप अिस तरह सर्वस्व अर्पण कर देंगे। आपके अुपवासकी खबर आते ही मैं जैसे चौंक कर जागी। आपके कारण मैं अीसाकी अधिक भक्त बनी हूं।"

और अन्तमें अुसने गांधीजीके अुस मीठे अुलहनेका जवाब भेजा, जो पिछली डाकमें ही मिला: "आपने हरिजनोंका ठपका सुनाया है। हरिजन भाअियोंसे कहना कि मैं हरिजनसेवकोंमें से अेक पर प्रेम रखती हूं, अुसका वे दुःख न मानें। क्योंकि मैं तो अुस सेवकको और अुन्हें अेक ही मानती हूं और अुस सेवकके प्रेममें अुन सबके प्रति रहा मेरा प्रेम समा जाता है। अिसकी निशानीके तौर पर अिस पत्रके साथ मैं अपने दो मोतीके अीयर रिंग भेजती हूं, जो ३०० से ३२५ रुपयेकी कीमतके हैं। ये मेरी दादीने दिये थे और किसी समय मैं अिन्हें बड़े गर्वसे पहनती थी; अिसीलिअे मैं चाहती हूं कि आप अिन्हें हरिजनोंके लिअे स्वीकार करें। यह मैं किसी आवेशमें नहीं कर रही हूं, यह तो हरिजनोंके प्रति मेरे शुद्ध प्रेमका परिणाम है और आपको अीश्वरने बचाया है, अिसके लिअे बधाअीके रूपमें भेज रही हूं।"

अिन मोतीके अीयर रिंगकी कीमत जितनी ज्यादा लगाअी जाय थोड़ी है। पर अिन्हें अनमोल समझकर रख छोड़ें, तो अिससे हरिजनोंको क्या मिलेगा? अिसलिअे मेरी पाठकोंसे प्रार्थना है कि अुनकी कीमतसे ज्यादा कीमत लिख भेजें। सबसे ज्यादा बोली जिसकी होगी, अुसीको ये दे दिये जायंगे।

अुपवासके बारेमें मैं तारीफके बहुत पत्र छापता हूं, अिससे कोअी यह न समझ ले कि विरोधियोंने पत्र नहीं लिखे या अुपवासका विरोध नहीं हुआ। पत्र तो थोड़े ही हैं, मगर कहीं-कहीं काफ़ी विरोध हुआ है। बीभत्स विरोध करनेवालोंकी बात मैं नहीं कर रहा हूं। पर मद्रासमें अैसे कुछ शिक्षित लोग मौजूद हैं, जिनकी बुद्धि संकुचित तर्कमें से निकलती ही नहीं। अुनकी अेक आलोचना अुल्लेखनीय है। सनातनियोंके नेता और मद्रासके अेक प्रसिद्ध अेडवोकेट लिखते हैं कि अिस अुपवासको तपश्चर्या कौन कहेगा? जहां अितने डॉक्टरों, सगे-सम्बन्धियों, शिष्यों, दर्शनवालों और अखबारवालोंकी भीड़ रहती हो, वहां अुपवाससे कौनसी शक्ति पैदा होनेवाली थी?

अिन अेडवोकेट साहबको पता नहीं कि गांधीजी जेलमें थे, वहां तो अेकान्तमें अज्ञात रूपसे अुपवास करना अशक्य था — कैदीकी हैसियतसे भी अिसकी घोषणा करना अुनका फर्ज था। हरिजनोंके लिअे रात-दिन काम करनेवाला हरिजनोंकी खातिर भी यह चीज जाहिर करके ही कर सकता था। और अिन साहबको यह कैसे पता चल सकता था कि यथासंभव कम 'ढोल पीटने'के लिअे कितनी कोशिश की गअी थी? पर अिसकी चिन्ता नहीं। डॉक्टर, सगे-सम्बन्धी, शिष्य और दर्शक सब अपना अपराध स्वीकार करनेको तैयार हैं, गांधीजी स्वयं भी अपना दोष ढोल बजाकर जाहिर कर सकते हैं। पर अब तो क्या हो सकता है? जब तक सनातनी भाअी मानते हैं कि अुपवास हरिजन-कार्य करनेमें सहायता देनेवाली तपश्चर्या है, तब तक खैरियत है। भविष्यमें सुधारक ज्यादा सावधानी रखेंगे।

परन्तु सनातनी भाअियोंकी कड़ी आलोचना और मांग चक्रवर्ती राजा शिबिकी याद दिलाती है। शिबि राजा बड़े दानवीर और दु:खभंजन थे। अेक बार वे यज्ञ कर रहे थे कि अेक कबूतर अुनकी गोदमें आकर पड़ गया और करुण आंखोंसे अुनकी ओर देखने लगा। अेक बाज अुसके पीछे पड़ा हुआ था। बाजने राजासे कहा: "मेरा शिकार छोड़ दो। तुम्हारे जैसे दु:खभंजनको अिस तरह मेरा शिकार छीन लेना शोभा नहीं देता।" दोनोंके बीच लम्बा संवाद होता है। बाज डिगता नहीं और कबूतर राजाकी गोदमें कांप रहा है। आखिर बाज तेजस्वी राजाके तेज पर प्रहार करता है। कहता है: "हे दुष्ट, अगर तुम्हें यह कबूतर प्राणोंसे प्यारा हो, तो अपने शरीरमें से ही मुझे अिस कबूतरके बराबर मांस दे दो! अुससे मैं अपनी भूख मिटाकर चला जाअूंगा।"

राजाने फौरन कहा: "अैसा करनेको तो तैयार ही हूं।" यह कह कर अुसने तराजू मंगाया। और अेक पलड़ेमें कबूतरको रखकर दूसरेमें अपने शरीरसे काटकर मांसका अेक टुकड़ा रखा। पर कबूतरवाला पलड़ा झुकता रहा। अेक और टुकड़ा काटा, तो भी पलड़ा अूंचा नहीं हुआ। अन्तमें राजाने कहा: "अच्छा तो अब मैं ही अुस पलड़ेमें बैठ जाता हूं। फिर तो मेरे पास देनेको कुछ रह ही नहीं जाता। तू मेरे सारे शरीरको आरामसे खा ले।" अितना कहते ही न कबूतर रहा और न बाज! राजाके सामने अिन्द्र और अग्निदेव प्रकट हुअे और बोले: "तेरी परीक्षा पूरी हुआी। तेरा मंगल हो और तेरा तेज अखंड रहे।"

अिस प्रकार सनातनी भाअी जैसे अधिकाधिक मांगते जा रहे हैं, वैसे-वैसे शिबिकी कथा याद आती है। हममें शिबिकी दानवीरता और त्याग हों तो अच्छा ही है! पर न हों तो आ जायंगे। गांधीजी अेकान्त गुफामें जाकर अुपवास करें, अैसी मांग की जाय, तो वे खुशीसे मंजूर करेंगे। पर शिबिकी प्राचीन कथामें जैसा हुआ वैसा अक्षरशः हो तो कैसा अच्छा है? सनातनी थोड़े ही गांधीजीके प्राण लेना चाहते हैं? अग्निदेवताको शिबिके प्राण थोड़े ही लेने थे? अुन्हें तो परीक्षा लेनी थी। सनातनी और अुनकी मांग भी अग्निदेवकी तरह परीक्षक ही साबित हो और अिस परीक्षामें से हमारा धर्म कुंदन बनकर निकले और अुसके मैलका नाश हो जाय तो कितना अच्छा!

८

दूर होने पर भी पास

आध्यात्मिक क्रिया या बलके असरमें काल और देशके बन्धन रुकावट नहीं डालते। जहां आध्यात्मिक सम्बन्ध हो जाता है, वहां स्थूल अन्तर नष्ट हो जाते हैं। गांधीजीके अुपवासके महत्त्वकी देशदेशांतरमें चर्चा हुआी। संभव है अिसका कारण गांधीजीका 'महात्मापन' हो। मित्रोंके पत्रोंसे मालूम होता है कि गांधीजीके अुपवासकी खबर दुनियाके बहुतसे पत्रोंमें और विलायतके बड़े-बड़े अखबारोंमें रोज आती थी। अिसका कारण गांधीजीका बड़प्पन है। पर कुछ अखबारों और व्यक्तियोंको तो अुपवासकी आध्यात्मिकता भी समझमें नहीं आअी। जो न समझ सके

अुन्होंने हंसी नहीं अुड़ाअी और अैसा मालूम होता है कि किसीने अिस अुपवासको पाखंड या ढोंग कहकर तो अुसकी निंदा की ही नहीं। जो समझ सके, अुन्होंने सच्चा दर्शन किया। न्यू कैसल जैसे शहरमें छपनेवाला अेक अखबार जो कुछ लिखता है, वह कितना शुद्ध सत्य है: "गांधीजी अुन क्रांतदर्शियोंकी स्थितिमें पहुंच गये हैं, जिनके बारेमें यह कहा जा सकता है कि अुनके लिअे 'स्व' जैसी चीज रही ही नहीं। जिस कामके लिअे वे जीते हैं, वह कार्य ही अुनका सर्वस्व है, अुस कार्यके लिअे अुनका सब कुछ अर्पण है। अुन्हें विश्वास है कि अुपवास करनेमें अुन्हें कोअी तमाशा करनेकी अिच्छा नहीं थी, लोगों पर अपना प्रभाव जमानेका भी विचार नहीं था, बल्कि अपने अस्पृश्य भाअियोंकी अधम स्थिति मिटाकर अुन्हें अूंचा अुठानेका ही अिरादा था।"

यह तो मैं अिन लेखोंमें कअी बार बता चुका हूं कि व्यक्तियों पर तो अुपवासका बड़ा गहरा असर हुआ है। अमेरिका, कनाड़ा, और जर्मनीके पत्र मैंने अुद्धृत किये हैं। लीजिये अेक पत्र बेल्जियमका, जिसका लेखक अपनेको 'अेण्टवर्प प्रान्तके अेक गांवका गरीब क्लर्क' बताता है और लिखता है: 'परम पूज्य आचार्य––अब तो अीश्वरी न्यायमें मेरा विश्वास बढ़ गया है, क्योंकि आपका अुपवास सफल होनेसे बड़ा सबूत और क्या चाहिये? अत्यन्त गहरे आर्तनादसे भरी हुअी प्रार्थनाको भगवान सुने बिना नहीं रहता। मुझे कभी-कभी अैसी शंका होती भी थी! अीश्वरने आपका ज्वलंत अुदाहरण संसारके सामने पेश कर दिया, यह कितने आनन्दकी बात है! मेरी सदैव प्रार्थना है कि आपके अति अुदात्त, और पवित्र माने हुअे कार्यमें आपको दिनदूनी रात चौगुनी सफलता मिले। आपके प्रति मुझे गहरा सम्मान और भक्ति है। मैं तो अेंटवर्पके गांवमें अेक गरीब क्लर्क हूं। दूर होने पर भी आपका प्रकाश मेरे मार्गको प्रकाशित कर रहा है।" अपने पत्रके साथ अिस भाअीने पेरिसके अखबारकी अेक कतरन भेजी है, जिसमें लिखा है कि गांधीजीके अुपवासका नैरोबी जैसे दूर प्रदेशमें भी अैसा असर हुआ कि केवल अुच्च वर्णके हिन्दुओंके लिअे जो अेक मन्दिर था, वह अस्पृश्योंके लिअे खोल दिया गया है।

पर अुपवासके असरका अंदाज आज नहीं लगाया जा सकता। अिसके पूरे असरका अन्दाज लगानेमें वर्षों लगेंगे। ये अुदाहरण तो सिर्फ अितना ही दिखानेके लिअे दे रहा हूं कि शुद्ध आध्यात्मिक कार्यका असर संसारके दूर-दूरके कोनोंमें भी पहुंचे बिना नहीं रहता।

और पास होने पर भी दूर

और यह भी संभव है कि अत्यन्त पासवाले अिससे अछूते रहें। भौतिक शास्त्रमें सम विषमको आकर्षित करता है। जो आंखें होते हुअे भी आंखें वन्द करके चले, अुसके सामने सौ मन रोशनी भी किस काम की? अिसी तरह जब दूर-दूर तक अुपवासकी आवाज सुनाअी दी है और प्रकाश पहुंचा है, तब यहां अैसे कुछ लोग मौजूद हैं, जिन्हें अुसमें आत्म-प्रशस्तिके सिवाय और कुछ नहीं दीखता। किन्तु अुसकी परवाह नहीं। जिन्हें आज नहीं दीखता, अुन्हें कल दिखाअी देगा; आज नहीं सुनाअी देता, अुन्हें कल सुनाअी देगा। दुनियाका अितिहास हमें नहीं भूलना चाहिये। अीसाका जीवनचरित्र लिखनेवाला पैपीनी लिखता है कि यहूदियोंको जगानेवाले जितने पैगम्बर मिले, अुतने शायद ही किसीको मिले होंगे। फिर भी अुनकी आवाज अुनके जमानेके कानोंमें नहीं पड़ी। हमारे यहां क्या आज यही मालूम होता है? अैसा दीखता हो तो भी हमें यह समझकर आश्वासन प्राप्त करना चाहिये कि पैगम्बरोंका काम ही अैसा होता है, पैगम्बरोंका अितिहास ही अैसा है। देखिये पैपीनीकी चमत्कारिक भाषा:

"पैगम्बरको अपने जमानेकी गंदगी प्रत्यक्ष दिखाअी देती है, अुसके दिलके टुकड़े होते हैं, यह पाप न दूर करने पर आनेवाली आफतकी भी अुसकी बुद्धि भविष्यवाणी कर देती है और चेत जाने पर फैलनेवाली सुख-शांतिका भी अुसे दर्शन हो जाता है। वह बेजबानोंका दुःख प्रगट करनेवाला है, अज्ञानोंका कष्ट बतानेवाला है। पीड़ितों, आवारों और खानाबदोशोंका वह बेली है, गरीबोंका रक्षक है और दुःख देनेवालोंकी खबर लेनेवाला है। वह जालिमका साथ नहीं देता, जुल्म सहनेवालोंकी मददको दौड़ता है। वह सुखी और हृष्ट-पुष्ट लोगोंकी वकालत नहीं करता, वह तो भूखों और अनाथोंकी पैरवी करता है। . . . अिसीलिअे राजा और सत्ताधारी अुसे शायद ही बरदाश्त करते हैं, धर्मगुरु और आचार्य अुसे दुश्मन समझते हैं, और सुखी व धनवान अुससे घृणा करते हैं।"

यह अैतिहासिक सत्य है और अीश्वरी न्याय है। अनेक युगोंसे सच्ची सिद्ध हुअी यह बात बारबार सच्ची सिद्ध होती रही है। अिसलिअे हम अिस ज्ञानसे लाभ अुठाकर पैगम्बरोंसे की जानेवाली घृणाको और अुनकी अवहेलनाको स्वाभाविक समझकर अुसके प्रति पूरी तरह अुदासीन रहें और अपनी शक्तिके अनुसार अुनका सन्देश जितना अंगीकार कर सकते हों कर लें और जितना पचा सकते हों पचा लें।

दूसरा जमाना

पर हम यह न भूल जायं कि यह जमाना दूसरा है। जिस जमानेमें पैगम्बरोंसे घृणा की गअी, अुन पर पत्थर पड़े और पैगम्बरको सूली पर चढ़ाया गया, अुस जमानेसे यह जमाना दूसरा है। क्या अितनी सदियोंके बाद हम कुछ अधिक सहिष्णु और समझदार नहीं हुअे होंगे? खैर! लेकिन गरीब और कमजोर दिलके हिन्दुओंने अभी तक अपने पैगम्बरोंको पत्थर कभी नहीं मारे और यह डर भी नहीं कि कभी मारेंगे। अुपवासके दिनोंमें कितने ही सेवकोंने कांपकर अपनी आत्मकथा लिख भेजी थी। अैसी चीजें अभी तक भी चली आ रही हैं। अुपवासका आरंभ करते समय गांधीजीने अेंड्रूजको लिखा था: "जैसे-जैसे समय बीतता जा रहा है, वैसे-वैसे मुझे पता लग रहा है कि अुपवास करनेका निश्चय ठीक ही हुआ। अैसी-अैसी बातें कानों पर आ रही हैं, जो अुपवास न किया होता तो मेरी छातीको चीर डालतीं। लेकिन अब तो यह सब कृपालु और धर्मात्मा भगवानको पूरी निश्चिन्ततासे सौंप सकता हूं।" अभी अभी अेक अुदाहरण सुनकर अुन्होंने कहा था: "अैसी बातोंके लिअे भी यह अुपवास था। जिन्हें जानते हैं अुनके लिअे नहीं, पर जिनका ज्ञान अिस तरह अब हो रहा है, अुनके लिअे तो यह अुपवास खास तौर पर था। कारण जिसने अपना पाप प्रगट कर दिया है, अुससे तो आसानीसे निपटा जा सकता है। पर जिसने प्रगट नहीं किया, अुससे अुपवासके सिवाय और किस तरह निपटा जा सकता है?"

अुपवास और देहदमन

अिस तरह अब भी अुनके कान पर थोड़ी थोड़ी बातें डाली जाती हैं। सारे पत्र अुनके सामने नहीं रखे जाते, पर जरूरी, बीमारोंके और जिन्हें गांधीजीकी आध्यात्मिक देखभालकी जरूरत हो अुन्हींके पत्र रखे जाते हैं। अेक मित्र, जिन्होंने अनेक अुपवास किये हैं, जिन्हें आत्मदर्शनकी लौ लगी है और अुसके लिअे जिन्होंने पूरी तरह फकीरी ले रखी है और शरीरकी आशा छोड़कर जंगलमें जा बसे हैं, अुनका अभी अेक पत्र आया। वे कभी कभी अिस तरह पत्र द्वारा दिखाअी दे जाते हैं। अिस बारके पत्रमें अुन्होंने अपनी दिनचर्या लिखी है, यह लिखा है कि १२ वर्षका मौन लिया है। कअी बार पखवाड़े भरके अुपवास किये हैं, कच्चे आटे और पानी पर रह रहे हैं और मौनके लिअे बारीक तारसे होंठ सी लेनेकी बात कही है! गांधीजीने अुन्हें जो पत्र लिखा, वह सब साधकोंके हितार्थ यहां अुद्धृत करता हूं:

"वहुत दिनोंमें यानी महीनों वाद तुम्हारा पत्र मिला, अिसलिअे खुशी हुअी। पर अुसे पढ़कर दुःख भी हुआ। आत्मदर्शन करनेके जो अुपाय तुमने सोचे हैं, मेरी पक्की राय है कि अुस रास्तेसे आत्मदर्शन नहीं हो सकता। होंठोंको सीकर कोअी मौन धारण करे, तो वह मौन नहीं। जीभ कटवा डाले तो भी मौन हो सकता है। पर वह भी मौन नहीं। जो वोलनेकी शक्ति होने पर भी आसानीसे मुनिपन रख सके वह मौनी है। तुम जो तप कर रहे हो, अुसे गीताकार तो तामसी तप कहता है; और मैं अुसे सच समझता हूं। तुम कच्चा आटा खाते हो, यह वैद्यक शास्त्रके विरुद्ध है। धर्मशास्त्र अैसा करनेको नहीं कहते। तुम्हें कच्चा ही खाना हो, तो फल वगैरा ही खाये जा सकते हैं। दूध-दही लो तों भी सम्पूर्ण भोजन वन जाता है। मेरे खयालसे तो तुम अिस सारे प्रपंचसे निकल जाओ तो अच्छा। नीचे लिखे भजनका मनन करो। आश्रममें या जहां तुम्हें अच्छा लगे वहां शांत चित्त होकर रहो और कुछ न कुछ सेवा करो। अैसा करते करते भाग्यमें होगा तो अपने आप आत्मदर्शन कर लोगे।" वह कवीरका भजन यह है:

साधो! सहज समाध भली
गुरुप्रताप जा दिनसे लागी, दिन दिन अधिक चली। – साधो०
जहं जहं डोलूं सो परकम्मा, जो कुछ करूं सो सेवा,
जव सोअूं तव करूं दण्डवत, पूजूं और न देवा। – साधो०
कहूं सो नाम सुनूं सो सुमिरन, खाअूं पीअूं सो पूजा,
गिरह अुजाड़ अेक सम लेखूं, भाव मिटाअूं दूजा। – साधो०
आंख न मूंदूं, कान न रूंधूं, तनिक कष्ट नहीं धारूं,
खुले नैन पहिचानूं हंसि हंसि सुन्दर रूप निहारूं। – साधो०
सवद निरन्तरसे मन लागा, मलिन वासना त्यागी,
अूठत वैठत कवहुं न छूटे, अैसी तारी लागी। – साधो०
कह कवीर यह अुनमुनि रहनी, सो परगट करि गाअी,
दुखसुखसे कोअी परे परमपद तेहि पद रहा समाअी। – साधो०

९

'अुनसे क्या मैं अच्छा हूं?'

श्री ठक्कर वापाने 'पढ़े-लिखे भंगी ब्राह्मण' का अच्छा विज्ञापन किया था। पर यह मालूम होने पर कि पढ़े-लिखे ब्राह्मणने भंगीपन पर जितना स्वाभाविक मुलम्मा था अुससे ज्यादा चढ़ानेके लोभसे अपनी विद्या ज्यादा

बताओी है, ठक्कर बापाने अिस बारेमें पूछताछ की और अिस बारेमें लेख लिख भेजा। गांधीजीको यह बात मालूम हो गओी थी। यह लेख आया तो अुसे लेकर में अुन्हें दिखाने गया। गांधीजी बिस्तर पर लेटे हुअे थे, पासमें कस्तूरबा खड़ी थीं। गांधीजीने कहा: "दुःखकी बात है। ठक्कर बापाका लेख तो छापना ही पड़ेगा। अुस आदमीके पिताका पत्र भी छापो। ठक्कर बापाने अुसे प्रसिद्धि दी, तो सुधार भी अुन्हींको करना था। ठगे तो हम सभी जाते हैं, पर अिस मामलेमें हम ठगे गये, यह तो प्रकाशित करना ही पड़ेगा।"

पर अितनी बात कहनेके बाद गांधीजीने, शायद अिसीलिअे कि श्री अमल गोस्वामीके बारेमें किसीके मनमें तिरस्कार न पैदा हो जाय, अत्यन्त कोमलतासे हंसकर कहा: "मैंने भी तो अैसा ही किया था न? विलायतमें पढ़ने गया तब मैंने कुंवारा गिना जानेका प्रयत्न किया था।" ये शब्द गांधीजीने कस्तूरबाको ध्यानमें रखकर कहे थे। कस्तूरबा तो देखती ही रह गओीं। अिस पर गांधीजी बोले: "अिसे क्या खबर! यह अितनी भली है कि अिसने मुझे माफ ही नहीं कर दिया है, बल्कि अुस बातको भूल भी गओी है।" अभी तक कस्तूरबाको समझमें नहीं आ रहा था कि क्या बात हो रही है। मैंने कहा: "बा, बापू लगभग ५० वर्ष पुरानी बात कह रहे हैं। वह आपको तो क्या याद होगी? 'आत्मकथा'में अिसका वर्णन है।" अिसके बाद गांधीजीने विनोदमें सारा किस्सा कह सुनाया, तो कस्तूरबा बोलीं: "हां, अब कुछ कुछ याद आती है।" अिस पर गांधीजीने फिर कहा: "तो मैंने जो कहा सो सच था न कि तू अितनी भली है कि तूने मुझे माफ तो कर ही दिया, साथ ही वह सारी बात भूल भी गओी।" कस्तूरबा फिर खिलखिलाकर हंसीं। गांधीजी बातको जारी रखते हुअे अपना थोड़ासा बचाव करनेके ढंगसे बोले: "मुझे अितना कहना चाहिये कि मैं अकेला ही अैसा नहीं था। सब नौजवान अुस समय यही करते थे। हिन्दुस्तानसे छोटी अुमरमें शादी करके जाते थे और विलायतमें अितने बड़े लड़के कोओी भी विवाहित नहीं होते थे, अिसलिअे अपनेको विवाहित बतानेमें देशकी अिज्जत जाती हुओी मालूम होती थी। अिसलिअे सब कहते थे कि हम कुंवारे हैं। यही हाल मेरा था। और फिर मैं तो घर पर स्त्री और अेक बच्चा छोड़कर गया था!" फिर तुरन्त ही सुधारकर बोले: "मगर मैंने जो झूठ बोली, सो देशकी लाज रखनेके लिअे नहीं, परन्तु कुंवारी लड़कियोंके साथ सैर-सपाटे कर सकनेके लिअे बोली थी।" यह कहकर गांधीजी गंभीर

हो गये, साथ ही हम सब गंभीर हो गये और श्री अमलेन्दु गोस्वामीका किस्सा भुला दिया गया।

यह तो सिर्फ सनकीपन है

लेकिन भूलना चाहें तो भी भूलने जैसी बात नहीं थी। कारण दूसरे ही दिन मेरे पास श्री जमशेद महेताका अेक पत्र आया। अुसमें अुन्होंने पत्र-व्यवहार भेजकर अुसे छापनेकी मुझसे सिफारिश की थी। पत्र-व्यवहारमें श्री जमशेदके नाम आया हुआ अेक बंगाली सज्जनका पत्र और अुन्हें श्री जमशेदका दिया हुआ जवाब था। जब अखबारोंमें यह बात आओी कि भाओी गोस्वामी कराची म्युनिसिपैलिटीमें भंगीका काम कर रहे हैं, ऑक्सफोर्डके ग्रेजुअेट हैं, तो अुन बंगाली सज्जनने श्री जमशेदको चेतानेके लिअे यह पत्र लिखा होगा। पर श्री जमशेदको तो गोस्वामीसे यही खबर मिली थी वे विलायत हो आये हैं, ऑक्सफोर्डकी डिग्री अुनके पास है और भंगीका काम करनेको अुत्सुक हैं। अिस पत्रकी तारीख १६ जून है। श्री ठक्कर बापाको गोस्वामीने अपनी भूलका अिकरार भेजा, अुसकी तारीख ६ जून है। तो क्या यह हो सकता है कि श्री गोस्वामीने ठक्कर बापाके सामने भूल स्वीकार कर ली और श्री जमशेदके सामने छिपा ली? श्री जमशेदने सारे कागज मेरे पास २१ तारीखको भेजे, अिसलिअे यह निश्चित है कि तब तक अुन्हें भाओी गोस्वामीके दोषका पता नहीं था।

पर श्री गोस्वामीने श्री जमशेदके सामने जान-बूझकर अपना ढोंग छिपाया हो तो भी क्या हुआ? तो भी गोस्वामी पर क्रोध न आना चाहिये। यह कहकर कि वे ऑक्सफोर्डके ग्रेजुअेट हैं, भाओी गोस्वामीको किसी प्रोफेसरकी जगह नहीं लेनी थी और न कोओी ज्यादा तनख्वाह मांगनी थी। तनख्वाह तो जो मेहतरको मिलती है, अुससे अेक पाओी भी ज्यादा नहीं लेनी थी। सारे मामलेमें यह दिखानेके सिवाय कि भंगीके पेशेमें कुछ भी शर्मकी बात नहीं है, बल्कि वह सम्मानपूर्ण धंधा है, और कोओी हेतु नहीं था। अधिकसे अधिक यह हो सकता है कि अपने बारेमें बहुत अच्छा कहा जाय, अितनी कीर्तिकी भूख अुनमें होगी! पर मुझे यह भी ठीक नहीं मालूम होता। अुदार अर्थ यही बताता है कि यह ढोंग भी अुनके सनकी-पनका परिणाम है। अुनके पिताजी जो यह कहते हैं कि यह जरा सनकी है, सो ठीक है। और सनकी आदमी जैसे पिताको मरा हुआ जाहिर करनेमें संकोच नहीं करता, वैसे ही जितनी हो अुससे ज्यादा विद्वत्ता भी जाहिर कर सकता है। और अेक जगह ढोंग खुल जाने पर भी जाहिर

कर सकता है। अिसलिअे कोअी अुन पर क्रोध न करके अुन्हें सहन कर लें और अुनके अुदाहरणमें जो अच्छी चीज है, अुसे ग्रहण कर लें।

कविवरके पत्र

अेक मित्र पूछते हैं कि कविवरके दो भाषण 'हरिजनबंधु'में छाप दिये गये, पर गांधीजीके पिछले अुपवासके बारेमें अुनके दो पत्र नहीं छापे गये। अिसमें कविवरके साथ अन्याय तो नहीं हो रहा है? अन्याय जरा भी नहीं हो रहा है, फिर भी वे दोनों पत्र भी अिस अंकमें छापे जा रहे हैं। वे भाषण छापनेकी जरूरत तो अिसलिअे पड़ी कि अिन भाषणोंका संशोधित संस्करण अिस महीनेमें श्री कालिदास नागने कविवरके अेक लेखके रूपमें प्रकाशित किया है और अिसका कारण है। अुन भाषणोंमें अुपवासके सिद्धांतके बारेमें कविवरके दीर्घ चिन्तनसे भरे हुअे विचार दिये गये हैं। और ये विचार कविवरके गांधीजीके नाम लिखे मअी महीनेके पत्रोंसे जरा भी कम-ज्यादा नहीं होते। अिन पत्रोंमें कविवरका कोमल हृदय अपना दुखड़ा रो रहा है और रोते रोते भी बादमें विलक्षण नम्रतासे कहता है: "कुछ भी हो जाय तो भी यह माननेकी कोशिश करूंगा कि आपका किया हुआ निश्चय सही है और मेरी अश्रद्धा मेरी अज्ञानजनित भीरुताका परिणाम होगी।" 'अज्ञानजनित भीरुता' का तो नहीं, पर यह जरूर कहा जायगा कि वह ६४ वर्षकी अुम्रमें किये हुअे २१ दिनके अुपवासका अंत शायद अकल्पित हुआ तो कैसी आफत आ जायगी, अिस प्रेमभरी चिन्ताका परिणाम थी।

वैसे कविवरके पत्रोंमें अेक दो बातें अैसी हैं कि जिनका जवाब कविवरने अपने चिरस्मरणीय भाषणोंमें खुद ही दे दिया है। कवि अपने पहले पत्रमें कहते हैं कि दुनियामें पाप और बुराअी तो अनादि कालसे चली आ रही हैं और अुस पापको मिटानेके लिअे अुपवास नहीं किया जा सकता। गौतम बुद्धने कहां अुपवास किया था? पर असल बात यह है कि अुपवास सनातन या अनादि पापके विरुद्ध नहीं था, परंतु हमारे अपने समाजकी अेक गंदगीके विरुद्ध था। यह पाप सारे मानव समाजकी शर्म नहीं, पर हमारे अपने समाजकी शर्म है। और अिस बारेमें तो कविवरने अपने भाषणमें जो कुछ कहा है, अुसमें शुद्ध सत्य है: "अिस जड़ जमाकर बैठे हुअे महापापके विरुद्ध आज महात्माजीने अंतिम युद्धकी घोषणा कर दी है। हमारे दुर्भाग्यसे शायद अिस क्षेत्रमें अुनकी देहका अवसान भी हो सकता है, लेकिन अिस धर्मयुद्धका भार अुन्होंने हम सब पर डाला है। वे अुस

भारका दान कर जायंगे।" अिन्हीं महावाक्योंमें कविवरके दूसरे पत्रकी दूसरी कंडिकाका जवाब मौजूद है। अिनमें बताया अुनका डर अप्रासंगिक है। कोअी महासंदेश वैयक्तिक नहीं होते, विश्वको ध्यानमें रखकर ही होते हैं। और गांधीजी तो कअी बार कह चुके हैं कि अुनके अुपवासका अंत अुनके साथ नहीं हो जायगा, बल्कि अस्पृश्यताके खतम होने पर होगा। अिस प्रकार अुनके शुरू किये हुअे अग्निहोत्रमें अेक नहीं परंतु अनेक याज्ञिक भाग लेंगे और अुसे अस्पृश्यताके भस्म होने तक प्रज्वलित रखेंगे। कविवरके अभी अुद्धृत किये हुअे वचनोंमें यही चीज नहीं है तो और क्या है? अिस सारे अग्निहोत्रको कविवरका आशीर्वाद है, अैसी अुनके दूसरे भाषणकी यह वाणी गवाही दे रही है: "जय हो अुन तपस्वीको, जो अिस समय बैठे हैं — मृत्युको समीप रखकर, भगवानको अंतरमें स्थापित करके, और समस्त हृदयके प्रेमका दीपक जलाकर। आप अुनकी जयध्वनि पुकारिये। अपना कंठस्वर पहुंचाअिये अुनके आसनके पास।" अिसी तरहका आशीर्वचन अुन्होंने अुपवासकी पूर्णाहुतिके दिन भेजा था।

१०

कुछ और पत्र

यह लेखमाला अब पूरी हो रही है, क्योंकि अब पाठकोंको अग्निहोत्रकी चिनगारी लगानेकी जरूरत नहीं रही। गांधीजीके अपने लेख अिसी सप्ताहसे शुरू हो रहे हैं, अिसलिअे अग्निहोत्रकी पुण्यपावक अग्नि अुन्हें मिल जायगी।

अिस लेखमालाको पूरा करनेसे पहले अिस सप्ताहमें आये हुअे पश्चिमके कुछ पत्रोंका अुल्लेख कर देना जरूरी है। हर सप्ताह आनेवाले पत्रोंसे यह ज्यादा ज्यादा सिद्ध होता जा रहा है कि अुपवासका रहस्य हिंसाके तरीकोंसे तंग आये हुअे पश्चिमके लोग अच्छी तरह समझ गये हैं। अिन पत्रोंमें कुछ बहुत ही छोटे हैं। अुन्हें ज्योंका त्यों दे रहा हूं। कुछ लंबे पत्रोंके अुद्धरण दे रहा हूं।

विलायतसे आया हुआ अेक पत्र: "आपके अुपवासके बारेमें मैं क्या कहूं? दुनियाके जितने मनुष्य आपको जानते हैं, अुन सबके प्रेमके आप परमनिधान बन गये दिखते हैं।"

कनाड़ासे आये हुअे अेक पत्रमें लिखा है: "आप बच गये, अिसके लिअे प्रभुका आभार मानता हूं। आपकी अग्निपरीक्षाके दिनोंमें करोड़ोंकी तरह मैंने यही प्रार्थना की है। आपने मानव-प्रेमसे प्रेरित होकर जो पुण्य-कार्य शुरू किया है, अुसका सुंदर फल आयेगा; आये बिना रह नहीं

सकता। मुझे विश्वास है कि मैंने नम्रतापूर्वक जो यह पत्र लिखा है, अुसे आप स्वीकार करेंगे।"

दो ही दिन हुअे अमेरिकासे यह तार आया है: "पेनसिलवेनिया राज्यके हब्शियोंकी जो परिषद हुअी है, वह आप जगद्गुरुको प्रणाम भेजती है। वह प्रार्थना करती है कि आप दीर्घायु हों और अपने कार्यको जारी रखनेका सामर्थ्य प्राप्त करें।"

अमेरिकाके अेक और राज्य कैलिफोर्नियासे आये हुअे अेक लंबे पत्रमें से यह अुद्धरण देता हूं: "मैं ९० वर्षकी बुढ़िया हूं। यह पत्र चश्मा लगाये बिना लिख रही हूं। मुझे आशा है कि आप अिसे पढ़ सकेंगे। हमने आपकी 'आत्मकथा' पढ़ी है और यह देखकर हमें आश्चर्य हुआ कि अीश्वरकी आप पर कितनी अपार कृपा है। मैं प्रार्थना करती हूं कि अीश्वर और अुसका पुत्र अीसामसीह आपको और आपकी पत्नीको आशीर्वाद दे और अिस महान कार्यमें आपको रास्ता दिखाये। सबसे बड़ी बात यह है कि प्रार्थना सुनने-वाला और प्रार्थनाका जवाब देनेवाला भगवान बैठा है। सिर्फ हमें अुस समय तक धीरज रखना चाहिये, जब तक अुसका सोचा हुआ न हो जाय।"

कनाड़ासे अेक और अिससे भी ज्यादा लंबा पत्र आया है। अुसमें लिखनेवालेने कनाड़ाके पश्चिमी भागमें जो असंतोषजनक स्थिति है, अुसका वर्णन किया है, यह जाननेकी अुत्कंठा प्रगट की है कि जीवनके प्रश्नोंको हल करनेका धर्ममार्ग कौनसा है, अुपवासके निर्विघ्न पूर्ण होनेके लिअे प्रभुका आभार माना है और अन्तमें बाअिबलका अेक वचन अुद्धृत किया है: "'शरीरबल या सत्ताबलकी कोअी बिसात नहीं, आत्मबल ही सच्चा बल है,' यह भव्य वचन है।"

जर्मनीसे अेक दम्पतीके दो पत्र आये हैं। वे मूल जर्मन भाषामें लिखे हुअे थे। अुनका अेक मित्रने अनुवाद कर दिया है। अिनमें से पत्नीके पत्रसे दो तीन अुद्धरण यहां देता हूं: "आपके जीवनका परिचय जबसे मुझे हुआ है, तबसे मेरा जीवन हिल अुठा है और अुसकी नअी रचना हो गअी है। . . . मैं यह समझती हूं कि दुनियामें अीश्वरमें तन्मय होकर रहनेवाले जो बहुत ही विरले मुक्तात्मा हैं, अुनमें से अेक आप हैं। . . . जब तक मैं संप्रदायके मताग्रहोंमें पड़ी हुअी थी, तब तक मुझे अीसामसीहका अुपदेश भी असली रूपमें समझमें नहीं आया था। अब वे सब परदे हट गये हैं, अिसलिअे मैं अुन्हें अीश्वरी साक्षात्कारवाले दैवी पुरुषके रूपमें देख सकती हूं। . . . अीसामसीहने कहा था कि 'सत्य तुम्हें पार लगायेगा'। अिसका

मर्म मैं समझती हूं। . . . जीवनका मर्म तो अेक ही है कि अीश्वर रखे वैसे ही रहें और अुसकी सेवा करें। अीश्वरके कामसे ही जियें। मैं आपकी तरफसे लड़ूंगी; अिस देशमें आपके लिअे काम करूंगी, सत्याग्रह और अहिंसाका प्रचार करूंगी। . . . आपने पाठकोंसे कहा है कि वे आपके लिअे प्रार्थना करें। मैं अकसर यह प्रार्थना करती हूं। यहां कुछ युवक हैं, जो आपके पक्षमें हैं। मेरे पति भी आपके सैनिक हैं। अिस विषम जीवनमें आपने हममें शक्तिका संचार किया है, आपने हमें अीश्वरके मार्ग पर लगाया है।" अिस बहनके पति वर्लिनसे लिखते हैं: "हम दोनोंकी भावनाओंका वर्णन मेरी पत्नीने किया है। मुझे आशा है आपका जीवन-संदेश युरोपमें और खास तौर पर हमारे देशमें अपनाया जायगा।. . . हम लोग अीश्वर-विमुख हो गये हैं। आप मेरे लिअे और मेरे देशके लिअे प्रार्थना कीजिये। हम तो आपके और हिन्दुस्तानके लिअे प्रार्थना करते हैं कि आपका कार्य व्यर्थ न जाये और जिस कठिन मार्ग पर युरोप ४०० वर्षसे चल रहा है और कुचला जा रहा है, अुस रास्ते पर चलनेकी हिन्दुस्तानको कभी नौबत न आये।"

अिन अुद्धरणोंसे मालूम होगा कि हिटलरसे तंग आये हुअे जर्मनोंका या कनाड़ा जैसे प्रजासत्ताक राज्यमें प्रचलित हिंसा-नीतिसे परेशान हुअे कनाड़ियों और अिस तरह अमरीकनों और हब्शियोंको अहिंसाकी अिस अपूर्व रीतिमें आश की किरणें दिखाअी देती हैं। पेनसिलवेनियाके हब्शियोंका तार तो बड़ा कीमती है। अितनी दूर दूर तकके लोग हमारे देशमें होनेवाली अनेक प्रवृत्तियोंका अध्ययन कर रहे हैं और अपनी परिषदके मौके पर गांधीजीको तार भेजते हैं। अिसमें कोअी आश्चर्य नहीं। अगर अस्पृश्यताका नाश मारकाट और खूनखच्चरके बिना हो जाय — और जरूर होगा — तो यह चमत्कार रक्तपातपूर्ण गृहयुद्धसे होनेवाले हब्शियोंकी गुलामीके अन्तसे ज्यादा अद्भुत माना जायगा। हब्शी स्वतंत्र हो गये, लेकिन अभी तक गोरों और हब्शियोंके बीचकी कट्टर दुश्मनी नहीं मिटी, दोनोंके बीचकी अेक प्रकारकी जहरीली अस्पृश्यता नष्ट नहीं हुअी। अिसका मूल कारण पापका नाश करनेके लिअे किये गये हिंसात्मक अुपाय क्यों नहीं हो सकते? अगर हमारे यहां आत्मबलिदानके तरीकेसे हम अपना युगों पुराना पाप धो डालनेमें सफल हुअे, तो यह कहा जा सकता है कि वह बिलकुल नष्ट हो जायगा और बादमें मैलके कोअी छींटे बाकी नहीं रहेंगे।

विलायतके अेक मित्रने अपने पत्रके साथ 'स्कॉट्समेन' नामके अखबारकी अेक कतरन भेजी है। अुससे मालूम होता है कि गांधीजीकी तपस्याका

अीसाअी समाज पर जगह-जगह गहरा प्रभाव पड़ा है। ३१ मअीको स्कॉट-लैण्डके मुख्य शहर अेडिनबरोमें अीसाअियोंकी बड़ी सभा हुअी थी। अुसमें सभा बुलानेवाले सज्जनने कहा : "गांधीजीने अपना असाधारण अनशन सफलतापूर्वक पूरा किया है। अुनका मार्ग हम समझ सकें या नहीं, तो भी अितना तो हम देख ही सकते हैं कि वे अेक अैसे पुरुष हैं, जिन्होंने सम्पूर्ण अीश्वरार्पण कर दिया है और जो दलित लोगोंकी खातिर अेक अैसा कदम अुठा रहे हैं, जिसका अुनके देशवासियोंके हृदय पर असर पड़ेगा।" अुस सभामें मि० लो नामके अेक पादरीने यह प्रस्ताव पेश किया और सभाजनोंने अुसे सर्वसम्मतिसे पास किया : "यह सभा हमेशा हिन्दुस्तानके दलित लोगोंकी भलाअी सोचती है। अिसलिअे आजकल अस्पृश्यता-निवारणके कार्यमें जो बड़ी प्रगति हो रही है, अुसके लिअे अपना गहरा सन्तोष प्रगट करती है और अन्तःकरणसे प्रार्थना करती है कि जो लोग अपने भाअियोंकी अुन्नतिके लिअे निःस्वार्थ प्रयत्न कर रहे हैं, अुनकी तमाम कोशिशोंको पूरी सफलता मिले।"

निराशामें आशा

'अपने आसपास ज्यों ज्यों अंधकारके बादल ज्यादा घिरते देखता हूं, त्यों त्यों मेरी श्रद्धा बढ़ती जाती है।' अेक दो दिन पहले जब गांधीजीने यह वाक्य कहा, तब मुझे खयाल हुआ कि अिसमें गांधीजीकी अपनी स्वाभाविक श्रद्धाशीलताके सिवाय और कुछ नहीं हो सकता। पर अेक प्रसंग अैसा हो गया, जिससे मैं देख सका कि अिस श्रद्धाके कारण ज्यादा गहरे हैं। बहुत लोग आकर अपना दुःखड़ा रोते हैं कि हमसे ली हुअी प्रतिज्ञाका बार बार भंग होता है, बहुतसे अपने पश्चात्तापके पत्र लिखते हैं। अैसी हालतमें अपनी प्रतिज्ञाका पूरी तरह पालन करके आगे बढ़नेका आशीर्वाद मांगनेवाले विरले हों, यह स्वाभाविक है। ये विरले ही निराशामें आशाका संचार करते हैं।

अेक मित्रको घर जानेसे पहले गांधीजीके साथ कुछ मिनट बातें करनी थीं। बहुत दिनों बाद अुन्होंने यह अिच्छा मेरे सामने प्रगट की। पर गांधीजीके सामने जाते ही अुनका धीरज टूट गया। कुछ देर तक तो वे अवाक् हो रहे। "बोलो, बोलो, बात करो। महादेवने मुझे कहा है कि तुमने बरसों पहले जो व्रत लिये हैं, अुनके बारेमें तुम्हें बातें करनी हैं। मैं तो यह बात भी भूल गया हूं कि तुमने व्रत लिये हैं। पर खैर, बात करो।"

यह सुनकर अुन मित्रमें हिम्मत आअी और अुन्होंने टूटे-फूटे शब्दोंमें अेक वाक्य कहा :

"पांच वर्ष पहले मैंने कुछ प्रतिज्ञाअें ली थीं। और—"

"और वे पाली नहीं जा सकीं, यही न?" गांधीजीने कहा।

मैंने बीचमें कहा, "नहीं, अिससे अुलटी बात है।"

"तो ये खुशीके आंसू हैं न?" यह कहकर गांधीजीने अुनसे बुलवानेका प्रयत्न किया।

पर वे भाअी तो मूक ही रहे। और अुनके चेहरे पर आंसुओंकी धारा बहने लगी।

"महादेव जो कुछ कहता है, वह शायद बिलकुल सच न हो। तो जैसा मैंने किया वैसा करो। मैंने जब पिताके सामने पहले पहल अपना अपराध स्वीकार किया, तब मेरी जबान नहीं खुली थी। अिसलिअे मैंने कागज पर जो कुछ कहना था लिख दिया। तुम्हें भी जो कहना हो लिख डालो," गांधीजीने कहा।

पर वे भाअी तो अभी तक अवाक् ही थे। अुन्होंने मुझे अिशारा किया कि अब मुझे जाने दीजिये। पर थोड़े और आंसू गिर जानेके बाद अुनमें हिम्मत आअी।

"बापू, पांच बरस पहले मैंने अपनी प्रतिज्ञा लिखी थी और आपने अुसमें अेक शब्द सुधारा था।"

"हां, पर मैं तो अुसे बिलकुल भूल गया हूं।"

गांधीजीको पिछली बातें याद दिलाकर अुन मित्रने कहा:

"बापू, मुझे अन्तःकरणमें घोर युद्ध करना पड़ा है। पर अीश्वरकी कृपासे मैं प्रतिज्ञाके अक्षरका और बहुत कुछ अुसके मर्मका भी पालन कर सका हूं।"

"यह तो बहुत अच्छा हुआ। आंसू आते हैं यह मैं समझ सकता हूं। अीश्वर जब प्रतिज्ञा पूरी कराता है, तब हृदय आभारकी भावनासे अुमड़ पड़ता है।"

"पर सवाल तो अब है।"

"कैसे? तुम्हारी मां अधीरता दिखा रही है। मां तो अधीर होगी ही।"

"हां, आपने जिस प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर कर दिये, अुसे तो वह पूरी तरह मानती है। और यह नहीं चाहती कि वह भंग हो। यह पूछती रहती है कि

प्रतिज्ञा कब पूरी होगी। पर माता-पिता मुझे बिलकुल परेशान नहीं करते। मुश्किल मेरी अपनी ही है। अेक बार संकल्प कर डालूं, तो फिर कोअी मुश्किल नहीं होगी। पर बापू, भीतरका यह संग्राम चलानेमें कुछ लाभ भी है?"

"हां, जरूर है। क्या संग्राम कुदरतका नियम नहीं है? तब आत्माका तो यह धर्म और भी ज्यादा है। कुदरतमें आध्यात्मिक नियम हैं और आध्यात्मिक क्षेत्रमें कुदरती नियम हैं। जीवन ख़ुद ही अेक महासंग्राम है, निरंतर साधना है। अन्तरमें हमेशा तूफान ही रहता है और विकारोंसे लड़ते रहना शाश्वत धर्म है। गीताने तीन जगह यह बात कही है। तीनसे ज्यादा बार भी कही होगी, परंतु मुझे तीन जगह ही कही हुअी याद है। जहां संकल्प होता है, वहां रास्ता मिल ही जाता है।"

"बापू, मुझे आशीर्वाद दीजिये।"

"तो तुम्हें जो कुछ लिखना हो लिख डालो। और वह ठीक होगा तो मैं अुस पर दस्तखत कर दूंगा।"

अुन मित्रने नोटबुक निकाली और ४ जुलाअीकी तारीखवाले पन्ने पर लिखा: "तुमने जो बात की है, अुसका मर्म याद रखना। मेरा आशीर्वाद है कि तुम्हारी साधना सफल हो।" यह वचन लिखकर 'बापू' ये अमूल्य अक्षर लिखनेके लिअे गांधीजीके हाथमें रख दी।

और बापूने वे वचन अेक बार पढ़े, दो बार पढ़े और कहा: "अेक शब्द जोड़ दूं?" यह कहकर गांधीजीने अपने हाथसे 'साधना'से पहले 'अनिवार्य' शब्द रखा। और नीचे कांपते हुअे हाथसे 'बापू' लिखकर हस्ताक्षर कर दिये।

"हाथ न कांपते होते तो कितना अच्छा था! पर अिसकी कोअी बात नहीं। अिसके सिलसिलेमें गीताका छठे अध्यायका अन्तिम भाग पढ़ना।"

वे भाअी अनुग्रह मानकर प्रणाम करके चले गये।

हरिजनसेवकोंसे बातचीत

अुपवासके बाद पहली बार गांधीजी अितने ज्यादा सेवकोंसे मिले और अुनसे बातें कीं। हरिजन-सेवक-संघके केन्द्रीय बोर्डकी बैठक शनिवार और रविवारको थी। वह भारत सेवक समाजमें हुअी थी। परंतु कुछ सवालोंके बारेमें गांधीजीकी राय जाननेके लिअे अुसके सदस्य पर्णकुटीमें आये थे।

सवाल यह था कि संघ प्रचारका काम करे या सेवाका; प्रचारके साथ सेवाका काम करे या प्रचारका काम छोड़कर सेवाका ही काम करे? गांधीजीने

पहले आग्रहपूर्वक कहा था कि व्यवस्था-खर्च कमसे कम होना चाहिये और अेक खास हदसे आगे हरगिज न बढ़ना चाहिये। लेकिन अिस नियमके अर्थके बारेमें बहुतसे सवाल अुठे। अुदाहरणके लिअे, देहातमें प्रचार किया गया हो, जैसे कि हरिजनोंमें मद्यनिषेधका प्रचार किया गया हो, तो वह रुपया ठीक तौर पर खर्च हुआ माना जाय या नहीं?

अिस सवालके बारेमें गांधीजीने जो विचार प्रगट किये, अुनका सार यहां दे देता हूं:

"ठीक ढंगसे ठीक प्रचारकार्य हो, तो अुससे मेरा विरोध नहीं। हरिजनोंमें मद्यनिषेधका काम सेवाकार्यमें ही माना जायगा। परंतु वह कमसे कम खर्चमें होना चाहिये। यह प्रचार करनेके लिअे हरिजनोंके पास पहुंचनेवाले शुद्ध चरित्रके हरिजन मिल जायं, तो सारा रुपया हरिजनोंकी ही जेबमें जाय और प्रचारकार्यका भी बहुत असर पड़े। अेक सवाल यह पूछा गया है कि अेक अनाड़ी हरिजन शिक्षक और अेक कुशल सवर्ण शिक्षक — अिन दो में से मैं किसे चुनूंगा? जैसे चरित्र संबंधी तमाम सवालोंमें कहता हूं, अुसी तरह अिस मामलेमें भी कहूंगा कि मैं चरित्रवान हरिजन शिक्षक जुटानेकी कोशिश करूंगा और अुसकी तालीममें जो कमी होगी अुसे शिक्षा देकर पूरी करूंगा। किसी हरिजनकी आजीविकाका बन्दोबस्त करना है, यह विचार करनेके बजाय मैं बच्चोंकी भलाअीका ही विचार करूंगा। परंतु हरअेक सवालका निर्णय अुसके गुण-दोषके आधार पर ही करना पड़ता है। मैं तो अितना ही कहना चाहता हूं कि 'होशियारी पर जरूरतसे ज्यादा जोर न दो।'

"लेकिन प्रचारकार्यके बारेमें हम अेक साधारण नियम बना सकते हैं। प्रचारके खर्चके लिअे हर समय बोर्डकी मंजूरी लेनी चाहिये। मैं जैसे जैसे अधिकाधिक विचार करता हूं, वैसे वैसे मेरा यह खयाल मजबूत होता जाता है कि अगर हमें अपने कामको स्थायी बनाना है, तो प्रचारका खर्च हमें कमसे कम कर देना पड़ेगा। जहां प्रचारके लिअे चालू खर्च होनेकी संभावना हो, वहां हमें खर्चको तीन भागोंमें बांट देना चाहिये: बीस फी सदी कार्यालयका खर्च; बीस फी सदी प्रचारके लिअे और साठ फी सदी सेवाकार्यके लिअे।

"आप पूछते हैं कि हम जो हरिजन-दिवस मनाते आये हैं, वे दिवस कायम रखें या नहीं। तो मैं कहूंगा: भले ही रखिये। लेकिन अुनकी ठीक व्यवस्था हो तो अुसमें खर्चकी जरूरत बिलकुल नहीं होगी। हरिजन-दिवसका अर्थ यह न होना चाहिये कि आपके पास जो थोड़ेसे पैसे हों, अुनमें से हिस्सा काट लिया जाय। अिसी तरह १०० रुपयेका दान जुटानेके लिअे मैं ७५ रुपये खर्च

नहीं करूंगा। क्योंकि यों तो कुल मिलाकर २५ रुपयेका ही दान मिला। मैं यह नहीं कहता कि प्रचारकार्य बुरा है। ठीक ढंगसे किया जानेवाला प्रचारकार्य जरूरी है। पर मैं अितना तो अवश्य कहूंगा कि प्रचारकार्य स्वावलंबी हो सकता है। स्वागत या जुलूसके लिअे आपको अपने फंडको छूना ही नहीं चाहिये। अुसका खर्च स्थानीय मित्रोंसे जुटा लेना चाहिये और अिसका भार आपके हिसाब पर डालना ही न चाहिये। हम हमेशा अितना याद रखें कि कड़े आलोचक हमारा पहरा दे रहे हैं। अगर हम हरअेक चीज धार्मिक भावनासे, वदलेकी आशा रखे विना करेंगे, तो हमारे कामका असर पड़े विना नहीं रहेगा।"

दूसरे प्रश्न छोटी छोटी वातोंके वारेमें थे, अिसलिअे पाठकोंको अुनमें ले जानेकी जरूरत नहीं।

परिशिष्ट ४

सरकारके साथ पत्रव्यवहार

[ब्रिटिश प्रधानमंत्रीके साम्प्रदायिक निर्णयके विरुद्ध गांधीजीने जो अुपवास किया, अुसके परिणामस्वरूप यरवदा-समझौता हुआ। ब्रिटिश मंत्रिमंडलके अुस समझौतेको स्वीकार कर लेनेसे ही यह फलित हुआ कि सरकारको जेलसे अस्पृश्यता-निवारणका काम करनेकी सब रियायतें और सुविधायें बापूको देनी चाहियें। अुसके सिलसिलेमें सरकारके साथ हुआ पत्र-व्यवहार अिस परिशिष्टमें दिया गया है।]

१

ता० २९-९-'३२

भाअीश्री मेजर भंडारी,

आज १२॥ बजे आपने जो हुक्म मुझे जबानी पहुंचाये, अुनका अर्थ मैं अिस तरह करता हूं:

आजकी तारीखसे अस्पृश्यताके सिलसिलेमें या और किसी सार्वजनिक कामके सम्बन्धमें श्री घनश्यामदास बिड़ला और श्री मथुरादास वसनजीके सिवाय दूसरे किसी मुलाकातीसे मुझे नहीं मिलने दिया जायगा; दूसरे, श्रीमती गांधीको तुरन्त ही स्त्री-कैदियोंके विभागमें हटा दिया जायगा; और दूसरे सब मुलाकातियोंको अुपवाससे पहले जिस ढंगसे मिलने दिया जाता था और जिसकी सूचनायें मुझे जेलमें लाये बाद फौरन ही दे दी गअी थीं और बादमें सुधारी गअी थीं, अुसी ढंगसे मिलने दिया जायगा। अिसका अर्थ यह हुआ कि श्रीमती सरोजिनी नायडूसे, जिनकी मौजूदगी मुझे बीमारीके दिनोंमें आराम पहुंचानेवाली बन गअी थी या मेरे लड़के देवदाससे और अुसकी भावी पत्नीसे या आश्रमवासियोंसे, जो अिस संकटकालमें मेरी सेवाशुश्रूषामें थे, मिलनेका लाभ अब मुझे नहीं मिल सकेगा। मुझे स्वीकार करना चाहिये कि अिस तरह मुझे अेकाअेक और कठोर ढंगसे यह याद दिलाया गया है कि मैं अेक अैसा कैदी हूं, जिसका शरीर पूरी तरह सरकारकी दया पर छोड़ दिया गया है। अिसके लिअे मैं बिलकुल तैयार नहीं था। अितने पर भी मैं सरकारको बता देना चाहता हूं कि अभी तक मैं बीमार माना जाता हूं और

मुझे विस्तर छोड़नेकी भी मनाही है। मैंने यह आशा रखी थी कि और कुछ नहीं तो जब तक मैं बीमारीके बाद अच्छा होनेकी हालतमें हूं, तब तक मेरे ज्ञानतंतुओंको बिना कारण आघात पहुंचानेवाली स्थितिसे मुझे बचाया जायगा। मगर सरकारको अिसकी कोअी परवाह नहीं होगी, और अिसलिअे मुझे जरा भी बेचैन नहीं होना चाहिये। सचमुच मैं तो सरकारका कृतज्ञ हूं कि अुसने मेरे लिअे डॉक्टरी देखभालका बन्दोबस्त किया और अुपवासके दिनोंमें मित्रों और मुलाकातियोंको मुझसे आजादीके साथ मिलने दिया। किन्तु श्री घनश्यामदास बिड़ला और श्री मथुरादास वसनजीके सिवाय औरोंकी मुलाकात अेकदम क्यों बन्द कर दी, यह मैं नहीं समझ सका। देशमें नअी जागृति हुअी है। और सरकार अुपवासके, जिसकी मर्यादाअें अभी तक अच्छी तरह नहीं समझी गअीं हैं और अुत्साही युवक जिसकी अंधी नकल कर रहे हैं, असरोंसे नावाकिफ तो हो ही नहीं सकती। अिसलिअे मैं बिलकुल जरूरी मानता हूं कि अस्पृश्यताके कामके सिलसिलेमें जिन-जिनसे मिलना मैं जरूरी समझूं, अुनसे मिलनेकी मुझे पूरी आज़ादी होनी चाहिये। पत्रव्यवहार सम्बन्धी अपनी सूचनाओंमें सरकारने अभी तक कोअी परिवर्तन किया है, अैसा मालूम नहीं होता। मुझे यह कहनेकी जरूरत नहीं कि अस्पृश्यताके सिलसिलेमें जो बात मुलाकातों पर लागू होती है, वही पत्रव्यवहार पर भी लागू होती है। मुझे यह जोड़नेकी आवश्यकता नहीं कि जब मैं अपनेसे मिलने आनेवालोंके साथ मुलाकात करता होअूं, तब सरकारी अफसरों और दुभाषियोंके मौजूद रहने पर और मेरे पत्रव्यवहारकी जांच पड़ताल की जाने पर मुझे जरा भी अेतराज नहीं। यह बात बहुत ही जरूरी होनेसे मैं आशा रखता हूं कि सरकार अपना निश्चय मुझे जल्दीसे जल्दी बता देगी।

सेवक

मो० क० गांधी

२

ता० ६-१०-'३२

भाअीश्री कर्नल डोअिल,

मैं मानता हूं कि पिछले महीनेकी २९ तारीखको मेजर भंडारीके नाम लिखा हुआ मेरा पत्र आपने सरकारके पास पहुंचा दिया होगा। सरकारके अुत्तरकी मैं बड़ी अुत्कंठासे प्रतीक्षा कर रहा हूं। अिसी बीच दक्षिणमें श्री केलप्पनके अुपवासके सिलसिलेमें कालिकटके जामोरिनको मुझे अेक लम्बा तार भेजना था। वह सरकारके पास भेज दिया गया है, पर मेरा खयाल है कि वह अभी तक जामोरिन तक पहुंचाया नहीं गया। अब यह चीज तो जीवन-मरणकी है। यद्यपि

श्री केलप्पनने मेरे कहनेसे अपना अुपवास स्थगित कर दिया है, फिर भी यह बात बिलकुल नहीं है कि यह मामला निपट गया। मेरा हस्तक्षेप अेक हद तक सफल हुआ, अिसलिअे अिस प्रकरणमें पड़ना मेरे लिअे अनिवार्य है। अिस वादविवादमें कालिकटके जामोरिन मुख्य व्यक्ति हैं। श्री केलप्पनका अुपवास तीन ही महीनेके लिअे स्थगित हुआ है। अिसलिअे अिसमें ज्यादा समय खोना ठीक नहीं। अिसलिअे मैं जानना चाहता हूं कि मेरा तार जामोरिनको कब भेजा जायगा? और अस्पृश्यताके सम्बन्धमें पत्रव्यवहार करनेकी मुझे स्वतंत्रता है या नहीं? अिसमें होनेवाली डिलाअी बहुत खतरनाक और व्याकुल करनेवाली चीज है।

अिस सम्बन्धमें कुछ साथियोंसे मिलना मेरे लिअे बहुत आवश्यक है। अिसलिअे अिस बारेमें मैं चाहता हूं कि आप कुछ अैसा करें, जिससे सरकारका निर्णय मुझे जल्दी मिल जाय।

सेवक

मो० क० गांधी

३

भाअीश्री हड्सन,

मुझे आशा है मेरे अिस पत्रके लिअे आप मुझे क्षमा करेंगे।

डॉ० आंबेडकरकी मुलाकात पर लगाअी हुअी जो पाबंदियां आपने अुन्हें और मुझे बताअीं, अुन्हें सरकारकी दृष्टिसे समझनेमें मुझे जरा भी कठिनाअी नहीं हुअी। मैंने सावधानीके साथ अुन पर अमल किया है। और अपने लिअे तो मैं बता दूं कि अुस बारेमें लोगोंके सामने मैं अेक शब्द भी नहीं बोलूंगा। पर आपके पत्रके अन्तमें जो धमकी दी गअी है, अुसे मैं बिना कारण अपमान करनेवाली समझता हूं। अुनमें आपने बताया है कि हम दोनोंमें से कोअी भी अिन बंधनों पर अमल नहीं करेगा, तो भविष्यकी अैसी तमाम मुलाकातें बन्द कर दी जायंगी। मैंने जेलके नियमोंका अत्यन्त सावधानीके साथ पालन किया है या नहीं, अिसका निश्चय कर लेना आपके लिअे बिलकुल आसान है। अिस धमकीमें यह मान लिया गया है कि ये मुलाकातें अेक मेहरबानीके तौर पर दी जाती हैं, जब कि मेरी रायमें यह यरवदा-समझौतेका आवश्यक परिणाम है। अस्पृश्यता-निवारणके मामलेमें बेशक सरकार और लोगोंको अेकमत होना चाहिये। श्रीमती सरोजिनी नायडूकी और मेरी मुलाकातके लिअे डॉ० आंबेडकरकी प्रार्थना स्वीकार करनेवाले तारमें यह बात आपने अुन्हें बताअी नहीं थी। और जब वे मिलने आये, तब अुस स्वतंत्र आदमीको अिन

पाबंदियोंकी बात धमकीके साथ जेलमें बतायी गअी, यह जरा भी अुचित नहीं था।

आपको लिखे गये अिस निजी पत्रमें क्या मैं अपने पिछले महीनेकी २९ तारीखको मेजर भंडारीको लिखे पत्र, जो गृहविभागके पास भेज दिया गया है, के निश्चित जवाबके बारेमें भी पूछ सकता हूं? आपके अुपरोक्त पत्रको देखते हुअे यह दुगुना जरूरी हो गया है कि सरकारकी नीतिकी स्पष्ट व्याख्या हो जाय। मैं अिसे महत्त्वकी बात समझता हूं कि मुझे जरा भी रोक-टोकके बिना केवल अस्पृश्यताके सिलसिलेमें पत्रव्यवहार करनेकी और लोगोंसे मिलनेकी अिजाजत होनी चाहिये। मैं आपको सूचना देता हूं कि मेरा अुपवास सिर्फ स्थगित हुआ है। अगर सवर्ण हिन्दू हरिजनोंके साथ न्याय नहीं करेंगे, तो मुझे फिर अुपवास करना पड़ेगा। अिसलिअे अिस सुधारको पूरा करनेके लिअे लोगोंके साथ मेरा सम्पर्क अनिवार्य है। श्री अमृतलाल ठक्करने, जो नये स्थापित हुअे संघके मंत्री हैं, मुझसे हिदायतें मांगी हैं। मैंने अुन्हें खबर की है कि मैं आपको कुछ भी सूचनायें भेज सकूं, अिससे पहले सरकारकी नीतिकी स्पष्ट व्याख्या होनेकी मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं। अिसलिअे आप मुझे जल्दी जवाब देंगे, तो मैं अुसकी कद्र करूंगा।

सेवक

मो० क० गांधी

४

[अिन पत्रोंका जवाब सरकारी हुक्मके रूपमें नीचे लिखे अनुसार दिया गया और वह मेजर भंडारीने बापूको बताया। अिस हुक्मका नंबर १९३२ का ९५८ था और वह अिंस्पेक्टर जनरल ऑफ प्रिज़न्स द्वारा यरवदा सेंट्रल प्रिज़नके सुपरिंटेंडेंटके नाम २२-१०-१९३२ को लिखे गये पत्रके रूपमें था।]

"राजबन्दी मो० क० गांधीको सूचना दे दीजिये कि आपको और माननीय गृहसदस्यको लिखे हुअे अुनके पत्रोंके सम्बन्धमें अुन्हें यह खबर देनेकी मुझे सूचना मिली है कि अस्पृश्यताके कामके सिलसिलेमें अुचित संख्यामें सरकारके मंजूर किये हुअे मनुष्योंके साथ मुलाकातें देनेको सरकार तैयार है।

२. अिसी तरह अिस विषयमें पत्रव्यवहार करनेकी अिजाजत दी जाती है, अिस साफ शर्तके साथ कि वह अखबारोंमें नहीं छापा जाय।

३. माननीय मि० डब्ल्यू० अेफ० हड्सन, सी० आअी० अी० आअी० सी० अेस० को लिखे गये आपके पत्रके पहले पैरेके बारेमें आपको

याद दिलाना चाहिये कि अुनके साथकी अेक मुलाकातके परिणामस्वरूप मि० शौकतअलीको भेजा हुआ अेक तार, जो पास नहीं किया गया था, अखबारोंमें छप गया था।

५

ता० २४-१०-'३२

भाओीश्री कर्नल डोअिल,

अस्पृश्यताके कामके सिलसिलेमें मित्रोंसे मुलाकात और पत्रव्यवहार करने और दूसरे मामलोंके बारेमें सरकारकी नीतिकी व्याख्या करनेकी मेरी प्रार्थनाके सम्बन्धमें आपका जवाब मेजर भंडारीने आज मुझे पढ़कर सुनाया। मुझे अुसकी नकल कर लेने दी गअी थी।

अिस जवाबके अनुसार "सरकार मुझे अुसके पसन्द किये हुअे मनुष्योंसे अुचित संख्यामें मुलाकात और पत्रव्यवहार करने देनेको तैयार है, अिस साफ शर्तके साथ कि वह अखबारोंमें नहीं छपेगा।"

मेरे खयालसे शायद सरकार नहीं जानती होगी कि मेरा अुपवास सिर्फ मुलतवी हुआ है, और अस्पृश्यता-निवारणका काम पक्की बुनियाद पर न हो, तो अुसका फिरसे होना संभव है। और दक्षिणके अेक मन्दिरके बारेमें, अगर वह २ जनवरीसे पहले कथित अस्पृश्योंके लिअे न खुला तो, श्री केलप्पनके साथ अुपवासमें शरीक होना मेरे लिअे अनिवार्य होगा। यह बात सरकार जानती है, फिर भी तीन सप्ताह तो बीत चुके हैं और अब तक मैं अिस बारेमें कुछ भी नहीं कर सका हूं। अिस अरसेमें बड़ी देरके बाद केवल दो तार भेजने दिये गये थे। अगर अिस सुधारके लिअे मुझे ठीक समयमें कुछ करना है, तो कामको जल्दी-जल्दी निपटाना और सार्वजनिक प्रचार करना जरूरी है। अेक-अेक दिन कीमती जा रहा है। अिसलिअे मेरी प्रार्थना है कि मुलाकातियोंके चुनाव और पत्रव्यवहारके प्रकाशनकी तमाम पाबंदियां दूर होनी चाहियें। मुलाकातके समय अेक या अधिक कर्मचारी मौजूद रहें और मेरा पत्रव्यवहार वहींका वहीं देख लिया जाय, तो अिस पर मुझे कोअी अेतराज नहीं। मुझे मदद दी जाय तो भले ही सरकार मेरे सारे पत्रव्यवहारकी नकल कर ले और तमाम मुलाकातें शीघ्रलिपिमें लिख ले। स्वाभाविक रूपमें ही जिन मुलाकातों और पत्रव्यवहारमें सविनयभंगकी लड़ाअीका जरा भी जिक्र नहीं किया जायगा और वे सख्तीसे अस्पृश्यता-निवारणके काम तक ही सीमित रहेंगे।

अिसलिअे अूपर लिखे अनुसार तमाम पाबंदियां अगले नवम्बरकी पहली तारीखको या अुससे पहले दूर न की गअीं, तो मुझे मजबूर होकर जो सहयोग देना मेरे लिअे संभव है, वह सत्याग्रहके नियमोंकी मर्यादामें रहकर वापस ले लेना पड़ेगा। अुसकी शुरुआतके तौर पर खानेके बारेमें जो सुविधाअें मुझे दी जा रही हैं, अुन्हें लेनेसे मैं अिनकार करूंगा और अपने व्रतोंके साथ सुसंगत रहकर, और मेरा शरीर *जिस हद तक अुस खुराकको पचा सकता है अुस हद तक 'क' वर्गकी* ही खुराक लूंगा। मैं जरूर आशा रखता हूं कि सरकार अिस चीजको धमकी नहीं समझेगी। मैंने जो कदम अुठानेका सोचा है, वह सरकारके रवैयेका स्वाभाविक परिणाम जरूर है, पर जिस कामके लिअे मैंने अुपवास किया था और जो अभी मुलतवी है, वह काम मुझे वेरोकटोक न करने दिया जाय, तो जीनेमें मुझे कोअी दिलचस्पी नहीं हो सकती। अिस नैतिक और धार्मिक सुधारका सविनयभंगके साथ जरा भी सम्बन्ध होता, तो मैं कोअी मांग नहीं करता।

माननीय मि० हड्सनको मैंने जो खानगी पत्र लिखा था, अुसके जवाबसे मुझे दुःखके साथ आश्चर्य हुआ है। डॉ० आंबेडकरके साथ मुलाकातके समय मुझे जो चेतावनी पढ़कर सुनाअी गअी, वह अगर मौलाना शौकतअलीके तारके बारेमें जो कुछ होनेका मुझ पर आक्षेप है अुसकी सजाके तौर पर थी, तो कैदीके प्रति भी किये जाने योग्य साधारण न्यायका यह तकाजा है कि मुझे वह चेतावनी देते समय सजाका कारण बताना चाहिये था, और सजा देनेके पहले मुझसे अिस बारेमें खुलासा मांगा जाना चाहिये था। मैं नहीं जानता था कि कैदीकी बात सुने विना अुसे सजा दी जा सकती है। मुझे यह दूरका भी खयाल नहीं था कि मेरे लड़केके नाम सरकारका लिखा हुआ पत्र, जो मैंने देखा था, मुझे चेतावनी देनेके लिअे था। मैं आपको बताअूं कि मेरे लड़केने कर्मचारियोंकी मौजूदगीमें निश्चित रूपमें कहा था कि मि० हड्सनने अुसे मुझसे जितनी बार मिलना हो अुतनी बार मिलनेकी अिजाजत अुदारतासे अुसी वक्त दे दी थी। अितना ही नहीं, किसी भी विषय पर बात करने और मुझसे कोअी भी सन्देश ले जानेकी अिजाजत भी दी थी। शर्त अितनी ही थी कि अिस बारेमें वह (मेरा लड़का) अखबारोंको मुलाकात न दे और न कुछ छपवाये। अिस बातचीत परसे अपने लड़केसे मेरे यह कहनेमें मुझे कोअी भूल नहीं मालूम हुअी कि मौलाना शौकतअलीसे कह देना कि अुनका तार मैंने देख लिया है और अुसका जवाब भी मैंने दे दिया है, जो संभव है अेक-दो दिनमें अुन्हें मिल जायगा; देर होनेका कारण अितना

ही है कि पास होनेके लिअे वह सरकारके पास भेजा गया है। मुझे जरा भी यह खयाल नहीं आया था कि अैसे बिलकुल निर्दोष तारको पास नहीं किया जायगा। अिसलिअे मैंने तो अुस तारका आशय भी अपने लड़केको बता दिया था। आपके पत्रके अिस बातसे सम्बन्ध रखनेवाले भागमें दो गलत बातें कही गअी हैं। अुन्हें मुझे सुधारना चाहिये। अपने लड़केसे बात करते समय मुझे मालूम नहीं था कि वह तार भेजनेके लिअे पास नहीं किया गया था। दूसरे, यह कहना भी ठीक नहीं है कि असल जवाब अखबारोंमें प्रकाशित किया गया है। मैंने अखबारोंमें जो कुछ देखा है, वह तो मेरे जवाबका आशय ही है। मैंने अपने लड़केको जवाबकी नकल नहीं दी थी। यहां यह और कह देता हूं कि मेरे लड़केने अपने कुलीन स्वभावके अनुसार मि० हड्सनको सौजन्यपूर्ण पत्र लिखा और अपनी तरफसे चेतावनी देने पर भी मौलाना शौकतअलीके अुसके साथकी बातचीतको छाप देने पर अफसोस जाहिर किया। अुसकी अिस सच्चाअीके जवाबमें अुसे कृतज्ञताका पत्र मिलना चाहिये था, पर दुर्भाग्यवश अुसे अुलहना मिला। फिर भी अिस मामलेमें अुसने मौन रखा। अितने पूरे स्पष्टीकरणके बाद भी मि० हड्सन अपनी राय न बदलें और यह न मानें कि अेक मनुष्यकी हैसियतसे अुन्होंने मेरे साथ गंभीर अन्याय किया है, तो मुझे अफसोस होगा।

सेवक
मो० क० गांधी

६

ता० ३१-१०-१९३२

भाअीश्री मेजर भंडारी,

कर्नल डोअिलको अपने २४ तारीखको लिखे गये पत्रमें मैंने जो राहत मांगी है, वह सरकारने मुझे नहीं दी। और आज वह नहीं मिलेगी, तो अुस पत्रमें बताये अनुसार मेरा प्रतिदिन बढ़नेवाला असहयोग कलसे शुरू हो जायगा।

जैसा अुस पत्रमें मैंने कह दिया है, मुझे जो खास खुराक दी जाती है, अुसे लेनेसे अिनकार करके मैं अपना असहयोग शुरू करूंगा। अिसलिअे कलसे बकरीका दूध भेजना बन्द कर दीजिये। अिसके सिवाय अभी मैं खट्टे नींबू और साग सरदार वल्लभभाअी पटेलके राशनमें से लेता हूं और कभी-कभी थोड़ी चोकर समेत गेहूंके आटेकी रोटी श्री महादेव देसाअीके राशनमें से लेता

हूं। खट्टे नीबू और साग सरदार वल्लभभाओी मंगाते हैं, अिसलिअे मेरे हिस्सेके न मंगवानेको मैंने अुनसे कह दिया है। अिसके बदलेमें, अगर मुझे दिया जायगा तो, सवेरे 'क' वर्गके राशनमें जो दलिया दिया जाता है वह और दोपहरको व शामको जो रोटियां दी जाती हैं वह लूंगा। 'क' वर्गके भत्तेमें से मैं और कुछ नहीं ले सकूंगा, क्योंकि दिन भरमें नमक, सोड़ा और पानीके सिवाय पांच ही चीजें लेनेका मेरा व्रत है। 'क' वर्गके कैदियोंको जो साग और दाल दी जाती है, अुसमें मसालेमें तीन-चारसे ज्यादा चीजें होती हैं। अिसलिअे वह मैं नहीं ले सकता। 'क' वर्गके खास कैदियोंके लिअे कोअी भी खास चीज बनाअी जाती हो, तो अुसमें से मैं कुछ भी लेना नहीं चाहता।

अस्पृश्यताके बारेमें बहुतसा पत्रव्यवहार, जिसमें कुछ बहुत जरूरी है, अिकट्ठा हो गया है। अुसका जवाब अखबारोंमें छपनेके खयालसे देना जरूरी है। अिसलिअे मेरे खयालसे सरकारका यह फर्ज है कि अिस मामलेमें सरकारके साथ हुआ मेरा पत्रव्यवहार वह छपवा दे; या मेरी प्रार्थना और अुसे स्वीकार करनेसे सरकारका अिनकार सरकारको जैसा अुचित मालूम हो वैसा छपवा दे।

यह कहनेकी जरूरत नहीं कि मैंने अिस बातकी बहुत ही सावधानी रखी है कि अिस पत्रव्यवहार सम्बंधी कोअी हकीकत प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष ढंगसे बाहर न जाने पाये।

सेवक
मो० क० गांधी

७

[अूपर लिखे अनुसार १ नवम्बरको बापूने 'क' वर्गका खाना लिया। अुसी दिन रातको साढ़े नौ बजे मेजर भंडारी सरकारका नीचे लिखा सन्देश सुना गये।]

मि० गांधीको सूचना दी जाय कि २४ अक्तूबरको लिखा गया अुनका पत्र भारत सरकारके पास ३१ अक्तूबरको ही पहुंचा है और अुसमें लिखी हुअी बातों पर भारत सरकार बड़ी सावधानीसे विचार कर रही है, और दो-तीन दिनमें अपना निर्णय बतानेकी आशा रखती है। अिस बीचमें भारत सरकारका सुझाव है कि जब तक सरकारको मि० गांधीकी प्रार्थना पर पूरा विचार करनेका समय नहीं मिल जाता, तब तक वे अपने खाने पर पाबंदियां शुरू न करें।

ता० २-११-'३२

भाओीश्री मेजर भंडारी,

भारत सरकारका जो सन्देश कल रातको आप मुझे दे गये थे, अुसका जवाब साथमें भेज रहा हूं और प्रार्थना करता हूं कि भारत सरकारको यह अेक्सप्रेस तारसे भेज दिया जाय। अिस तारसे आप देखेंगे कि मैंने अपने खाने पर पाबंदियां लगाना मुलतवी कर दिया है और अपना मामली भोजन लिया है।

सेवक
मो० क० गांधी

होम सेक्रेटरी, २ नवम्बर, सुबह ७ बजे

गवर्नमेंट ऑफ अिन्डिया, दिल्ली

आपका सन्देश मुझे कल रातको साढ़े नौ बजे पहुंचाया गया। मेरा २४ तारीखका पत्र सरकारको ठेठ ३१ तारीखको मिला, अिससे मुझे दु:खके साथ आश्चर्य हुआ। अिसलिअे नहीं कि अुसमें जिस भावी अुपवासकी बात थी, अुसके कारण अेक कैदीकी जिन्दगीको खतरा था, बल्कि अिसलिअे कि अुस अुपवासमें बड़े महत्त्वकी और यरवदा-समझौतेसे, जिसे माननीय सम्राटकी सरकारने स्वीकार किया है, सीधे पैदा होनेवाली बातें समाअी हुअी थीं। परन्तु अिस प्रकार दुर्भाग्यसे जो देर हुअी, अुसे और आपके सन्देशमें आपने जो सुझाव दिया है, अुसे ध्यानमें रखकर मैंने कलसे शुरू की हुअी खुराक सम्बन्धी पाबंदियां मुलतवी कर दी हैं। मैं मानता हूं कि पिछली ३१ तारीखको यरवदा सेंट्रल प्रिजनके सुपरिंटेंडेंटको लिखा हुआ मेरा पत्र आपके पास भेज दिया गया होगा। अुस पत्रमें रहे हुअे अर्थ समझनेके लिअे जब वे मेरे पास आये, तब मैंने अुनसे कह दिया था कि पहली तारीखके बाद चार दिनके भीतर मेरी मांगी हुअी रियायतें मुझे नहीं दी गअीं, तो मुझे खाना बिलकुल बन्द कर देना पड़ेगा। यह मैं आपको अिसलिअे बता रहा हूं कि सरकारको मेरी भावनाकी तीव्रताका कुछ खयाल हो जाय। मुझे अस्पृश्यताके बारेमें सुधारकों और साथ ही सनातनियोंकी तरफसे रोज ढेरों पत्र मिलते हैं, जिनके जवाब प्रकाशनकी दृष्टिसे मुझे फौरन देने चाहियें। जिस चीजमें करोड़ों मनुष्योंकी शिक्षाका सवाल निहित है, वह अैसे पत्रव्यवहारसे हाथमें नहीं ली जा सकती, जिसके प्रकाशनकी मनाही हो। अभी-अभी स्थापित हुअे अखिल भारतीय अस्पृश्यता-

निवारण संघकी तरफसे काम करनेके तरीकेके वारेमें पथप्रदर्शन और सलाह मांगनेवाले पत्र और तार भी मेरे पास आते हैं। कालिकटसे वड़े महत्त्वका पत्र मेरे नाम आया हुआ है, जिसका मुझे तुरन्त जवाब देना चाहिये। कुछ अस्पृश्य मित्रोंकी तरफसे तात्कालिक मुलाकातके लिअे प्रार्थनाअें आअी हुअी हैं। यह सब जाननेके बाद और यह जानते हुअे कि अस्पृश्यता मिटानेकी लड़ाअीमें मैंने अपनी जानकी बाजी लगा दी है, मेरे पत्रमें मांगी हुअीं पूरी-पूरी और बेरोकटोक सुविधायें मुझे नहीं दी गअीं, तो मैं खाना बिलकुल छोड़ देना चाहूं, अिसे सरकार समझ सकती हैं। असह्य और आत्माका हनन करनेवाली स्थितिसे स्वाभिमानपूर्वक मुक्त होनेके लिअे कैदीके पास और कोअी अुपाय नहीं होता। —गांधी।

९

[३ नवम्बर १९३२ को नीचे लिखा हुक्म बापूके पास पहुंचाया गया।]

मि० गांधीके १८ और २४ अक्तूबरके पत्रोंमें कहा गया है कि अस्पृश्यता-निवारणका जो काम अुन्होंने शुरू किया है और जिसका महत्त्व सरकारने पहले पूरी तरह समझा नहीं था, अुसे अुन्हें पूरा करने देना हो, तो यह जरूरी है कि केवल अस्पृश्यता-निवारणसे ही सम्बन्ध रखनेवाले मामलोंके बारेमें मुलाकातें करनेकी अुन्हें छूट होनी चाहिये। सरकार अिस बातको मंजूर करती है।

सरकार यह भी स्वीकार करती है कि अिस मामलेमें मि० गांधीके कामोंको पूरी तरह कारगर होने देना हो, तो मुलाकातों और पत्रोंके प्रकाशनों पर कोअी प्रतिबन्ध नहीं होना चाहिये। अस्पृश्यताके प्रश्नके बारेमें मि० गांधी जो कोशिशें कर रहे हैं, अुनमें किसी भी तरहकी रुकावट डालनेकी सरकारकी अिच्छा न होनेके कारण अिस मामलेसे सम्बन्ध रखनेवाली मुलाकातों, पत्र-व्यवहार और साथ ही अुनके प्रकाशन परसे सरकार तमाम पाबंदियां हटाती है। क्योंकि मि० गांधीके अपने ही शब्दोंमें वे केवल अस्पृश्यता-निवारणके काम तक ही मर्यादित रहेंगे और सविनयभंगका अुनमें अुल्लेख नहीं होगा।

किसी भी समय सरकारको अैसा करना वांछनीय जान पड़े, तो मुलाकातोंके समय सरकारी कर्मचारी मौजूद रह सकते हैं और अुनके पत्रव्यवहारकी वहीं जांच कर सकते हैं, यह मि० गांधीको मंजूर है। सरकार अिसे नोट करती है।

ता० ३-११-'३२

भाअीश्री मेजर भंडारी,

अस्पृश्यता-निवारणके कामके बारेमें मैंने हालमें जो पत्रव्यवहार किया था, अुसके सम्बन्धमें भारत सरकारका निर्णय मुझे जल्दी बता देनेके लिअे मैं आपका और संबंधित अधिकारियोंका आभार मानता हूं। अिसके साथ भारत सरकारके नाम अपना अुत्तर भेज रहा हूं और आशा रखता हूं कि वह यथासंभव जल्दी ही तारसे अुसके पास भेज दिया जायगा।

सेवक

मो० क० गांधी

सेक्रेटरी टु गवर्नमेंट, होम डिपार्टमेंट, दिल्ली

अस्पृश्यता-निवारणके काम सम्बन्धी मेरे पत्रव्यवहारके बारेमें और मेरी प्रार्थनाके बारेमें भारत सरकारका निर्णय यरवदा सेंट्रल प्रिज़नके सुपरिंटेंडंटने अभी-अभी मेरे पास पहुंचाया है। मैं धन्यवादपूर्वक स्वीकार करता हूं कि जिन सुविधाओंकी मैंने आशा रखी थी, वे सब मुझे अिस निर्णयसे मिल जाती हैं। अिन मुलाकातोंमें और अिस पत्रव्यवहारमें सविनयभंगका जरा भी जिक्र न आये और अस्पृश्यता-निवारणके कामसे बाहरकी कोअी बात न हो, यह जिम्मेदारी मैंने ली है। अुसका अक्षरशः और भावमें पालन करनेके बारेमें सरकार मुझ पर सद्भावपूर्वक विश्वास रखती है, अिसकी मैं पूरी कद्र करता हूं। अिस विश्वासका कभी दुरुपयोग नहीं होगा।

सेवक

मो० क० गांधी

[अूपरके पत्रव्यवहारके अनुसार बापू जेलसे अस्पृश्यता-निवारणका काम करने लगे और अुन्होंने अंग्रेजी 'हरिजन' और गुजराती 'हरिजनबन्धु' दो साप्ताहिक पत्र निकालने शुरू किये। फिर अपनी और अपने साथियोंकी आत्म-शुद्धिके लिअे ता० ८-५-'३३ को अुन्होंने अिक्कीस दिनके अुपवास आरंभ किये। अुसी दिन शामको अुन्हें छोड़ दिया गया।

ता० २९-५-'३३ को अुपवास पूरे होनेके बाद शरीरमें जरा शक्ति आअी कि कांग्रेसकी महासमितिके सदस्यों और सविनयभंगकी लड़ाअीमें भाग लेनेवाले प्रमुख कार्यकर्ताओंमें से जो बाहर थे, अुनकी अेक परिषद की गअी। अुसके बाद बापूजी अहमदाबाद गये और खेड़ा जिलेके रास गांवके और दूसरे जिन किसानोंकी जमीन तथा घरबार सरकारने

जब्त कर लिये थे, अुनकी सहानुभूतिम आश्रमके निवासियोंने बापूकी सलाहसे आश्रमका त्याग करनेका निश्चय किया। बापूने बम्बअी सरकारको आश्रम पर कब्जा कर लेनेको लिखा और आश्रमवासियोंके साथ १-८-१९३३ को रास गांवकी तरफ कूच करनेका फ़ैसला किया। अुसी दिन तड़के ही बापूको पकड़कर साबरमती जेल ले गये और वहांसे अुन्हें यरवदा ले गये। ता० ४-८-१९३३ को यरवदा जेलमें अुन पर मुकदमा चला और अुन्हें व महादेवभाअीको अेक-अेक वर्षकी सादी कैदकी सजा हो गअी। अिस कैदके दरमियान भी अस्पृश्यता-निवारणका काम करनेकी अुन्हें आजादी मिलनी चाहिये, अिस मांगके बारेमें नीचे लिखा पत्रव्यवहार है।]

११

साबरमती, १-८-१९३३

भाअीश्री मेजर अडवानी,

आप जानते होंगे कि यरवदा सेंट्रल प्रिज़नसे जब मैं पिछले मअी मासमें अपने अुपवासके कारण छूटा, अुससे पहले मुझे हरिजनकार्य करने दिया जाता था। और अुसके सिलसिलेमें मुझे छूटसे मुलाकातें लेने दी जाती थीं और अिसी तरह छूटसे मुझे पत्र दिये जाते थे और मैं लिख भी सकता था। मुझे टाअिपिस्ट भी रखने दिया गया था और अखबार, पत्रिकाअें तथा दूसरा साहित्य मुझे दिया जाता था। मैं आशा रखता हूं कि ये सब सुविधाअें मुझे अब भी दी जायंगी। मैं आपको बता दूं कि पूनासे 'हरिजन' नामका अेक साप्ताहिक पत्र निकाला जाता है। अुस पत्रके लिअे लेख भेजना और अुसके सम्पादकको दूसरी सूचनाअें देना मेरे लिअे जरूरी है। पूनासे जिस टाअिपिस्टको मैं लाया था, अुसे अहमदाबादमें ही रखा है। आपसे मुझे मालूम हुआ कि अिस मामलेमें अभी तक सरकारकी तरफसे आपको कोअी सूचना नहीं मिली है। क्या आप तारसे आवश्यक सूचनाअें मंगा लेनेकी कृपा करेंगे?

सेवक
मो० क० गांधी

१२

यरवदा, ता० ४-८-'३३

सेक्रेटरी टु गवर्नमेंट, होम डिपार्टमेंट, पूना
भाअीश्री,

अहमदाबाद सेंट्रल जेलमें मुझे ले जाया गया, अुसी दिन मैंने अेक पत्र वहांके सुपरिटेंडेंटके मारफत लिखा था कि अपने पिछले अुपवाससे पहले जेलसे अस्पृश्यता-निवारणका काम मैं जिस ढंगसे कर रहा था, अुसी तरह करने देनेकी

मुझे अिजाजत दी जाय। अुसका मुझे अभी तक कोअी जवाब नहीं मिला। सरकार जानती है कि साप्ताहिक पत्र अंग्रेजी 'हरिजन' और गुजराती 'हरिजनबन्धु' और किसी हद तक अुसका हिन्दी संस्करण — अिन सबकी नीति पर मेरी देखरेख है। यरवदा-समझौतेके मुख्य अंगकी हैसियतसे अपने दिलमें और हरिजनोंके प्रति मैंने जो प्रतिज्ञा ली हुअी है, अुसके पालनके लिअे मैं जो अस्पृश्यता-निवारणका काम कर रहा हूं अुसका यह केवल अेक अंग है। मेरे जीवनकी कुर्बानी देनेके सिवा यह काम रोका नहीं जा सकता। अिसलिअे मैं प्रार्थना करता हूं कि अगले मंगलवार तक मुझे जवाब मिल जाय, ताकि मैं अगले हफ्तेके 'हरिजन' का काम और दूसरे और कअी जरूरी मामले, जो मेरी गिरफ्तारीके समयसे लटक रहे हैं, निपटा सकूं।

सेवक

मो० क० गांधी

१३

[ता० ५-८-'३३ को कर्नल मार्टिनको लिखे गये पत्रमें से अुद्धरण]

पर दो मामले खास तौर पर अुतने ही जरूरी हैं, जितनी शरीरके लिअे खुराक होती है। अेक मामला अस्पृश्यता-निवारणका काम जारी रखनेका है, जिसके बारेमें मैंने सरकारको पत्र लिखा है। दूसरा मामला जो साथी यहां जेलमें हैं अुनके साथ मानवताका सम्पर्क रखनेका है। अपनी पहली कैदके दिनोंमें, जब मैं सजा पाया हुआ कैदी था तब भी, यह दूसरी बात मान ली गअी थी। मैं आशा रखता हूं कि अिस जेलके समय भी वह प्रथा जारी रहेगी।

१४

ता० ६-८-'३३

होम सेक्रेटरी टु गवर्नमेंट, पूना

महाशय,

अस्पृश्यता-निवारणका काम जारी रखनेकी अिजाजतके लिअे मेरी की हुअी प्रार्थना पर सरकार विचार कर रही है। पर अगले सोमवारसे पहले अुसका निर्णय सरकार नहीं दे सकेगी, सरकारका यह अुत्तर अभी-अभी (सवेरे १० बजे) मेरे पास पहुंचाया गया है।

सरकारके अुत्तरके लिअे धन्यवाद देते हुअे मैं अितना बता देना चाहता हूं कि मेरे कामको गंभीर हानि न पहुंचने देना हो, तो तीन बातें

अैसी हैं जिनके बारेमें देर करनेसे काम नहीं चल सकता। 'हरिजन' पत्रके प्रधान सम्पादक श्री शास्त्री अभी बीमार हैं और बीमारीकी छुट्टी लेकर वे मद्रास गये हैं। वह पत्र अभी अिस कामका अनुभव न रखनेवाले दो आदमियोंके हवाले है। पिछले सप्ताहके अंकके लिअे तो मैंने पहलेसे व्यवस्था कर दी थी और पिछले सोमवारको साबरमतीसे कुछ लेख भेज दिये थे। अिसलिअे जिन दो आदमियोंके सुपुर्द ये पत्र हैं, अुनमें से अेकको, श्री आनन्द हिंगोराणी या काका कालेलकरको, मिलनेकी और आगामी सप्ताहके अंकके लिअे लेख भेजनेकी मुझे अिजाजत मिलनी चाहिये।

दूसरी बात डॉ० टैगोरके पत्रके सम्बन्धमें है। यह पत्र मुझे पिछले सप्ताह दिया गया था। वह अिसके साथ भेज रहा हूं। अिसका तुरन्त अुत्तर देनेकी जरूरत है।

तीसरी बात अुन चार युरोपियनोंके बारेमें है, जो मेरी देखरेखमें हरिजनसेवाकी तालीम पा रहे हैं। वे साबरमती आश्रममें थे। अुनके नाम हैं मिस मेरी बार, नीला नागिनीदेवी, डॉ० मार्गरेट स्पीगल और मि० डंकन ग्रीनलीस। अिन्हें मैंने वर्धा भेजा है, जहां वे अपरिचित वातावरणमें होंगे। नागिनीदेवी और डॉ० स्पीगल हिन्दुस्तानमें लगभग अनजान हैं और दूसरी तरहसे भी अुनका सावधानीके साथ पथप्रदर्शन करनेकी जरूरत है। अुन्हें और श्री विनोबाको, जो वर्धा आश्रमके संचालक हैं और जो अिन सबकी देखरेख करनेवाले हैं, लिखनेकी मुझे मंजूरी मिलनी चाहिये।

और भी कअी बातें हैं जो कम महत्त्वकी नहीं हैं, पर अुनके बारेमें थोड़े दिनकी देर हो तो चल सकती है। अिसलिअे मैं आशा रखता हूं कि सरकारका निर्णय आने तक अूपर बताअी हुअी तीन बातोंके लिअे तो कल तक ही मुझे सुविधा मिल जायगी।

सेवक
मो० क० गांधी

१९

[अूपरवाले पत्रका बम्बअी सरकारका जवाब बापूको अुसी दिन रातके १०॥ बजे पहुंचा दिया गया। अुसमें जेल मैन्युअलके ४५४ वें नियमके अनुसार पहली प्रार्थना मान ली गअी थी और दूसरी दो प्रार्थनाअें अंशतः स्वीकार की गअी थीं। अुसका गांधीजीने नीचे लिखा जवाब दिया।]

ता० ८-८-'३३

सेक्रेटरी टु गवर्नमेंट, होम डिपार्टमेंट, बम्बअी

भाअीश्री,

६ तारीखके पत्रमें मैंने जो तीन प्रार्थनाअें की थीं, अुनका जल्दी जवाब देनेके लिअे मैं आपका आभारी हूं। हरिजन-कार्य सम्बन्धी मैंने जो साधारण प्रार्थना की है, अुसके बारेमें सरकारका हुक्म आने तक मेरी पहली प्रार्थना मान ली गअी है और दूसरी और तीसरी प्रार्थनाओंके बारेमें मुझे बहुत मर्यादित अिजाजत दी गअी है, सो मैंने आभार सहित अुनसे लाभ अुठाया है। पर मैं अितना बता दूं कि मुझे 'अ' वर्गका कैदी माना गया है, अिस बातसे प्रेरित होकर मैंने ये प्रार्थनाअें नहीं की हैं। मेरा मुकदमा हुआ, तब मैंने कैदियोंके वर्गीकरणके खिलाफ आपत्ति की थी। अिसलिअे अिस वर्गीकरणको मैं अनावश्यक महत्त्व न देता हूं और न देना चाहता हूं। मैं जानता हूं कि 'अ' वर्गके कैदियोंको जो रियायतें दी जाती हैं, अुनमें से किसी भी रियायतसे अगर मुझे फायदा नहीं अुठाना हो, तो वैसा करनेकी मुझे आजादी है। अिसके सिवाय, मुझे अिस बातका भी अच्छी तरह खयाल है कि दूसरे 'अ' वर्गके कैदियोंको भी सरकार जो शारीरिक सुविधाअें नहीं देती, वे शारीरिक सुविधाअें मैं भोग रहा हूं। ये सुविधाअें मैं अिसलिअे नहीं भोग रहा हूं कि मुझे 'अ' वर्गमें रखा गया है, बल्कि अिसलिअे भोग रहा हूं कि शारीरिक या डॉक्टरी दृष्टिसे वे मेरे लिअे जरूरी हैं। पर मुझे तो दूसरी ही सुविधाओंकी आवश्यकता है, जो अिनसे अूंचे दर्जेकी हैं और जिनके बिना यह जीवन मुझे असह्य भार मालूम हो सकता है। ये जरूरतें आत्माकी तिलमिलाहटसे पैदा होती हैं। पर कैदीकी हैसियतसे सरकारके साथ वादविवाद करनेसे मैं बचना चाहता हूं। सरकारसे मैं अितनी ही प्रार्थना करता हूं कि मेरी शारीरिक जरूरतोंके लिअे वह जितनी चिन्ता रखती है, अुतनी चिन्ता वह मेरी आत्माकी आवश्यकताओंके लिअे भी रखे।

सेवक

मो० क० गांधी

१६

ता० १०-८-'३३

सेक्रेटरी टु गवर्नमेंट, होम डिपार्टमेंट, पूना

भाअीश्री,

हरिजनकार्यके बारेमें मैंने आपको जो पत्र लिखा था, अुसकी याद दिलाते हुअे मुझे अफसोस होता है। काकासाहब कालेलकरने, जो पिछले

सोमवार मुझसे मिले थे, मुझसे कहा था कि डाकमें मेरे लिअे कुछ जरूरी पत्र आये हुअे हैं। कुछ जरूरी हरिजन प्रश्न भी अैसे हैं, जिन पर मुझे तुरन्त ध्यान देना चाहिये। अिसलिअे मैं आशा रखता हूं कि अधिकसे अधिक देरमें अगले सोमवार तक या अुससे पहले ही मुझे आखिरी निर्णय बता देनेकी कृपा करेंगे। अिसके साथ अिस मामलेमें भारत सरकारके हुक्मोंकी नकल मैं भेज रहा हूं। मेरी नम्र रायमें वे असंदिग्ध हैं।

सेवक
मो० क० गांधी

१७

ता० १४–८–'३३

सेक्रेटरी टु गवर्नमेन्ट, होम डिपार्टमेन्ट, पूना
भाअीश्री,

मैंने जिस दूसरे सोमवारकी बात लिखी थी, अुसकी अिस समय दोपहर हो गयी है। फिर भी मेरे अुपवाससे पहले जिन शर्तों पर मैं हरिजन-कार्य करता था, अुन्हीं शर्तों पर यह काम करने देनेकी मेरी प्रार्थनाका कोअी जवाब मुझे अभी तक नहीं मिला। यह प्रार्थना मैंने पहले पहल अहमदाबाद सेंट्रल जेलसे १ तारीखको की थी, और अुसके बाद मैंने आपको तीन पत्र लिखे हैं।

अिस कामसे मुझे वंचित रखनेके कारण मेरे मन पर जो बोझ पड़ रहा है, वह असह्य है। अिसलिअे अगले बुधवारको दोपहरसे पहले मुझे अिजाजत न मिली, तो अुस वक्तसे ही मैं पानी और नमकके सिवाय और किसी भी प्रकारका पोषण लेना बंद कर दूंगा। अपनी प्रतिज्ञाका पालन करने और अूपर बताये हुअे बोझको कुछ भी कम करनेका यह अेक ही रास्ता है। खाना बंद करनेकी जो बात मैं कह रहा हूं, मैं नहीं चाहता कि अुससे सरकार पर किसी भी तरहका दबाव पड़े। अगर मैं हरिजनसेवा बिना किसी रोकटोकके न कर सकूं, तो जीवनमें मुझे कोअी दिलचस्पी नहीं रह जाती। जैसा पहलेके अपने पत्रव्यवहारमें मैंने साफ कर दिया है, और जिसे भारत सरकारने मंजूर किया है, अुसके अनुसार यरवदा-समझौतेमें ब्रिटिश सरकारकी सम्मति जिस हद तक जरूरी थी, अुस हद तक वह सम्मति देनेवाला पक्ष होनेके कारण अिस प्रकारकी मंजूरी मुझे दी जायगी, यह बात अुस समझौतेको स्वीकृति देनेमें ही गर्भित है।

अिसलिअे मैं चाहता हूं कि वह मंजूरी मुझे तभी मिले, जब सरकार मानती हो कि मुझे वह मंजूरी देनेमें न्याय है। मुझे अिसलिअे अिजाजत न

दी जाय कि अैसी अिजाजत न दी गअी तो मैं अुपवास करूंगा। अुपवास करनेकी बात तो सिर्फ मेरे दिलकी शांतिके लिअे है।

सेवक
मो० क० गांधी

१८

[ता० १५ मंगलवारको कर्नल मार्टिनने सरकारके अेक पत्रकी तफसील बताअी। अुसका मतलब यह था कि मि० गांधीसे पूछा जाय कि अुनकी मुख्य प्रार्थना पर हुक्म दिये जायं, तब तक 'हरिजन' के लिअे लेख देनेके लिअे अुन्हें दूसरी मुलाकातकी जरूरत है या नहीं? और रोज अुनकी जो डाक आती है, अुसके निपटारेके लिअे वे कोअी मार्ग सुझाते हैं क्या? अिस पत्रके जवाबमें बापूने नीचे लिखा पत्र भेजा।]

ता० १५-८-'३३

भाअीश्री कर्नल मार्टिन,

सरकारकी तरफसे आपको जो दो पत्र मिले हैं, अुनके बारेमें मुझे यह कहना है:

१. सरकारको मैंने १० तारीखको जो पत्र लिखा था, अुसके अुत्तरमें 'हरिजन' के लेख अुसके कामचलाअू सम्पादकको देने और अिस बारेमें अुन्हें सूचनायें देनेकी मुझे अिजाजत दे दी गअी, अिसके लिअे मैं आभारी हूं। पर यह अिजाजत मेरी तात्कालिक जरूरतोंको पूरा नहीं कर सकती। रोज आनेवाले पत्रोंसे सम्पर्क रखे बिना 'हरिजन' के लिअे कुछ भी अुपयोगी लिखना मुश्किल है। और अस्पृश्यताके बारेमें पत्रलेखकोंके साथ सम्पर्क रखना 'हरिजन' के संपादन करनेके बराबर ही जरूरी है। अुदाहरणके लिअे, अेक हरिजन पाठशालामें मेरी देखरेखमें अेक कठिन प्रयोग हो रहा है। अिस पाठशालाको सफल बनाना हो, तो अुसके शिक्षकोंके साथ मुझे सतत सम्पर्कमें रहना चाहिये। दूसरे, आश्रमकी कुछ लड़कियों और लड़कोंको मैंने अेक हरिजन छात्रालयमें रखा है। अिस प्रकारका शायद यह पहला ही प्रयोग है। मैं अुस पर सतत ध्यान न दूं, तो वह चल नहीं सकता। यह अुसी दिन शुरू किया गया है, जिस दिन मैं पकड़ा गया था। मुझे खूब ध्यान देना पड़े, अैसे मामलोंके बहुतसे अुदाहरणोंमें से सिर्फ दो ही मैंने यहां दिये हैं।

अिसलिअे कमसे कम अितना तो मैं तत्काल चाहता हूं:

(क) आपके कब्जेमें मेरे जो पत्र हों, वे मुझे सौंप दिये जायं और अुनमें जो पत्र अस्पृश्यता संबंधी हों, अुनके जवाब देनेकी मुझे अिजाजत दी जाय।

(ख) 'हरिजन' कार्यालयमें जो पत्र आयें, वे मुझे दिये जायं और अुनका निपटारा करने दिया जाय।

(ग) आपके पास और 'हरिजन' कार्यालयमें मेरे लिअे जो अखबार आयें वे मुझे दिये जायं, ताकि अुनमें अस्पृश्यताके प्रश्नों पर जो चर्चा हुअी हो, अुसके बारेमें मैं अुचित कार्रवाअी कर सकूं।

मेरी मांगोंके बारेमें सरकार आखिरी हुक्म जारी करे, अुस वक्त तकके लिअे अूपरकी तीन बातोंकी मंजूरी मुझे मिल गअी, तो कल सरकारको लिखे गये पत्रमें कहे अनुसार मुझे कलसे अुपवास करनेकी जरूरत नहीं होगी। आज यह अिजाजत न प्राप्त की जा सके, तो मैं काकासाहब कालेलकर या आनंद हिंगोराणीसे मिलना चाहता हूं, ताकि काम जारी रखने जितने कुछ लेख मैं अुन्हें दे सकूं।

२. आपके कब्जेमें मेरे नाम आये हुअे जो पत्र हैं, अुनको निपटानेके बारेमें सरकारने मेरे सुझाव मांगे हैं। अिसका जवाब अूपर आ जाता है। जेलके वर्गीकरणके नियमोंके अनुसार मुझे जो पाक्षिक पत्र मिल सकते हैं, अुन्हें लेनेकी मेरी अिच्छा नहीं है। मेरे नाम आये हुअे पत्रोंमें से ज्यादातर अस्पृश्यताके साथ ही सम्बंध रखनेवाले होंगे। अुन्हें मुझे खुद ही देख लेना चाहिये और अुनके बारेमें मुझे स्वंय ही सूचनाअें देनी चाहियें। मेरे नाम आये हुअे पत्र मुझे दिये जायंगे, तो जो अस्पृश्यता सम्बंधी नहीं होंगे, अुन्हें मैं खुशीसे लौटा दूंगा। अिन पत्रोंमें कुछ मेरे कामकाजके सम्बंधमें हो सकते हैं। अिन पत्रोंके बारेमें मैं सरकारकी सूचनाअें मांगूंगा। हकीकत यह है कि राजनैतिक मामलोंके सिवाय मेरे बहुतसे सार्वजनिक कार्य हैं। अिसलिअे जैसा मैंने आज सुबह आपको बताया था, मेरी रायमें मेरी मांगका फैसला करनेका न्याय्य मार्ग यह है कि सविनयभंगके मामलेमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपमें मैं किसी भी तरहका भाग नहीं लूंगा, अिसका यकीन कर लेनेके बाद ५ तारीखके पत्रमें मैंने जो सुविधाअें मांगी हैं, वे सब मुझे दे दी जायं।

सेवक
मो० क० गांधी

१

[८ मअी, १९३३ को अिक्कीस दिनका अुपवास शुरू करनेके बाद गांधीजीको छोड़ दिया गया। अुसके बाद तुरंत ही अुन्होंने यह अखबारी बयान* दिया।]

"अिस छुटकारेसे मुझे जरा भी आनंद नहीं होता। . . . अिस छुटकारेका फायदा मैं सविनयभंगकी लड़ाअी चलाने या अुसका मार्गदर्शन करनेके लिअे कैसे अुठा सकता हूं? अिस प्रकार सत्यके अेक शोधकके नाते और स्वाभिमानी मनुष्यके नाते मुझ पर अिस छुटकारेके कारण बड़ा बोझ और दबाव आ पड़ता है। मेरा अुपवास तो जारी रहेगा ही। मैंने आशा रखी थी और अब भी रखता हूं कि अुपवासके दिनोंमें मैं किसी भी तरहकी चर्चामें भाग न लूंगा और किसी भी बातसे क्षुब्ध न होअूंगा। हरिजन-कार्यके सिवाय बाहरकी और किसी बातमें अपने चित्तको लगने दूं, तो अुपवासका सारा अुद्देश्य ही मारा जाय। अिसके साथ ही जब मैं छूट गया हूं, तो अपनी थोड़ी शक्ति सविनयभंगकी लड़ाअीका अध्ययन करनेमें लगानेके लिअे भी मैं बंधा हुआ हूं।

"अलबत्ता, लड़ाअीके बारेमें तो मैं अितना ही कहूंगा कि सविनयभंग संबंधी मेरे विचारोंमें तिलभर भी फर्क नहीं पड़ा है। सविनयभंग करनेवाले अनेक लोगोंने जो बहादुरी दिखाअी है और कुर्बानियां की हैं, अुनके लिअे मेरे दिलमें प्रशंसाके सिवाय और कोअी भावना नहीं है। पर अितना कह कर मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि अिस लड़ाअीमें जो गुप्तता घुस गअी है, वह अिसकी जीतके लिअे घातक है। अिसलिअे लड़ाअी चलानी ही हो, तो देशके अलग-अलग भागोंमें जो लोग अिस लड़ाअीका संचालन कर रहे हैं, अुन्हें मैं आग्रहपूर्वक कहता हूं कि वे सब तरहकी गुप्तता छोड़ दें। अैसा करनेसे अुन्हें अेक भी सविनयभंग करनेवालेका मिलना मुश्किल हो जाय, तो अिसकी मुझे परवाह नहीं।

---

* १० मअी, १९३३ के 'टाअिम्स ऑफ अिंडिया' से।

“अिसमें शक नहीं कि अिस समय आम जनता भयसे हक्की-वक्की हो गअी है। फतवों (आर्डिनेंसों) ने लोगोंको दवा दिया है। मैं मानता हूं कि लोगोंकी अिस भयभीत दशाके लिअे लड़ाअीके गुप्त तरीके ज्यादातर जिम्मेदार हैं। सविनयभंग आन्दोलन अुसमें भाग लेनेवाले पुरुषों और स्त्रियोंकी संख्या पर निर्भर नहीं, वल्कि अुनके गुणों पर निर्भर है। अगर मैं आंदोलनका संचालन करता होअूं, तो संख्याको हानि पहुंचाकर गुणोंका ही आग्रह रखूं। अैसा होनेसे तुरन्त ही लड़ाअी अूंची सतह पर पहुंच जायगी। अिसके सिवाय और किसी भी तरह लोगोंको लड़ाअीकी तालीम देना संभव नहीं।

“लड़ाअीके संचालनके वारेमें मैं और कुछ नहीं कह सकता। अूपर मैंने जो विचार वताये हैं, वे कितने ही महीनोंसे अपने दिलमें भर रखे थे। . . . मुझे यह पसन्द हो या न हो, परंतु अिन तीन हफ्तोंके दरमियान तमाम सविनयभंग करनेवालोंका जी अुचटा हुआ रहेगा। अिसलिअे कांग्रेसके अध्यक्ष अेक या डेढ़ महीने तक अिस लड़ाअीको मुलतवी रखें, तो अच्छा हो।

“अव मैं सरकारसे अेक अपील करूंगा। अगर वह चाहती है कि देशमें सच्ची शांति स्थापित हो, अुसे अैसा लगता हो कि आज देशमें सच्ची शांति नहीं है और वह यह मानती हो कि फतवेसे शासन करना कोअी शासन करना नहीं कहलाता, तो लड़ाअी स्थगित होनेका अुसे लाभ अुठाना चाहिये और सविनयभंगवाले तमाम कैदियोंको विना शर्त छोड़ देना चाहिये। अगर मैं अिस परीक्षामें से जिंदा पार हो गया, तो परिस्थितिकी जांच करने तथा कांग्रेसके नेताओंको और सरकारको भी सलाह देनेका मौका मुझे मिलेगा। अिंग्लैंडसे लौटनेके वाद लड़ाअीकी जिस मंजिल पर मुझे नजरवन्द कर लिया गया था, अुसी मंजिलसे वातचीत वापस शुरू करना मैं पसंद करूंगा।

“मेरे प्रयत्नसे सरकार और कांग्रेसके वीच कोअी समझौता न हो सके और सविनयभंग फिर शुरू किया जाय, तो अुस समय सरकारकी अिच्छा हो तो वह फिर आर्डिनेंस-राज्य शुरू कर सकती है।

“पर सरकारकी अैसी अिच्छा ही हो, तो मुझे अिस वारेमें शक नहीं कि हम अिन मुश्किलोंमें से रास्ता निकाल सकते हैं। मैं अपने लिअे तो कह दूं कि अिस वारेमें मेरे मनमें जरा भी शंका नहीं कि जव तक अितने ज्यादा सत्याग्रही जेलोंमें वन्द हैं, तव तक सविनयभंग वापस नहीं लिया जा सकता। जव तक सरदार वल्लभभाअी, खानसाहव अव्दुल गफ्फारखां, पंडित जवाहरलाल नेहरू और दूसरे लोगोंको जिंदा गाड़ रखा गया है, तव तक कोअी

समझौता नहीं हो सकता। सच तो यह है कि जेलके बाहर किसी भी आदमीको सविनयभंग वापस लेनेका अधिकार नहीं। मुझे जिस समय गिरफ्तार किया गया था, अुस समय जो कांग्रेसकी कार्य-समिति अस्तित्वमें थी अुसीको यह अधिकार है।

"सविनयभंगकी लड़ाअीके बारेमें मैं और कुछ नहीं कह सकता। शायद जितना कहना चाहिये, अुससे ज्यादा मैंने कह डाला है। अब मुझे कुछ भी कहना हो, तो मैं अखबारवालोंसे प्रार्थना करूंगा कि वे मुझे अब जरा भी तकलीफ न दें। मुझसे मिलने आनेकी अिच्छा रखनेवालोंसे भी मैं आग्रह करता हूं कि वे अपने पर अंकुश रखें। वे यही समझें कि मैं अभी तक कैदमें हूं। अुपवासके दिनोंमें राजनैतिक या दूसरी चर्चाअें करनेकी मुझमें शक्ति नहीं होगी। मुझे पूरी तरह शांतिसे रहने दिया जायगा, तो मुझे अच्छा लगेगा। सरकारको भी मैं अितना बता देता हूं कि अपनी अिस मुक्तिका मैं जरा भी दुरुपयोग नहीं करूंगा। अिस परीक्षासे मैं जिन्दा पार हो जाअूं और मुझे मालूम हो जाय कि राजनैतिक वातावरण आजकी तरह ही क्षुब्ध है, तो सविनयभंगको आगे बढ़ानेके लिअे खुले या छिपे तौर पर अेक भी कदम अुठाये बिना मैं सरकारको कह दूंगा कि मुझे यरवदामें जिन साथियोंको लगभग मैं छोड़ आया हूं, अुनके पास ले जाय।"

अिसके बाद गांधीजीने सरदार वल्लभभाअी पटेलके बारेमें प्रशंसाके वचन कहे। अुन्होंने कहा: "मैं आशा रखता हूं कि मेरा कहा सरकार मान लेगी कि हम जब-जब राजनैतिक प्रश्नोंकी चर्चा करते थे, तब-तब सरदारको सरकारकी मुश्किलोंका बहुत खयाल रहता था।"

२

[साबरमती आश्रम पर अधिकार करनेके लिअे बम्बअी सरकारको लिखा हुआ गांधीजीका पत्र।]

अहमदाबाद, २६-७-१९३३

सेक्रेटरी टु दी गवर्नमेन्ट ऑफ बॉम्बे,
होम डिपार्टमेन्ट, पूना

भाअीश्री,

सन् १९१५ में जब मैं हिन्दुस्तान लौटा, अुसके बाद सत्यकी अुपासनाके अुद्देश्यसे सत्याग्रह आश्रमकी स्थापना करना मेरा पहला रचनात्मक कार्य

था। आश्रमवासी सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता-निवारण, खादीको केन्द्र माननेवाला स्वदेशी, सर्वधर्म-समभाव और शरीर-श्रमका व्रत लिये हुअे हैं। आश्रमकी मौजूदा जगह सन् १९१६ में खरीदी गअी थी। ज्यादातर आश्रमवासियोंकी मेहनतसे ही आश्रमकी सारी प्रवृत्तियां आजकल चल रही हैं। पर मजदूरी देकर बाहरके मजदूरोंकी मदद लेनेकी भी जरूरत पड़ती है। वहांकी मुख्य प्रवृत्तियां ये हैं:

१. भौतिक शक्तिसे चलनेवाले यंत्रोंकी मददके बिना अेक ग्रामोद्योगके रूपमें खादीका अुत्पादन।

२. गोशाला।

३. खेती।

४. वैज्ञानिक ढंगसे पाखाना सफाअी।

५. राष्ट्रीय शिक्षा।

आश्रममें अिस समय कुल १०७ आदमी हैं — ४२ पुरुष, ३१ स्त्रियां, १२ लड़के और २२ लड़कियां। अभी जो जेलमें हैं और जो आश्रमके बाहर दूसरे कामोंमें लगे हुअे हैं, अुन्हें अिसमें नहीं गिना गया है। अब तक आश्रमने लगभग अेक हजार आदमियोंको खादी-विद्याकी तालीम दी है। और जहां तक मैं जानता हूं, अुनमें से ज्यादातर लोग अुपयोगी रचनात्मक काम कर रहे हैं और अीमानदारीसे रोजी कमाते हैं।

आश्रमका ट्रस्ट रजिस्टर हो चुका है। अुसके पासका रुपया विशेष-विशेष कामोंके लिअे अंकित हो चुका है। हरअेक विभागको स्वावलम्बी बनानेका हमारा अुद्देश्य होते हुअे भी अलग-अलग खर्च निपटानेके लिअे अब तक मित्रोंसे हमें मजबूरन दान लेना पड़ा है। अनुभवने हमें बताया है कि जब तक आश्रम शिक्षाका (अुसके अत्यंत विशाल अर्थमें) काम करेगा और अुसके लिअे फीस नहीं लेगा, अितना ही नहीं बल्कि पढ़नेवालोंको रोटी-कपड़ा भी देगा, तब तक वह पूरी तरह स्वावलम्बी नहीं बन सकता।

आश्रमकी स्थावर सम्पत्तिका अन्दाज तीन लाख साठ हजार रुपया होता है। और नकद सहित जंगम सम्पत्तिका अन्दाज ३ लाख रुपयेसे अूपर पहुंचता है। जिन्हें राजनैतिक मामले कहा जाता है, अुनमें आश्रम भाग नहीं लेता। पर सत्य और अहिंसाके पालनके लिअे वह मानता है कि खास परिस्थितियोंमें असहयोग और सविनयभंग अनिवार्य हैं। अिसीलिअे १९३० की सविनयभंगकी लड़ाअी लगभग ८० आश्रमवासियोंने दांडी-कूचसे शुरू की थी।

वर्तमान परिस्थितिमें जब अेक तरफ सरकारका दमनचक्र बढ़ता जा रहा है और दूसरी तरफ लोगोंकी भयभीतता भी अुतनी ही बढ़ती जा

रही है, तब आश्रमके लिअे अधिक बड़ा बलिदान करनेका समय आ पहुंचा है।

मेरा अुपवास छूटनेके बाद मुझे जो जानकारी प्राप्त हो सकी है, अुससे मालूम होता है कि:

१. देशके अलग-अलग भागोंमें सविनयभंग करनेवाले व्यक्तियोंको दबा देनेके लिअे पुलिसकी तरफसे आतंक पैदा करनेवाले कष्ट देकर थरथराहट पैदा करनेके तरीके अख्तियार किये जाते हैं।

२. स्त्रियोंका अपमान किया गया है।

३. लोगोंका आजादीसे चलना-फिरना लगभग असंभव हो गया है।

४. देशके अधिक भागोंमें कांग्रेसियोंके लिअे ग्रामसेवाके काम करना असंभव-सा बन गया है।

५. बहुतसी हवालातों और जेलोंमें व्यक्तिगत सविनयभंग करनेवाले कैदियों पर अपमानजनक और शारीरिक कष्ट देनेवाले अत्याचार किये जाते हैं।

६. लोगों पर बूतेसे बाहर भारी जुर्माने किये जाते हैं और वे बहुत ही नाजायज तरीकेसे वसूल किये जाते हैं।

७. जो किसान भूमि-कर या लगान चुकानेसे अिनकार करते हैं, अुन्हें अुनके अपराधसे कहीं अधिक सजायें दी जाती हैं। अिसमें खुले तौर पर अुद्देश्य यह होता है कि वे और अुनके पड़ोसी भयसे थर्रा जायं।

८. अखबारोंका मुंह बन्द कर दिया गया है।

९. सार यह कि देशके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक स्वाभिमानपूर्वक स्वतंत्रतासे रहना असंभव हो गया है।

मुझे शंका नहीं है कि अिन सब आक्षेपोंसे सरकारी हलकोंमें अिनकार किया जायगा, या किसी न किसी तरहके स्पष्टीकरणसे अुन्हें अुड़ा दिया जायगा। संभव है कि मेरे आक्षेप अतिशयोक्तिसे मुक्त न हों। परंतु अधिकांश कांग्रेसियोंके साथ मैं अिन्हें सच माननेमें सहमत हूं। अिसलिअे वे मुझे कदम अुठानेको मजबूर करनेके लिअे काफी हैं।

अिसलिअे सिर्फ कारावाससे मुझे शांति नहीं होगी। अिसके अलावा, मुझे साफ दिखाअी दे रहा है कि जब तक आश्रम अिस लड़ाअीके साथ अपना संबंध पूरी तरह छोड़ नहीं देता, तब तक आश्रमका विशाल रचनात्मक कार्यक्रम सलामतीसे चल नहीं सकता। यह स्थिति स्वीकार करना आश्रमके मूलभूत सिद्धान्तोंसे अिनकार करनेके बराबर है। अब तक मुझे आशा थी कि कुछ आश्रमवासियोंके सविनयभंग करते रहनेके साथ आश्रम भी बना रह

सकता है; और यद्यपि कांग्रेसका ध्येय तुरंत सिद्ध न हो सके, तो भी निकट भविष्यमें सरकार और कांग्रेसके बीच सम्मानपूर्ण समझौता हो सकेगा। पर कांग्रेसने मेरे द्वारा अीमानदारीसे जो सुलहका हाथ बढ़ाया, अुसे बदकिस्मतीसे वाअिसरॉयने ठुकरा दिया है। यह चीज साफ बताती है कि सरकारको सुलह नहीं चाहिये, बल्कि वह यह चाहती है कि देशकी सबसे बड़ी और अेकमात्र नहीं, तो भी अधिकसे अधिक लोकप्रिय राजनैतिक संस्था दांतोंमें तिनका लेकर अुसकी शरणमें जाय। जब तक कांग्रेसको अुसके वर्तमान सलाहकारों पर विश्वास है, तब तक यह होना असंभव है। अिसलिअे यह लड़ाअी जरूर लम्बी चलेगी और लोगोंने जितनी कुर्बानियां अब तक की हैं, अुनसे ज्यादा बड़ी कुर्बानियां वह लोगोंसे मांगेगी। अिस लड़ाअीके सृष्टाकी हैसियतसे स्वभावतः मुझसे अधिकसे अधिक बलिदानकी अपेक्षा रखी जायगी, और वह बलिदान मैं अुस चीजको कुर्बान करके ही कर सकता हूं, जो मेरे लिअे निकटसे निकट है, जो मुझे प्रियसे प्रिय है, और जिसकी रचनाके लिअे मैंने और दूसरे बहुतसे आश्रमवासियोंने अटूट धीरज और अपार सावधानीसे अठारह साल तक मेहनत की है। आश्रमके अेक-अेक पशु और अेक-अेक पेड़के साथ अविस्मरणीय अितिहास और पवित्र संस्मरण जुड़े हुअे हैं। ये सभी अेक विशाल कुटुंबके अंग हैं। किसी समय जो बिलकुल वीरान जमीन थी, अुसे मानवी प्रयत्नोंसे अेक हरी-भरी बगीचेवाली सुंदर बस्ती बना लिया गया है। अिस कुटुंबको और अुसकी विविध प्रवृत्तियोंको छिन्न-भिन्न करनेका काम आंखोंमें आंसू आये बिना हमसे नहीं हो सकता। आश्रमवासियोंके साथ मैंने भक्तिपूर्ण हृदयसे खूब बातें कर ली हैं। और अुन्होंने, भाअियों और साथ ही बहनोंने, अिस कुटुंब और अुसके कामकाजको बिखेर डालनेकी मेरी सूचनाका अेकमतसे स्वागत किया है। जो थोड़े-बहुत भी सशक्त हैं, अुन्होंने लड़ाअीके स्थगित होनेका समय पूरा होने पर व्यक्तिगत सविनयभंग करनेका निश्चय किया है।

यहां यह बता देना जरूरी है कि आश्रमने पिछले दो सालसे जमीनका लगान चुकानेसे अिनकार कर रखा है और अुसके कारण बहुत ज्यादा कीमतकी अुसकी चीजें जब्त कर ली गअी और बेच डाली गअी हैं। सरकारके अिस कामकी मैं कोअी शिकायत नहीं करता। परंतु अैसी खतरनाक परिस्थितिमें अेक बड़ी संस्थाका चलाना आनंददायक या लाभदायक नहीं होगा। अितनी बात तो मैं पूरी तरह समझता हूं कि किसी भी राज्यके साथ, चाहे न्यायी हो या अन्यायी हो, लोकसत्तात्मक हो या विदेशी हो, अुसका कोअी भी नागरिक संघर्षमें आयेगा, तो वह अुसकी जमीन-जायदाद जबरदस्ती ले

लेगा। अनिश्चित काल तक चलनेवाली लड़ाअीमें जो होना अनिवार्य है, अुसे पहलेसे ही मान लेनेमें मुझे केवल समझदारी ही मालूम होती है।

परंतु आश्रमको बिखेर डालनेका निर्णय कर लेने पर भी हम चाहते हैं कि अुसके सारे मालमत्तेका अुपयोग सार्वजनिक कामोंमें हो। अिसलिअे किसी भी कारणसे अुसकी किसी भी या तमाम जंगम संपत्ति — नकद सहित — पर सरकार कब्जा न करना चाहे, तो मेरा विचार अुसे अैसे मित्रोंको सौंप देनेका है, जो अुसका अुपयोग लोक-कल्याणके लिअे, जिस कामके लिअे वह अंकित हो चुकी है, करें। अिसके अनुसार खादीका माल और कारखाने और बुनाअीघरका सारा सामान अखिल भारत चरखा संघको, जिसके द्वारा यह काम किया जा रहा है, सौंप दिया जायगा। गाय और दूसरे पशु गोसेवा संघको, जिसकी तरफसे यहांकी गोशाला चलाअी जा रही है, सौंप दिये जायंगे। पुस्तकालय अुस संस्थाको सौंप दिया जायगा, जो पुस्तकोंको सम्हालनेके लिअे तैयार होगी। रुपया और दूसरी चीजें जिन-जिन लोगोंके होंगे, अुन्हें लौटा दिये जायंगे या जो मित्र अुन्हें सम्हालनेको तैयार होंगे, अुन्हें सौंप दिये जायंगे।

फिर रह जाते हैं, जमीन और मकान और जमीन पर खड़ी फसलें। मेरा सुझाव है कि सरकार अुन पर कब्जा कर ले और अुनका जो कुछ करना हो करे। ये चीजें भी मैं मित्रोंको सौंप देता, परंतु अुन्हें लगान चुकाना पड़े, अैसे काममें मैं शरीक नहीं होना चाहता। स्वाभाविक तौर पर ही दूसरे सविनयभंग करनेवालोंको तो ये चीजें सौंपी ही नहीं जा सकतीं। अिसलिअे मैं अितना ही चाहता हूं कि जमीन, मकान, कीमती पेड़ और खड़ी फसलोंको बहुतसी दूसरी जगहोंकी तरह बरबाद होने देनेके बजाय अुनका अच्छा अुपयोग किया जाय।

जमीनके अेक टुकड़े परके मकानोंमें कुछ हरिजन परिवार रहते हैं। अब तक अुनसे किराया नहीं लिया जाता था। अुन्हें सविनयभंगमें शामिल करनेकी मेरी अिच्छा नहीं है। वे आअिंदा आश्रमके ट्रस्टियोंको नाममात्रका अेक रुपया वार्षिक किराया देंगे और जितनी जमीन अुन मकानोंने रोक रखी है, अुतनी जमीनके लगानके लिअे जिम्मेदार होंगे।

अगर किसी भी कारणसे सरकार अूपर बताअी हुअी संपत्ति पर कब्जा न करे, तो भी आश्रमवासी तो लड़ाअीके स्थगित रहनेकी मियाद पूरी होने पर यानी ३१ तारीखके बाद आश्रम छोड़कर चले जायेंगे। हां, सरकार अुससे पहले ही आश्रम पर अधिकार कर ले तो बात दूसरी है। मेरी प्रार्थना है कि अिस पत्रका जवाब मुझे तारसे दिया जाय। खास तौर पर मुझे यह

समय रहते वता दिया जाय कि जंगम सम्पत्तिके वारेमें सरकारकी क्या अिच्छा है, ताकि अुसका निपटारा मुझे ही करना हो तो मैं वह कर सकूं।

सेवक

मो० क० गांधी

[अिस पत्रका जवाव वम्वअी सरकारके होम डिपार्टमेन्टके सेक्रेटरी मि० मेक्सवेलकी तरफसे पूनासे २८ जुलाअी, १९३३ को यह दिया गया कि:]

आपके ता० २६-७-१९३३ के पत्रकी पहुंच स्वीकार करनेकी मुझे सूचना हुअी है।

[अिसके वाद ता० ३०-७-१९३३ को गांधीजीने वम्वअी सरकारको यह तार दिया:]

सेक्रेटरी, होम डिपार्टमेन्ट, पूना

मंगलवारको सुवह मैं आश्रमका त्याग करके जानेकी आशा रखता हूं। अगर मैं स्वतंत्र रहा तो अपने साथियों सहित छोटी-मोटी मंज़िलें तय करके फिलहाल तो रास गांव जानेकी मेरी अिच्छा है। अिसका अुद्देश्य यह है कि जिन ग्रामवासियोंको वहुत ज्यादा कष्ट अुठाने पड़े हैं, अुनके साथ हमदर्दी दिखाअी जाय। अुन्हें सामूहिक सविनयभंगके लिअे न्यौता देनेकी अिच्छा नहीं है। पर कांग्रेसके प्रस्तावके अनुसार व्यक्तियोंसे सविनयभंग करनेको कहा जायगा। हम शराव छोड़नेको समझायेंगे, शरावकी दुकानवालोंको यह घंधा छोड़ देनेको कहेंगे; विदेशी कपड़ेके व्यापारियोंसे सिर्फ खादीका ही व्यापार करनेकी वात कहेंगे; और दूसरे सवसे कांग्रेसका रचनात्मक कार्यक्रम हाथमें लेनेका आग्रह करेंगे। हिन्दुओंको अस्पृश्यता मिटा देनेको समझायेंगे। मैं खुद और मेरे साथी पासमें अेक पाअी भी न रखकर कूच करेंगे। गांवोंके लोग जो रोटियां देंगे वही खायेंगे। मुझे जल्दी पकड़ लिया जायगा, तो मेरे वत्तीस साथी, जिनमें सोलह वहनें हैं, कूचको जारी रखेंगे। —गांधी

३

[ता० ३१-७-१९३३ को रातके समय गांधीजीको पकड़कर सावरमती जेलमें ले जाया गया और वहांसे यरवदा ले गये। ता० ४-८-१९३३ को यरवदा जेलमें अुन पर मुकदमा चला, तव मजिस्ट्रेटके सामने अुन्होंने जो वयान दिया, वह नीचे दिया जाता है।*]

---

* ता० ५-८-१९३३ के 'टाअिम्स ऑफ अिंडिया' से।

गांधीजी, अुम्र ६४ वर्ष, रहनेवाले सावरमती–अहमदावादके, अुन्होंने अपना पेशा कतवैये, जुलाहे और किसानका वताया और साथ ही यह कहा भी कि मैं अदालतके सामने अेक छोटासा वयान देना चाहता हूं।

अलग-अलग गवाह यहां आकर जो कुछ कह गये हैं, वह विलकुल सच है। वम्वअी सरकारके हुक्मोंका मैंने जो भंग किया है; वह जान-वूझकर और अिरादतन किया है। मैंने अैसा क्यों किया, यह मैं थोड़ेमें वताअूंगा।

मैं यह नहीं मानता कि विधान द्वारा स्थापित सरकारकी आज्ञाओंको तोड़नेका मुझे शौक है। मैं शांति चाहनेवाला हूं और जिस राज्यमें रहता हूं अुसके कानूनोंको स्वेच्छासे माननेवाला अच्छा नागरिक मैं अपने आपको मानता हूं। पर अैसे नागरिकके जीवनमें कुछ अैसे अवसर आ जाते हैं, जव राज्यके कानूनों और हुक्मोंको तोड़ना अुसका दुःखदायक फर्ज हो जाता है। सभी जानते हैं कि सन् १९१९ में मेरे सिर पर अैसा ही दुःखद कर्तव्य आ पड़ा था। मुझे अकेलेको ही सविनयभंग नहीं करना पड़ा, वल्कि औरोंको भी अैसा ही करनेका अुपदेश देना मुझे अपना फर्ज जान पड़ा था।

जिस कानूनके मातहत मुझ पर मुकदमा चलाया जा रहा है, वह कानून ही मेरे आक्षेपोंको प्रत्यक्ष सिद्ध करनेवाला अेक प्रमाण है। मेरा आक्षेप यह है कि हिन्दुस्तानमें अिस समय जिस ढंगसे हुकूमत हो रही है, वह केवल अन्यायी ही नहीं है, वल्कि देशका आर्थिक और नैतिक अधःपतन करनेवाली है। अिन दिनों मुझे थोड़ा समय जेलसे वाहर रहनेको मिला है। अुस अरसेमें मैं वहुतसे स्त्री-पुरुषोंके सम्पर्कमें आया हूं। अिस वीच मैंने जो खोज की है, वह मुझे अत्यन्त दुःखद मालूम होती है। अिस देशमें रहनेवाले तमाम लोग — अूंचे और नीचे, पढ़-लिखे और वेपढ़े, गरीव और अमीर, सभी — दव गये हैं, और अपनी आजादी तथा जमीन-जायदादके छिन जानेके स्थायी भयमें रहते हैं।

अैसे वातावरणमें रहना मेरे लिअे अेक कड़ी परीक्षा थी। ठेठ वचपनसे स्वभावसे ही अहिंसामें दृढ़ विश्वास होनेके कारण मैंने अुस तरीकेका आसरा लिया, जिसके अनुसार अपने भाग्यमें जो कष्टसहन करना लिखा हो अुसे स्वेच्छापूर्वक सहन किया जाता है। जिस वेदनासे मेरा अन्तर जल रहा था, अुसे किसी हद तक कम करनेका मेरे पास यही अेक मात्र अुपाय था। अिन कारणोंसे ही सरकारकी अिस व्यवस्थाके खिलाफ मुझसे जितना हो सके अुतना, और मेरे जैसा शांति चाहनेवाला मनुष्य जो कुछ कर सकता है अुतना, विरोध मैं कर रहा हूं।

अब अेक ही शब्द और कहूंगा। आप या सरकार मुझे सजा देनेके बाद जेलमें कैदीकी हैसियतसे किसी खास वर्गमें रखेंगे। मुझे कह देना चाहिये कि कैदियोंको अ, ब और स वर्गमें रखनेकी पद्धति मुझे बहुत ही नापसंद है। जो दूसरे कैदियोंको हककी रूसे न मिल सकती हो, अैसी कोअी खास सहूलियत भोगनेकी मेरी अिच्छा नहीं। अिसलिअे सरकार जिन्हें नीचेसे नीचा मानती हो, अैसे कैदियोंके वर्गमें रखा जाना मुझे पसंद है।

अन्तमें मैं बताअूंगा कि अिन दो-तीन दिनमें मैं जिन कर्मचारियोंके सम्पर्कमें आया हूं, वे मेरे और मेरे साथीके साथ बहुत विनय और आदरसे पेश आये हैं। अिसके लिअे मैं अुनका आभार मानता हूं।

अिसके बाद गांधीजीने बयान पर हस्ताक्षर कर दिये। मजिस्ट्रेटने अभियोग लगाया कि बॉम्बे प्रेसीडेंसी अिमर्जेन्सी पावर्स अेक्टकी रूसे आपको जो हिदायतें और हुक्म दिये गये थे, अुनको आपने आज सवेरे जान-बूझकर तोड़ा है। गांधीजीने कहा कि मैंने अभियोगको अच्छी तरह समझ लिया है। बादमें अुन्हें यह सवाल पूछा गया कि आप अपराध स्वीकार करते हैं या नहीं, तो अुसके जवाबमें अुन्होंने कहा कि ' मैंने अपराध किया है।'

सूची

म—३३

बापूके पत्र मीराके नाम

अनुवादक: रामनारायण चौधरी

[१९२४ से १९४८]

"यह अेक आध्यात्मिक पिताका अपने ठोकर खाते हुअे बच्चेको दिया हुआ अत्यन्त सादा, सीधा और प्रेमपूर्ण अुपदेश है।

अिन पत्रोंमें बापूके जीवनके पिछले बाअीस वर्षोंका प्रतिबिम्ब है। सबको दिखाअी देनेवाला भव्य और नाटकीय बाह्य जीवन नहीं, बल्कि वह आन्तरिक व्यक्तिगत जीवन, जो बाहरी दुनियाके तमाम बखेड़ोंसे प्रभावित हुअे बिना आध्यात्मिक खोजके अपने संतुलित और सीधे मार्ग पर चलता रहा।"

की० ४-०-० डाकखर्च ०-१३-०

सच्ची शिक्षा

लेखक: गांधीजी

अनुवादक: रामनारायण चौधरी

अिस पुस्तकमें शिक्षाका स्वरूप, आदर्श, माध्यम वगैरा आजके शिक्षा-सम्बन्धी प्रश्नोंका समुचित अुत्तर पाठकोंको मिलेगा।

की० २-८-० डाकखर्च ०-११-०

बुनियादी शिक्षा

लेखक: गांधीजी

स्वतंत्र भारतका हर व्यक्ति जब तक सुशिक्षित नागरिक नहीं बन जाता, तब तक हम सच्चे अर्थमें आजादीका अुपभोग नहीं कर सकते। और आजकी हालतोंमें अिसका अेकमात्र रास्ता वही है, जो गांधीजीने अिस पुस्तकमें बताया है — यानी अुद्योग द्वारा दी जानेवाली स्वावलम्बी शिक्षा।

की० १-८-० डाकखर्च ०-८-०

दिल्ली-डायरी

लेखक: गांधीजी

हिन्दुस्तानकी राजधानीमें अपने जीवनके आखिरी दिनोंमें शामकी प्रार्थनाके बाद गांधीजीने अपने हृदयकी गहरी वेदनाको बतानेवाले जो प्रवचन किये थे, अुनमें से ता० १०-९-'४७ से ३०-१-'४८ तकके प्रवचनोंका अिस पुस्तकमें संग्रह किया गया है। यही अुनका राष्ट्रको आखिरी सन्देश कहा जा सकता है।

की० ३-०-० डाकखर्च ०-१२-०

सरदार वल्लभभाअी

[पहला भाग]

लेखक : **नरहरि परीख**

अनुवादक : **रामनारायण चौधरी**

अिसमें सरदारका प्रामाणिक चरित्र पहले-पहल हिन्दी पाठकोंके समक्ष प्रस्तुत हो रहा है। अिसकी प्रामाणिकता अिससे और बढ़ जाती है कि स्वयं सरदार अिसे आद्योपान्त देख गये हैं। पहले भागमें अुनका जन्मसे लेकर १९२९ तकका जीवनचरित्र अंकित किया गया है। अेक तरहसे कहें तो अिसमें सरदारश्रीका साधना-काल चित्रित किया गया है। अुनके विकास सम्बन्धी दस चित्र भी पुस्तकमें दिये गये हैं।

की० ६–०–० डाकखर्च १–३–०

जीवनशोधन

लेखक : **किशोरलाल मशरूवाला**

अनुवादक : **हरिभाअू अुपाध्याय**

लेखक प्रस्तावनामें कहते हैं : "जिन्दगी खा-पीकर अैश-आराम करनेके लिअे है — अिससे अधिक अुदात्त भावनाका स्पर्श ही जिन्हें नहीं हो सकता, अुनके लिअे मुझे कुछ नहीं कहना है। परन्तु जिनके मनमें अुदात्त भावनाअें हैं, . . . जिनके मनमें यह अभिलाषा निरन्तर रहती है . . . कि मेरी आध्यात्मिक अुन्नति हो, मैं जीवनके तत्त्वको समझ लूं, मेरा चित्त निर्मल हो जाय, मेरा जीवन दूसरोंका सुख बढ़ानेमें किसी कदर अुपयोगी हो, . . . अुनके लिअे यह लेखमाला लिखनेको मैं प्रेरित हुआ हूं।"

की० ३–०–० डाकखर्च ०–१२–०

स्त्री-पुरुष-मर्यादा

लेखक : **किशोरलाल मशरूवाला**

अनुवादक : **सोमेश्वर पुरोहित**

आज स्त्री-पुरुष-मर्यादाके प्रश्नने विकट रूप धारण कर लिया है। अिस पुस्तकमें लेखकने स्त्री-पुरुष-सम्बन्धके सारे प्रश्नोंकी — जैसे नौजवान और शादी, ब्रह्मचर्यकी साधना, सहशिक्षा, स्पर्शकी मर्यादा, विवाहका प्रयोजन, सन्तति-नियमन, 'धर्मके भाअी-बहन' वगैरा — सर्वथा मौलिक और क्रान्तिकारी ढंगसे विस्तृत चर्चा की है। यह पुस्तक समाजके विचारशील लोगोंको अिस प्रश्न पर बिलकुल नअी दृष्टिसे सोचने और मनन करनेकी प्रेरणा देगी।

कीमत १–१२–० डाकखर्च ०–५–०